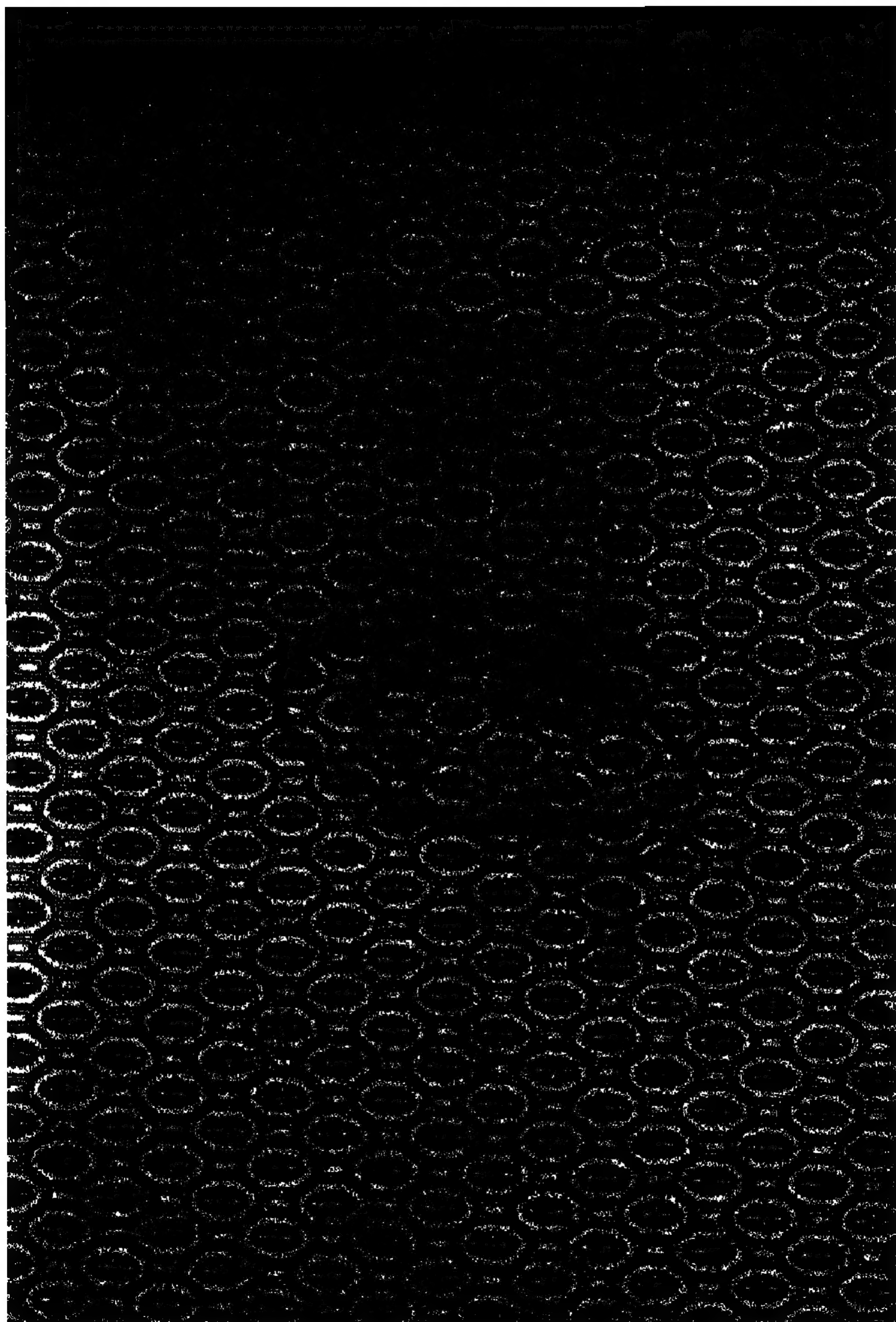


MANIKCHAND DIGAMBARA JAINA GRANTHAMĀLĀ
No. 37
GENERAL EDITOR: PROFESSOR HIRALAL JAIN



THE

MAHĀPURĀṆA

OR

TISAṬṬHIMAHĀPURISAGUṆĀLAṂKĀRA

(A Jain Epic in Apabhraṁśa of the 10th Century)

OF

PUṢPADANTA

Vol. I.

CRITICALLY EDITED BY
D'. P. L. VAIDYA, M. A. (Cal.); D. Litt (Paris)
Professor of Sanskrit and Allied Languages
Nowrosjee Wadia College, Poona

Published by
MANIKCHAND DIGAMBARA JAINA GRANTHAMĀLĀ, BOMBAY
1937

Price Rs. Ten

Text (pages 1-592) Printed by Ganesh Kashinath Gokhale, Secretary Shree Ganesh Printing Works, 596-97, Shanwar Peth, Poona 2 and the rest by Anant Vinayak Patwardhan, B. A., at the Āryabhūshan Press Poona, Peth Bhamburda, House No 915/1, and published by Pandit Nathuram Premi, Secretary, Manikchand Digambara Jaina Granthamālā, Hirabag, Girgaum, Bombay 4.

माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालायाः सप्तत्रिंशत्तमो ग्रन्थः

महाकविपुष्पदन्तविरचितं
त्रिषष्टिमहापुरुषगुणालंकारं नाम
अपभ्रंशभाषानिबद्धं

महापुराणम्

तस्यायं

आदिपुराणं

नाम

प्रथमः खण्डः

पुण्यपत्तनस्थवाडियाकॉलेजाख्यविद्यामन्दिरनियुक्तेन
संस्कृतप्राकृतादिभाषाध्यापकेन
वैद्योपाह्वपरशुरामशर्मणा
संपादितः

प्रकाशिका
माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रमाब्दाः १९९३]   [खिस्ताब्दाः १९३७

मूल्यं दश रूपिकाः

TABLE OF CONTENTS

विक्रमाब्दाः १

प्रकाशकका निवेदन

अपभ्रंश भाषाके सर्वश्रेष्ठ महाकवि पुष्पदन्तकी रचनाओंका परिचय संभवतः सबसे पहिले, मैंने अपने एक विस्तृत लेखमें दिया था जो 'जैन-साहित्य-संशोधक' के जुलाई सन १९२३ के अंक में 'महाकवि पुष्पदंत और उनका महापुराण' शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। उसके बाद अनेक विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और अपभ्रंशके साहित्यके विषयमें लोगोंकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। किंग एडवर्ड कालेजके प्रोफेसर सुहृद्वर पं० हीरालाल जैन एम० ए०, एल‌एल० बी० तो अपभ्रंश-साहित्यपर मुग्ध ही हो गये और उन्होंने अपने अध्ययनका मुख्य विषय ही इसे बना लिया। अपभ्रंशके साहित्यके लिये उन्होंने जयपुरकी यात्रा की और वहाँके पुस्तक-भंडारोंका महीनों तक अन्वेषण किया। कारंजाके भंडार भी उन्होंने समय समयपर देखे। इसके फलस्वरूप उनके पास अपभ्रंश-साहित्यका और उसकी साधन-सामग्रीका इतना अच्छा संग्रह हो गया है कि अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। उनकी जिह्वापर तो इस साहित्यकी सुललित सूक्तियाँ निरन्तर ही नृत्य करती रहती हैं। इस विषयपर वे अँगरेजी और हिन्दी पत्रोंमें कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं।

सन् १९३१ में उनके उद्योगसे कारंजा-सीरीजका प्रारंभ हुआ और उसमें महाकवि पुष्पदन्तके यशोधरचरित और नागकुमारचरित तथा अन्य कवियोंके पाहुड दोहा, सावयधम्म दोहा और करकंडुचरित ये पांच ग्रंथ उन्हींके संपादकत्वमें प्रकाशित हुए।

यह महापुराण भी उक्त सीरीजमें ही प्रकाशित होता, परन्तु कुछ आकस्मिक कारणोंसे उसके फण्डमें कमी आगई और अर्थाभावके कारण वह संभव न हो सका। तब इसे माणिकचन्द्र-ग्रन्थमालामें प्रकाशित करनेका निश्चय किया गया।

परन्तु यह ग्रन्थमाला भी तो धनसम्पन्न नहीं है, समाजसे जो दस पन्द्रह हजार रुपया इसे मिला है उससे ही यह अब तक चल रही है और किसी तरह अत्यन्त मितव्ययसे ३५-३६ ग्रन्थ प्रकाशित करनेमें समर्थ हुई है। बड़ी कठिनाईसे महापुराणका यह प्रथम भाग प्रकाशित किया जा रहा है और उत्तरभागके लिये चिन्ता है कि क्या किया जाय। पूर्वप्रकाशित ग्रंथोंकी बिक्री इतनी कम है कि उसके भरोसे इस महान् ग्रन्थके प्रकाश करनेका साहस नहीं किया जा सकता। यह तो तभी संभव हो सकता है जब जैनसमाज अपने अमूल्य साहित्यके प्रति अपने कर्तव्यको कुछ समझे और ग्रन्थमालाको इतना दरिद्र न रहने दे।

अभिमानमेरु पुष्पदन्तके ग्रन्थ जैनसाहित्यकी अमूल्य निधि हैं और ऐसी निधि हैं जिनका वह गर्व कर सकता है। परन्तु दुर्भाग्यकी बात है कि हमारा समाज उस भाषाको एक तरहसे बिलकुल ही भूल गया है, जिसमें इस महान् कविने और इसके पूर्व-उत्तरवर्ती सैकड़ों कवियोंने अपनी सरस, सालंकार, सुपदन्यास रचनाओंसे सरस्वती माताका अपूर्व शृंगार किया था। एक समय था जब ये रचनाएँ घर घर पढ़ी और गाई जाती थीं और इनका संस्कृत काव्योंसे भी अधिक आदर था। सर्वसाधारण जनता शायद इसी भाषाको समझती थी और अपने कलाप्रेमको परितृप्त करती थी। परन्तु आज यह दशा है कि जहाँ हमारे समाजमें संस्कृतके जाननेवाले सैकड़ों विद्वान् हैं वहाँ इस भाषाके जानकार दस पाँच भी कठिनाईसे मिलेंगे। हमारे भंडारोंमें अब भी अपभ्रंश-साहित्यके सैकड़ों ग्रन्थ मौजूद हैं परन्तु पंडित कहलानेवाले भी उन्हें कोई महत्त्वकी चीज नहीं समझते। यह भी नहीं जानते कि आखिर ये किस भाषामें हैं। उन्हें पता नहीं कि वर्तमान प्रान्तिक भाषायें इसी भाषाकी बेटियाँ हैं इसलिये आज भाषा-शास्त्रियोंके लिये इसका साहित्य बड़े ही महत्त्वका साहित्य बन गया है। बॉम्बे, अलाहाबाद, बनारस और नागपूर यूनीवर्सिटियोंने अभी अभी इस साहित्यके एक दो ग्रन्थोंको अपने पाठ्य-क्रममें स्थान दिया है और आशा है कि शीघ्र ही अन्य यूनीवर्सिटियाँ भी इस ओर ध्यान देंगी। मेरा तो विश्वास है कि किसी भी प्रान्तीय भाषाका ज्ञान तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक वह अपभ्रंश-साहित्यको थोड़ा बहुत न जान ले। इस दृष्टिसे जो विद्यार्थी हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगाली आदि प्रान्तीय भाषाओंको लेकर एम० ए० होते हैं, उनके लिये अपभ्रंश-साहित्यके ग्रन्थ अनिवार्य रूपसे पढ़ने होंगे।

इस ग्रन्थका सम्पादन संशोधन संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओंके प्रकाण्ड विद्वान्, वाडिया कॉलेजके प्रोफेसर डॉ० परशुराम लक्ष्मण वैद्य एम्. ए., डी. लिट. द्वारा हुआ है। आपने अपनी स्वाभाविक उदारता और अपभ्रंश-साहित्यके प्रेमवश ही इस कार्यको किया है, अन्यथा इस दरिद्र ग्रन्थमालाकी उन जैसे धुरंधर विद्वानोंसे कार्य कराने जैसी शक्ति कहाँ है? इसके लिये ग्रन्थमालाके संचालक डॉक्टर साहिबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं, साथ ही प्रो० हीरालालजीकी भी ग्रन्थमाला ऋणी है जिनके सहयोग और उद्योगसे यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है और जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थकी अंग्रेजी भूमिकाका हिन्दी सारांश भी लिख दिया है। यह माला कारंजा-सीरीजके अधिकारीवर्गकी भी कृतज्ञ है जिन्होंने बहु व्ययसे तैयार की गई इसकी प्रथम प्रेस-कापी इस मालाको प्रदान कर दी।

बम्बई
१-८-३७

नाथूराम प्रेमी,
मंत्री

INTRODUCTION

The Mahāpurāna or Tisatthimahāpurisaguṇālaṃkāra is the earliest and the largest of the three known works of Puṣpadanta in Apabhraṃśa. Of the two smaller works, the Jasaharacariu was edited by me and published in the Kāranjā Jaina Series, Vol. I, 1931. The Nāyakumāracariu was edited by Professor Hiralal Jain and published in the Devendrakīrti Jaina Series, Vol. I, Kāranjā, 1933. I am now presenting to the reader the first volume of Puṣpadanta's Mahāpurana comprising the Adipurāṇa, and hope to complete the work in two more volumes. When I announced in my introduction to Jasaharacariu that I had undertaken the edition of the Mahāpurāṇa I did not realise how enormous the task before me was, and what financial and other difficulties the editor and the publishers might be involved into, but I am glad, after six long years of waiting, to offer to the linguists and the students of the Jain culture the first volume of this great work, and now I can assure the reader that if no further difficulties arise, I would offer the rest of the work within the next two or three years' time, so that all the three extant Apabhraṃśa works of Puṣpadanta will have been brought to light.

This Volume contains the first thirty-seven Saṃdhis out of the total of one hundred and two of the entire work. This portion is popularly known as the Adiparva or Ādipurāna, and describes the lives of Risaha or Ṛṣabha, the first Tīrthaṃkara, and of Bharata, the first Cakravartin. The second volume will begin with the thirty-eighth saṃdhi and end with the eightieth, and the third volume will cover all the remaining saṃdhis. Dr. Ludwig Alsdorf of Hamburg, Germany, has just published in Roman characters a portion of the Mahāpurāna under the title "Harivaṃśapurāna, Ein Abschnitt aus der Apabhraṃśa Welthistorie, Mahāpurāṇa Tisaṭṭhimahāpurisaguṇā-

laṃkāra von Puṣpadanta, Hamburg, 1936", which contains saṃdhis 81–92 of the work. This portion will be re-edited in Devanāgarī characters and incorporated in the third volume, so that the entire work will now be made available to the public in a uniform edition. Besides as we now possess more Mss. than Dr. Alsdorf was then able to get, improvement on his work may be possible.

The text of the entire Mahāpurāṇa will cover approximately 2000 pages of the royal size, of which the present volume contains 600. It is clear that the whole of the Mahāpurāna could not be conveniently issued in one volume. I therefore propose to include in each volume an Introduction, dealing chiefly with the problems which concern the text of that volume only, reserving larger questions arising out of entire text for the Introduction to the third and the last volume. Moreover, Introductions to Jasaharacariu and Ṇayakumāracariu already contain some information about the author, the language of his works, metres etc., which the reader is presumed to possess.

THE CRITICAL APPARATUS

The text of the Adipurāna or of the present volume of the Mahāpurana is based upon the following five Mss. fully collated.

1. G. This Ms. consists of 503 leaves measuring 11″ × 5″. It has 8 lines to a page and about 29 letters to a line. It was written at Ghoghā Mandir, is dated 1575 of the Saṃvat era, or 1441 of the Śaka era, corresponding to 1518 A. D. It uses pṛsthamātrās and has brief marginal gloss. It is a well-preserved Ms., belongs to the Balātkāra Gaṇa Mandir at Kāranjā, Berar, and bears No. 524 of their list (No. 7752 of the Catalogue). It was secured for my use by Professor Hiralal Jain. It begins:—॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and ends:—
इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहररिसहणाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥ आइयं पव्वं समत्तं ॥ शुभं भवतु संघस्य ॥ स्वस्ति श्री सं० १५७५ वर्षे शाके १४४१ प्र० दक्षणायने ग्रीष्मऋतौ ज्ये... वदि ७ रवौ घोघामंदिरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीमत्कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीविद्यानन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचंद्र तच्छिष्य मुनीश्रीनेमिचंद्र । देशानुंवडज्ञातीयगांधी श्रीपाति तस्यांगना बाई सभू तयोः पुत्र गांधी काहआ गांधी सांता । तेषां मध्ये बा० सभू तया लिखाप्य प्रदत्तमिदमादिपुराणशास्त्रं मुनिश्रीनेमिचंद्रेभ्यः ॥ शुभ भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ ग्रं० ८००० ॥ भ० लक्ष्मीचंद्रेभ्यः प्रदत्तं ॥ चिरं नंदतु ॥ शुभं भूयात् ॥

This is one of the best and the most authentic of the Mss. of the work that I possess. My text therefore is based mainly on this Ms. There have been a few—indeed very few—occasions when I had to adopt a reading other than the one given in it, but I feel confident that there were sufficient reasons for doing so on every such occasion.

2. K. This is a paper Ms. containing 732 pages measuring 16″ × 4″. Of these 732 pages, 288 are covered by the Ādipurāṇa or Ādiparva as it is called there. Each page contains 8 lines with about 50 letters to a line. The Ms. is carefully written and has copious marginal gloss. The words of the text are separated by a vertical stroke between words to be separated. Occasional use of pṛsthamātrās is noticed. The Ms. is decorated with thick red lines indicating the margin and there are three dots in red ink of the size of a four-anna silver coin, two in margins and one in the centre of the page where a square blank space is left. It seems that these dots represent the holes of a palm leaf Ms. from which this Ms. may have been copied. I secured this Ms. through my friend and pupil, Professor A. N. Upadhye of the Rajaram College, Kolhapur, who obtained it from his friend Mr Tatyasaheb Patil of Naudni, near Kolhapur. It begins:— ॥ ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and the Adipurāṇa portion ends :— इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहरिसहणाहणिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेउ समत्तो ॥ आइपव्वं समत्त ॥. It adds in a different hand : भ० श्रीवीरचंद्रास्तत्पट्टे भ० लक्ष्मीचंद्रास्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषणास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्राणां पुस्तकं ॥ The Uttarapurāṇa portion ends:—इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वीरजिणिंदणिव्वाणगमणं णाम दुत्तरसयपरिच्छेयाणं महापुराणं समत्तं ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रं ॥ श्लोकसंख्या २०००० (?) ॥ शुभं भवतु ॥. We find on the final blank leaf :—भ० लक्ष्मीचंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्राणां पुस्तकं ॥ It adds further in a different hand : भ० श्रीवादिचंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीमहीचंद्रस्तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचंद्राणां पुस्तकं ॥

The entire work seems to be written in one hand ; in fact this is the only Ms. of the whole of the Mahāpurāṇa, i. e., Ādipurāṇa and Uttarapurāṇa, written in one hand, that I have so far discovered. This Ms. seems to preserve the text as in G described above, but seems to be corrected to the version represented by the M B P group of Mss., in a different hand. This Ms. thus represents a mixed text. It is however easy to decipher what the original reading might have been. The gloss in the margin is more copious than in the Ṭippaṇa

of Prabhācandra, (for which see below). There is no indication of the age of the Ms. although its original, probably a palm-leaf Ms., represents the older of the two recensions of our text. The corrections made therein to make it agree with a later recension of our text represented by the M B P group are made in a different hand, perhaps after about three generations of monks who owned it.

3. M. This Ms. consists of 470 leaves measuring 11″ × 4½″. It has 8 lines to a page and about 33 letters to a line. It is written in Mathurā, modern Muttra, in 1883 of the Saṃvat era, i.e. in 1826 A.D. It is written in good modern hand and has some gloss in the margin, but not so copious as in K. or in the Tippana of Prabhācandra. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 1050 of 1887-91. It begins :—ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and ends :— इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहररिसहणाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ संधि ३७ ॥ संवत् १८८३ का मिती वैशाख शुक्ल ३ बुधवासरे ॥ शुभं भवतु ॥ लिखितं श्रीमथुरापुरीमध्ये ब्राह्मण श्यामलाल ॥ श्रीजिनधर्मप्रतिपालक श्रीमहाराजाधिराजश्रीकुमरजी चेतरामजी पठनार्थं वा परोपकारार्थं ॥ शुभ दीर्घायुर्भवति पुत्रवृद्धिर्भवति ॥ श्रीजिनधर्मप्रवर्तन करोति ॥ श्री आदिनाथेभ्यो नमः ॥ समाप्तोय आदिपुराणः ॥ शुभं ॥

4. B. This Ms. consists of 306 leaves measuring 11″ × 5″. It has 9 lines to a page and about 33 letters to a line It belongs to the Balatkāra Gaṇa Mandir at Karanjā, Berar, and bears No. 523 of their list (No. 7753 of the Catalogue). It was secured for my use by Prof. Hiralal Jain of Amraoti. It was written at Yogimpura, i. e., Dehli, in 1659 of the Saṃvat era, i. e., 1602 A. D. The Ms. is worn out, and its margins are decayed. It is an indifferently written Ms., omits portions mechanically while copying from its original, and has no gloss at all. I was at one time inclined to stop collating it, but did not do so for the simple reason that I thought I might find in it a version not influenced by the marginal gloss. I was however disappointed to see that the Ms. was very indifferently prepared. It begins:-ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and ends :- इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहररिसहनाहभरहनिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ संधि ३७ ॥ आदिपुराण संदृब्धयेन जात ॥ श्लोकमानेनाष्टसहस्राणि अंकतो ग्रंथ ८००० ॥ अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविवर्जितरेफं ॥ साधुभिरेव मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥ योगिनीपुरदुर्गस्थाने जलालदीनसाहिअकबर-

राज्ये अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६५९ पोषसुदि ५ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीसिंघकीर्तिदेवा...............

5. P. This Ms. is incomplete and has lost a portion at the end. The available portion of it consists of 305 leaves measurig $11\frac{1}{2}'' \times 5''$. It has 9 lines to a page and abont 30 letters to a line. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 370 of 1879–80. It seems to be a very old Ms., edges of leaves being worn out. There is a profuse marginal gloss. The prsthamātrās are used. The available portion ends with a part of the third kaḍavaka of the 28th saṃdhi (see foot-note 8 on this kaḍavaka on page 433 of our edition). This Ms. preserves a recension which is metrically correct, i. e., it uses इ, ए, उ and ओ as they are required for their correct metrical value almost uniformly. I found it therefore very convenient to follow it for this purpose, and hence have not recorded variants like पणविवि and पणवेवि where पणविवि respresents the metrically correct form. It beings:—स्वस्ति ॥ ओं नमः ॥ सिद्धेभ्यः ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and ends with चामर° in XXVIII 3. 11.

In addition to these five Mss. fully collated, I came across three more Mss of the Ādipurāṇa. Of these one is deposited in the Sena Gaṇa Mandir at Kāranjā, (No. 7754 of Rai Bahadur Hiralal's Catalogue of Mss. in C. P & Berar). I examined it on the spot during my visit to that place in 1927. This Ms. was got copied at her own cost by a lady ancestor of the famous Chaware family of Kāranja and presented by her to the Bhaṭṭāraka of the temple. It is dated Wednesday the 8th of the dark half of Kārtika of 1591 of the Saṃvat era, i.e., 1534 A.D. As I could not secure it for full collation, I prepared some trial collations from it, but as they did not reveal any difference in the variants other than those found in M B P, I dropped the idea of incorporating them in my apparatus. The two other Mss. belong to the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. One of them bears No. 1140 of 1891–96. It is incomplete and carelessly written. It contains the first 19 saṃdhis only, and is dated the 5th day of the bright half of Jyeṣṭha of 1848 of the Saṃvat era, i. e., 1791 A. D. I made some trial collations from this Ms. but found the variants agreeing with those of M B P and hence did not collate it further. The other Ms. from the Bhandarkar

Oriental Research Institute bears No. 1139 of 1891–95. It is dated Wednesday, the 10th of the bright half of Phālguna of 1925 of the Saṃvat era, i. e., 1868 A. D. This Ms. consists of three parts written in three different hands and on two different kinds of paper. The first part consists of 142 leaves and contains the text of the first sixteen saṃdhis. The second part contains 177 leaves which are numbered from 1 to 177, and not from 143. The third part contains the remaining 33 pages, numbered from 178, but written by a different person. I made some trial collations from this Ms. also, but did not find variants different from those found in M B P, and hence did not collate it further. This Ms. puts dots at places where the writer was unable to decipher his original either because it was illegible or damaged. Besides, these last-named Mss. are considerably modern and could, on that account too, be ignored.

By far the most important aid for fixing the text and preparing the critical apparatus was obtained from the Ṭippaṇa of Prabhācandra (T in the Critical Apparatus). I Secured a Ms. of this Ṭippaṇa on the Ādipurāṇa portion from the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, which bears No. 563 of 1876–77. This Ms. measures $15\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{2}''$, has 51 leaves, with 13 lines to a page and 45 letters to a line. The script used is peculiar in that words like द्वितीय are written like द्विता ι. There is no indication as to its age, but from appearance it seems to belong to the 16th century A. D. It begins :—ॐ णमो वीतरागाय ॥ प्रणम्य वीरं विबुधेन्द्रसंस्तुतं निरस्तदोषं वृषभं महोदयम् । पदार्थसंदिग्धजनप्रबोधकं महापुराणस्य करोमि टिप्पणम् ॥ १ ॥ सिद्ध्यादि सिद्धिरनन्तचतुष्टयप्राप्तिः सैव वधूस्तस्या मनोरञ्जनार्थं स्वरजन्यः. It ends :—इति सप्तत्रिंशत्तमसंधि समाप्ताः ॥ समस्तसंदेहहरं मनोहरं प्रकृष्टपुण्यं प्रभवं जिनेश्वरम् । कृते पुराणे प्रथमे सुटिप्पणं सुखावबोधं निखिलार्थदर्पणम् ॥ इति श्रीप्रभाचन्द्रविरचितमादिपुराणटिप्पणकं पञ्चाशश्लोकहीनं सहस्रद्वयपरिमाणं परिसमाप्तं ॥ शुभं भवतु ॥

I also examined a Ms. of Prabhācandra's Ṭippaṇa on the Uttarapurāṇa which I obtained, through the kindness of Professor Hiralal Jain, from Master Motilal Sanghi of Jaipore. This Ms. measures $12'' \times 5\frac{1}{2}''$, has 57 leaves with 13 lines to a page and about 31 letters to a line. It begins:—ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ बंभहो परमात्मनः. It ends :—श्रीविक्रमादित्यसंवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिकसहस्रे महापुराणविषमपदविवरणं सागरसेनसैद्धान्तात् परिज्ञाय मूलटिप्पणकां चालोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं अज्ञपातभीतेन श्रीमद्बला...रगणश्रीसंघाचार्यसत्कविशिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निजदोर्दण्डाभिभूतरिपुराज्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥ इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचंद्राचार्यविरचितं

समाप्तम् ॥ अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५७५ वर्षे भाद्रवासुदि। बुद्धदिने। कुरुजांगलदेसे। सुलितानसिकंदरपुत्र सुलितानब्राहिमु राज्यप्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे मथुरान्वये पुष्करगणे। भट्टारकश्रीगुणभद्रसूरिदेवाः। तदाम्नाये जैसवालु चौ. टोडरमल्लु। इदं उत्तरपुराणटीका लिखापित ॥ सुभं भवतु ॥ मांगल्यं ददाति लेखकपाठकयोः ॥ This Ms. is dated Saṃvat 1575, i. e. 1578 A. D.

On examining the colophon of the author of the Tippaṇa we learn some very important and interesting particulars about the manner of its composition. We learn that the Tippana was composed in the year 1080 of the Vikrama era, i. e., 1023 A. D., i. e., within sixty years of the completion of the Mahāpurāṇa by Puṣpadanta ; we also learn that king Bhoja of Dhārā was then ruling in Malva ; that Prabhācandra consulted the works of Sāgarasena for his Tippaṇa ; that he also consulted the original Tippaṇa, probably of Puspadanta himself (मूलटिप्पणकां चालोक्य), and prepared a collected Tippana (समुच्चयटिप्पणं) on the Mahapurāṇa, embodying the original Tippaṇa. An author's writing a Tippana on his own work may appear somewhat strange, but it is not altogether impossible, for I had an occasion to examine Mss. written by the authors of the 18th century in their own hand bearing also a gloss in their own hand, and I feel certain that these authors must have borrowed the mentality of writing a gloss on their own works from their forefathers. I therefore think that Puṣpadanta must have written a short gloss on the difficult words of his work ; this gloss must have been amplified by Prabhācandra, and that the process of amplification must have continued still further down. The gloss found in Mss. of our text is not identical with the Tippaṇa of Prabhācandra, but is one which is either abriged or amplified.

Professor Hiralal Jain, in his Introduction (LXIII—LXIV) to the Ṇāyakumaracariu refers to the colophon of a Ms. of the Tippaṇa of Prabhācandra which he came across, and says that Prabhācandra lived in the reign of Jayasimhadeva of Dhārā (*circa* 1055 A. D.) But in view of the express mention of the date, 1080 of the Vikrama era, i. e., 1023 A. D. and of the reign of King Bhoja in our Ms., we must regard that reference to a subsequent copy of the work, perhaps by Prabhācandra himself. Our Ms. of the Tippana again does not contain the stanza तत्त्वाधारमहापुराण etc. Prabhācandra might have added this stanza in a subsequent copy of his work at a later date, which assumption may also explain the reference to king Jayasiṃhadeva.

The critical apparatus described above divides the Mss. into two groups, one comprising G and K, and the other M, B and P, not only because of the general agreement of the variants noted, nor on account of additions or omissions to the original text in a particular group (see page 514), but also on the strength of the agreement of the Praśasti stanzas found at the beginning of several saṃdhis. I have already alluded to this topic in my Introduction to Jasaharacariu (page 21), but I think it is necessary to discuss it in detail as it throws considerable light on the Ms. tradition of the works of Puṣpadanta and also the principle on which I have grouped the Mss. and valued them.

THE PRASASTI STANZAS OF THE MAHĀPURĀṆA *

When I had an occasion to study the manuscript material for my edition of Jasaharacariu, I discovered that certain Mss. contained, at the commencement of a saṃdhi, stanzas in praise of the poet's patron, Nanna, while others did not record them. In the course of the collation of Mss. I also discovered the fact that those Mss. which contained these praśasti stanzas agreed very closely in one set of variants, while those Mss. which did not contain these stanzas agreed very closely in equally another set of variants. On further examination I found that those Mss. which did not give the praśasti stanzas presented an older recension of the text, while those that contained these stanzas presented a later and amplified recension. In the case of the Jasaharacariu the amplified passages were located and their author and his date found out. As that interpolator, who lived four centuries after the poet, had nothing to do with the poet's patron, I was convinced that the poet himself must have composed these praśasti stanzas, and was forced to advance a hypothesis that the poet himself, with the help he obtained from his patron, must have got made two or three sets of copies of his work, in one of which he wrote, at leisure, at first in the margin perhaps, some stray stanzas glorifying his patron, while other set or sets had already gone out of his hand without the addition of these stanzas. This hypothesis, briefly enunciated on

* Some of the Praśasti stanzas are put together by Pandit Nathuram Premi in his article on Puṣpadanta in Jain Sāhitya Saṃśodhaka, Vol II. No I, 1923.

page 21 of the Introduction to Jasaharacariu, enabled me then to fix up that Mss. S and T of the work presented an older version. I had there an occasion to test the correctness of the hypothesis by referring to one of the Praśasti stanzas of the Mahāpurāṇa, viz.,

दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
क्वेदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

which puzzled the historian in respect of the fixing of the date of the composition of the Mahāpurāṇa, in as much as the plunder of Mānyakheṭa, a well-ascertained historical event of 972 A. D., was referred to by the poet in the middle of the work in the above-mentioned stanza found in the Kāranjā Ms. at the beginning of the 50th samdhi, while the completion of the Mahāpurāṇa in the Krodhana year, i. e., in 965 A. D., was an equally certain event. I found that the stanza did not occur in my Ms. K. This fact coupled with the absence of praśasti stanzas in my best Mss. of the Jasaharacariu enabled me to advance the hypothesis set out above, which further examination of a large number of Mahāpurāṇa Mss. fully corraborates. The Ṇāyakumaracariu of Puspadanta, which was then being prepared for the Press by my friend Professor Hiralal Jain, did not contain any praśasti stanzas in any of his Mss., and hence I could not test the accuracy of my hypothesis there. I therefore proceeded to collate the praśasti stanzas occurring at the beginning of the saṃdhis of the Mahāpurāṇa. I have not so far discovered a Ms. of the Mahāpurāṇa which has no praśasti stanzas: at the same time I have found that Mss. do not agree in giving them all. I have however found that groups of Mss. agree amazingly in giving a stanza at a particular place or omitting it altogether. A smaller number of stanzas was found in my Mss. G and K of the Ādipurāṇa, while the remaining Mss. gave a much larger number of them. I therefore regard that G and K preserve an older, if not the oldest, recension of the text of the Ādipurāṇa. I think that these stanzas do not form an integral part of the text and hence they are relegated to notes in the Critical Apparatus. I however believe that they were composed by the poet himself as nobody could be interested in glorifying Bharata to such extent. I also believe that the poet composed these stanzas

long after he had completed the composition of the Mahāpurāṇa. At any rate the stanza दीनानाथधनं etc. he could not have written before 972 A. D., i. e., seven years after the completion of the Mahāpurāṇa. As the question of these stanzas is important for the manuscript tradition and as they throw considerable light on the relation of the poet with his patron Bharata and allied topics, I give them all arranged in groups, i. e., (a) those found in G and K; (b) those found in other Mss. of the Ādipurāṇa; (c) those found in Poona, Kāranjā and K of the Uttarapurāna portion; and (d) those found exclusively in the Jaipore Ms.. I have also numbered them consecutively for easy reference in the next section.

(a) 1. (I) आदित्योदयपर्वतादुरुतराचन्द्रार्कचूडामणे-
र‍ा हेमाचलतः कुबेरशानिलयाद्वा सेतुबन्धाद् दृढात् ।
आ पातालतलादहीन्द्रभवनाद्वा स्वर्गमार्गं गता
कीर्तिर्यस्य न वेत्ति भद्र भरतस्याभाति खण्डस्य च ॥

This stanza states that the fame of Bharata, the patron and friend of Khanda, i. e., the poet himself, has pervaded the entire universe. The stanza is found at the commencement of the 3rd samdhi in G and K, but at the beginning of the 2nd samdhi in the remaining Mss. (See foot-note on page 18 and also note the variants).

2. (ii) सौभाग्य शुचिना क्षमा भुजबल शौर्यं वपुः सुन्दरं
सत्यं सर्वजनोपकारकरणं वृत्तं स्वकं सन्मतम् ।
हे विद्वन् भरतस्य भूतिजननं विद्यार्थिनामाशु य-
स्यैकैकं गुणमङ्गमूर्जितधिया पुंसामचिन्त्यं भुवि ॥

This stanza mentions some of the qualities which Bharata, the poet's patron, possessed. This stanza is found exclusively in G and K at the beginning of the fourth saṃdhi.

3. (iii) भ्रूलीला त्यज मुञ्च मंगनकुचद्वन्द्वादिकं वक्षमा
मा त्वं दर्शय चारुमध्यलतिका तन्वाङ्गि कामाहता ।
मुग्धे श्रीमदनिन्द्यखण्डसुकवेर्बन्धुर्गुणैरुन्नतः
स्वप्नेऽप्येष पराङ्गना न भरतः शौचादृषिर्वाञ्छति ॥

This stanza states that Bharata, the poet's friend and patron, is so virtuous that he would never think of the wife of another person. The stanza is found at the beginning of the 5th saṃdhi in G and K,

and in other Mss. also at the same place. (See footnote on page 72 and also note the variants).

4. (iv) एको दिव्यकथाविचारचतुरः श्रोता बुधोऽन्यः प्रियः
एकः काव्यपदार्थसंगतमतिश्चान्यः परार्थोद्यतः ।
एकः सत्कविरन्य एष महतामाधारभूतो विदां
द्वावेतौ सखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

This stanza brings out the characteristics of the poet and his patron, both of them adorning the earth. The stanza is found in G and K at the beginning of the eighth saṃdhi, but in all others at the beginning of the 9th saṃdhi.

5. (v) जगं रम्मं हम्मं दीवओ चन्दबिम्बं
धरित्ती पल्लंको दो वि हत्था सुवत्थं ।
पिया णिद्दा णिच्चं कव्वकीला विणोओ
अदीणत्तं चित्ते ईसरो पुप्फदन्तो ॥

This stanza states that the poet Puṣpadanta is a king in as much as he has the nobility of mind : the whole world is his fine mansion-house, the moon the lamp, the ground his bed-stead, his arms his clothing, sleep his beloved and poetry his pastime. The stanza is found in G and K, and in all other Mss. at the beginning of the tenth samdhi, and also at the beginning of the fiftieth saṃdhi of the Uttarapurāṇa in Poona, Jaipore and Kāranjā Mss.

6. (vi) णाइन्दसुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
सिरिकुसुमदसणकइमहणिवासिणी जयइ वाईसी ॥

7. (vii) तन्त्रीवाद्यैरनिन्द्यैर्वरकविरचितैर्गद्यपद्यैरनेकैः
कान्तं कुन्दावदातं दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरौघैः ।
काले तृष्णाकराले कलिमलमलितेऽप्यद्य विद्याप्रियो गां
सोऽयं संसारसारः प्रियसखि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥

Of these the first stanza glorifies the poetic genius of Puṣpadanta and the second glorifies Bharata, the poet's patron, for his appreciation of learning in the Kali age. These stanzas are found in G and K at the beginning of 30th saṃdhi and in MBP and others of this group at the beginning of 29th saṃdhi.

8. (viii) प्रतिगृहमटति यथेष्टं बन्दिजनैः स्वैरसङ्गमावसति ।
भरतस्य वल्लभासौ कीर्तिस्तदपीह चित्रतरम् ॥

The stanza notes that it was strange on the part of Bharata still to cherish love for fame, conceived as his wife, when she wanders wantonly in every house and freely dallies with bards. This stanza is found in G and all Mss. of the other group, but is missing in K. The want of agreement in G and K in this respect, however, strengthens my hypothesis that these stanzas do not form an integral part of the text, but were composed by the poet at a later stage and added in the margin of some of the copies of his work that he still had with him.

The agreement existing between G and K regarding the location of the above-mentioned praśasti stanzas led me to believe that they formed a group by themselves. This belief of mine was confirmed by a general agreement of the variants and also by non-inclusion of a long passage, found in Mss. of the other group and noted by me in the Critical Apparatus on page 514 of the printed text. Further, the fact that the number of praśasti stanzas in the other group is much larger than in this group indicates that this group of Mss. represents an older recension than the other one. Occasional disagreement between G and K is due to the fact that K represents a mixed version, the text in it being corrected on the model of the text in the MBP group at numerous places. I have noted all such places in the Critical Apparatus where I was able to read the original and the corrected variants, but at places the pigment or the ink was applied rather thick which made it difficult for me to decipher the Ms. correctly.

The second group of Mss. in my Critical Apparatus is represented by M, B and P. Besides these, I had an occasion to consult three more Mss., one from the Sena Gana Bhāṇḍāra at Kāranjā and two from the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. All the Mss. of this group contain the Praśasti stanzas, (i) and (iii–viii) given above. Over and above this, they also contain the following :—

(b) 9 (i) बलिजीमूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।
संप्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥

(Found at the beginning of the third saṃdhi).

10. (ii) आश्रयवशेन भवति प्रायः सर्वस्य वस्तुनोऽतिशयः ।
भरताश्रयेण संप्रति पश्य गुणा मुख्यतां प्राप्ताः ॥

(Found at the beginning of the fourth saṃdhi).

11. (iii) श्रीर्वाग्देव्यै कुप्यति वाग्देवी द्वेष्टि संततं लक्ष्म्यै ।
भरतमनुगम्य सांप्रतमनयोरात्यन्तिकं प्रेम ॥

(Found at the beginning of the sixth saṃdhi).

12. (iv) हंहो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता
कोऽयं श्यामः प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः ।
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवलयशोधौतधात्रीतलान्तः
ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

(Found at the beginning of the seventh saṃdhi).

13. (v) मातर्वसुंधरि कुतूहलिनो ममैत-
दापृच्छतः कथय सत्यमपास्य शाठ्यम् ।
त्यागी गुणी प्रियनमः सुभगोऽतिमानी
किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतार्यतुल्यः ॥

(Found at the beginning of the eighth saṃdhi).

14. (vi) सूर्यात्तेज (?) गभीरिमा जलनिधेः स्थैर्यं सुराद्रेर्विधोः
सौम्यत्वं कुसुमायुधात्सुभगतां त्यागं बलेः संभ्रमान् ।
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा सखे सांप्रतं
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशसः खण्डः (?) कवेर्वल्लभः ॥

(Found at the beginning of the eleventh saṃdhi).

15. (vii) तीव्रापद्दिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

(Found at the beginning of the thirteenth saṃdhi and also at the beginning of the thirty-fourth saṃdhi).

16. (viii) कैलासुब्भासिकन्दा धवलदिसिगउग्गिण्णदन्तङ्कुरोहा
सेसाहीबद्धमूला जलहिजलसमुब्भूयपिण्डीरपत्ता ।

सम्मण्डे विस्थरन्ती अमयरसमयं चन्दबिम्बं फलन्ती
फुल्लन्ती तारओहं जयइ नवलया तुज्झ भरहेस कित्ती ॥

(Found at the beginning of the fourteenth saṃdhi).

17. (ix) त्यागो यस्य करोति याचकमनस्तृष्णाङ्कुरोच्छेदनं
कीर्तिर्यस्य मनीषिणां वितनुते रोमाञ्चचर्चं वपुः ।
सौजन्यं सुजनेषु यस्य कुरुते प्रेम्णोऽन्तरां निर्वृतिं
श्लाघ्योऽसौ भरतः प्रभुर्न भवेत्काभिर्गिरां सूक्तिभिः ॥

(Found at the beginning of the fifteenth saṃdhi. It is also found at the beginning of the 95th saṃdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss.)

18. (x) वलिभङ्गकम्पिततनु भरतयशः सकलपाण्डुरितकेशम् ।
अत्यन्तवृद्धिगतमपि भुवनं वि (यं ?) भ्रमति तच्चित्रम् ॥

(Found at the beginning of the seventeenth saṃdhi. It is also found at the beginning of the 102nd saṃdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss.)

19. (xi) शशधरबिम्बात्कान्तिस्तेजस्तपनाद्गभीरतामुदधेः ।
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥

(Found at the beginning of the eighteenth saṃdhi. It is also found at the beginning of the thirty-ninth saṃdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss.)

20. (xii) श्यामरुचि नयनसुभगं लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।
भरतच्छलेन संप्रति कामः कामाकृतिमुपेतः ॥

(Found at the beginning of the nineteenth saṃdhi).

21. (xiii) फणिनि विमुञ्चतीव मेचकरुचि कचनिचयेषु योषिता-
मलकिषु मूर्च्छतीव हसतीव तमालतलेषु पुञ्जितम् ।
मदमुचि मायतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले
दिशि दिशि लिम्पतीव पिबतीव निमीलयतीव खङ्गणे (?) ॥

(Found at the beginning of the twentieth saṃdhi).

22. (xiv) यस्य जनप्रसिद्धमत्सरभरमनवमपास्य चारुणि
प्रतिहतपक्षपातदानश्रीरुरसि सदा विराजते ।

वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे
स जयति जयतु जगति भरतेश्वर सुजनयनमलमङ्गलः ॥

(Found at the beginning of the twenty-first saṃdhi).

23. (xv) मदकरिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना
मृगपतिनादेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम् ।
निर्मलतरपवित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा
भारतमङ्ग सास्तु देवी तव बहुविधमम्बिका मुदे ॥

(Found at the beginning of the twenty-second saṃdhi).

24. (xvi) अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नखनिकुरम्बकर्णिकं
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुव्रतचक्रचुम्बितम् ।
विलसदनुप्रतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमलं
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

(Found at the beginning of the twenty-third saṃdhi).

25. (xvii) हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डलं
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसममंकरे ।
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमधः क्षित-
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

(Found at the beginning of the twenty-fourth saṃdhi).

26. (xviii) उन्नतातिमनुमात्रपात्रता (?) भाति भद्र भरतस्य भूतले ।
काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

(Found at the beginning of the twenty-fifth saṃdhi).

27. (xix) घनधवलताश्रयाणामचलस्थितिकारिणां मुहुर्भ्रमताम् ।
गणनव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणां च ॥

(Found at the beginning of the twenty-sixth saṃdhi).

28. (xx) गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥

(Found at the beginning of the twenty-seventh and thirty-seventh saṃdhis).

29. (xxi) मुखनालिनोदरसद्मनि गुणधृतहृदया सदैव यद्वसति ।
चोज्जमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥

(Found at the beginning of the twenty-eighth saṃdhi).

30. (xxii) बम्भण्डाहण्डलसोणिमण्डलुच्छलियाकित्तिपसरस्स ।
खण्डेण समं समसीसियाइ कइणो न लज्जन्ति ॥

(Found at the beginning of the thirty-second saṃdhi).

31. (xxiii) विनयाङ्कुरशातवाहनादौ नृपचक्रे दिवमीयुषि क्रमेण ।
भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रसक्त एव ॥

(Found at the beginning of the thiry-third saṃdhi. It is also found at the beginning of the fortieth saṃdhi of the Uttarapurāṇa in Poona and Jaipore Mss., but is missing in K).

32. (xxiv) इति भरतस्य जिनेश्वरसमयैकशिरोमणेर्गुणान्वक्तुम् ॥
मानु च वार्धितोयं चुलुकैः कस्यास्ति सामर्थ्यम् ॥

(Found at the beginning of the thirty-fifth saṃdhi)

It will thus be seen that the MBP group of Mss. which I fully collated for my work and at least three more Mss., one from Seṇa Gaṇa Bhaṇḍāra at Kāranjā and two from Poona, contain as many as twenty-four more stanzas at exactly the same point in the Adipurāṇa portion. Some of these are repeated in some Mss. of the Uttarapurāṇa, no doubt, still the evidence strongly supports me to group them together. The variants in the text that they give justify the above view.

The above conclusion led me to see if similar groups of Mss. existed for the Uttarapurāna also. Unfortunately the number of the available Mss. of the Uttarapurāna is very small, viz., four. Of these one is my K, the second comes from the Bhandarkar Institute, Poona, the third from Jaipore and the fourth from the Balātkāra Gaṇa Bhāṇḍāra at Karaṇjā. On examination I found that Poona and Kāranjā Mss. agree in putting certain stanzas at a place, particularly those four that are given at the beginning of the 50th saṃdhi, while K omits these very stanzas there and the Jaipore Ms. distributes them over four different saṃdhis from 50th onwards I give below these stanzas with their location in the four Mss. mentioned above.

(c) 33. (i) वरमकरोद्पारतरविवरमहिकिरणेन्दुमण्डलं
यदपि च जलधिवलयमधिलंघ्य विधेस्तदन्तरं दिशः ।
विगलितजलपयोदपटलद्युति कथमिदमन्यथा यशः
प्रसरदमादमल्लकदनाभारत भुवि भरत साम्प्रतम् ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the beginning of the 41st and the 47th saṃdhis. The Jaipore Ms. has it only at the 41st. K does not give it anywhere).

34. (ii) भास्वानेककलावतोऽस्य च भवेद्यशाम तन्मङ्गलं
सर्वस्यापि गुरुर्बुधः कविरयं चक्रे अयं च (?) क्रमः ।
राहुः केतुरयं द्विषामिति दधत्नाम्यं ग्रहाणां प्रभुः
सप्रत्योदय (?) माननीति भरतः सर्वस्य तेजोऽधिकः ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the beginning of the 50th along with two following and जगं रम्मं हम्मं etc. (see stanza 5 above). The Jaipore Ms. gives this stanza alone at the 50th, and K does not give it anywhere).

35. (iii) सया सन्नो वेसो भसणं सुद्धसीलं
मुसतहं चित्तं सव्वत्थविसु मत्ती ।
मुहं दिव्वा वाणी चारुचारित्तभारो
अहो खण्डस्सेसो केण पुण्णेण जाओ ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the 50th, the Jaipore Ms. gives it at 49th, and K does not give it anywhere).

36. (iv) दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
क्वेदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the 50th, in the Jaipore Ms. at 52nd, and K does not give it anywhere).

37. (v) अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा-
मर्थालंकृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः ।
किं चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते
द्वावेतौ भरतेशपुष्पदशनौ सिद्धं ययोरीदृशम् ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 59th saṃdhi).

38. (vi) बन्धुः सौजन्यवार्धेः कविकुलधिषणाध्वान्तविध्वंसभानुः
प्रौढालंकारसारामलतनुविभवा भारती यस्य नित्यम् ।
वक्त्राम्भोजानुरागक्रमनिहितपदा राजहंसीव भाति
प्रोद्यद्गम्भीरभावा स जयति भरते धार्मिके पुष्पदन्तः ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 63rd saṃdhi).

39. (vii) आखण्डोड्डमरारवं डमरुकं चण्डीशमाश्रित्य यः
कुर्वन् काममकाण्डताण्डवविधिं डिण्डीरपिण्डच्छवेः ।
हंसाडम्बराडिण्डमण्डललसद्गागीरथीनायकं
वाञ्छन्नित्थमहह कुतूहलवती खण्डस्य कीर्तिः कृतेः ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 64th saṃdhi).

40. (viii) आजन्मं (?) कवितारसैकधिषणासौभाग्यभाजो गिरां
दृश्यन्ते कवयो विशालसकलग्रन्थानुगा बोधतः ।
किं तु प्रौढनिरूढगूढमतिना श्रीपुष्पदन्तेन भोः
साम्यं बिभ्रति (?) नैव जातु कविता शीघ्रं ततः प्राकृते ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 65th saṃdhi).

41. (ix) यस्येह कुन्दामलचन्द्ररोचिःसमानकीर्तिः ककुभां मुखानि ।
प्रसाधयन्ती ननु बंभ्रमीति जयत्वसौ श्रीभरतो नितान्तम् ॥

42. (x) पीयूषसूर्तिकिरणा हरहासहार-
कुन्दप्रसूनसुरतीरिणिशक्रनागाः ।
क्षीरोदशेषधवलसत्तम (?) हंस (?) चैव
किं खण्डकाव्यधवला भरतः स यूयम् (?) ॥

(Both these stanzas are found in all the four Mss. at the beginning of the 66th saṃdhi.)

43. (xi) इह पठितमुदारं वाचकैर्गीयमानं
इह लिखितमजस्रं लेखकैश्चारु काव्यम् ।
गतवति कविमित्रे मित्रतां पुष्पदन्ते
भरत तव गृहेऽस्मिन् भाति विद्याविनोदः ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 67th saṃdhi).

44\. (xii) चश्चच्चन्द्रमरीचिचमुरचुराचातुर्यचक्रोचिना
चञ्चन्ती विचटच्चमत्कृतिकाविः प्रोद्दामकाव्यक्रियाम् ।
अश्नन्ती त्रिजगन्ति कोमलतया वान्धुर्यधुर्यो रसैः
खण्डस्यैव महाकवेः सभरतान्नित्यं कृतिः शोभते ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 68th saṃdhi).

45\. (xiii) लोके दुर्जनसंकुले हतकुले तृष्णाकुले नीरसे
सालंकारवचोविचारचतुरे लालित्यलीलाधरे ।
भद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ सांप्रतं
कं यास्यस्यभिमानरत्ननिलयं श्रीपुष्पदन्तं विना ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 80th saṃdhi).

The following three stanzas are found only in the Jaipore Ms.

(d) 46. (i) सोऽयं श्रीभरतः कलङ्करहितः कान्तः सुवृत्तः शुचिः
सज्ज्योतिर्मणिराकरो प्लुत इवानर्घ्यो गुणैर्भासते ।
वंशो येन पवित्रतामिह महामत्राह्वयः प्राप्तवान्
श्रीमद्वल्लभराज— कटके यश्चाभवन्नायकः ॥

(Found at the beginning of the 42nd saṃdhi).

47\. (ii) वापीकूपतडागजैनवसतीस्त्यक्त्वेह यत्कारितं
भव्यश्रीभरतेन सुन्दरधिया जैनं सुराणां (पुराणं ?) महत् ।
तत्कृत्वा प्लवमुत्तमं रविकृतिः (?) संसारवार्धेः सुखं
कोऽन्यत् (?) स्तसहसो (?) स्ति कस्य हृदयं तं वन्दितुं नेहते ॥

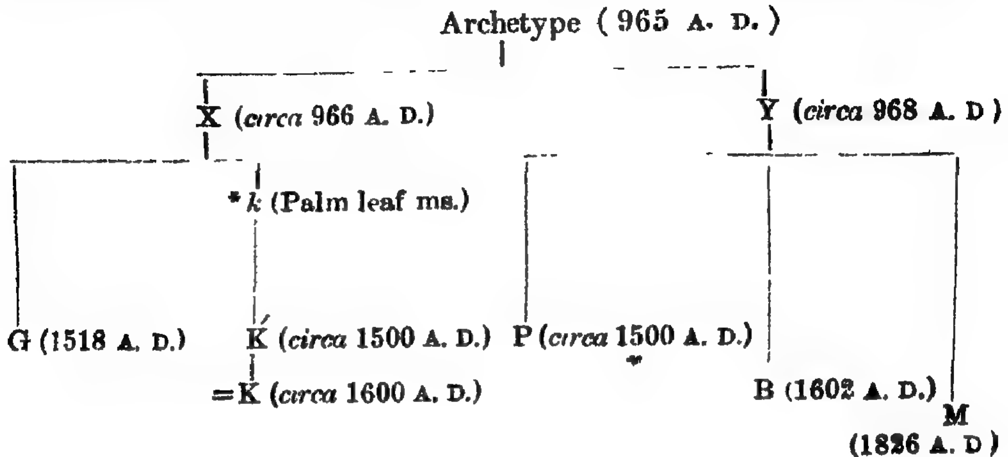
(Found at the beginning of the 45th saṃdhi).

48\. (iii) संजुडियजाणुकोप्परगीवाकडिबन्धणावयवो ।
अणुहवइ घोरियं तुज्झ जं पावइ लेहओ दुक्खं ॥

(Found at the beginning of the 58th saṃdhi).

It will be seen from the account of these praśasti stanzas that even the Uttarapurāṇa Mss. preserve three different recensions, K representing the oldest, the Poona and Kāranjā Mss. the middle and the Jaipore Ms. the youngest. Leaving the question of the genealogy

of the Mss. of the Uttarapurāna for the time being, I present below in genealogical form the relation of the different Mss. of the Ādipurāṇa :—



BHARATA, THE PATRON OF PUSPADANTA

There are in all 48 praśasti stanzas found in the Mss. of the Mahāpurāna. Of these stanzas, six, viz., 5, 6, 16, 30, 35 and 48 are in Prakrit and the remaining are in Sanskrit. The Prakrit of these stanzas is grammatically correct and graceful, but we cannot say the same about the Sanskrit of the same. Prakritisms occur there pretty often (e. g. चोज्जं in 29). The subject matter of these stanzas covers topics such as homage to the goddess of learning (वाईसी, 6) and Ambikā (23), the poet Puspadanta himself (5, 30, 36, 39, 40, 45), the poet and his Mahāpurāṇa (37), the relation between Bharata, the patron, and the poet (1, 4, 14, 26, 35, 37, 38, 42, 43, 44), and the glorification of Bharata, the poet's patron (remaining stanzas). Bharata is mentioned and glorified in the body of the work (I. 3–8 ; XXXVII. 3–5 ; CII. 13) and also in the Ghatta lines and the puspikā at the end of each samdhi (महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे) of the Mahāpurāṇa. There are three stanzas in Sanskrit in some Mss. of the Jasaharacariu glorifying Nanna, Bharata's son and successor in office ; and a long praśasti at the end of the Nāyakumāracariu (page 112) gives some details about the same. On the strength of the information supplied by these it is possible to construct a short biography of Bharata to whose generosity the world owes this epic poem in Apabhraṃśa.

* The asterics indicate conjectural Mss.

We have now an excellent account of the *Rāṣṭrakūṭas and their Times* by Dr. A. S. Altekar (Poona, 1934). We find that a few pages (115–123) are devoted there to the political events of Kṛṣṇa III (939–968 A. D.). We also have there a section dealing with education and literature (Chapter XIV) of the period. And yet, we do not find any reference in the book to Bharata, the minister of Kṛṣṇa III, nor do we find any reference to the Poet. On the contrary we read on page 412 a remark to the effect that there is hardly any output of Prakrit Literature during the period. Puṣpadanta, under the patronage of Bharata and his son Nanna, composed three works in Apabhraṃśa, which covering as they do over 2000 pages of the size of the present volume, cannot be easily ignored, nor can Bharata, the patron of learning, be neglected, who constantly urged on the poet to make the best use of his gifts. It will not therefore be out of place to construct the story of the life of Bharata, the forgotten patron of Prakrit Literature, from out of the material like the references in the works of Puṣpadanta and the praśasti stanzas.

Kṛṣṇa III is known in Puṣpadanta's works by three names: Tuḍiga, Suhatuṅgarāya (Sk. Subhatuṅgarāja) and Vallabhanrpa. He came to the throne in 939 A. D., and ruled up to 968 A. D. In this year he was succeeded by his younger brother Khoṭṭigadeva. It was during the reign of Khoṭṭigadeva, in 972 A. D., that Mānyakheta, the capital of the later Rāṣṭrakūṭas, was plundered by the king of Dhāra. Bharata was the minister of Kṛṣṇa III. Nanna, Bharata's son, also, is mentioned as a minister of Suhatuṅgarāya, i. e., Kṛṣṇa III. Bharata however was still living when Puṣpadanta's Mahāpurāṇa was completed, i. e., upto 965 A. D. As Kṛṣṇa III died in 968 A. D., we have to suppose that Bharata must have died between 965 and 968 A. D., so that his son, Nanna, could succeed his father by 968 A. D. After the death of Bharata, Nanna extended his patronage to Puṣpadanta and induced him to write Jasaharacariu and Ṇāyakumāracariu.

Bharata seems to have come from the family of Koṇḍella gotra (Sk. Kauṇḍinya). This was a rich family and held the office of ministers (महामात्राह्वयः वंशः, 46), but had become poor. There are references which indicate that Bharata regained the lost wealth of his family by devoted service to his master (संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया). His grandfather's name was Annaiya or Annayya. His

father's name was Aiyaṇa or Airaṇa and his mother was called Devī. Bharata had no brother or near relative (बन्धुरहितेन, 15). He was married to Kundavvā and had seven sons, viz., Devalla, Bhogalla, Ṇaṇṇa, Sohaṇa, Guṇavamma, Dangaiya and Santaiya. Ṇaṇṇa is mentioned as the son of Kundavvā and it is not unlikely that Bharata had more wives than one. All the seven sons of Bharata were still living in 965 A. D., while Ṇaṇṇa is stated to have succeeded his father already in 968 A. D. We have therefore to presume that his two elder brothers died following the death of their father or that Ṇaṇṇa had some special qualifications to supercede his brothers in the office of his father.

Bharata is described by Puṣpadanta as possessing dark complexion (श्यामः प्रधानः, 12 ; श्यामरुचि, 20). He had a beautiful figure and is likened to the god of love (20). He had a good physique (भारतमल्ल, 23), and held the office of a general in the army of Kṛṣṇa III (वल्लभराज...कटके यश्चामवत्र यकः , 46). He also held the portfolio of the minister of charities in the royal household (प्रचण्डायनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता, 12). He had a gentle dress and courteous manners and speech (सया सन्तो वेसो, मुहे दिव्वा वाणी, 35). He was fond of learning (विद्याप्रियः, 7). He combined in him wealth and learning (श्रीरिरासि, सरस्वती वदनपङ्कजे, 22). It was impossible to count his virtues as it is impossible to count the waters of the sea (11 ; 12). He had a pure character (स्वप्नेप्येष पराङ्गनां न वाञ्छति, 3). He was in fact a rendezvous of all virtues, most striking among them being his generosity. Poems were being recited in his house, copyists prepared copies of works. Thus, since Puṣpadanta became the friend of Bharata, his house became a meeting place of the learned (43). He was always generous to the needy and so held a place amongst generous persons of the past such as Bali, Jīmūtavāhana, Dadhīci, Vinayāṅkura and Śātavahana (9, 31). His fame travelled far and wide (1). He had countless virtues as he had countless enemies (27), who experienced the same miseries as copyists experienced while toiling (48). One graceful act on his part was to induce Puṣpadanta to write the Mahāpurāṇa and to offer him the necessary help for this purpose. In fact, instead of spending his wealth in building wells, lakes, ponds and Jain temples, he used it on the preparation and propagation of the Jain epic with the help of which he would cross the ocean of saṃsāra with comfort (47).

The poet Puṣpadanta came of a Brahmin family of Kāśyapa gotra. His father's name was Keśava and mother's name was Mugdhādevī. Both of them were devotees of Siva, but were later converted to Jainism. Puṣpadanta had a dark complexion and a lean body. He does not seem to have married. He was in extreme poverty, had neither property nor house, and yet he possessed a lord's noble mind (5). He seems to have been in the court of a king named Bhairava or Vīrarāja, and written a poem on him, but being insulted there, left his court, and came to Mānyakheṭa, modern Malkhed, which was then the capital of the Rāṣṭrakūṭas, and very prosperous (36). There he stayed in a grove of trees, outside the town; two citizens, Indrarāja and Annaïya by name, saw him there and persuaded him to go to the house of Bharata where he would have a good reception. The poet was at first unwilling because of his bitter experiences of the wicked world in the past. He was however assured by these men that Bharata was a man of a different type, that he was so kind and noble. The poet thereupon went to him, had a good reception, as assured. After a few days' rest Bharata requested him to write the Mahāpurāna so that his poetic gifts could be rightly used. It was in this way that the poet began his Mahāpurāṇa in the house of Bharata in the Siddhārtha year of the Saka era, i. e. in 959 A. D. The poet was out of mood after he had completed his Ādipurāṇa, i. e, the first thirty-seven saṃdhis, and halted there for some time. The goddess of learning appeared before him and encouraged him to resume the work. Bharata also induced him to complete the work. The poet thereupon finished his work in the Krodhana year of the Śaka era, i. e., in 965 A. D. He seems to have been highly pleased with his performance, and out of satisfaction and just pride he wrote—

अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा-
मर्थालंकृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः ।
किं चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते
द्वावेतौ भरतेशपुष्पदशनौ सिद्धं ययोरीदृशम् ॥ (37)

in the same spirit which prompted Vyāsa of the Mahābhārata to say—

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् ।

For the Mahāpurāṇa is as sacred to the Jains as the Mahābhārata is to the Hindus. The poet attributed the successful completion of the

work as much to his genius as to the generosity of Bharata. His fame as poet travelled far and wide as that of Bharata for his generosity. It appears that Bharata died within three years of the completion of the Mahāpurāṇa, Nanna succeeded him in the office, extended his patronage to Puṣpadanta and asked him to write two more poems in Apabhraṁśa, Jasaharacariu and Nāyakumaracariu. The glory of the Rāṣṭrakūṭas, however, soon came to the end. Their capital, Manyakheṭa, was plundered in 972 A. D., and the poet became destitute once more (केदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः , 36).

WHAT IS A MAHĀPURĀṆA?

The Digambara Jains hold that their sacred literature consisting of Purvas and Aṅgas is lost; they do not therefore accept the authority of the Canon of the Svetāmbaras. The Canon, according to the Digambaras, consists of four divisions: (i) Prathamānuyoga, lives of Tīrthaṁkaras and other great men of the faith; in other terms, the kathā literature; (ii) Karaṇānuyoga, description of the geography of the universe; (iii) Caraṇanuyoga, rules of conduct for monks and laymen; and (iv) Dravyanuyoga, philosophical categories or philosophy According to this classification works like the present text fall under the category of Prathamānuyoga.

The Mahapurāṇa is a term peculiar to the Jain literature and means a great narrative of the ancient times. There are purāṇas or old tales in the Jain Literature, but they narrate the life of a single individual or holy person. The Mahāpuraṇa, on the other hand, describes the lives of sixty-three prominent men of the Jain faith. Jinasena uses the term Mahāpurāṇa as a synonym for Triṣaṣṭilakṣaṇa, while Hemacandra calls his work on the theme as Triṣaṣṭiśalākā-puruṣacarita, i. e., the lives of sixty-three prominent men (Salākāpuruṣa). Puṣpadanta uses the term Mahapurana to alternate with Tisaṭṭhimahāpurisaguṇalaṁkara, Adoration of the Virtues or qualities of Sixty-three Great Men. The term puraṇa is defined in the Hindu Literature as follows :—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥

The puraṇa deals with the five topics, viz., the creation, the dissolution or secondary creation, dynasties, epochs between the Manus and the history of the dynasties. This definition is applicable to our

Mahāpurāṇa as well; for we do find the five topics mentioned above in our work. Still it is interesting to see how the Jains themselves interpret the term. Jinasena who is a predecessor of Puṣpadanta in the writing of a Mahāpurāṇa says :—

तीर्थेशामपि चक्रेशां हलिनामर्धचक्रिणाम् ।
त्रिषष्टिलक्षणं वक्ष्ये पुराणं तद्द्विषामपि ॥
पुरातनं पुराणं स्यात्तन्महन्महदाश्रयात् ।
महद्भिरुपदिष्टत्वान्महाश्रेयोनुशासनात् ॥
कविं पुराणमाश्रित्य प्रसृतत्वात्पुराणता ।
महत्त्वं स्वमहिम्नैव तस्येत्यन्यैर्निरुच्यते ॥
महापुरुषसंबन्धि महाभ्युदयशासनम् ।
महापुराणमाम्नातमत एतन्महर्षिभिः ॥ I. 20–23.

"I shall recite the narrative of sixty-three ancient persons, i. e., of the Tirthamkaras, of the Cakravartins, of Baladevas, of half-Cakravartins (i. e. Vasudevas) and of their opponents (i. e., of Prati-Vāsudevas). The work is called 'purāṇa' because it is a narrative of the ancients. It is called 'great' because it relates to the great (persons), or because it is narrated by the great (sages) or because it teaches (the way to) great bliss. Other writers say that, because it originated with the old poet it is called 'purāna' and it is called 'great' because of its intrinsic greatness. The great sages have called it a Mahāpurāṇa because it relates to great men and because it teaches the bliss." A Tippana on I. 9. 3 of our text seems to make a distinction between *aihāsa* and *purāna* and says that *aihāsa* means the narrative of a single individual while *purāṇa* i. e. Mahāpurāṇa means narratives of sixty-three great men (अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा; पुराण त्रिषष्टिपुरुषाश्रिताः कथाः पुराणानि). The Mahapurāṇa therefore is a work on the lives of sixty-three great men of the Jain faith, and thus occupies the same place of importanee as the Mahābharata or the Rāmāyana in Hinduism. The Mahāpuraṇa however lacks the unity of the Mahābhārata or of the Rāmāyaṇa and therefore cannot be called an epic in the strictest sense of the term.

The sixty-three great men whose lives are described in a Mahāpurāṇa are classified under five heads. I give their names below for ready reference :—

(a) The Tirthaṃkaras (24): (1) वृषभ or ऋषभ; (2) अजित; (3) शंभव or संभव; (4) अभिनन्दन; (5) सुमति; (6) पद्मप्रभ; (7) सुपार्श्व (8) चन्द्रप्रभ;

(9) पुष्पदन्त or सुविधि ; (10) शीतल ; (11) श्रेयांस ; (12) वासुपूज्य ; (13) विमल ; (14) अनन्त ; (15) धर्म ; (16) शान्ति ; (17) कुन्थु ; (18) अर ; (19) मल्लि ; (20) सुव्रत ; (21) नमि ; (22) नेमि ; (23) पार्श्व ; and (24) महावीर.

(b) The Cakravartins (12): (1) भरत ; (2) सगर ; (3) मघवन् ; (4) सनत्कुमार ; (5) शान्ति ; (6) कुन्थु ; (7) अर ; (8) सुभौम or सुभूम ; (9) पद्म ; (10) हरिषेण ; (11) जयसेन or जय ; and (12) ब्रह्मदत्त.

(c) The Vāsudevas (9): (1) त्रिपृष्ठ ; (2) द्विपृष्ठ ; (3) स्वयंभू ; (4) पुरुषोत्तम ; (5) पुरुषसिंह ; (6) पुरुषपुण्डरीक ; (7) दत्त , (8) नारायण ; and (9) कृष्ण.

(d) The Baladevas (9) : (1) अचल ; (2) विजय ; (3) भद्र ; (4) सुप्रभ ; (5) सुदर्शन ; (6) आनन्द ; (7) नन्दन ; (8) पद्म ; and (9) राम (बलराम).

(e) The Prati-Vasudevas (9): (1) अश्वग्रीव ; (2) तारक ; (3) मेरक ; (4) मधु ; (5) निशुम्भ ; (6) बलि ; (7) प्रह्लाद ; (8) रावण ; and (9) मगधेश्वर or जरासंध.

It is to be noted that Śanti, Kunthu and Ara are Tīrthaṃkaras as well as Cakravartins.

WORKS ON SIXTY-THREE GREAT MEN

The oldest known published work on sixty-three great men is the Mahapurāṇa or more accurately Ādipurāṇa of Jinasena (*circa* 850–875 A. D.). Jinasena calls his work Triṣaṣṭilakṣaṇamahāpurāṇa-saṃgraha, and thus seems to have planned a complete Mahāpurāṇa. He was however unable to complete it, probably on account of his death. We get from his hand forty-two parvans only of the Ādipurāṇa, the remaining five parvans of the Ādipurāṇa and the whole of the Uttarapurāṇa being written by his disciple Guṇabhadra and completed in 820 of the Śaka era, i. e., in 898 A. D, at Vaṅkāpura, under the patronage of Lokāditya, a feudatory of Akālavarṣa *alias* Kṛṣṇa II (880–914 A. D.) This Mahāpurāṇa is written in Sanskrit, and printed twice, first at Kolhapur with a Marāthi translation by Kallappa Niṭve and again at Indore with a Hindi translation by Pandit Lalaram Jain. It is written from the point of view of the Digambara Jains.

The second known work on the subject is the present work and belongs to the Digambara sect of the Jains.

The third work is the Triṣaṣṭiśalākāpuruṣacarita by Hemacandra. It is a Śvetāmbara work and is written in Sanskrit. It is one of the last

works of Hemacandra and so may have been written about 1170–72 A. D. It was published by the Jaina Dharma Prasāraka Sabhā of Bhavnagar in 1905–9, and a reprint of it is being issued at present.

The Jain Granthāvalī published in 1965 of the Vikrama era, i. e. in 1907–8 records three works named Mahāpuruṣacarita on page 229. One of them is by Sīlācārya (*circa* 925 of the Vikrama era, i. e. 888 A. D.), is written in Prakrit and its Mss. are said to be deposited in the famous Patan Bhandar No. 4 and also at Jesalmer Bhandar. The same book mentions another work on the subject in Prakrit by Amrasūri on the authority of Bṛhaṭṭippaṇikā. It mentions a third work in Sanskrit on the theme by Merutuṅga, Mss. of which are deposited in two Bhandars at Patan and also at Ahmedabad. I propose to give in the last volume a concordance of Jinasena-Guṇabhadra, Puṣpadanta and Hemacandra, as also of Sīlācarya and Merutuṅga if these two last-named works become available to me.

THE GLOSS ON THE CONSTITUTED TEXT

The reader will notice that the bottom portion of the printed text is divided into two parts. The first part, separated from the text by a wavy line gives the variants found in the Mss. or recorded in the margin of Mss., and also in the Tippana of Prabhācandra. The second part, separated from the first part by a double line, gives a short gloss on the text in Sanskrit. I have culled it from the marginal notes in Mss. G, K, M and P, and also from the Tippaṇa of Prabhācandra. In selecting the gloss for this purpose I have kept in mind the difficulties which a reader is likely to meet with while going through the text, and I hope that if the reader is equipped with a good knowledge of the Sanskrit language and literature and some elementary knowledge of the grammar of the Prakrit and Apabhraṃśa dialects, he will be able to understand the text easily with the help of this gloss. Extracts from Prabhācandra's Tippaṇa, where they appeared to be interesting but rather extensive to be accommodated at the bottom of the text are given in the notes at the end. I hope this method of supplying the gloss at the bottom of the page will be appreciated by the reader as it taxes him less, and helps me to reduce the volume of notes. It should be noted that I have not retouched the text of the gloss, but have retained it as it was found in Mss. even though I felt at times tempted to improve upon uncouth Prakritisms or unwarrant-

ed historical allusions (see for example, the gloss on कइवइ विड्डियमेड on page 8).

ACKNOWLEDGMENT OF OBLIGATIONS

It now remains for me to perform the pleasant duty of thanking all those who, one way or another, assisted me in the production of the present volume. I must thank in the first place the Trustees and the Secretaries of the Manikchand Digambara Jaina Granthamālā who were kind enough to find the necessary fund for the preparation and publication of this volume, and I feel sure they will also find the necessary funds to complete the work. The poetic genius of Puṣpadanta required the benevolent encouragement of his patron Bharata in the 10th century. After the plunder of Mānyakheṭa in 972 A. D. the poet became desolate and remained uncared for for about a thousand years, and had it not been for the help that the Trustees of the Series offered to the Editor, his efforts to bring the poet out of oblivion would have been of no avail. The spirit of Puṣpadanta will thus take a special delight in having once more discovered the spirit of his former patron regenerated in the Trustees of the Series. The Editor hopes that the same spirit will find a few thousand rupees more to enable him to complete the task that he has undertaken to rescue from oblivion this monumental work of the Poet.

To Professor Hiralal Jain of King Edward College, Amraoti, I owe a special debt of gratitude. He moved heaven and earth to find the funds for this publication. He has helped me in various other ways, in securing the loan of Mss. from Kāranjā and Jaipore, and in sending me bits of information that he came across. To Pandit Nathuram Premi, the veteran savant of Jain literature and an adventurous publisher of Jain works, I also tender my heartfelt thanks.

I would like to record here my sense of high appreciation of the services which Mr. R. G. Marathe, M. A., formerly my pupil and now professor of Ardha-Māgadhi at the Willingdon College, Sangli, rendered me in the preparation of this work. He did a lot of copying work for me and helped me at the time of collation as well.

Nowrosjee Wadia College, Poona }
August 1937 } P. L. VAIDYA

ग्रन्थ-परिचय

१ अपभ्रंश-साहित्यकी खोज

आज से बीस वर्ष पूर्व अपभ्रंश भाषा का उपलब्ध साहित्य नहीं के बराबर था। कुछ स्फुट रचनाएँ जैन धार्मिक समाज में प्रचलित थीं, पर न तो विद्वत्संसार को उनका कुछ परिचय था और न जैन समाज में ही भाषा की दृष्टिसे उनका कोई विशेष महत्त्व था। किन्तु गत बीस वर्ष में इस भाषा के अनेकों ग्रन्थों का पता चला है और धीरे धीरे उनका सूक्ष्म अध्ययन, सुसंशोधित प्रकाशन और विद्वत्समाज में आदर भी बढ़ रहा है। विशेष रूप से इस ओर ध्यान तभी से गया है जब से मैंने सन् १९२४ में कारंजा के भंडारों का अवलोकन किया और वहां के उपलब्ध दश बारह अपभ्रंश ग्रन्थों का परिचय मध्यप्रान्त के हस्तलिखित संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की सूची में प्रकाशित कराया, तथा इन ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ ही कारंजा ग्रंथमाला की स्थापना कराई। तब से मेरी इस साहित्य की खोज बराबर जारी है। जिसके फलस्वरूप मुझे इस भाषाका विपुल साहित्य उपलब्ध हुआ है। हर्ष की बात है कि इस साहित्य के अध्ययन, संशोधन और प्रकाशन में अब अनेक सुप्रतिष्ठित विद्वान् मेरा हाथ बँटा रहे हैं।

२ पुष्पदन्त के ग्रन्थ

इस खोज से अबतक जितने ग्रन्थों का पता लगा है, उनमें पुष्पदन्त के ग्रन्थ विशेष महत्त्वशाली ज्ञात हुए हैं। वे भाषा की दृष्टि से सब से प्रौढ, काव्य की दृष्टि से सबसे सुन्दर तथा प्राचीनता में, एक स्वयंभूके काव्यों को छोड़,सबसे पूर्व के प्रमाणित होते हैं। पुष्पदन्त के जो तीन ग्रन्थ अबतक पाये गये हैं उनमें से 'जसहर-चरिउ' प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादक श्रीयुत डा. वैद्य द्वारा ही सम्पादित होकर कारंजा-सीरीज में और 'णायकुमार-चरिउ' मेरे द्वारा सम्पादित होकर देवेन्द्र-कीर्ति-सीरीज में प्रकाशित हो चुके हैं। तीसरा ग्रन्थ यही प्रस्तुत महापुराण है। इसे भी कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था और इसी के लिये इस ग्रन्थ का संशोधन सम्पादन प्रारम्भ किया गया था किन्तु उस सीरीज में प्रकाशित होने में अभी कुछ बिलम्ब होता। प्रकाशनीय साहित्य बहुत विपुल मात्रा में तैयार है। इसी से अवसर पाकर यह ग्रंथ इस ग्रंथमालाद्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

पूरे महापुराण में एक सौ दो सन्धि अर्थात् परिच्छेद हैं। इनमें से प्रथम सैंतीस संधियों में आदिपुराण समाप्त हो जाता है। यही आदिपुराण वर्तमान संस्करण में प्रस्तुत है। शेष पैंसठ संधियाँ उत्तरपुराण की हैं जिन्हें आगे दो ग्रन्थों में प्रकाशित कराने का विचार है। इस उत्तरपुराण का एक खण्ड मेरे एक जर्मन मित्र डा. लुडविग् आल्सडोर्फ ने सम्पादित कर के अभी अभी जर्मनी में प्रकाशित

कराया है। इसमें उत्तरपुराण की बारह (८१-९२) संधियाँ हैं जो हरिवंशपुराण कहलाती हैं। जब जर्मनी से यह संस्करण प्रकट नहीं हुआ था तब विचार था कि डा. आल्सडॉर्फ द्वारा सम्पादित यह खण्ड भी एक ग्रंथ में स्वतंत्र रूपसे प्रकाशित करा दिया जाय, और इसी विचार से मित्र आलसडॉर्फ ने बड़े ही परिश्रम से अपने संस्करण का पाठ नागरी लिपि में तैयार कर दिया, भूमिका का भी अंग्रजी अनुवाद कर डाला और नोट्स व अनुक्रमणिकादि भी बना कर भेज दीं। पर इसके प्रेस में भेजने में कुछ विलम्ब हुआ, और इसी बीच जर्मनी से उनका रोमन लिपि में जर्मन भाषामय भूमिकादिसहित संस्करण प्रकट हो गया। तब विचार हुआ कि अब इसके नागरी लिपि के संस्करण निकालने में जल्दी करने की आवश्यकता नहीं है। विद्वानों को ग्रंथ उपलब्ध हो ही गया है। अब उत्तरपुराण के क्रमबद्ध प्रकाशन में ही यथास्थान इस का उपयोग करना उचित होगा। यही विचार कर उसकी छपाई स्थगित करा दी गई।

३ संशोधन-सामग्री

प्रस्तुत आदिपुराण का संशोधन आठ प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों पर से किया गया है। इनमें से पांच का तो पूर्ण रूप से उपयोग किया गया है और उनके पाठ-भेद दिये गये हैं, और शेष तीन का यत्र तत्र उपयोग किया गया है, क्यों कि या तो उनके पाठ उक्त पाँच में से किसी एक के साथ अभिन्न थे या वे अपेक्षाकृत अर्वाचीन थे। जिन प्रतियों का पूरा पूरा उपयोग किया गया है उनमें से दो बलात्कारगण-जैनमंदिर, कारंजा, की हैं; दो भांडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टिटयूट, पूना, की और एक तात्यासाहिब पाटील, नांदणी (कोल्हापुर) के पास से प्राप्त। इनमें से कारंजा के बलात्कारगण-मंदिर की, संवत् १५७५ में लिखित प्रतिको प्रधान रूपसे साम्हने रख कर पाठ संशोधन किया गया है।

४ प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण

पाठ संशोधन में सब से अधिक महत्वपूर्ण सहायता प्रभाचन्द्रकृत महापुराण-टिप्पण से मिली। आदिपुराण-टिप्पण की एक प्रति सम्पादक को भांडारकर-इन्स्टिटयूट से प्राप्त हुई जिसमें संवत् का उल्लेख नहीं पाया गया। उत्तरपुराण के टिप्पण की एक प्रति जयपुर से प्राप्त हो गई थी जिसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह टिप्पण संवत् १०८० = १०२३ ईस्वी में, अर्थात महापुराण के रचे जाने के साठ वर्ष के भीतर ही लिखा गया था। उस समय मालवे में राजा भोज का राज्य था। प्रभाचन्द्र ने इस टिप्पण को 'सागरसेन सैद्धान्तिक से परिज्ञात करके तथा 'मूलटिप्पणिका' का अवलोकन करके लिखा था। संभव है यह मूलटिप्पणिका स्वयं कवि पुष्पदंत की ही लिखी हुई हो।

५ संधियोंके प्रारंभके स्फुट पद्य

महापुराण की भिन्न भिन्न प्रतियों में कुछ संधियों के प्रारंभ में कवि के आश्रयदाता भरत की प्रशंसा के छंद पाये जाते हैं। इनमें से छह की भाषा प्राकृत और शेष सबकी

संस्कृत है। इसमें सन्देह नहीं कि इनकी रचना स्वयं कवि पुष्पदंत की ही है, क्योंकि अन्य किसी कवि को उनके आश्रयदाता की ऐसी गुणगाथा गाने के उत्साहका कोई कारण नहीं दिखता। दूसरे इनमें से कुछ छन्दों में स्वयं पुष्पदंत के व्यक्तिगत भावों और अनुभवों का उल्लेख है जो दूसरे कवि के द्वारा नहीं किया जा सकता। ऐसे कुल पद्यों की संख्या ४८ है। पर ये सभी पद्य सभी प्रतियों में नहीं पाये जाते और न उनमें से प्रत्येक छंद किसी एक निर्दिष्ट संधिमें ही पाया जाता है। किसी प्रति में कहीं कोई पद्य, तो दूसरी प्रतिमें कहीं अन्यत्र, या तीसरीमें वह बिलकुल ही नहीं पाया जाता। इस अवस्थासे अनुमानतः यह निष्कर्ष निकलता है कि ये पद्य कविने ग्रंथरचना के समय ही रचकर विशेष विशेष स्थानों पर नहीं रक्खे। ग्रंथरचना समाप्त हो जाने, तथा उसकी कुछ प्रतिलिपियाँ बाहर चले जाने पर यथावसर कविने जो पद्य कभी रचा उसे अपनी प्रति में किसी संधि के प्रारंभ में लिख दिया, ऐसा जान पड़ता है। इससे उस 'धारानाथ-नरेंद्र' के उल्लेख वाले पद्य की गुत्थी भी सुलझ जाती है जो पूना और कारंजा वाली प्रतियों में ५० वीं संधि के प्रारम्भमें और जयपुर की प्रतिमें ४९ वी संधि के प्रारम्भमें, और तात्या साहिब वाली प्रतिमें कहीं भी नहीं पाया जाता। इस पद्य में धाराके नरेन्द्र श्री हर्षदेव के मान्यखेट पर आक्रमण का उल्लेख है जो 'पाइयलच्छी-नाम-माला' के उल्लेख परसे १०२९ संवत् की घटना सिद्ध होती है। इस घटना का उल्लेख सात वर्ष पूर्ण समाप्त हुए ग्रंथ के बीच में कैसे आया यह बहुत समय तक मेरे लिये एक उलझन बनी रही जिसके सुलझाने के लिये मुझे अनेक अनुमान लगाना पड़े। किन्तु अब इन पद्यों की रचना के इतिहास परसे यह सहज ही समझमें आजाता है कि अन्य अनेक पद्यों के समान उसे भी कवि ने पीछे रचकर अपने ग्रंथ में डाला होगा।

६ कविके आश्रयदाता भरत का परिचय

उक्त पद्यों की प्राकृत भाषा बिलकुल शुद्ध और सुन्दर है। संस्कृत पद्यों में कहीं कहीं प्राकृत का प्रभाव आ गया है। इन पद्यों का विषय कहीं सरस्वती देवी की उपासना है, कहीं कविका आत्म परिचय है; पर अधिकांश पद्यों में कविके आश्रयदाता भरत की प्रशंसा पाई जाती है। इन पद्यों तथा महापुराण की उत्थानिका व पुष्पिकाओं और जसहरचरिउ व णायकुमारचरिउ के उल्लेखों पर से भव्यात्मा भरत और उसके कुटुम्ब का खासा इतिहास हमें मिल जाता है। भरत राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराज तृतीय के मंत्री थे। इस नरेश के तुडिग, शुभतुंगराय और वल्लभराय नाम भी पुष्पदंत के ग्रंथों में पाये जाते हैं। इन्हों ने सन् ९३९ से ९६८ तक राज्य किया। उनके पश्चात् उनके लघुभ्राता खोट्टिगदेव सिंहासनारूढ हुए। उन्हींके राज्य में सन् ९७२ (विक्रम १०२९) में उनकी राजधानी मान्यखेट पर धारानरेश हर्षदेव का आक्रमण हुआ था। महापुराण की समाप्ति अर्थात् सन ९६५ तक भरत मंत्री जीवित थे। अन्य दो काव्यों की रचना के समय उनके पुत्र णण्ण मंत्रिपद को विभूषित कर रहे थे। इस बीच में या तो भरतजी का परलोकवास हो गया, या उन्होंने वैराग्य धारण कर लिया होगा।

भरत कौण्डिन्य गोत्र के थे। उनके कुल में महामात्र पद परम्परागत था। पर बीच में इस कुटुम्ब को कुछ दुर्दिन भोगने पड़े थे। इस दुरवस्था से भरत ने अपने कुल का पुनरुद्धार किया। उनके पितामह का नाम 'अण्णय्य,' पिता का 'येयण' या 'ऐरण' तथा माता का 'देवी' था। इनके कोई भ्राता नहीं था। उनकी धर्मपत्नी का नाम 'कुन्दव्वा' था। उनके सात पुत्र थे। जिनके नाम-देवल्ल, भोगल्ल, नन्न, सोहन, गुणवर्म, दंगय्य और संतय्य थे। भरत का शरीर सुदृढ और शूरोचित था और वर्ण श्याम। वे कृष्णराजके मंत्री, सेनानायक और दान-विभाग के अधिष्ठाता थे। इतना होने पर भी उनका वेषभूषा तथा व्यवहार बहुत सौम्य और शिष्ट था। वे सद्गुणों की खानि और विद्याप्रेमी थे। श्री और सरस्वती का उनमें असाधारण संयोग था। उनका आचरण सर्वथा निर्दोष था। उनके भवन में काव्य-रचना, काव्य गायन, और काव्य-लेखन होता रहता था। वे बलि, जीमूतवाहन, दधीचि, विनयांकुर और शातवाहन जैसे महादानी थे। उनका यश सुविस्तृत था। वापी, कूप, तडाग व देवमंदिर निर्माण कराने की अपेक्षा जैन पुराण की रचना और प्रसार कराना उन्हें अधिक अभीष्ट था। इसी हेतु उन्होंने कवि पुष्पदन्त को आश्रय देकर उनसे यह महान उत्तम कार्य सम्पन्न कराया और संसार-समुद्रको तरने का साधन पा लिया।

७ कवि-परिचय।

कविराज पुष्पदन्त काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम केशव और माता का नाम मुग्धादेवी था। ये दोनों शिव के उपासक थे, किन्तु पीछे उन्होंने जैन धर्म ग्रहण कर लिया था। पुष्पदन्त का शरीर श्याम और कृश था। उनका विवाह हुआ हो ऐसा जान नहीं पड़ता। उनके न घर-द्वार था, न धन सम्पत्ति, किन्तु उनका मन बड़ा ऊंचा और विशाल था। वे पहले किसी भैरव या वीरराय नाम के राजा के आश्रय में रहे थे जिसकी प्रशंसा में उन्होंने कोई काव्य भी रचा था। किन्तु किसी कारण से सम्भवतः अपमानित होकर वे मान्यखेट आगये, और वहाँ नगर के बाहर उपवन में ठहर गये। इन्द्रराज और अण्णइया नाम के दो नागरिकों ने उन्हें वहाँ देखा और इनसे नगर में आकर भरत से मिलने का आग्रह किया। पहले कविराज राजी नहीं हुए। क्योंकि उनका हृदय कटु अनुभवों के कारण संसार से और धनिक समाज से विरक्त हो गया था। किन्तु उन्हें जब यह आश्वसन दिया गया कि भरत मंत्री दूसरी ही प्रकृति के सज्जन हैं, तब वे उनसे मिलने पर राजी हुए। भरत के यहाँ उनका बड़ा स्वागत सत्कार हुआ। उन्हीं के शुभतुंग-भवन में वे रक्खे गये। कुछ दिनों के पश्चात् भरत ने उनसे महापुराण रचने की प्रार्थना की, जिससे उनकी काव्य-शक्ति का समुचित उपयोग हो और संसार का कल्याण हो। इस प्रकार कवि ने सिद्धार्थ शक ९५९ में महापुराण की रचना प्रारम्भ की। आदिपुराण पूरा होने पर कवि को फिर कुछ उद्वेग हुआ जिसका स्वयं सरस्वती देवीने निवारण करके उन्हें उत्तरपुराण पूरा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कवि ने महापुराण को क्रोधन शक ९६५ में समाप्त किया।

उन्हें अपनी इस सफलता से बड़ा सुख और संतोष हुआ। उन्होंने कहा है कि "इस रचना में प्राकृत के लक्षण, समस्त नीति, छंद, अलंकार, रस, तत्त्वार्थनिर्णय सब कुछ आगया है, यहाँ तक कि जो यहाँ है वह अन्यत्र कहीं नहीं है। धन्य हैं वे पुष्पदन्त और भरत जिनको ऐसी सिद्धि मिली।" इसे पढ़कर महाभारतकार व्यासके इन वचनोंका ध्यान आये विना नहीं रहता—

'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्'

जो यहाँ है वही अन्यत्र मिलेगा; जो यहाँ नहीं वह कहीं नहीं।

८ महापुराण के लक्षण

दिगम्बरमतानुसार महावीर स्वामीकी वाणी जिन ग्यारह 'अंग' और चौदह 'पूर्व' में ग्रन्थित थी वे अंग पूर्व सब विच्छिन्न हो गये। जो श्वेतांबर अंग अब पाये जाते हैं उन्हें दिगम्बर समाज स्वीकार नहीं करता। वह अपना धार्मिक साहित्य प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, और द्रव्यानुयोग ऐसे चार अनुयोगों में विभाजित करता है। प्रथमानुयोग का विषय तीर्थंकरादि पुरुषोत्तमों का चरित्र वर्णन करता है। महापुराण इसी प्रथमानुयोग की एक शाखा है। उसमें चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ वासुदेव, नौ प्रतिवासुदेव और नौ बलदेव इन त्रेसठ शलाका-पुरुषों अथात् श्रेष्ठ पुरुषोंका चरित्र वर्णन किया जाता है। पुष्पदन्त की इस रचना का भी यही विषय है और उसे उन्होंने "तिसट्ठि-महा-पुरिस-गुणालंकार" नाम भी दिया है। जिनसेनने अपने संस्कृत महापुराण को भी त्रिषष्टि-लक्षण नाम दिया है और हेमचन्द्राचार्यने भी त्रिषष्टि शलाका पुरुष-चरित।

जिनसेन और हेमचन्द्र के महापुराण छप चुके हैं। उनमें और प्रस्तुत ग्रंथमें कहाँ कैसा मेल व बेमेल है यह अन्तिम जिल्द की भूमिका में स्पष्ट किया जावेगा।

९ आभार-प्रदर्शन

इस महापुराण का सम्पादन मेरे प्रिय सुहृत् डॉ. परशुराम लक्ष्मण वैद्य ने किया है। पाठक इन विद्वान् सम्पादक से सुपरिचित ही होंगे, क्योंकि उनके सम्पादित अनेक प्राकृत जैनग्रन्थ छप चुके हैं। कारंजा-सीरीज का प्रथम ग्रन्थ (इन्ही पुष्पदन्तकी दूसरी रचना) भी इन्हीं विद्वानद्वारा सम्पादित हुआ है। प्रस्तुत विशाल ग्रंथ के संशोधन सम्पादन में वैद्य जी ने कितना परिश्रम किया है यह मर्मज्ञ पाठक इस ग्रंथ के अवलोकन से ही समझ सकेंगे। अनेक प्रतियों में से सबसे शुद्ध पाठ चुनकर रखने में, अन्य सब पाठोंको फुट नोट में अंकित करने में, तथा उपलब्ध टिप्पणियाँ भी नीचे उद्धृत करने में उन्होंने बड़ी ही कुशलता और विद्वत्ता दिखलाई है। उनके इस परिश्रमके फल स्वरूप जिन्हें अपभ्रंश या प्राकृत पढ़ने का अभ्यास नहीं है किन्तु जो संस्कृत जानते हैं वे भी इस काव्य-कलापूर्ण सुन्दर रचना का आनन्दोपभोग कर सकते हैं। उनकी इस निर्व्याज साहित्य-सेवा के लिये मैं तथा समस्त पाठकसमाज उनका उपकार माने विना नहीं रह सकते।

मैं उपर कह चुका हूँ कि इस महापुराण को पहले कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था। और इस हेतु प्रथम इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ कारंजा तथा अन्य स्थानों से संग्रह की गई थीं। अम्बादास चवरे ग्रन्थमाला फंड से इसकी प्रथम प्रेस कॉपी तैयार करने में तीनसौ रुपया खर्च हो चुका था, किन्तु पीछे इस ग्रंथमाला में फंड की कमी के कारण इस बहुव्ययसाध्य प्रकाशन को रोकना पड़ा। इसी समय माणिक्यचन्द्र-ग्रंथमाला के अधिकारीवर्ग ने मुझे इस ग्रंथमाला का सम्पादक और सहकारी मंत्री निर्वाचित किया और इस महान् ग्रंथके प्रकाशनकी अनुमति दे दी। अतएव माणिक्यचन्द्र ग्रंथमाला की ओर से मैं चवरे ग्रंथमाला के अधिकारी वर्ग और विशेषतः गोपाल सावजी चवरे का आभार मानता हूँ कि उन्होंने इस व्यय का ख्याल न कर के केवल साहित्योद्धार की भावना से प्रेरित होकर अपनी वह सब सामग्री इस माला के उपयोगार्थ अर्पित कर दी।

१० आशा

यह साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास को समझने के लिये विशेष रूपसे महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से इसकी कदर करनेवालों की संख्या जैन समाज में बहुत कम है। कितने ही समाजहितैषी, शास्त्रप्रेमी दानी बन्धुओं ने मुझे इस साहित्य के लिये इतना अधिक परिश्रम और व्यय करने से रोका है, और मेरे न रुकनेपर मुझे इस बात का दोषी बतलाया है कि मैं समाज का पैसा इस अनुपयोगी प्रकाशन में व्यर्थ खर्च करा रहा हूँ। ऐसी अवस्था में मैं इस समाज के अद्वितीय साहित्यसेवी और मेरे श्रद्धेय मित्र तथा इस माला के सुयोग्य मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमी का विषयरूप से कृतज्ञ हूँ कि उन्हों ने इस सहित्य के महत्त्व को अच्छी तरह समझा है और अपने प्रभावशाली उद्योग से इस महान् ग्रंथ का प्रकाशन संभव किया है। इस कार्य में उन्हें विशेष आनन्द और संतोष होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि जैसा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है, पुष्पदन्त और उनकी रचनाओं का परिचय सबसे पहले उन्होंने ही विद्वत्संसारको दिया था।

मुझे आशा ही नहीं दृढ निश्चय है कि उनके प्रयत्न और साहित्यप्रेमी समाज की उदारता से इस ग्रंथ का शेष भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित हो सकेगा और इस प्रकार महाकवि पुष्पदन्त की समस्त रचनाओं का विद्वत्संसार में प्रचार हो जावेगा। यह जानकर किसे प्रसन्नता न होगी कि पुष्पदन्त के पूर्वप्रकाशित दो ग्रंथ जसहरचरिउ और णायकुमारचरिउ अलाहाबाद और नागपुर विश्वविद्यालयों के एम. ए. के कोर्स में नियुक्त हो गये हैं।

माणिक्यचन्द्रग्रंथमालाकी अभीतक प्रकाशित सभी पुस्तकों का आकार छोटा रहा है जो इस ग्रंथ के लिये अनुपयुक्त पाया गया। इसी कारण यह ग्रंथ इस बड़े आकार में प्रकाशित किया जा रहा है। माला के ग्राहक, आशा है इसे पसंद करेंगे।

अमरावती }
२८-८-३७ }

हीरालाल जैन
सम्पादक और सहमंत्री

तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारु

णाम

महापुराणु



I

सिद्धिवहूमणरंजणु परमणिरंजणु भुवणकमलसरणेसरु ॥
पणविवि विग्घविणासणु णिरुवमसासणु रिसहणाहु परमेसरु ॥ ध्रु० ॥

1

सुपरिक्खिय रक्खियभूयतणुं पंचसयधणुण्णयदिव्वतणुं ।
पयडियसासयपयणयरवहं परसमयभणियदुण्णयरवहं ।
सुहसीलगुणोहणिवासहरं देविंदथुयं दिव्वासहरं ।
जुइणिज्जियमंदरमेहलयं पविमुक्कहारमणिमेहलयं ।
सोहंतासोयरमियविवरं उव्वासियबहुणारयविवरं ।
सुरणाहकिरीडपहिट्ठपयं अइपउरपसायपहिट्ठपयं ।
णवतरणिसमप्पहभावलयं णिरुदुस्सहदुम्मयभावलयं ।
हरिमुक्ककुसुमचित्तलियणहं अरुहंतमणंतजसं अणहं ।

1. १. B देविंदथुवं. २. M °दुम्मह°. ३. MBP अरहंत°.

1. 1. सिद्धिरनन्तचतुष्टयप्राप्तिरिव वधूस्तस्या मनोरञ्जनश्चित्तरञ्जकः; णि रं ज णु पापरहितः; णे स रु सूर्यः. 2. णि रु व म सा स णु उपमातीतमतः; प र मे स रु परा उत्कृष्टा मा समवसरणानन्तचतुष्टयादिलक्षणा बाह्याभ्यन्तरलक्ष्मीस्तस्या ईश्वरः. 3. *a* भू य त णुं भूतविस्तारः, पृथिव्यादिप्रपञ्चः. 4. *a* न य र व हं नगरमार्गम्; *b* दु ण्ण य र व हं दुर्णयाः सर्वथैकान्तप्रकाशकप्रमाणानि, तेषां रवाः प्रतिपादकशास्त्राणि तान् हन्ति निराकरोति यः तम्. 5. *b* दि व्वा स ह रं नग्नमुद्राकरम्, दिग्वासोधरम्. 6. *a* जु इ द्युतिः; °मं द र मे ह ल यं °मन्दरमेखलकम्; *b* °म णि मे ह ल यं °रत्नमेखलकम्. 7. *a* अ सो य अशोकः; °वि व रं पक्षिश्रेष्ठम्; *b* °वि व रं बिलम्. 8. *a* प हि ट्ठ प यं प्रघृष्टपादम्; *b* °प हि ट्ठ प यं आनन्दितलोकम्, (प्रहृष्टप्रजम्). 9. *a* °भा व ल यं °भामण्डलम्; *b* णिरुदुस्सहेत्यादि-णिरुदुस्सहा अतिशयेन सोढुमशक्याः प्रमाणविरुद्धत्वात्ते च ते दुर्मतभावाश्च मिथ्यागमप्रतिपादितार्थास्तेषां लयो निराकरणं यस्मात. 10. *a* ह रि इन्द्रः *b* अ ण हं निष्पापम्.

सीहासणछत्तत्तयसहियं उद्धरियपरं सकियं सहियं ।
दुंदुहिसरपूरियभुवणहरं बंधूअफुल्लसंणिहणहरं ।
पुरुएवजिणं जियकामरणं बुक्किज्झियजम्मजरामरणं ।
विरयं वरयं णियमोहरयं उद्धयभीमणियमोहरयं ।
पणमामि रविं केवलकिरणं मत्तासमयं भणियं किरणं ।

घत्ता—अवरु वि पणविवि सम्मइं विणिहयदुम्मइं कोवपावविद्धंसणु ॥
जासु तित्थि मइं लद्धउ णाणसमिद्धउ णिम्मलु सम्मइंसणु ॥ १ ॥

2

णिम्महियमाणमायामयाइं जिणसिद्धसूरिसुयदेसयाइं ।
साहूण वि चरणंभोरुहाइं णहेदरिसियसुरणयमुहाइं ।
कयहरिसु सरसु सुमहुरु चवंति कोमलपयाइं लीलाइ दिंति ।
गंभीर पसण्ण सुवण्णदेह कंतिल्ल कुडिल णं चंदरेह ।
सालंकारी छंदेण जंति बहुलत्थअत्थगारव वहंति ।
चोद्दहपुव्विल्ल दुवालसंगि जिणवयणविणिग्गय सत्तभंगि ।
चउमुहमुहवासिणि सहंजोणि णीसेसहेउ सा सोहजोणि ।
दुक्खक्खयकारिणि सोक्खखाणि पणवेवि सरासइ दिव्ववाणि ।
धम्माणुसासणाणंदभरिउ पुणु कहमि णिरहु णाहेयचरिउ ।

४. MBP सिंहासण° ५. MB पुरएव°. ६. T notes पणयामिरविं as *p* and explains it as पणयामीति पाठे पणयो मोहः स एव यामी नाम रात्रिस्तस्या रविं स्फेटकम्. ७. M णिम्मल°.

2. १. M °जिणदेवयाइं, but सुयदेवयाइं in the margin. २. MBG णहे दरिसिय°. ३. M बहुअत्थगारवं संवहंति, but adds सत्थ in margin; P बहुअत्थगंथगारव वहंति. ४. M चोद्दह°; P चउद्दह°; T चोद्दस°. ५. T मुणि° ६. M °विणग्गय°. ७. P सहत्थजोणि.

---

11. *b* उद्धरियपरं उन्मूलितमिथ्यावादिनं उद्धृतभव्यं वा. 12. *b* आरक्तनखमित्यर्थः. 13. *a* जियकामरणं जितकामसंग्रामम्. 14. *a* विरयं विरतं संयतम्; वरयं वरदम्; णियमोहरयं संयमोपरतम्; *b* उद्धय° उद्धतनिजमोहरजसम्. 15. *a* मत्तासमयं परिग्रहसमकम्; मात्रा परिग्रहः तामस्यन्ति निराकुर्वन्ति ये ते मात्रासाः मुनयः तेषां मतम् अभीष्टम्; अथवा मत्ताना गर्वितानामा समन्तात् शमकं उपशमकम्; अन्यत्र मात्रासमकं छन्दः 16. सम्मइं वर्धमानम्.

2. 1. *b* °सुयदेसयाइं °श्रुतपाठकानामुपाध्यायानाम्. 2. *a* पञ्चपरमेष्ठिनामित्यर्थः; *b* °णय° °नत°. ४. *b* कुडिल कुटिला स्त्री, पक्षे वक्रोक्तिः. 7. *b* णीसेसहेउ° निःश्रेयसयुक्तिः; सा लक्ष्मीः; सोहजोणि, शोभायोनिः, पक्षे, सा बोहजोणि सम्यग्बोधयोनिः. 9. *a* धम्माणुसासणं धर्मप्रतिपादनम्; *b* णिरहु निष्पापम्.

घत्ता—जेण सुएण सुहोहइं तिहुयणखोहइं होंति चारुकल्लाणइं ॥
उप्पज्जंति पसत्थइं मुणियपयत्थइं मणुयहो पंच वि णाणइं ॥ २ ॥

3

तं कहमि पुराणु पसिद्धणामु सिद्धत्थवरिसि भुवणाहिरामु ।
उव्वद्धजूडु भूभंगभीसु तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु ।
भुवणेक्करामु रायाहिराउ जहिं अच्छइ तुडिगु महाणुभाउ ।
तं दीणदिण्णधणकणयपयरु महि परिभमंतु मेपाडिणयरु ।
अवहेरियखलयणु गुणमहंतु दियहेहिं पराइउ पुप्फयंतु ।
दुग्गमदीहरपंथेण रीणु णवयंदु जेम देहेण खीणु ।
तरुकुसुमरेणुरंजियसमीरि मायंदगोंछगोंदलियकीरि ।
णंदणवणि किर वीसमइ जाम तहिं विण्णि पुरिस संपत्त ताम ।
पणवेप्पिणु तेहिं पवुत्तु एम्व भो खंड गलियपावावलेव ।
परिभमिरभमररवगुमगुमंति किं किर णिवसहि णिज्जणवणंति ।
करिसरबहिरियदिक्कचक्कवालि पइसरहि ण किं पुरवरि विसालि ।
तं सुणिवि भणइ अहिमाणमेरु वरि खज्जइ गिरिकंदरि कसेरु ।
णउ दुज्जणभउँहावंकियाइं दीसंतु कलुसभावंकियाइं ।

घत्ता—वर णरवरु धवलच्छिहे होउ म कुच्छिहे मरउ सोणिमुहणिग्गमे ॥
खलकुच्छियपहुवयणइं भिउडियणयणइं म णिहालउ सूरुग्गमे ॥ ३ ॥

८. P तिहुयणु खोहइं.

3. १. MP ओबद्ध° and gloss in M उत्कृष्टकेशपाशम्; B नबद्धजूड. २. M बंदीण°. ३. MP मेवाडि°. B मेवाड°. ४ K मायंदगोंदिगोंदालिय°. ५. MBP खज्जउ. ६ M हउँहावंकियाइं; BP भउहावंकियाइ.

10. सुहोहइं सौख्यसमूहाः. 11 पयत्थ पदार्थ.

3. 1. *b* सिद्धत्थवरिसि सिद्धार्थनामसंवत्सरे. 2. *a* उव्वद्धजूडु उद्बद्धजूटम्; *b* चोडहो चोडदेशनृपस्य. 3. *b* तुडिगु कृष्णराजः. 4. *b* यत्र मेलपाटीयनगरे. 9. *a* तेहिं ताभ्याम्. 11. *a* दिक्कचक्कवालि दिशामण्डले; करिसर° गजस्वर°. 12. *a* अहिमाणमेरु पुष्पदन्तस्य बिरुदमेतत्. 14. धवलच्छिहे उज्ज्वललोचनायाः; सोणिमुह° कटिच्छिद्र°. 15 कुच्छियपहुवयणइं कुत्सितराजवदनानि; भिउडिय° भृकुटित°.

4

चमराणिलउड्डावियगुणाइ आहिसेयधोयसुयणत्तणाइ ।
अविवेयइ दप्पुत्तालियाइ मोहंधइ मारणसीलियाइ ।
सत्तंगरज्जभरभारियाइ पिउपुत्तरमणरसयारियाइ ।
विससहजम्मइ जडरत्तियाइ किं लच्छिइ विउसविरत्तियाइ ।
संपइ जणु णीरसु णिव्विसेसु गुणवंतउ जहिं सुरगुरु वि वेसु[१] ।
तहिं अम्हहं लइ काणणु जि सरणु अहिमाणें सहुं वरि होउ मरणु ।
अम्मइयइंदराएहिं तेहिं आयेण्णिवि[२] तं पहसियमुहेहिं ।
गुरुविणयपणयपणवियसिरेहिं पडिवयणु दिण्णु णायरणरेहिं ।
घत्ता—जणमणतिमिरोसारण[३] मयतरुवारण णियकुलगयणदिवायर ॥
भो भो केसवतणुरुह णवसररुहमुह कव्वरयणरयणायर ॥ ४ ॥

5

बंभंडमंडवारूढकित्ति अणवरयरइयजिणणाहभत्ति ।
सुहतुंगदेवकमकमलभसलु णीसेसकलाविण्णाणकुसलु ।
पाययकइकव्वरसावउद्धु[१] संपीयसरासइसुरहिदुद्धु ।
कमलच्छु अमच्छरु सच्चसंधु रणभरधुरधरणुग्घुट्ठखंधु[२] ।
सविलासविलासिणिहिययथेणु[३] सुपसिद्धमहाकइकामधेणु ।
काणीणदीणपरिपूरियासु जसपसरपसाहियदसदिसासु ।

4. १. MBP देसु. २. MBP आयण्णिय, G आयण्णवि. ३. MB तिउरोसारण.

5. १. MBPK °बलुध्दु, but G °रसावउद्धु and marginal gloss रसावबुद्धः, T also रसावउध्दु and explains it as परिज्ञातरसः. २. MBP °धरणुग्घिट्ठखंधु ३. MP °घेणु.

4. 2. *a* दप्पुत्तालियाइ दर्पोद्वृत्तया, दर्पोत्तालया. 3. *a* °भारिया °भृता; *b* पिउपुत्त° पितृपुत्रभर्तृविषदायिकया, अथवा, पितृपुत्राभ्यां द्वाभ्यामपि क्रीडनासक्तया. 4. *a* विससहजम्मइ कालकूटसहजन्मना; *b* विउसविरत्तियाए विद्वज्जनविरक्तया 5. *a* णिव्विसेसु अज्ञानभेदः, गुणागुणविचाररहितः; *b* वेसु द्वेष्यः. 7. *a* अम्मइय-इंदरायनामानौ द्वौ पुरुषौ. 8. *b* णायरणरेहिं चतुरनराभ्याम्. 10. तिमिरोसारण अज्ञाननिराकारकः.

5. 2. *a* सुहतुंगदेव कृष्णराजः, तत्प्रतिष्ठापितो जिनश्च. 4. *a* सच्चसंधु सत्यप्रतिज्ञः. 5. *a* °थेणु स्तेनः. 6. *a* काणीण° अकिंचित्कर°; °पसाहिय° °मण्डित°; °दिसासु °दिङ्मुखः.

परमणिपरंमुहु सुद्धसीलु उण्णयमइ सुयणुद्धरणलीलु ।
गुरुयणपयपणवियउत्तमंगु [4]सिरिदेवियंबगब्भुब्भवंगु ।
अण्णइयतणयतणुरुहु पसत्थु हत्थि व दाणोल्लियदीहहत्थु ।
महमत्तवंसधयवडु गहीरु लक्खणलक्खंकियवरसरीरु ।
दुव्वसणसीहसंघायसरहु ण वियाणहि किं णामेण भरहु ।
घत्ता—[5]आउ जाहु तहो मंदिरु णयणाणंदिरु सुकइकइत्तणु जाणइ ॥
सो गुणगणतत्ति[6]ल्लउ तिहुयणि भल्लउ णिच्छउ पइं संमाणइ ॥ ५ ॥

6

जो विहिणा णिम्मिउ कव्वपिंडु तं णिसुणिवि सो संचलिउ खंडु ।
आवंतु दिट्ठु भरहेण केम वाईसरिसरिकल्लोलु जेम ।
पुणु तासु तेण विरइउ पहाणु घरु आयहो अब्भागयविहाणु ।
संभासणु पियवयणेहिं रम्मु णिम्मुक्कडंभु णं परमधम्मु ।
तुहुं आयउ णं गुणमणिणिहाणु तुहुं आयउ णं पंकयहो भाणु ।
पुणु ए[3]वं भणेप्पिणु मणहराइं प[4]इहरीणखीणतणुसुहयराइं ।
वरण्हाणविलेवणभूसणाइं दि[5]ण्णइं देवंगइं णिवसणाइं ।
अब्भंतरसालइं भोयणाइं गलियाइं जाम कइवयदिणाइं ।
देवीसुएण कइ भणिउ ताम भो पुप्फयंत ससिलिहियणाम ।
णियसिरिविसेसणिज्जियसुरिंदु गिरिधीरु वी[6]रु भइरवणरिंदु ।
पइं मण्णिउ वण्णिउ वीरराउ उप्पण्णउ जो मिच्छत्त[7]राउ ।

४. P सिरिअम्बदेवि° B सिरिदेविअम्ब°. ५. M आउजाइं. ६. P °भत्तिल्लउ though marginal gloss °चिन्तकः.

6. १. B omits this line. २. B omits a of this line. ३. M पुणु एण; P पुणु एम. ४. MBP पइखीणरीणतणु°. ५. B दिण्णाइं देवगइणिवसणाइं. ६. B वीरभइरव. ७. MBPK °भाउ, but GT मिच्छत्तराउ and gloss °रागः.

7. *b* उद्धरणलीलु उद्धरणस्वभावः. 9. *a* अण्णैयाकस्य तनयः ऐरण., ऐरणस्य पुत्रो भरतः. 10. *a* °धयवडु महामन्त्रिवंशध्वजपटः. 11. *a* सरहु अष्टापदः. 13. तत्तिल्लउ चिन्तकः; णिच्छउ निश्चयेन.

6. 3. *a* पहाणु मुख्यः. 4. *b* परमधम्मु जिनधर्मः. 9. *a* देवीसुएण भरतेन. 10. *b* भइरवणरिंदु वीरभैरवः अन्यः कश्चिद्दुष्टमहाराजो वर्तते, कथामकरन्दनायको वा कश्चिद्राजास्ति; P वीरभैरवः कश्चिन्मिथ्यादृष्टी राजा. 11. *a* वीरराउ शूद्रकः.

पच्छित्तु तासु अइ करहि अज्जु ता घडइ तुज्झु परलोयकज्जु ।
तुहुं देउ को वि भव्वयणबंधु पुरुएववचरियभारस्स खंधु ।
अब्भत्थिओ सि दे देहि तेम णिव्विग्घें लहु णिव्वहइ जेम ।
घत्ता—अइललियए गंभीरए सालंकारए वायए ता किं किज्जइ ॥
जइ कुसुमसरवियारउ अरुहु भडारउ सब्भावें ण थुणिज्जइ ॥ ६ ॥

7

सियदंतपंतिधवलीकयासु ता जंपइ वरवायाविलासु ।
भो देवीणंदण जयसिरीह किं किज्जइ कव्वु सुपुरिससीह ।
गोवज्जिएहिं णं घणदिणेहिं सुरवरचावेहि व णिग्गुणेहिं ।
मइलियचित्तहिं णं जरघरेहिं छिद्दण्णेसिहिं णं विसहरेहिं ।
जडवाइएहिं णं गयरसेहिं दोसायरेहिं णं रक्खसेहिं ।
आचक्खियपरपुट्ठीपलेहिं वरकइ णिंदिज्जइ हयखलेहिं ।
जो बालवुड्ढसंतोसहेउ रामाहिरामु लक्खणसमेउ ।
जो सुम्मइ कइवइ विहियसेउ तासु वि दुज्जणु किं परि मे होउ ।
घत्ता—णउ महु बुद्धिपरिग्गहु णउ सुयसंगहु णउ कासु वि केरउ बलु ॥
भणु किह करमि कइत्तणु ण लहमि कित्तणु जगु जि पिसुणसयसंकुलु ॥७॥

8

तं णिसुणिवि भरहें वुत्तु ताव भो कइकुलतिलय विमुक्कगाव ।
सिमिसिमिसिमंतकिमिभरियरंधु मिल्लेवि कलेवरु कुणिमगंधु ।

---

८. M पुरएव°. ९. M जय.

7. १. T जरहरेहिं. २. PG ण.

---

18. पुरुएव° आदिनाथ°.

7. 1. *a* धवलीकयासु धवलीकृतास्यः. 2. *a* जयसिरीह जयश्रीलक्ष्मीवाञ्छकः. 3. *a* गोवज्जिएहिं वाणीरहितैः, पक्षे किरणरहितैः. 6. *a* आचक्खिय भक्षित. 7. *b* लक्खणसमेउ व्याकरणसमेतः, पक्षे, लक्ष्मणसमेतः. 8. *a* सुम्मइ श्रूयते; कइवइ विहियसेउ कपिपतिर्हनुमान् तेन कृतः सेतुः, पक्षे, प्रवरसेनो राजा–स प्रवरसेनो जैनः—तेन कृतं सेतुबन्धनाम काव्यं रामायणम्.

8. 1. *b* विमुक्कगाव विमुक्तगर्व. 2. *b* कुणिम कुत्सित.

ववगयविवेउ मसिकसणकाउ सुंदरपयपंति किं रमइ काउ ।
णिक्कारणु दारुणु बद्धरोसु दुज्जणु ससहावें लेइ दोसु ।
हयतिमिरणियरु वरकरणिहाणु ण सुहाइ उलूयहो उइउ भाणु ।
जइ ता किं सो मंडियसराहं णउ रुच्चइ वियसियसिरिहराहं ।
को गणइ पिसुणु अविसहियतेउ भुक्कउ छणयंदहु सारमेउ ।
जिणचरणकमलभत्तिल्लएण ता जंपिउ कव्वपिसल्लएण ।

घत्ता—णउ हउं होमि वियक्खणु ण मुणमि लक्खणु छंदु देसि ण वियाणमि ॥
जा विरइय जयवंदहिं आसि मुणिंदहिं सा कह केम समाणमि ॥ ८ ॥

9

अकलंककविलकणयरमयाइं दियसुगयपुरंदरणयसयाइं ।
दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं णउ णायइं भरहवियारियाइं ।
णउ पीयइं पायंजलजलाइं अइहासपुराणइं णिम्मलाइं ।
भावाहिउ भारवि भासु वासु कोहलु कोमलगिरु कालियासु ।
चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोणु णालोइउ कइ ईसाणु बाणु ।

8. १. MBP सुहाय. २. P उयउ. ३. P छणइंदहु. ४. P पयासमि but marginal gloss कथं समानयामि वर्णयामि.

9. १. B दत्तिल°. २. MBP पायंजलि°. ३. M भारहिं; B भारहभासु. ४. MBP कालिदासु. ५. MP णालोयउ.

8. 3 *a* ववगयविवेउ नष्टविवेकः; °कसणकाउ °कृष्णशरीरः; *b* काउ काकः. 4 *b* ससहावें स्वस्वभावेन; लेइ गृह्णाति. 6 *a* मंडियसराहं मण्डितसरसाम्; *b* वियसियसिरिहराहं विकसितकमलानाम्. 7 *b* छणयंदहु पूर्णिमाचन्द्रस्य; सारमेउ कुक्कुरः. 8 *a* °भत्तिल्लएण °भक्तियुक्तेन; *b* कव्वपिसल्लएण काव्यराक्षसेन पुष्पदन्तेन. 9 लक्खणु व्याकरणम्; देसि देशी भाषा. 10 विरइय विरचिता; अजवंदहिं जगद्वन्द्यैः; समाणमि वर्णयामि.

9. 1 *a* अकलंक न्यायकुमुदचन्द्रोदयकर्ता; कविल सांख्यदर्शने मूलकारः; कणयर वैशेषिकदर्शने मूलकारः; *b* दिय वेदपाठकः; सुगय बौद्धः; पुरंदर चार्वाकमते ग्रन्थकारः; णयसयाइं युक्त्योऽभिप्राया वा. 2. *a* दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं दत्तिलविसाहिलकृतानि संगीतशास्त्राणि; *b* भरहवियारियाइं भरतमुनिकृतं नाट्यशास्त्रम्. 3 *a* पायंजल पाणिनिव्याकरणभाष्यम्; *b* अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा; पुराण त्रिषष्टिपुरुषाश्रिताः कथाः पुराणानि. 4 *a* भावाहिउ भावाधिकः अर्थगौरववान्; वासु व्यासो महाभारतकारः; *b* कोहलु कूष्माण्डः कश्चित्कविः 5. *a* चउमुहु कश्चित्कविः; सयंभु पद्धडीबद्धरामायणकर्ता आपलीसंघीयः.

णउ धाउ ण लिंगु ण गर्ण[६] समासु णउ कम्मुँ[७] करणु किरियाणिवेसु[८] ।
णउ संधि ण कारउ पयसमत्ति णउ आणिय मइं एक्क वि विहत्ति ।
णउ बुज्झिउ आयेमु[९] सद्दधामु सिद्धंतु धवलु[१०] जयधवलु णामु ।
पडु रुद्दडु जडणिण्णासयारु परियच्छिउ णालंकारु[११]सारु ।
पिंगलपत्थारु समुद्दि पडिउ ण कयाँ[१२] वि महारइ चित्ति चडिउ ।
जसइंधु सिंधु कल्लोलसित्तु ण कलाकोसलि हियवउ णिहित्तु ।
हउं बप्प णिरक्खर कुक्खिमुक्खु णरवेसें हिंडमि चम्मरुक्खु ।
अइदुग्गमु होइ महापुराणु कुडएण मवइ को जलणिहाणु ।
अमरासुरगुरुयणमणहरेहिं जं आसि कियउँ[१३] मुणिगणहरेहिं ।
तं हउं मि कहमि भत्तीभरेण किं णहि ण भमिज्जइ महुयरेण ।
पहु विणउ पयासिउ सज्जणाहं मुहि मसिकुंचँउ[१४] कउँ[१५] दुज्जणाहं ।

घत्ता—घरे घरे भमेंउ[१६] असारउ दुण्णयगारउ विवरोक्खए किं अक्खइ ॥
लेंइ[१७] मइं सो मोक्कलिउ[१८] खलु दुब्बोल्लिउ लेउ दोसु जइ पेक्खइ ॥ ९ ॥

10

चारणावासकेलाससेलासिओ किंणरीवेणुवीणाझुणीतोसिओ ।
सामवण्णो सउण्णो पसण्णो सुहो आइदेवाण देवाहिभत्तो बुहो ।
गोम्मुहो[१] संमुहो होउ जक्खो महं चिंतयंतस्स एयं अमेयं कहं ।
विग्घविद्दावणी चारुचक्केसरी सत्थसारंभकल्लोलमालासरी ।
वेरिणिद्दारिणी[२] सुंभणी थंभणी आसि जम्मंतरे होंतिया बंभणी ।

६. BP गुण. ७. M कम्म. ८. MBP किरियाविसेसु. ९. M आयम°. १०. MBP धवलजयधवलणामु. ११. M णालंकारु सारु. १२. B कयाइ. १३. K कहिउ. १४. MB कुच्चउ. १५. M किउ. १६. G भमइ. १७. MB लइ. १८. MB. मोकल्लिउ.

10. १. MBP गोमुहो. २. MB °णिद्दारणी; P °णिद्दारणी.

7 *a* पयसमत्ति पदसमाप्तिः पदखण्डना. 9 *a* पडु पटुश्चतुरः; जडणिण्णासयारु जडत्वनाशकः. 12 *a* कुक्खिमुक्खु गर्भमूर्खः. 13 *b* कुडएण कुडवेन घटेन. 17 दुण्णयगारउ अन्यायकारकः; विवरोक्खए विपरोक्षे 18 दुब्बोल्लिउ दुर्वचनः.

10. 1 *a* चारणावास° मुनीश्वरवास°; °सेलासिओ °शैलाश्रितः; *b* झुणी ध्वनिः. 2 *a* सउण्णो सपुण्यः; सुहो शुभः; *b* अमेयं कहं महतीं कथाम्; एतां महतीं कथां चिन्तयतो मम गोमुखयक्षः संमुखो भवतु. 4 *b* सत्थसारंभ° शास्त्रमेव साराम्भः सुष्ठु जलम्. 5 *a* सुंभणी हिंसिका.

साहुवाणेण संजाइया जक्खिणी णाणसम्मत्तवंती गुणावेक्खिणी ।
उज्जयंतत्थलीकाणणावासिणी सव्वभासासमूहं समुब्भासिणी ।
सुंदरे मंदरे कंदरे कीलिरी[3] तुंगणग्गोहपारोहहिंदोलिरी[4] ।
पिक्कमायंदगोच्छेण[5] डिंभं णियं संथवंती हसंती चवंती पियं ।
खुद्दवाईविवेयावहा वाइणी अंबिया गोरि गंधारि सिद्धाइणी ।
पोमवत्ताहवत्ता पवित्ता सई णायचूडामणी देवि पोमावई ।
कव्ववित्थारदुत्तारमग्गो सही ठाउ[6] मज्झं मुहे देवया भारही ।
होउ बुद्धी महासत्थसामग्गिणी परिसो छंदओ भण्णए सग्गिणी ।

घत्ता—मइं णिम्मियहो उयारहो[7] सहगहीरहो जो णरु भसइ णिबंधहो ॥
जणदुव्वयणहिं दड्ढहो तहो दुवियड्ढहो दुज्जसु होउ[8] मयंधहो ॥ १० ॥

11

अहवा हउं णिग्घिणु पावयम्मु[1] ण वियाणमि अज्ज वि किं पि धम्मु ।
मिच्छाहिराम[2]रंजियविवेउ ण वियाणमि जिणवरवयणभेउ ।
उग्गय[3]रसभावणिरंतराइं अलियाइं जि कहमि कहंतराइं ।
लइ हत्थें झंपमि णहु सभाणु लइ कलसि समप्पमि जलणिहाणु ।
लइ[4] तुच्छबुद्धि णिण्णट्ठणाणु लइ अक्खमि पउ महापुराणु ।
लइ णिंदउ दुज्जणु मच्छरेण लइ कहमि[5] कव्वु किं वित्थरेण ।
करिमयरमीणजलयरवमालि चललवणजलहिवलयंतरालि ।

३. P कीलिणी. ४. P °हिंदोलिणी. ५. MBP °गोंछेण. ६. B omits this foot. ७. BP उवयारहो and gloss in P उपकारस्य उदारस्य वा. ८. K होइ.

11. १. M पावकम्मु. २. MB मिच्छाहिमाण°; P मिच्छाहिमाण but gloss मिथ्याभिराम°. ३. M उग्गव° and gloss उत्कट. ४ MBP अइतुच्छ°. ५. MBP करमि.

7 *a* उज्जयंत ऊर्जयद्गिरि, गिरिनगरपर्वतः 8 *b* णग्गोह वटवृक्षः. 9 *a* खुद्दवाई° क्षुद्रवादिविवेकोपघातिका. 11 *a* पोमवत्ताहवत्ता पद्मपत्राभमुखी; *b* णायचूडामणी त्रिफणसर्पयुक्तमस्तका. 12 *a* सही सखी सहाया. 13 *a* महासत्थसामग्गिणी महाशास्त्रसामग्रीसहिता. 14 भसइ निन्दति; णिबंधहो महापुराणस्य. 15 दुवियड्ढहो दुर्विदग्धस्य; मयंधहो मदान्धस्य.

11. 2 *a* मिच्छाहिराम° मिथ्या असत्यं यचित्रकथादिकं तत्राभिरामः अत्यासक्तिस्तया रञ्जितो विवेको यस्य सः; *b* °भेउ °भेदो विशेषः. 3 *a* उग्गय उत्पन्नः. 4 *a* णहु सभाणु भानुयुक्तं नभः; *b* जलणिहाणु समुद्रः. 7 *a* °वमालि °कोलाहले.

दोवंबुरुहपयडियपईवि जंबूतरुलंछणि जंबुदीवि ।
आरंभोणिहिसामीवसंगि सुरसिहरिहि संठिउ दाहिणंगि ।
सरिगिरिदरितरुपुरवरविचित्तु एत्थत्थि पसिद्धउ भरहखेत्तु ।
तहु मज्झि परिट्ठिउ मगहदेसु जं वण्णहुं सक्कइ णेय सेसु ।
मुहि घुलइ जासु जीहासहासु जसु णाणि णत्थि दोसावयासु ।

घत्ता—सीमारामासामहिं पविउलगामहिं गज्जंतहिं धवलोहहिं ॥
सोहइ हलहरसत्थहिं दाणसमत्थहिं णिच्चं चिय णिल्लोहहिं ॥ ११ ॥

12

अंकुरियइं णवपल्लवघणाइं कुसुमियफलियइं णंदणवणाइं ।
जहिं कोइलु हिंडइ कसणपिंडु वणलच्छिहे णं कज्जलकरंडु ।
जहिं उड्डिय भमरावलि विहाइ पवरिंदणीलमेहलिय णाइ ।
ओयरिय सरोवरि हंसपंति चल धवल णाइं सप्पुरिसकित्ति ।
जहिं सलिलइं मारुयपेल्लियाइं रविसोसभएण व हल्लियाइं ।
जहिं कमलहं लच्छिइ सहुं सणेहु सहुं ससहरेण वड्डउ विरोहु ।
फिर दो वि ताइं महणुब्भवाइं जाणंति ण तं जडसंभवाइं ।
जहिं उच्छुवणइं रसगब्भिणाइं णावइ कव्वइं सुकइहिं तणाइं ।
जुज्झंतमहिसवसहुच्छवाइं मंथामंथियमंथणिरवाइं ।
धवलुद्धपुच्छवच्छाउलाइं कीलियगोवालइं गोउलाइं ।
जहिं चउरंगुल कोमलतणाइं घणकणकणिसालइं करिसणाइं ।

६. M पुरवरु. ७. B मगहएसु. ८. M घुलय. ९. MB °रामहिं, P °रामारम्महिं.
12 १ M अवयरइ; BPT उवयरइ. २ MBP कमलहुं सहुं. ३ P °गब्भिराइं. ४ M धवलुद्धपुच्छ°.

9 *b* सुरसिहरि मेरुः 11 *b* वण्णहुं वर्णयितुम्; सेसु धरणेन्द्रः (शेषः). 12 *b* दोसावयासु दोषावकाशः. 13 °सामहिं °श्यामले; धवलोहहिं बलीवर्दसमूहैः. 14. हलहरसत्थहिं कर्षकसमूहैः; णिल्लोहहिं निर्लोभैर्निर्गतलोहैश्च.

12. 2 *a* कोइलु कोकिलः; कसणपिंडु कृष्णवर्णः कृष्णशरीरः. 3 *a* विहाइ विभाति; *b* °मेहलिय °मेखला. 4 *a* ओयरिय अवतीर्णा; 5 *a* मारुयपेल्लियाइं वायुना प्रेरितानि, *b* हल्लियाइं कम्पितानि. 7 *a* महणुब्भवाइं समुद्रमथनोद्भूतौ; *b* जडसंभवाइं जलजन्मानौ अज्ञानत्वाच्च जानन्ति. 8 *a* रस° इक्षुरसः शृङ्गारादिश्च. 9 *b* °मन्थणि° गोपी. 11 *b* कणिसालइं कणिसयुक्तानि.

घत्ता-तहिं छुहधवलियमंदिरु णयणाणंदिरु णयरु रायगिहु रिद्धउ ॥
कुलमहिहरथणहारिए वसुमइणारिए भूसणु णं आइद्धउ ॥ १२ ॥

13

संकेयागयविरहीयणाइं　　सासोयपवड्डियकंचणाइं ।
बहुलोयदिण्णणाणाफलाइं　　णावइ कुलाइं धम्मुज्जलाइं ।
जहिं महुगंडूसहिं सिंचियाइं　　विंभरियाहरणहिं अंचियाइं ।
सीमंतिणिपयपोमाहयाइं　　वियसंतविडवडुग्गियाइं ।
पियमाणियसुहवाणासणाइं　　जहिं संदरिसियवाणासणाइं ।
पडिखलियसूरभावियरणाइं　　उज्जाणइं णं भावियरणाइं ।
उक्कलियोलइं णवजोव्वणाइं　　णिरु सच्छइं णं सज्जणमणाइं ।
जहिं सीयलाइं झलमाणियाइं　　परकज्जसमाणइं पाणियाइं ।
जहिं जणुलुंचणु कंटयकरालु　　जलि णलिणें लिहुक्कावियउ णालु ।
बाहिरि णिहियउ वियसंतु कोसु　　भणु को व ण ढंकइ गुणहिं दोसु ।
जहिं भमरु तहिं जि संठिउ सुहाइ　　संगहु सिरिणयणंजणहु णाइं ।

घत्ता—कुसुमरेणु जहिं मिलियउ पवणुल्ललियउ कणयवण्णु महु भावइ ॥
दिणयरचूडामणियइ णहकामिणियइ कंचुउ परिहिउ णावइ ॥ १३ ॥

13. १ P वियसंति but gloss विकसित. २ M उक्कलिवालइं. ३ PK जणुलुंचणु. ४ M B P उद्धुल्ललियउ and gloss in P उच्छलित.

12 छु ह सुधाचूर्णम्. 13 कु ल म हि ह र थ ण हा रि ए कुलपर्वता एव स्तनाः तान् धरति; आ इ द्ध उं गृहीतम्.

13. 1 *a* संकेएत्यादि–संकेतेनागता विरहिजना येषूद्यानेषु, कुलपक्षे संकेतेन नाम्ना विरहिजना येषु; *b* सासोएत्यादि–वनपक्षे, अशोकवृक्षैः सह प्रवर्धिता काञ्चनवृक्षाः चम्पकवृक्षा येषु; अन्यत्र, अशोकैः हर्षैः सह प्रवर्धितानि काञ्चनानि सुवर्णानि यत्र. 3 *a* म हु गं डू स हिं मद्यचुलुकैः; *b* विं भ रि य विस्मृतानि साभरणानि वा. 4 *a* °प य पो मा ह या इं °पद्मपद्माहतानि; *b* वि ड व विटपाः शाखाः, अन्यत्र वि ड व विटा इव. 5 *a* पियेत्यादि–वनपक्षे, पिकानामभिमताः सुभगाः आणाशब्दास्तेषामसनं प्रचरणं येषु; युद्धपक्षे, प्रियाणां मानिताः अङ्गीकृताः सुभगानामाज्ञास्वना आदेशशब्दाः 'संग्रामं जित्वा मम हस्तिमुक्ताफलादिकमानेतव्यम्' इत्यादयः येषु. 6 *a* पडिखलियेत्यादि-वनपक्षे, प्रतिस्खलितमादित्यप्रभाविवरणं यत्र; युद्धपक्षे, प्रतिस्खलितं शूराणां सुभटानां भा वि य र णं प्रतापप्रसरणं यत्र; *b* भा वि य र णा इं भावितं परिकलितं रणं यैः पुरुषैः. 7 *a* उ क्क लि या ल इं कल्लोलमालाविराजितानि, पक्षे कलिरहितानि. 8 *b* परकज्जेत्यादि–परकार्ये सति जनाः शीतलाः, स्वकार्ये उत्तापकाः (?). 9 *b* लिहु क्का वि य उ गोपितम्. 13 प रि हि उ परिहितः.

14

जहिं कीलागिरिसिहरंतरेसु कोमलदलवेल्लिहरंतरेसु।
सिक्खंति पक्खि दरदावियाइं विब्भमणियमम्मणुल्लावियाइं।
जहिं पिक्कसालिछेत्तें घणेण छज्जइ महि णं उप्परियणेण।
पंगुत्तें वीहें पीयलेण णिवडंतरिंछपल्लवचलेण।
जहिं संचरंति वंदुगोहणाइं जव कंगु मुग्ग ण हु पुणु तेणाइं।
गोवालबाल जहिं रसु[3] पियंति थलसररुहसेज्जायलि सुयंति।
मायंदकुसुममंजरि सुएण हयचंचुएण कयमण्णुएण।
जहिं समयल सोहइ वाहियालि वाहणपयहय वित्थरइ धूलि।
हरि भामिज्जंति कसासणेहिं अण्णाणिय णाइं कुसासणेहिं।
णिज्जंति णाय कण्णारएहिं णाय व्व णायकण्णारएहिं।
रुज्झंति गयासा ईरिएहिं सीस व्व गयासाईरिएहिं।
आसयर दिंति सिक्खावयाइं णं मुणिवर गुणसिक्खावयाइं।
कप्पूरविमीसु पवासिएहिं जहिं पिज्जइ सलिलु पवासिएहिं।
घत्ता—ससिपहपायाँरहिं गोउरदारहिं जिणवरभवणसहासहिं॥
मढदेउलहिं विहारहिं घरवित्थारहिं वेसावासविलासहिं॥ १४॥

15

जं सोहइ जहिं अविहंडियाइं गयणं व केउसयमंडियाइं।
सिरि[2] णिहियकणयकलसइं घराइं णावइ अहिसित्तजिणेसराइं।

14. १ MP गाईहणाइं. २ MBP णिणाइं. ३ MBP महु; gloss in M मिष्टरसम् but in P इक्षुरसम्. ४ MBPK कुसासणेहिं but gloss in K तर्जनकेन. ५ MBP जलपरिहापायारहिं.

15. १ MBP गयणयलि. २ M सिरणिहिय°.

14. 1 *a* कीलागिरि° क्रीडापर्वत°; *b* वेल्लिहरंतरेसु वल्लीगृहान्तरेषु. 2 *a* दरदावियाइं ईषद्दर्शितानि; *b* °मणिय° रतिकूजितं विकासितकामोद्रेकवचनम्. 3 *b* छज्जइ छाद्यते; उप्परियणेण उपरितनेन वस्त्रेण. 4 *a* पंगुत्तें पंगुरणेन, *b* रिंछ° शुक°. 6 *a* रसु इक्षुरसः; *b* थलसररुह° स्थलकमल°. 7 *a* सुएण शुकेन; *b* कयमण्णुएण कृतमन्युना, भ्रमरैः सह संगः कस्मात्कृत इति कोपेन. 8 *a* वाहियाली वाह्याली राजमार्ग; *b* वाहण° अश्वादि°. 9 *a* हरि अश्वाः; कसासणेहिं तर्जनकेन. 10 *a* णाय नागा हस्तिनः; *b* णाय नागाः सर्पाः. 11 *a* गयासा गजा अश्वाश्च. आईरिएहिं आरोहकैः; *b* गयासाईरिएहिं गताशा आचार्यास्तेषां वचनैः. 13 *a* °विमीसु °विमिश्रम; पवासिएहिं पथिकैः, *b* पवासिएहिं प्रपाश्रितैः 14 ससिपहपायारहिं चन्द्रप्रभावत् प्राकारैः.

15. 1 *a* अविहडियाइं निरन्तराणि, अविच्छिन्नानि; *b* केउ केतुर्ग्रहो ध्वजा च, असंख्यातद्वीपापेक्षया केतुशतानि कथ्यन्ते. 2 *b* अहिसित्तजिणेसराइं अभिषिक्तो जिनेश्वरो यैस्ते, तेषां मस्तकेऽभिषेकार्थं कलशाः सन्ति.

अवियाणियकरदप्पणविसेसि माणिक्कखइयभित्तीपएसि ।
दीसइ सबिंबु मद्दुमत्तियाहिं मण्णिवि सवत्ति हम्मइ तियाहिं ।
जहिं अलिउलु अलयावलि मिलंतु णिद्धाडिउ सासाणिलि घुलंतु ।
अंगणवावीसयदलहु जाइ जलकीलिरबालावयणि ठाइ ।
संजणियबहलमयरंदरंगु जहिं सररुहु संबोहइ पयंगु ।
तं चेय खुडइ मत्तउ विहंगु सिरिहरहो असुंदरु दुट्ठसंगु ।
घत्ता—जहिं दीसइ तहिं भल्लउ णयरु णवल्लउ ससि[३]रविअंतविहूसिउ ॥
उवरिविलंबियतरणिहे सग्गें धरणिहे णावइ पाहुडु पेसिउ ॥ १५ ॥

16

जहिं मणहरु सोहइ हट्टमग्गु बहुसंथउ णं जडचट्टवग्गु ।
जहिं णेहहो भरिउ विहाइ माणु पूरिउ पत्थेणं कणेहिं दोणु ।
कामिणिकमवियलियकुंकुमेण णिल्हसइ जंतु जहिं जणु कमेण ।
कणिरेणियसुकिंकिणिणीसणेहिं गुप्पइ णिवडंतहिं भूसणेहिं ।
खुप्पइ गयमयहयफेणपंकि तंबोलुग्गालइ जणियसंकि ।
जहिं राउलु रेहइ रयणजडिउ णं अमरविमाणु णहाउ पडिउ ।
जहिं धूवधूमकयमणवियार जलहरभंतिएं णच्चंति मोर ।
जहिं विजयवडहदुंदुहिसरेहिं सुव्वइ णं किं पि णारीणरेहिं ।
णवदिणयरकरतंबिरइ गोसि वित्थिण्णइ जहिं पंगणपएसि ।

३ M °रविअंतिं विहूसिउ.

16. P पत्थेहिं. २ MBP कणिराणियकिंकिणी° ३ P सुम्मइ.

4 *a* सबिंबु स्वप्रतिबिम्बम्; *b* सवत्ति सपत्नी; तियाहिं स्त्रीभिः. 5 *a* अलयावलि कुरुलकेशपंक्तिः; *b* सासाणिलि मुखश्वासानिले. 6 *b* पयंगु पतङ्गः सूर्यः. 8 *a* विहंगु हंसः. *b* सिरिहरहो कमलस्य तथा लक्ष्मीपतेः पुरुषस्य दुष्टसंगोऽतीव दुःखदः. 9. णवल्लउ अभिनवमपूर्वम्; ससिरविअंतविहूसिउ चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमणिविभूषितम्. 10. तरणि सूर्यः; पाहुडु प्राभृतम्.

16. I *b* बहुसंथउ बहु रत्नवस्त्रादिकं तेन संस्तृतः; जडचट्टवग्गु मूर्खशिष्यवर्गः. 2 *b* पत्थेण प्रस्थेन, पक्षे पार्थेन बाणेन कृत्वा पूरितो द्रोणाचार्यः. 3 *b* णिल्हसइ स्खलति; जंतु गच्छन्. 4 *b* गुप्पइ पतति. 5 *a* खुप्पइ स्खलति. 6 *a* राउलु राजगृहम्; रेहइ शोभते. 7 *a* °कयमणवियार °कृतमनोविकाराः °कृतसंदेहाः मयूराः 8 *a* विजयवडह° विजयपटह°. 9 *a* गोसि प्रभाते.

घत्ता–हेंदुउ जयसिरिसारहिं रायकुमारहिं बलचोवाणहिं ताडिउ ॥
अणियजणाणुरायहिं परकइवायहिं णावइ लोउ भमाडिउ ॥ १६ ॥

17

तहिं सेणिउ णामें अत्थि राउ गारुडगुरु व्व विण्णायणाउ ।
कज्जेसु दच्छु संजायवेउ रिउवंसडहणि णं जायवेउ ।
सीयामणु व्व रामाहिरामु सूरो इव परदुल्लंघधामु ।
णियसमयणिसेवियइट्ठकामु पावणि व पयंडुद्दामथामु ।
पविदंडो इव णिद्दलियलोहु मयमारउ व्व णासियमओहु ।
वयधारि व गुरुयणि मुक्कमाणु सुरवरकरि व्व अविहंडदाणु ।
जोईसरु व्व हयरोसहरिसु णं सत्तधम्मु थिउ होवि पुरिसु ।
जाणइ विग्गह संधाण ठाणु णं वेयायरणु महापहाणु ।
सत्तंगु वि पालइ रज्जु केम पयईणिवसु णियदेहु जेम ।
पवणो इव फेडियमंदमेहु गोवालु व कयमहिसीसणेहु ।
मंडलियमउडपरिहिट्ठचरणु जिणणाहु व णिहिलणिरायसरणु ।

घत्ता–अवरेक्कहिं दिणि राणउ सो आसीणउ सिंहासणि दीहरकरु ॥
चेल्लिणिदेविएँ मंडिउ णं अवरुंडिउ वल्लरीए सुरतरुवरु ॥ १७ ॥

17. १ MBP विग्गहु संधाणु ठाणु. २ MBP वइयाकरणु. ३ MBP अवरेक्कहिं. ४ P सह आसीणउ. ५ M चेल्लणदेवी°; B चेल्लिणि° P चेल्लणदेविहि.

---

10 हेंदुउ कन्दुकः; चोवाण गेडी (यष्टिः). 11 परकइवायहि मिथ्यादृष्टिकविभिः.

17. 1 *b* विण्णायणाउ न्यायकुशलः; पक्षे विज्ञातसर्पः. 2 *a* संजायवेउ शीघ्रकारी. 3 *b* परदुल्लंघधामु शत्रुभिरलंघ्यः, सूर्य इव अजिततेजाः 4 *b* पावणि पवनपुत्रो हनूमान् भीमो वा; पयंडुद्दामथामु उत्कटपराक्रमः 5 *a* पविदंडो वज्रदण्डः; णिद्दलियलोहु निर्दलितलोभः, पक्षे °लोहः; *b* मयमारउ व्याधः; णासियमओहु नाशितमदोघः, पक्षे नाशितमृगौघः. 6 *b* अविहंडदाणु अविखण्डदानः, दानं मदस्त्यागश्च. 7 *a* °जोईसरु महामुनिः. 9 *b* पयई° प्रकृतयो लोका वातपित्तश्लेष्माणश्च. 10 *a* °मंदमेहु °अल्पमेघः, पक्षे, अल्पमेधाः, मन्दमेधाः इतिकर्तव्यतामूढाः. 11 *a* °परिहिट्ठ° °परिघृष्ट°; *b* णिहिलणिरायसरणु निखिलनृपराजशरणं, पक्षे, निर्गतरागाणां मुनीनां शरणम्. 12 अवरुंडिउ आलिङ्गितः.

18

अतुलियबलखलकुलपलयकालु आमच्छइ मेइणिसामिसालु ।
तामायउ तहिं उज्जाणवालु सिरसिहरचडावियबाहुडालु ।
अणवरयविहियसामंतसेव सो पभणइ भो भो णिसुणि देव ।
कुसुमसरपसरपसमणसमत्थु णीसेसमंगलासउ पसत्थु ।
अहिमयरखयरणिवणामियपाउ तेल्लोक्कणाहु जिणु वीयराउ ।
आहंडलणिम्मियसमवसरणु चउदेवणिकायाणंदकरणु ।
चउतीसातिसयविसेसवंतु अरहंतु महंतु अणंतु संतु ।
परमप्पउ परमु महाणुभाउ तित्थयरु वीरु देवाहिदेउ ।
उप्पाइयकेवलु विमलणाणु अट्ठविहपाडिहेराहिहाणु ।
जगदुरियतिमिरणिहणेक्कभाणु विउलइरि पराइउ वड्ढमाणु ।
तं णिसुणिवि दुज्जणहिययसल्लु परपुरदावाणलु सुहडमल्लु ।
परिवड्ढियजिणधम्माणुराउ आसणु मुएवि रायाहिराउ ।
लहु पणविउ सत्तपयाइं गंपि पहउ थुइवयणु करंतु किं पि ।

घत्ता—जय पयपणमियसुरगुरु जय तिहुयणगुरु सामिय सयलपयाहिय ॥
जय णिहयणियामय भरहणियामय पुप्फयंततेयाहिय ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सम्मइसमागमो णाम
पढमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १ ॥
॥ संधि ॥ १ ॥

18. १ B °बलु. २ M °खयरणिव°. ३ MB °केवलविमल°. ४ M विउलइर. ५ MBP कहंतु.

18 1 *b* जामच्छइ यावदास्ते. 2 *b* °बाहुडालु °प्रलम्बहस्तः. 4 *a* कुसुमसर° काम°; *b* णीसेसमंगलासउ निःशेषमङ्गलाश्रयः 5 *a* अहिमयर° आदित्य°. 6 *a* आहंडल° इन्द्र°. 7 *b* अणंतु शुद्धात्मद्रव्यापेक्षयानन्तः, संतु पर्यायापेक्षया सान्तः. 10 *b* विउलइरि विपुलाचले; पराइउ प्राप्तः. 13 *a* गंपि गत्वा; *a* करंतु उच्चरन्. 14 सयलपयाहिय सकलप्रजाहित. 15 णिहयणियामय निहतनिजरोग; भरहणियामय भरतक्षेत्रजनानां नियमदाता नियामकः; पुप्फयंततेयाहिय चन्द्रसूर्यादपि तेजोधिक.

II

पणिवाउ करेवि पसण्णमणु भत्तिरायरहसुच्छलिउ ॥
सो णरवइ सहुं णियपरियणिण पासु जिणिंदहु संचलिउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

पहयाणंदभेरि बलु चलिउ पुरणारीयणु हरिसुप्पेल्लिउ ।
भाविणि का वि देवगुणभाविणी चलिय सँ कमलहत्थ णं गोमिणि ।
का वि सचंदण सहइ महासइ णं मलयइरिणियंबवणासइ ।
कुवलउ का वि लेइ जसधारिणि णं वरवायविसि रिउदारिणि ।
रुप्पयथालु का वि घुसिणालउ ससिबिंबु व संझारायालउ ।
पवरकसणगंधोहकरंबउ उवरजंतु व णवरविबिंबउ ।
कणयवत्तु काइ वि करि धरियउ इंदणीलमउ मोत्तियभरियउ ।
णावइ णहयलु उडुविप्फुरियउ गुरुचरणारविंदु संभरियउ ।
का वि ससंख समुद्दसही विव का वि सकलस णिहाणमही विव ।
का वि सदप्पण वेसाविति व का वि सरस कइकव्वपउत्ति व ।

MBP have at the commencement of this Samdhi the following stanza in praise of the poet and his patron:—

आदित्योदयपर्वताद्गुरुतराच्चन्द्रार्कचूडामणे-
रा हेमाचलतः कुबेरानिलयादा सेतुबन्धाद् दृढात् ।
आ पातालतलादहीन्द्रभवनादा स्वर्गमार्गं गता
कीर्तिर्यस्य न वेद्मि भद्र भरतस्याभाति खण्डस्य च ॥

GK give it at the beginning of the third Samdhi and have उरुतरात् for गुरुतरात्; चूलामणेः for चूडामणेः and कीर्तिः कस्य न वेत्सि for कीर्तिर्यस्य न वेद्मि.

1. १ M पणवाउ. २ MB °रयसु°. ३ MBP रहसुप्पेल्लिउ. ४ MBP देवगुरुभाविणी. ५ MBP सहत्थकमल. ६ P णं रवि°.

1. 1 रहसुच्छलिउ हर्षेण उद्गतः 2 पासु पार्श्वम्. 3*b* उप्पेल्लिउ प्रेरितः 4 *a* भाविणि भामिनी स्त्री; °भाविणि °भावनायुक्ता; *b* गोमिणि लक्ष्मीः 5 *b* °वणासइ °वनस्पतिः. 6 *a* कुवलउ नीलोत्पलं पृथ्वीमण्डलं च. 7 *a* घुसिणालउ कुङ्कुमयुक्तम्; °रायालउ °रागयुक्तम्. 8 *a* °कसणगंध° कृष्णागुरु कस्तुरिकादि वा; *b* उवरजंतु राहुणा ग्रस्यमानम् . 9 *a* कणयवत्तु कनकपात्रम्. 10 *a* उडु° नक्षत्र°. 11 *a* ससंख शंखयुक्ता; समुद्दसही पृथिवी; *b* णिहाणमही निधानघटयुक्ता पृथ्वी. 12 *b* सरस इक्षुरसादियुक्ता शृंगारादिरसोपेता च.

का वि जिणिंदमत्तिपब्भारें णच्चइ भरहभाववित्थारें ।
काहि वि दिट्ठउ पयडु थणत्थलु णाइं णिरंगकुंभिकुंभत्थलु ।
मयणंकुसवणरेहाँरुणियउ समवंतेण पिर्एण ण गणियउ ।
काहि वि घुलइ हारु मणिमंडिउ णावइ कामें पासउ मंडिउ ।
झल्लरिपडहमुइंगसहासहिं वज्जंतहिं जयजयणिग्घोसहिं ।

घत्ता—आरूढउ महिवइ मत्तगइ मयजलघुलियचलालिगणे ॥
णं मेंहिहरि केसरि खरणहरु पवणुल्ललियतमालवणे ॥ १ ॥

2

चोइउ कुंजरु कमसंचारें गंडालीणभमरझंकारें ।
चामरचवलें छत्तंधारें गच्छमाणु सहुं णियपरिवारें ।
पत्तु णरेसरु तियसरवण्णउं दिट्ठउ समवसरणु वित्थिण्णउं ।
णिम्मिउं सइं सोहम्मपहाणें ठियउ एक्कजोयणपरिमाणें ।
माणखंभमणितोरणदामहिं कप्पियकप्पपायवारामहिं ।
जलखाइयधूलीपायारहिं तियससरासणवण्णवियारहिं ।
वेल्लीवणपरिभमियमरालहिं चेईहरणाणाणडसालहिं ।
सुरणरविसहरथोत्तवमालहिं खयरुग्घाइयकुंसुमोमालहिं ।
गंभीरहिं भुवणयलाऊरहिं वज्जंतहिं बहुमंगलतूरहिं ।
स रि ग म प ध णी सरसंधायहिं तुंबुरुणारयगेयणिणायहिं ।
उव्वसिरंभाणच्चणभावहिं कणरणंतआलावणिरावहिं ।
जं रेहइ तहिं राउ पइट्ठउ परमेसरु सवडंमुहु दिट्ठउ ।

७ MBP °वणियउ. ८ BP पिएण व ९ MBP घुलिय. १० MBP आरूढु महीवइ.

2. १ M छत्तें धारें; P छत्ताधारें. २ P णिय सह परिवारें. ३ M वल्लिय° ४ MBP सुकुसुममालहिं.

13 *b* भ र ह भा व वि त्था रें संगीतभावविस्तारेण. 14 *b* णि रं ग कुं भि कुं भ त्थ लु काम एव गजस्तस्य कुम्भस्थलमिव. 15 *a* म य णं कु स° नख°; *b* स म वं ते ण कामखेदेन उपशमयुक्तेन वा भर्त्रा. 16 *b* पा स उ बन्धनपाशः. 17 *a* °स हा स हिं °सहस्रैः. 18 म त्त ग इ मत्तगजे. 19 म हि ह रि पर्वते.

2. 1 *a* क म सं चा रें चरणसंचरणेन. 2 *a* °च व लें °चपलेन. 3 *a* °र व ण्ण उं रम्यम्. 5 *b* क प्पि य° विकुर्वणया कृत°. 6 *b* ति य स स रा स ण° इन्द्रधनुः. 7 *b* ण ड सा ल हिं नाट्यशालाभिः. 8 *a* °थ मा ल हिं °कोलाहलैः; *b* कु सु मो मा ल हिं कुसुमानामत्र समन्तान्मालाभिः. 11 *b* आ ला व णि वीणा. 12 *a* जं रे ह इ यत् समवसरणं शोभते; *b* स व डं मु हु संमुखः.

घत्ता—सीहासणसिहरासीणु जिणु णिम्मलु जणजणणत्तिहरु ॥
पारद्धउ थुणहुं णराहिविण भुवणंभोरुहदिवसयरु ॥ २ ॥

3

जय सयल- भुवणयल-।
मलहरण इसिसरण ।
वरचरण- समधरण ।
भवतरण जरमरण-।
परिहरण जय वरुण-।
वइसवण- जमपवण-।
दणुदमण- सिरिरमण-।
दिवसयर- फणिसयर-।
ससिजलण- सिरणमण-।
मउडयल- मणिसलिल-।
धुयविमल- कमकमल ।
जय णिहिल- विहिकुसल ।
णयमुसल- हयपबल-।
सुयसबल- दियकविल-।
सिवसुगय- कइकुणय-।
वहदलण मयमलण ।
सवरहिय दुहरहिय ।

५ MBP सिंहासण°. ६ B जिणु जणणत्ति°

3. १ B जलमरण. २ BP धुवविमल. ३ MBP कयकुणय° but GK कइकुणय and T कवि-कुनय°. ४. MBP मयमहण. ५ B omits दुहरहिय.

13 °जणणत्ति °संसारदुःखम्. 14 थुणहुं स्तोतुम.

3. 2 *b* इसि° ऋषि°. 7 *a* दणुदमण° इन्द्रः, *b* सिरिरमण° विष्णु ; वरुणादिज्वलनपर्यन्तानां देवानां शिरोनमनमुकुटतलमणिसलिलधौतक्रमकमल. 12 *a-b* णिहिलविहि° सागारानागारसंबन्धि सकलमनुष्ठानम्. 13 *a* णयेत्यादि – नया एव मुसलास्तैर्हताः प्रबलद्विजादीनां कुनयपथा. येन. 16 *b* मयमलण मदचूर्णकर्ता. 17 *a* सवरहिय स्वपरहित,

मुणिमहिय महमहिय ।
सुरहिरस- विससरिस ।
कुसुमसर- अणवसर ।
जय दुरह- हरिसरह ।
बुहतिलय सुहणिलय ।
रइविलय जुइवलय- ।
जियतरणि जय करुणि ।
जडदमिर- मणभमिर- ।
घणतिमिर- हरमिहिर ।
जय सुमुह जय समह ।
जय सुमण जय[6] गयण- ।
चुयसुमण- पह[7]गमण ।
जय[8] चलियचमररुह जय ललियसुरकुरुह ।
जय[9] गहिरमहुरझुणि जय चरमपरममुणि ।
जय विसयविसिगरुल जयधवल जसधवल ।
जय रसियजसवडह गयगरुह जय अरुह ।

घत्ता—सीहासणछत्तालंकरिय उत्तारेप्पिणु चउगइहे ॥
जय[10] भयमयणिवहमयाहिवइ मइं णेज्जसु पंचमगइहे ॥ ३ ॥

६ MBP गयणयल°. ७ B णहगमण. ८ B omits this line. ९ B omits this line. १० MB जय जय मयणिवह°.

18 *b* महमहिय मखाः यज्ञाः मथिता येन, अथवा, महेसु पूजासु महितः पूजितो वाञ्छितो वा. 19 *a* सुरहिरस° गोदुग्धम्, °विससरिस विषं तत्र समः 20 *b* °अणवसर °अविषय. 21 *a–b* दुरहहरिसरह दुष्पापसिंहस्याष्टापद. 24 *b* करुणि करुणायुक्त. 25 *a* जडेत्यादि–जडानां मूर्खाणां दमकाः मनसा भ्रान्तिं प्राप्नुवन्तः ये मिथ्यादृष्टयः ते एव घनतिमिराणि तेषां हरणे मिहिर सूर्य. 32 *a* विसयविसिगरुल विषयाः एव सर्पास्तेषां गरुड. 32 *b* जयधवल जगतां मङ्गलध्वज. 33 *b* गयगरुह अनिन्द्य. 35 भयमयणिवह° मदा एव मृगास्तेषां यूथम्; °मयाहिवइ सिंहः; पंचमगइ सिद्धावस्था.

4

इय [1]वंदिवि जिणु पालियरट्ठउ पयारहमइ कोट्ठि णिविट्ठउ ।
संभवंतभव[2]भारभयंगउ भूवइ भत्तिभारणवियंगउ ।
पुच्छइ महिवइ संजमधारा अक्खहि गोत्तमसामि भडारा ।
पावणासु चउवग्गाइण्णउं जेम महापुराणु अवइण्णउं ।
तं णिसुणिवि आघोसइ गणहरु वासारत्ति पत्ति णं जलहरु ।
सुणि सेणिय मयमोहविहीणहि अरहंतावलीहि वोलीणहि ।
णाइ णंतु भाविणिहि णिरुत्तउ एहउ वीरजिणिंदें वुत्तउ ।
पढमु समासमि कालु अणाइउ सो अणंतु जि[3]णणाणें जोइउ ।
जगपरिणामहु सो सहयारिउ अरसु अगंधु अरूउ अभारिउ ।
मुणइ को वि सम्मत्तवियक्खणु णिच्छयकालु पवत्तणलक्खणु ।

घत्ता—भो मुणिपयपंकयभमर णिव तच्चु ण कासु वि हउं रहमि ॥
ववहारकालु परमेट्ठिमुहिं जिह णिसुणिउं तिह तुह कहमि ॥ ४ ॥

5

अणुअंतरयरु समउ भणिज्जइ आवलि तेहिं असंखहिं किज्जइ ।
ऊसा[1]सु वि आवलिहिं दु संखहि सत्तूसासहिं थोवउ लक्[2]खहि ।
सत्तहिं थोवएहिं लवु[3] भणियउं इह पियकारिणितणएं मुणियउं ।
होंति महामुणिचित्तावडियहि सड्ढ जि अट्ठतीस लव घडियहि ।

4. १ MBP वंदिय. २ MBP भवभाव°; K भवभाव° but corrects it to भवभार°; T भवभाव° but explains it as संसारे परावर्ताः प्रचुराः. ३ MBP जिणणाहें.

5. १ M ओसासु २ MBP लक्खहि. ३ MBP लउ.

4. 2 *a* संभवंतेत्यादि- उत्पद्यमानसंसारप्राचुर्यभयत्रस्तः. 4 *a* चउवग्गाइण्णउ धर्मार्थकाममोक्षैराकीर्णः. 5 *b* वासारत्ति वर्षाकाले. 6 *b* वोलीणहि व्यतीतायाम्. 7 *a* णाईत्यादि- भाविन्या अर्हदावल्या आदिरन्तश्च नास्ति. 8 *a* समासमि संक्षेपतः कथयामि. 9 *b* अभारिउ अगुरु स्पर्शरहितः. 10 *b* पवत्तणलक्खणु प्रवर्तनालक्षणो निश्चयकालः. 11 तच्चु तत्त्वम्; रहमि गोपयामि.

5. 1 *a* अणुअंतरयरु अण्वोरन्तरं एकमाकाशप्रदेशं परित्यज्य यावता कालेन एकः अणुः द्वितीयमाकाशप्रदेशं गच्छति स कालः समय इति कथ्यते; *b* असंखहिं असंख्येयैः समयैः आवली; 2 *a* दु तु पुनः 3 *b* पियकारिणितणएं महावीरेण. 4 *b* सड्ढेत्यादि–घटिकायाः सार्धा एवाष्टत्रिंशल्लवा भवन्ति.

घडियहिं दोहिं मुहुत्तहु अवसरु तीसहिं तेहिं जाइ णिसिवासरु ।
तेत्तियहिं जि दियँसहिं विरइज्जइ मासु महारिसिणाहहिं गिज्जइ ।
बिहिं मासहिं उडुँमाणु णिबद्धउ उडुहिं तीहिं पुणु अयणु पसिद्धउ ।
बिहिं अयणिहिं संवच्छरु वुच्चइ पंचहिं वच्छरेहिं जुगु वुच्चइँ ।
बिहिं जुगेहिं दसवरिसइं जायइं दहगुणियइं सयसंखइ आयइं ।
सउ दहेहिं ताडिज्जइ जामहिं आवइ अहसहासु वि तावहिं ।

घत्ता—सो सहसु वि दहहउ दससहँसु होइ समासिउ मइं णिउणु ॥
ते दह वि दहहिं जइ गुणइ गुणि तो उप्पज्जइ लक्खु पुणु ॥ ५ ॥

6

संखाणाणिहिं णिम्मिउं चंगउ चउरासीलक्खहिं पुव्वंगउ ।
जाणिज्जइ फुडु अक्खियमेत्ती लक्खसएण जि कोडि पउत्ती ।
पुव्वंगें पुव्वंगु णिहम्मइ जइ तो इह अवरु वि अवगम्मइ ।
वरिसहं सत्तरि कोडिउ लक्खहं छप्पण्णेव ताउ सँहसंखहं ।
परमागमि जं देवें बद्धउ पुव्वपेँमाणु एउ तं लद्धउ ।
पव्वु णउदु कुमुदु वि पउमक्खउ णलिणु कमलु तुडियउ वि ससंखउ ।
अडडु अममु हाहा हूहू तिह जाणहि जिणवरेण जाणिउं जिह ।
मउलय लय वि महालइयंगउ पुणु वि महालयणामपसंगउ ।
सीसपकंपिउ हत्थँपहेलिउ अचलप्पु वि वीरें उम्मीलिउ ।
णाणाणामपमाणहिं भेज्जउ एसिउ कालु होइ संखेज्जउ ।

घत्ता—परमाणु अट्ठ जइ मेलवहिं तो तसरेणु समुब्भवइ ॥
अट्ठहिं तसरेणुहिं पिंडयहिं एक्कु जि रहरेँणुउ हवइ ॥ ६ ॥

४ MBP दिवसहिं. ५ MBP रिउमाणु ६ MBP वुच्चइ. ७ MBP दससहस.

6. १ K सहसक्खहं. २ M पुव्वे पमाणु. ३ B हत्थपहिल्लिउ; P °पहिल्लिउ. ४ MBP रहरेणू.

7 *a* उडुमाणु ऋतुप्रमाणम्. 10. *a* ताडिज्जइ गुण्यते; *b* अहसहासु अब्दसहस्रम्. 11 दहहउ दशगुणितः.

6. 1 *a* संखाणाणिहिं गणितज्ञैः. 2 *a* अक्खियमेत्ती आख्यातमात्रेण. 3 *a* णिहम्मइ गुण्यते. 6 *a* पउमक्खउ पद्मसंज्ञम्. 8 *a* मउलय मृदुलता; लय लता; महालइयंगउ महालतिकाङ्गम् 9 *a* हत्थपहेलिउ हस्तप्रहेलिका; *b* अचलप्पु अचलात्मकम्; उम्मीलिउ प्रकाशितं कथितम्.10 *a* भेज्जउ भेद्यः.

7

अट्ठहिं रहरेणुयहिं समग्गहिं चिहुरग्गउ अट्ठहिं चिहुरग्गहिं ।
लिक्ख भणिय पुणु अट्ठहिं लिक्खहिं सियसिद्धत्थु कहिउ णिहयक्खहिं ।
अट्ठहिं सरिसवेहिं परिमाणिउ जवपमाणु देवागमि आणिउं ।
परमप्पयदिट्ठउ को दूसइ अट्ठजवंगुल सूरि समासइ ।
छंगुलु पाउ विहत्थि दुवाइं दोहिं ताहिं किर रयणि वि हुई ।
चउरयणिहु दंडु मणि म वहि दंडहिं अट्ठसहासिहिं पावहि ।
जोयणु तं पि सपहिं गुणिज्जइ पंचहिं पुणु लोयहु दंसिज्जइ ।
एम महाजोयणु वक्खाणिउं जं जगमाणकरणु अहिणाणिउं ।
तस्स पमाणें खम्मइ खाणी परिवट्टुलिय सपरियरतिउणी ।
कत्तरियहि अविहायहिं सुहुमुहुं सा पूरिज्जइ सिसुअविरोमहुं ।
होउ पहुच्चइ लेक्खें म गणहि संवच्छरसइ एक्कु जि अवणहि ।
जइयहुं रोमरासि सा खिज्जइ तइयहुं पलिओवमु धुवु पुज्जइ ।
तेहिं असंखिहिं उद्धारुल्लउ दीवसमुद्दपमाण परुल्लउ ।
तं पि असंखगुणिउं अद्धारउ भवठिदिआउपमाणाधारउ ।
होइ समुद्दोवमु चुअणाडिहिं पल्लोवमदहकोडाकोडिहिं ।

घत्ता—तेत्तियहिं जि सायरसमहिं फुडु कालचक्कु मइं लक्खियउ ॥
लइ पउ वि अवरु वि पुणु भणमि केवलणाणें अक्खियउ ॥ ७ ॥

7. १ MBP लिहक्ख. २ MBP लिहक्खहिं. ३ M जाणिउ. ४ MBP पंचहिं लोयहु पुणु दरिसिज्जइ ५ MBP खोणी. ६ Tp सपरिरय and adds सपरिरयेति पाठेऽप्ययमेवार्थः ७ MBP अविभायहिं. ८ MP धुउ; B धुवु. ९ MBP हवइ तियआउ°.

7. 1 *b* चिहुरग्गउ रोमाग्रम्. 2 *b* सियसिद्धत्थु श्वेतसर्षपः; णिहयक्खहिं जितेन्द्रियैर्महामुनिभिः. 3 *a* परिमाणिउ एकत्र कृत्वा; *b* देवागमि जिनागमे. 5 *a* दुवाइं द्वाभ्यां पादाभ्याम्, *b* रयणि हस्त. (अरत्निः). 8 *b* जगमाणकरणु लोकप्रमाणम्; अहिणाणिउं अभिज्ञातम्. 9 *b* सपरियरतिउणी स्वपरिधिना त्रिगुणा. 10 *b* अवि° मेषकः. 11 *b* अवणहि स्फेटय. 13 *b* परुल्लउ परम्. 14 *b* भवठिदि° भवास्थिति°. 15 *a* चुयणाडिहिं गलितघटिकाभिः; पल्योपमैर्दशकोटिभिः सागरोपमं स्यात्.

8

सु[1]समसुसमु अण्णेक्कु वि सुसमउ सुसमे[2]दुसमु पुणु दुस्समै[3]सुसमउ ।
दुस्समु अइदुस्समु पविहँत्ता[4] इय छक्काल वीरपण्णत्ता ।
ए ओहामियदावियइड्ढिहिं परिभमंति जगि हाणिपवुड्ढिहिं ।
भुयबलविहवसरीरिसरीरहिं धम्मणाणगंभीरिमधीरहिं ।
वड्ढंतेहिं होइ उस्सप्पिणि ओहट्टंतयहिं अवसप्पिणि ।
सायराहं विंभियगिव्वाणहिं चउतिदुकोडाकोडिपमाणहिं ।
तीहिं मि कालहिं तिण्णि विहत्तइं दहविहविडविपसाहियखेत्तइं ।
दरिसियमाणवदेहारोयइं इच्छासंणिहमाणियभोयइं ।
छ[5]च्चउदुधणुसहाससरीरइं बोरक्खामलमेत्ताहारइं ।
तिण्णिदुएक्कपल्लथियजीवइं रयणाहरणविहूसियँ[6]गीयइं ।
उत्तिममज्झिमाइं णिक्किट्ठइं भोयभूमिविंबाइं पइट्ठइं ।
घत्ता—णउ सत्तु असेसु वि मित्तु तहिं सीहु गइंदें सहुं वसइ ॥
लायण्णवण्णविब्भमभरिउ जणवयजोव्वणु णउ व्हसइ ॥ ८ ॥

9

बहुवोलीणइ तइयइ कालइ थियपल्लोवमट्ठभायालइ ।
अट्ठारहधणुसयतणु थिरजसु पलिओवमदहमंसु चिराउसु ।
पडिसुइ णामें जायउ कुलयरु पुणु तेरहसयचावपईहरु ।
भममभियाउ राउ मंथरगइ अवरु वि हूयउ णामें सम्मइ ।
पुणु णं माणुसवेसु अणंगउ अट्ठसयाइं सरासणतुंगउ ।

8. १ MP सुसमुसुसमु. २ MBP सुसमुदुसमु. ३ MBP दुस्समुसुसमउ. ४ P पवहंता but gloss प्रविभक्ताः पृथग्गुणिताः. ५ MBP छच्चउदुधणुसहास°. ६ MBP विहूसियगीवहिं.

8. 1 *a* अण्णेक्कु द्वितीयः. 2 *a* पविहत्ता प्रविभक्ताः, 3 *a* ए एते षट् कालाः; ओहामियदावियइड्ढिहिं स्फेटितदर्शितऋद्धिभ्यां हानिवृद्धिभ्याम्; अवसर्पिण्यां ऋद्धिः स्फेट्यते उत्सर्पिण्यां ऋद्धिर्दृश्यते. 6 *a* सायराहं सागरोपमैः. 7 *b* दहविहेत्यादि–दशप्रकारैः कल्पवृक्षैर्मण्डितक्षेत्राणि; मद्याङ्गतूर्यभूषास्रग्ज्योतिर्दीपगृहाङ्गकाः । भोजनामत्रवस्त्राङ्गा दशधा कल्पशाखिनः. 8 *a* °आरोय °आरोग्य; *b* इच्छासंणिह° इच्छानुरूपाः. °माणिय° प्राप्त. 9 *b* °अक्ख° बिभीतकः. 10 *a* °पल्लथियजीवइं °पल्यस्थितिजीवितानि. 11 *b* पइट्ठइं प्रविष्टानि. 13 णउ ल्हसइ न पतति.

9. 1 *b* °अट्ठभायालइ अष्टमे भागे काले. 2 *b* पलिओवमदहमंसु पल्योपमस्य दशमो भागः. 3 *b* पईहरु प्रदीर्घतरः. 4 *a* मंथरगइ मन्दगतिः.

अद्धद्धपमाणियाउ खेमंकरु संभूयउ सुभूयखेमंकरु ।
सत्तसयाइं पंचसत्तरि धणु उच्छिउ अण्णु वि उप्पण्णउ मणु ।
खेमंधरु णामें णं दिग्गउ तुडियइं जीवेप्पिणु सो मुउ ।
सयसत्तउ पंचासेहिं जुत्तउ गत्तपमाणउ जासु पउत्तउ ।
कमलजीवि सीमंकरु भण्णइ तहु चरित्तु जइ सुरगुरु वण्णइ ।
णलिणाउसु किर को णउ मण्णइ बाणासणइं सरीरसमुण्णइ ।
सत्तसयइं पंचुत्तरवीसइं जासु जिणिंदभडारउ भासइ ।
सिरिकरपल्लवलालियकंधरु सो संजायउ पुणु सीमंधरु ।
पणुवीसुज्झियहिं दिहिगारउ कोवंडहं सयहिं गरुयारउ ।
तेत्तियहिं पुणु गुणमणिमंडिउ विमलवाहु हुउ पंडापंडिउ ।
पेक्कु वि पोमु जासु संजीविउ मुउ सुहकम्में सुरहरु पाविउ ।
छहसयपणहत्तरिइ पसाहिय जासु देहउच्छेहु पसाहिय ।
कम्मुयाहं कामिणिकयविब्भउ णामें सुपसिद्धउ चक्खुब्भउ ।
पउमंगाउ महीयलि अच्छिउ पच्छा खयकालेण णियच्छिउ ।
पुणु वि जसस्सि पुण्णचंदाणणु उप्पण्णउ पत्थिवपंचाणणु ।

घत्ता—उडुमाणइं सयइं कैणासणहं पण्णासाहियाइं गणमि ॥
तहु देहुद्धत्तणु पत्तडउ जीविउ कुमुदु एक्कु भणमि ॥ ९ ॥

10

पयहु अक्खियाइं जेत्तियइं जि पंचवीसरहियइं तेत्तियइं जि ।
पुणु जायहु बलतुलियगइंदहु धणुसयाइं अहिचंदणरिंदहु ।
कुमुयंगाउणिबद्धपमाणहु गिउ सो कालें अमरविमाणहु ।

9. १ MP मुउ. २ MBP पण्णासहिं. ३ MBP गत्तमाणु जगि जासु पउत्तउ. ४ MP जिणिंदु भडारउ. ५ MBP एक्कु पोमु जा सो संजीविउ. ६ MBP कामुयाहं. ७ BP बाणासणहं. ८ MBP गणिउं. ९ MBP देहुच्चत्तणु. १० MBP भणिउं.

6 *b* सुभूयखेमंकरु सुष्ठु प्राणिनां क्षेमकर्ता. 7 *b* उच्छिउ उच्छ्रितः. 10 *a* कमलजीवि कमलाङ्गप्रमाणायुः. 11 *a* णलिणाउसु नलिनाङ्गायुः 14 *a* दिहिगारउ धृतिकारकः. 15 *b* पंडापंडिउ पण्डा बुद्धिस्तया पण्डितश्चतुरः. 18 *a* कम्मुयाहं कार्मुकाणां धनुषाम्. *b* चक्खुब्भउ चक्षुष्मान्. 19 *b* णियच्छिउ निरीक्षितः. 21 उडु ऋतु; कणासणहं धनुषाम्. 22 कुमुदु कुमुदाङ्गायुः.

10. 2 *a* बलतुलियगइंदहु गजेन्द्रबलनिर्दलनस्य.

पंचसयइं पुणु सयसंजुत्तइं चावइं आसु जिणेण णिउत्तइं।
णउदाउसु महिवइ संजायउ इह चंदाहु णाम विक्खायउ।
तहु पच्छइ गच्छंतें कालें उच्छिज्जंतें सुरतरुजालें।
अज्जवलोयहु आसि पहाणउ हुउ मरुएउ णाम बहुजाणउं।
सायययीढहं सयइं महिट्ठिउ पंच पंचहत्तरइं पयट्ठिउ।
गउ सो णउयंगउ जीवेप्पिणु थिउ सुरहरि सुरबोंदि लएप्पिणु।
सहइं पंचसयइं रणचंडहं देहपमाणु जासु धणुदंडहं।
पव्वाउसु पय पालइं जाणइ पुणु हुउ मणु णामेण पसेणइ।
कंडमोक्खकरणाहं सउण्णउ पंचसयाइं सवायइं उण्णउ।
पुव्वकोडिजीवियसंपुण्णउ सुद्धबुद्धि सब्भावाउण्णउ।
तिहुअणभवणखंभु णं दिण्णउ संतत्तुज्जलकंचणवण्णउ।
गुरुउद्धरियवंसु वरमेहलु दावियकप्पतरुवरामयहलु।
भूसणरयणकिरणहयतममलु सयणुतेयउज्जोइयणहयलु।
मउडसिहरु हारावलिणिज्झरु सुरवरसेवाजोग्गधराधरु।
णं अवयरियउ जंगमु मंदरु णं णहणिवडिउ देउ पुरंदरु।
घत्ता—हुउ पच्छइ आयहं तेरहहं बाहुउद्धारियभुवणभरु॥
जियलोयहो णाहि व णाहिपहु णरसंथुउ कुलयरु पवरु॥ १०॥

11

णहयलि जंतजणेण ण जाणिय पहिलएण रविससि वक्खाणिय।
अण्णु वि रुहरुक्खक्खइ दिट्ठइं बिंदुयबिंदुएहिं उवरिट्ठइं।

10. १ MBP चावहिं. २ MBP चंदाहणामु. ३ MBP उच्छज्जतें. ४ MBP add after this line दीहबाहु उरयलवित्थिण्णउ. ५ B °वसु णं मेहलु. ६ M °जोग°; BP °जोग्ग°. ७ MBP जंगममंदरु. ८ MBP °भुवणहरु. ९ MBP कुलयरपवरु.

11. १ M ण जाणिय.

7 *a* अज्जवलोयहु आर्यलोकस्य; *b* बहुजाणउ बहुश्रुतः. 8 *a* सायययीढहं धनुषाम्. 9 *b* सुरबोंदि देवशरीरम्. 10 *a* रणचंडहं संग्रामप्रचण्डानां धनुर्दण्डानाम्. 11 *a* पव्वाउसु पर्वप्रमाणायुः. 12 *a* कंडमोक्खकरणाहं धनुषाम्. 13 *b* सब्भावाउण्णउ सद्भावपूर्णः. 15 *b* °अमयहलु अमृतफलम्. 16 *b* सयणुतेयेत्यादि–स्वतनुतेजसोद्योतितनभस्तलः. 19 आयहं एतेषाम्. 20 जियलोयहो जीववर्गस्य.

11. 1 *a* णहयलीत्यादि–आकाशे गच्छता जनेन कल्पतरूणां बहुलतेजस्त्वात् न ज्ञातौ; *b* पहिलएण प्रथमकुलकरेण प्रतिश्रुतिना. 2 *a* रुहरुक्खक्खइ कल्पवृक्षस्य क्षयात्, ज्योतिरङ्गक्षयात्.

बीयएण वि लोयहु भयरिट्ठइं अहरत्तइं णक्खत्तइं सिट्ठइं ।
हूया जे मृग दारुण जइयहुं तइयएण ते साहिय तइयहुं ।
सिंगि णक्खि दाढि वि परिहरिया सोमें सुलक्खण णियडइ धरिया ।
चोत्थएण पुणु णउ उप्पेक्खिउ लोउ मृगेहिं खज्जंतउ रक्खिउ ।
ताडिय ते दढदंडपहारिहिं पंचमेण बहुबुद्धिपयारिहिं ।
वियलियफल तरु विरइयमेरइ अज्जव सुणिरोहिय णियकेरइ ।
पविरलदुमकालइ कुज्झंता फललोहें कोहें जुज्झंता ।
छट्ठएण मणुणा अणुबंधें वारिय णर कयसीमाचिंधें ।

घत्ता—कुलयरपवरेण वि सत्तमेण णियमइविहवें भाविउ ॥
पल्लाणिवि हयगयवरवसहभारारोहणु दाविउ ॥ ११ ॥

12

अट्ठमेण चंगउ उवएसिउ डिंभयदंसणभउ णिण्णासिउ ।
णवमएण सुयमुहससि दरिसिउ तं जोइवि जणु हियवइ हरिसिउ ।
जणु जीवेप्पिणु मुउ सोमालहुं दहमें केलि पयासिय बालहुं ।
एयारहमइ कुलयरि जायइ णंदणि माणवबंदहु हूयइ ।
जीउ ण वच्चइ कइवयदिवसइं बारहमइ हुइ बहुयइं वरिसइं ।
णंदइ पय पयाइ संजुत्ती तेरहमेण वियप्पिय वित्ती ।
विहियइं सरिसमुद्दजलजाणइं गयणलग्गगिरिवरसोवाणइं ।
तक्कालइ जायइं णिम्मग्गाइं कुसरि कुसायर कुकुहर दुग्गाइं ।

२ MBP बिग. ३ M सिंगि य णक्खि; B सिंगणक्खि. ४ MBP सोम. ५ B णियडयधरिया. ६ P चउथएण. ७ MBP बिगाहिं. ८ MBP अणुबंधें. ९ P सत्तमइ. १० MBP भावियउ. ११ MBP दावियउ.

12. १ P जोएप्पिणु हियवइ. २ P दहमइं. ३ MBP माणवबिंदहु.

3 *a* °रिट्ठइं उत्पाताः. 4 *b* साहिय साधिताः, मृगस्वरूपं कथितमित्यर्थः. 8 *a* °मेरइ मर्यादया; *b* सुणिरोहिय सुनिबद्धाः. 10 *a* अणुबंधें अनुबन्धेन आग्रहेण.

12 2 *a* सुयमुह° पुत्रमुख°. 3 *a* सोमालहुं सुकुमाराणाम्. 5 *a* जीउ जीवः. 6 *a* पयाइ पुत्रादिभिः; *b* वियप्पिय विकल्पिता रचिता, वित्ती जीविका. 8 *a* णिम्मग्गाइं निश्चितमार्गाणि; कुसरि कुनदी; कुकुहर कुपर्वत.

घत्ता—जाँयं मणुणा चोहहमइण जरासिसुणालइ संडियइं ॥
कसणब्भइं थियइं णहंगणइ चलसोदामणिमंडियइं ॥ १२ ॥

13

विसँकालिंदिकालणवजलहरपिहियणहंतरालओ ।
धुर्यंगयगंडमंडलुड्डावियचलमत्तालिमेलओ ॥
अविरलमुसलसरिसथिरधारावरिसभरंतभूयलो ।
हयरवियरपयावपसरुग्गयतरुतणणीलसद्दलो ॥
पडुतडिवँडणपडियवियडायलरुंजियसीहदारुणो ।
णच्चियमत्तमोरगलकलरवपूरियसयलकाणणो ॥
गिरिसरिदरिसरंतसरसरभयवाणरमुक्कणीसणो ।
महियलघुलियमिलियदुंदुँहसयवयसालूरपोसणो ॥
खणखिक्खँल्लखोल्लखणिखेइयहरिणसिलिंबकयवहो ।
वियसियणवकैलंबकुसुमुग्गयरयपिंजरियदिसिवहो ॥
सुरवइचावतोरणालंकियघणकरिभरियणहहरो ।
विवरमुहोयरंतजलपवहारोसियसविसविसहरो ॥
पियपियपियलवंतवँप्पीहयमग्गियतोयबिंदुओ ।
सरतीरुल्ललंतहंसावलिझुणिहलबोलसंजुओ ॥
चंपयचूयचारचवचंदणचिंचिणिपीणियाउसो ।
वुट्ठो झत्ति जस्स कालम्मि जए सुहयारि पाउसो ॥

४ MBP जायएं. ५ MBP चउदहमइण.

13. १ MBP विसि° and gloss in P सर्पः २ P धुव°. ३ P °ताडिपडण°. ४ M डिंडुह; P डेंडुह; B डुंडुह. ५ MBP °चिक्खिल्ल°. ६ MBP °कयंब°. ७ MBP °बव्वीहय°. ८ P °बिंदओ. ९ MBP °घव°.

---

10 कसणब्भइं कृष्णमेघाः; °सोदामणि° विद्युत्.

13. 1 विस° विषवत्कृष्णमेघः; °कालिंदिकाल° यमुनासदृशकृष्णमेघः 2 °मेलओ मेलापकः समूहः. 3 °थिरधारा° अखण्डवृष्टिः. 4 °सद्दलो °पत्रयुक्तः. 5 °तडि° विद्युत्; वियडायल° विस्तीर्णपर्वतः; रुंजिय शब्दित. 7 °सरसर° °जलस्वर°. 8 दुंदुह° निर्विषः सर्पः. सयवय शतपदः सर्पः; सालूर भेकः. 9 खणिखेइय गर्तायां निक्षिप्ताः; सिलिंब शिशुः. 11 °घणकरि° मेघ एव हस्ती. 12 °रोसिय° कोपित. 13 °बप्पीहय° चातकः. 14 °हलबोल° कोलाहलः. 15 पीणियाउसो एषां वृक्षाणां प्राणसिञ्चनं कृतम्. 16 जस्स कालम्मि यस्य नाभिराजस्य काले; सुहयारि सुखकारी.

मुग्गकुलत्थकंगुजवकलवतिलेसीवीहिमासया ।
फलभरणवियकणिसकणलंपडणिवडियसुयंसहासया ॥
ववगयभोयभूमिभवभूरुह सिरिणरवइरमासही ।
जाया विविहधण्णदुमवेल्लीगुम्मपसाहणा मही ॥
घत्ता—तं पेक्खिवि[12] जणवउ संचलिउ मउ मेल्लेप्पिणु झत्ति तहिं ॥
लच्छीथणपेल्लियवच्छयलु अच्छइ णाहिणरिंदु जहिं ॥ १३ ॥

14

किं तडयडइ पडइ फोडइ धर विप्फुरंतु णिरु भेसावइ णर ।
वंकउं हरियारुणु किं दीसइ देव देव किं गज्जइ वरिसइ ।
गयकप्पद्दुम तेत्थु णिसण्णा एवहिं अवर के वि उप्पण्णा ।
अण्णइं कणभरियइं णिप्फण्णइं णिच्चमेव खगमृगसंचिण्णइं ।
अम्हइं जड उवायअवियाणा दीहरभुक्खायासें रीणा ।
भोज्जाभोज्जु नेत्थु किं होसइ तं णिसुणेप्पिणु महिवइ घोसइ ।
जो रसंतु वरिसइ सो णवघणु जं वंकउं दीसइ तं सुरधणु ।
जा गिरि दलइ चलइ सा विज्जुल चंचरीयचुंबियकोमलदल ।
सुरतरुवरविणासि सुच्छाया कम्मभूमिभूरुह संजाया ।
कडुयगरलु णीरसु वंचिज्जइ जं महुरउ सुसाउ तं चिज्जइ ।
खत्तियवंसत्थलथिरकंदें एम भणेप्पिणु णाहिणरिंदें ।
णिवडमाणु अब्भुद्धरियउ जणु हत्थिकुंभि किउ मट्टियभायणु ।

घत्ता—कणकंडणसिहिसंधुक्कणइं पयणविहाणइं भावियइं ॥
कप्पाससुत्तपरियट्टणइं पडपरियम्मइं दावियइं ॥ १४ ॥

१० MBP °सुयसमासया. ११ M °वण्ण°. १२ MBP पेच्छिवि.
14. १ MBP °मिग°. MB सिवत्रणु. ३ P पिजइ. ४ MBP परियट्टणइं. ५ P °पडियम्मइं.

17 कलव कलमशालिः सुगन्धशालिः; तिलेसी तिला अलसी च 18 °सहासया °सहस्रकाः. 19 णरवइ-रमासही राज्यलक्ष्मीसखी. 21 मउ मदम्.

14. 1 *a* तडयडइ शब्दं करोति; धर पर्वतान्. 4 *a* अण्णइं क्षेत्रे धान्यानि. 5 *a* उवायअवियाणा उपायाज्ञानाः; *b* भुक्खायासें क्षुधाक्लेशेन. 7 *a* रसंतु शब्दायमानः. 8 *b* चंचरीय° भ्रमराः. 10 *a* कडुयगरलु निम्बगुडूचीप्रभृति; *b* चिज्जइ भुज्यते. 11 *a* थिरकंदें मूलभूतेन. 12 *a* णिवडमाणु निपतन् म्रियमाणः. 13 सिहिसंधुक्कणइं अग्निप्रज्वालनविधिः; भावियइं उत्पादितानि. 14 °परियट्टणइ परिकर्षणानि; °परियम्मइं निष्पादनानि.

15

तासु घरिणि मरुएवि भडारी जाहि रूवसिरि अइगरुयारी ।
भमरहं पंतिइ पयपणवंतिइ लंघियाइं अम्हइं णहयंतिइ ।
कमयलराएं काइं णविट्ठउ एम णाइं णेउरहिं पघुट्ठउ ।
पण्हिहिं रत्तउ चित्तु पदंसिउं अंगुलियहिं सरलत्तु पयासिउं ।
अंगुट्ठुण्णईइ जं गूढइं गुप्फइं तं किर पिसुणइं मूढइं ।
णीरोमउ विसिरउ वट्टुलियउ मसिणउ सोहियाउ उज्जलियउ ।
जंघउ कमहाणिइ ओहरियउ दिट्ठउ णं खलमित्तहं किरियउ ।
गूढइं णरवइमंताभासइं वायरणाइं व रइयसमासइं ।
णिविडसंधिबंधइं णं कव्वइं देविहि जण्णुयाइं अइभव्वइं ।
ऊरुयखंभ णराहिवरमणहु तोरणखंभाइं व रइभवणहु ।
जेण ससुरणरु तिहुयणु जित्तउ कामतत्तु जं देवहिं वुत्तउ ।
दिण्ण थत्ति तहु सोणीबिंबहु किं वण्णमि गरुयत्तु णियंबहु ।

घत्ता—गंभीर णाहि तहि मज्झु किसु उयरु सतुच्छउ दिट्ठु मइं ॥
संसग्गवसें गुणु कासु हुउ जो णवि आयउ अम्मि सइं ॥ १५ ॥

16

तिवलीसोवाणेहिं चडेप्पिणु रोमावलिकुहिणी लंघेप्पिणु ।
सिहिणगिरिंदारोहणदोरइ लग्गउ वम्महु मोत्तियहारइ ।
पियवसियरणु वसइ भुयमूलइ सुइसोहग्गु जाहि हत्थयलइ ।

15. १ T णहकंतीए but adds: णहयंतिइ इति पाठे आकाशादागत्येत्यर्थः २ MBP चित्तु पदरिसिउ; T चित्तु वृत्तत्वम् ३ MBP गुंफइं. ४ P दिट्ठा णं. ५ M °समाणइं ६ MBPK ऊरुखंभ. ७ MBP ससुरयणु. ८ M सवित्थरु.

15. 2 *b* णहयंतिइ आकाशादेन्त्या, अथवा नखकान्त्या. 3 *a* कमयलेत्यादि–नूपुरं इति हेतोः शब्दं करोत्यस्माकमवज्ञां विधाय चरणतलरागे किं दृष्टं देवपंक्त्या; काइं किम्; णविट्ठउं दृष्टम्. 4 *a* रत्तउ चित्तु भर्तरि रक्तं चित्तम्. 6 *a* विसिरउ शिरारहिता; *b* मसिणउ स्निग्धा. 7 *a* ओहरियउ अपकर्षं गता. 8 *a* गूढइं प्रच्छन्नानि; णरवइमंताभासइं राजमन्त्रसदृशानि; *b* रइयसमासइं षट् समासाः कर्मधारयादयः, पक्षे मांसयुक्तानि. 9 *a* णिविडसंधिबंधइं सुश्लिष्टपदबन्धानि शरीरावयवबन्धानि च.

16. 1 *a* चडेप्पिणु आरुह्य; *b* °कुहिणी मार्गः. 2 *a* सिहिण° स्तन°; °दोरइ सूत्रे रज्ज्वाम्. 3 *a* पियवसियरणु प्रियवशीकरणम्; *b* सुइ° निर्मलम्.

णेहबंधु मेणिबंधि परिट्ठिउ लायण्णें समुंहु ण संठिउ ।
जाहि तणउं तं जणियवियारउं महुरउ इयरहु केरउ खारउ ।
कंठलीह णउ कंबूं पावइ परसासाऊरिउ कँह जीवइ ।
णियँइणिविट्ठउ जियससिकंतिहि धोयहि धवलहि दंतहु पंतिहि ।
अहरबिंबु रेहइ रायालउ मुत्तावलियहि णाइं पवालउ ।
अम्हहं ठाइ कयाँइ ण संमुहु उज्जुउ णासावंसु वि दुम्मुहु ।
भउंहउं वंकत्तणु वि ण सहियउ णयणहिं गंपि व कण्णहुं कहियउ ।
णिसि।दिणि ससि रवि गयणविलंबिय बिण्णि वि गंडयलइ पडिबिंबिय ।
कुंडलसिरि वहंति धवलच्छिहि जिणजणणियहि सँलक्खणकुंच्छिहि ।
कुडिलालय भालयलि णिरंतर मुहकमलँहु घुलंति णं महुयर ।
अंबरु वि ताहं भारु विवरेरउ मुहससहरभएण णं तमरउ ।
तरुणिहे पँट्ठि पइट्ठुँउ दीसइ कुसुमरिक्खमीसियउ विहासइ ।

घत्ता—पैंणवंतिउ अमरविलासिणिउ छाहिणिहेण णिहीणियउ ॥
चारुत्तणकंखइ सुंदरिहि पयणहदप्पणलीणियउ ॥ १६ ॥

17

तियसमहीरुहपिहियदसासइ भारहवरिसहु मज्झुद्देसइ ।
णं जियलोउ समुग्गयसंतिइ सरयागमु णं कणससिकंतिइ ।
णं सज्जणु गुणिलोयपसंसइ णं आलिंगिउ धम्मु अहिंसइ ।

16. MBP मणिबंधु. २ BP समुहु णं. ३ MB कंबुउ; P कंबुउ and gloss शंखः. ४ M कहिं. ५ M णिविड° ६ P कयावि. ७ MBP सुलक्खण°. ८ P °कुक्खिहि. ९ MB अविरुवि. १० K पुट्ठि. ११ P बइच्छउ. १२ BP पणमंतिउ.

4 *a* मणिबंधि प्रकोष्ठे; लायण्णें लावण्येन समुद्रः सदृशो न. 5 *a* जणियवियारउं जनितरोगादिकम्; *b* इयरहु इतरस्य समुद्रस्य. 6 *a* कंठलीह कण्ठरेखा; *b* परसासाऊरिउ परश्वासपूरितः 7 *a* °ससिकंतिहि चन्द्रकान्त्या. 9 *a* ठाइ तिष्ठति; *b* दुम्मुहु द्विमुखो दुर्मुखश्च. 14 *b* तमरउ तमःप्रवाहः. 15 *b* °रिक्ख° तारागण°. 16 छाहिणिहेण प्रतिबिम्बच्छद्मना: णिहीणियउ निहीनाः कृताः देव्याः. 17 पयणहदप्पणलीणियउ पदनखदर्पणे लीनाः.

17. 1 *a* तियसमहीरुह° कल्पवृक्षाः; °पिहियदसासइ °आच्छादितदशादिशि. 2 *a* समुग्गयसंतिइ समुद्गतशान्त्या.

पीवरपीणपयोहरकयकरु　　ताइ समउ सो पच्छिमकुलयरु ।
अच्छइ णाहिणरेसरु जइयहुं　　सुयरइ सुरवइ णियमणि तइयहुं ।
सुरणरवंदणिज्जु जगि सारउ　　गुरुसंसारमहण्णवतारउ ।
कामकंदकप्परणकुठारउ　　होसइ पयहुं भवणि भडारउ ।
इय संचिंतिवि पुणु परिछिण्णउं　　इंदें धणयहु पेसणु दिण्णउं ।
धणय धणय लहु करि णिरु भल्लउ　　पुरवरु चउदुवारु सोहिल्लउ ।
ता तं पेसणु जक्खें लइयउं　　खणि साकेयणयरु पविरइयउं ।

घत्ता—जहिं पवणाइरियवसेण णंदणवणाइं सुपत्ताइं ॥
णच्चंति फुल्लमुहमुक्केण मयरंदेण व मत्ताइं ॥ १७ ॥

18

जहिं सरवरि सिरिपयसंफासें　　वियसइ कमलु णाइं संतोसें ।
परभुत्तें विमुक्कतमदोसें　　अहवा णंदिउ को वि ण कोसें ।
णं तेहउ वि पीलु किं भंजइ　　महुयरउलु णं रोसें रुंजइ ।
सो तहु दाणु देइ किं भीयउ　　अवरु वि गरुयउ होइ विणीयउ ।
वडपारोहइ हिंदोलंतिहिं　　जोइउ जक्खिहिं दरपहसंतिहिं ।
जहिं कई अइपहसणरसधारउ　　सुइ णियदिट्ठि थिवइ सवियारउ ।
रत्तउ सारसियहि जहिं सारसु　　को वि परिट्ठिउ अहिणवु सारसु ।
सहइ तमालंधारयसारिउ　　जहिं कैलु कोइलु लवइ णिरारिउ ।

17. १ M पओरुह°. २ MPT सुमरइ; B सुअरइ and gloss स्मरति. ३ MBP जग° ४ B °समुण्णव°. ५ MB °कुडारउ; K °कुठारउ but corrects it to °कुडारउ. ६ MBP चउदुवारसोहिल्लउ. ७ MBP पवणायरिय°. ८ MBP °मुक्कएण.

18 १ M परिभुत्तें. २ P को वि. ३ P कइ. ४ BP कइवइ पहसण°. ५ M को ण. ६ MBP अहिणव° ७ MBP कलु.

---

4 *a* °कयकरु °कृतकरः; *b* समउ सह. 5 *b* सुयरइ स्मरति. 7 *a* °कप्परण° °छेदन°. 8 *a* परिछिण्णउं ज्ञातम्, निश्चितम्. 10 *a* लइयउं गृहीतम्. 11 पवणाइरिय° वायुरेव आचार्यः.

18. 1 *a* सिरिपयसंफासें लक्ष्मीपदस्पर्शेन. 2 *a* परभुत्तें हंसैः अन्यैश्च भुज्यते; विमुक्कतमदोसें पापोज्झितेन, अथवा, तमः क्रोधः, पक्षे तिमिरयुक्तरात्रिरहितेन: *b* कोसें कर्णिकया द्रव्येण च. 3 *a* पीलु हस्तिबालः; *b* रुंजइ शब्दं करोति. 5 *b* दर° ईषत्. 6 *a* कइ कपिः; अइपहसणरसधारउ अतिप्रहसनधारकः हास्यं कारयतीत्यर्थः; सुइ शुके. 8 *a* तमालंधारयसारिउ तमालवृक्षान्धकारस्य सा लक्ष्मीस्तस्या रिपुः; *b* णिरारिउ अनिवारितम्.

पवरंबयकलियहि ढोइयकरु महिलहि को ण होइ चाडुययरु ।
जहिं भाविणि ण करइ परपइरइ बीउ धरित्तिहि को उं ण पइरइ ।
अट्ठारहवरसासविहत्तइं जहिं सयमेव सुपक्कइं छेत्तइं ।

घत्ता—जहिं धण्णइं कणभरपणमियइं परिभमंति सच्छंद पसु ॥
वणसेरिहसिंगपहारचुउ महिसिहिं पिज्जइ उच्छुरसु ॥ १८ ॥

19

छुडु छुडु भोयभूमि जहिं वित्ती रिद्धिसमिद्ध विसुद्ध धरित्ती ।
चिंतिउ चिंतिउ देंति ण थक्कइ पुव्वब्भासु ण मेल्लहुं सक्कइ ।
जहिं थलि थलकमलोवरि सुप्पइ पइ पइ पउमहु पंके लिप्पइ ।
दक्खारसु णरेहिं चक्खिज्जइ फलु अउव्वु काइं मि भक्खिज्जइ ।
कुवलयधराणिउ णं णिवईहउ जहिं परिहाउ वहंति पईहउ ।
णं भविस्सजिणजम्मोयरियउ ण्हवणारंभहु णाणासरियउ ।
बहुमाणिक्कमऊहपहावहिं णं गयणंगणु सुरवइचावहिं ।
असियसियारुणवण्णवियारहिं जं सोहइ सत्तहिं पायारहिं ।

घत्ता—जं दियहि दिवायरकंत रविकिरणहिं सिहिभावहु गयउ ॥
तं णीवइ णिसि ससियरपुसियससिमणिजलधाराहयउ ॥ १९ ॥

८ P णउ. ९ MBP खेत्तइं. १० MBP पणामियइं.

19. १ BP °समिद्धिविसुद्ध. २ P मेलहुं. ३ MB पउमें पंकहु चिप्पइ; P पउमहु पंकेहिं चिप्पइ. ४ MB दक्खारसु णरेहिं जहिं पिज्जइ. ५ M adds after this line: मुहमहुरत्ति भिरिय भक्खिज्जइ, and gloss मुखस्य मधुरत्वे सति; P reads in its place मुहमहुलति भिरिय भक्खिज्जइ, and after it reads किंणरमिहुणेहिं लयहरि गिज्जइ, फलु अउव्वु काइं मि भक्खिज्जइ. ६ MB add after this line किंणरमिहुणिहिं लयहरि गिज्जइ, जिणु गाइज्जइ जिणु पुइज्जइ. ७ M जहिं परिहा वहंति पयईहउ. ८ MBP °पहावें. ९ MBP °चावें.

9 *a* अंबयकलिय आम्रकालिका. 10 *a* परपइरइ परपुरुषरतिम्; *b* बीउ बीजम्; पइरइ प्रकिरति; धरित्र्यामकृष्टपच्यानि धान्यानीत्यर्थः. 11 *a* °सास° सस्य. 13 °सेरिह° महिषः.

19. 1 *a* छुडु छुडु यदा यदा, वित्ती समाप्ता. 2 *b* पुव्वब्भासु कल्पवृक्षवद्वाञ्छितवस्तुप्रदानाभ्यासः. 3 *b* पंके मकरन्दकर्दमे. 5 *a* णिवईहउ नृपवाञ्छयेव. *b* परिहाउ खातिकाः; पईहउ प्रदीर्घाः. 7 *a* °मऊह° °किरण° 8 *a* असियसियारुण° कृष्णश्वेतरक्त°. 9 दिवायरकंत सूर्यकान्तमणयः; सिहिभावहु अग्निभावम्. 10 णीवइ विध्यापयति; °पुसिय °स्पृष्टाः; °ससिमणि °चन्द्रकान्तमणयः.

20

मरगयकयघरि पक्खविहूसिउ जहिं चंचुइ लक्खिज्जइ पूसउ ।
इंदणीलघरि णहविप्फुरणें विमलें मोत्तियदामाहरणें ।
आणिज्जइ सामा पहसंती णाइँ णवकुंदुज्जलदंती ।
कणयरइयमंदिरि वियरंती अवेरविसंझाराउ वहंती ।
करकंकणु करँफरिसें जाणइ णेउरु सद्देण जि अहिणाणइ ।
दहिकुट्टिमयलि दइएं आणिउ कलरावेण हंसु परियाणिउ ।
तहिं जि पडीवउं जहिं सियणिवसणु ठविउ ण पेच्छइ अइभोलउ जणु ।
फलिहसिलालयमज्झि णिविट्ठउ पिहियकवाडु वि वहुवरु दिट्ठउ ।
पोमरायमंडवि आसीणी जेत्थु का वि हरिणच्छि पहाणी ।
घुसिणपिंडु ण णियंति विसूरइ जहि सोहाइ ण सग्गु वि पूरइ ।
चंदणचिक्खिल्लें पहुँ चिडुइ जहिं कप्पूरधूलि णहि उड्डइ ।

घत्ता—ण कलागमु अक्खरु णेय गुरु णउ दासत्तणु संविहिउ ॥
वइसवणें एक्केक्कु जि मिहुणु जहिं आणिवि माणिवि णिहिउ ॥ २० ॥

21

मंदिरि मंदिरि सहसा भरियइं तोरणाइं रयणहिं विप्फुरियइं ।
गिज्जंतें मंगलसंघाएं देवदिण्णपडुपडहणिणाएं ।
घरसंचारियँकलस वि दिट्ठा सरयब्भेसु वँ चंद पइट्ठा ।
णिम्मुप्पाइयसुरयणहरिसहि संमज्जियदप्पणयलसरिसहि ।
विहुतारावलिदिणयरपंगणु दीसइ भूमिहि सयलु णहंगणु ।
गुरुअब्भासणभयवसणडियउ णं सोहइ पायालइ पडियउ ।

20. १ B पंख°. २ MBP अवरु वि. ३ MBP करफंसें. ४ M फलिहसिलायलमज्झि; BP °सिलायलि मज्झि. ५ MBP पउ but gloss in P पन्थाः.

21. १ MBP °संचारिम°. २ MBK य.

20. 1 *a* पक्खविहूसिउ पक्षयोर्विशिष्टा भूषा यस्य; *b* पूसउ शुकः. 5 *b* अहिणाणइ अभिजानाति. 6 *a* दहिकुट्टिमयलि धवलशिलोपरि; दइएं भर्त्रा. 7 *a* पडीवउं पतितम्. 8 *a* फलिहसिलालय° स्फटिकगृहम्; *b* वहुवरु वधूवरम्. 9 *b* पहाणी चित्रकारिणी स्त्री. 10 *a* ण णियन्ति रक्तस्वादपश्यन्ती; विसूरइ खिद्यते. 11 *a* पहु पन्थाः; चिडुइ आर्द्रीभवति. 13 माणिवि मानयित्वा.

21. 1 *a* सहसा शीघ्रम्; भरियइं बद्धानि. 5 *a* विहु° चन्द्रः. 6 *a* अब्भासण° हीलना.

एहु सो दिट्ठउ दट्ठु महारउ इय णं भण्णिवि णयणपियारउ।
भवणसिहरचडियं खे लंबिउ जहिं णवजलहरु मोरें चुंबिउ।
णउ चोरउलु [3]विरोहि ण राउलु सूलभिण्णु णउ दीसइ देउलु।
बंभणु वणिवरु ण हलु ण हालिउ णउ पासंडिउ को वि [4]कवालिउ।
धम्मु ण धणुहुं ण [5]जिणवइभासिउ [6]पसुवह वाहिं ण वेएं घोसिउ।
वेस ण कत्थइ वइसियजुत्ती अज्जव [7]सव्वँ णारि कुलउत्ती।
जहिं ण महव्वय पंचाणुव्वय कुच्छियकारिणि णउ कारुय पय।

घत्ता—सामण्णइं सयलइं माणुसइं जहिं एक्कु वि सुविसेसिउ॥
सियपुप्फयंतु सो [8]णाहिणिउ जो भरहेण विहूसिउ॥ २१॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे उज्झाणयरीवण्णणं णाम
दुइज्जो परिच्छेओ समत्तो॥ २॥
॥ संधि॥ २॥

---

३ P विरोहु. ४ P कपालिउ. ५ MBP जिणवर°. ६ M पसुवह वहणु ण; B पसुवहु वहणु ण; P पसु अहवाहणु. ७ MBP णारि सव्व. ८ K णाहिणिवु.

---

7 *b* °पियारउ °प्रियतमः. 8 *a* खे आकाशे. 9 *b* सूलभिण्णु शूलं कलशमध्ये प्रोतं काष्ठं तेन युक्तं देवगृहं चैत्यालयादि न दृश्यते. 11 *b* वाहिं व्याधेन. 12 *a* वेस वेश्या; वइसियजुत्ती वेश्यानां युक्तिर्वचनम्; *b* अज्जव आर्या. 13 *b* कुच्छियकारिणि कुत्सितकारिणी; कारुयपय शिल्पजीविनां प्रजाः. 14 सामण्णइं समानविभूतियुक्तानि, 15 सियपुप्फयंतु शुभ्रपुष्पतुल्यदन्तः; भरहेण भरतक्षेत्रेण, कारापकपक्षे भरतमहाभव्येन,

III

तहिं जाम मणोज्जु[1] भुंजइ रज्जु णिच्चलु णाहिणरिंदु ॥
मंडियसविमाणु कालपमाणु चिंतइ ताम सुरिंदु ॥ ध्रुवकं ॥

1

एहहि[2] महिणाहें माणियहे उयरइ मरुएविहि राणियहे ।
छम्मासहिं[3] होसइ परमजिणु णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु ।
सम्मत्तसमत्तणु संभरमि गब्भासयसोहणु लहु करमि ।
लइ पउँ जि कज्जु महुं तणउं दक्खालमि पेसणु घणघणउं ।
इयँ[4] चिंतिवि पुणु हियवइ धरिय छणससिमुहि पीणपयोहरिय ।
सिरि हिरि दिहि देवी ललियकर वर कंति कित्ति लच्छी य वर ।
छ वि एयउ चारु चवंतियउ पणवण णवण णवंतियउ[5] ।
इंदीवरदीहरणेत्तियउ सुरणाहणिहेलणु पत्तियउ ।
वेल्लहललयाँणिहगत्तियउ[6] देविंदें झत्ति पउत्तियउ ।

घत्ता—जाइवि णरलोउ भुंजियभोउ णाहिणरेसहु[7] गेहु ॥
जिणगब्भणिवासु दुक्कियणासु सोहहु देविहि देहु ॥ १ ॥

GK give at the commencement of this samdhi आदित्योदयपर्वतादुत्तरात् for which see footnote on Second Samdhi; MBP give the following stanza:—

बलिजीमूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।
संप्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥

1. १ MBP भोज्जु. २ MP एयहि; B एवहि. ३ MBP छहिं मासहिं. ४ MBP इय चिंतेविणु हियवइ. ५ P णमंतियउ. ६ M °लयाणि,यवत्तियउ; BP °लयाणिय° ७ MBP °णरेसरगेहु.

1. 1 मणोज्जु मनोज्ञम्; णिच्चलु निश्चलम्. 2 मंडियसविमाणु मण्डितस्वविमानः इन्द्रश्चिन्तयति; कालपमाणु तृतीयकालस्यान्तः कियान् वर्तते. 4 *b* णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु सर्वार्थसिद्धेरप्यागत्य गर्भेऽवतरिष्यति तेन ज्ञायते भुक्तिं विना कर्म न नश्यति. 5 *a* सम्मत्तसमत्तणु सम्यक्त्वस्य समग्रत्वम्; संभरमि संस्मरामि, दर्शयामीत्यर्थः; *b* °सोहणु °शोधनम्. 6 *b* घणघणउं सातिशयम्. 8 *a* ललियकर कोमलहस्ताः *b* वर पराः उत्कृष्टाः. 9 *a* छ वि एयउ एताःश्र्यादिषड्देवताः. 10 *a* इंदीवरेत्यादि-नीलोत्पलदीर्घनेत्राः; *b* सुरणाहणिहेलणु इन्द्रमन्दिरं, इन्द्रालयम्. 11 *a* वेल्लहललयाणिहगत्तियउ कोमललतानिभगात्राः; *b* पउत्तियउ प्रयुक्ताः,

2

ता संचलियउ सुररमणियउ मेहलरंखोलिर[1]रमणियउ।
कयसग्गालयणिग्गमणियउ मयमंथरसिंधुरगमणियउ।
तेल्लोक्कमारमणदमणियउ विरयाहुं[2] मि रयमणदमणियउ।
कुंडलचेंचइय[3]कवोलियउ णं मयणें बाणकओलियउ[4]।
जंतिउ जोयंति ण के सियउ अलिसंणिहभंगुरकेसियउ।
तणुतेउज्जोइयअंबरउ घोलंतविचित्तवरंबरउ।
णयसत्तभंगिविहिरसणियउ मिच्छामय[5]हेउणिरसणियउ।
णिरु सुहवदाणवारिरयउ णं भमरिउ दाणवारिरयउ।

घत्ता—एयउ अण्णाउ सुरकण्णाउ धरिवि णिकामिणिवेसु ॥
आयाउ[6] परेण भत्तिभरेण सिरिमरुएविहि पासु ॥ २ ॥

3

परमेसरि सुरवरलोयचुया[1] कोमलमुणालवेल्लहलभुया।
दीसइ सुरणारिहिं अज्जसुया णं विहिविण्णाण[2]समत्तिहुया।
सव्वंगावयवसुलक्खणिया फणिसुरणरमणमुसुमूरणिया।
वंदारयवंदियपायजुया अइललियहिं थोत्तसएहिं थुया।

2. १ T reads °रंखोलन° but adds: रंखोलिरेति पाठे मेखलया रंखोलनशीलया विलसनशीलया रमणीयाः. २ MBP विरयाहिं but gloss विरतानां यतीनाम्. ३ B कोंडलचेंचइय°; M °चिंचइय°. ४ B बाणकम्मु लियउ; P बाणकवोलियउ and gloss बाणकृतरेखाः ५ K मिच्छायम°; P मिच्छामय° but gloss मिथ्यागम°. ६ MBP आइयउ.

3. १ MBP °थुय. २ M विहिअण्णाण°.

2. 1 *b* मेहलेत्यादि–मेखलया रंखोलनशीलया विलसनशीलया रमणीयाः 2 *a* कयेति–कृतं स्वर्गालयान्निर्गमनं याभिः; *b* मयमंथर° मदेन मन्थरो मन्दः; °सिंधुर° हस्ती 3 *a* तेल्लोकेत्यादि–त्रैलोक्यस्य मारमणा लक्ष्मीपतयः तेषां दमनिका.; *b* विरयाहु यतीनाम्; रयमणदमणियउ रते सुरते मनः रतमनः तद्ददातीति रतमनोदं मणितं यासाम्. 4 *a* °चचइय° भूषितौ. *b* मयणें बाणकओलियउ मदनेन कृताः बाणपंक्तयः इव. 5 *a* जोयंति ण के पश्यन्ति न के, अपि तु सर्वे मनुष्या देवा वा पश्यन्ति; सियउ श्रियः. 6 *a* अंबरउ आकाशम्; *b* °वरंबरउ देवाङ्गवस्त्रम् 7 *a* णयेत्यादि–नया नैगमादयः सप्तभङ्गी च तेषां विधि. रसनायां जिह्वायां यासां ताः; *b* मिच्छेत्यादि–मिथ्यामत तस्य हेतवः तेषां निरसनिकाः. 8 *a* दाणवारि° इन्द्रादयो देवाः; *b* दाणवारिरयउ मदवारिणि रताः, अथवा मदजले रयो वेगो यासां ताः. 9 णिकामिणि° मनुष्यस्त्री (नृकामिनी).

3. 1 *a* °चुया °च्युता; *b* °वेल्लहल° कोमल°. 2 *a* अज्जसुया भोगभूमिजस्य पुत्री; *b* विहिविण्णाणसमत्तिहुया विधिविज्ञानसमाप्तिभूता उत्तमरूपत्वात्. 3 *b* मणमुसुमूरणिया मनोद्रावका. 4 *a* वंदारय° देवाः,

अव्वो जय जय जगगुरुजणणि जय थणयलविलुलियहारमणि।
जय कम्मकाणणाणलअरणि जय धम्मविडवसंभवधरणि।
पइं दिट्ठइ णिट्ठइ[3] पावमलु संपज्जइ संचिंतिउ सयलु।
पइं लद्धउं महिलाजम्मफलु तुह कुच्छिहि होसइ जिणधवलु।

घत्ता—णिरु सरसु णडंतु पयहिं पडंतु विरइय[4]पंजलिहत्थु॥
संपाइय[5] पइ इच्छइ[6] सेव अमरविलासिणिसत्थु॥ ३॥

4

क वि अलयतिलय देविहि करइ क वि आदंसणु अग्गइ धरइ।
क वि अप्पइ वररयणाहरणु क वि लिप्पइ कुंकुमेण चरणु।
क वि णच्चइ गायइ महुरसरु क वि पारंभइ विणोउ अवरु।
क वि परिरक्खइ णिसियासिकरी क वि वारि परिट्ठिय दंडधरी।
अक्खाणउं का वि किं पि कहइ दिण्णउं कणइल्लु[1] का वि वहइ।
क वि वारवार विणएं णवइ क वि सुरसरिसरसलिलहिं ण्हवइ।
क वि मालउ चेलिउं[2] उज्जलउ ढोयइ[3] सवलहणु[4] सुपरिमलउ।
छम्मासु जाम संजणियदिहि पयडंतु समीहिय सोक्खणिहि।
णिवपंगणंति[5] णिहिणिहियधणु वुट्ठउ रयणिहिं वइसवणु[6] घणु।

घत्ता—हंसि वँ सरपोमि[7] रम्मि सुहम्मि उरविलुलियहारावलि॥
सोवंति समग्गि सयणयलग्गि सइं पेच्छइ[8] सिविणावलि[9]॥ ४॥

३ P णट्ठइ. ४ MBP विरइयअंजलि°. ५ MBP संपाइउ. ६ MBP इच्छियसेव.

4. १ P कणयल्लु. २ P चेलउ. ३ M ढोइय. ४ MBP समलहणु. ५ MBP °पंगणंति. ६ MB वइसवणघणु. ७ M हंसियवरपोमि; BP हंसि व वरपोमि. ८ MB पेच्छिवि. ९ MBP सुइणावलि.

5 *a* अव्वो हे मातः. 6 *a* °अरणि अग्न्युत्पादककाष्ठम्, कर्मदहनसमर्थकरदेवोत्पत्तिहेतुत्वात्; *b* °विडव° पादपः. 7 *a* णिट्ठइ नश्यति. 8 *b* जिणधवलु जिनवृषभः. 10 सेव सेवाम्; °सत्थु सार्थः समूहः.

4. 1 *a* अलयतिलय अलिके ललाटे तिलकम्; *b* आदंसणु दर्पणः 3 *b* विणोउ विनोदम्. 4 *b* वारि द्वारे. 5 *a* अक्खाणउं कथानकम्; *b* कणइल्लु क्रीडाशुकः. 7 *a* मालउ पुष्पमालाः; चेलिउ वस्त्रशाटी; *b* सवलहणु विलेपनम्. 9 *a* पंगणंति प्राङ्गणमध्ये; णिहिणिहियधणु निधिषु निहितं स्थापितं धनं येन; *b* रयणिहिं रत्नैः; वइसवणु घणु धनद एव मेघः. 10 सरपोमि सरोवरपद्मे; सुहम्मि शोभनप्रासादे; 11 समग्गि सम्मं अग्गं उपरितनभागो यस्य; सयणयलग्गि शयनतले अग्रे प्रधाने.

5

पत्तिया सणाहणेहरत्तिया ।
सुत्तिया णिमीलियच्छिवत्तिया ।
कामए णिसाविरामजामए ।
इच्छए सुहावहं णियच्छए ।
कंतयं चउप्पयारदंतयं ।
णिब्भरं झरंतदाणणिज्झरं ।
संसयं सरासणाहवंसयं ।
तुंगयं मिलंतमत्तभिंगयं ।
वारणं गिरिंदभित्तिदारणं ।
पंतयं बलेण ढेक्करंतयं ।
गोवइं अलद्धजुज्झगोवइं ।
दुद्धरं फुरंतणक्खपंजरं ।
भासुरं घुलंतकंधकेसरं ।
कोवणं जलंतपिंगलोवणं ।
भीसणं मुहाविमुक्कणीसणं ।
सीहयं विलंबमाणजीहयं ।
अंचियं दिसागएहिं सिंचियं ।
लच्छियं विबुद्धपंकयच्छियं ।
कंदयं पहुल्लदामदंदयं ।
संमुहं समुग्गयं सुहारुहं ।
भाहरं सुदूसहं तमीहरं ।

5. १ PGT record a *p* अलद्ध and add: अलद्ध इति पाठे अलट्ठो अक्षूरो युद्धे गोपतिर्यस्य. २ M कोअणं. ३ MB °लोअणं. ४ MBP मुहोविमुक्क° ५ M °सिंचय. ६ MPT °दुंदयं.

5. 1 *a* पत्तिया पत्नी; *b* सणाह° स्वनाथ°. 2 *b* णिमीलियच्छिवत्तिया निमीलिताक्षिपक्ष्मा. 3 *a* कामए कामदे वाञ्छितप्रदे कामोद्रेकजनके वा; *b* °विरामजामए °पश्चिमयामे. 4 *a* इच्छए स्वेच्छया; *b* णियच्छए निरीक्षते. 5 *b* चउप्पयारदंतयं चतुर्दन्तमित्यर्थः. 7 *a* संसयं प्रशंसनीयम्; *b* सरासणाहवंसय धनुराकारपृष्ठम्. 11 *b* अलद्धजुज्झगोवइं अलब्धो युद्धार्थं गोपतिर्बलीवर्दो येन. 15 *b* मुहाविमुक्क° मुखेन मुक्तः. 17 *a* अंचियं पूजितम्; *b* सिंचियं स्नातम्. 18 *b* विबुद्धपंकयच्छियं विकसितपद्मनेत्राम्. 19 *a* कंदयं गरिष्ठम्; *b* पहुल्ल° प्रफुल्ल°; °दंदयं °द्वन्द्वम्. 21 *b* तमीहरं रात्रिविनाशकं चन्द्रम्.

हंसयं　　खमाणसेक्कहंसयं ।
रत्तयं　　सरंतरे तरंतयं ।
रम्मयं　　चलं झसाण जुम्मयं ।
उब्भडं　　थियंभ[७]कुंभसंघडं ।
मायरं　　प[८]फुल्लपंकयायरं ।
ल्हायरं　　र[९]संतवारिभीयरं ।
आसणं　　म[१०]यारिरूवभूस[११]णं ।
सुंदरं　　पुरंदरस्स मंदिरं ।
सोहणं　　महाहिणो णिहेलणं ।
उब्भ[१२]यं　　मणेयर[१३]ण्णसंचयं ।
दित्तयं　　हुयासणं पलित्तयं ।

घत्ता—इय जोइवि मुद्ध पुणु पडिबुद्ध सिविणइ जं जिह दिट्ठु ॥
उइयइ पच्चूहे अरुणमऊहे रायहु तं ति[१४]हिँ सिट्ठु ॥ ५ ॥

6

ता णरवइ णारीसारियहे　　अक्खइ मरुएविभडारियहे ।
दिट्ठेण गइंदें गुरुहुं गुरु　　होसइ णंदणु पयपणयसुरु ।
गोणाहें गोमंडलु धरइ　　सीहेण सविक्कमु वित्थरइ ।
सिरिदंसणि लहइ तिलोयसिरि　　दामेण वि जाणहि पुरिसहरि ।
पावइ पविहररइयण्हवणउं　　जं दिट्ठउ पइं मयलंछणउ ।

७ BT थियंभ and gloss in T थियंभोऽमृतजलम्. ८ P पफुल्ल°. ९ MBP सरंत°. १० M सयारि°. ११ MBP °भीसणं. १२ MBP उब्भयं. १३ B °रयण°. १४ B तिहे.

22 *a* हंसयं आदित्यम्; *b* खमाणसेक्कहंसयं गगनमेव मानसरोवरं तस्य हंसम्. 23 *a* रत्तयं अन्योन्यक्रीडारतम्. 24 *b* जुम्मयं युग्मम्. 25 *a* उब्भडं प्रकटम्; *b* थियंभ° घृतजलकुम्भयुग्मम्. 26 *a* मायरं लक्ष्मीकरम्. 27 *b* रसंतवारिभीयरं शब्दायमानजलभयानकम्. 28 *b* मयारि° सिंहः. 29 *b* पुरंदरस्स मंदिरं विमानम्. 30 *b* महाहिणो नागेन्द्रस्य; णिहेलणं गृहम्. 31 *b* रण्ण° रत्न°. 32 *b* पलित्तयं प्रदीप्तम्. 34 पच्चूहे आदित्ये; अरुणमऊहे आरक्तकिरणे.

6. 1 *a* णारीसारियहे स्त्रीमध्ये उत्तमायाः. 3 *a* गोणाहें वृषभेण; गोमंडलु भूमण्डलम्. 4 *b* पुरिसहरि पुरुषसिंहः. 5 *a* पविहर° इन्द्रः.

तं होसइ सुउ जणमणहरणु जं पुणु वि पलोइउ खरकिरणु ।
तं मोहंधारविणासयरु भव्वयणणलिणवणदिवसयरु ।
झसजुयलें दोही सोक्खणिहि कुंभेहिँ वि सुरअहिसेयविहि ।
कमलायरसायरेहि बिहिं मि गुणवंतु गहिरु भुवणहं तिहिं मि ।
सिंहासणेण पंचमिय गइ पावेसइ दंसणसुद्धमइ ।
दिट्ठेहिं तियसणायहं घरेहिं सेवेवेउ देविहिं विसहरेहिं ।
रयणोहें जिणसंपत्तिफलु णिड्डहइ हुयासें कम्ममलु ।

घत्ता—सिविणयफलु अज्जु णिरु णिरवज्जु कहमि ण रक्खमि गुज्झु ॥
जगलग्गणखंभु धम्मारंभु होसइ णंदणु तुज्झु ॥ ६ ॥

7

ता तम्मि पत्तम्मि तइयम्मि कालम्मि णक्खत्तसोहंतगयणंतरालम्मि ।
कप्पद्दुमच्छेयपयणियवियारम्मि ससिबिंबरविबिंबधत्थंधयारम्मि ।
अवसप्पिणीसप्पिणीसंपवेसम्मि णरभोयपब्भारसुहभरियगासम्मि ।
मायामहामोहबंधणइं लुंचेवि साराइं पउराइं पुण्णाइं संचेवि ।
सोलह वि तवभावणाओ पहावेवि जगणामियतित्थयरणामं समज्जेवि ।
इंदियइं णिंदियइं णिग्घिणइं भंजेवि तेत्तीसजलणिहिसमाणाउ भुंजेवि ।
जम्मंतराबद्धसुकियपहावेण हिमहारणीहारसियवसहरूवेण ।
आसाढमासम्मि किण्हम्मि बीयम्मि संपत्तए उत्तरासाढरिक्खम्मि ।
सव्वत्थसिद्धीविमाणाउ ओयरइ परमेसरो जणणिगब्भम्मि संचरइ ।

6. १ M पुलोइउ; P पलोयउ. २ MB सेवेव्वउ.
7. १ B सुकय°.

---

6 *b* खरकिरणु सूर्यः. 8 *a* झसजुयलें मत्स्ययुग्मेन, *b* सुरअहिसेय° देवाभिषेक°. 10 *a* पंचमियगइ मुक्तिः. 11 *a* °णायहं °नागानाम्. 14 जगलग्गण° जगदाधार°.

7. 2 *a* कप्पद्दुमच्छेयपयणियवियारम्मि कल्पद्रुमविच्छेदेन जनितविकारे; *b* धत्थंधयारम्मि ध्वस्तान्धकारे. 3 *a* अवसप्पिणीसप्पिणी° अवसर्पिणीकाल एव नागिणी; *b* °गासम्मि भोगग्रासे. 5 *a* सोलह दर्शनविशुद्ध्यादयः षोडश भावनाः; पहावेवि प्रभाव्य. 6 *b* °समाणाउ °समानं आयुः. 7 *b* हिम° अवश्यायो नीहारो वा; °सियवसह° धवलवृषभः. 8 *a* किण्हम्मि बीयम्मि कृष्णद्वितीयायाम्. 9 *b* संचरइ संचरणं प्रवेशं करोति.

सरयब्भमज्झम्मि रुइरुंदइंदु व्व सयवत्तिणीपत्तए तोयबिंदु व्व ।
आया सुरा गब्भवासं णमंसेवि सम्मं गया रायदेविं पसंसेवि ।
तव्वासराए य देवाहिवाणाइ रक्खिंदणाइंदपालिज्जमाणाइ ।
जक्खेण माणिक्कवुट्ठी कया ताम मासेहिं तिहिं हीणु संवच्छरो जाम ।

घत्ता—उयरत्थु अवाहु वड्ढइ णाहु तणुकिरणइं पसरंति ॥
मरुदेविहि देहे णं णवमेहे णवरवियर णिग्गंति ॥ ७ ॥

8

मासम्मि चइत्ते पक्खे कसणे अहिमयरवारि फुडणवमिदिणे ।
उत्तरआसाढारिक्खवरे जोयम्मि बंभि बहुसोक्खयरे ।
जिणु तियसालावणीहिं झुणिउ मरुदेविइ णंदणु संजाणिउ ।
उत्तत्तदित्ततवणीयछवि सुरवइदिसाइ णं बालरवि ।
णं विप्फुरंतु अरणीइ सिहि णं दक्खालिउ धरणीइ णिहि ।
णं जीवसहाउ सिद्धसहए णं अत्थु महाकइकयकहए ।
णं अमयलवेहिं जि णिम्मविउ णं गुणगणु पुंजेप्पिणु ठविउ ।
जगु णरयपडंतउ णाविं सहिउ णं धम्में पुरिसरूवु गहिउ ।

घत्ता—जणतमणिण्णासु लोयपयासु कित्तिवेल्लिवरकंदु ॥
मयमलपब्भट्ठु कुवलयइट्ठु उइउ जिणाहिवचंदु ॥ ८ ॥

२ M °रुंदयंदु व्व; T °इदु व्व. ३ MBP रायदेवी. ४ MBP जक्खिंद°, but T रक्खिंद° राक्षसेन्द्राः.

8. १ B चइत्तहो; P चइति. २ MBP फुडु. ३ MBP बंभि. ४ M मरुदेविं; B मरुदेवे; P मरुदेवी°. ५ P दिक्खालउ and gloss दर्शितः. ६ MP णरइ पडंतउ. ७ MB णाउ.

10 *a* रुइरुंदइंदु व्व महादीप्यमानचन्द्र इव. 12 *a* तव्वासराए तद्दिनादारभ्य; देवाहिवाणाइ इन्द्रस्याज्ञया. 14 अवाहु बाधारहितः. 12 णवरवियर बालार्करश्मयः.

8. 1 *b* अहिमयरवारि रविदिने. 3 *a* तियसालावणीहिं त्रिदशवीणाभिः; झुणिउ गायितः. 4 *a* तवणीयछवि सुवर्णकान्तिः; *b* सुरवइदिसाइ पूर्वदिशा इव. 6 *a* सिद्धसहए सिद्धसभया श्रेण्या, यथा सिद्धध्यानेनात्मा दृश्यते. 10 मयमल° मदाश्च मलाश्च, अन्यत्र मृगः एव मलः; कुवलय° पृथ्वीमण्डलं कुमुदसंघातश्च.

9

णाणत्तिपण णिपुण णिरुत्तें लक्खणवंजणचिंचियगत्तें ।
उप्पण्णे णाहे हयदप्पो जाओ इंदस्सासणकंपो ।
कप्पेसुं ससहावें णाया घंटाटंकारा संजाया ।
उट्ठिय णिण्णासियदिण्णाया जोइसवासे सीहणिणाया ।
वेंतरदेवावासवपसुं गज्जंते पडहा विवरेसुं ।
संखरवो भावणभवणेसुं संपण्णो खोहो भुवणेसुं ।
णाउं णाणेणं णिप्पावं भूमीभाए हूयं देवं ।
तुट्ठो चित्ते धम्माणंदो चलिओ सक्को सक्को चंदो ।
हत्थिंदो एरावयणामो वेउव्वियसरीरपरिणामो ।
गलियकवोलमओलजलद्दो रणझणंतगेज्जावलिसद्दो ।
कच्छरिच्छमालाछुरियंगो कण्णचमरविणिवारियभिंगो ।
पत्तो मत्तो मंदरमेत्तो लीलायंतो बहुविहदंतो ।
कंतिपसाहियणहमित्ताइं दंति दंति सरसयवत्ताइं ।
पत्ते पत्ते सुरतरुणीओ णच्चंतीओ थोरथणीओ ।
इय दट्ठूणं तमिहमलंघं चडिओ सोहम्मीसो सिग्घं ।
सव्वत्थ वि धयछत्तरवण्णं सव्वत्थ वि चामरसंछण्णं ।
सव्वत्थ वि गयणाणाजाणं सव्वत्थ वि धावंतविमाणं ।
सव्वत्थ वि पसरियउल्लोवं सव्वत्थ वि जयदुंदुहिरावं ।
सव्वत्थ वि सरगेयरसालं सव्वत्थ वि उब्भाइयमालं ।
तरुपल्लवियं पिव णहयलयं सोहइ सुरवरपायाउलयं ।

9. १ MBP णिउत्तें. २ P °पएसु. ३ MBP विवरेसुं but gloss in P विपरेसुं विवरेषु गगनेषु T परेसुं उत्तमेषु. ४ MB सक्को सुक्को. ५ P अइरावय°. ६ MB पत्तो. ७ MBP सुरवरतरुणीओ.

9. पादाकुलकं छन्दः. 1 *b* लक्खण° शंखकुलिशादि; वंजण° तिलकमसकादि. 3 *a* णाया उपपन्नाः. 5 *a* °वएसुं पदेषु स्थानेषु; *b* विवरेसुं विवरेषु गगनेषु. 7 *a* णिप्पावं निष्पापम्. 8 *b* सक्को शक्रः; सक्को सार्कः आदित्यसहितः. 10 *a* °मओलजलद्दो मदप्रवाहजलेनार्द्रः. 11 *a* कच्छरिच्छमालाछुरियंगो कक्ष्यया वरत्रया नक्षत्रमालया च स्फुरिताङ्गः. 13 *a* कंतिपसाहियणहमित्ताइं कान्त्या प्रसाधिता मण्डिता नभोमित्रा आकाशादित्या यैः; *b* सरसयवत्ताइं सरसः उध्दृतानि कमलानि. 15 *a* तमिहं तं ऐरावतम् (तम्+इमम्); अलंघं अलंघनीयमतीवोच्चम्. 18 *a* पसरियउल्लोवं प्रसृतोल्लोचं चन्द्रापकम्. 20 *b* सुरवरपायाउलयं देवेन्द्रपादैराकुलम्, अन्यत्र पादाकुलकं छन्दः.

घत्ता—णवतणुरोमंचु दावइ उंर्चु जिणभवि हरिसु वहंति ॥
तरु चलदलपाणि णडइ व खोणि भावें बहुरसवंति ॥ ९ ॥

10

महिसेहिं मेसेहिं आसेहिं भासेहिं ।
हंसेहिं मोरेहिं कुररेहिं कीरेहिं ।
सरहेहिं करहेहिं दुरएहिं वसहेहिं ।
दीवीतरच्छेहिं रिंछेहिं मच्छेहिं ।
सारंगसीहेहिं तरुगिरिहिं मेहेहिं ।
सिहि जम महाभीस णेरिय समुद्देस ।
मारुय कुबेरंक ईसाण णीसंक ।
मज्झम्मि खामाहिं मुद्धाहि सामाहिं ।
छणयंदवयणाहिं णवणलिणणयणाहिं ।
थणघुलियहाराहिं पसरियवियाराहिं ।
धयरट्ठगामिणिहिं सोहंतकामिणिहिं ।
गयणोवडंतीहिं सरसं णडंतीहिं ।
वज्जंतवज्जेहिं कीलंतखुज्जेहिं ।
बाहुरविलेहिं दुक्कंतमल्लेहिं ।
बहुविहविलासेहिं मंगलणिघोसेहिं ।
संचल्लिया सव्व णाणाविहा देव ।

घत्ता—पावेवि अउज्झ परमदुगेज्झ परियंचेवि तिवार ॥
फणि दिणयर चंदु भणइ सुरिंदु जय णाहेय कुमार ॥ १० ॥

८ MBP उच्चु. ९ MBP तरु वरदलपाणि.

10. १ BP कुररेहि. २ MB दुरहेहि ३ MB रिच्छेहि. ४ B मारुव. ५ MBP °वयणेहि. ६ MBP °णयणेहि. ७ MBP गामणिहि. ८ MBP परदुग्गेज्झ. ९ MP °दिणयरु.

10. 1 *b* भासेहिं उलूकैः. 3 *b* दुरएहिं द्विरदैर्गजैः. 6 *b* समुद्देस वरुण. 7 *b* णीसंक इन्द्रः 8 *a* खामाहिं तुच्छोदरीभिः. 11 *a* धयरट्ठ° हंसः, 12 *a* गयणोवडंतीहिं गगनादवतरन्तीभिः. 14 *a* बाहुरविलेहिं करास्फोटनशब्दैः 17 परियंचेवि प्रदक्षिणीकृत्य.

11

गयणग्गलग्गहिमणिहसिहरु पइसेप्पिणु णाहिणरिंदघरु ।
जंपिवि पियवयणइं णिवपवरे मायहि मायासिसु देवि करे ।
अमयासणगणसंमाणियए कड्ढिउ देविइ इंदाणियए ।
सहसक्खें दिट्ठउ परमपरु कमलसरे णं णवदिवसयरु ।
छज्जइ अण्णाणतमोहहरु णं अंकुरत्थि थिउ धम्मतरु ।
णं बद्धउ सिवसुहकणयरसु णं पुरिसरूवि संठियउ जसु ।
णं सयलकलायरु उग्गमिउ णं पक्कहिं लक्खणपुंजु किउ ।
देविइ दिज्जंतु णियच्छियउ सोहम्मिंदेण पडिच्छियउ ।
वरवंदारयवंदहिं णविउ पणवेप्पिणु अंकग्गइ ठविउ ।
को ण गणइ पुण्णपरिप्फुरिउ ईसाणें धवलछत्तु धरिउ ।
चमरइं घिवंति अमराहिवइ साणक्कुमारमाहिंदवइ ।

घत्ता—जगु जित्तउ जेहिं णिम्मिउ तेहिं अणुयहिं देवहु देहु ॥
तं सुइरु णियंतु दससयणेत्तु विम्हिउ पुलइयदेहु ॥ ११ ॥

12

पुणु पभणइ महुं हयकम्ममलु बहुलोयणत्तु जायउ सहलु ।
एहउं तिहुयणपरमेसरहो जं दिट्ठउं रूवु जिणेसरहो ।
इय घोसिवि पुणु पुणु जोइयउ इंदें अइरावउ चोइयउ ।
परमेट्ठि लएप्पिणु भमियगहे सच्छरु सामरु संचलिउ णहे ।
भयसयइं सणउयइं जोणयहं महि मुइवि ठाणु तारायणहं ।

11. १ M °णरिंदु घरु. २ MB पोमसरे. ३ BP सयलु कलायरु. ४ MB णिज्जतु. ५ MBP णमिउ. ६ MB पुण्णपविप्फुरिउ. ७ MBP विंभिउ.

12. १ T *p* णयसयइं and explains it as णयसयइं इति पाठेऽप्ययमेवार्थः.

---

11. 1 *a* गयणग्गलग्ग° आकाशारूढ°; हिमणिह° हिमसदृशम्. 2 *a* णिवपवरे नाभिराजे; *b* देवि दत्वा. 3 *a* अमयासण° देवाः; *b* कड्ढिउ आनीतः; 4 *a* सहसक्खें इन्द्रेण. 5 *a* छज्जइ शोभते. 8 *a* दिज्जंतु दीयमानः; *b* पडिच्छियउ स्वीकृतः. 9 *b* अंकग्गइ उत्सङ्गाग्रे. 10 *a* पुण्णपरिप्फुरिउ पुण्यप्रभावम्. 11 *a* घिवंति क्षिपन्ति. 12 जित्तउ जितम्; अणुयहिं परमाणुभिः. 13 सुइरु सुचिरम्.

12. 1 *b* बहुलोयणत्तु सहस्रनेत्रत्वम्. 4 *a* भमियगहे भ्रमितग्रहे आकाशे; *b* सच्छरु साप्सराः अप्सरोभिः सहितः; सामरु देवैः सहितः. 5 *a* भयसयइं सप्तशतानि; सणउयइं नवत्यधिकानि.

तेत्थाउ सुदूंसहकरयसरु जोयणहिं पसाहियसरयसरु ।
उप्परि दहहिं जि रवि परिभमइ पुणु असियहिं ससि सइं संकमइ ।
चउहु जि रिक्खोहु णिरिक्खियउ पुणु तेसिएहिं बुहु लक्खियउ ।
तिहिं सुक्कु तिहिं जि सुरगुरु भणमि तिहिं अंगारउ तिहिं सणि गणमि ।
सउ एम दहुत्तरु लंघियउ सुद्धायासु वि आसंघियउ ।
सहँसाइं गंपि अट्ठाणवइ अवरु वि जोयणसउ तियसवइ ।
पत्तेण जि सोहइ दीहरिय जोयण पण्णास पवित्थरिय ।
अट्ठेव समुण्णय हिमविमल अद्धिंदुसरिच्छी पंडुसिल ।
जहिं तहिं पत्तेण पवित्ततणु जय जय पभणंतें परमजिणु ।
देवाहिँवेण तेल्लोक्कहिउ तहि उप्परि सीहासणि णिहिउ ।

घत्ता—पहु सहइ णिसण्णु कंचणवण्णु असहियतेयपसंगु ॥
णं कुरुहकरेहिं वेल्लिहरेहिं मंदरु ढंकइ अंगु ॥ १२ ॥

13

जिणणाहहु भावें मेरुगिरि णं हरिसें दावइ णिययसिरि ।
णं पणमइ फलभरणमियतरु णं घेल्लइ चमरीमय चमरु ।
णं कोइलकलरवेण चवइ णं फलिहसिलासणाइं ठवइ ।
पक्खालंतु व पहुकमकमलु आणइ जवेण णिज्झरणजलु ।
लिंपइ व सविणय पणयवसेण करिणिहसणचुयचंदणरसेण ।
जोयइ व रूवु सु सियासियहिं अहिणवणलिणच्छिहिं वियसियहिं ।
णच्चइ व पणच्चियणीलगलु गायइ व रुणुरुणियरँणिय भसलु ।

२ P सुवूसहु. ३ B णिरेखियउ. ४ M सहसइं गंपिणु; BP सहसा गंपिणु. ५ M सवित्थरय; BP सवित्थरिय.
13. १ M पणवइ. २ M चलय. ३ M सुमुणिय°. ४ MBP °रुणिय.

6 *a* तेत्थाउ तस्मादागतः; *b* °सरयसरु शरत्कालसरोवरम्, अथवा सरोजले जातानि सरजानि पद्मानि तैरुपलक्षितं सरः. 7 *b* सइं स्वयम्. 8 *a* रिक्खोहु अश्विन्यादिसप्तविंशनक्षत्राणि. 9 *a* तिहिं त्रिभिः; सुक्कु शुक्रः; सुरगुरु बृहस्पतिः; *b* अंगारउ अङ्गारकः कुजो भौमः; सणि शनैश्चरः. 10 *b* सुद्धायासु शुद्धमाकाशम्; आसंघियउ आश्रितम्. 11 *a* सहसाइं सहस्राणि. 13 *b* अद्धिंदुसरिच्छी अर्धचन्द्राकारा. 15 *a* °हिउ हितः. 16 सहइ शोभते; 17 कुरुहकरेहिं वृक्षकरैः; वेल्लिहरेहिं वल्लीधारकैः; मंदरु ढंकइ अंगु मेरुर्निजाङ्गं प्रच्छादयति.

13. 1 *b* णिययसिरि निजश्रीः. 2 *b* चमरीमय चमरीमृगः. 4 *b* जवेण वेगेन. 5 *b* करिणिहसण° हस्तिनिघर्षण°. 7 *a* °णीलगलु मयूरः.

णं कुसुमामोयं णीससइ णं रयणरयणपंतिहिं हसइ ।

घत्ता—संठिउ मणिरंगि मंदरसिंगि चंपयवासविमीसे ॥
जिणु सासयसोक्खु णावइ मोक्खु थिउ तेलोक्कहु सीसे ॥ १३ ॥

14

ता हयाइं भेरिझल्लरीमुइंगसंखतालकाहलाइं वज्जयाइं ।
खिम्भिसेहिं पाणिपायकुंचियाइं णच्चियाइं वामणाइं खुज्जयाइं ॥
भूयजक्खकिंणरेहिं खेयरेहिं रक्खसेहिं णायणाइणीसएहिं ।
आयएहिं पूरियं णिरंतरं णहंतरं भवंतभावभाविएहिं ॥
बालहंसगामिणीहिं इंदवंदकामिणीहिं गाइयाइं मंगलाइं ।
दब्भदोवपूयबीयमट्टियाकणेहिं ताइं णिम्मियाइं णिम्मलाइं ।
उद्धबद्धणिद्धचारुचीरमंडवे फुरंतमोत्तिएहिं मंडिऊण ।
लोयतावकारणाइं कुच्छियाइं वंछियाइं छंडिऊण ॥
सद्दिऊण णायरेण सायरेण सासणामरे वरे पओसिऊण ।
गंधधूवफुल्लदीवतोयतंदुलण्णजण्णभायए णिवेसिऊण ॥
सक्कचिक्किकालणेरिअण्णवाणिले कुबेरसूलिणे समच्चिऊण ।
मंतपुव्वियं विहिं सुहावहं समागमे समासियं समासिऊण ॥
जीय देव णंद वद्ध सिद्ध बुद्ध सुद्धसील सामिसाल भाणिऊण ।
दोहएहिं दोधएहिं खंधएहिं चित्तवित्तसंथुईहिं माणिऊण ॥

14. GK mention at the beginning पिंगलाणंदो णाम दंडओ; MBP have पिंगलाणंदो णाम छंदो. १ M °मुयंग°. २ MB °काहलाइवज्जयाइं. ३ MB वावणाइं. ४ P °दोव्व° but gloss दूर्वा ५ K छंडिऊण. ६ M °जझ°. ७ BP °सूलिणो. ८ KT दूहएहिं.

8 *b* रयणरयणपंतिहिं रत्नान्येव दन्तास्तेषां पंक्तिभि-: 9 मणिरंगि रत्नभूमौ.

14. 1 वज्जयाइं वाद्यानि. 2 खिम्भिसेहिं किल्बिषिकदेवैस्तूर्यवादिभिः; पाणिपायकुंचियाइं संकुचितहस्तपादाः. 3 णायणाइणीसएहिं नागनागिनीशतैः. 4 आयएहिं आगतैः; भवंतभावभाविएहिं संसारविनाशकपरिणामसहितैः उत्पद्यमानानुरागैर्वा. 6 °दोव° दूर्वा; °पूय° अपूपचरुर्वा; °बीय° बीज. 8 कुच्छियाइं दुःखकारणानि; वंछियाइं मानमायादीनि. 9 णायरेण व्युत्पन्नेन इन्द्रेण; सासणामरे शासनदेवान्; पओसिऊण प्रतोष्य. 10 °जण्णभायए यज्ञभागान्. 11 सक्केत्यादि–शक्रादीनष्टदिक्पालान्; °चिक्कि° अग्निदेवः; °काल° यमः; णेरि नैर्ऋत्यदेवः; °सूलिणे °ईशानान्; 12 समागमे समासियं समासिऊण जिनशासने प्रतिपादितं समाश्रित्य. 14 दोहएहिं दोहकदोधकाद्यैः वृत्तैः; चित्तवित्त° चित्रवृत्त°.

मंदरं[९] छिवंतियाइ बद्धदेवपंतियाइ खीरसायरंतियाइ ।
वोमयं कमंतियाइ धंतियाइ थंतियाइ जंतियाइ पंतियाइ ॥
हारदोर[१०]कंचिदामबंभसुत्तकंकणा[११]लिकुंडलाहिं भूसिएहिं ।
आइबीयकप्पपुंगमेहिं आसणासिएहिं सम्मयाहिलासिएहिं ॥
अट्ठजोयणोयरेहिं एक्ककंठवित्थरेहिं अब्भयं णिसुंभएहिं ।
हुंदहोपयच्छिएहिं पाणिणा पडिच्छिएहिं उग्गयंबुथेंभ[१२]एहिं ॥
चंदणेण चच्चिएहिं पुप्फदामवेढिएहिं णं घणेहिं संभएहिं ।
एक्कमेक्कढोइएहिं पोम[१३]पत्तछाइएहिं सायकुंभकुंभएहिं ॥
सिंचिओ पुणंचिओ णमंसिओ पसंसिओ पसाहिओ महाइदेवो ।
कामकोहमोहलोहमाणडंभचप्फ[१४]लत्तवज्जिओ हयावलेवो ॥

घत्ता—जो णाणविसुद्धु जिणु सइंबुद्धु सो ण्हाविउ लइ ण्हाइ ॥
झसवासहु तोउ भत्तउ लोउ सूरहु दीवउ देइ ॥ १४ ॥

15

णिम्मलहु जि ण्हाणु विराइयउ मंगलहु जि मंगलु गाइयउ ।
परमेट्ठिहि जाणियसंवरहो किं अंबरु दिण्णु णिरंबरहो ।
किं भूसणु भूसणि संणिहिउ किं जगमंडणि[१] मंडणु लिहिउ ।
पविसूइइ ववगयभवरिणहो विंधेप्पिणु[२] सवणजुयलु जिणहो ।
विच्छूढइं मणिमयकुंडलइं णं ससहरदिणयरमंडलइं ।
चवलब्भपिसायहु णट्ठाइं णाहेयहु सरणु पइट्ठाइं ।
किं कोसिएण जगसेहरहो सिरि सेहरु बद्धउ मणहरहो ।

९ MB मंदिरं; K मंदिरं but corrects it to मंदर. १० P °डोर.° ११ P कंकणाहि° १२ MBP °विंभएहिं, but gloss in P उद्गतोच्छालितजलबिन्दुभिः. १३ P पोमवत्त°. १४ P °चप्पलत्त°.

15. १ P जगमंडणु मडणि. २ P विंधेविणु.

16 वोमयं कमंतियाइ व्योम व्याप्नुवत्या, धंतियाइ धावन्त्या. 18 आइबीयेत्यादि--आद्यद्वितीयकल्पपुंगवाभ्याम्. 19 एक्ककंठवित्थरेहिं मुखे एकयोजनविस्तीर्णैः; अब्भय णिसुंभएहि मेघपटलविध्वंसकैः. 20 हुंदहोपयच्छिएहिं 'गृहाण भोः' इत्येवं भणित्वा प्रदत्तैः; °थेंभएहिं °बिन्दुभिः. 21 सभएहिं साम्भोभिर्जलयुक्तैः. 22 सायकुंभ° सुवर्ण°. 24 चप्फलत्त° बहुप्रलापित्वम्. 26 झसवासहु समुद्रस्य.

15. 2 *a* जाणियसंवरहो ज्ञातसंवरस्य. 3 *a* भूसणि भूषणभूते, *b* जगमंडणि त्रैलोक्यमण्डनस्य; मंडणु तिलकः. 4 *a* पविसूइइ वज्रसूचिकया. 5 *a* विच्छूढइं परिधापिते. 6 *a* अब्भपिसायहु अभ्रपिशाचो राहुस्तस्मात्. 7 *a* कोसिएण कौशिकेन इन्द्रेण.

गलरेहाजिसें वलियएण हेट्ठामुहेण परिघुलियएण ।
हियउल्लउ हारें सेवियउ जडजाएं किं पि ण भाँवियउ ।

घत्ता—जो सालंकारु किमलंकारु सुरवर तासु करंति ॥
महु हियवइ भंति णउ लज्जंति रवु काइं ढंकंति ॥ १५ ॥

16

किं बुज्झि ण हूई सुरयणहो मणिबंधु महग्घउ कंकणहो ।
कडिसुत्तउ कडियलि वलइयउ किंकिणिसरु चवइ व पुलइयउ ।
किं सीहणियंबहु एह सिरि लइ अच्छइ तं सेवंतु गिरि ।
कमजुइ संणिहियउ झणझणइ मंजीरजुयलु इय णं भणइ ।
जं भव्वजीवसंतइसरणु संसारमहाजलणिहितरणु ।
कोमलसरलंगुलिदलकमलु णहकिरणपसरहयतिमिरमलु ।
मइं लद्धउ जिणवरपयजुयलु महु जायउ भूसणत्तु सहलु ।
जं करणकालि सिहितावियउ तं तवहलु णं विहिदावियउ ।

घत्ता—सुरसायरतोउ णाहविओउ ण सहइ विरइयण्हाणु ॥
मंदरगिरिगुज्झि महिहरमज्झि णं घल्लइ अप्पाणु ॥ १६ ॥

17

दूराउ वहंतु णियच्छियउ सीसेण सुरेहिं पडिच्छियउ ।
वंदिज्जइ जिणतणु परिलुढिउ कक्करकंदरणिवडणि सुढिउ ।

३ MBP जाणियउ. ४ BP ढकंति.

16. १ P सिंह°. २ M भुसणत्तु जायउ. ३ P महिहर°.

17. १ P सीसेहिं. 2 MBP परिढुलिउ. ३ K °णिवडणसुढिउ.

8 b हेट्ठामुहेण अधोमुखेन. 9 b जडजाएं जलजन्मना मुक्ताफलेन. 11 भंति विस्मयः.

16. 1 b मणीत्यादि–प्रकोष्ठः कङ्कणान्महार्घ्य इत्यर्थः. 2 a वलइयउ बद्धम्, b पुलइयउ रोमाञ्चितम्. 3 a एह एषा. 5 a °सतइ° °संततिः. 7 a सहलु सफलम्. 8 a सिहितावियउ अग्नितापितम्. 9 सुरसायर° क्षीरसमुद्रः. 10 घल्लइ अप्पाणु आत्मानं निपातयति.

17. 1 a णियच्छियउ निरीक्षितं स्नानजलं वन्दितं च. 2 a °परिलुढिउ पतितम्; b कक्कर° कठिन°; सुढिउ दुःखितम्.

णिज्जइ देवेहिं करेण करु　　गुरुसंगें को णउ होइ गुरु ।
पंकयकेसररयधूसरिउ　　कस्सीरयरायं पिंजरिउ ।
वणकुंजरकुंभत्थलखलिउ　　करडयलगलियमयपरिमलिउ ।
संचलियसिलिम्मुहविरलिउ　　णाणामणिकिरणहिं संवलिउ ।
परिघोलइ सिहरिंदहु तणउं　　णं पंचवण्णु उप्परियणउं ।
जहिं णहयरेहिं महियलि णरेहिं　　पायालि पडंतउ विसहरेहिं ।
धावंतु थंतु वियलंतु चलु　　वंदिउ सव्वण्हुहि ण्हाणजलु ।

घत्ता—इच्छियगुरुसेव चउविह देव हरिसें कहिं मि णमंति ॥
उट्ठंत पडंत पुरउ णडंत वारवार पणवंति ॥ १७ ॥

18

केण वि वाइत्तउं वाइयउ　　केण वि सुइमिट्ठउ गाइयउ ।
केण वि बहुसुक्किउ संचियउ　　केण वि भावालउ णच्चियउ ।
सवलहणउं केण वि ढोइयउ　　केण वि आहरणु णिवेइयउ ।
केण वि थोत्तइं पारद्धाइं　　केण वि तोरणइं णिबद्धाइं ।
पडिहारु को वि हुउ दंडधरु　　कु वि पासि परिट्ठिउ चम्मकरु ।
पडु पढइ का वि अणुराइयउ　　केण वि मालउ उच्चाइयउ ।
कासु वि आलावणि णिद्धतणु　　जहिं छिप्पइ तहिं तहिं करइ मणु ।
सरलंगुलिताडिय रणझणइ　　णिज्जीव वि जिणवरगुण थुणइ ।
तहिं अवसरि कयणाणावयणु　　थुइ गुरुहि करइ दससयणयणु ।
आयासु जि आयासहु सरिसु　　उवमाणु ण तुज्झु को वि पुरिसु

४ P करेहिं. ५ PT कासीरय°. ६ MBP °सिलीमुह°. ७ MBP कहव. ८ MBP पणमंति.
18. १ B णाणावयणु तणु.

4 *b* कस्सीरय° काश्मीरजं कुङ्कुमम्. 5 *b* करडयल° गजकपोल°. 6 *a* °सिलिम्मुह° भ्रमराः; विरलिउ कर्बुरितम्. 7 *a* सिहरिंदहु मेरोः. 9 *a* थंतु तिष्ठत्; *b* सव्वण्हुहि आदिजिनस्य. 10 चउविह देव भुवनवासिव्यन्तरज्योतिष्ककल्पवासिनो देवाः.

18. 1 *a* वाइत्तउं वादित्रम्; *b* सुइमिट्ठउ कर्णामृतम्. 2 *b* भावालउ भावयुक्तम्. 3 *a* सवलहणउ विलेपनम्; *b* णिवेइयउ दत्तम्. 6 *a* अणुराइयउ धर्मानुरागयुक्तः. 7 *a* आलावणि तन्त्रीवाद्यविशेषः. 8 *a* कयणाणावयणु कृतानेकवक्त्रः; *b* दससयणयणु सहस्रलोचनः इन्द्रः. 10 *a* आयासु आकाशम्,

जइ पइं जि समाणउं पइं भणमि ता परमेसर किं पइं थुणमि ।

घत्ता—जो कहइ कएण कइ कव्वेण जिणवर तुह गुणरासि ॥
सो णिरु लहुएण करचुलुएण मूढु मवइ जलरासि ॥ १८ ॥

19

तुह थोत्तावित्तस्स चित्तं णंव देमि अहमंसि धिट्ठत्तणेणेवं[1] वंदेमि ।
धणलाहलोलेहिं[2] संगहियसंगेहिं परणारिहिंसामुसाणंदियंगेहिं ।
पसुमंसमज्जंबुधारावलुद्धेहिं कुलजाइविण्णाणगावावरुद्धेहिं[3] ।
मयघुम्मिरच्छीहिं मिच्छत्तरूढेहिं[4] कह दीससे तं महामोहमूढेहिं ।
असिवत्तदुग्गंतराले घडंताण णरयम्मि धंते महंते पडंताण ।
जमपासणिप्पीडियाणं सबाहीण जिण को करालंबणं देइ देहीण ।
इणं मो जयंजम्मवासं[5] णिहंतूण परमं पयं णेइ को तं पमोत्तूण ।
जय कालकालग्गिजालावलीकंद जय इंदणाइंदलच्छीलयाकंद ।
जय घोरसंसारकंतारणित्थार जय दव्वपज्जायसंभावणासार ।
जय मारसिंगारपब्भारणिब्भेय जय दीहदालिद्ददोहग्गविच्छेय ।
जय दुव्विणीयंतरंगाण दुण्णेय जय णाह णीराय णीसल्ल णाहेय ।
जय देव कंठीरवुव्वूढपीढत्थ जय कूरचित्तेसु भत्तेसु मज्झत्थ ।

घत्ता—जय मंथरगामि तिहुयणसामि पत्थिउ मग्गिउ देहि ॥
जहिं जम्मु ण कम्मु पाउ ण धम्मु तहु देसहु मइं णेहि ॥ १९ ॥

२ P पइ.

19. १ K वदामि. २ MBP °लाहलोहेहि. ३ MBP °गारावलुद्धेहिं. ४ M मिच्छत्ति°. ५ B जयजम्म°.

---

12 कइ कविः. 13 जलरासि समुद्रम्.

19. 1 *a* तुहेत्यादि–तव स्तोत्रमेव वृत्तमाचरणं तस्य स्तवनाचारस्य तव स्तोत्राचरणे नवीन चित्तमहं ददामीत्यर्थः. 2 *a* संगहियसंगेहिं संगृहीतपरिग्रहैः. 3 *b* °गावावरुद्धेहि गर्वावरुद्धैः. 5 *a* असिवत्तदुग्गंतराले असिपत्रनरके; *b* धंते अन्धकारे. 7 *a* जयंजम्मवासं जगज्जन्मपाशम 8 *a* कालेत्यादि–काले प्रलयकाले कालाग्निः प्रलयाग्निस्तस्य ज्वालानां कंदो मेघः. 9 *a* °णित्थार पर्यन्तप्रापक; *b* °संभावणा° घटना. 11 *a* दुव्विणीयंतरंगाण शठानाम् ; दुण्णेय ज्ञातुमशक्य. 12 *a* कंठीरवुव्वूढपीढत्थ सिंहासनस्थ. 13 मग्गिउ याचितम्.

20

देवं सुण्हविऊण भत्तीइ णविऊण ।
पडुपडहणाएहिं [1]थंगिदुगिगघाएहिं ।
[2]दुंणिकिटिमटकेहिं झंझंसघोकेहिं ।
[3]भंभंतभंभाहिं ढक्काहुडुक्काहिं ।
करडाहिं काहलहिं झल्लरिहिं [4]मद्दलहिं
तालेहिं संखेहिं अण्णहिं असंखेहिं
बहिरियदसासेहिं जयतूरघोसेहिं ।
बहुवयणु बहुणयणु करपिहियपिहुगयणु ।
हरिसेण [5]विच्छुरिउ णियतरुणिपरियरिउ ।
विविहंगहारेहिं रसभावसारेहिं ।
उप्पयइ [6]परिवडइ आहंडलो णडइ ।
धम्माणुराएण पयजुयणिवाएण ।
सुरमहिहरो फुडइ महिवीढु कडयडइ ।
परिभमइ थरहरइ णियदेहु संवरइ ।
रोसेण [7]फुंफुवइ फणि फरुसु विसु मुयइ ।
विसजलणु वित्थरइ धगधगइ हुरुहुरइ ।
तावेण कढकढइ जलयरकुलं लुढइ ।
[8]जलही वि झलझलइ सेरं[9] समुल्लसइ ।

घत्ता—रिक्खइं णिवडंति दिसउ मिलंति महिविवरइं फुट्टंति ॥
णच्चंतें इंदें णयणाणंदें गिरिसिहरइं तुट्टंति ॥ २० ॥

20. १ MB ठगदुगिग°; P थगदुगिग°. २ MB दुणिकिट्टिमटकेहि; P दुणिकिट्टमटकेहि. ३ MBP भंभंत°. ४ MBP मंदलहि ५ MBP विप्फुरिउ. ६ P पडिवडइ. ७ MB पुप्फुवइ. ८ MBP जलणिहि वि. ९ MB सरसं.

---

20. 2 *a* पडु सर्वैरव्यक्तशब्दवादित्रैरित्यर्थः. 4 *b* हुडुक्का वाद्यविशेषः. 8 *a* बहुवयणु शेषनागः; बहुणयणु इन्द्रः; *b* °पिहु° पृथु. 10 *a* अंगहारेहिं अङ्गविक्षेपैः. 18 *b* सेरं स्वेच्छया.

21

इय णविवि गिण्हिवि उसहसिरि आरूढु सवारणखंधि हरि।
सच्छरु सविबुहु लहु संचलिउ पवणंदोलियधयवडलुलिउ।
संगीयसद्दकोलाहलेण खे धावंतें सुरवरबलेण।
तणुकंतिभारवारियविहुणा उप्परि एंतेण देवपहुणा।
दीसइ अहत्थु णक्खत्तगणु णं णहसरि फुल्लिउ कमलवणु।
णं मोत्तियमंडवु मेइणिहि जिणु ण्हाणंतिहि मंदाइणिहि।
सियजलकणणियरु समुच्छलिउ णं दीसइ दसदिसासु घुलिउ।
उज्झाउरि झत्ति पराइयउ रायंगणि लोउ ण माइयउ।
उत्तरिवि करिहि हरि आइयउ मायापियरहुं सिसु ढोइयउ।
तिहुयणपरिपालणपरमविहि संगहिउ तेहिं सो णाणणिहि।
चिंतु धम्मु तेण भाइ त्ति पहु भासियउ पुरंदरेण विसहु।

घत्ता—जगभरहु समत्थु पुण्णपसत्थु णंदणु लेवि अदीण ॥
सुरसंथुयपाय हरिसिय माय पुप्फयंति आसीण ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणजम्माहिसेयकल्लाणं णाम
तइओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ३ ॥
॥ संधि ॥ ३ ॥

21. १ P उप्परि यंतेण but gloss आगच्छता. २ B णहसिरफुल्लिउ; P णहसरफुल्लिउ. ३ K कुसुमवणु. ४ MBP add after this foot: संतोसवसेण पलोइयउ; G gives it in the margin in second hand, but K does not give it at all. ५ M ताइ त्ति. ६BP पुप्फयंतआसीण.

21. 1 *a* उसहसिरि श्रीवृषभः, *b* सवारण° स्वकीयगज°; हरि इन्द्रः. 2 *a* सच्छरु सह अप्सरसां गणेन, सविबुहु देवैः सहितः. 4 *a* कंतिभारवारियविहुणा कान्तिभारतिरस्कृतचन्द्रेण. 5 *a* अहत्थु अधःस्थः 6 *b* मंदाइणिहे गङ्गायाः. 8 *a* उज्झाउरि अयोध्यायाम्. 10 *a* °परमविहि °परमो विधाता. 11 *a* भाइ शोभते; वृषो धर्मस्तेन शोभते प्रभुस्तेन कारणेन इन्द्रेण वृषभः इति कथितः; *b* विसहु वृषभः. 12 अदीण अदीना आनन्दिता मरुदेवी माता. 13 पुप्फयंति आसीण पुष्पैः पुष्पप्रकरैः कान्ते कमनीये स्थाने आसीना उपविष्टा.

IV

घरि पुणरवि सयणहिं परियणहिं जिणजम्मुच्छवु जो रइउ ॥
तं पेच्छवि[1] विलसिहरु[2] णरु खयरु सुरवरु कोउ ण विम्हइउ[3] ॥ ध्रुवकं ॥

1

जंभेट्टिया—तणुअणुरुवइं रंजियरुवइं ॥
देवि पसत्थइं भूसणवत्थइं ॥ १ ॥

घोलंतउ मालइमालियाउ थणथण्णामयधारालियाउ ।
कंकेल्लिपल्लवाइयकराउ धाईउ[4] समप्पिवि अच्छराउ ।
किंकर गिव्वाण अणंत देवि सिसुणाहहु णिरु भावें णवेवि ।
तं गुरु[5]जुयलुल्लउं विमलणाणि पुज्जेवि पसंसिवि कुलिसपाणि ।
पुंछिवि[6] गउ सयमहु सघरु जाम कोसलपुरि वड्ढइ बालु ताम ।
उत्ताणसेज्ज णिम्मुक्क[7]गंथु णं सिद्धिहि केरउ णियइ पंथु ।

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza:—

सौभाग्यं शुचिता क्षमा भुजबलं शौर्यं वपुः सुन्दरं
सत्यं सर्वजनोपकारकरणं वृत्तं स्वकं सन्मतम् ।
हे विद्वन् भरतस्य भूतिजननं विद्यार्थिनामाशु य-
स्यैकैकं गुणमप्यमूर्जितधियां पुंसामचिन्त्यं भुवि ॥

MBP have the following stanza:—

आश्रयवशेन भवति प्रायः सर्वस्य वस्तुनोऽतिशयः ।
भरताश्रयेण संप्रति पश्य गुणा मुख्यतां प्राप्ताः ॥

1. १ MBP पेच्छिवि. २ M विसिहरु. ३ MB विंभयउ, P विंभियउ. ४ MBP धाइयउ. ५ MB तग्गुरु°. ६ P पुंछिवि. ७ P णिमुक्क°; K णिमुक्क° but corrects it to णिम्मुक्क°.

---

1. 3 *a* तणुअणुरुवइं शिशुशरीरयोग्यानि भूषावस्त्राणि; *b* रंजियरुवइं अनेकवर्णयुक्तानि. 4. *a* देवि दत्वा. 5 *a* घोलंतउ लोलायमानाः; *b* थणथण्णामय° स्तनदुग्धामृतम्. 6 *a* कंकेल्लि° अशोकः; *b* धाईउ धात्र्यः. 8 *a* गुरुजुयलुल्लउं नाभिराजमरुदेवीयुग्मम्. 9 *a* सयमहु शतमखः; *b* कोसलपुरि अयोध्यायाम्. 10 *a* णिम्मुक्कगंथु नग्नो बालः; *b* णियइ पश्यति.

वड्ढंतें वड्ढइ हिरिविसेसु खेलंतें खेलइ दिहिविलासु ।
वइसंतें वइसइ सिरि चलच्छि रंगंतें रंगइ समउ लच्छि ।
पसरंतें पसरइ सुथिरकंति उड्ढीहोंतें उग्गमइ कित्ति ।
भासंतएण खलियक्खराइं बुद्धइं बावण्ण वि अक्खराइं ।
चिरु धेरियइं दरदेंतें पयाइं संभरियइं पुव्वंगइं पयाइं ।
जिणससिणा लेंतें तणुकलाउ विण्णायउ चउसट्ठि वि कलाउ ।

घत्ता—करणिड्ढिइ थिरसंभूयमइ सइइ सत्थु संमाणियउं ॥
तं [10]चिंतंतें परमेसरेण ओहिइ जगु परियाणियउं ॥ १ ॥

2

जंभेट्टिया—समदममूलउ जमसाहालउ ॥
सुकयहलुग्गमो जिणकप्पद्दुमो ॥ १ ॥

अमरामयहिं सिंचिज्जमाणु सोहइ पुण्णेण पवड्ढमाणु ।
देहे णिवसं चिय णिम्मलत्तु महिमंदरधरणु अणंतु सत्तु ।
णीसेयँबिंदु सुरहित्तु पँउरु वणरुहु वि हारणीहारगउरु ।
वरवज्जरिसँहणारायणासु संघडँणु पहिल्लउ पवलँधामु ।
जहिं जहिं जि तहिं जि सोहाणिहाणु तँहु अवरु वि समचउरंसठाणु ।
जँगसारु सुरूउ सुलँक्खणत्तु पियहियमियवयँणु णिहित्तचित्तु ।

८ MBP खेलंतें खेलइ. ९ MBP चरियइं. १० MBP णं चिंतंतें.

2. १ B जिणु. २ MBP अणंतसत्तु. ३ MBP णिस्सेय°. ४ MBP पवरु but gloss in P प्रचुरः. ५ MBP °विसह°. ६ MBP संहणणु. ७ MBP पबलथामु but gloss in P प्रचुरतेजः बलं वा. ८ MB तहु; P तहुं. ९ MB जगसारसुरूवु; P जगसारसरूउ. १० MBP सलक्खणत्तु. ११ MB °वयणु विहत्त° and gloss in M निर्मलहृदयः P °वयणविहित्त° and gloss आरोपितचित्तः.

---

11 *b* दिहि° धृतिः संतोषः. 12 *b* समउ लच्छि लक्ष्मीदेव्या सह. 13 *b* उड्ढीहोंतें उर्ध्वीभवता. 15 *b* पुव्वंगइं शास्त्राङ्गानि. 16 *a* लेंतें गृह्णता. 17 करणिड्ढिइ इन्द्रियवृध्या; थिरसंभूयमइ दृढबुद्धिः; सत्थु श्रुतज्ञानम्; संमाणियउ सिद्धिं नीतम्. 18 ओहिइ अवधिज्ञानेन.

2. 1 *a* सम° उपशमः; दम° इन्द्रियजयः; *b* जमसाहालउ यावज्जीवनियमशाखाकुलः. 2 *a* सुकयहलुग्गमो सुकृतफलपुष्पयुक्तः; *b* जिणकप्पद्दुमो जिन एव कल्पवृक्षः. 3 *a* °अमएहि अमृतैः. 4 *b* सत्तु वीर्यम्, अथवा सत्त्वं शक्तिः. 5 *a* णीसेय °निःस्वेद°; पउरु प्रचुरम्; *b* वणरुहु रुधिरम्; °गउरु शुक्लम्. 6 *b* पवलधामु प्रकृष्टसामर्थ्यं प्रचुरतेजो वा. 8 *a* सुरूउ सौरूप्यम्; *b* °णिहित्तचित्तु आरोपितहृदयः.

आइसय वह जासु परं पसिद्ध जम्मेण समउ धम्मेँ णिबद्ध ।
णं पुरिसरूवपरिमाणु लद्ध विहिकरणब्भासविसेसु सिद्ध ।

घत्ता—जसु को वि ण संणिहु भुवणयलि परमजिणिंदहु णिरुवमहो ।
ससि दिणयरु मंदरु मयरहरु किं उवमाणउं देमि तहो ॥ २ ॥

3

जंभेट्टिया-गुणगणसण्णयं ववगयतुण्णयं ।
तोसियजणमणं को वण्णइ जिणं ॥ १ ॥

जो ससहरु सो तहु कंतिपिंडु चिंतंतु व हुउ सकलंकु खंडु ।
दिणयरु तहु तेएं जितु णाइं णहयलि भमेवि अत्थवणु जाइ ।
जो सुरगिरि सो तहु ण्हवणवीदु जं महिमंडलु तं तेण गीदु ।
जं जगु तं तहु जसपसरठाणु जं णहु तं तहु णाणप्पमाणु ।
जो जलणिहि सो तहु कायकोंडु जो वम्महु सो भयमुक्ककंडु ।
जो वरकरि सो वाहणु मयंधु सीहु वि तहु सिंहासणि णिबद्धु ।
पसु कामधेणु हयसहियहेउ जो वग्घु सो वि पाविट्ठु जीउ ।
जो कप्परुक्खु सो कट्ठु कट्ठु देवेण समाणु ण को वि दिट्ठु ।

घत्ता—सुर किंकर दासिउ अच्छरउ सुरवइ घरि वावारि जहिं ॥
तिहुयणु कुडुंबु परमेसरहो सिरिविलासु किं भणमि तहिं ॥ ३ ॥

१२ MBP विसेससिद्धु but gloss in P °विशेषः सिद्धः.

3. १ MBP °पुण्णयं but gloss in P सान्वयम्. २ MBP वज्जिय° but gloss in P व्यपगत°. ३ M णहयलु. ४ P तहु सो. ५ MBP ण्हाणपीदु. ६ MBT कायकुंडु; P ण्हाणकुंडु. ७ P वग्घु वि सो. ८ M पाविट्ठु°. ९ MBP तिहुअणपहुत्त.

9 *b* जम्मेण समउ सहजोपनीताः. 10 *b* विहिकरणब्भासविसेसु ब्रह्मणः करणाभ्यासविशेषः. 12 मयरहरु समुद्रः.

3. 1 *a* गुणगणसण्णयं गुणगणानामन्वययुक्तम्, *b* ववगयतुण्णयं व्यपगतमिथ्यानयम्. ३ *b* खंडु चन्द्रः 4 *b* अत्थवणु अस्तमनम्. 5 *b* गीदु गृहीतं स्वीकृतम्. 7 *a* कायकोंडु गात्रप्रक्षालनकुण्डम्; *b* भयमुक्ककंडु तद्भयान्मुक्तधनुष्यः. 8 *a* मयंधु मदान्धः 6 *a* हयसहियहेउ हतस्वहितकारणम्. 10 *a* कट्ठु कट्ठु काष्ठं निकृष्टम्; कल्पवृक्षः रत्नमयः पृथ्वीकायः, परंतु लौकिकदृष्टान्तेन काष्ठं कथ्यते कष्टमेव.

4

जंभेट्टिया—सेसवलीलिया कीलणसीलिया ।
पहुणा दाविया केण ण भाविया ॥ १ ॥

पविरइयुविविहकीलावियार समयं रमंति सुरवरकुमार ।
तणुतेओहामियतरणिबिंबु घग्घरमालालंकियणियंबु ।
धूलीधूसरु ववगयकडिल्लु सहजायकविलकोंतलजडिल्लु ।
णिवरमणिहिं लइउ महायरेण अमरिंदाणियहिं करंकरेण ।
णिज्जइ चिरसंचियसुकयरयणु जेण जि अवलोइउ मुद्धवयणु ।
सो तहिं जि णिबद्धउ केमें ठाइ णवकमलोलुद्धउ भमरु णाइ ।
केण वि पहसाविउ हंसगामि केण वि बोल्लाविउ भव्वसामि ।
केण वि काइं वि खेलणउं दिण्णु कइ कीरु मोरु अवरु वि रवण्णु ।
गिव्वाणु को वि हुउ तंबचूलु कु वि वरतुरंगु कु वि दिव्वु पीलु ।
कु वि मेसु महिसु भुयबलमहल्लु कुं वि अप्फोडइ होएवि मल्लु ।
सोवंतउ कु वि सुइहारएण परियंदइ अम्माहीरएण ।

घत्ता—होहुल्लरु जो[13] जो सुहुं सुअहि पइं पणवंतउ भूयगणु ॥
णंदइ रिज्झइ दुकियमलेण कासु वि मलिणु ण होइ मणु ॥ ४ ॥

5

जंभेट्टिया—धूलीधूसरो कडिकिंकिणिसरो ।
णिरुवमलीलउ कीलइ बालउ ॥ १ ॥

4. १ MBP °लविय°. २ P चिरु. ३ MBP सुद्धवयणु. ४ M जेम. ५ MBP भसलु. ६ M हंसगमाणि. ७ MB खेल्लणउं. ८ MBP दिव्वु पीलु. ९ MBP महिसु मेसु. १० B omits this foot. ११ P परिइंदइ. १२ MB हुल्लरु. १३ M जो हो; BP होहो.

4. 1 *a* सेसवलीलिया शिशुत्वलीलाकेलिः. 3 *a* पविरइय° प्रविरचित°; *b* समयं सह. 4 *a* °ओहामिय° तिरस्कृतम्, °तरणि° सूर्यः, *b* °णियंबु °नितम्बः. 5 *a* कडिल्लु परिधानवस्त्रम्; *b* सहजाय° सहोत्पन्न°; °जडिल्लु °जटासहितः मुण्डनकर्मरहितत्वात्. 6 *b* अमरिंदाणियहिं देवेन्द्रपत्नीभिः. 7 *a* णिज्जइ नीयते; °सुकयरयणु सुकृतमेव रत्नं येन सः 9 *a* हंसगामि मन्दगमनः: 10*a* खेलणउं क्रीडनवस्तु; *b* कइ कपिः. 11 *a* तंबचूलु कुक्कुटः; *b* °पीलु गजबालः. 12 *b* अप्फोडइ करेण भुजं ताडयति. 13 *a* सोवंतउ सुप्तः सन्; सुइहारएण श्रोत्ररमणीयेन; *b* परियंदइ आन्दोलयति; अम्माहीरएण स्वदेशभाषाप्रसिद्धरागध्वनिना. 14 होहुल्लरु जो जो 'होहो जय जय त्वम्' इति शब्दः. 15 रिज्झइ द्रव्यादिविभूतिं प्राप्नोति.

रंगंतु संतु जं किं पि धरइ | इंदु वि ण हु तं थामेण हरइ।
धरणिंदु वि चंदु व संवरेवि | लहुयारी हत्थंगुलि धरेवि।
मल्लु जोक्खइ को[3] जि जिणेसरासु | कंपावियमेइणिमहिहरासु।
सो णीसासेण य जाइ तासु | णहु लंघेवइ किर सत्ति कासु।
पुणु चूलाकरणिज्जइ कयम्मि | उम्मिल्लइ भल्लइ णववयम्मि।
संपुण्णचंदमंडलमुहेण | मरुपाविमहासइतणुरुहेण।
देवंगवत्थरणिवसणेण | घोलंतविविहमणिभूसणेण।
भुयहेलंदोलियदिग्गएण | चलपाणिवेणुदंडग्गएण।
हउ कंदुउ गयणे समुल्ललंतु | णं दीसइ सयमहवरहु जंतु।
णिम्मुक्कजीउ णिहिट्ठमग्गु | गुणिसंगें को णउ लहइ सग्गु।
णिवडंतउ संचारेवि णेइ | समवयसहुं तं छिवहुं मि ण देइ।
पहरें पहरें सो जाइ केम | दिसलाणिहे संमुहु सूरु जेम।

घत्ता—पडिछंदउ पुरिसरूवकरणे णाइं विहाएं संगहिउ ॥
णवजोव्वणभावि जाम चडिउ णायणरामरेहिं महिउ ॥ ५ ॥

6

जंभेट्टिया—कंचणगोरउ धीरो[1] गोरउ।
परिरक्खियपउ णिववंदियपउ ॥ १ ॥

सिरिरमणीरमणुद्दामरंगु | धरणिंदुच्छंगे णिवेसियंगु।
वरुणोवरि पाय परिट्ठवंतु | पवणामरि करपल्लव थिवंतु।

5.१ MBP तं ण हु. २ P वि चंदु वि. ३ MBP जो जि. ४ MBP °करणुज्जइ. ५ MBP देवंगवत्थ-वर°. ६ MBP भुयबलअंदोलिय°, but T हेला अनायासम्. ७ MBP दंडग्गएण. ८ M गुणसंगें. ९ B लहउ १० M जाय.

6 १ MBP धीरउ. २ MBP °पल्लउ.

5. 3 *b* इंदु इन्द्रः. 4 *a* संवरेवि प्रगुणीभूय, *b* लहुयारी लघुतरा. 5 *a* जोक्खइ आकलयति. 7 *a* चूला° क्षौरम्; उम्मिल्लइ प्रकाशिते प्रकटीभूते; भल्लइ रम्ये. 10 *a* हेलंदोलिय° अनायासेन क्षिप्तः; *b* दंडग्गएण दण्डाग्रेण. 11 *a* हउ हतः; समुल्ललंतु सम्यगुच्छलन्. 13 *a* संचारेवि अग्रे गत्वा; *b* छिवहुं मि स्प्रष्टुमपि. 14 *a* पहरें प्रहारेण; सो कन्दुकः; *b* दिसलाणिहे दिङ्मर्यादाया. 15 पडिछंदउ प्रतिबिम्बम्; विहाएं विधात्रा.

6. 1 *a* कंचणगोरउ सुवर्णवर्णः; *b* धीरो समर्थः; गोरउ ज्ञानरतः.2 *a* परिरक्खियपउ प्रतिपालित-प्रजः. 3 *a* रमणुद्दामरंगु क्रीडार्थं विस्तीर्णा रङ्गभूमिः.

पणवंति पुरंदरि दिट्ठि देंतु उव्वासिहि सरसु णाडउ णियंतु ।
जक्खिंदचमरविज्जिज्जमाणु समभाउत्तासियकुसुमबाणु ।
फणिंदउवारियविणिरुद्धदारु आलोइयतियसत्थाणसारु ।
णं छणससि पवरुययायलत्थु जहिं अच्छइ पहु सिंहासणत्थु ।
तहिं पत्तउ कुलयरु भणइ एम्व भो णिसुणि णिसुणि देवाहिदेव ।
किं ण हवइ कद्दमि कमलसंडु पाहाणपुंजि णवकणयपिंडु ।
आसामुहि मिहिरु महामऊहु सिप्पिउडि विमोलि मोत्तियसमूहु ।
हउं पिउ तुहु सुउ इयं किमहिमाणु भुवणत्तइ किर णाणु जि पहाणु ।
णहभायहुं पासिउ को महंतु को तुज्झ वि अग्गइ बुद्धिमंतु ।
णियणेहें अहव जडत्तणेण हउं भणमि किं पि धिट्ठत्तणेण ।

घत्ता—बालत्तणु दुरुज्झिउ जइ वि तो वि ण णारिहि उवरि मइ ॥
किज्जइ विवाहु सुकुमार तुह जेण पवट्टइ लोयगइ ॥ ६ ॥

7

जंभेट्टिया—पविमलबोहिणा मोहविरोहिणा ॥
लद्धसमाहिणा हयदप्पाहिणा ॥ १ ॥

विहुणा उत्तं ताय ण जुत्तं ।
मण्णियमयणं एयं वयणं ।
कयसंसारं मोहंधारं ।
अट्ठिणिछण्णं किमिउलपुण्णं ।
पयालियमुत्तं मंसविलित्तं ।
णाउणिबद्धं अइणोणद्धं ।

३ MB पणवंत°. ४ MBP °वारु ५ MBP विमल°. ६ MBP इउ. ७ MP बुद्धिवंतु. ८ MBP पवत्तइ.

7 *a* °दउवारिय° दौवारिकः प्रतिहारः. 8 *a* उययायलत्थु उदयाचलस्थः. 10 *a* °संडु °संघातः. 11 *a* आसामुहि दिङ्मुखे; मिहिरु सूर्यः. 13 *a* णहेत्यादि–नभोभागपार्श्वात् को महान्, न कश्चिदित्यर्थः. 16 लोयगइ लोकगतिः व्यवहारः.

7. 1 *b* मोहविरोहिणा मोहशत्रुणा. 2 *a* लद्धसमाहिणा प्राप्तपरमधर्मसमाधिना; °दप्पाहिणा गर्वः एव सर्पस्तेन. 3 *a* विहुणा प्रभुणा. 5 *b* मोहंधारं अज्ञानतिमिरजनकम्. 6 *a* अट्ठिणिछण्णं आस्थिबद्धम्. 8 *a* णाउ° नहारु° (स्नायु°); *b* अइणोणद्धं अजिनावबद्ध चर्मणा वेष्टितम्.

लालागिल्लं रुहिरजलोल्लं ।
बहुमलकलुसं धरियपुरीसं ।
कुच्छियगंधं णवविहरंधं ।
णिद्दासत्तं पडइ पमत्तं ।
णिसि णिद्दाणं मडयसमाणं ।
उट्ठइ मुद्धं धणकणलुद्धं ।
पहसमसंतं कारिमजंतं ।
हिंडइ दियहे णिवडइ विरहे ।
तरुणियणकए असुहरणहए ।
वाहिविलीणं भुक्खारीणं ।
पित्तपलित्तं सिंभपसित्तं ।
पवणपहग्गं माणवियंगं ।
सेवंताणं गुणवंताणं ।
होइ ण सोक्खं वड्ढइ दुक्खं ।

घत्ता—परसंभउं वाहासयसहिउं विच्छिण्णउं रयबंधयरु ॥
इहु जं सुहुं लद्धउं इंदियहिं तं कह सेवइ विउसु णरु ॥ ७ ॥

8

जंभेट्टिया—ता कुलकारिणा णायवियारिणा ।
सुहहलसाहिणा भणियं णाहिणा ॥ १ ॥

भो भो कयसुरणरखयरसेव सच्चउ णरजम्मु ण रम्मु देव ।
वंछइ सुहुं भुंजइ णवर दुक्खु वड्ढंते विहडइ बुद्धिचक्खु ।

7. १ MB णिद्दामत्त. २ MBP विद्दाणं and gloss in P ग्लानम्. ३ B पहसमसत्तं. ४ B कारिमजत्तं. ५ MBP °हरणभए. ६ MP सिंभपसित्त; B सिंभपलित्तं. ७ MBP इय.

8. १ M वुड्ढते; BP वुड्ढंते.

9 *a* °गिल्लं °भक्षकम्. 10 *a* ° कलुसं °मलयुक्तम्. 13 *a* णिद्दाणं निद्रायुक्तम्, *b* मडय° मृतक°. 15 *a* पहसमसंतं मार्गश्रमश्रान्तम्; *b* कारिमजंत कृत्रिमाश्वादियन्त्रसमानम्. 18 *a* वाहिविलीणं व्याधिभिर्नष्टम्. 19 *b* सिंभ° श्लेष्मा. 20 *a* °पहग्गं °प्रभग्नम्; *b* माणवियंगं मनुष्यस्त्रीणां शरीरम्. 23 परसभउं पराधीनम्; विच्छिण्णउं सान्तरं सच्छिद्रम्; रयबंधयरु अष्टविधकर्मबन्धकरम्. 24 विउसु विद्वान्.

8. 1 *b* णायवियारिणा न्यायविचारिणा. 2 *a* °साहिणा °वृक्षेण.

चुक्कइ ण कयंतहो मरणभीरु सच्चउ जि असुइसंभउ सरीरु ।
सच्चउ इंदियसुहुं सुहु ण होइ सच्चउ तुहुं परलोयावलोइ ।
सच्चउ संसारु असारु जइ वि लइ महु उवरोहें बप्प तइ वि ।
कलहंसवाणि वरवयणकमलु परिणहि सपणय पणइणिहिं जुमलु ।
तं णिसुणिवि जिणु णियसीसु धुणिवि थिउ हेट्ठामुहु भवियव्वु मुणिवि ।
चिंतइ परमेसरु अवहिवंतु णयविणयचारि सिरिघरिणिकंतु ।
अज्ज वि महु चरियावरणु कम्मु तेसट्ठिलक्खपुव्वहं अगम्मु ।
ता जाणिवि णियतणयंतरंगु समहिच्छियरमणीरमणसंगु ।
सहसा कुलणाहें पेसिएहिं रयणाहरणोहविहूसिएहिं ।

घत्ता—ता कच्छमहाकच्छाहिवइधूयउ थणभरभग्गियउ ॥
फलपत्तफुल्लपल्लवकरिहिं मंतिहिं आइवि मग्गियउ ॥ ८ ॥

9

जंभेट्टिया—कयमहिराइहो तिहुयणणाहहो ।
दिज्जउ सवलयं कण्णाजुयलयं ॥ १ ॥

ता कच्छमहाकच्छाहिवेहिं घरु आइवि सिरपणवियपएहिं ।
दिण्णउ णाहेयहु सुंदरीउ कामालवालरुहवेल्लरीउ ।
पारद्धउ परमेसहु विवाहु आयउ सुरयणु हरिकरिविवाहु ।
गय कुसुमंजलिहर लोयवाल सुहि बंधव पुण्णमणोहराल ।
कुंअरिहि करि अंगुत्थलउ छूढु पहिलउ पेमंकुरु णं विरूढु ।
गुमुगुमियभमियचलमहुयरोहु कउ मंडउ विविहकुवारसोहु ।

२ MB सयणहं; P मयणइ. ३ MBP जुयलु. ३ MBP °विणयधारि. ४ MB चरियाचरणु. ५ MBP °रमणरंगु.

9. १ P °पणामिय°. २ K °वेल्लरीउ. ३ MBP कय°. MP °कुसुमंजलियर. ४ MBP मणोरहाल ५ MP कुवरिहि, B कुवेरिहि.

6 *b* परलोयावलोइ परत्र वांछाकुशलः. 7 *b* उवरोहें आग्रहेण. 10 *b* सिरिघरिणिकंतु लक्ष्मीपतिः. 11 *b* अगम्मु दुर्लंघ्यम्. 12 *a* °अंतरंगु मनः. *b* समहिच्छिय° समभिलषित°. 14 °धूयउ कन्ये; °भग्गियउ नम्रीभूते.

9. 1 *a* °राइ शोभा. २ *a* सवलयं सकङ्कणम्. 4 *b* °आलवाल° वृक्षमूलजलस्थानम्. 5 *b* हरिकरिविवाहु अश्वाः गजाः पक्षिणश्च वाहु वाहनं यस्य सुरगणस्य. 7 *b* विरूढु प्रादुर्भूतः

माणिक्कमुक्कझुंबुक्कफुरिउ णवसायकुंभलंभेहिँ धरिउ।
चंदोवचीणपट्टेहिँ छइउ महिदेविइ णावइ मउडु लइउ।

घत्ता—अमलिंदणीलमणिपंतियहिँ णिविडकरोलिहिँ भूसियउ।
णं तिमिरहु रवियरतासियहो सरणु णिवासु पयासियउ ॥ ९ ॥

10

जंभेट्टिया—भम्मपसाहिउ विद्दुमसोहिउ।
संझामेहउ णं महिमागउ ॥ १ ॥

कत्थइ रुप्पयभित्तिहिँ सुहाइ सरयब्भखंड णिम्मविउ णाइं।
कत्थ वि फलिहुज्जलु भूमिरंगु णं गंगतरंगु पवित्तियंगु।
कत्थ वि मुत्ताहलदिण्णछाउ णं णक्खत्तंचिउ गयणभाउ।
कत्थ वि हरियारुणमणिवरिट्ठु आहंडलधणुमंडलु व दिट्ठु।
अहिणवदुमपल्लवतोरणेहिँ णावइ वसंतु माणिउ वणेहिँ।
पवणुद्धयणहयलघुलियकेउ णरणिहयतूरमंगलणिणाउ।
पाडहियकरंगुलिणिहसणेण दंकुंदकुंदकयणीसणेण।
पडहुल्लउ कुडुवें छित्तु तेम झं धो त्ति दो त्ति रउ हुयउ जेम।

घत्ता—भंभाभेरीसरसंखुहिउ पहु पुण्णाणिलेण चलिउ।
आवेप्पिणु तहु मंडवहु तले णीसेसु वि तिहुयणु मिलिउ ॥ १० ॥

६ MBP सरण°.

10. १ M संझसमेहउ. २MBP महि आगउ. ३ MB °तरंगपवित्तिय°. ४ MBP हरियारुणु. ५MBP दकुकुंदिकुंदि. ६ MBPT कुडवें.

9 *a* °मुक्क° मौक्तिकानि; झुंबुक्क° स्तबकाः. 11 अमलिंदणील° निर्मलः इन्द्रनीलमणिः; °करोलिहिँ किरणपंक्तिभिः.

10. 1 *a* भम्म° काञ्चनं सुवर्णम्. 3 *b* सरयब्भखंड शरन्मेघपटलम्. 4 *a* भूमिरंगु क्रीडार्थं विस्तीर्णः प्रदेशः; *b* पवित्तियंगु पवित्रीकृतगात्रः 5 *a* °दिण्णछाउ °दत्तशोभः 6 *b* °धणुमंडलु °धनुर्विस्तारः. 7 *b* माणिउ अवतारितः 9 *a* पाडहिय° पटहवादकः; °णिहसणेण °ताडनेन; *b* °णीसणेण शब्देन. 10 *a* कुडुवें वादनकाष्ठेन; छित्तु स्पृष्टः ताडितः.

11

जंभेट्टिया—हुवइ सुहद्दउ करडासद्दउ ।
रसइ मुइंगउ हसइ अणंगउ ॥ १ ॥

दं दं दं दं टिविलाइं उत्तु जिणु भणइ हउं मि दंदेण भुत्तु ।
अणुहुंजिउ जं भवसंइ भमंतु णं भासइ तं तं तं भणंतु ।
संसारु जि वीणाणिक्कलत्तु मणि संजोयइ वल्लहु कलत्तु ।
वहुछिद्दवंसु जं विद्धु जेण तं कहइ णाइं महुरें रवेण ।
किं मद्दलु जो भोयणउ लहइ सो परु व्वि परस्स तलप्प सहइ ।
काहलवयणइं वित्थारियाइं णं मुहपवणेणोसारियाइं ।
आऊरिय णीसासेण संख वहिरंध मूय पंगु वि असंख ।
कंसालइं तालइं सलसलंति विहडेप्पिणु मिहुणा इव मिलंति ।
आलग्गदोरेंदेंटुल्लयाइं णं तूरिय णरतरुफुल्लयाइं ।

घत्ता—संणद्धइं पहरपडिच्छिरइं आउज्जइं गज्जंति किह ॥
जिणणाहहु घरि रइरंगि हुए मयणरायसेण्णाइं जिह ॥ ११ ॥

12

जंभेट्टिया—का वि णियाणणं का वि सहीयणं ।
मंडइ वहुवरं का वि हु मंदिरं ॥ १ ॥

ता तियसपुरंधिहिं वहुवराहं णरणारीहिं मि पंकयकराहं ।

11. १ MBP हुवइ २ MBP वुत्त. ३ MBP भवसयभमंतु. ४ BP संजोइय. ५ MBP वल्लह कलत्तु ६ MBP सरेण. ७ M °दोराहिं दुल्लयाइं; BP °दोरदिंडुल्लयाइं.

11. 1 *a* सुहद्दउ सुभद्रो डुंडिशब्दः. 2 *a* रसइ शब्द करोति. 3 *b* दंदेण नारीयुगलेन चित्तविक्षेपेण वा. 5 *a* °णिक्कलत्तु °शब्दः संसारमेव योजयति वल्लभ. कलत्रमिति कथयतीव. 6 *a* वहुछिद्देत्यादि–यच्छिद्रं विद्धं कृतं रागवादनाभिप्रायेण, तेन कथयतीव वधूरेव छिद्रं रमणस्थानम्; अन्यत्र बहुच्छिद्रो वंश.. 7 *b* तलप्प करप्रहारम्. 8 *a* काहलवयणइं रणतूर्यमुखानि. 9 *a* णीसासेण निःश्वासेन, अथवा निःस्वाः दरिद्राः अस्वेन द्रव्येणापूरिताः 11 *a* देंटुल्लयाइं वृन्तानि. 12 पहरपडिच्छिरइं प्रहारप्रतीक्षणशीलानि; आउज्जइं आतोद्यानि. 13 रइरंगि हुए रतौ अनुरागे संभूते सति.

12. 1 *a* णियाणणं निजाननम्.

पाडियउ सलोणहं काइं लोणु चामरु जि पडउ संजणियमाणु ।
गाइज्जइ मंगलु अवरु धवलु संणिहियउ कलसचउक्कु धवलु ।
सो सुत्तेण जि सुत्तिउ विहाइ णीसुत्तु ण जडसंगहु मुएइ ।
तरुणिहिं उव्वायवि कयउ ण्हाणु गोरंगइ पाणिउ धावमाणु ।
सोहइ लायण्णें विप्फुरंतु णावइ चामीयररसु गलंतु ।
सियसुहुमइं वत्थइं परिहियाइं आहरणइं ससहररुइहियाइं ।
मंदारमालिउ लइउ मउडु दीसइ णं सुरगिरिसिहरु वियडु ।
देवहु देवयठवणाइ काइं लोइयमग्गें णिहियाइं ताइं ।
आणंदें णच्चिउ सयणु बंधु बद्धउ कंकणु णं णेहबंधु ।

घत्ता—भमरावलिजीयारवमुहलु मणसंखोहणु पुलइयउ ॥
कंदप्पें रूसिवि जिणवरहो णिययसरासणु वलइयउ ॥ १२ ॥

13

जंभेट्टिया—विरइयठाणउ संधियबाणउ ।
उग्गयरोमउ विलसइ कामउ ॥ १ ॥

अमुणंतियाइ पुरिमिल्लु भाउ हा किं रईइ पयडियउ राउ ।
हा वम्मह तुहुं मि णिवारिओ सि हा हे वसंत किं पेरिओ सि ।
किं चग्गहु लग्गहु अज्जु ईसि णिवडेसहु कइहिं वि तवहुयासि ।
णं गज्जिउ दुंदुहि भणइ एम्व किं तुज्झु वि रिउ देवाहिदेव ।
फणिसुरणरखयरकउच्छवेण विरसंततूरजयजयरवेण ।

12. १ M सलोयहुं; BP सलोणहुं. २ BP उव्वाइवि. ३ MB मदारमालउल्लइय°, P मंदारयमालउ लइय. ४ MBP णच्चिय सयणबंधु. ५ MBP मणसखोहणु.

13. १ MB तुहुं वि णिवारिओ. २ MBPT कइयवि. ३ MBP विलसंत°; K विरसंतु.

4 *a* पाडियउ दत्तम्; सलोणहं सलावण्ययोः; *b* संजणियमाणु संजनितमाने चामरं पूर्वमुखनस्यान्ते नाभिमानयुक्तं दृश्यते. 6 *a* सुत्तेण जि सुत्तिउ आवेष्टितेन सूत्रेण बद्ध इव; *b* णीसुत्तु श्रुतरहितो मूर्खः जडसंगं न त्यजति. 7 *b* गोरंगइ गौराङ्गे. 9 *b* ससहररुइहियाइं चन्द्रदीप्त्यनुकारीणि. 11 *a* देवयठवणाइ काइं कुलदेवतास्थापनया किम्; *b* लोइयमग्गें लौकिकाचारानुसारेण. 13 जीयारव° ज्याशब्द°.

13. 1 *a* °ठाणउ मुष्टिबन्धः, धनुर्धराणामालीढप्रत्यालीढवैणवाषाढादीनि बाणमोचनावसरे स्थानानि भवन्ति; पक्षे चित्ते कृतस्थितिः. 3 *a* अमुणंतियाइ अज्ञातवत्या रत्या. 5 *a* ईसि जिने. 7 *b* विरसंत° शब्दायमानः.

संचालिउ परिणहुं जिणकुमारु आयंतहु तहु तहिं धरिउ दारु ।
णं संसारहु घोसिउ णिसेहु हा किं तुहुं परिणहि चरमदेहु ।
तहि देवि णिबंधु चवेवि चारु भवणंति पइट्ठउ भुवणसारु ।
फेडिउ मुहवडु णं मेहपडलु दिट्ठउ मुहु णं छणयंदु विमलु ।
कंपिउ कुंअरिहिं णववरभएण करु धरिउ णाइं तिलरिणकएण ।
कच्छाहिवेण भिंगारु लेवि पालिज्जसु धवलच्छिउ भणेवि ।

घत्ता—जं पाणिउं छूढउं तासु करे विविहासासाहंचियउ ॥
णं तेण मणालवालणिलउ मोहमहातरु सिंचियउ ॥ १३ ॥

14

जंभेट्टिया—कयसियसेविहे जसवइदेविहे ।
वरहु अणिंदहे अवि य सुणंदहे ॥ १ ॥

णयणेसु णयण लग्गा तिरिच्छ मच्छेहिं णाइं पडिखलिय मच्छ ।
पियणेहाऊरिय वित्थरंति णावइ सुइसुसिरहिं पइसरंति ।
चित्ताइं चित्ति मिलियाइं केम गयवर णइसलिलइं सलिलि जेम ।
कमणीयकामिणीवड्ढणेहि णियतणुपडिबिंबउ दइयदेहि ।
दिट्ठउ पडिवक्खासंकियाहिं तं कह व कह व बुज्झिउ पियाहिं ।
एक्केणुव्वाइय एक्क तरुणि बीएण भुएण दुइज्ज घरिणि ।
बेण्णि वि लेप्पिणु णीसरिउ णाहु णं कप्परुक्खु वेल्लीसणाहु ।
ओसीससयहिं संथुव्वमाणु वेइयमणिवट्टि जगेक्कभाणु ।
उक्कोइयकामरसोल्लियाहिं आसीणउ समउं वहुल्लियाहिं ।

घत्ता—वइसाणरु जासु गहेहिं सहुं पणवइ पय महियलि घुलइ ॥
सो वरइत्तु जि कुलसंतियरु होमें[3] धूमु जि संभवइ ॥ १४ ॥

४ MBP वारु. ५ MB चवेवि. ६ P छणइंदु. ७ MB कुवरिहिं; P कुमरिहिं. ८ MB मुणालवाल°.

14. १ MB पडिबिंबिउ. २ MBP आसीसएहिं. ३ M सोमें. ४ MBP संगिलइ.

8 *a* परिणहुं परिणेतुम्. 9 *a* णिसेहु निषेधः. 12 *b* तिलरिणकएण स्नेहऋणकृतेन. 14 छूढउं क्षिप्तम्; विविहासासाहंचियउ विविधा आशा वाञ्छा एव शाखा तया अञ्चितः सहितः. 15 तेण भृङ्गारजलेन; मणालवालणिलउ मनः एवालवालं तदेव स्थानं यस्य मोहमहातरोः.

14. 4 *b* सुइसुसिरहिं कर्णविवरेषु. 7 *a* पडिवक्ख° सपत्नी. 10 *a* आसीससयहिं आशीर्वादशतैः; *b* वेइय° वेदिका. 11 *a* उक्कोइय° प्रादुर्भूत°. 12 गहेहिं सहुं आदित्यादिनवग्रहैः सहितः; घुलइ पतति.

15

जंभेट्टिया—मत्ताचारयं विग्घणिवारयं ।
परिरक्खियजयं तह वि हु तं कयं ॥ १ ॥

देवासुरेहिं संगीयमाणु चलचामरेहिं विज्जिज्जमाणु ।
रमणिहिं सहुं रमणु णिविट्ठु जाम रवि अत्थसिहरि संपत्तु ताम ।
रत्तउ दीसइ णं रुहिरि णिलउ णं वरुणासावहुघुसिणतिलउ ।
णं सग्गलच्छिमाणिक्कु ढलिउ रत्तुप्पलु णं णहसरहु घुलिउ ।
णं मुक्कउ जिणगुणमुद्धएण णियरायपुंजु मयरद्धएण ।
अद्धद्धउ जलणिहिजलि पइट्ठु णं दिसिकुंजरकुंभयलु दिट्ठु ।
थुउ णियछविरंजियसायरंभु णं दिणसिरिणारिहि तणउ गब्भु ।
आहिंडिवि भुवणु अलद्धवासु णं गयउ रयणु रयणायरासु ।
लच्छीहि भरंतिहि कणयवण्णु णिच्छुट्टवि कलसु व जलि णिमण्णु ।
वारिहिरहल्लिमालोवणीउ णं उल्हाणउ जगभवणदीउ ।

घत्ता—पुणु संझादेवयसदिस महि रंजिवि राएं विप्फुरिय ॥
कोसुंभु चीरु णं पंगुरिवि णाहविवाहइं अवयरिय ॥ १५ ॥

16

जंभेट्टिया—कज्जलसामलो उडुदसणुज्जलो ।
पत्तउ भीयरो तमरयणीयरो ॥ १ ॥

वियलंतउ मुक्कचउत्थपहरु तें पीयउ संझारायरुहिरु ।
महिपंकयमयरंदु व घणेण आवंतें अलिउलसंणिहेण ।

15. १ MBP मंतुचारयं. २ P णिवद्दु. ३ MBP घुलिउ. ४ MBP गलिउ. ५ MBP अरुणच्छविरंजियसारयब्भु. ६ MB णिच्छुड्डिवि; P णिच्छुट्टिवि. ७ MBP णिवण्णु. ८ MBP कोसुंभचीरु. ९ MBP °विवाहे.
16. १ MBP पत्तो. २ MBP तं.

15. 1 *a* मत्ताचारयं यद्यपि जगत्स्वामी वर्तते तथापि मात्रा आचारः कृतः 5 *b* वरुणासावहु° पश्चिमाशैव स्त्री; °घुसिणतिलउ कुङ्कुमतिलकः. 6 *a* ढलिउ पतितम्. 8 *a* अद्धद्धउं अर्धबिम्बं सूर्यस्य. 11 *b* णिच्छुट्टवि स्खलित्वा. 12 *a* वारिहिरहल्लिमा° समुद्रलहरीलक्ष्मीः; °लोवणीउ लुप्तः; अथवा, वारिधिलहरीमालयोपनीतः.

16. 1 *b* उडुदसणुज्जलो नक्षत्रदन्तोज्ज्वलः.

पुणु भुवणु तिमिरछण्णउं विहाइ रविविरहें थिउ कालउं जि णाइ।
हालिद्दु वत्थु णं परिहरेवि थक्कउ णीलंबरु पंगुरेवि।
ता उइउ चंदु सुरवइदिसाइ सिरिकलसु व पइसारिउ णिसाइ।
सइं भवणालउं पइसंतियाइ तारादंतुरउ हसंतियाइ।
णं पोमाकरयलल्हसिउ पोमु णं तिहुयणसिरिलायण्णधामु।
सुरउब्भवविसमसमावहारु तरुणीथणविलुलिय सेयहारु।
णं अमयबिंदुसंदोहु रुंदु अंसवेल्लिहि केरउ णाइं कंदु।
माणियताराखयवत्तफंसु णं णहसरि सुत्तउ रायहंसु।
आयासरंगि ससहावगीदु णं कामएवअहिसेयवीदु।
णं इंदहु धरियउ धवलछत्तु तहेविइ णं दप्पणु णिहित्तु।
घत्ता—वरतारातंदुल घिविवि सिरि सासि परिवट्टुलु रइणिलउ॥
दिसिरमणिइ णिसिहि वयंसियहि णावइ दहिएं कउ तिलउ॥ १६॥

17

जंभेट्टिया—ससहरकंतिइ दिसि पसरंतिइ।
सोहइ लोयउ दुद्धुं व धोयउ॥ १॥

ता णिसि पेक्खणउ विलासवंतु पारद्धु झसकेयरिद्धि देंतु।
आउज्जहुं जेण मुहेण वासु सा पुव्विल्लीदिसिमंडवासु।
तह्राहिणि उत्तरसुहणिविट्ठु गायणु तुंबरु देवेंहिं दिट्ठु।
तहु संमुहियउ मउगाइयाउ उवइट्ठउ सरसइआइयाउ।
तहु दाहिणेण संठियउ सुसिरु तव्वामपासि वेणइयणियरु।

३ M सुरवरदिसाइ. ४ B सुरतुब्भव°. ५ P अमिय°. ६ MPT °संदोहरुंदु. ७ BP जय°. ८ MB °पीढु. ९ MP दिसरमणिइ.

17. १ M दुद्धु; BP दुद्धिं. २ MB °दिसि°. ३ MBP उत्तरसुहु.

5 *b* कालउं कृष्णम्. 8 *a* भवणालउ भवणं मन्दिरम्. 9 *a* पोमा लक्ष्मीः. 10 *a* सुरउब्भवविसमसमावहारु सुरतोद्भवविषमश्रमापहारो हारः; *b* सेयहारु स्वेद एव हारः. 11 *a* अमयबिंदुसंदोहु अमृतबिन्दुपुञ्जः; रुंदु विस्तीर्णः. 12 *a* ताराखयवत्तफंसु तारा एव शतपत्रं कमलं तस्य स्पर्शम्. 13 *a* ससहावगीढु स्वस्वभावयुक्तम्. 14 *b* तहेविइ इन्द्राण्या. 15 घिविवि क्षिप्त्वा. 16 दहिएं दध्ना.

17. 2 *b* दुद्धुं दुग्धेन. 4 *a* आउज्जहुं वादित्राणाम्; वासु वासः स्थितिः. 6 *a* मउगाइयाउ मृदुगायिकाः. 7 *a* सुसिरु शुषिरवांशिकवाद्यम्; *b* वेणइयणियरु वीणाकारनिकरः

इय एहउ अंधाणिणिवेसु गणिउ पच्चाहारु वि सो चेव भणिउ ।
वज्जइं मज्जिवि साहारणाइ कम्मारवी य संमज्जणाइ ।
सहसा सुइसोक्खुल्लोलएण उद्दिक्खणु किउ हिंदोलएण ।
थिरवण्णछड्डयधाराविसेसु कउ णच्चणीहिं पुणु तहिं पवेसु ।
उव्वसिरंभाणामालियाहिं आहल्लामेणइबालियाहिं ।

घत्ता—अंमिल्लियणवकुसुमंजलिहिं देविहिं रंगि पइट्ठियहिं ॥
मोहिउ जणु मग्गणमोयणिहिं णं वम्महधणुलट्ठियहिं ॥ १७ ॥

18

जंभेट्टिया-अहिणयकोच्छरो भुवणिहियच्छरो ।
णच्चइ सुरवई डोल्लइ वसुमई ॥ १ ॥
विरइय णडेहिं णाणावियार चारी बत्तीस वि अंगहार ।
अण्णण्णदेहपरिठवणभिण्णु करणहं अट्ठोत्तरु सउ वि दिण्णु ।
चोद्दह वि सीससंचालणाइं भूतंडवाइं रंजियमणाइं ।
णव गीवेउ णयणसुहावियाउ छत्तीस वि दिट्ठिउ दावियाउ ।
अंतिमरसविरहिय जणियहाव अट्ठ वि रस सच्चेयणसहाव ।
एक्कें ऊणा पण्णास भाव अवर वि अउव्व भावाणुभाव ।
फुरणइं वलणइं अणिवारियाइं णच्चंतहिं तहि अवयारियाइं ।

४ MBP कइव. ५ MBP किउ. ६ B रंग°.

18. १ MBPT अहिणव°. २ KT भुय°. ३ MB चउदह. ४ BP गीयउ. ५ MBP दिट्ठउ. ६ MBPT °भाव. ७ P अपुव्व. ८ M करणइं. ९ MKT अवधारियाइं.

---

8 *b* पच्चाहारु स एव प्रत्याहार इति अन्यत्र प्रसिद्धः 9 *a* मज्जिवि मृदादिभिर्मार्जयित्वा; साहारणाइ युगपत्सर्ववाद्यविषयाय; *b* कम्मारवी सर्ववाद्यानां मृदादिसंमार्जनं कर्मारवी नाम. 10 *b* उद्दिक्खणु आलतिकरणहिंदोलकरागविशेष 11 *a* °वण्णछड्डयधाराविसेसु वर्णच्छटकधाराक्रमस्तालविशेषाः. 14 मग्गणमोयणिहिं कामबाणमोचनिकाभिः प्रेक्षकजनप्रमोदजनिकाभिश्च.

18. 1 *b* अहिणयकोच्छरो अभिनयदक्षः; *b* भुवणिहियच्छरो भुजेषु निहिता अप्सरसो येन. 3 *b* चारी पदप्रचारः. 4 *a* अण्णण्णदेहपरिठवणभिण्णु परस्परं शरीरावयवेषु, यथा पादो हस्ते, हस्तः पादे; *b* करणहं शरीरमनेकधा प्रतिष्ठाप्य क्रियन्ते इति करणानि 5 *b* भूतंडवाइं भ्रूनृत्यानि. 6 *a* गीवउ ग्रीवाः; *b* दिट्ठिउ प्रेक्षितानि. 7 *a* अंतिमरस° शान्तरस°; जणियहाव जनितस्थायिभावाः.

पुणु पत्तइं वंदियपयरयाइं छंडणय[10]पओएं णिग्गयाइं ।
मुद्धइं पेम्मंधइं रूसवंतु णिण्णेहइं मिहुणइं तूसवंतु[11] ।
तारातारावइकइ हरंतु विहडिय[12]चक्कउलइं मेलवंतु ।

घत्ता—उट्ठिउ रविबिंबु दियहसिरिए अरुणकिरणमालाफुरिउ ॥
उयय[13]इरि महारायहु उवरि णवरत्तउं[14] छत्तु व धरिउ ॥ १८ ॥

19

जंभेट्टिया-ससिपायाहया दुक्खं पिव गया ।
अलिरवरसणिया रुयइ[1] व भिसिणिया ॥ १ ॥
दंसइ पविमलं[2] ओसंसुयजलं ।
तं[3] पसरियकरो पुसइ व तमिहरो ॥ २ ॥
णं[4] सोहइ दीविय[5] जंबुदीउ णहमहिसराव[6]पुडि दिण्णु दीउ ।
अब्भुग्गमंतु णं लोयणयणु णं पंतहु सेसहु सीसरयणु ।
णं वाडवग्गि णहसायरासु णं दिसि[7]णिसियरिमुहमासगासु[8] ।
णं ताहि जि केरउ अहरबिंबु णं णिसिवहुवहि[9] पयमग्गु तंबु ।
णं वासरविडवंकुरु विणित्तु णं जगकरंडि[10] पवलउ णिहित्तु ।
ता तहिं सोहणि संसारसारु कासु वि कडिसुत्तउ दोरु[11] हारु ।
कासु वि हयगयचेलिउ रवण्णु कासु वि धणु[12] धण्णु सुवण्णु अण्णु ।

१० MB छहुणयपओएं; PT छहुणयपओएं. ११ MBP रूसवंतु. १२ BP विहडियचक्कउ. १३ MBP उवयइरि. १४ MBP णं रत्तउ.

19. १ MBP रुवइ. २ BP पविउलं. ३ MBP ते. ४ MBP जं. ५ MBP दीवइ. ६ MBP °सरावि पुडादिण्णु. ७ MB दिसि°. ८ MB °मंसगासु; P °मंसु गासु. ९ MBP °वहुयहि. १० M जगकरडंबे विद्दुमु; B जगकरंडि धवलउ; P जगि करंडि विद्दुमु ११ MBP हारु दोरु. १२ M धणधण्णु; P धण्णु सुवण्णु.

---

10 *a* °पयरयाइं पदरजांसि; *b* छंडणय° नृत्योपसंहारहेतुस्तालविशेषः छडुणकप्रयोगः. 12 *a* तारावइ° चन्द्रः.

19. 2 *b* रुयइ रुदति; भिसिणिया पद्मिनी. 3 *b* ओसंसुयजलं अवश्यायः एव अश्रुजलम्. 4 *b* पुसइ मार्ष्टि; तमिहरो आदित्यः. 5 *a* दीविय दीप्तम्; *b* सेसहु धरणेन्द्रस्य. 7 *b* मासगासु मांसग्रासः. 9 *a* वासरविडवंकुरु दिवस एव वृक्षस्तस्याङ्कुरः; विणित्तु विनिर्गतः. 10 *a* सोहणि शोभने महोत्सवे.

जो जं मग्गइ तं तासु[13] दिण्णु काणीणदीणदालिद्दु छिण्णु ।
संमाणियाइं सुहिपरियणाइं चोत्थइ दिणि मुक्कइं कंकणाइं ।
विसइ विवाहि विहवेण साहु थिउ रज्जु करंतु णएण णाहु ।

घत्ता—जसवइसुणंदरायाणियहिं पणयं हियवइ भावियउ ॥
सियपुप्फयंतु[14] सो रिसहपहु[15] भरहखेत्तणिवसेवियउ ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे कुमारविवाहकल्लाणं णाम
चउत्थओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ४ ॥

॥ संधि ॥ ४ ॥

१३ M सो तासु. १४ MBP सिरिपुप्फयंतु. १५ MBP रिसहु पहु.

14 *b* णएण न्यायेन. 16 सियपुप्फयंतु शुक्लकुन्दपुष्पवद्दन्ता यस्य.

V

पियमेलइ गयकालइ एक्कहिं दिणि सुहकारिणि ॥
णिरुवमसइ [१]सेंधुरंगइ णाहितणय[२]मेणहारिणि ॥ ध्रुवकं ॥

1

रचिता—[३]छणंससिसिरयरकिरणणिहदिहियरघरस[४]यणयलि सुत्तिया ।
पविमलसरलकमलदलवलयसुकोमलललियगत्तिया ॥ १ ॥

[५]अंसवइ जसेणाहियं सोहमाणा णवणलिणहंसी व णिद्दायमाणा ।
सुरवहुपयालत्तयालित्ततीरं णि[६]वडियदरीरंधगंभीरणीरं ।
हरिसरहओरालिपूरियसुसाणुं [७]ससिकंतपब्भारणिज्झि[८]त्तभाणुं ।
करिदसणणिब्भिण्णसोवण्णरायं सिविणयगयं पेच्छए सेलरायं ।
ससहरमलंकारभूयं णिसाए रविमवि मुहे णीहरंतं दिसाए ।

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza:—

भ्रूलीलां त्यज मुञ्च संगतकुचद्वन्द्वादिकं वक्षसा
मा त्वं दर्शय चारुमध्यलतिकां तन्वङ्गि कामाहता ।
मुग्धे श्रीमदानिन्द्यखण्डसुकवेर्बन्धुर्गुणैरुन्नतः
स्वप्नेऽप्येष पराङ्गनां न भरतः शौचोदधिर्वाञ्छति ॥

MBP have the same stanza, but M reads °द्वन्द्वादिगर्वाक्षमा and BP read °द्वन्द्वादिगर्वक्रिया for द्वन्द्वादिकं वक्षसा and MBP read शौचाम्बुधिः for शौचोदधिः.

1. १ MBP सिंधुर°. २ M °मयहारिणि. ३ M छणससिरयणकिरण°; B °ससिरयर°. ४ MB °सयणयल°. ५ MBP have before this line रमणीयलता नाम छंदो; GK have रमणीयलता. ६ M णिवडय°; P णिविडिय°. ७ MB ससीकंत°. ८ MB °णिब्भिण्णभाणुं.

---

1. 1 पियमेलइ श्रीआदिनाथमेलापके. 3 °सिसिरयर° चन्द्रः; सुत्तिया सुप्ता. 5*a* अहियं अधिकम्. 6 *a* °पयालत्तय° पादालक्तक°; *b* णिवडिय° निपतित°. 7 *a* °ओरालि° शब्दः; *b* ससिकंत° चन्द्रकान्तमणिः. 8*a* णिब्भिण्णसोवण्णरायं तिरस्कृतसुवर्णवर्णम्; *b* सेलरायं मेरुम्. 6 *b* दिसाए पूर्वदिशायाः.

सयदलदलालंबिरुं[९]टंतभिंगं सरवरमसारिच्छतिगि[१०]च्छपिंगं ।
दसदिसि बहुप्पिच्छरंगंतभंगं जलखलणपक्खालियहिंदसिंगं ।
अमरिसससप्फालणुट्ठंतसद्दं करिमयरमालारउद्दं समुद्दं ।
सयलमवि [११]आलोयए संविसंतं णियवयणपोमम्मि छोणीयलं तं ।

घत्ता—इय पेच्छिवि परि[१२]हच्छिवि सुप्पहाइ सीमंतिणि ॥
कयरा[१३]हहो गय णाहहो [१४]घरु पुरंधिचूडामणि ॥ १ ॥

2

रचिता—पभणइ सुणसु पुरिसहरि सुरगिरि ससि रवि सरवरो[२]यही ।
मइं णिसि सिविणयम्मि दिट्ठा पिययम गिलिया इमी मही ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि णराहिउ बोसइ चक्कवट्टि तुह तणुरुहु होसइ ।
मंदरेण दिट्ठेण पियारउ महिरायाहिगय गरुयारउ ।
ससहरेण सुहउ सोमाणणु कंतिवंतु कंतासुहमाणणु ।
सूरें सूरु पयावें दूसहु सरवरेण पयडियसिरिसंगहु ।
रयणायरेण सवंसपहायरु चंडि चारु चोद्दहरयणायरु ।
महिआहारें रिउ भंजेसइ छक्खंड वि मेइणि भुंजेसइ ।
कइहिं मि दियहहिं होइ णिरुत्तउ देवि[३] ण चुक्कइ जं मइं वुत्तउ ।
तो सव्वत्थसिद्धि[४]अहिहाणहु सइं अहमिंदु चालिउ सविमाणहु ।
पुव्वपुण्णसंपयसंपुण्णउ जसवइदेविहि गब्भि णिसण्णउ ।

९ BP° रुंटंत°. १० M °तिगंछ°; BP °तिग्गिछि°. ११ B ममालोवए, P मालोयए. १२ MBP परि-यच्छिवि. १३ M कयरायहो. १४ M घर°.

2. १ MBP णिसुणि. २ MBP °वरोवही. ३ M देव. ४ MBP °अहिणाणहु.

---

10 *a* °रुंटंत° शब्दं कुर्वन्तः; *b* असारिच्छ° अनुपमम्; तिगिच्छ° मकरन्दः. 11 *a* उप्पिच्छ° उल्बण°, *b* अहिंद° अहीन्द्र°. 12 *a* अमरिस° अमर्षः क्रोधः; *b* करिमयर° जलहस्ती. 13 *a* संविसंतं प्रविशत्, *b* वयणपोमम्मि वदनकमले; छोणीयलं पृथ्वीमण्डलम्. 14 परिहच्छिवि वितर्क्य; सुप्पहाइ सुप्रभाते. 15 कयराहहो कृतशोभस्य; पुरंधिचूडामणि यशोमती.

2. 4 *a* पियारउ सर्वेषां प्रियतमः. 5 *b* कंतासुहमाणणु कान्तायाः सुखं मानयति. 9 *b* पयडियसिरिसंगहु प्रकटितलक्ष्मीसंग्रहः. 7 *a* सवंसपहायरु कुलप्रभाकरः, *b* चडि हे तरुणि.

घत्ता—भुवेणुब्भवि सिसुसंभवि जेहिं कयउ कालउ मुहुं ॥
ते दुज्जण अवरु वि थण णिवडिहिंति हेट्ठामुहु ॥ २ ॥

3

रचिता—सुयभरपसरमाणछउउयरे वियलिययं वलित्तयं ।
तिहुयणवइजयंकरेहारहियं व कयं जयत्तयं ॥ १ ॥

राएं गब्भि थिएण ण णायउ पंडुरु तोंडुं काइं संजायउ ।
दियहि पसत्थि मुहुत्ति सुणिम्मलि णियठाणुण्णइं गइ गहमंडलि ।
जसवइयहि वियसियपंकयमुहु णवमासहिं उप्पण्णउ तणुरुहु ।
ता तहिं णहि सुरदुंदुहि वज्जइ णं संतोसें सायरु गज्जइ ।
दाणु देंति वारण वणि संठिय कीस ण माणुस हरिसुक्कंठिय ।
मेह सवंति सुगंधइं सलिलइं दिम्मुहाइं णिरु जायइं विमलइं ।
आयासु वि दीसइ मलवज्जिउ णीलउ भायणु णं संमज्जिउ ।
मंदरदंडएण वित्थरियउ एकछत्तु णं कुवेरहु धरियउ ।
तारामोत्तियदामहिं भूसिउ एहु जि राणउ सव्वहुं पासिउ ।
महि सइं खल खलंति चउपासिहिं णं वज्जरइ महाणइघोसिहिं ।

घत्ता—सरणलिणहिं णं णयणहिं पइ णियंति मह रुच्चइ ॥
मरुचलियहिं परिघुलियहिं वेल्लीभुयहिं पणच्चइ ॥ ३ ॥

५ T records a p सुयणुब्भवि and adds सुयणुब्भवि इति पाठे सुजनानामुत्कर्षस्य भवः.

3. १ M छउओयर°, BP छउयर°, but gloss in P क्षामोदरे. २ MB गब्भिथिएण; P गब्भित्थइ. ३ MBP तुडु ४ MBPK वेच्छुरियउ ५ MBP कुमरहु.

12 भुवणुब्भवि भुवनस्य उद्भवः उत्कर्षस्य प्रादुर्भावो यस्मिन्. 13 णिवडिहिंति निपतिष्यन्ति.

3. 1 छउउयरे क्षामोदर, वियलिययं गलेत विनष्टम्, वलित्रयापगमनेन उदरं समं जातमित्यर्थः. 2 तिहुयणवइ° त्रिभुवनपति°; जयकरेहा° जयचिह्नरेखा°. 3 a राएं रागेण राज्ञा च. 12 a महीत्यादि—मही पृथ्वी खलान् वारयन्ती महानदीखलखलघोषेण वज्जरइ कथयतीव यथा एष एव राजेति. 13 पइ पतिम्. 14 मरुचलियहिं वायुचालितैः.

4

रचिता—णियगुणरयणणियरकरमंजरिधवलियणिवइवंसओ ।
विसरिससुकयसाहिसाहासिउ वड्ढइ रायहंसओ ॥ १ ॥

णामकरणचूलाकरणाइउ सव्वु वि कयउ विसेसविराइउ ।
जणणीजोव्वणफलगोंछो इव विहलियलोय कप्पवच्छो इव ।
सुहिवयणामयबिंदुपवेसु व मित्तवित्तसंगहणणिवेसु व ।
गुणसंसापयासमग्गो इव रोयसोयउज्झिउ सग्गो इव ।
पिउसहावसंचउ रूढो इव बंधुणेहबंधणवेढो इव ।
किंकरयणमणचिंतामणि विव अरिमहिहरसिरसोदामणि विव ।
णिहिलणायसब्भावणिही विव हरणकरणउद्धरणविही विव ।
भारसोढु गरुययरे मही विव भूरिभोयभारिल्लु अही विव ।
दुणिहालउ मज्झण्णरवी विव वज्जदेहु जंभारिपवी विव ।
लायण्णंबुपवाहसरो इव विलयावंदहुं कुसुमसरो इव ।
घत्ता—सिरि उरयलि महि असिदलि भुइ जयसिरि जयकारिणि ॥
जसु णिवसइ मुहि सरसइ कित्ति तिलोयविहारिणि ॥ ४ ॥

5

रचिता—गिरिसरिकलसकुलिसकमलंकुसविसझसलक्खणाहिओ ।
सुरणरखयररमणिवीणारवगाइयजसपसाहिओ ॥ १ ॥

णं सोहग्गपुंजु णिव्वडियउ णाइं पयावें विहिणा घडियउ ।
जलिवि जलिवि उल्हाइ ण जीवइ जासु भएण णाइं सिहि णीवइ ।

4. १ M सुकय°. २ MBP णामकरणु. ३ P चूडा° ४ MBP °गुछो. ५ P विहासिय°. ६ MB बुह-वयणामय°; P बुहणयणामय°. ७ MBP धण°. ८ P °सिरि. ९ MBP गरुययरु. १० MBP भुयजुइ.

4. 1 °क र मं ज रि° किरणसंघाताः; °णि व इ वं स ओ °राजवंशः. 2 वि स रि स° अद्वितीयम्; °सु क य-सा हि सा हा सि उ पुण्यवृक्षशाखाश्रितः. 5 *b* °णि वे सु स्थानम्. 7 *a* पि उ स हा व° प्रियः स्वभावः पितृस्वभावो वा; रू ढो प्रसिद्धः. 9 *a* णा य° न्यायः; *b* °वि ही विधाता. 10 *b* °भो य° भोगाः फटाटोपश्च. 11 *b* जं भा रि° इन्द्रः. 12 *a* अं बु प वा ह स रो समुद्रः; *b* वि ल या वं द हुं वनितावृन्दस्य 13 अ सि द लि खड्गपत्रे; भु इ भुजे.

5. 1 वि स वृषभः; °अ हि ओ आधिकः. 2 °प सा हि ओ °मण्डित.. 3 *a* णि व्व डि उ कषोत्तीर्णः. 4 *a* ज लि वि ज लि वि प्रज्वलय प्रज्वल्य; उ ल्हा इ ज्वालारूपतां परित्यजति, अङ्गारावस्थो भवति; ण जी व इ ज्वालारूपयैव नावतिष्ठति; *b* णी व इ विध्याति, अङ्गाररूपतामपि त्यजतीत्यर्थः

अइपमंत्तु पुणरवि णासंघइ जडसंगु वि मज्जाय ण लंघइ ।
पालियवेलउ जसु मयरालउ जासु भएण जिं थिउ जैउं कालउ ।
णायराउ खुल्लउ कीडुल्लउ चंदु वि आयउ चंदगहिल्लउ ।
पक्खि पक्खि सो दीसइ भग्गउ पवणु वि गमणब्भासहु लग्गउ ।
इंदु वि इंदंधणुहु गुणिं णाणइ अज्ज वि तं तेहउ जणु जाणइ ।
णियकरि पहरणु कहिं मि ण दावइ विणएण जि णवंतु घरु आवइ ।

घत्ता—अलिउलचल चुयमयजल महिहरभित्तिवियारण ॥
अविहियसर कुंचियकर जसु तसंति दिसिवाॅरण ॥ ५ ॥

6

दुवई—करिसिरदलियरत्तलित्तुग्गयमोत्तियखइयकेसरो ।
मिसुमम्मिकुडिलचडुलविज्जुज्जलदाढाजुयलभासुरो ॥ १ ॥

एहओ वि हरि विप्फुरियाणणु जासु भएण व सेवइ काणणु ।
णवजोव्वणि चडंतु परमेसरु सुरवरकरिकरथिरदीहरकरु ।
सो सिक्खविउ सपिउणा सव्वइं कालक्खरइं गणियगंधव्वइं ।
णाडयाइं बहुभावरसत्थइं णरणारिहिं लक्खणइं पसत्थइं ।
तब्भूसायरणाइं विचित्तइं वम्महचरियइं हियवहुचित्तइं ।
गंधपउत्तिउ रयणपरिक्खउ मंत तंत वरहयगयसिक्खउ ।
कोंतगयासिघायसंताणइं चक्कचावपहरणविण्णाणइं ।
देसदेसिभासालिविठाणइं कइवायालंकारविहाणइं ।

5 १ B पमुत्त २ MBP व. ३ MP जसु ४ M इदधणुहि गुण; BP गुणु. ५ MBP दिसवारण.
6 १ MBP णरणारी°. २ P हयवरगय°

5 *b* जडसंगु जडेन जलेन सह सगो यस्य; मज्जाय मर्यादाम् 6 *a* जसु यस्य भरतस्य, *b* जउ यमः. 9 *a* गुणिं णाणइ गुण नारोपयति, प्रत्यञ्चां नानयति. 12 अविहियसर अकृतशब्दाः; कुंचियकर संकोचित-शुण्डादण्डाः.

6. 1 °रत्तत्यादि–°रक्तलिप्तोद्गतमौक्तिकजटितकेसर.. 3 *a* एहओ ईदृशः, हरि सिंहः 5 *b* कालक्खरइ मषीलिखिताक्षराणि. 7 *a* तब्भूसायरणाइ नरनारीभूषणकरणानि, *b* वम्महचरियइं कामशास्त्रम्; हियबहुचित्तइं हृतस्त्रीचित्तानि. 10 *a* देसदेसिभासा° देशानां सबन्धिनी देशभाषा, लिवि लिपिः; *b* कइवायालंकारविहाणइ कविवागलंकारविधानानि.

जोइसछंदतक्कवायरणइं मल्लगाहजुज्झइं कयकरणइं ।
वेज्जणिघंटोसहिवित्थारु वि बुज्झिउ सव्वलोयवावारु वि ।
चित्तलेप्पसिलवरतरुकम्मइं पयमाइ अवराइं मि रम्मइं ।

घत्ता—पयणयसुरु तिहुयणगुरु जासु सइं जि वक्खाणइ ।
अइविमलउ सो सयलउ कलउ किं ण परियाणइ ॥ ६ ॥

7

रचिता—पुणरवि णियसुयस्स सो णिवरिसि णेहवसेण भासए ।
गिरिथणिधरणितरुणिपरिपालणविहिविसयं पयासए ॥ १ ॥

पभणइ पहु भो पढमणरेसर अत्थसत्थु णिसुणहि भरहेसर ।
ववसाएं सुसहाएं संपय होइ णिरुत्तउ पयपाडियपय ।
अलसत्तें खलसंगें णासइ मा मइ एहउ तुह सुय सीसइ ।
असहायहु जगि किं पि ण सिज्झइ हत्थि वि सुत्तसमूहें बज्झइ ।
जाइ णाव मारुइण विलग्गें जलइ जलणु तासु जि संसग्गें ।
मंति सूरु दुहसहु सुहि सहयरु तासु करेज्जसु कज्जि महायरु ।
जगि कज्जु जि मित्तारिहि कारणु तेण ण किज्जइ तहिं अवहेरणु ।
तं पि बुद्धिदारेण समुब्भइ बुद्धि वि बुड्ढहं सेवइ लब्भइ ।

घत्ता—सिरपलियहिं मुहवलियहिं मुइ जराइ णिब्भच्छिय ॥
जे सत्थइ कम्मत्थइ कुसला ते मइं इच्छिय ॥ ७ ॥

३ B वेज्ज. ४ MBP सयल

7. १ MBP णिसुणिहि २ MBP हत्थि वि. ३ MB सुहदुहसहु; P दुहसुहसहु. ४ MBP बुद्धि॰चारेण. ५ B बुड्ढसेवइ. ६ MP सिरि पलियहि, B सरे पलियहिं. ७ MBP मुय.

---

11 *b* कयकरणइं आवर्तननिवर्तनप्रवेशनादिकृतचेष्टानि. 12 *a* वेज्ज° वैद्यकम्; णिघंट° कोशः. 13 *a* तरुकम्मइं काष्ठकर्माणि.

7. 1 णिवरिसि राजर्षिः. 2 गिरिथणि° गिरिः स्तनः यस्याः सा पृथ्वी. 3 *b* अत्थसत्थु नीतिशास्त्रम्. 4 *a* सुसहाएं सुसहायेन. 5 *b* एहउ ईदृशम्; सीसइ कथ्यते. 7 *a* मारुइण विलग्गें वायुना पृष्ठतो लग्नेन. 8 *a* सूरु सुभटः; दुहसहु दुःखस्य सोढा; सुहि सुहृत्; सहयरु मित्रम्; *b* महायरु महादरम्. 9 *b* अवहेरणु अवगणनम्. 10 *a* समुब्भइ विचार्यते. 11 मुइ मुक्ता; णिब्भच्छिय तिरस्कृतस्वरूपाः. 12 कम्मत्थइ कर्मकरणे.

8

रचिता—णियमइणयणविहवपविलोइयपरणरछिद्दचारिणो ।
पहु[1]विरइयविसालदोसेसु पिहाणय राहयारिणो ॥ १ ॥

बुद्धितुलातोलियमहिमंडल मंतचारणिम्महियाहंडल ।
बुद्धा जेहिं ण सेविय भत्तिइ णउ मुयंति कयाइ वि यत्तिइ ।
ते सुंदर जाणसु दुवियड्ढा कुलबलसिरिमयजलणें दड्ढा ।
होंति अबुह बुहसंगें बुद्धा चंपयवासें तिलें[2] वि सुयंधा ।
बुहसेवाए बुद्धि उप्पज्जइ सा सत्तविह कुमार कहिज्जइ ।
सुस्सूसा सवणु वि संधारणु मोयणु गहणु णाणु णिच्छयमणु ।
तिविह होइ मंतहु संबंधिणि सा वि कहवि[3] तिजगचिंतामणि ।
णिसुणिक्खाउवंसमंडणधय गुरुयणगय सुयगय णियमणगय ।
ताइ मंतु अवसें णिप्फज्जइ[4] सो पंचविहु कहंति महामइ ।

घत्ता—आढत्तइ कम्मत्तइ पढमुवाउ चिंतेवउ ॥
णरसत्ति वि धणजुत्ति वि देसु कालु जाणेवउ ॥ ८ ॥

9

रचिता—अवि य सहरिस पुरिस दढ[1]पोरिस सुकयावायरक्खणं ।
अविरलमिलियविउलफलसिद्धि वि जाणसु मंतलक्खणं ॥ १ ॥

सुयणुद्धरणु दुट्ठणिग्गहणु वि णाएं छट्ठभायसंगहणु वि ।
जणवयदोससमणु जा सुच्चइ दंडणीइ सा पुत्त पवुच्चइ ।
किसि पसुपालणु सहुं वाणिज्जें वत्त भणिज्जइ महिवइपुज्जें ।

8 १ MBP बहु°. २ MBP तिल व. ३ MBP कहंति. ४ MBP णिप्पज्जइ.
9. १ MBP दढपउरिस.

8. 1 °परणर° शत्रवः; °छिद्दचारिणो चारपुरुषा . 2 पहुविरइय° निजस्वामिविरचित°; पिहाणय पिधानभूता., राहयारिणो निजस्वामिशोभाकारिणः. 3 *b* यत्तिइ आर्त्या छन्देन (च + आत्तिइ). 5 *a* दुवियड्ढा अपण्डिताः; *b* °मय° °मदा.. 8 *a* संधारणु कालान्तराविस्मरणम्, *b* मोयणु हर्ष.; णिच्छयमणु ऊहापोहविज्ञानानि. 11 *a* ताइ तया त्रिविधया बुध्या. 12 आढत्तइ कम्मत्तइ आरब्धे कार्ये; पढमुवाउ कार्यनिर्धारः.

9. 1 °सुकयावायरक्खणं सुकृतापायरक्षणम्. 3 *a* छट्ठभाय° षष्ठभागः करः. 5 *b* वत्त वार्ता नाम राजविद्या.

चउवण्णासमु धम्मु तइत्तिय अज्ज वि सुंदर होंति ण सोत्तिय ।
ते अप्पणु पइं पुरउ करेवा हीण दीण दाणेण भरेवा ।
ताहं कम्मु जगसंतिपयासउ जणियभूयगेहयणसंतोसउ ।
अय तिवरिस जव तेहिं हुणेवउ जणहु जीवदयवयणु भणेवउ ।
जं[3] जि पढेवउ तं जि करेवउ असि ण धरेवउ दाणु लएवउ ।
दंसणणाणचरित्तु कहेवउ तिउणउं सुत्तु सरीरि ठवेवउ ।
बंभचेरु अहवा कुलउत्ती अण्णणारि मइं ताहं ण उत्ती ।
णिच्चण्हाणु जिणपडिमापूयणु णिच्चहोमु णिच्चातिहिभोयणु ।
इय मज्जाय विलंघवि लंपड ते खाहिंति जीउ मारिवि जड ।

घत्ता—सुयसंगहु करुणावहु दाणु धराणिजणधारणु ॥
इय इट्ठउ मइं सिट्ठउ खत्तियकम्मवियारणु ॥ ९ ॥

10

रचिता—वियलियमलमईहिं मंतीहिं कुमग्गगयं परिक्खियं ।
पसुसममिणमसेसमहिवलयमहो णरणाह रक्खियं ॥ १ ॥

पढणहवणदाणइं वाणिज्जइं इय वणियहु कम्मइं णिरवज्जइं ।
सुद्दहु भणु वत्ताणुट्ठाणु वि वण्णत्तयपेसणसंमाणु वि ।
अवरु कुसीलकारुजीवित्तणु एम कम्मि संजोएवउ जणु ।
कम्मरहिउ जगि भद्दु ण भुंजइ धम्मविवज्जिउ तं पि ण किज्जइ ।

२ MBP गहगण°. ३ K तं जि पढेवउ जं जि करेवउ. ४ MBP दंसणु णाणु चरित्तु. ५ MBP धरेवउं.

10. १ T reads कमग्गगयं and explains it as पादाग्रे स्थितम्; it however records a p कुमग्गगयं and explains it as कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. २ M पसुसिमं. ३ MBP पढणइं धणदाणइं. ४ P पुणु. ५ MBP °पेसणु संमाणु.

6 *a* आसमु आश्रमाः; तइत्तिय त्रयी विद्या; *b* सोत्तिय विप्राः. 7 *a* पुरउ करेवा अग्रे कर्तव्याः. 8 *b* भूय भूत°. 9 *a* अय अजाः त्रिवर्षयवाः एव येषामङ्कुरोत्पत्तिर्न विद्यते. 11 *b* तिउणउं सुत्तु त्रिगुणं यज्ञोपवीतम्. 15 सुयसंगहु श्रुतसंग्रहः; करुणावहु दयामार्गः. 16 इट्ठउ इष्टम्.

10. 1 वियलियमलमईहिं विगलितपापमतिभिः; कुमग्गगयं कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. 2 पसुसममिणं पशुसदृशमेतत्, यथा गवादीनां पालनं क्रियते. 4 *a* वत्ताणुट्ठाणु वार्तानुष्ठानम्.

मंतिठाणि कुलबुद्धिइ चत्ता निक्ख पक्खपालणइ अभत्ता ।
अंतेउरि पमत्त कामाउर लुद्ध धणाहियारि पसरियकर ।
ण थविज्जंति काइं वित्थारें णासइ पहु दुट्ठें परिवारें ।
पडिवयणेण तासु मइपसरणु कलहे ण वि परियणपोरिसगुणु ।
सहवासेण सीलु जाणेवउ ववहारेण सउज्जु मुणेवउ ।
जाणेवा राएं पेसिवि चर कुद्ध लुद्ध माणिय भीरुय पर ।
सामभेयधणदंडसमागउ झत्ति रइज्जइ जं जसु जोग्गउ ।

घत्ता—णियकज्जु वि परकज्जु वि कम्मद्धक्खसुइत्तणु ॥
जाणेवउ माणेवउ एत्तंउ पुत्त पहुत्तणु ॥ १० ॥

11

रविता—कुणसु सकलुसवइरिणिवपेसियपणिहीपाडिविहाणयं ।
परियणसयणमित्तसंतोसयरं संमाणदाणयं ॥ १ ॥

दुविहु वि जणउवसग्गु हरेज्जसु तिविहसत्तिसब्भाउ करेज्जसु ।
भक्खिउं उप्पेक्खिउं वि मुणिज्जसु णिग्गहु अवरु अणुग्गहु देज्जसु ।
सत्तु मित्तु मज्झत्थु वि भावहि सव्वणिओयसुद्धि संदावहि ।
अवलंबेज्जसु गुरुहिययत्तणु मुयसु दिट्ठकामुयकामित्तणु ।
चवलत्तणु अयालगामित्तणु खलसंगु वि दुव्वसणपवत्तणु ।
णारि जूउ मइरा मयमारणु कामुप्पण्णउ चउविहु दारुणु ।

६ M मंतिट्ठाणेसु सुबुद्धिए चत्ता, BP मंतिट्ठाणि कुबुद्धिइ चत्ता. ७ MBP एत्तिउ.

11. १ MBP विहावहि. २ MBP धिट्ठ° but gloss in PT दृष्टे स्त्रीजने. ३ MBP अयाले.

---

7 *a* मंतीत्यादि–मान्त्रिस्थाने कुलबुद्धिहीना न कर्तव्याः; *b* तिक्ख तीक्ष्णा हिंस्रा ये ते ग्रामनगरादिरक्षणे न स्थापनीयाः 8 *b* धणाहियारि भाण्डागाराधिकारे. 10 *b* कलहे संग्रामकाले. 11 *b* सउज्जु निर्लोभिता. 12 *b* पर शत्रवः. 13 *a* °समागउ °प्राप्तम्. 14 कम्मद्धक्खसुइत्तणु कर्माध्यक्षाणामधिकारिणां शुचित्वं निर्लोभत्वम्.

11. 1 °पणिहीपडिविहाणय चारपुरुषप्रतिविधानकम्. 3 *a* दुविहु मराकादि देवकृतं धाटीप्रमुखं मनुष्यकृतम्; *b* तिविहसत्ति मन्त्रोत्साहप्रभुत्वशक्तय· 4 *b* णिग्गहु दण्डम्; अणुग्गहु प्रसादम्. 5 *b* णिओयसुद्धि संदावहि यत्कर्म येन नियोगिना कर्तव्यं तत्तस्य दर्शय. 6 *b* दिट्ठकामुयकामित्तणु दृष्टे स्त्रीजने ये कामुकाः काममेवोत्सुका· तेषु अभिलाषं मुञ्च. 8 *a* मयमारणु मृगया.

अण्णाएं ण दविणु णासेवउ तिक्खदंडु सुफरुसु भासेवउ ।
रोसुप्पण्णउं वसणु तिहेयउं मइं महिवइसासाणि विण्णायउं ।
इय सत्तविहु भरेण ण किज्जइ रिउछव्वग्गहु हियउं ण दिज्जइ ।

घत्ता—मुइ कोहु वि मउ लोहु वि माणु हरिसु सहु कामें ।
गुरु घोसइ सिरि होसइ पयहु खयपरिणामें ॥ ११ ॥

12

रचिता—एक्कंतरिउ मित्तु णिरंतरु सत्तु भणंति सूरिणो ।
तासु महंति मंतु पहुपेसिय गूढा लिंगधारिणो ॥ १ ॥

गूढ वि पडिगूढहिं जाणेवा जे विरुद्ध ते तहिं णिहणेवा ।
कीरइ कालि गमणु ववगयमलि आसणु बहुकणतणजलमहियलि ।
विग्गहु हीणें अहव समाणें बलवंतेण संधि कयदाणें ।
दुग्गासिएण समाणु वि किज्जइ मित्तु वि पडिवक्खत्तु ण णिज्जइ ।
एम अलद्धउ लब्भइ मंडलु परिरक्खिज्जइ कय चिंतियफलु ।
उप्पाइज्जइ दव्वु पसत्थहं तं दिज्जइ अट्ठारहतित्थहं ।
तित्थहिं धरिउ रज्जु थिरु अच्छइ रायाइल्लउ खयहु ण गच्छइ ।
सामि अमच्चु रट्ठु धणु सुहि बलु भणु सत्तमउं दुग्गु हयपडिबलु ।
इउ सत्तंगु जेम्व णउ खिज्जइ तेम तणय वसुमइ पालिज्जइ ।

घत्ता—इय भाविउ सिक्खाविउ चक्कवट्टिलच्छीहरु ॥
णियजणणें णं तवणें वियसाविउ कमलायरु ॥ १२ ॥

४ MBP सुफरसु भासेवउ. ५ MBP रोसुप्पण्णु वसणु णिहणेव्वउ. ६ P adds after this line: णिच्छउ मइं हियवइ संभाविउ. ७ MP चित्तु.

12. १ MBP णेरंतरु. २ MBPK दीणें. ३ M कयमाणें. ४ MBP दुग्गासिए संमाणु जि किज्जइ.

10 *a* रोसुप्पण्णउं वसणु तिहेयउं अन्यायेन द्रव्यनाशः, तीक्ष्णदण्डः, परुषवचनं चेति रोषोत्पन्नं त्रिभेदं व्यसनम्. 11 *a* भरेण आतिशयेन. 12 मुइ मुञ्च.

12. 1 एक्कंतरिउ एकदेशान्तरस्थं राजानं मित्रम्; णिरंतरु समीपस्थं शत्रुम्. २ तासु महंति मंतु तस्य शत्रोः भिन्दन्ति मन्त्रम्; लिंगधारिणो विविधवेषधराः. 5 *a* विग्गहु संग्रामः. 6 *a* दुग्गासिएण समाणु दुर्गाश्रितेन सह संधिः क्रियते; *b* पडिवक्खत्तु शत्रुत्वम्. 9 *b* रायाइल्लउ अनुरागयुक्तम्. 10 सुहि सुहृत्. 11 *b* वसुमइ पृथ्वी. 13 तवणें सूर्येण.

13

रचिता[1]—गुणमणिकिरणपसरभरपसमियदुण्णयतिमिरमेलओ।
हुउ वइसवणपवणजमससिरविहुयवहवरुणलीलओ ॥ १ ॥

धम्मत्थेसु कुसलु तेयंसिउ हियमियमहुरभासि णिवसंसिउ।
अपिसुणु बद्धुच्छाहु अरूसणु सुइ सुधीरु बलवंतु महासणु।
मइदिहिहरु[3] समत्थु जिर्तिदिउ सहसुप्पण्णबुद्धि जगवंदिउ।
दूरालोउ अदीहरसुत्तउ पुरिसण्णउ पसण्णु गुरुभत्तउ।
थिरु संभरणसीलु[4] णिम्मलवउ सच्छु[5] अजिभचित्तु[6] अइसूहउ।
थूललक्खु मेहावि सयाणउ किं वण्णिज्जइ भारहराणउ।
पुणु सव्वत्थविमाणहु आयउ वसहसेणु णामें संजायउ।
जसवइदेविहि बीयउ णंदणु पुणु वि अणंतविजउ रिउमद्दणु।
अवरु अणंतवीरु पुणु अच्चुउ[7] वीरु सुवीरु[8] मत्तकरिकरभुउ।

घत्ता—गयभंगहं[9] वरिमंगहं पुण्णपहावपउण्णउं ॥
गुणजुत्तहं सउ पुत्तहं पवमाइ उप्पण्णउं ॥ १३ ॥

14

रचिता—घणथणणयण[1]वयणकरकमयलसयलावयवसोहिया।
समियसविसयविरसेविसवेइणि[2] सीलसिरी[3]पसाहिया[4] ॥ १ ॥

धीय सलक्खण कोमलगत्ती णक्खकंतिणिज्जियणक्खत्ती।
जसवइसइसरीरि संभूई बंभी णामें अवर वि हूई।

13. १ GK have दुवई for रचिता from this Kadavaka onwards to the end of the Samdhi. २ P पयसमिय. ३ B मइविहिहरु. ४ B संतरणसीलु. ५ MBP सच्चु. ६ B आजिंभचित्तु. ७ BP अच्चउ but gloss in P अच्युत. ८ MBP सुधीरु. ९ MBPT गयरंगहं.

14. MB °कणयवयण°. २ MB °विरसवेइणि. ३ P सालसिरी°. ४ MB °पहासिया.

13. 3 *a* धम्मत्थेसु धर्मार्थयोः; तेयंसिउ तेजस्वी; 4 *b* महासणु गम्भीरशब्द; 5 *a* मइदिहिहरु मतिधृतिगृहम्; 6 *a* दूरालोउ दूरालोची दीर्घदृष्टिः; अदीहरसुत्तउ शीघ्रकार्यकर्ता; *b* पुरिसण्णउ पुरुषविशेषज्ञः; 7 *a* संभरणसीलु स्मृतिशीलः; णिम्मलवउ निर्मलव्रतो निर्मलवपुश्च; *p* अजिभचित्तु अकुटिलचित्तः; 8 *a* थूललक्खु बहुदाता वदान्यः; सयाणउ सज्ञानः 12 गयभंगहं गतभङ्गानामपराजितानाम्.

14. 2 समियेत्यादि–शमिता उपशमं नीता स्वविषयविरसविषस्य वेदना यया सा.

वियलियसोयहि भुंजियभोयहि पुणु वि सुणंदहि णंदियलोयहि ।
थुउ सव्वत्थसिद्धि परमेसरु हुउ मणहरु णं मरगयमेहिहरु ।
सिसु अविपिक्कवंससुच्छायउ बालउ बाहुबलि वि तहि जायउ ।
तुच्छबुद्धि अप्पउ अवगण्णमि पहिलउ कामएउ किं वण्णमि ।
गज्जमाणजलहरजलणिहिसरु फलिहपईहथोरकरपंजरु ।
पुण्णमियंकवयणु जसहलतरु सिरिकीलागिरिंदसमभुयसिरु ।
पुरकवाडपविउलवच्छत्थलु विससहूलखंधु अवियलबलु ।
दलियासामयगलगलसंखलु णीलणिद्धमउपरिमियकुंतलु ।
तणुमज्झप्पएसि रइरंगउ अंगें सह्रु जि अउव्वु अणंगउ ।
वियडणियंबु तंबबिंबाहरु उच्छुचावजीयासंधियसरु ।

घत्ता—णवजोव्वणि जायइ घणि पंचहिं तेहिं पयंडहिं ॥
पुरथीयणु कंपियमणु विद्धउ कोसुमकंडहिं ॥ १४ ॥

15

रचिता—पसरियमयणजलणहुयरसवसलुसियंगेहिं कालिया ।
विलवइ वलइ घुलइ सुहयस्स कए तहिं का वि बालिया ॥ १ ॥

का वि पलोयइ पयाणियतुट्ठिहिं मउलियललियहिं वलियहिं दिट्ठिहिं ।
का वि पएसु पडंती दीसइ का वि सविणय किं पि संभासइ ।

५ M °गिरिवरु. ६ MBP °सच्छायउ. ७ MBP कामदेउ. ८ M °गलगयसंखलु. ९ P °कोंतलु.
15. १ MBP ववइ. २ MPK चलियहिं.

7 *a* अविपिक्कवंससुच्छायउ अपक्कवंशवत्सुकान्तिः. 9 *b* फलिहपईह° अर्गलावत्प्रदीर्घ°. 10 *a* ॱण्ण-मियंकवयणु पूर्णचन्द्राननः; *b* गिरिंदसमभुयसिरु गिरीन्द्रसमानोन्नतांसः. 11 *b* विस° वृषभः; अवियलबलु स्थिरबलः. 13 *a* दलियासामयगलगलसंखलु दलिता आशामदकलानां दिग्गजानां गलशृंखला येन. 13 *a* रइरंगउ रतेः रङ्गभूमिः 14 *a* वियड° विकट°; तंबबिंबाहरु ताम्रं रक्तं यद्बिम्बीफलं तद्वद्रक्त ओष्ठो यस्य; *b* उच्छुचावजीयासंधियसरु इक्षुचापप्रत्यञ्चासंधितशरः. 15 पंचहिं तेहिं तैः पञ्चभिः पुत्रैः, कामपक्षे, स्तम्भनमोहनशोषणकर्षणवशीकरणैः. 16 कोसुमकंडहिं पुष्पमयैर्बाणैः.

15. 1 °मयणेत्यादि– कामाग्निना जनितो यो रसः प्रेम तद्वशेन शोषितानि दग्धानि अङ्गानि यस्याः, अत एव कालिया श्यामवर्णा. 2 घुलइ पतति; सुहयस्स कए सुभगस्य कृते. 3 *b* मउलिय° मुकुलित°, सलज्जतया किंचित्संकुचिताभिरित्यर्थः.

का वि भणइ दिज्जउ आलिंगणु जइ मेल्लेसइ मेरउ प्रंगणु ।
ता होसइ तुह तायहु केरी आण सुरिंदभयाइं जणेरी ।
चंचालि चेलंचलइ विलग्गइ क वि सोहग्गभिक्ख तहिं मग्गइ ।
कंठाहरणउं रयणणिउत्तउ का वि देइ कंकणु कडिसुत्तउ ।
तग्गयणयण णियइ अवचित्ती क वि आमायहु साइउं देंती ।
क वि तेल्लेणें पाय पक्खालइ धूवइ दुद्धु तक्कु ण णिहालइ ।
दोरि विलंबिउ कं वि भीभूयइ घडु मण्णंति घिवइ सिसु कूवइ ।
काइ वि जोयंतिइ मयरद्धउ वच्छु भणिवि घरि मंडलु बद्धउ ।
काहि वि णीवीबंधणु ढलियउ पेम्मसालिलु ऊरूयालि गलियउ ।

घत्ता—पइ भल्लउं कडउल्लउं का वि देइ करि णेउरु ॥
उद्दामें इय कामें संताविउ सयलु वि पुरु ॥ १५ ॥

16

रचिता—कुलधणसयणमोहमाणुण्णइवीलाहरणववसियं ।
इसिवयमिव वहंति रमणीयउ जस्स सिणेहविलासियं ॥ १ ॥

जिह जिह सुंदरु खेल्लइ रच्छइ तिह तिह हियवउ हरइ वरच्छहिं ।
सोम्मु सुदंसणु पढमु कुमारउ पेच्छंतिइ बाहुबलि कुमारउ ।
काइ वि कउ कवोलि करु कोमलु तणुतावेण कढइ सरकोमलु ।
काहि वि विरहासिहिं पउलिउ पलु धवलु वि कमलु हुवउ णीलुप्पलु ।
सहइ कामु महुसमयागमणें णिहय का वि पियसमयागमणें ।

३ MBP मेल्लेसहि. ४ MBP पगणु. ५ M तिल्लेण. ६ MBP दोर°. ७ B काविलीभूयइ. ८ P उरुयायालि
16 १ B हति. २ MBP सोमु. ३ P विरहसिहिहिं.

5 *b* मेल्लेसइ मुञ्चति. 6 *b* आण शपथ:. 7 *a* चेलचलइ वस्त्राञ्चले. 8 *a* रयणणिउत्तउं रत्नजडितम्. 9 *a* अवचित्ती उद्भ्रान्तमना:; *b* साइउं आलिङ्गनम्. 10 *b* धूवइ वग्घारयति प्रलेहनिमित्तं 'कढी' इति. 11 *a* भीभूयइ भयानके; *b* घिवइ क्षिपति. 12 *b* मंडलु कुक्कुरः श्वा ग्रामशार्दूलः. 14 पइ पदे.

16. 1 °वीलाहरण° व्रीडापरित्यागः. 2 इसिवयमिव वहंति ऋषिव्रतमिव, यथा मुनिदीक्षायां कुलधनादिकं न मन्यते. 3 *b* वरच्छहि सुन्दरलोचनायाः. 4 *b* कुमारउ कौ पृथिव्यां मारः कामः. 5 *b* सरकोमलु सरोवरजलम्. 6 *a* विरहसिहिं विरहाग्निना; पउलिउ प्रज्वलित दग्धम्; पलु मांसम्. 7 *a* महुसमयागमणें वसन्तागमनेन; *b* पियसमयागमणें आगो दोषः; समय स्वमदेन प्रियविषये कृतमागस्तेनोपलक्षितं मनः तेन; प्रियसमये आगमनेन वा.

मउलिय फुल्लिय मल्लिय काणणि मंडणु देइ पुरंधि ण काणणि।
णिग्गय पल्लव णवसाहारहु मुयइ तत्ति विरहिणि साहारहु।
पइ मेल्लेप्पिणु लवइ व कोइल सुहयत्ते किर भूसइ को इल।
मुहमरुपरिमलमिलियसिलिम्मुह जे ते णं कंदप्पसिलिम्मुह।
का वि चवइ पिय हउं तुह रत्ती अज्जु गइय महु दुक्खें रत्ती।
का वि भणइ पिय करि केसग्गहु वियलउ मालइकुसुमपरिग्गहु।
का वि कहइ लइ चुंबहि वयणउं अवरु मं देहि किं पि पडिवयणउं।

घत्ता—णउ मेल्लइ क वि बोल्लइ म करहि काइं वि विप्पिउ॥
घरु वित्तु वि णियचित्तु वि सयलु वि तुज्झु समप्पिउ॥ १६॥

17

रचिता—क वि रुणुरुणइ किं पि सुइसुहयरु मणरुहविसिहसल्लिया।
पिययमवयणकमलरसलंपडि तरुणीमहुयरुल्लिया॥ १॥

जो सूहउ महिलहिं माणिज्जइ कंदप्पु जि पुणु कहु उवमिज्जइ।
गब्भि सुणंदहि रूवरवण्णी तासु बहिणि अवर वि उप्पण्णी।
णवजोव्वणि चडंति सा छज्जइ चंदु कलंकें वयणहु लज्जइ।
रत्तुप्पलु पयसोहइ जित्तउ तेण वि अप्पउ सलिलि णिहित्तउ।
भूवंकत्तणु थणथड्डत्तणु अहरहु केरउ अइराइत्तणु।
पडिआयहं दंतहं धवलत्तणु जणमारण णयणहुं मि चलत्तणु।

४ B मंडलु. ५ K सिलीमुह. ६ MBP म किं पि देहि.
17. १ M अइरत्तत्तणु; BP अइरायत्तणु.

8 *b* ण काणणि का स्त्री मण्डनं न ददाति आनने मुखे, अपि तु सर्वा ददाति. 9 *b* साहारहु स्वाहारस्य; अथवा साहारहु हारस्य. 10 *b* इल पृथ्वी. 11 *a* °सिलिम्मुह भ्रमरः; *b* °सिलिम्मुहु बाणः. 15 विप्पिउ विप्रियमनिष्टम्.

17. 1 रुणुरुणइ सकाममव्यक्तशब्दं करोति; मणरुहविसिह° कामबाणाः. 2 तरुणीमहुयरुल्लिया तरुण्येव मधुकरी भ्रमरी. 4 *b* तासु बाहुबलेः. 6 *a* पयसोहइ पदकमलशोभया. 7 *a* थणथड्डत्तणु स्तनकठिनत्वम्; *b* अहरहु अधरो दरिद्र ओष्ठश्च, तत्र दरिद्रेऽतिरागित्वं दोषः, ओष्ठे तु गुणः. 8 *a* पडिआयहं पूर्वमेकवारं पतिताः पुनरुद्गतास्तेषां दन्तानाम्, पक्षे पराजयात्प्रत्यागतानां धवलत्वं कथम्.

तुच्छोयरवासिहि गंभीरिम णाहिहि अवरु णियंबहु वड्डिम ।
कंचीदामएण दढबंधहु रहियंगहु परलोयविरुद्धहु ।
सीसारूढकेसकुडिलत्तणु पुरिसोवरि माणसकढिणत्तणु ।
दिट्ठदोसु अवसें असमेहलु मज्झु अमज्झत्थु व हुउ दुब्बलु ।
तुंगपयोहरविलुलियघणघण चलहारावलिमोत्तिय जलकण ।
सिंचिय तेहिं णाइं मइ सीसइ रोमराइ णववेल्लि व दीसइ ।
इय रूवें जगणारिहि सुंदरि जाणिवि ताएं कोक्किय सुंदरि ।

घत्ता—एक्कुत्तरु रणदुद्धरु सउ तणयहं तुइ धूयउ ॥
कयसेट्ठिहिं परमेट्ठिहिं जायउ अणुवमरूवउ ॥ १७ ॥

18

रचिता—जयवइजणणचरणमूलम्मि महारिउवंदमद्दणा ।
बहुसुयणियरधरणपरिणयमइ जाया सयलणंदणा ॥ १ ॥

भावें णमसिद्धं पभणेप्पणु दाहिणवामकरेहिं लिहेप्पिणु ।
दोहिं मि णिम्मलकंचणवण्णहं अक्खरगणियइं कहियइं कण्णहं ।
अत्थें सद्देण वि सोहिल्लउ गज्जु अगज्जु दुविहु कव्वुल्लउ ।
सक्कउ पायउ पुणु अवहंसउ वित्तउ उप्पाइउ सपसंसउ ।
सत्थकलासिउ सग्गणिबद्धउ णाडउ अक्खाइय कहरिद्धउ ।
अणिबद्धउ गाहाइउ अक्खिउ गेयवज्जलक्खणु वि णिरिक्खिउ ।
बंभें सइं वक्खाणिउं जं जिह कुंअरीजुयलें बुज्झिउ तं तिह ।

२ M कंचीदामणएण. ३ B ताइएं. ४ MBP धीयउ.

18. १ MBP °विंद°. २ MBP सग्गि णिबद्धउ. ३ MBP कहरुद्धउ. ४ MBP गेयवज्जु लक्खणु. ५ MBP कुमरी°.

9 *a* तुच्छोयरवासिहि तुच्छं स्वल्पं यदुदरमध्यं तस्मिन्वसनशीलस्य गम्भीरिमा दोषो नाभेस्तु गुणः. 10 *b* रहियंगहु प्रच्छादितस्वरूपस्य; परलोयविरुद्धहु परलोकेन मोक्षेण परपुरुषावलोकनेन वा विरुद्धस्य. 12 *a* असमेहलु असमामीहां चेष्टां लातीति अमध्यस्थः पक्षपाती वा. 13 *a* विलुलियघणघण लुठितसघनमेघः. 15 *b* ताएं पित्रा तातेन; कोक्किय नाम दत्तम्.

18. 1 जयवइ° जगत्पति°. 2 बहुसुयणियर° प्रचुरश्रुतसमूहः. 5 *b* अगज्जु पद्यम्. ६ *a* अवहंसउ अपभ्रंशम्; *b* वित्तउ वृत्तम्. 7 *a* सत्थकलासिउ शास्त्राश्रितं द्वासप्ततिकलाप्रतिपादितम् ; *b* कहरिद्धउ कथामृतम्. 8 *a* अणिबद्धउ सर्गबन्धेन अरचितं गाथादिकम्; *b* गेयवज्जलक्खणु गीतवाद्यलक्षणशास्त्रम्. 9 *a* बंभें वृषभेण.

सुयइं महंतु कहंतु अणेयइं विण्णाणइं णाणइं बहुभेयइं ।
एम भडारउ अच्छइ जइयहुं भग्गी पय दुक्कालें तइयहुं ।

घत्ता—अविवेइय घरु आइय चवइ जिणेण णिरिक्खिय ॥
पहु दहविह सुरमहिरुह अवसप्पिणियइ भक्खिय ॥ १८ ॥

19

रचिता—सयमहवियडमउडतडमणिगणवियलियविमलवारिणा ।
धुयकमकमलजुयल परमेसर पइं मि महारिवारिणा ॥ १ ॥

कप्पंधिववि णासि संहारहु णउ परिरक्खिय भुक्खामारहु ।
जिण्णइं अंबराइं मलमलिणइं कालें विहडियाइं आहरणइं ।
तणु लायण्णु वण्णु परिल्हसियउ जढरहुयासें रुहिरु वि सुसियउ ।
लग्गणखंभु अण्णु को अम्हहं एवहिं सरणु पइट्ठा तुम्हहं ।
असणवसणभूसणसंपत्तिहि भवणजाणसयणासणजुत्तिहि ।
णिहिलकलाविसेससंपत्तिहि करि णिब्भिंत असेसहि वित्तिहि ।
तं णिसुणेवि जायकारुण्णें देवें पउरणाणसंपण्णें ।
करिसणकरणु घरणु मयणिवहहं हरिकरिमेसमहिसविसकरहहं ।
पइ घइ भोयणु भायणु रंजणु घरु पर्यणविहि पीढु मणरंजणु ।
सेज्ज सरीरत्ताणु जलधारणु हारु दोरु केऊरु सकंकणु ।
असि मसि सिप्पु वि जं जिह जेहउ अक्खिउ लोयहु तं तिह तेहउ ।

घत्ता—परमेसरु सुधरियघरु आइपुरिसु कमलासणु ॥
जगु पेसिवि संतोसिवि पालइ खत्तियसासणु ॥ १९ ॥

19. १ MBP ° तारिणा. २ MB संघारहु but PGKT संहारहु. ३ MBP को वि ण उ अम्हहं. ४ K णिप्फत्तिहि. ५ P णिब्भंत. ६ K °संपुण्णें. ७ M °वस°. ८ MBP परियणु वि. ९ MBT जलवारणु, but T records a *p* जलधारणु and remarks 'जलवारणु छत्रम्, अथवा जलधारणु वापीकूपतडागादिकम्'. १० MBP सुचरियघरु.

---

11 *b* पय प्रजा.

19. 2 पइं मि त्वयापि; महारिवारिणा महादुःखनिवारकेण. 3 *a* संहारहु प्रलयकालात्; *b* भुक्खामारहु क्षुधामरीसकाशात्. 5 *a* परिल्हसियउं हीनं जातम्; *b* जढरहुयासें जठराग्निना. 6 *b* एवहिं इदानीम्. 8 *b* वित्तिहि जीविकायाम्. 11 *a* रंजणु अलंजलः आलिंजरो वा; *b* पयणविहि पचनविधिः 12 *a* सरीरत्ताणु कवचादिकम्; जलधारणु छत्रादिकम्; 14 सुधरियघरु सुधृतभूमिः.

20

रचिता—अवर वि भणिय वणियवर हलहर सुयरियकहियकुलवहा।
अइ परिवडियधम्म चंडाल वि पयडियविविहपसुवहा ॥ १ ॥

लेहउ लोहयारु कुंभारु वि तिलपीलउ मालिउ चम्मारु वि।
जेहिं जं जि णियकम्मु पयासिउ ताह तं जि कुलदेवें भासिउ।
पल्लव सेंधव कोंकण कोसल टक्का हीर कीर खस केरल।
अंग कलिंग गंग जालंधर वच्छ जवण कुरु गुज्जर वज्जर।
दविड गउड कण्णाड वराड वि पारस पारियाय पुण्णाड वि।
सूर सुरट्ठ विदेहा लाड वि कोंग वंग मालव पंचाल वि।
मागह जट्ट भोट्ट णेवाल वि उड्ड पुंड हरि कुरु मंगाल वि।
देवमाउसासुब्भव ससलिल साहारण अणूव पर जंगल।
गिरितरुसरिदुग्गेहिं दुसंचर अडइदेस वसिकयधर ससबर।

घत्ता—वइधरियहिं वणहरियहिं महि सोहइ चउपासिहिं ॥
कयगामहिं आरामहिं छेत्तहिं एकदुकोसहिं ॥ २० ॥

21

दुवई—चउविहगोउराइं चउदारइं णयरइं भूमिभूसणो।
कारावइ पुराइं पुरुएवजिणो सुरंदिण्णपेसणो ॥ १ ॥

20. १ K पडिवडिय°. २ P °पसुविहा; MB °वसुवहा. ३ MBP वग. ४ MBP बब्बर. ५ MBP भट्ट. ६ MBP वसिकयवर. ७ MB कयगामिहिं. ८ MBP खेत्तहिं.

21. १ MBP call this couplet रचिता; GK call it दुवई which it is. २ MB पुरएव°. ३ B सुरवरदिण्णपेसणो.

---

20. 1 सुयरिय° सुचरिताः सज्जनाः; °कुलवहा कुलमार्गाः. 2 परिवडियधम्म धर्मात्पतिताः; पयडियविविहपसुवहा प्रकटितनानापशुवधाः. 3 *a* लेहउ चित्रकारो लेखकश्च. 10 *a* देवमाउसासुब्भव मेघवृष्टिजनितसस्याः; ससलिल नदीजलसेकादिना निष्पन्नसस्याः; *b* साहारण नदीजलसेकादिना मेघवृष्ट्या वा निष्पन्नसस्याः; 11 *b* ससबर शबरैः भिल्लैः सहिताः. 12 वइधरियहिं वृतियुक्तैः.

21. 1 भूमिभूसणो आदिनाथः.

खेडइं थियदुवासगिरिसरियइं कव्वडाइं महिहरपरियरियइं ।
पंचगावँसयसहियमडंबइं रयणजोणिपट्टणइं अउव्वइं ।
दोणामुहइं जलहितीरत्थइं संवाहणइं अहिसिहरत्थइं ।
सुणिरूवियसविणयसेवायर वइरायरपहुइ जे आयर ।
पयणियरायसुरिंदाणंदें ते रक्खाविय कुलयरचंदें ।
वण्णचउक्कमग्गु उवएसिउ दंडें दोसु असेसु पणासिउ ।
तिहुयणरायहु महिरायत्तणु कवणु गहणु तहु मणुयपहुत्तणु ।
कम्मभूमिसंपय दरिसंतहु कणयरयणधारहिं वरिसंतहु ।
पुव्वहुं वीस लक्ख गय जइयहुं बद्धु पट्टु जगणाहहु तइयहुं ।
णाहिंणरिंदामरसंघायहिं कच्छमहाकच्छाहिवरायहिं ।

घत्ता—सिंहासणि णिव्वसासणि आसीणउ परमेसरु ॥
जयसिरिसहि पालइ महि बहुहलहरउवणीयकरु ॥ २१ ॥

22

दुवई—हयमलचरणकमलजुयणिवडियविसहरखयरभूयरो ।
अकलुसतियसतरुणिकरपल्लवचालियचारुचामरो ॥ १ ॥

भोयविरामि छुहवेविरतणु उड्डियकरयलु णीसेसु वि जणु ।
घरि उच्छुरसु पियहुं जेणायउ पहु इक्खाउवंसु तें जायउ ।
सोमप्पहु कोक्किउ कुरुराणउ सो जायउ कुरुवंसपहाणउ ।
हरि हरिकंतु कहि वि हरिवंसहु कउ पुरिमिल्लु पुरत्तु सपसंसहु ।
कासवु मघवु भणेप्पिणु घोसिउ उग्गवंसमूलिल्लु पयासिउ ।
अवरु अकंपणु सिरिहरु भाणिउ णाहवंसि सो पहिलउ जाणिउ ।
चोद्दहमयकुलयरापियणंदणु मरुएवीमणणयणाणंदणु ।

४ MBP °गाम°. ५ K कुवलयचंदें.
22. १ MBP पुरमिल्लु. २ MBP उग्गवंसु. ३ MBP चउदह°.

3 *a* दुवास° द्विपार्श्वे°. 5 *b* अहिसिहरत्थइं पर्वतशिखरस्थानि. 6 *b* वइरायरपहुइ वज्राकरप्रभृति; *a* आयर आकराः खनयः. 7 *b* ते आकररत्नानि. 14 उवणीय° उपढौकित°.

22. 1 हयमल° हतमलः परमेश्वरः; °भूयरो मनुजः. 6 *a* हरि हरिनामा पुरुषः; हरिकंतु कहि वि चन्द्रवत् कान्त इति भणित्वा, *b* पुरिमिल्लु आद्यः. 7 *b* °मूलिल्लु प्रथमपुरुषः.

फणिवरसिरमणिहयपयणेउरु सकलत्तउ सपुत्तु संतेउरु ।
कहियणरेसरकुलहिं विराइउ अच्छइ रज्जु करंतु महाइउ ।

घत्ता—पय पालइ दुक्खालइ णायमग्गु भाभासुरु ॥
सिरिअरुहें सहुं भरहें पुप्फयंतु रिसहेसरु ॥ २२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे आइदेवमहारायपट्टबंधो णाम
पंचमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ५ ॥
॥ संधि ॥ ५ ॥

४ M °णरेसरकुलेहिं; K णरेसकुलेहिं

11 कहियणरेसरकुलहिं पूर्वोक्तचतुष्प्रकारराजकुले : *b* महाइउ महार्घिक· 13 सिरिअरुहें श्रीयोग्येन.

VI

अण्णहिं दिणि सभवणि सुरवरहिं संथुउ संपयगारउ ॥
फणिदणुयहिं मणुयहिं सेवियउ थिउ अत्थाणि भडारउ ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

1

मलयविलसिया—कंचणघडियइ मणिगणजडियइ ।
हरिवरधरियइ पहविप्फुरियइ ॥ १ ॥

आसणि आलीणउ परमपहु अम्हहिं किं वण्णिज्जइ रिसहु ।
दिण्णइं चाउरिपट्टासणइं सुविचित्तदित्तवेत्तासणइं ।
रयणंचियाइं लोहासणइं दंडुण्णयाइं दंडासणइं ।
एक्केक्क पहाणा खणि मिलिय तहिं संणिसण्ण बहु मंडलिय ।
कु वि णरवइ घुसिणें समलहिउ णं सिरिकामिणिराएं गहिउ ।
कु वि दीसइ चंदणधूसरिउ पंडुरु णं णियजसेण भरिउ ।
मयणाहिविलित्तउ को वि णरु ससिरविभीयउ धरइ व तिमिरु ।
णिवि कहिं मि घुलइ हारावलिय कसणइ णं जलहरि विज्जुलिय ।
कासु वि पडंति चमरइं चलइं णं कित्तिसुभिसिणिहि सयदलइं ।
कप्पूरधूलिबहलुच्छलइं रुणुरुंटइ तहिं महुयरु घुलइ ।
सो केण वि पंतु णिवारियउ तंबोलहु पाणि पसारियउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:

श्रीवाग्देव्यै कुप्यति वाग्देवी द्वेष्टि मनन लक्ष्म्यै ।
भर्तारमनुगम्य सांप्रतमनयोरात्यन्तिकं प्रेम ॥

GK do not.

1. १ MBP चाउरिवित्तासणइं. २ MBP सुविदित्तचित्तपट्टासणइं. ३ G खणमिलिय. ४ MBPT कु वि णिवरु.

---

1. 1 सभवणि स्वप्रासादे; संपयगारउ सपत्तिकारकः. 2 अत्थाणि आस्थाने सभायाम्. 4 *a* हरिवर° सिंहवरः; *b* पह° प्रभया. 6 *a* चाउरि° गादीति देशी. 7 *b* दंडुण्णयाइं दण्डवदुन्नतानि. 8 *b* संणिसण्ण उपविष्टाः. 9 *b* सिरिकामिणिराए लक्ष्मीप्रेम्णा. 11 *a* मयणाहि° कस्तूरिका. 12 *a* णिवि नृपे; *b* कसणइ कृष्णशरीरे मेघे. 13 *b* कित्तिसुभिसिणिहि कीर्तिरेव शोभना पद्मिनी तस्याः; सयदलइं पद्मानीव. 14 *b* रुणुरुंटइ शब्दं करोति. 15 *a* सो भ्रमरः.

घत्ता—जगसामिहिं कामिहिं सयलहि वि वंदारयबंदियणहिं ॥
पणवंतहिं संतहिं रईणिवहिं जहिं विरोहु मणिकिरणहिं ॥ १ ॥

2

मलयविलसिया—जत्थ णिसण्णो पणयपसण्णो ।
भिंगारहरो रामाणियरो ॥ १ ॥

णियमंति जणं जहिं भत्तियर काट्ठियहर परपडिहारणर ।
पहुअग्गइ सेवादूसणउं णिट्ठीवणु जिंभणु पहसणउं ।
कमकंपणु अहु णिहालणउं हिक्कारुउ भउंहाचालणउं ।
खासणु धम्मिल्लामेल्लणउं करमोडि परासणपेल्लणउं ।
अवठंभणु दप्पणदंसणउं अइजंपणु सगुणपसंसणउं ।
सवियारउ कायणियच्छणउं इट्ठागमदेवदुगुंछणउं ।
संकेयवयणअवयारणउं परणिंदणु पायपसारणउं ।
अवरु वि जं विणयं विरहियउं तं म करह गुरुयणगरहियउं ।
मण्णहु मोणुसु सामिहि तणउं ढंकहु दीणत्तणु अप्पणउं ।

घत्ता—इय लक्खिउ अक्खिउ सेवयहो अहिमाणिहिं वणु चंगउ ।
दउवारियपेरियदंडएण मा छिप्पउ तहु अंगउं ॥ २ ॥

3

मलयविलसिया—सुरवरसारउ पम भंडारउ ।
अच्छइ जावहिं सुरवइ तावहिं ॥ १ ॥

५ MBP कामिहि कामिणिहि. ६ P रइणिवहि.

2. १ MBP वर°. २ M भउहा°. ३ M करहि. BP करहु. ४ MBP माणमु. ५ MB अहिमाणहि.

3. १ MBP जइयहु. २ MBP तइयहु

16 कामिहिं देशगजादीनां वाञ्छके., वदारय° देवा. °व बन्दिजना. तै. 17 रइणिवहि प्रीतिसमूहैः.

2. 3 *a* णियमंति निषेधयन्ति, *b* कट्ठियहर यष्टिधराः. 5 *a* अहु णिहालणउ वक्रावलोकनम्; *b* भउंहा° भ्रूः 9 *a* संकेय° संदेशः. 11 *a* मण्णहु मानयत. 12 अहिमाणिहिं वणु चंगउ अहंकारिणां वन चारु न हु सभा.

संचिंतइ अवहीणाणधरु | बारहरविसंणिहकुलिसयरु ।
पुव्वइं परमेसरेण रमिय | कुमरत्तें वीस लक्ख गमिय ।
भुंजंतहु महि तेसट्ठि गय | अज्जु वि अवलोयइ चवल हय ।
अज्जु वि माणि मण्णइ मत्त गय | इच्छइ अज्जु वि संदण सधय ।
अज्जु वि धैरि रइ किंकरणिवहि | अज्जु वि ण विरप्पइ कामसुहि ।
को हुयवहु इंधणेण धवइ | सरिसलिलें सरिणियराहिवइ ।
को भोएं जीवहु करइ दिहि | बलवंतउ सव्वहुं कम्मविहि ।
जाणंतु वि मुज्झइ देउ जहिं | अण्णाणु अवरु किं भणमि तहिं ।

घत्ता—रइराविउ भाविउ एंउं जगु किं पि णं याणइ जुत्तउ ॥
सकलत्तहिं पुत्तहिं मोहियउ णिवडइ हेट्ठाहुत्तउ ॥ ३ ॥

4

मलयविलसिया—तुट्ठे धिट्ठे | रुज्झसु तिट्ठे ।
ण तुह धणेणं | तिसि इमेणं ॥ १ ॥

अज्जु वि णउ फिट्टइ भोयरइ | अज्जु वि णउ चिंतइ परम गइ ।
अज्जु वि पहुहियउ णउ उवसमइ | माणवरमणीरमणउ रमइ ।
सरणिहिसमाहं मइ पयडियउ | अट्ठारहकोडाकोडियउ ।
णट्ठाइं धम्मकम्मंतरइं | दंसणणाणइं चरियइं वरइं ।
आयारइं पंचमहव्वयइं | अणुवयगुणवयसिक्खावयइं ।
ण पयासइ णवपयत्थसहिउ | सिद्धंतु अणाइ अरुहें कहिउ ।
इय चिंतिवि इंदें जाणियउं | अवहिए भवियव्वु पमाणियउं ।

३ MBP रइ घरि. ४ B °णिवहो. ५ B कामसुहो. ६ M सरणियरा°. ७ MBP सव्वहं बलवंतउ. ८ MBP जाणतउ. ९ K एहु. १० MBPK एम. ११ MP ण जाइ; B ण जाणइ. १२ MBP हेट्ठाहुंतउ.

4. १ MBP ण उवसमइ. २ T सरिणिहि°. ३ B Omits this foot. ४ MBP °महावयइं. ५ MB अरुहकहिउ.

3. 6 *b* संदण रथाः. 7 *a* किंकरणिवहि सेवकसमूहे. 8 *a* धवइ ध्मापयति; *b* सरिणियराहिवइ समुद्रः. 9 *b* कम्मविहि कर्मप्रकारः, कर्मैव विधाता. 11 राविउ रंजितम्; भाविउ पुनः पुनः प्रकर्षं नीतम्.

4. 1 *b* तिट्ठे हे तृष्णे. 5 *a* सरणिहिसमाहं सागरोपमानाम्.

णाहहु अज्जु जि चरियावरणु धुउ णिम्मइ गेण्हइ तवँचरणु ।
पुण्णाँउस णीलंजस णडइ गयजीविय जइ अग्गइ पडइ ।
तो होइ विरायहु कारणउं इह दुविहु संजमुद्धारणउं ।
जिणधम्मपवत्तणु होइ जणे इय संभरेवि पुणु पुणु वि मणे ।

घत्ता—णीलंजस रइवस मृँगणयण इंदें भणिय अणिंदहो ॥
तुहुं गच्छहि पेच्छहि कमजुयलु णच्चहि पुरउ जिणिंदहो ॥ ४ ॥

5

मलयविलसिया—ता तुंगथणी सयमहरमणी ।
रयणमयघरं साकेयपुरं ॥ १ ॥

आया णहेण छउओयरिय विज्जुलिय णाइं चलविप्फुरिय ।
पाँडहियगाणसुरपरियरिय णाहयणिहेलणि अवयरिय ।
पणवेप्पिणु पहु ओलग्गियउ पेक्खँणयहु अवसरु मग्गियउ ।
णाडयपारंभि पढमु भणिउं वीसंगु वि पुव्वरंगु जणिउ ।
वाइयउ तिपुक्खरु सुंदरउ सुपसिद्धउ सोलहअक्खरउ ।
चउमग्गु दुलेवणु छक्करणु तियनिल्लउ तिलयउ मणहरणु ।
तिगँयउ तिपँचारु तिजोयँयरु तिकरिल्लउ पंचपाणिपहरु ।
तिपसारउ अवरु तिमज्जणउं वीसालंकारसलक्खणउं ।
अट्ठारहजाइहिं मंडियउ पयहिं गुणेहिं अवरुंडियउ ।
वद्धउड्ड भणिउं पुणु चावउड्ड छँप्पियपुत्त वि मणहारि फुडु ।
इय ताँलेहिं तीहिं अलंकरिउ बहुयहिं तब्भेयहिं परियरिउ ।
वामुद्धालिंगियसंणियउं ओणद्धउं वज्जउं वण्णियउं ।

६ MBP तवयरणु ७ P पुव्वाउम. ८ P तो ९ MBPK इय but G इह with gloss संस्मारे. १० MBP मयणयण.

5. १ MBP पाडहि गायण°. २ MB पेक्खणहो. ३ MB तिगइयउ. ४ MB तिचारु; P तिमचारु; T तियचारु. ५ MBP तिजोयधरु. ६ MB छप्पिउ वुत्तु; P छप्पिउड्ड वुत्तु ७ MB ताडहिं.

---

10 *b* धुउ ध्रुवं निश्चयेन; णिम्मइ क्षयोपशम याति. 12 *b* दुविहु सजमु इन्द्रियसंयमः प्राणसंयमश्च; अथवा निश्चयव्यवहाररूपः. 13 *b* संभरेवि चिन्तयित्वा. 14 मृगणयण मृगनेत्री; अणिंदहो सर्वज्ञस्य.

5. 1 *b* सयमहरमणीं इन्द्राणी. 3 *a* छउओयरिय क्षामोदरी. 5 *a* ओलग्गियउ सेवितः. 14 *b* ओणद्धे त्यादि–इत्थंभूतं मदवनद्ध वाद्यं तत त्रिप्रकारं वर्णितं वाम ऊर्ध्वं आलिङ्गकसंज्ञितं चेति.

घत्ता—जहिं लोयण तिहुअणु जलहिसम सुरसंखाइ सुललियहिं ॥
चलबद्धहिं अद्धहिं मुक्कियहिं वत्तावत्तंगुलियहिं ॥ ५ ॥

6

मलयविलसिया—विरईपुसिरे वज्जे सुसिरे ।
णिक्कयपसंसे जायउ वंसे ॥ १ ॥

सरु जेत्थु झुणंति सुअत्थसुइ थिय मुक्कंगुलि व सुअट्ठसुइ ।
कंपंतियाइ उग्गमु तिसुइ मुक्कंगुलियइ हुयउ दुसुइ ।
वत्तंगुलि मोक्खवसेण कय सेहुं सज्जें मज्झिमपंचमय ।
सरिसेहुं धेवउ कंपंतियए सामण्णसरंतरसंणियए ।
गंधारणिसायविचलिययाइ अद्धइ मुक्कइ अंगुलिययाइ ।
पयणियवेणू णाणायरेहिं तुंबरुणारयसंणिहसुरेहिं ।
पयडियउ जि देवागमि भणिउं णिक्कलु तेप्पु वि तंतीरणिउं ।
घणु कंसतालजुयलाइयउ समहत्थु देवि जहिं चालियउ ।
अमरहिं जिणमणसंमाइयहिं पारद्धउ गेउ महाइयहिं ।
उप्पण्णउ उरठाणंतरए बावीस सुइउ णहंतरए ।
कमरइयपमाणहिं संछिवइ वड्ढंतु णाउ वुड्ढिहि घिवइ ।
सुइसु वि स रि ग म प धे णी यणाम सर सत्त तेसु दोण्णि वि जि गाम ।

८ MBP चवलद्धहिं; T चवलद्धहिं but explains it as स्थितमुक्ताभिः.

6. १ MBP विरइयपुसिरे. २ MBPT वज्जियसुसिरे. ३ MBP णिकयपसंसे. ४ MBP जाओ. ५ MBP जेसु. ६ P सुअत्थवई. ७ BP कपंतियाउ. ८ MBP उग्गउ. ९ P सहुं मज्झें. १० MBP धेयउ T धइवउ. ११ M सामण्णें सरंतरसंतियए, B सरंतरसंनियए, सरंतरसंणियए. १२ M विचलियाइ; B विवलियाइ, P णिचलियाइ. १३ MB अंगुलियाइ; P अंगुलियाइ. १४ P तिपुव्वि. १५ MB समहत्थ. १६ K सचालियउ. १७ P जिणसमण°. १८ MBP बावीस वि सुइउ. १९ MP °पधणीसणाम; B °पधणिणाम.

---

16 वत्तावत्तंगुलियहिं उक्तविशेषणविशिष्टाभिरव्यक्तव्यक्ताङ्गुलिभिः.

6. 1 *a* विरईपुसिरे विरतिप्रोञ्छके, अनुरागोत्पादक इत्यर्थ . 3 *a* सरु स्वरः. 5 *b* सज्जें षड्जेन सह. 6 *b* सामण्णसरंतरसंणियए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्तः. 8 *a* णाणायरेहिं नानादरैर्ज्ञानादरैर्वा. 6 *b* णिक्कलु तेप्पु वि तंतीरणिउं तन्त्रीवाद्य द्विविधं निष्कलं त्रिपंच (तेप्पु). 12 *b* णहतरए आकाशे. 13 *b* णाउ नादः.

घत्ता—सुरपुज्जइ सज्जइ किंणरहिं जाइउ सेंस पउत्तउ ॥
पयारह सुयरह मज्झिमइ पीणियजणवयसोत्तउ ॥ ६ ॥

7

मलयविलसिया—सत्तेयारह इय अट्ठारह ।
जाइणिबद्धहं लक्खविसुद्धहं ॥ १ ॥

अंसहं सउ चालीसाहियउ पक्कुत्तरु तं पि पसाहियउ ।
तहिं होंतउ सवणरवण्णियउ गीईउ पंच उप्पण्णियउ ।
सुद्धा भिण्णा पुणु वेसरिय गउडी साहारणिया सरिय ।
तहिं गामराय अवर वि भणिया भयवयमयगुणिसतमगणिया ।
इय तीस कमेण जि संगहिय उडुमाण जि माणवसवणाहिय ।
पहिलारउ टक्कराउ कहिउ अणुवेक्खासमभासहिं सहिउ ।
अट्ठहिं पंचमु वि पयासियउ बिहिं वि विहासहिं भूसियउ ।
आवाहियमोहियजगविलउ हिंदोलउ चउमासाणिलउ ।
मालविकेसिउ छहि बुक्कियउ अवराहिं मि दोहिं मि अंकियउ ।
सुद्धउ सज्जु वि सत्तहिं कलिउ ककुहु मि तिहिं भासहिं संवलिउ ।

घत्ता—सुविहासहिं सरसहिं बिहिं सहिउ सो गाइउ सुइलीणउ ॥
मणहरियउ किरियउ दावियउ जहिं परिगयपरिमाणउ ॥ ७ ॥

१० BP सुणपउत्तउ.

7. १ MBP लक्खु वि सुद्धह. २ MBP गायउ पंचउ. ३ MBP भणिय. ४ MBPT ढक्कराउ. ५ MP बिहिं चेय विहासहिं; B तिहि चेय हिहासहिं.

16 सुयरह स्मर्यताम्; °सोत्तउ °कर्णा..

7. 1 *a* सत्तेयारह सप्त एकादश च. 2 *b* लक्खविसुद्धहं गीतप्रयोगविशुद्धानाम्. 3 *a* अंसह अंसानाम्; 4 *a* सवणरवण्णियउ श्रवणसुखदाः. 5 *b* सरिय स्मृताः. 8 *b* अणुवेक्खासमभासहिं द्वादशभाषासमन्वितः. 10 *a* आवाहिये त्यादि-आवाहिता आकारिता मोहिता विह्वलीकृता जगविलउ जगति स्त्रियो येन एतादृशो हिंदोलकरागः.

8

मलयविलसिया—दह चउगुणिया संखा भणिया।
भासाणं सा छह वि विहासा ॥ १ ॥

भणियउ रंजियबुहयणमणउ पयारह दहवर मुच्छणउ।
एकुणवण्णास वि ताण जहिं किं वण्णमि गेयारंभु तहिं।
संजोय ताण बहुदिण्णरस णीलंजस णच्चइ विमलजस।
भणु कासु ण सा दिट्ठिहि भरइ णच्चंती जणहियवउ हरइ।
तेरहविहु सीसु पणच्चियउ छत्तीस दिट्ठि परियंचियउ।
णवतंिउ परिपालियरइउ अट्ठ वि रइयउ दंसणगइउ।
तेत्तियविहु पुणरवि भावियउ णंदप्पयारु फुडु दावियउ।
भू सत्तभेय परहिययहर छव्विह णासा कवोल अहर।
सत्तविहु चिवुंउ चउ मुहहु राय णव गल चउसट्ठि वि करण भाय।
सोलहविहु तिविहु चउव्विहु वि किउ करणमग्गु भुउ दहविहु वि।
उरु सरविहु पासजुयलु तिविहु पोट्टु वि पायडियउ तं तिविहु।
कडियलु जंघा कमकमलाइं तव्विहइं जि णिहियइं विमलाइं।
सउ करणहं वसुसंखाहियउ वलबत्तीसंगहारमियउ।
चउ रेयय णडगुरुकित्तिधय सत्तारह पिंडीबंध कय।
चारिउ सोलस दुअसंखियउ णच्चियउ जियक्खहिं अक्खियउ।
वीस वि मंडलइं पंयासियइं ठाणाइं तिण्णि संदरिसियइं।

घत्ता—संचरियहिं धरियहिं थाइयहिं भावहिं णडइ अणेयहिं ॥
भासाइहिं जाइहिं णवरसहिं दावियणाणाभेयहिं ॥ ८ ॥

8. १ MT विउउ; B चिवउ; GK चिउबु. २ M पसासियइं; P पसाहियइं. ३ MBP आइयहिं. ४ K हासाइहिं.

8. 2 *b* विहासा विभाषाः षड् भवन्ति. 8 *a* परिपालियरइउ पोषितरागाः. 9 *b* णंदप्पयारु नव नन्दास्तेषां प्रकार.. 10 *a* भू भ्रुकुटी. 11 *b* करण भाय हस्तानां भेदाः. 12 *b* भुउ भुजः. 13 *a* सरविहु पञ्चप्रकारम्. 16 *a* णडगुरुकित्तिधय नटानां गुर्व्याः कीर्तेर्ध्वजा.. 17 *b* जियक्खहिं जितेन्द्रियैर्गणधरैर्देवादिभिः. 19 थाइयहिं भावहिं स्थायिभावै रत्यादिभिः.

9

मलयविलासिया—वियलियहरिसं स हि णवमरसं ।
झत्ति धरंती दिट्ठ मरंती ॥ १ ॥

जिणणाहें सा णीलंजसिय णं केण वि चित्ति लिहिवि पुसिय[1] ।
कंदप्पकंति णं पंमुसिय[2] लायण्णतरंगिणि णं सुसिय[3] ।
णं खणि विद्धंसिय रइहि पुरि णं हय जणणयणणिवाससिरि ।
णं रंगसरोवरि[4] पउमिणिय कम्मेण कालरूवें लुणिय ।
णं चंदरेह णहि अत्थमिय णं सुरधणुसिरि मरुणा समिय ।
रसवाहिणि दिण्णरवण्णसुह णं णासिय पिसुणें सुकइकह ।
णउ थण णच्चणगुण[5] णउ वयणु णउ विउलु रमणु संचियमयणु ।
णउ केसभारु णउ हारलय णउ जाणहुं सुंदरि कहिं मि गय ।
सुण्णउं पंगणु हरिणीलयलु णं विज्जुविवज्जिउ मेहउलु ।
अमराहिवणारिरयणु मुयउ तं पेच्छिवि कोऊहलु हुयउ ।
हा हा भणंतु सोयं लइउ अत्थाणु असेसु वि विम्हइउ[6] ।

घत्ता—तहि मरणें करुणें[7] कंपियउ भरहजणणु सवियक्कउ ॥
तुण्हिक्कउ थक्कउ तिजगगुरु कुसुमयंतु[8] रइमुक्कउ ॥ ९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णीलंजसाविणासो णाम
छट्ठओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ६ ॥
॥ संधि ॥ ६ ॥

9. १ MB फुसिय. २ MBP पयपुसिय. ३ MB सुसुय. ४ MBP सरोवर°. ५ MBP णउ करकम. ६ M विंभइउ, B विंभयउ, P विभियउ. ७ MBP करणें. ८ MBP कुसुमयंत° and gloss in P कुसुमवद्दन्ता या नीलंजसा तस्या रतेर्मुक्तः.

9. 1 *b* स सा नीलजसा, हि स्फुटम्, णवमरसं शान्तरसम्. 3 *b* पुसिय प्रोञ्छिता. 4 *a* पंमुसिय प्रमुषिता. 7 *b* मरुणा पवनेन. 9 *b* जाणहु ज्ञायते. 11 *a* हरिणीलयलु इन्द्रनीलमणिबद्धतलम्. 14 सवियक्कउ सविस्मयः. 15 कुसुमयंतु कुसुमवद्दन्ता यस्य तादृश आदिनाथः; रइमुक्कउ रतेर्मुक्तः.

VII

कयतिहुयणसेवें चिंतिउ देवें जगि धुउ किं पि ण दीसइ ।
जिह दावियणवरस गय णीलंजस तिह अवरु वि जाएसइ ॥ १ ॥

1

खंडयं—इह संसारदारुणे बहुसरीरसंधारणे ।
वसिऊणं दो वासरा के के ण गया णरवरा ॥ १ ॥

पुणु परमेसरु सुसेमु पयासइ धणु सुरधणु व खणेंद्धे णासइ ।
हय गैय रह भड धवलइं छत्तइं सासयाइं णउ पुत्तकलत्तइं ।
जंपाणइं जाणइं धयचमरइं रविउग्गमणे जंति णं तिमिरइं ।
लच्छि विमल कमलालयवासिणि णवजलहरचल बुहउवहासिणि ।
तणु लायण्णु वण्णु खणि खिज्जइ कालालिं मयरंदु व पिज्जइ ।
वियलइ जोव्वणु णं करयलजलु णिवडइ माणुसु णं पिक्कउ फलु ।
तृयहि लवणु जसु उत्तारिज्जइ सो पुणरवि तणि उत्तारिज्जइ ।
जो महिवइ महिवइहि णविज्जइ सो मुउ घरदारेण ण णिज्जइ ।

घत्ता—किर जित्तउ परबलु भुत्तउ महियलु पच्छइ तो वि मरिज्जइ ॥
इयें जाणिवि अधुउ अवलंबिवि तउ णिज्जणि वणि णिवासिज्जइ ॥ १ ॥

MBP have, at the commencement of this samdhi, the following stanza:-

हंहो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता
कोऽयं श्याम· प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः ।
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवलयशोधौतधात्रीतलान्तः
ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

MB read हंहे for हंहो; प्रचण्डाधनि° for प्रचण्डावनि°; and °संख्यात° for °संख्यान°. GK do not give it.

1. १ M reads खंडियं throughout. २ T ससमु but adds सुसमु वा शोभनोपशमयुक्तः. ३ P खणद्धं. ४ MBP तियहिं. ५ B इउ. ६ B अधुवु, P अद्धउ. ७ MBP अवलंबियभुउ but gloss in P तपो गृहीत्वा.

---

1. 3 *a* संसारदारुणे दारुणे संसारे. 4 *a* वसिऊणं उषित्वा. 5 *a* सुसमु शोभनोपशमयुक्तः द्वादशानुप्रेक्षारूपं वा. 7 *a* जंपाणइं पालखीति देशी. 8 *b* बुहउवहासिणि पण्डितद्वेषिणी. 9 *b* कालालिं कालभ्रमरेण यमभ्रमरेण. 11 *a* तृयहिं स्त्रीभिः; *b* तणि उत्तारिजइ तृणे तृणसंस्तारके तृणोपरि स्थाप्यते, मृते तृणोपरि स्थाप्यत इत्यर्थः. 13 जित्तउ जितम्. 14 अवलंबिवि गृहीत्वा.

2

खंडयं—वइरिरायदप्पहरणं किं जोयइ भुयपहरणं।
मण्णइ अप्पाणं घणं सरणविरहियं जयमिणं ॥ १ ॥

जइ वि धरंति वीर णर किंणर अरुण वरुण सपवण वइसाणर।
गरुड जक्ख रक्खस विज्जाहर भूय पिसाय णाय ससि दिणयर।
पडिबलकुलकाणणकालाणल इंद पडिंदहमिंद महाबल।
पॅण्णारहखेत्तुब्भव जिणवर कुलयर चक्कवट्टि हरि हलहर।
जइ वि धरंति देहभा भासुर पवराउहपवीण देवासुर।
जइ पइसइ मयरहरब्भंतरि किंकरहरिकरिरहवूहंतरि।
सरसरिगिरिदरिकक्करकंदरि दुप्पवेसकुलिसायँसि पंजरि।
बहलतमंधयारमहिमूलइ जइ पइसरइ गंपि पायालइ।
तो वि जीउ कॅड्डिज्जइ कालॅं हरिणा हरिणु व भिउडिकरालॅं।

घत्ता—इय बुज्झिवि असरणु रुंभिवि तियरणु जेण चरित्तु ण चिण्णउं॥
तं माणुसवेसॅं वायविसेसे भमइ कलेवरु सुण्णउं ॥ २॥

3

खंडयं—मित्तसयणसंजोयँओ होउं होइ विओयँओ।
एक्को च्चिय जगि जीयओ भमइ सकम्मविणीयओ ॥ १ ॥

एक्कु जि अइ अबंधु णउंसउ दुग्गउ दुट्ठु दुबुद्धि दुरासउ।
हुयउ कुमाणुसात्ति दुणिहालउ एक्कु जि जीउ चंडु चंडालउ।
एक्कु जि धणुहरु सवरु वणंतरि एक्कु जि सुरवरु मणिमयसुरहरि।

2, १ MBP पण्णारम°. २ MBP देव भाभासुर. ३ MBP कुलिसायस°. ४ MBP °तमधयारि. ५ M कड्डिजइ.

3. १ P संजोयरु. २ P विओयरु.

---

2. 1 *b* भुयपहरणं भुज च प्रहरणं च. 2 *a* घणं समर्थं अत्यर्थं वा; *b* जयमिणं इदं जगत्. 3 *b* अरुण आदित्यसारथि. 8 *a* मयरहर° समुद्र: *b* °वूहंतरि व्यूहान्तरे. 11 *b* हरिणा हरिणु व सिंहेन मृग इव. 12 तियरणु मनोवाक्कायक्रिया; चिण्णउ अनुष्ठितम्. 13 वायविसेसें वाचाविशेषेण वायुप्रेरणेन वा.

3. 1 *h* होउं भूत्वा. 2 *b* °विणीयओ प्रेरितः. 3 *a* णउंसउ नपुंसकः; *b* दुग्गउ दरिद्रः; दुरासउ दुष्टचित्त.. 4 *a* दुणिहालउ दुष्प्रेक्ष्य. 5 *a* धणुहरु सवरु धनुर्धारी भिल्लः; *b* °सुरहरि °विमाने.

अप्पउ पुण्णहीणु पडिवज्जइ सयमहविहवपलोयणि झिज्जइ ।
एक्कु जि णहि णहयरु थलि थलयरु एक्कु जि बिलि बिलहरु जलि जलयरु ।
एक्कु जि मॄगजोणिहि उप्पज्जइ पॅरिहि तलिवि पउलिवि खाणि खॅज्जइ ।
एक्कु जि दूहउ दूसहु दुम्मइ णरयविवरि णारइयहिं हम्मइ ।
एक्कु जि तरइ मरइ वइतरणिहि चरइ जलणपज्जलियहि धरणिहि ।

घत्ता—एक्कु जि भवकद्दमि णिवडइ दुद्दमि रइसुहपंकयछप्पउ ॥
एक्कु जि तवताविउ णाणें भाविउ होइ जीउ परमप्पउ ॥ ३ ॥

4

खंडयं—इय णिसुणिवि एयत्तणं गाढं णियमह णियमणं ।
एक्कु जि जीउ वरायओ सयलु वि अण्णु जि लोयओ ॥ १ ॥

अण्णहिं परमाणुयहिं णिबज्झइ अण्णु जि पिंडु गब्भि संबज्झइ ।
अण्णु जीउ अण्णु जि दुक्कियमलु अण्णु जि सुॅक्कियउ अण्णु जि तहु फलु ।
अण्णहिं कुलि कलत्तु परिणिज्जइ अण्णु जि कौ वि पुत्तु णिप्फज्जइ ।
अण्णु जि मित्तु स्वॅयजि कयायरु अण्णु जि होइ सॅणेहउ भायरु ।
अण्णु जि भिच्चु होइ धणलोहें जीउ तइ वि मोहिज्जइ मोहें ।
अण्णु जि भणइ महारउ मत्तउ णउ जाणइ जिह सयलहिं चत्तउ ।
अण्णहिं जंति खणद्धें रहवर हयवरगयवरचिंध सचामर ।
परमत्थें ण को वि जगि कासु वि एकॅलउ जि जाइ पुहईसु वि ।

घत्ता—राएण णिबद्धउ इंदियलुद्धउ सुहु अण्णु जि मॅहुं भावइ ॥
ससहाउ ण पेक्खइ अण्णु जि कंखइ जीउ महावइ पावइ ॥ ४ ॥

३ MBP मिगजोणिहि. ४ M परिहि तलिज्जइ पउलिवि खज्जइ. ५ B खिज्जइ.

4. १ MBP सुकिउ. २ MBP पुत्तु को वि उप्पज्जइ. ३ MBP सकज्जि. ४ M सणेहें. ५ MBP एक्किल्लउ. ६ MB जणि; P मणि.

---

6 *b* झिज्जइ खिद्यते. 8 *b* परिहि परैर्विप्रैः. 11 एक्कु जि असहाय एव; °पंकयछप्पउ कमले भ्रमरः. 12 तवताविउ तपस्तापितः.

4. 1 *a* एयत्तण एकत्वम्. 2 *a* वरायओ वराकः; *b* अण्णु जि भिन्न एव, लोयओ लोकश्चेतनाचेतनपदार्थसघातः. 3 *b* पिंडु देहः. 4 *b* सुक्कियउ सुकृतम्. 5 *b* पुत्तेत्यादि—आत्मा वै पुत्र इति वेदवाक्यं वृथेत्यर्थः. 7 *a* भिच्चु भृत्यः. 8 *a* मत्तउ विवेकशून्यः. 10 *a* पुहईसु वि पृथ्वीशोऽपि. 12 ससहाउ निजस्वरूपम्; महावइ महापत्तिं महतीमापदम्.

5

खंडयं—चउकसायरसरसियओ मिच्छासंजेमवसियओ ।
णाणाजेम्मु वियारए आहिंडइ संसारए ॥ १ ॥

णरयगइहिं उप्पण्णउ जइयहुं णारयणियरिहिं रुंभिवि तइयहुं ।
तिलु तिलु छिंदिवि दिसिहिं विहाइउ कवलिउ धुणिउ वणिउ विणिवाइउ ।
वारवार पञ्चारिउ जूरिउ विज्जुतरलतरवारिवियारिउ ।
एक्कु जि बहुयहिं तहिं पारंभिउ खलिउ दलिउ पयमलिउ णिसुंभिउ ।
ओहामिउ भामिउ ओणामिउ सूलि कयंतदंति संकामिउ ।
अच्छोडिउ मोडिउ महिं पाडिउ विरसमाणु करवत्तहिं फाडिउ ।
लूरियंतु कोंतेहिं विहिण्णउ रुंदोदूहलि मुसलहिं छुण्णउ ।
सत्तिहिं हूलिउ जंतिहिं पीलिउ जलियजलणजालोलिहिं जालिउ ।
वम्मविहट्टणेहिं दुव्वोलिउ सेल्लभल्लिवावल्लहिं सल्लिउ ।
पूयकुंडि उप्पेल्लिवि घल्लिउ रुहिरोहलियदेहु ओणल्लिउ ।

घत्ता—माणि रोसु धरंतहं राणि पहरंतहं लग्गइ गत्तु विहत्तु त्रि ॥
सुहु णत्थि तमंधहं णारयसंढहं णयणणिमीलणमेत्तु वि ॥ ५ ॥

6

खंडयं—सिंगीसु य पक्खीसु य दाढीसु य णक्खीसु य ।
भुंजंतो भवसंगमं ण लहइ जीवो णिग्गमं ॥ १ ॥

कायकंककोइलकारंडहिं सारसचासभासभेरुंडहिं ।
सीहसरहसूयरसालूरहिं वारमोरमंडलमज्जारहिं ।

5. १ MBP संजमि वसियउ. २ MBP °जम्म° ३ MB दिसहि. ४ MBP मुसलें. ५ M °विहट्टणेण.

---

5. 1 *a* °र रा° परिणति·; °र सि य ओ आमक्त 4 *a* वि हा इ उ विभक्त . *b* धु णि उ कम्पितः, व णि उ व्रणित·, वि णि वा इ उ पातित . 5 *a* पञ्चारिउ प्रचारित , जू रि उ दुर्वचनैर्निर्भर्त्सित·. 6 *b* णि सुं भि उ प्रक्षिप्तः. 7 *a* ओ हा मि उ अभिभूत , ओ णा मि उ ऊर्ध्वमुखो नामित . 9 *a* लू रि य तु विदारितान्त्रः; वि हि ण्ण उ विभिन्नः; *b* रुं दो दू ह लि महोदूखले. 10 *a* हू लि उ प्रोत·. ११ *a* दु व्वो ल्लि उ दुर्वचनैरुक्त , *b* °वा व ल्ल हिं सर्वलोहमयैः. 12 *b* रु हि रो ह लि य दे हु रुधिरप्रक्षालितशरीर , ओ ण ल्लि उ अध· पातित·. 13 वि ह त्तु विभक्तं खण्डीकृतम्.

6. 2 *a* भ व सं ग मं ससारसंबन्धम्. 3 *a* °का रं ड° चक्रवाकः.

कीरकुररकुंजरसारंगहिं लावयपारावयहिं तुरंगहिं ।
कुक्कुडमक्कडमहिसमरालहिं मेसवसहखरकरहसियालहिं ।
सेढौसरढतरच्छहिं रिंछहिं मयरमहोरयकच्छवमच्छहिं ।
तिक्खतिरिक्खदुक्खसंदाणहिं संभवंतु णाणाविहजोणिहिं ।
बलणिम्मंथणु णियलणिबंधणु भारारोहणु णौणाबंधणु ।
छिंदणु भिंदणु ताडणु तासणु उक्कत्तणु सरीरविद्धंसणु ।
खरपाहाणसंघसंघट्टणु लोट्टणु आवट्टणु परिवट्टणु ।
दलणु मलणु मुसुमूरणु जूरणु पीलणु पउलणु दारणु मारणु ।
छुँहतिण्हाकिलेससंतावणु भारारूढदेसपुरगौंमणु ।
एव दुक्खलक्खाइं सहेप्पिणु जीउ तिरियगइ कह व मुएप्पिणु ।

घत्ता—णियकम्मवसायउ होइ चिलायउ पारसु बव्वरु सिंहलु ॥
हुणचीणणिवासउ अंमणुयभासउ णउ पावइ अज्जवकुलु ॥ ६ ॥

7

खंडयं—मेच्छो ण कुणइ णियहियं करइ दुलंघं दुक्कियं ।
विहुरावत्तरउद्दए णिवडइ णरयसमुद्दए ॥ १ ॥

जइ वि लहइ अवियलु पविमलु कुलु हियइच्छियउ किं पि संपयफलु ।
समदमसमसंजमसंजुत्तहं तो वि ण लहइ संगु गुणवंतहं ।
कुगुरुकुदेवकुमग्गे मुज्झइ जिणवरवयणु कया वि ण बुज्झइ ।
जडविडकहियहु मयवहधम्महु लग्गइ काइं मि कुच्छियकम्महु ।
लुद्ध मुद्ध चंडिइ मंडिवि मिसु पियइ मज्जु कवलइ सरसामिसु ।

6. १ M लायय°. २ B कुकुड°. ३ MBP सेहा°. ४ MP °रिच्छहिं. ५ MBP णासाविंधणु. ६ MBP छुहतण्हा°. ७ M °गावणु. ८ MBP सिंघलु. ९ MBP अमुणियभासउ, but gloss in P नरभाषारहितः.

7. १ MBP मुणइ. २ B णरइ समुद्दए. ३ P °कुसम्में. ४ MBP °कम्महु. ५ MBP °धम्महु.

10 *b* उक्कत्तणु उत्कर्तनम्. 12 *a* मुसुमूरणु पिण्डीकरणम्. 15 ° वसायउ अधीनः. 16 अमणुयभासउ नरभाषारहितः; अज्जवकुलु आर्यकुलम्.

7. 1 *a* मेच्छो म्लेच्छः. 2 *a* विहुरावत्त° दुःखावर्तः. 3 *a* अवियलु बन्धुजनादिपरिपूर्णम्. 6 *a* मयवह° मृगवधः. 7 *a* चंडिइ मंडिवि मिसु चण्डिकामिषं कृत्वा.

पसुबलि देंतहं ण खमइ वइवसु मारउ मरिवि होइ पुणरवि पसु ।
चिरसंतहं सिरकमलु लुंणिज्जइ सो वि तहिं जि अण्णें मारिज्जइ ।
पुव्वणिबद्धउ अग्गइ धावइ जो जं करइ सो जि तं पावइ ।

घत्ता—पसु फाडिवि खज्जइ वारुणि पिज्जइ सग्गु मोक्खु पाविज्जइ ॥
जइ एण जि कम्में ता किं धम्में पारद्धिउ सेविज्जइ ॥ ७ ॥

8

संडयं—हुयवहहुणिया सग्गयं जंति परावरमग्गयं ।
जाया देवा जइ अया परिसया दियवरणया ॥ १ ॥

वेयकहियमंतहिं आयामइ तो अप्पाणउ कांस ण होमइ ।
सोत्तिउ सग्गसोक्खु किं णेच्छइ किं कुसरीरें बद्धउ अच्छइ ।
णियडिभइ मुइ धाहहि कंदइ छायैलु छावउ छम्मिउ छिंदइ ।
ताडिज्जइ संरुज्झइ बज्झइ वच्छु णिरोहिवि अण्णें दुंज्झइ ।
खाइ पुरीसु विबुद्धि वराई दुरियहलेण सुरहि संभूई ।
लोयहु देवि भणिवि वक्खाणइ धुत्तु अधुत्तहं वंचहुं जाणइ ।
गाइ चउप्पय तणयरि जेही सूयरि हरिणि वि रोहिणि तेही ।
हा हा बंभणेण माराविय रायहु रायवित्ति दरिसाविय ।
पियरपक्खु पक्खु णिरिक्खइ मंसखंडु दियपंडिय भक्खइ ।
धोयंतउ दुद्धें पक्खालउ होइ कहिं मि इंगालु ण धवलउ ।
एहु देहु किं सलिलें धुप्पइ हिंसारंभें डंभें लिप्पइ ।

९ MBT विलुज्जइ.

8. १ P हुयवहु. २ M सग्गभोग्गु, B सग्गजोग्गु; P सग्गभोगु. ३ MBP छायलछावउ. ४ MB दुब्भइ. ५ MBP अधुत्तहं वचइ. ६ MBP हरिणी रोहिणि. ७ MBP दिउ पंडिउ. ८ MBP हिंसारंभि डंभि तो लिप्पइ.

---

8 *a* वइवसु यमः. 11 वारुणि मद्यम्.

8. 1 *a* हुयवहहुणिया अग्नौ होमिताः; *b* परावर° मोक्षः. 2 *a* अया अजाः; *b* दियवरणया द्विजानामभिप्रायाः. 3 *a* आयामइ मुखमध्ये वस्त्रादिकं मुक्त्वा प्राणादिरोधं करोति. 5 *b* छम्मिउ वत्सकः. 7 *a* विबुद्धि विगतबुद्धिः, *b* सुरहि गौः 9 *a* चउप्पय चतुष्पदीः तणयरि तृणचरी. 11 *a* पियरपक्ख पितृपक्षः श्राद्धादिकम्, *b* दियपंडिय द्विजपण्डितः.

अण्णण्णें रंगें रंगिज्जइ परमागमरसेण णउ भिज्जइ।
मूढु जिणिंदसेव कहिं पावइ सवणु गहणु धरणु वि ण विहोवइ।

घत्ता—मायारउ मण्णइ मुणि अवगण्णइ जीवहिंस पडिवज्जइ॥
माणुसु वि हवेप्पिणु पाउ करेप्पिणु पुणु संसारि णिमज्जइ॥ ८॥

9

खंडयं—ईसिं णिउंचिय जोव्वणं कामकोहलवभावणं।
काउं सेवइ जो वणं सो पावइ तं भावणं॥ १॥

अवरु वि जायउ उववणठाणइ जोइसकप्पणिवासविमाणइ।
वाहणु वेयालिउ छत्तियधरु वाइत्तयवायउ सब्भेयरु।
णच्चणु गायणु सुद्दसुहदावउ अण्णु वि होइ असम्मयभावउ।
णवर मरंतु संतु उव्विज्जइ वेवइ चलइ घुलइ परिखिज्जइ।
हा कप्पद्दुम हा माणससर हा णीहारहारसंणिहघर।
हा अच्छरउलमणसंमोहण हा परियणपडिवक्खणिरोहण।
हयवलिपलियरोयसयसंचय हा हा दिव्वदेह हा णववय।
हालंकारसार सहसंभव हा गंधार महुर वीणारव।
हा देवंगवत्थ णिच्चुज्जल हा मंदारदाम चल सभसल।

घत्ता—सम्मत्तविमुक्कहु जिणपयचुक्कहु अवसें हियउ ण सुज्झइ॥
सग्गग्गु मुयंतहु पलयहु जंतहु कासु सरीरु ण डज्झइ॥ ९॥

१ M विभावइ.

9. १ MT इसी and gloss मुनिर्भूत्वा, P इसि. २ MP सुदूसहदावउ. ३ MBP बलइ. ४ MBP हा वलि°. ५ MBP °सचुय but gloss in P देह. ६ सोलंकार°. ७ MB कासु ण हियवउ; P कासु वि हियउ ण.

15 *b* विहावइ विभावयति प्राप्नोति. 16 मायारउ मातृरतं विप्रं संमानयति.

9. 1 *a* ईसि ईषत्; णिउंचिय सवृतं कृत्वा. 2 *b* भावणं भवनवासिदेवत्वम्. 4 *a* उववणठाणइ व्यन्तरदेवस्थाने. 4 *b* सब्भेयरु भण्डो भवति सभ्यादितरः. 6 *a* उव्विज्जइ चिन्ता करोति. 9 *a* °संचय देह. 10 *b* गंधार गीतम्.

10

खंडयं—सुललियमइलियचेलयं अइओहुल्लियमालयं।
भोयविरोयणिबंधयं जायं मह खयचिंधयं ॥ १ ॥

सयलजिणाहिसेयधुयमंदर धूवधूमधूवियगिरिकंदर।
हा हे कुलिसपाणि जगसुंदर पइं मि ण रक्खिउ देव पुरंदर।
हा मइं माणुसेण होएवउ किमिमलभरियइ गब्भि वसेवउ।
सोणिविणिग्गमि दुक्खु णिएवउ णारिउरोरुहंछीरु पिएवउ।
हा हा देवलोय कहिं पेच्छमि कुहियकलेवरि वासु ण इच्छमि।
जाउ मसाणहु तं मणुयत्तणु वरं वणि होसमि चंदणु वंदणु।
अट्टरउद्दभावसंचोइय मिच्छादिट्ठि सुदिट्ठिविओइय।
हा हा हा भणंतु उब्भियकर एम मरंत होन्ति सुर तरुवर।

घत्ता—जिणधम्मपरंमुहु दुण्णयसंमुहु खयकाले अच्छोडिउ ॥
बहुविहमयमत्तें इय मिच्छत्तें को भवगहणि ण पाडिउ ॥ १० ॥

11

खंडयं—तिप्पयारसंठाणयं चोद्दहरज्जुपमाणयं।
जीवाजीवसुसंकुलं विस्सं णिच्चं णिच्चलं ॥ १ ॥

थिउ आयासि अणंताणंतइ केवलणाणविलोयणखेत्तइ।
गाढु गाढु छहिं दव्वहिं भरियउ केण वि कियउ ण केण वि धरियउ।
पुग्गलजीवभावकयभेयहिं कालवसेण जाइ पज्जायहिं।

10. १ MBP °विराय°. २ B °भरियगब्भि. MK °खीरु. ४ MBP किं. ५ MBP वरि. ६ MBP °संचोइउ. ७ MBP °विओइउ. ८ MBP °करु. ९ M एम मरेवि होइ सुरु तरुवरु; BP एम मरेवि होइ सुरतरुवरु; १० MBP इह.

11. १ MP चउदह°. २ P adds after this line: अच्छइ सयलु वि जीवहं भरियउ घियघडउलउ जिम तिम धरियउ.

10. 1 *b* अइओहुल्लिय° आनिम्लान°. 2 *a* °णिबंधयं कारणम्; *b* मह मम; खयचिंधयं क्षयचिह्नं मरणचिह्नम. 7 *b* कुहिय कुथित°. 8 *b* वंदणु वृक्षविशेषः; पिप्पल इत्यन्ये. 10 *b* होंति सुर तरुवर देवा वृक्षा भवन्ति. 11 अच्छोडिउ कवलितः. 12 °मयमत्तें जात्यादिमदमत्तेन.

11. 1 *a* तिप्पयार° शरावाद्याकृतिर्माल्लोकः. २ *b* विस्सं विश्वं जगत्.

पहिलउ दाणवणरयणिवासउ पल्हत्थियसरावसंकासउ ।
बीयउ मणुयतिरिक्खणिहेलणु वज्जोवमु पयत्थपरिघोलणु ।
कप्पाकप्पदेवणेवच्छउ तइयउ जगु मुइंगसारिच्छउ ।
मोक्खु वि आयवत्तसंणिहयरु जो तं पत्तउ सो अजरामरु ।
परमाणुयपरमाणु ण पेक्खमि संसारियहु सोक्खु किं अक्खमि ।

घत्ता—चउगइहि मरंतें पुणु पुणु होंतें विहसिवि देवें वुत्तउ ॥
सुहदुक्खणिरंतरि तिजगब्भंतरि जीवें काइं ण भुत्तउ ॥ ११ ॥

12

खंडयं—सारमेयवुड्ढिंगयं सारमेयसिवजोग्गयं ।
एसो कम्मकले वरं भणइ तहं वि कलेवरं ॥ १ ॥

अट्ठिलट्ठिकुड्डयलणिउत्तउ दीहरणाउणिबंधणवंतउ ।
पासुलियातुलाहिं घणघडियउ संधिहि संधिहि खीलयजडियउ ।
पट्ठिवंसखंभुण्णयमाणउ जंघाजुयलु समोड्डियथूणउ ।
मेज्जमंसचिक्खिल्लविलित्तउ णवदुवारु लोहियसंसित्तउ ।
सेयसुक्कमत्थिकदुगंधउ छिरतुंदाहिजालसंरुद्धउ ।
वोक्कयंतकिमिउलमलपोट्टलु वियलियरसवसवीसद्दु विट्टलु ।
अब्भंतरि किर केण पलोइउ बाहिरि चम्मपडलपच्छाइउ ।
णिच्चमुत्तलालाजलथिप्पिरु रोइ पूइ अब्रुउ संताविरु ।

३ M भवंतें; BP भमंतें.

12. १ MBP सारमेयवुड्ढीगयं. २ P तह व. ३ MBP णिबंधणवत्तउ. ४ MB पंसिलिया°, P पंसुलिया°. ५ MBP खीलिहिं. ६ BP समोडेय°. ७ P मज्ज° ८ MBP °दुवार°. ९ B °मंथिक्क°. १० P थिर°; K छिर° but corrects it to थिर°. ११ MBP °वीउजि and gloss in P बीभत्सं अपवित्रम्.

7 *b* पयत्थपरिघोलणु पदार्थानां जीवानां वा परिघोलनं प्रवृत्तिर्यस्मिन्. 8 *a* °णेवच्छउ मण्डनम्. 10 *a* परमाणुयेत्यादि– परमाणुमात्रमपि संसारिणां सुखं न.

12. 1 *a* सारमेयवुड्ढिंगय प्रचुरमेदसा वृद्धिं गतम्; *b* सारमेयसिवजोग्गयं श्वानशिवादियोग्यम्. 2 *a* एसो जीवः; कम्मकले संसारे; *b* कलेवरं शरीरम्. 3 *a* °कुड्डयल कुड्यतल°; *b* °णाउ स्नायु°. 4 *a* पासुलिया° पार्श्वास्थिसंघातः. 5 *b* समोड्डियथूणउ भग्नस्तम्भवत्. 7 *b* छिरतुंदाहिजाल° शिरा एव गण्डूपदास्तेषां समूहैर्भृतम्. 8 *b* °वीसद्दु बीभत्समपवित्रम्. 10 *b* रोइ सरोगम्.

सेंभपित्तमारुयदोसायरु भूयगामदेहिहि देहु जि घरु ।
[१२]रमणीरमणरायरहसुच्छवु असुइ जि भक्खइ असुइसमुब्भवु ।

घत्ता—करिमयरहिं माणिइ गंगावाणिइ ण्हाणिउ ण्हाणिउ मुज्झइ ॥
मयकामें कोहें मायामोहें मइलिउ देहु ण सुज्झइ ॥ १२ ॥

13

खंडयं—दुविहतवम्मि सुलीणयं जइ करेह अप्पाणयं ।
असुइमिणं मणुयत्तयं ता हो होइ पवित्तयं ॥ १ ॥

पंचिंदियसुहि मणु चोयंतहु तहु आसवइ कम्मु अतवंतहु ।
[१]णाणावरणिउ पंचपयारउ दाँवियपडपंगुरणवियारउ ।
णवविहदं[२]सणु गुणविणिवारउ तं णिज्जियणिसिद्धिपडिहारउ ।
दुविहु जि वेयणीउ गयसयणु व अमहु समहु असिधारालिहणु व ।
मोहणीउ मइरा इव मोहइ अट्ठावीस[३]भेउ जिणु ईहइ ।
चउविहु चउगइगामिहिं ढुकइ आउसु हडि व णिरुंभिवि थक्कइ ।
दोचालीसणामु णामंकउ चित्तवण्णपरिणामासंकउ ।
दोविहु मइलसमुज्जललीलउ गोत्तु कुलालभाणभावालउ ।
अंतराउ चउपक्कविहायउ लग्गइ कारिहिं वारियदायउ ।
पयडिट्ठिदिअणु[४]भागपएसहिं वज्झइ चप्पिवि बंधवि[५]सेसहिं ।

१२ M रमणीरमणु रायरहसुब्भउ B °रहसुच्छउ P °रहसुब्भउ but gloss उत्सव .
13. १ MBP णाणावरणउ. २ T दंसिय°. ३ MBP °भेय. ४ M ° अणुभाय°. ५ M बंधवसेसहिं.

---

11 *b* भूयगाम° पृथ्वीप्रमुखचतुर्विधभूतसमूह एव देहो विद्यते यस्य. 12 *a* °उच्छवु आनन्दः. 13 गंगावाणिइ गङ्गाजले

13. 2 *a* मणुयत्तय मनुजत्वम. *b* हो हे नरा 4 *b* दाविये त्यादि- दर्शित. पटप्रावरण इव विकारो येन; यथैव पटेन प्रच्छादनेन सत्यात्मनोऽर्थापरिज्ञानलक्षणो विकारो भवति तथा ज्ञानावरणे प्रच्छादने. 5 *b* णिज्जिये-त्यादि- निर्जितनिषेधकरप्रतिहारसदृशम्. 6 *a* गयसयणु व रोगयुक्तस्य शयनीयमिव. 8 *b* आउसु आयुष्कर्म; हडि व खोटक इव. 9 *b* चित्ते त्यादि-चित्रवर्णपरिणतिविज्ञानारूपतया शङ्क्यते. 10 *a* मइलसमुज्जललीलउ मलिनं समुज्ज्वलं चेति द्विप्रकारम. *b* कुलालभाणभावालउ कुलालस्य कुम्भकारस्य भाणानां भाजनानां भावोऽल्पमहत्त्वादिपरिणामः, तस्य आलउ आश्रय . 11 *a* चउपक्कविहायउ पञ्चभेदम, *b* कारिहि कारकस्य; वारियदायउ निवारितदातव्य दुष्टभाण्डागारिवत् 12 *b* चप्पिवि हठात्.

घत्ता—गुणवंतु अणाइउ सुहुमु विवेइउ तिगइ दुअंगणिबद्धउ ॥
जिउ कत्तउ भोत्तउ भवतणुमेत्तउ उड्ढगामि संसिद्धउ ॥ १३ ॥

14

खंडयं—एंतहु पावहु णिब्भरं जे विरयंति ण संवरं ॥
ताणं दुक्खदवक्कडी पडिही सीसे णं तडी ॥ १ ॥

रुज्झइ चित्तु झाणवित्थारें फासविलासु धरणिसंथारें ।
रसु पसुपिंडग्गहणायारें दिट्ठि ण घेप्पइ कहिं मि वियारें ।
सवणु सुसरि दुसरेसु वि सरिसउ कीरइ पयलियरइआमरिसउ ।
णासारंधु गंधअविहत्तिइ मणवयकायदुरीह तिगुत्तिइ ।
दुरियहु सुयरिउ रक्खणु दिज्जइ रोसु खमाइ होंतु णियमिज्जइ ।
अविणयगारउ माणु मउत्तें मायाभाउ समुज्जुयचित्तें ।
लोहु सुपत्तदाणपविहाएं अहवा सव्वसंगपरिचाएं ।
मयविब्भमु परगुणसंभरणें जिप्पइ हरिसु होंतु सुथिरमणें ।
देप्पु वि घोरवीरतवचरणें राउ रसियरामापरिहरणें ।

घत्ता—पिहियासवदारहु जुत्तायारहु अहिणउं कम्मु ण पइसइ ॥
जं चिरु जीवासिउ तं पि अपोसिउ कायकिलेसें णासइ ॥ १४ ॥

15

खंडयं—मणमेत्ते वावारए एसो कीस ण कीरए ।
सासयसुहओ संवरो होहं होमि दियंबरो ॥ १ ॥

६ MBP उद्धगामि.

14. १ P ए तहु and gloss ए आगमे प्रसिद्धः, तहु पावहु तस्य पापस्य. २ P °दुवक्कडी. ३ MBP °विलासु. ४ MB रसवसु, P रस पसु°. ५ MBP गंधु अ°. ६ MBP एंनु. ७ M समुज्जल°. ८ P मइविब्भमु. ९ B omits this foot. १० MBP रसिउ रामा°.

15. १ मणमेत्तए.

---

13 दुअंगणिबद्धउ तैजसकार्मणशरीरबद्धः. 14 भवतणुमेत्तउ यद्भवे यच्छरीरं गृहीत तन्मात्रः.

14. 1 *a* एंतहु आगच्छतः, 2 *a* °दवक्कडी असह्याशनिपातः; *b* तडी विद्युत्. 4 *a* रसु जिह्वा; पसुपिंडग्गहणायारें पशुवत्पिण्डग्रहणेन मुन्याचारेण. 5 *b* पयलियरइआमरिसउ नष्टरागद्वेषम्. 6 *a* गंधअविहत्तिइ सुरभिरसुरभिरिति गन्धाविभागाकरणेन; *b* °दुरीह दुष्टेच्छा. 9 *a* °दाणपविहाएं अतिथिसंविभागेन. 10 *a* मय° मदः. 13 अपोसिउ अपुष्टम्.

15. 1 *a* मणमेत्ते मनोमात्रे. 2 *a* °सुहओ सुखदः.

पुणु परमेसरु सव्वउ सुयइ काले अहव उवाएं पिच्चइ ।
जिह धरणीरुहहलु तिह दुक्किउ कामाकामियणिज्जरतक्किउ ।
तणयराहं सुसहावें सोम्महं बंधणदारणमारणगम्महं ।
दूसहदुक्खभावभयभरियहं होइ अकामें णिज्जर तिरियहं ।
विरइज्जइ वेरग्गपहाणहिं कामें णिज्जर रिसिसंताणहिं ।
सिसिरायासणिवासायरणहिं रुक्खमूलअत्तावणकरणहिं ।
थियपलियंकधित्तमहिदंडहिं गोदुहआसणेहिं गयसोंडहिं ।
पक्खमासवरिसंतुववासहिं देज्जविसिसंखाविण्णासहिं ।

घत्ता—ढोइयणीसासहि मुणितणुमूसहि खरतवजलणें तत्तउ ॥
जीविउ हेमुज्जलु थक्कइ केवलु वहुकम्ममलें चत्तउ ॥ १५ ॥

16

खंडयं—कुवहे जंतं रुंभए णाणंकुसिण णिसुंभए ।
वयपायवणिलूरणं साहू णियमणवारणं ॥ १ ॥

एक्कगासदोगासाहारहिं विविहावग्गहरसपरिहारहिं ।
दीहमंसुलोमहिं मलधरणहिं आयंबिलचंदायणचरणहिं ।
वोसट्टंगमुक्करइरंगहिं वज्जियघरपुरदेसपसंगहिं ।
सुण्णावासमसाणागारहिं हयणेहहिं अणियत्तिविहारहिं ।
दंसमसयछुहतण्हासोसहिं खलकयकण्णकडुयआकोसहिं ।
वायवद्दलुकंपियकायहिं सीउण्हहिं परपहरणिहायहिं ।

२ P पच्चइ. ३ MBP ससहावें. ४ BP सोमहं. ५ MBP °पहाणहं. ६ M सिरिसंताणह; BP रिसिसंताणहं. ७ MBP °वरिसद्धुव°. ८ MB वेज्ज°. ९ कम्ममलें परि°.

16. १MBP कुपहे. २ P एक्कग्गासदुगासा°. ३ M अणियट्टि°.

3 *b* पिच्चइ पक्वं भवति. 4 *b* कामाकामियेत्यादि– कामो बुद्धिपूर्वको व्यापारस्तदभावोऽकामस्तौ विद्येते यस्याः सा तथाविधा निर्जरा तर्किता कलिता येन तादृशम्. 7 *b* रिसिसताणहिं मुनिप्रवाहैः. 10 *b* देज्जे ति- देयाहारस्य वृत्तिः सङ्ख्या तस्या विन्यासा विरचनास्ताभिः. 11 मुणितणुमूसहि मुनिशरीरमेव मूषा तस्याम्. 12 जीविउ इत्यादि– जीवस्वरूप तदेव हेम सुवर्ण उज्ज्वलं निर्मलम्; सुवर्णं हि किट्टकालिकालक्षणमलरहितत्वादुज्ज्वलम्; जीवस्वरूपं तु द्रव्यभावकर्मलक्षणमलराहितत्वादिति.

16. 1 *b* णिसुभए वश्यं करोति. 2 *a* °णिलूरणं °निर्मूलनम्. 5 *a* वोसट्टग° विसृष्टाङ्ग° कायोत्सर्गः. 6 *b* अणियत्तिविहारहिं अनियतविहारैः. 8 *b* परपहरणिहायहिं परप्रहारनिर्घातैः.

केसालुंचणणिब्बेलत्तहिं कंचणतणसुहिरिउसमचित्तहिं ।
विसमपरीसहसहणब्भासहिं रोयातंकहिं कासहिं सासहिं ।
जम्मणमरणणिबंधुद्धाइउ एम खविज्जइ कम्मु पुराइउ ।

घत्ता—जिह हयणिज्झरणें बद्धें वरणें रविकरेहिं सरु सोसइ ॥
तिह णियमियकरणें रिसितवचरणें भवकिउ कम्मु पणासइ ॥ १६ ॥

17

खंडयं—इय काऊण णिज्जरं जे हणंति भवपंजरं ।
णीरोयं अजरामरं ते लहंति सोक्खं वरं ॥ १ ॥

जेण मोक्खफलु तं पाविज्जइ सो धम्मंघिउ पहउ गिज्जइ ।
खेमखमायलंतुग्गयदेहउ महवपल्लउ अज्जवसाहउ ।
सच्चसउच्चमूलु संजमदलु दुविहमहातवणवकुसुमाउलु ।
चउविहचायपसारियपरिमलु पीणियभव्वलोयछप्पयउलु ।
दियसंदोहसद्दकयकलयलु सुरवरणरखेयरसुहलयफलु ।
दीणाणाहदीहसमणिग्गहु सुद्धु सोम्मु तणुमेत्तपरिग्गहु ।
बंभचेरछायाइ सुहासिउ रायहंसणियरेहिं समासिउ ।
पहउ धम्मरुक्खु लक्खिज्जइ जीवदयावइइ रक्खिज्जइ ।
झाणु ठाणु भल्लारउ किज्जइ मिच्छामयहुं पवेसु ण दिज्जइ ।
सीलसलिलधारइ सिंचिज्जइ एम पयत्तें वड्ढारिज्जइ ।

४ MBP° तिण°. ५ MB णिबंधे आइउ; P °णिबंधइ आइउ. ६ K हर° and gloss हत°.

17. १ BPK परं. २ M खमखमायलतग्गयदेहउ, B खमखमायलु तुंगयदेहउ; P खमखमायलु-तुग्गयदेहउ. ३ MBP सुरणरवर°. ४ MBP सोमु. ५ MP झाणठाणु; B झाणट्ठाणु. ६ B पवत्ते. ७ M पढारिज्जइ, B वड्ढाविज्जइ.

---

11 *a* णिबंधुद्धाइउ जन्ममरणप्रबन्धकरणे उद्धाइउ प्रवृत्तम्. 12 हयणिज्झरणें हतनिर्झरणेनः वरणें पालिबन्धनेन.

17. 1 *b* भवपंजरं संसार एव बन्दिगृहं संसारसंघातश्च. 3 *b* धम्मंघिउ धर्मवृक्षः, गिज्जइ प्रतिपाद्यते. 4 *a* खमखमायलंतुग्गयदेहउ क्षमैव क्षमातलं पृथ्वीतलं तदन्तान्मध्यादुद्गतः प्रादुर्भूतो देहो यस्य. 6 *a* चउविहचाय° अणुव्रतं महाव्रतं श्रुतदानमभयदानं च. 7 *a* दियसंदोह° मुनिसमूहः पक्षिसंघातश्च. 8 *a* °दीहसम° दीर्घश्रमः. 9 *a* सुहासिउ सुष्ठु शोभितः. 11 झाणु ठाणु ध्यानमेव स्थाणुम्; *b* मिच्छामयहुं मिथ्यात्वमृगाणाम्.

घत्ता—कोवाणलचुक्कउ होइ गुरुक्कउ जाइं रिसिंदहिं सिट्ठइं ॥
जगि ताइं सुहंकरु धम्ममहातरु देइ फलाइं सुमिट्ठइं ॥ १७ ॥

18

खंडयं—जहिं होहिम्मि भवे भवे तहिं देहम्मि णवे णवे ।
दुक्खलक्खणिण्णासणे होउ भत्ति जिणासासणे ॥ १ ॥

अवरु णिरंतरु उज्झियगव्वें इयँ मग्गेवउ मणुएं भव्वें ।
चित्तु धुत्तसिद्धंतपरंमुहुं भवि भवि होउ जिणागमि संमुहुं ।
पंचिंदियपडिभडबलु भज्जउ भवि भवि विमलबुद्धि उप्पज्जउ ।
विसयकसायरायपरिचत्तउ भवि भवि होउ तिगुत्तिपँउत्तउ ।
आसापासणिबंधणु तुट्टउ भवि भवि मोहजालु ओहट्टउ ।
संजयसाहुँसंगसोहियमलि भवि भवि होँउ जम्मु सावयकुलि ।
रँयमूढह संबोहणगारा भवि भवि रिसि गुरु होंतु भडारा ।
दीणि करुण उप्पेक्ख दयंतइ भवि भवि रइ वड्ढउ गुणवंतइ ।
वयजोग्गउ सरीरु संपज्जउ भवि भवि तवसिहितावें झिज्जउ ।
धणु परियणु पुरु घरु मा ढुक्कउ भवि भवि उरि उवसमासिरि थक्कउ ।
ण रमउ णारिरूवि हियउल्लउ भवि भवि हँवउ णिरड्डु णीसल्लउ ।
ओसारियदहपंचपमाएं भवि भवि दियह जंतु सज्झाएं ।
दंसणणाणचरित्तपयासें भवि भवि मरँणु होउ संणासें ।

घत्ता—लद्धाइ समाहिइ भवि भवि बोहिइ जीवउ जीउ विरत्तउ ॥
संसारुत्तरणइं जिणवरचरणइं भवि भवि मणि सुमरंतउ ॥ १८ ॥

18. १ MBP होहम्मि. २ B होइ. ३ P इउ. ४ MBP °पयत्तउ. ५ B °साहुसंगि. ६ MBP जम्मु होउ. ७ MBP रइमूढहु, T रयमूढहो. ८ MBP उप्पज्जउ. ९ M थक्किउ. १० MBP होउ. ११ MK मरण.

18. 8 *a* संजयेत्यादि–संयनाश्च ते साधवश्च तैः संग संमर्गस्तेन शोधितः स्फेटितो मल पापं यस्मिन्. 9 *a* रयमूढह ज्ञानावरणादिरजःप्रच्छादितत्वेन विवेकशून्यस्य. 10 *a* दयतइ दयाशून्ये. 11 *b* तवसिहितावें तप एवाग्निस्तस्य तापेन. 13 *b* णिरड्डु निष्पाप निर्वाञ्छं वा. 16 समाहिइ रत्नत्रयैकाग्रतायाम्; बोहिइ रत्नत्रयप्राप्तौ.

19

खंडयं—इय जो चिंतइ णियमणे अणुवेक्खाओ थिउ वणे ।
मोत्तूणं भवसंपयं सो पावइ परमं पयं ॥ १ ॥

महु पुणु सरणउं सिद्ध भडारा दढकिम्मीरकम्मविणिवारा ।
अक्खसोक्खपक्खे णिरु णिच्छिहं भवसिप्पीरभारहुयवहसिह ।
इय चिंतंति वहंति समत्तणु पउणंती रइभूमिणियत्तणु ।
सक्के जिणमइ जाणिय जावहिं लोयंतिय संपाइय तावहिं ।
बंभसग्गलोयंतकयालय देहकंतिदीवियदिप्पालय ।
पुव्वजम्मिकयधम्मपहावण अणुदिणु संभाविय सुहभावण ।
घल्लियकुसुमंजलिकेसररय- रयमहुयरउलसवलियपहुपय ।
ते भणंति भावें मउलियकर जय देवाहिदेव परमेसर ।
पइं ण मुणिउं जं तं किर केहउ किं गिरि किं परमाणुउ जेहउ ।
सुसिरु अणंतु तिलोयणिवासउ किं आयासु अलक्खपएसउ ।
जीउ कम्मु पोग्गलविवित्थिण्णउ भणु तुह णाणें काइं ण भिण्णउ ।
तुहुं सइंभु संसमाहिविसुद्धउ चारु चारु जं सइं पडिबुद्धउ ।
इंदियपाणासंजमु छंडिवि अप्पउ सीलगुणोहें मंडिवि ।

घत्ता—उप्पाइवि केवलु अवियलु गयमलु तच्चु सुमच्छउ अक्खहि ॥
पायालि पडंतउ पलयहु जंतउ भुवणु भडारा रक्खहि ॥ १९ ॥

19. १ B परमप्पयं. २ P दिढ°. ३ MBP °पक्खइ. ४ M णिप्पिह. ५ MBPT चित्तंति, gloss in MT हृदयमध्ये, but in P चिन्तयनि सति. ६ B संपावियभाविहिं; P संपाइय ताविहिं. ७ MBP °दिव्वालय and gloss in MT दीप्तविमानाः, but T दिप्पालय दशादिक्पालाः. ८ P °केसरिरय°. ९ MBP परिमाणुउ. १० BP पोग्गलु. ११ MBP सयंभु. १२ MBP सुसमाहि°.

19. 3 *b* °किम्मीर° विचित्रम्. 4 *a* अक्खसोक्खपक्खे इन्द्रियजनितसौख्यवर्गे; णिच्छिह निःस्पृहाः; *b* °सिप्पीरभार° पलालसंघातः. 5 *a* चिंतंति चिन्तयति सति; *b* पउणती प्रकुर्वती, रइभूमिणियत्तणु रतेर्भूमेश्च निवर्तनम्. 9 *a b* केसररये त्यादि–केसररजासि मकरन्दे रतानि यानि मधुकरकुलानि तैः कृत्वा शबलितानि प्रभुपदानि यैर्लोकान्तिकैर्देवैः. 12 *a* सुसिरु अलोकाकाशम्, *b* आयासु लोकाकाशम्.

20

खंडयं—तुह वयणंसुपसाहिए जगकमले संबोहिए ।
कुसमयखलखज्जोयया होंति देव हयतेयया ॥ १ ॥

मोहजलणजालावलि णिरसहि धम्मामयअंबुहर पवरिसहि ।
पाववज्जलेवंतणिहित्तइं जरकसरा इव कद्दवि खुत्तइं ।
उत्तारहि परमप्पय भूयइं रंगणडा इव णाणारूवइं ।
एम भणेप्पिणु गय लोयंतिय देवें परहियबुद्धि विचिंतिय ।
तहिं अवसरि बुहयणिहिं समत्थिउ भरहु महीसरेण अब्भत्थिउ ।
पुत्त पुत्त लइ पालहि वसुमइ मइं पुणु साहेवी पंचम गइ ।
तं णिसुणेवि कुमारें वुत्तउं देव देव किं भणहि अजुत्तउं ।
जं तुहुँ भुत्तुज्झियआहारें तं ण सोक्खु भोयणवित्थारें ।
जं तुह णियडासणइ णिविट्ठहु तं ण सोक्खु हरिवीढि वइट्ठहु ।
जं महु तुह अग्गइ धावंतहु तं ण सोक्खु गयखंधहिं जंतहु ।
जं पायडियउ तुह पयछाहिइ तं ण सोक्खु महु छत्तहु छाँहिइ ।
मंतिमहासेणावइपुज्जें पइं रहिएण ताय किं रज्जें ।

घत्ता—जंपियउ जिणेसें णाउ विसेसें जइ पहुपयहि ण जुंजइ ।
तो लोउ रउद्दें जुज्झवि मद्दें मच्छें मच्छु व खज्जइ ॥ २० ॥

21

खंडयं—कुरु कुरु धरणीपालणं णायाणायणिहालणं ।
धरि धरि महिवइसासणं एयं चिय मह पेसणं ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि णिरुत्तरु जायउ थिउ तणुरुहु संभूयविसायउ ।

20. १ MBP धम्ममहामयजलहर वरिसहि. २ MBP °वज्जलेवत्त°. ३ MBP कद्दमि, ४ MBP भणिउं. ५ B तुह भुत्तु उज्झिय° ६ P पयछाए ७ P छाएं. ८ K जुंजइ.

20. 1 *a* वयणंसु° वचनकिरणै. 2 *a* कुसमयखलखज्जोयया मिथ्यामतदुर्जनखद्योतकाः. 4 *a* पाववज्जलेव° पापमेव वज्रलेप., *b* जरकसरा जीर्णवलीवर्दाः, कद्दवि कर्दमे. 11 *b* हरिवीढि सिंहासने. 15 णाउ ज्ञात्वा. 16 मद्दें हठात्.

21. 3 *b* संभूयविसायउ उत्पन्नविषादः.

सोणंदेयहु दिण्णु सुहंकरु   पोयणउरु पविहिण्णवसुंधरु।
अण्णेक्कहुं अण्णण्णइं दिण्णइं   मंडलाइं ढोइयधणधण्णइं।
एत्थंतरि संपेसिय राणा   देवें जे एक्केक्क पहाणा।
छक्खंडावणिपसरियतेयहु   लग्गा रायमहाअहिसेयहु।
णरकरकोणाहयहिं गहीरहिं   वज्जंतहिं चामीयरतूरहिं।
धवलिहिं मंगलेहिं गिज्जंतिहिं   खुज्जयवावणेहिं णच्चंतिहिं।
कामिणिमित्तगत्तरोमंचहिं   होमदाणपारंभपवंचहिं।
ससहरमणिमएहिं णिक्कलुसिहिं   सयलतित्थजलभरियहिं कलसहिं।
जय सुयाहिराय पभणंतहिं   अहिसिंचियउ भरहु सामंतिहिं।
हाससंसंककाससंकासइं   पैरिहाविउ सुहसुब्भइं वासइं।
कण्णहि कुंडलाइं आइद्धइं   चंदाइच्चइं तेयसमिद्धइं।
करि कंकणु गलि हारु विलंबिउ   सिरि सेहरु महुयरमुहचुंबिउ।
कडियलि रयणकिरणविप्फुरियइ   बद्धउ कडिसुत्तउ सहुं छुरियइ।
बंभसुत्तु उरि चारु चडाविउ   तिलएं तइयउ णयणु व दाविउ।
हरिकरिससिसरविरूवणिबद्धइं   उब्भियाइं विमलइं कुलचिंधइं।
परिमुक्कमलइं धवलइं छत्तइं   णं जिणकित्तिभिसिणिसयवत्तइं।
मय मायंग तुरंग सलक्खण   पुज्जिय गह काणीण वियक्खण।

घत्ता—उब्बाइउ आयहिं पइअणुरायहिं आसीवायणिघोसहिं॥
सिरिभरहकुमारहु महिभत्तारहु बद्धउ पट्टु णरेसहिं॥ २१॥

22

खंडयं—सीहासणसिहरासिओ   सोहइ भुअणपसंसिओ।
गिरिकडए धुयकेसरो   केसरि व्व भरहेसरो॥ १॥

21. १ MBP °वावणेहि. २ BMK कामिणिसित्त°. ३ MBP पहिराविउ. ४ MBP °विच्छुरियइ. ५ B पट्टु°.

4 *a* सोणंदेयहु सुनन्दापुत्रस्य बाहुबलेः 5 *b* मंडलाइं देशाः. 8 *a* कोण° वादनकाष्ठम्. 10 *a* °मित्त मित्र°; *b* °पवंचहिं विस्तारैः. 11 *a* णिक्कलुसिहिं निर्मलैः. 16 *b* भिसिणिसयवत्तहिं कमलिनीकमलैः. 21 आयहिं एतैः; पइअणुरायहिं पत्यनुरागैः.

22. 2 *b* केसरि व्व सिंह इव.

दसदिसिवहसंपाइयसुरवरु तहिं अवसरि दीसइ विउलंबरु ।
बहुविमाणभारें णं णवियउ धयवडेहिं णावइ पल्लवियउ ।
आयवत्तु फुल्लहिं णं फुल्लिउ तरुणीथणहलेहिं ओणल्लिउ ।
थियझसहंसचासवाहणगणु णावइ जिणवरपुण्णमहावणु ।
णं तुरयहिं धावंतहिं धावइ संदणेहिं रविभरियउ णावइ ।
कुंजरेहिं णं मेहहिं छइयउ असिवरेहिं णं विज्जुवलइयउ ।
हरियारुणरुइल्लु णं सुरधणु णं अवलंबइ णवपाउसगुणु ।
विहुणिक्खवणपयासणयालइ एम परायउ सुरयणु लीलइ ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ रंजियसहु रिसहणाहु णिण्णाहु महापहु ।

घत्ता—कमलासणु केसवु ससहरु वासवु सिद्धु बुद्धु हरु दिणयरु ॥
चामीयरघडियइ रयणहि जडियइ पट्टि णिसण्णउ जिणवरु ॥ २२ ॥

23

खंडयं—केण वि गहिरं वाइयं केण वि महुरं गाइयं ।
केण वि सरसं णच्चियं पहुपयजुयलं अंचियं ॥ १ ॥

अमरविलासिणिकरसंगहियहिं ण्हविउ देहु घियदुद्धहिं दहियहिं ।
इंदजलणजमणेरियवरुणहिं पवणकुबेरतिसूलुद्धरणहिं ।
णलिणबंधुणाइंदहिं चंदहिं रुंदाणंदहरेहिं णरिंदहिं ।

22. १ B °दिसिवइ°. २ MBP सपाइय. ३ M धयवडेण ४ MBP आयवत्त ५ M तरुणीथणहरेहिं ओहुल्लिउ; B थणहारेहि ओहुल्लिउ, P थणहलेहि सुफलिल्लिउ, but T ओणल्लिउ. ६ B भावइ. ७ P °पावस घणु. ८ M रजियसुहु. ९ MBP केमउ.

23. १ MBP देउ. K देहु but corrects it to देउ. २ M घय°. ३ T तिसूलधरणु. ४ M °भरेहिं.

3 *a* °दिसिवह° दिक्षु मार्गा , *b* विउलवरु विस्तीर्णमम्बरम. 9 *a* °रुइल्लु दीप्तियुक्तम् 11 रजियसहु रञ्जितसभः, *b* णिण्णाहु निर्नाथः, अयमेव सर्वेषां नाथ इत्यर्थः. 12 कमलासणु कमलाया लक्ष्म्या निवासस्थानत्वात्; केसवु हितोपायदर्शकत्वेन जगतां रक्षाहेतुत्वात्, ससहरु संसारदुःखस्फेटकत्वाज्जगत्कुवलयप्रबोधकत्वाच्च; वासवु परमर्द्धिसंपत्तित्वाच्चतुर्निकायदेवस्वामित्वाच्च. सिद्धु कृतकृत्यत्वात्; बुद्धु हेयोपादेयविवेकसम्यक्त्वाच्च; हरु कर्मणां तत्प्रभवसंसारस्य प्रलयविधायकत्वात्; दिणयरु भव्यपद्मप्रबोधकत्वादन्यतमोविध्वंसकत्वाच्च.

23. 4 *b* तिसूलुद्धरणु ईशान.. 5 *a* णलिणबंधु आदित्यः; *b* रुंदाणंद° महानानन्दः.

वयणुग्गीरियथोत्तवमालहिँ णिग्गयखीरवारिधारालहिँ ।
कंचणकुंभसहासहिँ सित्तउ दसंसयट्ठलक्खणसंजुत्तउ ।
सण्हउं तिहुयणसामिहि जोग्गउ किं वण्णिज्जइ अंगि वि लग्गउ ।
ढोइउ णिवसणु पुणु पंगुरणउं तणुतावइ णं णाणावरणउं ।
भूसणाइं दिण्णाइं ण मण्णइ मोहणिबंधणाइं अवगण्णइ ।
संतहु किंह रुच्चंति रसोल्लइं वम्महपहरणाइं फुडु फुल्लइं ।
होउ पहुच्चइ संभावइ जिणु मलविलेवसारिच्छु विलेवणु ।

घत्ता—पज्जलियपईवहुं ससिरविभावहुं धूयंगारयधूमउ ॥
णिग्गंतउ दीसइ सुकइ समासइ णं मलपडलविलेवउ ॥ २३ ॥

24

खंडयं—दहिदूवंकुरचंदणं सियसिद्धत्थयवंदणं ।
वंदिवि मयणवियारओ सिवियारूढु भडारओ ॥ १ ॥

सत्त पयाइं जाम जयवंदहिँ पढमुच्चाइय सिविय णरिंदहिँ ।
तेत्तियइं जि भावेण णवंतहिँ वरविज्जाहरेहिँ विहसंतहिँ ।
उट्ठियदेवमहाकुलकलयलि पुणु वंदारएहिँ णिय णहयलि ।
चल्लिउ अणुमग्गें सियसेविइ णाहिणराहिउ सहुं मरुएविइ ।
आरणालणवदललुलियंगउ जसवइणंदउ पच्छइ लग्गउ ।
दोण्णि वि णावइ मोहणवेल्लिउ णं कामेण विमुक्कउ भल्लिउ ।
पियविच्छोयसोयखिज्जंतउ णयणंजणमलमइलिज्जंतउ ।
वरकंचीकलावगुप्पंतउ तणुपासेयबिंदुथिप्पंतउ ।
तुरिउ चलंतु खलंतु विसंठुलु णीससंतु चलमोक्कलकोंतलु ।
थणथणजुयलणिवेसियकरयलु णिवडमाणअणिहालियमेहलु ।

५ MBP दह°. ६ P विलग्गउ. ७ MBP किं. ८ M °विलेविउ.

24. M दूवंकुरु वदणं; BPK दूवंकुरवदणं. २ M वसंतु व सबुलु; B खलतु व सठुलु. ३ M णिवड-माणु; P णिविडमाणु.

6 *a* °वमाल° कोलाहल . 13 ससिरविभावहुं शशिरवीणां भां दीप्तिमावहन्ति अनुकुर्वन्ति ये तेषाम्.

24. 1 *a* °चंदण रक्तचन्दनम्. 7 *a* आरणाल° कमलम्. 9 *a* विच्छोय° वियोगः. 11 *a* विसठुलु शिथिलम्.

पयचालणझंकारियणेउरु धाइउ णिरवसेसु अंतेउरु ।
एक्कवार णिउ णिब्भरभावहिं मंदरि ण्हाणिवि आणिउ देवहिं ।
पुणु तेण जि कमेण आवेसइ णॅरवइ एत्थु जि पुरि णिवसेसइ ।

घत्ता—पउरयणें वुत्तउ मुणिउ णिरुत्तउ एवहिं दुक्करु आवइ ॥
जॅडमइलकुचेली धरणिमहेली णाहें विणु किह जीवइ ॥ २४ ॥

25

खंडयं—भरहबाहुबलिसंणिहं गलियंसुयधारामुहं ।
चालियं चोइयहयगयं एक्कूणं णंदणसयं ॥ १ ॥

पराइओ जिणेसरो घणंवणालयं सुपोमसंपयाजॅसोघणं वणालयं ।
विसॉलवेल्लिजालरुद्धभाणुभावहं महामुणिंदजोग्गयं सपावभावहं ।
फलोवडंतवुक्करंतवालवाणरं पियाविवज्जियाण कामुयाण वाणरं ।
लयाहरत्थकिंणरीसुरत्तमाणवं असोयचंपयाइरम्मरुक्खमाणवं ।
परूढवालकंदकंदलेहिं कोमलं पॅसूणरेणुपिंगपॅज्झरंतकोमलं ।
दिसुच्छलंतदंतिदाणवारिवासयं रमंतणायरायदाणवारिवासयं ।
महूहिं थिप्पिरं पसॅमियावणीरयं समाणियामरिंदचंदभाविणीरयं ।
महीरुहग्गसंणिसण्णमोरसारसं पएहिं इच्छिएहिं लोयदिण्णसारसं ।
वहंतमंदगंधवाहकंपमाणयं जलम्मि पोमिणीण जत्थ कं पमाणयं ।

४ MP णरवइ इत्थ णयरि, B णरवइत्थ णयरे. ५ MP जड°, B जर°.
25. १ P °पसोहणं. २ P विलासवेल्लि°. ३ MB पसूय°. ४ MB °पब्भरत°. ५ P पसम्मिया°.

14 *a* णिउ नीत .

25. 3 *a* घणवणालय घना निरन्तरा आम्रा नालकाश्च वृक्षविशेषा यत्र. *b* सुपोमेत्यादि–शोभनपद्मानां सपया सपत्तिस्तया यशः ख्यातिस्तया घनम्, अथवा, सुपोमसपयायसोहणं सुपत्रलक्ष्मीवृक्षे. शोभनम्; वणालय वन जलमासमत्ता लताश्च यत्र. 4 *a* °भाणुभावह आदित्यप्रभापथम; *b* सपावभावहं स्वपापभावघातकम. 5 *b* वाणर बाणवेधम. 6 *b* °रुक्खमाणव °वृक्षाणा मा लक्ष्मीस्तया नव प्रत्यग्रम्. 7 *b* पसूणेत्यादि–प्रसुनरेणुना पुष्पमकरन्देन पिङ्ग पीतवर्णं प्रझरत् कोमल पानीय यत्र. 8 *a* दाणवारिवासय मदजलेन सुगन्धि. *b* °दाणवारिवासय दानवानामरीणां च वसतिर्यत्र. 9 *a* °अवणीरय भूमिधूलि., *b* समाणिय° कृतम्, °भाविणीरय स्त्रीरतम्. 10 *b* °सारस लक्ष्मीरसम्, अथवा सार स्व द्रव्यम्. 11 *a* °गधवाहकपमाणयं वायुना कम्पमानम्; *b* जलम्मीत्यादि–यत्र वनालये जलमध्ये पद्मिनीनां कं (किं) प्रमाणम्, नास्ति प्रमाणमित्यर्थः, अथवा, कं जलं पमाणय परिमितमित्यर्थः.

अलीहिं चंचलेहिं छण्णकंजकेसरे तरंति णो सुरासुरा वि जत्थ के सरे।
पलोइऊण तं सरीतुसारसीयलं णहंगणावइण्णओ रिसी वसी यलं।

घत्ता—तहिं हियइ पसण्णउ सिलहि णिसण्णउ णिव्विण्णउ णरजोणिहे ॥
ससिबिंबसमाणहि मलपरिहीणहि सिद्धु व सिवपयखोणिहे ॥ २५ ॥

26

खंडयं—विविहक्खणविहिकारिणा विप्फुरंतपविधारिणा।
अइरावयकरिगामिणा पुणु पुज्जिउ सुरसामिणा ॥ १ ॥

परमसिद्ध णियचित्ति धरेप्पिणु मुट्ठिउ पंच झडत्ति भरेविणु।
जाइं ताइं ससहावें कुडिलइं धुत्तविलासिणिकुलइं व कुडिलइं।
आलुंचेविणु घित्तइं केसइं एम मुणंति धम्मु जगि के सइं।
चिहुर लुक्क जे हयतमपडलें लेवि पुरंदरेण मणिपडलें।
जणवयसंदरिसियझसमुद्दइ घित्त तुरंतें खीरसमुद्दइ।
परिसेसियउ मउडु रइरंगउ णं वम्महसिहरेहि सिहरग्गउ।
मुक्कइं कुंडलाइं मणिजडियइं रविससिबिंबइं णं णिव्वडियइं।
कंकणु मुक्कउ मोत्तियहारें सहुं णिज्जिय मियंकु णीहारें।
मुक्कउ कडिसुत्तउ सहुं छुरियइ विज्जुलया इव णहविप्फुरियइ।
अंबराइं मुक्काइं अमोल्लइं जाइं सरीरहु सुट्ठु सुहिल्लइं।
संसारासारत्तु मुणेप्पिणु पंचमहव्वय चित्ति धरेप्पिणु।
किमलंकारें देहहु भारें अप्पउ भूसिउ वयपब्भारें।
मोहजालु जिह मेल्लिवि अंबरु झत्ति महामुणि हुवउ दियंबरु।

26. १ MBP मुक्क. २ MB सिहरंगउ. ३ BP णिव्विडियइं. ४ MB मियंक. ५ BP विज्जुलदा. ६ MB अइविप्फुरियइ. ७ M सुद्ध.

---

12 *a* छण्णकंजकेसरे प्रच्छादितपद्मकेसरे; *b* तरंती त्यादि—यत्र वनालये सुरासुराः के न तरन्ति, सर्वेऽपि तरन्त्येव; सरे सरोवरे. 13 सरीतुसारसीयल नदीजलविप्रुषा शीतलम्; *b* रिसी ऋषि., वसी जितेन्द्रियः; यल च+अल अत्यर्थम्. 14 णिव्विण्णउ विरक्तः 15 सिवपयखोणिहे मोक्षस्थानपृथिव्याम्.

26. 1 *b* °पविधारिणा इन्द्रेण. 5 *b* केसइ के स्वयम्. 6 *a* लुक्क लुप्ताः. 7 *a* जणवये त्यादि—लोकानामसदर्शितमत्स्यमुद्रके, लवणकालोदाभ्यामन्यसमुद्रेषु मत्स्यादयो न सन्तीत्यागमात्, अथवा झसकुमत्स्यमुक्तं उदकं यत्र.

उत्तरसाढरिक्खि णवमिइ दिणि महुमासहं पक्खम्मि सियचंदिणि ।
दुविहु वि मणि पडिवण्णउ संजमु गउ णियवासहु हरि हुयवहु जमु ।
परियंचिवि सामिउ णियमन्थउ अवरु वि जणु णामियणियमत्थउ ।
रायहं णेहालोइयवइयइं खणि चालीससयइं पावइयइं ।
अजयमल्लु महुणयरु पराइउ णियपुरवरु बाहुबलि पराइउ ।
गय णियगेहहु णयणाणंदण अवर वसहसेणाइय णंदण ।
पियविरहाणलेण अइ[११]तत्तउ णारीयणु असेसु परियत्तउ ।
जो वण्णहुं सक्किउ णाहीसें समउं तेण ताएं णाहीसें ।

घत्ता—रणवडहहु केरउ जगभयगारउ देंतु दिसहिं भरहे सरु ॥
थिउ गंपि अउज्झहि वइ[१२]रिदुसज्झहि पुप्फयंतु भरहेसरु ॥ २६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणणिक्खवणकल्लाणं णाम
सत्तमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ७ ॥
॥ संधि ॥ ७ ॥

८ MBP णवमइ. ९ MBP अचादिणि and gloss in P कृष्णे १० MBP पव्वइयइ. ११ MBK अइअसउ. १२ M वइरिदुगेज्झहि.

16 *b* सियचदिणि श्वेततारके, कृष्णपक्षे इत्यर्थः. 18 *a* परियंचिवि प्रदक्षिणीकृत्य. 19 *a* णेहालोइयवइयइं स्नेहालोकितपतिकानि, *b* पावइयइ प्रव्राजितानि. 22 *a* अइतत्तउ अतीव तप्तः. 23 *a* णअहीसें सर्पराजेन वर्णयितुमशक्य इत्यर्थः. *b* णाहीसें नाभिराजेन. 24 भरहे भरतक्षेत्रे, सरु श्रेष्ठम्.

VIII

सीहासणु णरवइसासणु महियलु तेणु अवियप्पिवि ॥
गुणवंतहे तवसिरिकंतहे थिउ अप्पाणु समप्पिवि ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

1

आवली—धरिऊणं इसी मुणिग्गंथवेसयं
दूरविमुक्कसंगयं जणियतोसयं ।
तिस्सा रइकएण परिसेसियंगओ
एयत्तं भरेण झाणालयं गओ ॥ १ ॥

चिरु चरियइं चरियइं संभरेवि जगसामिणि गोमिणि परिहरेवि ।
मणमारहु मारहु करिवि छेउ अइसयहु तवहु मुणिवि भेउ ।
तणुभरणइं करणइं णिज्जिणेवि मयासिमिरइं तिमिरइं णिहुणेवि ।
घरवासहु पासहु णीसरेवि विहडंतउ जंतउ मणु धरेवि ।
सहुं लोहें मोहें वहिवि खेरि णियजणणि व बहिणि व गणिवि णारि ।
संकुज्झिवि बुज्झिवि सइं जि सिक्ख सुइवइणी जइणी लेवि दिक्ख ।

GK give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

एको दिव्यकथाविचारचतुरः श्रोता बुधोऽन्यः प्रियः
एकः काव्यपदार्थसगतमतिश्चान्यः परार्थोद्यतः ।
एकः सत्कविरन्य एष महतामाधारभूतो विदा
द्वावेतौ सखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

MBP, however, give this stanza at the beginning of IX with variants जनाः for विदाम् and भूषणो for भूषणम्. At the commencement of this Samdhi they read the following:—

मातर्वसुधरि कुतूहलिनो ममैत-
दापृच्छतः कथय सत्यमपास्य साध्यम् (शाठ्यम् ?) ।
त्यागी गुणी प्रियतमः सुभगोऽतिमानी
किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतार्यतुल्यः ॥

1. १ MBP सिंहासणु. २ MBP तणु व वियप्पिवि and gloss तृणमिव गणयित्वा. ३ P गुणवतहो. ४ P °कंतहो. ५ M तस्सा. ६ MBP एयन and gloss in P एकान्तम्. ७ MB जयणी.

---

1. 1 तणु अवियप्पिवि शरीरमाविगणय्य. 5 तिस्सा रइकएण तस्यास्तपःकान्तायाः संभोगार्थम्; परिसेसियंगओ त्यक्तकायः. 6 एयत्तं एकत्वम्, 7 *b* जगसामिणि लक्ष्मीः; गोमिणि पृथ्वी. 9 *b* मयसिमिरइं मदस्य सैन्यानि. 11 *a* खेरि वैरम्. 12 *a* संकुज्झिवि शङ्कामुज्झित्वा; *b* जइणी जैनी.

छम्मासमेरु मुणि मेरुधीरु अणसणु अवसणु गेण्हिवि गहीरु ।
कमजुयलि पाविमालि विहत्थिमेत्तु णेरंतरु अंतरु करिवि जुत्तु ।
ओट्ठुउडणिउडसंपुडियवयणु आसासियणासियणिसियणयणु ।
भूभंगावंगपसंगरहिउ खयरिंदफणिंदणरिंदमहिउ ।
णिद्दंदु णृयंदु विमुक्कतंदु लंबियभुउ सुरथुउ जिणवरिंदु ।

घत्ता—वरतणुसिरि णं कंचणगिरि जगगुरु दुक्कियमंथउ ॥
थिउ सग्गहु अवि यपवग्गहु णं आरोहणपंथउ ॥ १ ॥

2

आवली—विसयवसा तिसाछुहातावसोसिया
भीसणवग्घसिंघसरहेहिं तासिया ।
जे समयं वयम्मि लग्गा महारहा
ते भग्गा दिणेहिंमसहियपरीसहा ॥ १ ॥

अणब्भत्थसत्था महामंदमेहा पयंपंति एवं समोरुद्धदेहा ।
ण ण्हाणं ण फुल्लं ण भूसा ण वासं पहू पाणियं लेइ णाहारगासं ।
ण सीउण्हवाएण जित्तो महंतो ण णिद्दाइ भुक्खाइ तण्हाइ संतो ।
ण जंपेइ णालोयए कं पि भिच्चं णिउब्भो थिरं संठिओ एम णिच्चं ।
ण याणामि किं चिंतए चित्तमज्झे मई कम्मि संजोयए संदुसज्झे ।
ण दुक्खंति पाया फुडं वज्जकाओ ण ओमिज्जए केम रायाहिराओ ।

८ MBP ओट्ठउडणिविड°. ९ MB °सपुरिय°. १० MBP णियदु

2. १ MBP दिणेहिं असहिय°. २ GK have before this line भुजंगप्पयावो णाम छंदो, MB have भुअंगप्पयावो णाम छंदो P भुयगप्पयाणाम छंदो. ३ MBPT समं रुद्धदेहा. ४ MBP कं पि भिच्चं. ५ T संदुगेज्झे, ६. MB उव्विजए, P उव्विजई

---

13 *a* छम्मासमेरु षण्मासमर्यादम्. *b* अवसणु अव्यसन दु मक्रिशमित्यर्थ. 14 *a* विहत्थिमेत्तु वितस्तिमात्रम्. 15 *a* ओट्ठउडणिउड° निपुट निश्छिद्रसलग्नमोष्ठपुटं कृत्वा सकोचितवदनः. *b* आसेति–आस्यानासिकान्यस्यनयनः. 16 *a* अवंग° °अपाङ्ग 17 *a* नृयदु नृचन्द्र : विमुक्कतदु आलस्यरहितः.

2. 1 विसयवसा विषयवशाः. 3 समय सह महारहा महारथाः उत्तमसत्त्वाः. 5 *a* अणब्भत्थसत्था अनभ्यस्तशास्त्राः, *b* समोरुद्धदेहा श्रमेण अवरुद्धदेहाः व्याप्तशरीराः. 6 *a* वासं वस्त्रम्. 7 *b* संतो श्रान्तः. 8 *b* णिउब्भो नियमेनोर्ध्वः. 10 *b* ओमिज्जए उन्मृज्यते.

अहो हो किमेयस्स एएण होही   वणंते कहं वा णिसाहाइं णेही[7] ।
पुणो पट्टणं किं व जाही ण जाही   मणोहारि रज्जं पि काही ण काही ।
ण कंताकुडुंबेण मोहं विणीओ   ण सद्दूलपंचाणणाणं पि भीओ ।
जडाजालधारी सपारोहसोहो   घुलंतंगसप्पो वडो णं कुरोहो ।
मणूमण्णणिज्जो णियारी णिसुंभो   इमो देवदेवो परो आइबंभो ।
इमस्सेरिसो धीरधीरावहारो[8]   परं दुव्वहो चारुचारित्तभारो ।

घत्ता—जं[9] धवलें अइअतुलबलें दुग्गु खुरेहिं[10] णिभिण्णउं ॥
तेहिं[11] कसरहिं विहुणियसुसिरहिं[12] एक्कु वि पउ णउ[13] दिण्णउं ॥ २ ॥

3

आवली—उब्भियधवलचिंधमहिमावसारओ
करिवरजूहणाहपल्लाणभारओ ।
परजम्मंतरे वि परिरूढतेयओ
पियसहि रासहाण कह[1] होइ णेयओ ॥ १ ॥

गयगंडकंडुकंडुयणवाह[2]   को वि सहइ किडिदाढावलेह ।
को वि सहइ फणिमुहचुंबियाइं   ताणं चिय कंठोलंबियाइं[3] ।
को वि सहइ दूसह दंस मसय   पोसियकसाय दुव्वार विसय ।
को वि सहइ णग्गत्तणु णिरासु   णिच्चं णिरसणु गिरिदुग्गवासु ।
पाउसजलधारावेप्पियाइं   को वि सहइ विज्जुझडप्पियाइं ।
को वि सहइ सिसिरि[4] पडंतु सिसिरु   उण्हालइ दिणयरकिरणपसरु ।

७. B णीही. ८ MBT धीरवीरावहारो, but gloss in T धीराणां धैर्यापहारकः; P वीरधीरावराहो, but gloss धीराणामपि धैर्यापहार. ९ MB जें. १० MB खुरहिं णिब्भिण्णउ. ११ P जरकसरहिं. १२ M °सुसिरहिं. १३ MBP ण वि.

3. १ P किह. २ MBP °चंड°. ३ B कंठालंबियाइ. ४ MB ससिरि but gloss in M शीतकाले.

---

11 *b* णिसाहाइं अहोरात्राणि. 13 *a* विणीओ विनीत. प्रापितः. 14 *b* कुरोहो वृक्षः. 15 *a* मणूमण्णणिज्जो मनुभिरपि पूज्यः. 16 *a* धीरधीरावहारो धीराणामपि धैर्यापहारः. 17 धवलें धुर्यवृषभेण. 18 कसरहिं वत्सतरैः.

3. 3 परिरूढतेयओ प्रख्यातप्रभाव.. 4 रासहाण गर्दभानाम्. 3 *a* वाह बाधा, *b* किडिदाढावलेह सूकरदंष्ट्राविदारणम्. 8 *a* णिरासु फलानपेक्षम्. 9 *b* °झडप्पियाइं पतनानि. 10 *a* सिसिरि शीतकाले; सिसिरु शीतम्.

परलोयकहाणी केण दिट्ठ को वि सहइ एयहु तणिय णिट्ठ।
अण्णेण उत्तु किं एत्थु मरमि घरु जाइवि तं णियरज्जु करमि।
अण्णेण उत्तु संभरमि पुत्तु घरु जाइवि आलिंगमि कलत्तु।
अण्णेण उत्तु अलिचुंबियाइं सलिलइं मयरंदकरंबियाइं।
सरवरि पइसेप्पिणु पियमि ताम तण्हाइ ण वंचइ जीउ जाम।

घत्ता—अण्णेकें माणगुरुक्कें विहसिवि एहउ वुच्चइ ॥
परमेसरु ओलंबियकरु एक्कल्लउ वणि किह मुच्चइ ॥ ३ ॥

4

आवली—झिज्जंते ससिम्मि झिज्जइ ससो सयं
वड्ढंतम्मि जाइ वुड्ढीपयं पियं।
अच्छामो वणम्मि सहिऊण दंडणं
णरवइचरियमेव भिच्चाण मंडणं ॥ १ ॥

विसमे वियणे तरुगिरिगहणे।
परलोयरई मोत्तूण पई।
गंतूण पुरं नं विविहघरं।
भरहस्स मुहं पेच्छामु कहं।
सव्वेहि घणं पडिवण्णमिणं।
सुरणमियपयं दहपंचसयं।
उत्तुंगतणुं पणवंति मणुं।
कंजियअलिहिं कुसुमंजलिहिं।

५ B वंचइ. ६ MB वियसिवि. ७ MBP एक्कु जि.

4. १ MB झिज्जेंतें; K सिज्जतें, but crrrects it to झिजतें. २ MBP have before this line ललियलया णाम छंदो. GK have ललिया णाम छदो. ३ MBPT °गइ. ४ MBP पेच्छामि. ५ MBP °णमिय°. ६ M adds this foot in the margin and MB read after it णाहेयसुयं घणुपंचसयं सो दिव्वमयं; after दहपंचमयं P roads परिगलियमयं घणुपचसय.

11 *b* णिट्ठ अनुष्ठानपरमकाष्ठाम्.

4. 1 ससो शशः. 2 वुड्ढीपय उच्चैः पदम्. 3 दंडण लुञ्चनादिकम्. 4 *a* वियणे विजने. 6 *b* पइं पतिम्.

गयजम्मरिणं पुज्जंति जिणं ।
जंपंति इमं धीरो सि तुमं ।
ण मुएसि कमं गहियं णियमं ।
अम्हे चवला पविलीणबला ।
तुह मग्गचुया हा किं ण मुया ।
मणॅधरियगइं इय भणिवि जई ।
अज्ञवसवणा णिम्मियभवणा ।
थियहरिणगणे णिवसंति वणे ।
कंदं पवरं मूलं महुरं ।
मालूरदलं भक्खंति फलं ।
सीयं विमलं पपियंति जलं ।
सिग्घुलियजडा वियरंति जडा ।
किर ते वि मुणी ता दिव्वझुणी ।
ससिरविसयणे उग्गय गयणे ।
मा लुणह तरुं मा धुणह मरुं ।
मा खणह महिं मा कुणह सिहिं ।
मा पिबह सरं मा हणह परं ।
एसा ण विही जइ णत्थि दिही ।
ता णिवसणयं तणुभूसणयं ।
गेण्हह तुरियं दुट्ठं दुरियं ।
असुविद्दवणे भवसंकमणे ।
जं आसि कयं तं जाइ खयं ।

घत्ता—जिणलिंगें उज्झियसंगें जं किउ पाउ दुरासें ॥
तं तुट्टइ कँह वि ण फिट्टइ जीवहु जम्मसहासें ॥ ४ ॥

७ P मणि. ८ MBP °हरिणयणे. ९ MP विरयंति. १० MBP कह व.

19 *b* °भवणा गृहाणि. 20 *a* थियहरिणगणे स्थिता हरिणानां गणा यत्र. 23 *a* मालूरदलं बिल्वपत्रम्. 26 *a* ससिरविसयणे आकाशे. 27 *b* मरुं पवनम्. 29 *a* सरं सरोवरं पानीयम्. 35 पाउ पापम्. 36 जम्मसहासें जन्मसहस्रेण.

5

आवली—ता लग्गा णराहिवा भासियक्खरे
दुमदलमग्गपिच्छवक्कलधरा परे।
थियजिणवरणिगेहणिट्ठाहयट्ठिया
णाणाविहवियारवेसेहिं संठिया ॥ १ ॥

तो[3] कच्छमहाकच्छहं तणूय पडिकूलपिसुणसिरसूलभूय।
कामियकामिणियणकामकील मयमत्तचंडसोंडाललील।
परबलवलगलहत्थणसमत्थ दोण्णि वि आयर करवालहत्थ।
आया तहिं जहिं णिम्मुक्कडंभु थिउ पडिमाजोएं सइं सयंभु।
पासहिं परिभमिवि महारिजूर णं जंबूदीवहु चंदसूर।
णामें णमि विणमि णिवद्धणेह णं गिहरिगिहि णियडणिसण्ण मेह।
जयकारिवि तेहिं पवुत्तु एव णियसुयहं विहंजिवि पुहइ देव।
दिण्णी अम्हहुं दिण्णउ ण किं पि महिमंडलु गोप्पयमेत्तु जं पि।
पइं पालियखत्तियसासणेण पेसणयरपेसियपेसणेण।
एवहिं पच्चुत्तरु किं ण देमि भणु कवणु दोसु गुणरयणरासि।
परमेट्ठि पियामह तिजगनाय अम्हारउ दुट्ठु ण होइ राय।

घत्ता—तुह चलणहं णं णवणलिणहं मणमहुयरु रुणुरुंटइ ॥
उम्मेल्लहि काइं ण वोल्लहि जाम ण हियवउ फुट्टइ ॥ ५ ॥

6

आवली—पुणु पुणु पहुपसायदाणुग्गमे रया
पाएसु पडंति गाढं कुमारया।

5. १ MBP °पिंछ°. २ M °णिट्ठपहट्ठिया, B णिट्ठाहपठिया ३ MBP ता. ४ M °गलघल्लण; B °गलत्थल्लण°. ५ P °णिमुक्क°. ६ MBP णियडणिविट्ठ ७ MBP पणवेप्पिणु ८ M तिजगभाय.

---

5. 3 थियेत्यादि– स्थितस्य जिनस्य निरोधनिष्ठा निश्चलस्थितिस्तया हत स्थित स्थान येषां ते. 5 *a* तणूय पुत्रौ. 6 *b* °सोंडाल° हस्ती 8 *b* सयंभु आदिनाथ. 16 रुणुरुटइ अनुराग करोति. 17 उम्मेल्लहि अवलोकय.

6. 1 रया रता..

सोहइ गुरुयणम्मि कयमाणवज्जणं
गिरिवरदारणम्मि करिदसणभंजणं ॥ १ ॥

रयणमयमइंदासणसमेउ पोमावइपरमाणंदहेउ ।
जिणपुण्णपवणपरिछित्तकाउ तहिं अवसरि कंपिउ णायराउ ।
णियणाणु पउंजिवि तेण मुणिउं जं सालएहिं जिणु पुरउ भणिउं ।
मग्गंति बाल किं भुअणभाणु जइ देइ देइ ता तिजगदाणु ।
पर तेण विमुक्कु घरत्थकम्मु पारद्धउ विमलु मुणिंदधम्मु ।
सामंतमंतिसेविउ णरेसु महिवइ संतोसिउ देइ देसु ।
देसवइ ग्रामु गामवइ छेत्तु छेत्तवइ किं पि कुडएण भत्तु ।
घरवइ पुणु ढोवइ कूरमुट्ठि तिहुयणवइ पाडइ पयहिं सिट्ठि ।
जइ पत्थिज्जइ ता को वि गरुउ लहुपत्थणाइ पर होइ चरुउ ।
लइ कयउ कुमारहिं जुत्तु साहु सो पत्थिउ जो तेलोक्कणाहु ।
सो पत्थिउ जसु जसु जगपयासु सो पत्थिउ जसु सुरवइ वि दासु ।

घत्ता—णिच्चलमणु समतणकंचणु जेण वित्तु पडिवण्णउं ॥
मोक्खत्थिउ सो जं पत्थिउ तं हउं करमि अँसुण्णउं ॥ ६ ॥

7

आवली—णरलोयम्मि ते हमिह खोहकारणं
जायं किं भणामि सुकयावयारणं ।
अचवंता वि देंति तरुणा महाहलं
सुपुरिसदंसणं पि ण हु होइ णिप्फलं ॥ १ ॥

6. १ MBP मुंदरेहि जिणपुरउ. २ MBP देउ. ३ P सेत्तु. ५ P खेत्तवइ. ५ MB कुलएण, P कुडएण in second hand. ६ MB तइलोक्क°. ७ MBP ण सुण्णउ
7. १ MBP भणेमि.

6 *b* णायराउ नागराजो धरणेन्द्र. 10 *a* णरेसु नराणामीश:, अथवा, पुरुषेषु. 11 *b* कुडएण प्रस्थेन. 12 *b* सिट्ठि जीवसृष्टिः त्रिभुवनम. 13 *b* चरुउ हितकर..
7. 1 णरेत्यादि- नरलोके तौ नमिविनमी तिष्ठतः, हमिह अहं तु पाताले तिष्ठामि, तथापि एतौ मम क्षोभकारणं जातौ

दुवई—तो[2] णिग्गमणमेव धरणेण कयं संभरियजिणवरं ।
फारफणा[3]कडप्पफुक्कारुल्लो[4]लियसमहिमहिहरं ॥ १ ॥
महिहररुंदकंदरायंपणणिग्गयकूरहरिवरं ।
हरिओरालिरोलवित्तासियणासियमत्तकुंजरं ॥ २ ॥
कुंजरचडुलचरणपडिपेल्लणपाडियपयडभूरुहं ।
भूरुहखंधघुंधखरणिहसणरुहपज्जलियहुयवहं ॥ ३ ॥
हुयवहविप्फुलिंगजालावलिजलियस[6]मन्तकाणणं ।
काणणसंणिसण्णमुणिता[7]वासंकियसयलसुरयणं ॥ ४ ॥
सुरयणभरियजलयजलधाराऊरियसु[8]विज्जलंबरं ।
अंबरयलफुरंततडिदंडाहंडलचावकब्बुरं ॥ ५ ॥
कब्बुरदिव्ववत्थवित्थिण्णुल्लोवयछइयसंदणं ।
संदणयलवि[9]लग्गविसहरमुहलालियविज्झचंदणं ॥ ६ ॥
चंदणकुसुमघुसिणफलदलजलतंदुलउवणियच्चणं ।
अ[10]च्चणकामसामफणिरामारंभियसरसणच्चणं ॥ ७ ॥
णच्चणमिलियललियलीलामरललणाल्लुलियमेहलं ।
मेहलियाविलंबिचलकिंकिणिकलकलयलसुपेसलं ॥ ८ ॥
इय वरविवरकुहरतरुणहयलजलथलकंपकारिणा ।
वियडफणाहिरूढचूडामणिकुवलयभारधारिणा ॥ ९ ॥
पहुकमकमलणमियणमिविणमिणराहिवचोज्जदाइणा ।
झत्ति समागएण दिट्ठो रिसहो गरलहरराइणा ॥ १० ॥

२ P तो. ३ MBP °फडा°. ४ P °उल्लामिय°. ५ MBP °परिपेल्लण°. ६ MBP °समत्त°. ७ M °तावससंकिय°, B °तावसरसंकिय°; P °तावसंकिय° and gloss तापशङ्कित. K °तावासंकिय°, but in second hand °तावससंकिय°. ८ MBP °सविज्जल° ९ MBP °वलग्ग°. १० MBP अंचण°.

6 °कडप्प° संघात:. 7 °आयंपण °आकम्पनम्. 8 हरिओरालि° सिंहध्वनिस्तस्य रोल कोलाहल:. 10 °खरणिहसणरुह° अत्यन्तनिघर्षणप्रादुर्भूत:. 12 °तावासंकिय° तापशङ्कित:. 13 °भरियजलय° भृतमेघा. 14 °कब्बुरं चित्रवर्णं यथा भवति. 15 °उल्लोवय° चन्द्रोपकम्, °संदणं देवविमानम्. 16 °लालिय° चुम्बिता:. 18 °साम° श्यामा. 21 °कुहर° पर्वत:. 22 °अहिरूढ° स्थित:. 23 °चोज्ज° आश्चर्यम्. 24 गरलहरराइणा नागराजेन धरणेन्द्रेण.

घत्ता—आवेप्पिणु कर मउलेप्पिणु थुउ मुणिंदु थुइलक्खहिं ॥
मुहघुलियहिं[11] अक्खरलीलियहिं[12] जीहहिं दसैसयसंखहिं[13] ॥ ७ ॥

8

आवली[1]—कंतामुहपलोइरं भोयलालसं
भुवणवणं डहेइ मोहो मलीमसं ।
जइ तुह वयणवारिणा णेय सित्तयं
ता कह जियइ मयणसिहिणा पलित्तयं ॥ १ ॥

दूसियघरासमो	भूसियणियागमो ।
सोसियमईमलो	पोसियमहीयलो ।
मयगयणियत्तओ	कयवयपयत्तओ[2] ।
भावियजयत्तओ	तावियसयत्तओ ।
खंचियाविसायओ	संचियविरायओ ।
लुंचियासिरोरुहो	वंचियदुरग्गहो ।
कुंचियगईवहो	अंचियजसावहो ।
मावईखोहओ	आवईरोहओ ।
छंडियकुसंगओ	खंडियअणंगओ ।
दंडियसइंदिओ	पंडियपवंदिओ ।
तवयरणपरियरो	जमकरणभयहरो ।
समसरणजोयओ	भवतरणपोयओ ।
सज्झाणणग्गणी	सिद्धचिंतामणी ।
संपयासंगमो	धम्मकप्पद्दुमो[3] ।

११ P मुहि. १२ MBP °वलियहिं. १३ P दुसहससखहि.

8. १ GK have before this line:-अमरपुरा छंदो, MBP have अमरपुरी नाम छंदो. २ M °सगत्तओ. ३ B omits this foot.

8. 1 लालस लम्पटम्. 4 मयणसिहिणा पलित्तय कामाग्निना प्रदीप्तम्. 5 *b* °घरासमो गृहस्थाश्रमः. 7 *b* °पयत्तओ प्रयत्नः. 8 *b* °सयत्तओ °स्वगात्रः 11 *a* °गईवहो °गतिमार्गः, *b* अंचियजसावहो श्लाघितयशोधारकः. 12 *a* मावई° लक्ष्मीपतिः. 15 *a* °परियरो सामग्रीः *b* जमकरण° मरणं रोगो वा. 16 *a* समसरण °उपशमगृहम्, *b* °पोयओ प्रवहणम्.

भवविणासी भवो सिवपयासी सिवो।
चित्ततमहो इणो दोसविजई जिणो।
पावहारी हरो तं पराणं परो।
देवदेवो तुमं ताहि दीणं ममं।
णिग्गुणो णिद्धणो[4] दुम्मई णिग्घिणो।
परहरावासओ गहियपरगासओ[5]।
माणओ मेच्छओ रोहिओ रिंछओ।
जायओ हं भवे णारओ रउरवे।
तुम्ह पडिकूलिमा जा कया सा कमा।
एम भुत्ता मए आसि काले गए।

घत्ता—जिणु वंदिवि अप्पउ णिंदिवि णाएं तमु पक्खालिउ॥
णमिरायहु विणमिसहायहु मुहससिबिंबु णिहालिउ॥८॥

9

आवली—तेहिं पयंपियं सया सुहावणं
महिमहि दारिऊण पत्तो सि किं वणं।
कस्स तुमं सुसील अम्हाण संमुहं
अणिमिसलोयणेहिं किं पेच्छसे मुहं॥१॥

णीसमंता[1]मियामियणरिंदु तं णिसुणिवि[2] पडिजंपइ फणिंदु।
हउं भुवणि पसिद्धउ णायराउ जंभारिणमंसिउ तिजगताउ।
लोउत्तमु कुसुमसरंतयालु इहु देउ महारउ सामिसालु।
जइयहुं णिव्वेइउ मुक्क[3]रज्जु तइयहुं जि एण महु कहिउ कज्जु।
तं पेसिय[4] केण वि कारणेण विहलियजडजीउद्धारणेण।

४ MB णिद्धुणो ५ MP add after this जीवआमागओ करणबलपोसओ, B adds only जीवआसासओ.

9. १ MBP णीमाम°. २ B णिमुणवि ३ MB मुक्कु रज्जु. ४ MBP संपेसिय.

20 *a* चित्ततमहो चित्ततमोघातक ; इणो आदित्य अथवा, चित्तस्य तमोऽन्धकारस्तस्य सूर्यः. 22 *b* ताहि रक्ष. 27 *b* कमा क्रमात्. 29 णाएं धरणेन्द्रेण.

9. 1 सया सुहावणं सदा सुखकरम्. 2 महिमहि दारिऊण हे अहे, महीं विदार्य. 5 *a* °अमिय° अमित°. 6 *b* जंभारि° इन्द्र. 7 *a* कुसुमसरतयालु कामघातकः. 8 *a* णिव्वेइउ वैराग्यं गतः.

एहिंति बे वि णमिविणमिणाम मइं मग्गिहिंति सिरिसोक्खकाम।
तुहुं देज्जसु ताहं णयासणाउ खगसेढिउ उत्तरदाहिणाउ।
आसणथरहरणें ढलिउ संचु मइं जाणिउ तुम्हारउ पवंचु।
पायालु मुइवि अवयरिउ एत्थु हउं अरुहदेवपेसणसमत्थु।
जो खंडइ लिंपइ सुराहिएण देवें णिज्झाइयणियहिएण।
एवहिं सो दीसइ धुंवु समाणु परिचत्तउ पुव्विल्लउ विहाणु।

घत्ता—लहु आवहं काइं चिरावहं जोइ मुएवि सखयरइं।
मइं सिट्ठइं पहुउवइट्ठइं भुंजह णाणाणयरइं॥ ९॥

10

आवली—इय वयणं कुमारवीरेहिं इच्छियं
णवर णहयले विमाणं णियच्छियं।
मारुयधावमाणधुयधयवडंचियं
गुणिणा झत्ति णायणाहेण णिम्मियं॥ १॥

णविऊण सदोसारंभहरं सुरवरभवणेण सरंभहरं।
जुंज्झियहिंडियविसहरिणउलं दुवंकुरपीणियहरिणउलं।
गयणंगणलग्गसिरं गरुयं ओसहिहयसत्तसिरंगरुयं।
उक्खयपुलिंदकंदारुणयं हरिणहहयकरिकंदारुणयं।
सीहाणुलग्गभीयरसरहं सुररमणीवाहियहंसरहं।

५ MBP अरुहदासपेसण°. ६ MBP धुउ.

10. १ All Mss. have before this line: मात्रासमक. २ MBP जुज्झिरहिंडिर°. ३ MBP दुव्वंकुर°.

11 *a* णयासणाउ नगाश्रिते द्वे श्रेण्यौ, *b* खगसेढिउ विद्याधरश्रेण्यौ. 12 *a* °थरहरणें कम्पनेन; संचु शरीरबन्धः. 14 *b* °णियहिएण मोक्षेण. 16 चिरावहं चिरं कुरुताम्; सखयरइं विद्याधरसाहितानि.

10. 5 *a* सदोसारंभहरं स्वदोषारम्भविनाशकम्, *b* सुरवरभवणेण विमानेन, सरंभहरं सरोवरजलधारकं विजयार्धं रम्भायुक्तगृहं वा. 6 *a* °विसहरिणउल वृषसिंहनकुलम्; *b* °हरिणउलं मृगसंघातम्. 7 *a* गरुयं महान्तम्. *b* सत्तसिरंगरुयं सत्त्वानां शिरसि शरीरे च रुजं व्याधिम् 8 *a* °कंदारुणय कन्दैर्मूलैररुणं रक्तम्; *b* कंदारुणयं मस्तकैः कृत्वा दारुणं रौद्रम्. 9 *a* °सरहं अष्टापदम्;*b* °वाहियहंसरहं वाहितो हंसयुक्तो रथो यस्मिन्.

तीरासियखयरीवाहणयं दुमघट्टणहुयहुयवाहणयं ।
णेउररवभरियलयाहरयं वरखेयरपीयपियाहरयं ।
संदरिसियवहुरत्तामरसं रवियरवियसावियतामरसं ।
वीसरियहारभारियमहियं जिणपडिमाकयमहिमामहियं ।
चारणमुणिदेसियधम्मसुहं झरझरियणिज्झरावाहसुहं ।
फणिवयणविमुक्कविसग्गिवहं दरिदाँवियविविहविसग्गिवहं ।
णरजुयलमलद्धपियालवणं णीयं सेलं सपियालवणं ।
पुव्वावरजलहिविलग्गसिरो कंदरमुहेहिं वणयरगसिरो ।

घत्ता—भडभीसहिं णमिविणमीसहिं गिरि वेयड्डु पलोइउ ॥
रयणालए सायरवेलए तुलदंडु व संजोइउ ॥ १० ॥

11

आवली—वियसियविडविकुसुमकिंजक्कपिंजरो
मणिमयकडयमंडिओ णं महीकरो ।
रयणायरपसारिओ सहइ सोहणो
रयणायरविलुद्धओ हवइ थीयणो ॥ १ ॥

णं जगसिरिणट्टाधारवंसु अहवा गोगाइसरीरवंसु ।
गंगासिंधूहिं विहिण्णदेहु पडिगयसंकिण्णयाणिहयमेहु ।
रुक्खहुं णावइ रुक्खाउवेउ देवहुं वल्लहु णं सग्गलोउ ।

४ M °लयाहरह. ५ M °पियाहरय ६ P मदरासिय°. ७ MBP दरिसाविय°.

10 *a* °खयरीवाहणय विद्याधरस्त्रीणा वाहन यस्मिन, *b* °हुय° उत्पन्न, *b* °हुयवाहणय हुतवाहनमग्निम्. 11 *a* °लयाहरय लतागृहम, *b* °पियाहरय °प्रियाधरम्. 12 *a* मदरिसियेत्यादि– सदर्शितं वधूरक्तानाममराणां स सुख येन *b* नामरगं पद्मम 13 *a* °महिय महीज वृक्षम; *b* °महिमामहियं माहिम्ना पूजितम्. 15 *a* फणीत्यादि– फणिवदनैर्विमुक्ताद्विषाग्नेर्वधो मरण यत्र. *b* दरीत्यादि–दरीषु दर्शितो विविधैर्विभिः पक्षिभिः स्वर्गिणां पन्था यत्र. 16 *a* णरजुयल नमिविनमियुग्मम. अलद्धपियालवण न लब्धं वृषभनाथस्य प्रियं आलपनं येन. *b* सपियालवण प्रियालाश्वरवृक्षास्तद्वनैः सहितम 17 *b* °गसिरो ग्रसनशीलः. 19 रयणालए रत्नस्थानके.

11. 1 °किंजक्क° मकरन्द. 2 कडय° कङ्कणं गिरितट च. 4 रयणायरविलुद्धओ रत्नानामाकरे आश्रये पुरुषे विशेषेण लुब्धः, अथवा रते नागरे विदग्धपुरुषे विशेषेण लुब्ध· 5 *b* गोगाई° पृथ्वी एव धेनु·. 7 *a* रुक्खाउवेउ वृक्षायुर्वेदः वृक्षाणां वृध्द्युपायप्रदर्शक शास्त्रम्.

उवलोसहिरससिहिजोयवण्णु　रसवाइ व सइं णिवडियसुवण्णु ।
णिसि चंदयंतसलिलेहिं गलइ　वासरि रविमणिजलणेण जलइ ।
माणिक्कपहादिण्णावलोउ　जहिं चक्कवाय ण मुणंति सोउ ।
रययमउ सव्वु रयणियरभासु　पण्णास मूलि वित्थारु जासु ।
गयणंगणलग्गविचित्तसिंगु　जो पंचवीसजोयणइं तुंगु ।
दोवासहिं तासु थियाउ ताम　दीहत्ते लवणसमुद्दु जाम ।
उत्तरदाहिणियउ मणहराइं　सेढीउ दोण्णि विज्जाहराइं ।

घत्ता—महि मोइवि दह वरि जाइवि दहजोयणवित्थिण्णी ॥
एक्केक्की विहवगुरुक्की णाणारयणरवण्णी ॥ ११ ॥

12

आवली—तत्थ चउत्थकालठिदिसंविहाणयं
पंचधणूसयाइं मुणिरयणिमाणयं ।
णीणं कम्मभूमिपरिणामजोयओ
परविज्जाहलेण अहिओ विहोयओ ॥ १ ॥

कुलजाइकमेण समागयाउ　दूसहतवताववसंगयाउ ।
पुव्वाउ ताउ णिद्धं हियाउ　अवराउ पयत्तें साहियाउ ।
सहिउवसग्गें धीरें समेण　सुद्धदेहें होमें संजमेण ।
पारंभियमुद्दामंडलेण　चरुगंधधूवफुल्लच्चणेण ।
विज्जाहराहं णियमें वएण　विज्जाउ होंति ससहावएण ।

11. १ MBP गयणग्गलग्गमुविचित्त°. २ B °सेंगु. ३ MB सेढिउ दोण्णि वि, P सेढिउ बेण्णि वि. ४ MBP णाणाणयर°.

12. १ P °कालट्ठिदि°. २ T भयराणिमाणयं, but notos a p मुणिरयणीति पाठेऽप्ययमेवार्थः. ३ MBP कम्मभूमिणाम°. ४ MBP सहिओवसग्गधीरें. ५ MP °पुप्फच्चणेण, B पुप्फच्चणेण. ६ MBP कमेण.

8 *a* उ व ल° धातुपाषाण. 11 *a* र य णि य र भा सु चन्द्रकान्ति:. 13 *a* दो वा स हिं द्वयोः पार्श्वयोः. 15 मो इ वि मुक्त्वा; व रि उपरि.

12. 1 च उ त्थे त्या दि—चतुर्थकालस्थितेः शरीरोत्सेधादिलक्षणायाः सम्यग्विधानम्. २ मु णि र य णि- मा ण य सप्तहस्तप्रमाणम्. 3 णी ण नृणा मनुष्याणाम्; क म्म भू मि प रि णा म जो य ओ कृष्यादिकर्मयोगजः. 7 *a* स हि उ व स ग्गें सोढोपसर्गेण. 9 *a* व ए ण व्रतेन.

सिद्धउ पण्णत्तिपहुइयाउ आणत्तु करिंति परोइयाउ ।
जहिं धम्मा इव संदिण्णकाम णीरंतरसीमाराम गाम ।
जहिं दक्खामंडवयलि सुयंति पेहि पंथिय दक्खारसु पियंति ।
धवलूढजंतपीलिज्जमाणु पुंडुच्छुखंडरसु पवहमाणु ।
कइकव्वरसु व जणु पियइ ताम तित्तीइ होइ सिरकंपु जाम ।
जहिं पिक्ककलमकणिसइं चरंति सुय दूयत्तणु हालिणिहि करंति ।

घत्ता—सिरिसयणहिं णं बहुवयणहिं विलसंती दिणि रायइ ॥
जहिं पोमिणि कलमहुयरझुणि णं भाणुहि गुण गायइ ॥ १२ ॥

13

आवली—कंकणहारदोरकडिसुत्तभूसिया
णिच्चं गंधधूवमल्लोहवासिया ।
लच्छि भुंजिउं णरा देवयाणियं
सोक्खं जं लहंति तं केण माणियं ॥ १ ॥

कुसुमियणंदणवणसंकडाइं कीलागिरिंदसिहरुब्भडाइं ।
परिहातिपहिं परियंचियाइं पवणुध्दुयधयमालंचियाइं ।
बहुदारगोउरट्टालयाइं सोवण्णरयणरइयालयाइं ।
मुहसालातोरणसोहियाइं दाहिणसेढिइ जसाहियाइं ।
सोहासमूहमोहियसुराइं एयइं पण्णास जि पुरवराइं ।
पहिलउ किंणर णरगीउ बीउ बहुकेउ पुणु वि पुरु पुंडरीउ ।
हरिकेउ सेयकेउ वि रवण्णु सप्पारिकेउ णीहारवण्णु ।
सिरिवहु सिरिहरु लोहग्गलोत्तु अण्णेक्कु अरिंजउ सग्गलीलु ।

७ MBP सुहुइयाउ. ८ MBP णेरतर°. ९ M जहिं १० MBP रसपवहमाणु. ११ M °कलमकणसइं; BP कलवकाणिसइं. १२ MBPK विसयती.

13. १ MBP °मल्लेहिं वासिया; T °मल्लोह° and gloss पुष्पसमूह. २ P °गोउरुद्दालयाइं. ३ MBP सेउकेउ. ४ MB लोयग्गलील, P लोहग्गलालु and gloss लोहार्गलायुक्तम्.

---

10 *a* पण्णत्तिपहुइयाउ प्रज्ञप्तिप्रभृतयः; *b* आणत्तु आज्ञाम्. 12 *b* पहि मार्गे. 13 *a* धवलूढ° वृषभवाहितानि. 15 *b* सुय शुकाः; हालिणिहि कर्षकस्त्रियाः. 16 सिरिसयणहिं पद्मैः; रायइ शोभते.

13. 2 मल्लोह° पुष्पसमूहः. 3 देवयाणियं विद्यासंपादिताम्. 6 *a* परियंचियाइं परिवेष्टितानि.

वज्जग्गलु वज्जविमोउ अवरु महिसारु पुरं जयपुरु[5] वि पवरु ।
सोलहमी पुरि सयडमुहि[6] होइ चउमुहि बहुमुहि जाणंति जोइ ।
रयविरयपउरखगजम्मखोणि आहंडलणयरि विलासजोणि ।
अपराजिउ कंचीदामु दोण्णि सविणय णहु खेमंयरीउ[7] तिण्णि ।
झसइंध कुसुमपुरि संजयंति सुक्कउरु[8] जयंती वइजयंति ।
विजया खेमंकरु चंदभासु रविभासु सत्तभूयलणिवासु ।
सुविचित्त महाघण चित्तकूडु अण्णु वि तिकूडु वइसवणकूडु[9] ।
ससिरविपुरि विमुही वाहिणी वि सुमुहीपुरि णिच्चुज्जोइणी वि ।
मज्झइ रहणेउरचक्कवालु[10] तहिं सयलखयरकुलसामिसालु ।
जायउ[11] जयमंगलजयरवेण णमि फणिणा णिहिउ कउच्छवेण ।

घत्ता—एक्केक्की पुरहिं[12] विरिक्की गामकोडिपडिबद्धी ॥
णमिरायहु थुयणाहेयहु धम्में संपय सिद्धी ॥ १३ ॥

14

आवली—पुरिसा भूयलम्मि विरला सुधीरया
परउवयारवावडा होंति धीरया ।
एक्को अहव दोण्णि पायालराइणा
सरिसा[1] णत्थि भइ धरणिंदमोइणा ॥ १ ॥

वारुणासामुहाओ फुडं जाणिमो वामसेढीपुराणावलिं[2] भाणिमो ।
अज्जुणी वारुणी वइरिसंघारिणी अवि य केलासपुव्विल्लया वारुणी ।
विज्जुदित्तं[4] पुरं गिलिगिलं[5] पट्टणं चारुचूडामणी चंदभाभूसणं ।
वंसवत्तं[6] पुरं कुसुमचूलं पुरं हंसगब्भं पुरं मेहणामं पुरं ।

५ B जउपुरु. ६ B सयडंमुहि ७ M खेपुरीउ; BP खेमपुरीउ. ८ MBP सुक्कउरि ९ P वइवसण°. १० P णेउरु चक्कवालु. ११ MBP जोयउ. १२ M विहवगुरुक्की; BP पुरहिं गुरुक्की.

14. १ M सरसा. २ MBP भइ णत्थि. ३ MBP पुराणावली. ४ P विजदत्तं. ५ MBP किलिकिलं. ६ MP वंसवंतं; B वंसवंसं.

23 पुरहिं विरिक्की पुरैः विभक्ता.

14. 1 सुधीरया सुबुद्धिरताः. 2 वावडा व्यापृताः. 5 a वारुणासामुहाओ पश्चिमदिशामुखतः प्रारभ्य.

संकरं लच्छिहम्मं पुरं चामरं विमलमसुमक्कयं सिवसमं मंदिरं ।
वसुमईणामयं सव्वसिद्धत्थयं सूरसत्तुंजयं केउमालं कयं ।
इंदकंतं णहाणंदणासोययं वीयसोयं विसोयं सुहालोययं ।
अलयतिलयं च णहतिलययं मंदिरं कुमुदकुंदं च णहवल्लहं सुंदरं ।
जुइतिलयमवणितिलयं सगंधव्वयं मुक्कहारं पुरं अणिमिसं दिव्वयं ।
अग्गिजालापुरं गरुयजालापुरं सिरिणिकेयं च जयसिरिणिवासं पुरं ।
रयणकुलिसं वरिट्ठं विसिट्ठासयं दविणजयमवि सभद्दं च भद्दासयं ।
फेणसिहरं पि गोखीरवरसिहरयं वरिअक्खोहसिहरं च गिरिसिहरयं ।
धरणि धारणि सुदंसणपुरं रुंदयं दुग्गयं दुद्धरं हारिमाहिंदयं ।
विजयणामं पुरं पुणु सुगंधिणिपुरं सुरयणायरपुरं रयणपुरमवि पुरं ।
सट्ठिगामाण कोडीहिं सहुं हारिणा सैट्ठि तुट्ठेण सुविसिट्ठसुहयारिणा ।

घत्ता—इय णयरइं णिवसियखयरइं धणकणजणपरिपुण्णइं ॥ २० ॥
अणुराएं रिसहपसाएं णाएं विणमिहि दिण्णइं ॥ १४ ॥

15

आवलि—जाओ सो णहयराणं पहू पिओ
णेहणिबद्धओ ससुहिणा समं थिओ ।
सुयणुद्धारभारधरणुज्जुयंगओ
ते आउच्छिऊण धरणो घरं गओ ॥ १ ॥

भुवणहु मंडणु अरहंतु देउ माणिणिमुहमंडणु मयरंकउ ।
वेसहिं मंडणु वइसिउ णिरुत्तु ववहारहु मंडणु चायवित्तु ।
कुलमंडणु सीलु सुयस्स वुद्धि तवचरणहु मंडणु मणविसुद्धि ।

७ MBP सूरसंतुज्जयं. ८ MBP महा°. ९ MBP कुमुमकुंद व्व. १० M जुवइतिलय सव्वाणियं; P जुवइतिलयं सविणिय. ११ MBP गरुयआलापुर. १२ P रुदय. १३ M सुरयणारय° १४ MBP सुट्ठ. १५ P सुविसुद्ध° but gloss सुविशिष्ट.

15. १ B सुसुहिणा. २ P धरणुज्जयगओ, but gloss ऋजुशरीरः. ३ BP वायवित्तु, and gloss in P वचनप्रतिपालनम्.

19 *a* हारिणा मनोज्ञेन. 21 णाए धरणेन्द्रेण.

15. 6 *a* वइसिउ वैशिकं वेश्यावृत्तिः.

कुलवहुमंडणु भत्तारभत्ति असि रायहु मंडणु मंतसत्ति।
माणहु मंडणु अदीणवयणु भवणहु मंडणु वरणारिरयणु।
कइमंडणु णिव्वाहियणिबंधु गयणहु मंडणु ससि कमलबंधु।
पियपेम्महु मंडणु पणयकोउ आरंभहु मंडणु खलविओउ।
किंकरमंडणु पहुकज्जकरणु णरवइमंडणु पाइक्कभरणु।
सिरिमंडणु पंडियंयणु णिरुत्तु पंडियमंडणु णिम्मच्छरत्तु।
पुरिसहु मंडणउ परोवयारु धरणिंदें पालिउ णिव्वियारु।
उद्धरिय बे वि णमि विणमि भाय को पावइ एयहु तणिय छाय।
अहवा किं होसइ किर परेण परिणवइ दइउ सव्वायरेण।

घत्ता—किं किज्जइ अण्णें दिज्जइ सव्वहु पुण्णु जि सामिउ॥
तें कित्तणु भरहपहुत्तणु पुप्फयंतगयगामिउ॥ १९॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णमिविणमिरज्जलंभो णाम
अट्ठमो परिच्छेओ सम्मत्तो॥ ८॥

॥ संधि॥ ८॥

४ M सोहइ. ५ MBP होइ. ६ MBP °गइ°.

10 *a* °णिबंधु काव्यम्; *b* कमलबंधु सूर्यः. 18 तें पुण्येन, कित्तणु कीर्तिर्यशः; पुप्फयंतगयगामिउ आकाशगामि सर्वलोकाकाशव्यापि कीर्तनम्.

IX

ता झाइउ णिण्णेहु णियमणपसरु पराजिउ ॥
पुण्णइ छट्टइ मासि णाहें जोउ विसज्जिउ ॥ १ ॥

1

हेलो—परिचिंतइ जिणेसरो दुक्कियं खवंतो ।
महिमापारमासिओ सुद्धही महंतो ॥ १ ॥

जिह तेल्लेण दीवु तरु णीरें तिह माणुससरीरु आहारें ।
आहारु वि जो परह णिमित्तें सिद्धउ लद्धउ कालं भमंतें ।
उज्झिउ आहाकम्मुद्देसहिं पुव्वं पच्छा संथुइभासहिं ।
अज्झोवज्झहिं पूईकम्महिं देवयचरुयहिं वियलियधम्महिं ।
लिंगिणीसणरसँतूगारहिं चोद्दहमलवित्थारवियारहिं ।
जीववहाइअसंजममीसहिं परंभयवसउब्भाइयगासहिं ।
गणहरगणियहिं छायालीसहिं वज्जिउ अवरेहिं मि बहुदोसहिं ।
णीरसु सरसु ण किं पि भणेवउ रसणु रसें रसंतु णिहणेवउ ।
रूवतेयबलचिंताचत्तउ संजमजत्तामेत्तु समत्तउ ।

MBP give, at the beginning of this Samdhi, the stanza एको दिव्यकथाविचारचतुरः etc. for which see notes on page 121.

1. १ BP °पसरपरजिउ. २ GK call this couplet हेलादुवई only at this place; throughout the rest of the Samdhi they call it हेला. ३ MBP सुद्धधी. ४ MBP कालि. ५ P भमतें. ६ B थुइसंभासहिं. ७ M °सत्तुग्गारहिं. B सत्तुउग्गारहिं, P सत्तुगारहिं. ८ MP चउदह°. ९ M पयभर°. १० MBP रसे रमतु. ११ MBPT °मेत्तसमत्तउ.

1. 1 झाइउ ध्यातः, पराजिउ पराजितो निर्जितः. 2 जोउ षण्मासकायोत्सर्गः. 4 सुद्धही शुद्धबुद्धिः. 6 b कालं युक्तं कालम्. 7 a आहाकम्मुद्देसहिं अधःकर्म नीचकर्म स्वयंपाकादिकम्, उद्देशिकं कर्म मुनिमुद्दिश्य पाककरणम्. 8 a अज्झोवज्झहिं मुनिं दृष्ट्वा आधिश्रयणे आधिकजलस्य तंदुलानां वा निक्षेपैः 9 a णीसनिस्वो दरिद्रः; b चोद्दहमल° चतुर्दशमलविस्तारविकारैर्वर्जितम्, ते च मलाः—नहरोमजन्तुअट्ठिकणकुंडपूयरुहिरमसचम्माणि । फलफुल्लबीयमूलाछण्ण मला चउदस भवन्ति 11 a छायालीसहिं षोडश उद्गमदोषाः, षोडश उत्पादनदोषाः, दश एषणादोषाः, संयोजनदोषः, इंगालदोषः, धर्मदोषः, प्रमाणदोषश्चेति षट्चत्वारिंशद्दोषाः. 13 b संजमजत्तामेत्तु संयमयात्रार्थमेव.

सुक्खु लुक्खु सउवीर[12]भुक्खिउ णवकोडीविसुद्धु सुपरिक्खिउ[13]।
पाणिपत्ति लइ मइं भुंजेवउ चरियाचरणु जगहु दरिसेवउ।

घत्ता—जइ हउं अच्छमि अज्जु केम वि ण करमि भोयणु॥
तो जिह ए णर भग्गा[14] तिह भजिहइ तवोवणु॥ १॥

2

हेला—आहारें वओ तिणा तवो तिणा जियक्खो।
अक्खाणं जए समो होइ तेण मोक्खो॥ १॥

इय हियइ धेत्तूण जोयं पमोत्तूण।
सिद्धत्थणामाउ तम्हा वणंताउ।
विहरेइ परमेट्ठि जुयमेत्ति गयदिट्ठि।
जीवे[3]ण दुम्मेइ पेच्छंतु पउ देइ।
रमणीयथामेसु णयरेसु गामेसु।
तं विणयणयभरिय पणमंति णायरिय।
अब्भुवरसालीण जोयंति[4] गामीण।
भइयाइ कंपंति अण्णे पयंपंति।
एसो महीराउ एसो महादेउ।
धणकणयधण्णाइं एएण दिण्णाइं।
मंडलिय महियलइं काऊण बहुहलइं।
एयस्स पडिवत्ति उवयरह सहस त्ति।
इय भणिवि सद्दलइं विविहाइं फलदलइं।

१२ MBP सउवीरें भुक्खिउ; K सउवीरब्भक्खिउ. १३ M परिक्खिउ. १४ MBP भग्ग.

2. १ MBP तवें. २ MBP जुयमेत्तु. ३ MB जीव ण दूसेइ; PT जीवं ण दूसेइ: ४ MBP जोयंत. ५ MBP मंडलइं.

---

14 *a* सउवीरब्भुक्खिउ काञ्जिकेनाभ्युक्षितम्; *b* णवकोडीविसुद्धु मनोवाक्कायैः कृतकारितानुमतसंयुक्तैर्विशुद्धम्. 17 तवोवणु तपोवनं मुनिसंघातः.

2. 1 वओ वपुः; तिणा तेन; जियक्खो जितेन्द्रियः. 2 समो कर्मक्षयः. 5 *b* जुयमेत्ति चतुर्हस्तमात्रे. 10 *a* भइयाइ भयेन. 15 *a* सद्दलइं आर्द्राणि.

भमराहिरामाइं णवकुसुमदामाइं ।
कुंकुमइं चंदणइं भायणइं भोयणइं ।
सुरहियइं सीलयइं भिंगारवरजलइं ।
सीसेण गहिऊण पंथम्मि णिहिऊण ।
णाहस्स ते देंति बाला ण याणंति ।
अण्णे पसत्थाइं देवंगवत्थाइं ।
कंडिसुत्तकेऊरु मणिहारु मंजीरु ।
कंकणइं कुंडलइं णं सूरमंडलइं ।
गलियावलेवस्स उवणेंति देवस्स ।
अण्णे कुलीणाउ मज्झम्मि खीणाउ ।
लायण्णपुण्णाउ ढोयंति कण्णाउ ।
णररहतुरंगाइं मायंगडुंगाइं ।
णिसियाइं पहरणइं उववणइं पट्टणइं ।
वाइत्तजुत्ताइं चमरायवत्ताइं ।
ससिसंखपंडुरइं चिंधाइं मंदिरइं ।
अण्णे समप्पंति अण्णे पभासंति ।
भो मयणमयवाह भो णाणजलवाह ।
भो तरुणमिहिराह भो तवसिरीणाह ।
भो देवदेवेस भो परम परमेस ।
णिण्णग्गवेसेण णियदेहसोसेण ।
णालवसि किं भवसि णउ हससि णउ रमसि ।
इय भणिवि अज्जेहिं चडुयम्मसज्जेहिं ।

६ MB करिसुत्तकेऊर; P कडिमुत्तकेऊर. ७ MBP मणिहार मंजीर. ८ M*p* वररह°. ९ MBPT मायंगडुंगाइ and gloss in T समूहा. १० B omits णिसियाइ पहरणइं; P adds it in the margin in second hand. ११ M adds after this: जोयंति किंकरइ; P adds it in the margin in second hand. १२ MBP add after this: पणयाइं परियणइं. १३ MBP ससिखंड°. १४ MBP पहासंति. १५ MBPT °मिहराह. १६ B णिव°. १७ MBP भमसि. १८ M चडुयम्मसहेहिं.

27 *b* °डुंगाइ वृन्दानि समूहा:. 32 मयणमयवाह काममृगस्य व्याध. 28 *a* तरुणमिहिराह बालसूर्यसमान. 37 *b* चडुयम्मसजेहिं चाटुकारसज्जै:.

बोल्लाविओ जइ वि पहु चवइ णउ तइ वि ।
परणिहियणियचित्तु महिवीढु विहरंतु ।

घत्ता—हिंडइ जाम जिणिंदु चरियामग्गि पइट्ठउ ॥
ता सेयंसणिवेण गयउरि सिविणेंउं दिट्ठउ ॥ २ ॥

3

हेला—पल्लंकासिएण मउलंतणेत्तएणं ।
रयणिविरामजामए संपसुत्तएणं ॥ १ ॥

ससिप्पहाणुजम्मिणा भवाणुबद्धधम्मिणा ।
णिसायरो दिवायरो करीसरो सरोवरो ।
महण्णवो सुरंघिओ बलुद्धरो मयाहिओ ।
सबाहुजित्तसंगरो रिऊण छेयणंकरो ।
भरक्खमेक्ककंधरो महाभडो धणुद्धरो ।
घुलंतपुंछपच्छलो विसो विसाणउज्जलो ।
णियच्छिओ सकंदरो घरे विसंतु मंदरो ।
इमो सुदंसणोहओ पणट्ठदिट्ठिमोहओ ।
णिसंतए पलोइओ समाणसे विवेइओ ।
पहायए महाउणो समासिओ सभाउणो ।

घत्ता—तं णिसुणिवि कुरुणाहु सिविणयहॅलु आहासइ ॥
को वि जगुत्तमु देउ तुह मंदिरु आवेसइ ॥ ३ ॥

---

१९ BP सुइणउं.

3. १ M बलदुरो. २ MBP भरेक्कमेक्ककधरो. ३ MPK °पुंछ. ४ MBP °फलु.

---

3. 3*a* ससिप्पहाणुजम्मिणा सोमप्रभस्य लघुभ्रात्रा. 5 *b* बलुद्धरो मदोत्कटः; मयाहिओ मृगाधिपः. 7 *a* भरक्खमेक्ककंधरो भरक्षमैकस्कन्धप्रदेशः. 9 *b* विसंतु प्रविशन्. 10 *a* सुदंसणोहओ शोभनस्वप्नसंघातः. 12 *a* पहायए प्रभाते; महाउणो महायुषः. 13 कुरुणाहु सोमप्रभः.

4

हेला—ससिरविसुहडसीहसरसरहिगोगुणालो ।
जंगममंदरु व्व गहहसियपीलुलीलो ॥ १ ॥

णीलजडाकलावओमालिउ सिहरि व जलहरमालइ कालिउ ।
एरावयकरसंणिहबाहउ णग्गोहु व ललंतपारोहउ ।
तावण्णहिं दिणि णयरि पइट्ठउ णारीणरहिं णिरंजणु दिट्ठउ ।
धावमाणजणपयसंमद्दें उट्ठिउ कलयलु जयजयसद्दें ।
को वि भणइ अवलोयहि एत्तहि हउं पंजलियरु अच्छमि जेत्तहि ।
को वि भणइ सामिय दय किज्जउ एक्कवार पच्चुत्तरु दिज्जउ ।
को वि भणइ मेरउ घरु आवहि भिक्खभत्ति पहु किं ण विहावहि ।
चंदु व रिक्खि रिक्खि वियरंतउ जइवइ गेहि गेहि पइसंतउ ।
घरिणिहि घरपंगणु संपाइउ ताउ व भाउ व देउ पलोइउ ।
णिग्गयाउ मणि तोसु वहंतिउ एम चवंति ताउ पणवंतिउ ।
मज्जणु मज्जणहरि संजोइउ पोत्ति तेल्लु आसणु वि पढोइउ ।
ण्हाहि णाह लइ तणुउवयरणउं चंगउ चेलिउ हेमाहरणउं ।
बइसहि पट्टि सुसरससमग्गउ भुंजहि भोयणु तुज्झु जि जोग्गउ ।
बोल्लावियउ ण किं पि वि भासहि भुवणुबंधु किं अप्पउ सोसहि ।

घत्ता—पुरि कलयलु णिसुणेवि ससिभासें अहियारिउ ॥
कंचणदंडविहत्थु पुच्छिउ णियदउवारिउ ॥ ४ ॥

4. १ M °सरभूरुहगुणालओ; B सरसरेणे गुणालओ, P सरसरहिणा गुणालओ; T सरहि समुद्रः. २ MBP ° पीलुलीलओ. ३ MBP अइरावय°. ४ M °करि°. ५ M घरपगणु भपाइउ, B घरिणिघरपंगणु संपाइउ; P घरु पंगणु सपाइउ. ६ MBP हरिसु. ७ M सरसु सुसमुग्गउ, B सुरसु समुग्गउ. ८ M सुयणबंधु.

4. 1 °स र हि° समुद्र·, °गो° वृषभः. 3 *b* का लि उ कलितः क्लृप्तः. 9 *b* वि हा व हि चित्ते किं न रोचयसि. 15 *a* सु स र स स म ग्ग उ षड्रसयुक्तं भोजन समग्रं च. 17 स सि भा सें सोमप्रभेण. 19 कं च ण दं ड- वि ह त्थु काञ्चनदण्डविशिष्टकरः.

5

हेला—ता पडिहारएण भणियं[1] भवावहारो ।
जो लच्छीकडक्खविक्खेवे[2] वि णिव्वियारो ॥ १ ॥

सिरेण णवेवि सुरायलि ठवियउ जो तियसेसरेण सइं ण्हवियउ ।
जेण पयासियाइं मइगम्मइं बहुभेयइं जणजीवणकम्मइं ।
भरहहु तुम्हहुं मेइणि दिण्णी जेण णवल्लविव्ति पडिवण्णी ।
सो आयउ तेलोक्कपियामहु तं णिसुणिवि उट्ठिउ सोमप्पहु ।
सहुं सेयंसकुमारें णिग्गउ ताम पलंबपाणि णं दिग्गउ ।
संमुहु एंतु णिहालिउ जिणवरु णं वसुहंगणाए पसरिउ[3] करु ।
णहसरि रवि सररुहहु कयग्गहु णं जगभवणखंभु भयमयमहु[4] ।
सामि सणेह[5]भरेण भरेप्पिणु कर मउलेवि पणामु करेप्पिणु ।
सोमप्पहेण पलद्धपसंसे देवि पयाहिण तहु सेयंसे ।
मुहुं जोइयउ णेत्तसयवत्तहिं हरिसंसुयओसाकणसित्तहिं ।

घत्ता—अइप[6]सण्णमुहु होइ संभासणु पडिवज्जइ ॥
पुव्वभवंतरणेहु जणं[7]दिट्ठिए जाणिज्जइ ॥ ५ ॥

6

हेला—जिणमवलोइऊण कुंयरेण[1] लोयसारो ।
सिरिमइवज्जजंघजम्मंतरावयारो ॥ १ ॥

[2]पउद्धो असेसो सवासो दसेसो[3] ।
मुणीणं पहाणं वराहारदाणं ।

5. १MBP भणियं. २ MBP °विक्खेवणिव्वियारो. ३ MBP पसरियकरु. ४ MBP भयमयवहु. ५ MB सणेहु भरेण. ६ BP अइपसण्णु. ७ P जणादिट्ठें.

6. १ MBP कुमरेण. २ M has before this line सोमराई छंद; BPGK have सोमराई; MBPK पबुद्धो. ३ MBP सदेसो.

5 3 *a* सुरायलि मेरौ. 4 *a* मइगम्मइं मतिगम्यानि लोकजीवनकर्माणि. 9 *b* भयमयमहु भयानां मदानां च विनाशकः. 12 हरिसंसुयओसाकणसित्तहिं हर्षाश्रुमिहिकाकणासिक्तैः.

6. 3 *a* पउद्धो प्रबुद्धः.

भवे जं विइण्णं कयाणंतपुण्णं ।
समाहूयसक्कं मणे तं पि थक्कं ।
पुणो तेण उत्तं अहो हो णिरुत्तं ।
हुयं मज्झ णाणं पणायं पुराणं ।
असूई अराई अमाई अणाई ।
अमाणो अमोहो अकोहो अलोहो ।
अछेओ अभेओ अणेओ वि णेओ ।
विमुक्कंधयारो अणंगावहारो ।
पवित्तो महंतो अणंतो रुहंतो ।
असंगो अभंगो जहाजायलिंगो ।
बुहाणं विहाओ सुहाणं उवाओ ।
अहाणं विणासो महाणं णिवासो ।
अभावो असावो इमो देवदेवो ।
कयत्थो विवत्थो समत्थो पसत्थो ।
सया वंदणिज्जो इमो पुज्जणिज्जो ।
परो मोक्खगामी इमो मज्झ सामी ।
सुराहिंदपूओ इमो पत्तभूओ ।

घत्ता—जगगुरु गुरुरयणपुंजु मोणव्वइ दिव्वासउ ॥
एहु आहारणिमित्तु भमेइ समग्गपयासउ ॥ ६ ॥

४ M अजाई अमाई and adds: अणाई; B reads अजाई अमाई. ५ P वि एओ and gloss एकः. ६ M अताओ अभाओ and adds: अराओ असोओ; P अताओ अभाओ अराओ असाओ. ७ M सया. ८ MBP एहु. ९ B भणइ.

8 *a* पणायं प्रज्ञातम्; पुराणं वृत्तान्तम्. 9 *a* असुई अस्तवकः; *b* अणाई आगो दोषस्तेन रहितः. 11 *b* अणेओ वि णेओ गुणपर्यायापेक्षयानेकोऽपि द्रव्यपर्यायापेक्षयैकः. 14 *b* जहाजायलिंगो नग्नः. 15 *a* विहाओ विधाता. 16 *a* अहाणं पापानाम्; *b* महाणं तेजसाम्. 17 *a* अभावो क्रोधादिभावरहितः; असाओ सातरहितः. 21 *b* पत्तभूओ पात्रभूतः. 22 दिव्वासउ शुद्धहृदयः दिशावस्त्रधारको वा. 23 एहु एषः; समग्गपयासउ स्वमार्गो यतिमार्गस्तस्य प्रकाशकः.

7

हेला—अंबरमणिपसंडिदाणाइं देंति लोया।
ताइं इमे ण लेंति परिमुक्ककामभोया ॥ १ ॥

कण्ण लेइ जो कामें गत्थउ भूमि लेइ जो लोहें घत्थउ।
मंचयसेज्जायलइं कुभवणइं गेण्हइ जो माणइ रइरमणइं।
गाइ देहि देहि त्ति पघोसइ जो घयण अप्पाणउं पोसइ।
वित्तु लेइ जो इंदिय पुज्जइ मंसु खाइ जो पुट्ठि समज्जइ।
बंभण तावस सवसणभग्गा पावयम्म संसारहु लग्गा।
दुद्धरजीहोवत्थहिं दंडिय अप्पउ परु वि हणिवि पासंडिय।
दुक्कियभरपरियट्टणरीणा सूईमुहि णिवडंति अयाणा।
जे लेंता ते विड विड देंता णउ जाणहुं कें गुणहिं महंता।
पत्थरणाव ण पत्थरु तारइ अवस कुपत्तु भवण्णवि मारइ।
जासु अबंभारंभपरिग्गहु सरइ कया वि ण इंदियणिग्गहु।
धम्माभासु पाउ जो भावइ अण्णु वि अण्णाणिय कारावइ।
कत्थइ मिच्छामग्गि पइट्ठउ कुच्छियपत्त रिसीसहिं सिट्ठउ।
सीलें सम्मत्तेण वि उज्झिउ हवइ अवत्तु सइं जि मइं बुज्झिउ।
सद्दहाणु णव पंचहुं सत्तहुं करइ पयाहुं जिणेसपवुत्तहुं।
ईसीसि वि वउ जेण ण पालिउ तं [11]जघण्णु मइं पत्तु णिहालिउ।
मज्झिमु देसचरित्तालंकिउ सम्मइंसणि कहिं मि ण संकिउ।
[12]दूरुद्धुयसदप्पकंदप्पहिं णाणचरियसम्मत्तवियप्पहिं।
भूसिउ संचियसासयसोक्खहिं सीलगुणहिं चउरासीलक्खहिं।
उत्तमु पत्तु पउ पणविज्जइ पयहु [13]पासुयभोयणु दिज्जइ।

7. १ MBP घत्थउ. २ MB गुत्थउ; P गत्थउ. ३ P पेय खाइ. ४ MBT अवसण°. ५ MBP परु हणेवि. ६ M °परियट्टण°; P °परिवट्टण° but gloss परिकर्षण°. ७ B णं जाणहु. ८ MBP किं. ९ MB °रंभु परिग्गहु. १० MP दिट्ठउ. ११ MBP जहण्णु. १२ MBP दूरुज्झिय. १३ MB फासुय.

7. 1 °पसंडि सुवर्णम्. 3 *b* घत्थउ ग्रस्तः. 6 *a* पुज्जइ पोषयति. 7 *a* सवसणभग्गा स्वव्यसनभग्नाः. 10 *a* विडेत्यादि— विटाः ये ददति तेऽपि विटाः. 15 *b* अवत्तु अपात्रम्; 16 *a* णव तत्त्वानि; पंचहुं पञ्चास्तिकायानाम्; सत्तहुं सप्तानां पदार्थानाम्. *b* पयाहुं पदार्थानाम्. 19 *a* दूरुद्धुय° दूरोद्धूत°.

घत्ता—[14]कुच्छियवत्ति कुभोउ दिण्णु अवत्तइ णासइ ॥
[15]तेहिं पत्तहिं फलु तिविहु इय सुंदरु आहासइ ॥ ७ ॥

8

हेला—मज्झिमु मज्झिमेण अहमो अहमेण णे[1]ओ ।
उत्तमु उत्तमेण दाणेण होइ भोओ ॥ १ ॥

णिल्लोहत्तें चाएं भत्तिइ खे[2]मविण्णाणें सुद्धइ भत्तिइं[3] ।
एहिं गुणेहिं जुत्तु दायारउ मज्झण्णइ अव[4]लोयइ दारउ ।
मउलियकरयलु अइअव[5]मत्तउ अच्छइ तिविहपत्तगयचित्तउ ।
गुणवंतउ परलोयासत्तउ सो पडिगाहइ प्रंग[6]णपत्तउ ।
ठाहँ[7] भणिवि पणवियसिरु भासइ उच्चठाणि गउरविइ णिवेसइ ।
करइ चाउ संतहुं धण्णउं जणु चरणधुवणु अच्चणु पुणु पणमणु ।
मणवयतणुसुद्धिइ सुद्धासणु देइ भरंतु जिणिंदहु सासणु ।
भेसहु सत्थु अभयदाणें सहुं देइ सजीविउ चलु मण्णिवि लहु ।
बहिरंधलयहं मूयहं लल्लहं काणकुंटमंटहं वाहिल्लहं ।
सव्वभूयहियका[8]रणें गण्णें असणु वसणु दीणहं कारुण्णें ।
परमारा पाविट्ठ मुएप्पिणु णियदव्वाणुसारु सुयरे[9]प्पिणु ।
देइ ण जो घरत्थु सो केहउ घरयारउ चिडउल्लउ जेहउ ।
णि[10]यडिंभउं णियपोट्टु जि पोसइ मुवउ ण जाणहुं कहिं जाएसइ ।

घत्ता—माणसु जं णिद्ध[11]म्मउ तहिं उप्पेक्ख रइज्जइ ॥
[12]दुत्थिअम्मि अणुकंप गुणवंतउ पणविज्जइ ॥ ८ ॥

१४ MB कुच्छियपात्ति. १५ MBP तिहिं.

8. १ M णओ; BP णाओ. २ MBP खमविण्णाणइ सद्धइ भत्तिइ. ३ MBP add after this सीलवतु जिणपेगणयारउ सारासारसहत्वावियारउ. ४ MBP अवलोयइ दारउ. ५ T अपमत्तउ; ६ MP पंगणु पत्तउ; B पगणे पत्तउ. ७ MBP ठाहु. ८ MBP °कारणगण्णं. ९ MP सुमरेप्पिणु. १० MBP णियडिंभइं. ११ MBP णिद्धम्मु. १२ MBPK दुत्थियम्मि.

22 कुच्छियेत्या दि—कुपात्रे दत्त कुभोग ददाति, अपात्रे दत्त नश्यति.

8. 1 णेओ ज्ञेय.. 6 *a* °अवमत्तउ निरहंकार.. 10 *b* भरंतु स्मरन्. 12 *a* लल्लहं अस्फुटवाचाम्; *b* मटहं निरुद्यमिनः. 13 *a* गण्णें परिज्ञानेन. 14 *a* परमारा परमारकान्. 15 *b* घरयारउ गृहकारकः; चिडउल्लउ चटक..

9

हेला—इय कहिऊण तेण जुवराइणा समग्गं ।
दाययदेज्जपत्तववहारसारमग्गं ॥ १ ॥

सुइधोयदेवंगणिवसणणियत्थेण जलभरियदलपिहियभिंगारहत्थेण ।
परिदिण्णधाराजलुद्धूअतावेण सद्धम्मसंद्धावसुप्पण्णभावेण ।
भवभरणसंभरियमुणिदाणयम्मेण वरचरमदेहेण विच्छिण्णजम्मेण ।
पियजंपणालोयणुब्भूयणेहेण धरणीसतोसेण गुणरयणगेहेण ।
इसिकहियसुयसूइसंभिण्णसोत्तेण चंदकचारित्तवेंचइयगत्तेण ।
कुरुजंगलावणिवइलहुयभाएण मउमहुरणाएण सेयंसराएण ।
आओ गुरू सो ज्जि णंतेण सीसेण ठाभणिउ जिणु णमिउ पणवंतसीसेण ।
ता सग्गइ हिययम्मि रइकुमुइणीजूरु तूसविय जगणालिणु इयमलिणु रिसिसूरु
असणेण तणु ताइ णिव्वहइ तवयरणु तवयरणतावेण खंतीइ मलहरणु ।
मलहरणि संभवइ केवलु महाणाणु लयविरमु सुहुं परमु जइ जाइ णिव्वाणु ।

घत्ता—इय चिंतिवि सो थक्कु पत्तु तवेण विसुद्धउ ॥
चिरु सेयंसवसेण सेयंसें पर लद्धउ ॥ ९ ॥

10

हेला—एवं कस्स ठाइ भवणम्मि भुअणणाहो ।
केण भवंतरम्मि चिण्णो तवो अमोहो ॥ १ ॥

णवकलहोयकुंभगब्भाणिउं कुरुणाहें पल्हत्थिउ पाणिउं ।

9. १ BP °सब्भावसुपसण्ण°. २ MBP भवदिण्ण° ३ P °दाणधम्मेण. ४ MBP °सुइसुइ°. ५ MB °गोत्तेण but gloss in M भूषितं गात्रम्. ६ MBP °वणिवणिव°. ७ M सुइपरमु.

---

9. 3 *a* °णियत्थेण नेपथ्येन. 5 *a* भवभरण° भवस्मरणम्. 6 *b* धरणीस° राजानः. 7 *a* °सुयसूइ° श्रुतज्ञानसूचि . 9 *a* णतेण नम्रेण. 10 *a* °जूरु सकोचकः. 11 *a* ताइ तया तन्वा; *b* खतीइ मलहरणु क्षमया पापनाशो भवति. 12 *b* लयविरमु अविनश्वरम्. 14 सेयसवसेण पुण्यविशेषवशेन; सेयंसें श्रेयसा, पर मोक्षः.

10. 2 अमोहो सफलं परिपूर्णम्.

जससंसियरधवलियकुरुवंसें पय पक्खालिय सिरिसेयंसें ।
वंदिउ पायतोउ सुहगारउ जम्मजरामरणावइहारउ ।
इंदचंदणाइंदपियारउ उब्भासणि संणिहिउ भडारउ ।
कुसधारहिं उच्छलियतुसारहिं चंपयसिंदूरहिं मंदारहिं ।
फुल्लहिं फुल्लुंधुयझंकारहिं अक्खयहिं बहुगंधपयारहिं ।
दीवयचरुयहिं धूवंगारहिं करमरमाहुलिंगमालूरहिं ।
अंबयहलहिं जंबुजंबीरहिं पण्णहिं पूयप्फलकप्पूरहिं ।
णेउरणिहच्चुयवम्महणियलउ पुज्जिउ परमेट्ठिहि पयजुयलउ ।
पुणु पणिवाउ करेप्पिणु भावें जो छंडिउ णं वम्महचावें ।
जइवरतवसंदरिसियभंगें जो पुणु धणुहि ण णिहिउ अणंगें ।
सो उच्छुरसु णिवारियदोसहु णं सम्महुं णिउ सुतवहुयासहु ।
जुवराएं घडेण करि ढोइउ वारवार जिणणाहें जोइउ ।

घत्ता—देहालइ मणकुंडे रसु पिज्जंतउ भाणियउ ॥
मयणसरासणसारु झाणजलणि णं हुणियउ ॥ १० ॥

11

हेला—ता दुंदुहिरवेण भरियं दिसावसाणं ।
भणियं सुरवरेहिं भो साहु साहु दाणं ॥ १ ॥

पंचवण्णमाणिक्कविणिम्मिट्ठी घरपंगणि वसुहार वरिट्ठी ।
णं दीसइ ससिरविबिंबच्छिहि कंठभट्ठ कंठिय णहलच्छिहि ।

10. १ P पाय. २ M reads after this line. चदणकुकुमेहिं घणसारहिं, पयसंमलियइं तेहिं कुमारहिं, B also reads चदणकुकुमेहिं घणसारहिं, पयसमलियइं तेहिं कुमारहिं; P reads चंदणकुंकुमेण घणसारहिं, चपयसिंदूरहि मदारहिं, फुल्लहिं फुल्लंभुवझकारहिं, पय समलहियइ तेहिं कुमारहिं. ३ MBT फुल्लंधुय°; P फुल्लंधुव°. ४ MBP अक्खएहि. ५ P चरुवहिं दीवय°. ६ MP छंडिउ ण वम्महु; B खंडिउ णं वम्महु. ७ MB संमुहं. P समुहु. ७ P झाणजले but gloss ध्यानाग्नौ.

11. १ M भाणिय. २ MBP घरपंगणि.

5 *a* पायतोउ पादजलम्. 7 *a* कुसधारहिं जलधाराभिः. 8 *a* फुल्लुंधुय भ्रमराः. 10 *b* पण्णहिं पत्रैः. 12 *a* °णिह° व्याजेन. 12 *b* जो रसः. 13 *a* जइवरेत्यादि–यतिवरतपसा संदर्शितो भङ्गो यस्य तेन. 14 *b* सम्महुं णिउ उपशमं नीतः.

मोहे[3]बद्धणवपेम्महिरी विव सग्गसरोयहु णालसिरी विव ।
रयणसमुज्जलवरगयपंति व दाणमहातरुहलसंपत्ति व ।
सेयंसहु घणएण णिउंजिय एक्कहिं उडुमाला इव पुंजिय ।
पूरियसंवच्छरउववासें अक्खयदाणु भणिउं परमेसें ।
तहु दिवसहु अत्थेण समायउ अक्खयतइय णाउं संजायउ ।
घरु जायवि भरहें[4] अहिणंदिउ पढमु[5] दाणतित्थंकरु वंदिउ ।
पइं मुएवि को गुरु संमाणइ पत्तविसेस[6]दाणविहि जाणइ ।
पइं मुएवि को चिंतहुं सक्कइ परमप्पउ कहु मंदिरि थक्कइ ।
पइं मुएवि दिसिपसरियजसयरु[7] अण्णु कवणु कुरुकुलणहदिणयरु ।
जय सेयंसदेव पभणंतहिं संथुउ सुरणरवरसामंतहिं ।

घत्ता—महियलि धम्मरहासु एयइं तोसियसक्कइं ॥
जिणसेयंसकयाइं वयदाणइं[8] वरचक्कइं ॥ ११ ॥

12

हेला—धम्ममहारहो विलंबियदयावडाओ ।
एयहिं बिहिं मि वहइ णिहयंगयारिराओ ॥ १ ॥

एम भणेप्पिणु गउ भरहेसरु एत्तहि महि विहरंतु जिणेसरु ।
तिहिं णाणिहिं सुद्धें परिणामें अचलचित्तु मणपज्जवणामें ।
अड्ढाइज्जहिं दीवहिं जं जं माणसु[1] चिंतइ जाणइ तं तं ।
उज्जुयवंकहिययमुणियत्थउ हुउ पराइउ णाणु चउत्थउ ।
पंचवीसवयमायउ भावइ तिहिं गुत्तिहिं अप्पाणउं गोवइ ।

३ MBPT मोहणिद्ध°. ४ M adds after this line:–अहिय पक्ख तिण्ण सविसेसें । किंचूणे दिण कहिय जिणेसें । भोयणवित्ती लहीय तमणासें । दाणतित्थु घोसिउ देवीसें. ५ MBP पढम°. ६ MBP पत्ताविसेसु. ७ MB °जयसरु. ८ MBP तवदाणइं.

12. १ M माणस; BP माणुसु.

11. 5 *a* मोहे त्या दि–मोहेन बद्धा नवप्रेमणि सति स्वपतौ ह्रीरिव लज्जेव. 9 *a* अत्थेण समायउ अन्वर्थकम्; *b* णाउं नाम. 15 धम्मरहासु धर्मरथस्य.

12. 1 विलंबियदयावडाओ अवलम्बदयापताकः. 2 णिहयंगयारिराओ निहताङ्गजारिराजः. 7 *a* पंचवीसे त्या दि–एकैकस्य हि व्रतस्य स्थैर्यार्थं पञ्च पञ्च भावनाः पञ्चविंशतिव्रतमातरः.

इरियादाणु किं पि णिक्खेवणु करइ कहिं मि कयसुकयालोयणु।
रोसु लोहु भउ हासु पणासइ संगे विवज्जइ सुत्तु जि भासइ।
मिउ जोग्गउ अणुणायउ गेण्हइ भत्ति पाणि संतोसु जि मण्णइ।
णारीकहदंसणसंसग्गहु करइ णिवित्ति पुव्वरइरंगहु।
भुंजइ कहिं मि सुणिव्वियडिल्लउ बंभचेरु थिरु धरइ गुणिल्लउ।

घत्ता—इंदियखलहं मिलंतु परमजोइ मेलावइ॥
खुब्भंतउ मणडिंभु रिसि णाणें खेलावइ॥ १२॥

13

हेला—हो हे चित्तडिंभ मा रमसु णारिरूवे।
भमिऊणं दड त्ति पडिहीसि मोहकूवे॥ १॥

जीवाजीयवत्थुभेयालइ करणपोसणत्थि विरसालइ।
संजमवायवुड्ढजमसिहिसिहु णिद्धंधसु णिक्कामसु णिप्पिहु।
दिहिखमझाणजोयकयसंगहु वीसदुसंखपरीसहभरसहु।
दंसण णाण चरिय तव वीरिय आयार वि जे पंच समीरिय।
तेहिं भडारउ अणुदिणु वड्ढइ हिययहु तिण्णि वि सल्लइं कड्ढइ।
अणसण वुत्तिसंख ओमोयरु रसपरिचाउ कालजोयायरु।
इय बाहिरतवु चरइ सुदारुणु अंतरंगसुद्धिहि सो कारणु।
वेज्जावच्चि विणइ सज्झायइ तणुविसग्गि पच्छित्तणिओयइ।
अब्भंतरतवि अप्पउ जोयइ धम्मज्झाणु चउविहु णिज्झायइ।

२ MBP सगु. ३ B मेळावइ. ४ BP खेळावइ.

13. १ MBB भमिऊण. २ MBP जीवाजीव°. ३ MBP °जमासिहिं सहुं. ४ P णिद्धधस्सु; T गिद्धधंसु and gloss निष्परिग्रहः. ५ P हिययहि. ६ P अणसणु. ७ MBP वित्तिसंख ओमोयरु. ८ MP तव. ९ MBP जोवइ.

9 *b* सुत्तु जि भासइ आगममेवान्तर्जल्पेन परामृशति. 10 *a* मिउ मित परिमितम्; अणुणायउ अनुज्ञातम्. 12 *a* सुणिव्वियडिल्लउ सुष्ठु निर्विकृताहारम्. 13 मेलावइ ध्याने मेलयति.

13. 3 *a* °भेयालइ °भेदाश्रये, *b* करण° पञ्चकुलमिन्द्रियाणि च, विरसालइ कुलपक्षे विशिष्टो रसो विरसः, नारीपक्षे विरामविरसता. 4 *a* संजमेत्यादि–संयमवातेन वृद्धा वृद्धिं नीता यमाग्निशिखा व्रताग्निज्वाला येन; *b* णिद्धधसु निष्परीषहः. 8 *b* कालजोयायरु त्रिकालयोगादरः. 10 *b* तणुविसग्गि कायोत्सर्गे.

आणाविचउ णामणिग्गंथउ पुणु अवायविचयं पि महत्थउ ।
अवरु विवायविचउ वित्थारइ थिरु संठाणविचउ अवहारइ ।

घत्ता—इय विहरंतु धरग्गि सिद्धिवरंगणरत्तउ ॥
वरिससहासें णाहु पुरिमतालु संपत्तउ ॥ १५ ॥

14

हेला—तो दिट्ठं लवंगलवलीलयाहरालं ।
अलियालं पियालमालूरसायसालं ॥ १ ॥

वणु विडंगणेवत्थहिं छइयउ पियमाणुसु व सरसकंटइयउ ।
णिच्चासोयउ कंचणवंतउ बंधुपुत्तजीवेहिं महंतउ ।
रेहइ कुलु व समुण्णइपत्तउ रक्खसपुरु व पलासणिउत्तउ ।
सुरभवणु व रंभाइ पसाहिउ उज्झाउ व सुयसत्थहिं सोहिउ ।
सुइवयणु व चंगउ णिप्फलु संगामु व वणवियसियउप्पलु ।
णयणु व अंजणेण सोहिल्लउ थणजुयलु व चंदणिण पियल्लउ ।
रमणिणिडालु व तिलयालंकिउ बहुबाहु व करवंदहिं संकिउ ।
तालें तूरु व सज्जें गेउ व मद्दें सोहइ णिवइणिकेउ व ।

१० B अवायविरयं.

14. १ B तो. २ M विडगणे कत्थहि, B विणंगणेवच्छहि. ३ MBP °माणुस. ४ P सरसु. ५ MB णिच्चासोय. ५ P समुण्णय°. ६ MBP सुयसत्थें. ७ MP रमणिणिलाडु. ८ P मंडें.

12 *a* आणाविचउ आज्ञाया द्वादशाङ्गाद्यागमस्य विचयस्तदर्थानां चेतासि स्वरूपपरिभावनम्, णामणिग्गंथउ शब्दोच्चारणरहितम्, *b* अवायविचय मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः कथं जीवस्यापायः स्यादिति चिन्तनमपायविचयः; महत्थउ संवरनिर्जरालक्षणमहाप्रयोजनप्रसाधकम्. 13 *a* विवायविचउ कर्मविपाकपरिचिन्तनम्; *b* संठाणविचउ लोकसंस्थानपरिचिन्तनम्. 14 धरग्गि धराग्रे.

14. 2 अलियालं भ्रमरयुक्तम्. 3 *a* विडंगणेवत्थहिं वनपक्षे, विडङ्गवृक्षा एव नेपथ्यं आभरणानि तैः; प्रियमनुष्यपक्षे, विटानां कामुकानामङ्गनेपथ्यैराभरणैर्नखादिव्रणैर्वा. 6 *b* सुयसत्थहिं शुकसमूहैराकर्णितशास्त्रैश्च, अथवा, श्रुतानि शास्त्राणि यैश्छात्रैस्तैः. 7 *b* वणवियसियउप्पलु जले विकासितं पद्म, अन्यत्र व्रणे विकासितमूर्ध्वमुच्छासितं पलं मांसं यत्र. 9 *b* बहुबाहु सहस्रबाहुः; करवंदें हस्तवृन्देन करवंदीवृक्षैर्वा; संकिउ संकीर्णं सेवितम्. 10 *a* सज्जें सर्जरसवृक्षेण षड्जेन च; *b* मद्दें बलात्काररणेन.

णायवेल्लिरुद्धउ पायालु व रत्तयंददाविरउ वियालु व ।
अवसहु व कइंवंदें[९] लुक्कउ असि व सुणीरें णेय विमुक्कउ ।
महिमाणिणिमुहुं[१०] व महुलित्तउ सरयणभमियभुयंगहिं भुत्तउ ।

घत्ता—कुसुमामोयमिसेण जं संमुहउं[११] पवंचइ[१२] ॥
णाणापक्खिसरेहिं पहुहि थोत्तु णं सुच्चइ ॥ १४ ॥

15

हेला—तहिं णंदणवणम्मि णग्गोहरुक्खमूले ।
आसीणो सिलायले णिम्मले विसाले ॥ १ ॥

णवकणियारकुसुमरयवण्णउ सुयरइ[१] पहु पलियंकणिसण्णउ ।
णत्थि सोक्खु संसारि विसिट्ठउ सोक्खायारु दुक्खु मइं दिट्ठउ ।
णट्ठु[२] अजिण्णणासु णउ चंगउ आहरणें भारिज्जइ अंगउ ।
कासु देहघट्टणु[३] रीणत्तणु गेयमिसेण रुयइ[४] मूढउ जणु ।
तं सिवसारु किं पि भाविज्जइ जेण ण जीउ गब्भि उप्पज्जइ ।
सोवेगाहु[५] वीरिउ सुहुमत्तणु सहुं समत्तें णाणु सदंसणु ।
अगरुयलहुयउ[६] अव्वाबाहउ झायइ वसुविहु सिद्धगुणोहउ ।
एम सामि संभावियमग्गउ अप्पमत्ति गुणठाणि व लग्गउ ।
तहिं दहपयडिहिं मुक्कउ जावहिं खाणि अउव्वु आरूढउ तावहिं ।
लग्गउ सुक्कझाणि पहिलारइ भेयवंति ससुए सवियारइ ।
इसिणा संठिएण सविहत्तउ अणियट्टिहि[७] छत्तीस जि जित्तउ ।

९ MBP कइवंदहिं. १० MBP °मुह इव. ११ M समुहउ. १२ B परचइ.

15. १ MP सुमरइ. २ M णट्ठु व जिण्ण°. B णट्ठु अजिण्ण°. ३ MBP °घट्टण°. ४ MBP रुवइ. ५ P सोवग्गहु. ६ MBP अगुरुग°. ७ MP अण्णियट्टिहि.

---

13 *b* °भुयंगहिं सर्पैर्विटैश्च.

15. 4 *b* सो क्खा या रु सौख्याकारम्. 2 *a* ण ट्ठु अ जि ण्ण णा सु नाश्यं अजीर्णस्य नाशकम्. 7 *a* सि व सा रु सौख्यसारम्. 9 *b* व सु वि हु सि द्ध गु णो ह उ अष्टविधः सिद्धगुणसमूहः--अवगाहः, वीर्यम्, सूक्ष्मत्वम्, समत्वम्, ज्ञानम्, दर्शनम्, अगुरुलघुत्वम्, अव्याबाधः इति. 10 *a* सं भा वि य म ग्ग उ सम्यक्परिभावितमोक्षप्राप्त्युपायः. 11 *a* द ह प य डि हिं अनन्तानुबन्धिचतुष्कादिदशप्रकृतिभिः. 12 *b* भे य वं ति वितर्कविचारलक्षणभेदयुक्ते; स सु ए श्रुतज्ञानबलेन.

सुहुमसंपरायउ पावेप्पिणु　　　　तेण जि झाणें लोहु हणेप्पिणु ।
पुणु जायउ उवसंतकसायउ　　　　कययहलेण जलु व मुणिरायउ ।
खीणकसायचरिउ[8] पडिवण्णउं　　　　बीयउ सुक्कझाणु अवइण्णउं ।
तं सवियक्कु एक्कु[9] सवियारउ[10]　　　　सोलहपयइरयक्खयगारउ ।

घत्ता—इय तेसट्ठिपईहिं पहयहिं णाणसरूवउ ॥
परमप्पयहु सहाउ अमणु अणिंदिउ हूवउ ॥ १५ ॥

16

हेला—ता दिट्ठं जिणेण तिजगं[1] पि एक्कखंधं ।
तिमिरुज्जोयवज्जियं गयणममियरंधं[2] ॥ १ ॥

कमसाहणपडिखलणविहीणें　　　　एक्कें भावाभावपमाणें ।
सुहुमइं दूरंतरियइं दव्वइं　　　　पेक्खइ[3] जाणइ सहसा सव्वइं ।
भाणु व भूरिकिरणसंताणें　　　　सोहइ केवलि केवलणाणें ।
तहिं अवसरि जिणणाहभएण[4] व　　　　वीस तिण्णि अवरइं भणियइं णव ।
असहंताइं व गव्वु[5] अणिंदहं　　　　आसणाइं कंपियइं सुरिंदहं ।
सुरतरु साहाकर णच्चंति व　　　　कुसुमइं संतोसेण मुयंति व ।
संजायहिं[6] दसदिसिवहपूरहिं　　　　कप्पि कप्पि घंटाटंकारहिं ।
कण्णवडिउ णउ काइं वि सुम्मइ　　　　जोइसवासहिं विणिहय[7]दुम्मइ ।
णिग्गय सीहणाय गयदिग्गय　　　　वंतरेहिं[8] पडुपडह समाहय ।
संखझुणीहिं णाय संखोहिय　　　　अण्णें[9] अण्ण देव संबोहिय ।

८ P छंडिवि. ९ MBP °वडिउ. १० MBP अवियारउ.

16. १ MBP तिजगं. २ MBP add after this: फग्गुणमासि किण्हएयारसि, उत्तराढरिक्खि (P उत्तरसाढि रिक्खि) जइ जाणसि । तहिं उप्पण्णु णाणु परमेट्ठिहि, लोयालोयपयासणसेट्ठिहि. ३ MBP जाणइ पेच्छइ. ४ MB जिणु णाह°. ५ MB गव्व. ६ MB सइं जायहिं. P सहजायहिं. ७ P विणिहिय° but gloss विनिहत°. ८ MBP वितरेहिं. ९ MBP अण्णहिं.

15 *b* कययहलेण कतकफलेन; मुणिरायउ मुनिराजः. 17 *a* सवियक्कु सवितर्कम्; *b* सोलहेत्यादि-षोडशप्रकृतिरजःक्षयकारकम्.

16. 2 अमियरंध अलोकाकाशम्. 5 *a* कमेति—क्रमेणार्थसाधनानीन्द्रियाणि तैः प्रतिस्खलन् युगपदशेषार्थपरिच्छित्तिप्रतिबन्धस्तेन विहीनेन रहितेन. 6 *b* वीसेत्यादि–द्वात्रिंशदिन्द्रा इत्यर्थः.

घत्ता—उग्गइ णाणससंकि अमियगुणेहिं पउंजिउ ॥
बहुविहतूररवेण जगसमुद्दु णं गज्जिउ ॥ १६ ॥

17

हेला—ता सक्केण चिंतिओ पीणियालिविंदो ।
संपत्तो जवेण एरावओ गइंदो ॥ १ ॥

हारणीहारसुरसरितुसारप्पहो अद्धयंदाहविद्दुमविहाणिहणहो ।
गलियकरडयलमयकसणगंडत्थलो अमरगिरिसिहरसंकासकुंभत्थलो ।
कामचिंतागई कामरूवी चलो पवलपडिवक्खबलदलणदुम्महबलो ।
कंठकंदलपएसम्मि परिवट्टुलो दसणजुयलेहिं णयणेहिं महुपिंगलो ।
तंबतालूमुहो चारुतुच्छोयरो दीहरकरंगुलि सरो व्व वरपुक्खरो ।
दीहयरमेहणो दीहउट्ठासओ दीहयरवालही दीहणीसासओ ।
सवणपल्लवपवणपाडियमहुलिहउलो चलणपडिवलणखलखलियपयसंखलो ।
चावबंसो महारावदुंदुहिसरो घुलियघंटाझुणी तसियदिसकुंजरो ।
मुक्कसिक्कारकणसित्तसुरमेलओ लक्खणसुवंजणणिरंजणगुणालओ ।
घित्तसिंदूरधूलीरयालोहिओ कक्खणक्खत्तगेज्जावलीसोहिओ ।
लक्खजोयणमहावड्डिमावड्डिओ दंसियारेहिं वीरेहिं परियड्डिओ ।
झत्ति कल्लाणपयई समुद्धाइओ जत्थ संकंदणो तत्थ संपाइओ ।

घत्ता—मयणिज्झरण झरंतु चमरहंससकुलसुंदरु ॥
णं मायंगमिसेण आयउ बीयउ मंदरु ॥ १७ ॥

१० MBP अमय°.

17. १ P अद्धइंदाह°. २ P °करडयलकसण°. ३ MB दीहरंगुलि°. ४ MBP सरो व्व करपुक्खरो. ५ MBPT °मेहुणो. ६ M सवणपवणाहयपडियमहुलिहउलो; B सवणपडिवयणहयपडिय°; P सवणपवणाहयपाडियमहु°. ७ B °पडिचलणखलिय°. ८ M °दिसिकुजरो. ९ MP सुविंजण°; B °सुवेंजण°. १० MBP सपाइओ.

---

13 अमियगुणेहिं अमृतगुणैरनन्तगुणैश्च.

17. 2 जवेण वेगेन. 3 *b* विद्दुमविहाणिहणहो विद्रुमप्रभामदशनखः. 4 *b* °संकास° °सदृशः. 7 *b* °पुक्खर° शुण्डाग्रम्. 8 *a* °मेहणो शिश्नम्, °उट्ठासओ ओष्ठाश्रयाश्चिबुकम्; *b* °वालही पुच्छम्. 14 *b* संकंदणो इन्द्रः, संपाइओ संप्राप्तः.

18

हेला—बत्तीसवरवयणसोहिल्लओ रसंतो ।
वयणविवरविणिग्गयंट्ठट्ठदंतवंतो ॥ १ ॥

दंति दंति सरु सरि सरि पोमिणि पोमिणि जा तूसावियगोमिणि ।
पोमिणियहि पोमिणियहि पोमइं तीस दोण्णि छडेयणरवरम्मइं ।
णलिणि णलिणि तेत्तियइं जि पत्तइं णावइ जिणवरलच्छिहि णेत्तइं ।
पत्ति पत्ति एक्केक्की अच्छर णच्चइ हावभावरसकोच्छैर ।
तं पेच्छिवि सुच्छायउ सेंधुरु सच्छरु सामरु चडिउ पुरंदरु ।
इंदसमिंदसमाण जि साहिय तायत्तिंस किर मंति पुरोहिय ।
परिसदेव देवेसकुमारा आदरक्ख पुणु असिवरधारा ।
चलिय अणीयतियससेंणा इव लोयवाल दुग्गंतणिवा इव ।
खिब्भिससुर पाढहिय पियारा अभिओय वि चलिय कम्मारा ।
अवर पइण्णय पउर पयाणिह रिक्ख मियंक सूर तारा गह ।
जक्ख रक्ख गंधव्व महोरय किंणर किंपुरिसा वि पिसायय ।
भूयगरुडदीवुवहिकुमार वि अग्गिवाउतडिथणियकुमार वि ।
दिक्कुमार तवणीयकुमार वि णायकुमार वि असुरकुमार वि ।
आइय आवेंतहं सविमाणहुं पेल्लावेल्लि जाय णहि जाणहुं ।

घत्ता—संदाणियउ गयहिं हरिणकलंकु अजुत्तउ ॥
ससि करडयलणिहड्डु मयंचिक्खल्लें लित्तउ ॥ १८ ॥

18. १ MBP °ट्ठट्ठदंतो. २ MB छडयणरविं रम्मइं. ३ MB °कुच्छर. ४ MBP सिंधुरु. ५ MB इंदमहिंदसमाण. ६ MBP °सेणावइ. ७ MB णिवावइ; P णिवासइं. ८ MBP मयंक. ९ MB आवतें; P आवेंतहुं and gloss आगच्छताम्. १० K °चिक्खलें.

18. 3 *b* °गोमिणि लक्ष्मीः. 4 *b* छडयण° षट्चरणो भ्रमरः. 6 *b* °कोच्छर दक्षा मनोज्ञा वा. 8 *a* इंदसम इन्द्रसमाः; इंदसमाण इन्द्रस्य सामानिकाः 9 *b* आदरक्ख आत्मरक्षकाः. 14 *a* उवहि-कुमारा; उदधिकुमाराः. *b* थणियकुमारा मेघकुमाराः. 16 *a* पेल्लावेल्लि ठेलाठेलीति देशी; *b* जाणहुं यानानाम्. 17 संदाणियउ संघट्टितः.

19

हेला—अज्जि वि सो सुहाइ तेणं य कालियंगो।
जिणजत्ताहलेण मलिणो वि को ण तुंगो॥ १ ॥

को वि भणइ मृगु किं पहि ढोयहि वग्घु महारउ पंतु ण जोयहि।
को वि भणइ भो हत्थि म चोयहि जाउ सीहु किं मुहुं अवलोयहि।
को वि भणइ लइ अच्छमि लग्गउ हंसहु पक्खु वलहें भग्गउ।
को वि भणइ किं मूसउ चालहि महु मज्जारु पंतु ण णिहालहि।
को वि भणइ मा वाहहि विसहरु पेक्खहि किं ण णउलु कररुहकरु।
को वि भणइ भो सणियउ चल्लहि चलेंउ रिंछु गवएण म पेल्लहि।
को वि भणइ संकडि किं पइसहि सरहें महुं सारंगु म तासहि।
को वि भणइ आवेहि समिच्छउ पूसउ पूसएण सहुं गच्छउ।
मोरें मोरु सवक्खीहूयं जाउ उलूवउ समउ उलूयं।
को वि भणइ वेसाणरदूरें वहउ वरुणु किं एत्थ वियारें।
को वि भणइ मारुय तुहुं ओसरु मा भंजहि मेरउ जलहरतरु।
को वि भणइ बोलउ आहंडलु पविरलतियसु होउ णहमंडलु।
पच्छइ पुणु अम्हइं जाएसहुं जिणचरणारविंदु पणवेसहुं।

घत्ता—काइ वि देविइ लइयउ करि णीलुप्पलु दीसइ॥
मउडुग्गयहिं सिएहिं ससिमणिकिरणहिं विहसइ॥ १९॥

20

हेला—अवरा सुरविलासिणी गहियकुसुममाला।
णं वालासरूविणी मयणसत्थसाला॥ १ ॥

19. १ MBP अज्ज. २ MB तेणेय. ३ MBP मिगु. ४ MB जासु. ५ M महुं. ६ MBP मज्जारउ. ७ MBP चरउ. ८ MB समुच्छउ, P सइमुच्छउ, but gloss सम्यगिच्छामि. ९ MBP अम्हइं पुणु.
20. १ MBP सुरूविणी.

19. 1 तेण य तेन गजमदेनैव. 8 *a* भणियउ शनैः. 16 *a* समिच्छउ अहं सम्यगिच्छामि. 17 सिएहिं सितैः शुक्लैः.

अवरेक्का वि सचंदण दीसइ — णं मलय[2]इरिणियंबवणासइं[3]।
सोहइ अवर वि कुंकुमपिंडें — पुव्वदिसा इव सिसुमत्तंडें।
अवर सदप्पण णं मुणिवरमइ — अवर मयरचिंधें सरि णं रइ।
अक्खयधारिणि णं मोक्खहु सहि — थणदुहडी णं सुहधणाणिहि महि।
अवर सुसेयदेह णं सुरसरि — अवर सहंसमोर णं गिरिदरि।
मलविरहिय अवर वि विज्जा इव — अवर सुरहि पप्फुल्लियजाइ व।
णच्चइ अवर सरसु भावालउ — गायइ अवर कूडताणा[4]लउ।
वायइ अवर तंतिवज्जंतरु — वण्णइ अवर परमतित्थंकरु।
एमआसण्णपसाहियवयणहि — अच्छरकोडिहिं चलमृ[5]गणयणहिं।
सोहम्माहिउ सत्तावीसहि — ईसाणु वि परिमिउ चउवीसहि।
एम देव संचल्लिय जावहिं — धणएं समवसरणु किउ तावहिं।
इंदाणइ तं णिम्मिउं जेहउ — मइं जडेण किं सीसइ तेहउ।

घत्ता—बारहजोयणरुंदु हरिणीलें तलु बद्धउ ॥
परिवट्टलउ विसुध्दु धूलीसालउ णँद्धउ[6] ॥ २० ॥

21

हेला—मोत्तियदसणहसियसुरणाहचावलीलो।
रयणपंसु[1]विणिम्मिओ सहइ धूलिसालो ॥ १ ॥

सुयपिच्छ[2]च्छवि कहिं मि विरेहइ[3] — कत्थइ अंजणपुंजु व सोहइ।
कत्थइ लोहिउँ संझाराउ व — कत्थइ पंडुरु कुंदणिहाउ व।
अब्भंतरि जगईउ पहाणउ — ताउ होंति सोलह सोवाणउ।

२ MB मलयगिरि°. ३ MBPT add after this line: का वि गहियकत्थूरय (P कत्थूरिय) वरइ, सामलंगि णावइ घणघणतइ (B घणवणतइ); T also notes a *p*: घणघणतइ ति पाठे निबिडमेघपंक्तिः. ४ MP °तालालउ. ५ MBP °मिग°. ६ B णद्धउ.

21. १ P पसुणिम्मिओ. २ MB °पिंछ; P पुंछ. ३ MBP सोहइ.

20. 3 *b* °वणासइ वनस्पतिः. 6 *b* थणदुहडी उन्नतस्तनी. 8 *b* सुरहि सुरभिः. 9 *b* कूडताणालउ कूटतानालयं विस्मृततानमाना. 10 *a* वज्जंतरु वाद्यविशेषः. 14 *a* इंदाणइ इन्द्रादेशेन. 16 °सालउ प्राकारः; णद्धउ वेष्टितः.

21. 2 रयणपसु° रत्नधूलिः. 4 *b* °णिहाउ निवहः. 5 *a* जगईउ उपर्युपरि त्रीणि पीठानि.

चउगोउरभूसियउ तिसालउ पसरियणाणामणियरजालउ ।
माणखंभ ताहुप्परि संगय सँधय सँचामर सघंटा णं गय ।
चउहुं मि दिसहिं चयारि समुण्णय दंसणमेत्तेण जि हयजयमय ।
अरुहणाहपडिमापरिवारिय फणिदाणवमाणवजयकारिय ।
पुणु वाँवीउ सकमल ससलिलउ खगमाणियउ णाइं खगमहिलउ ।
तीररयणकरमंजरिदित्तउ चउपइयापरियम्मविचित्तउ ।
कुवलयधारिउ णं णिवसत्तिउ भमियरहंगउ णं रहजुँत्तिउ ।
दिसधाइयपाणियकल्लोलउ पुणु खाइयउ रमियझसमालउ ।

घत्ता—पहसियसररुहपर्हि वाउग्गयतिर्गिछिर्हि ॥
परिहउ णाइं णियंति देवागमणु चलच्छिर्हि ॥ २१ ॥

22

हेला—जँहिं महिउ रईए हंसीहिं मत्तहंसो ।
सुरवहुकँरिणियाहिं सुरहत्थिहत्थफंसो ॥ १ ॥

पुणरवि अंतरि णवदुमवेल्लिउ कुसुमालउ णं वम्महभल्लिउ ।
पँत्तिहिं रत्तउ णं वरवेसउ फलणमियउ णं सुहिपरिहासउ ।
कंटइयउ णं पिययममिलियउ णच्चंति व मारुयसंचलियउ ।
णं वरकइवायउ कोमलियउ लाडालावहुं पासिउ ललियउ ।
वित्थरियउ अहिणवरसभारउ णं कामुयमईउ सवियारउ ।
का वि वेल्लि तहिं वेढइ कंचणु सयल वि णारि समीहइ कंचणु ।
लग्गी का वि ललंति असोयइ जिँह तृय तिह किर रमइ असोयइ ।

४ B मवय. ५ MBK मचमर. ६ MBP वावियउ. ७ M णिवजुत्तिउ; B °जोत्तिउ. ८ M तिंगिच्छिहिं; B तिग्गिछिहिं; P तिगिछहिं.

22. १ P जाहिं and gloss यासु खातिकासु. २ M हंसहिं. ३ MBP कराणियाहिं. ४ MBP पत्तहिं. ५ MB जिह तिह किर; P जिह तिय तिह and gloss यथा स्त्री; K तृय but corrects it to तिय.

10 *a* वावीउ वाप्यः. 11 *a* °करमंजरि° किरणसंघातः; *b* चउपइया° चतुष्पथिकाः चतुर्दिक्सोपानाः. 12 *b* °रहंगउ रथाङ्गचक्रं चक्रवाकश्च; रहजुत्तिउ रथयुक्तयः. 15 णियंति पश्यन्ति.

22. 1 महिउ वाञ्छितः; रईए रतिनिमित्तम्. 6 *b* लाडालावहुं लाटालंकारालापमिव. 7 *b* सवियारउ विचारसहिताः, अन्यत्र सविकाराः. 8 *a* कंचणु चम्पकवृक्षः.

लच्छी का वि गंपि पुण्णायहु होई णियंबिणि फुडु पुण्णायहु ।
क वि मायंदहुं संगु ण संचइ णिवरोहिणिहि लील णं संचइ ।

घत्ता—किसलयदलफलगोंछुं चलचंचुइ णिल्लूरइ ॥
अमरु कीरवेसेण तेत्थु को वि रइ पूरइ ॥ २२ ॥

23

हेला—चिंतियवेसधारिणो जणियकामभावा ।
वेल्लीवणलयाहरे जहिं रमंति देवा ॥ १ ॥

पुणु हिरण्णरइयउ रइरिद्धउ णं जिणेण वयपरियरु बद्धउ ।
अप्पवेसु णं कामकडक्खहु गुरुपायारु पारु णं दुक्खहु ।
जहिं चउगोउराइं संविहियइं जहिं बहुमंगलदव्वइं णिहियइं ।
अट्ठोत्तरसयसंखासहइं णव वि णिहाणइं हयदालिद्दइं ।
तहिं विंतर पडिहारसमत्था भीयरकुलिसगयासणिहत्था ।
पुणु पणिहिउ उहयम्मि विसालउ चउदिसु दो दो णाडयसालउ ।
ताउ तिभूमिउ णवरसजुत्तउ णाइं पउत्तिउ सुकइपउत्तउ ।
बहुवज्जउ वइरायरभूमिउ आयउ णं ओलग्गहुं सामिउ ।

घत्ता—उहयदिसहिं कुहिणीहि पुणु वि कया वि ण णिट्ठिय ॥
दो दो दिण्णसधूव तहिं धूवहड परिट्ठिय ॥ २३ ॥

६ MBP अवसें णारि होइ पुण्णायहु. ७ BP खवइ. ८ M अंचइ. ९ B गोच्छु. १० MBP अमरु वि कीरमिसेण.

23. १ B वल्लीवण°. २ MT पणिही; BP पणहीउ. ३ MBP सुकइणिउत्तउ. ४ MB सुधूय; P सुधूवा. ५ M धूवहडण.

10 *b* पुण्णायहु पुरुषप्रधानस्य. 11 *a* मायंदहुं वल्लीपक्षे आम्राणाम्, अन्यत्र मा लक्ष्मीश्चन्द्रश्च तयोः; *b* णिव° चन्द्रः.

23. 4*a* अप्पवेसु अप्रवेशः. 8 *a* पणिहिउ मार्गाः. 9 *a* तिभूमिउ त्रिभूमियुक्ता. 10 *a* बहुवज्जउ बहुवादित्रा बहुहीरकाश्च. 11 कुहिणीहि मार्गस्य. 12 दिण्णसधूव दत्तसधूपाः; धूवहड धूपघटाः.

24

हेला—दीसइ गयणमंडले णीलधूमरेहा ।
णं जिणकम्मकालिया भमइ मुक्कदेहा ॥ १ ॥

पुणु खयरामररामारमियइं चउणंदणवणाइं परिभमियइं ।
वणि वणि विमलइं सरिसरपुलिणइं कीलागिरिवरकेलीभवणइं ।
चउगोउरतिसालपरियरियउ पीढु तिमेहलु मणिविप्फुरियउ ।
तित्थु असोउ असोयवणंतरि तहु पडिमाउ चयारि दियंतरि ।
कोहमोहमयमाणें चत्तउ सीहासणछत्तत्तयजुत्तउ ।
अत्थि अणेयदेवकयपुज्जउ णिहयणिरंगउ णिरु णिरवज्जउ ।
संझा इव सुवण्णरुइरोइय पुणरवि चउदुवारवणवेइय ।
पुणु दिसि दिसि दह धय सुरसंथुय थिय गयणयललग्ग पवणुद्धुय ।
मालावत्थमोरकमलंकहिं हंसगरुडहरिविसकरिचक्कहिं ।
भूसियपडिधयपहपइरिक्कहु अट्ठोत्तरु सउ सउ एक्केक्कहु ।

घत्ता—अण्णहु कासु तिलोए सोहइ णहि घोलंतउ ॥
कुसुममालधउ तासु कुसुमाउहु जें जित्तउ ॥ २४ ॥

25

हेला—कहइ व किंकिणीण घोसेण घोलमाणो ।
अहमिह सकुसुमो वि ण हु होमि कुसुमबाणो ॥ १ ॥

देव देव मा मद्दु रूसेज्जसु कुसुमकरालहु करुण करेज्जसु ।
जो अंबरु तवचरणि ण भावइ अंबरचिंधु तासु धुंवु आवइ ।
जो सिहिवेसु कया वि ण इच्छइ सिहिजयंति सो अवसें पेच्छइ ।
जो णिवकमलहि होइ परंमुहु तहु कमलद्धउ णिच्छउ संमुहु ।

24. १ MBPT add after this: कंकेलीचंपयसत्तयलहिं, संछण्णहिं साहारहिं सरलहिं. २ MBP राइउ. ३ MBP वेइउ.
25. १ MBP धुउ.

24. 12 *a* °प इ रि क्क हु प्रचुरतरस्य.
25. 5 *a* सि हि वे सु स्त्रियाः वेषः *b* °ज यं ति पताका ध्वजः.

परमहंसु जो सव्वउ बुज्झइ हंसु तासु धइ केम विरुज्झइ ।
अमयबंभपउ जो जइ दावइ विणयासुयवडाय सो पावइ ।
सीहेणेव जेण वणु सेविउ सीहचिंधु तहु केण ण भाविउ ।
जेण ण पसु घाइउ णियमग्गइ तासु जि वसहु थाइ चिंधग्गइ ।
पसुवइ सो जि भडारउ वुच्चइ दुट्ठु अवरु किं अप्पउ सुच्चइ ।
जो पंचिंदिय दुद्दम पीलइ पीलु तासु धयवडु अणुसीलइ ।
मोहचक्कु जें चप्पिवि चूरिउ चक्कुं चिंधु तहु होइ अवारिउ ।

घत्ता—पुणु पायारु विचित्तु चउदुवारु सुपसत्थ ॥
जहिं थिय णायकुमार मरगयदंडविहत्थ ॥ २५ ॥

26

हेला—पुंणु वि धूवदोहडी पवरणट्टसाला ।
अहिणवभावसोहिया ताउ णवरसाला ॥ १ ॥

उव्वसिरंभतिलोत्तिमणामउ जहिं णडंति णियसाहिवरामउ ।
पुणु दीहर दहविह कप्पद्दुम दरिसियभोयसार णिरु णिरुवम ।
पुणु वेइय कलहोयहु केरी पियकंता इव सुहइं जणेरी ।
पुणु वि दुवारइं पुण्णपवित्तइं दरिसावियबहुमंगलवत्तइं ।
णिच्चु जि कीलियसुरसंघायहं भंभाभेरिपडहणिणायहं ।
पुणु पओलि लंघिवि पासायहं पंति हारतारासुच्छायहं ।
पुणु थूहइं मणितोरणमालउ पुणु फलिहमउ सालु सुविसालउ ।
मणुउत्तरगिरि व्व गरुयारउ कप्पदेवपरिरक्खियदारउ ।
सुद्धायासफलिहसंपत्तिउ तहु आलग्गिवि सोलह भित्तिउं ।

१ MBP चक्कचिंधु.

26. १ MBP पुणरवि धूयदोउटी. २ B कलहोइय. ३ MBP णिण्णायहं. ४ MBP पुणु तोरण°. ५ B तित्तिउ.

8 *b* विणयासुय° गरुडः. 11 *a* पसुवइ पशुपतिः शिवः.

26. 1 °दोहडी द्विघटी घटद्वयम्. 2 अहिणवेत्यादि उव्वसिरंभादीनां विशेषणम्. 5 *a* कलहोयहु सुवर्णस्य. 9 *a* थूहइ रत्नस्तूपाः;

घत्ता—तहिं मंडवमज्झत्थु वेरुलिएहिं समारिउ ॥
सोलहपयठवणेहिं पीढु सुहाइ णिरारिउ ॥ २६ ॥

27

हेला—चउदिसु तासु उवरि कल्लाणदविणसारा ।
जक्खसुराहिवा वि सिरिधम्मचक्कधारा ॥ १ ॥

अवरु हिरण्णवीढु तहु उप्परि अट्ठकेउपरिमिउ पयडियसिरि ।
रयणरहंगदुरयगोधारिहिं आरणालसुसिचयहरिणारिहिं ।
उरयवइरिदामयतणुअंकहिं सोहइ धयहिं गलियमलपंकहिं ।
पुणु वि तितीरु रइउ पीढुल्लउ तासुप्परि सीहासणु भल्लउ ।
जंबुण्णयचामीयरघडियउ विमलु समंतभद्दमणिजडियउ ।
मरगयणिम्मियदीहरदिव्वहिं सहइ लट्ठि कक्केयणपव्वहिं ।
छत्तइं तिण्णि ताइं उद्धरियइं णिम्मलाइं णं णाहहु चरियइं ।
दिसिगयपंडुरकरणिउरुंबइं तिण्णि वि णावइ ससहरबिंबइं ।
भामंडलु मंडलु णं भाणुहि अइ आसंकेप्पिणु सब्भाणुहि ।
णिण्णासियदुद्दंसणदिट्ठिहि सरणु पइट्ठउ णं परमेट्ठिहि ।
रत्तपुप्फथवएहिं पसाहिउ जिणमणणिग्गउ राउ व राइउ ।
कंकेल्लि वि पल्लवसोहिल्लउ मत्तसकुंतमिहुणु रमियल्लउ ।
जिह जिह देवहुं दुंदुहि वज्जइ तिह तिह धम्मजलहि णं गज्जइ ।

घत्ता—णं आघोसइ एम दुंदुहिसरेण गहीरें ॥
पणवहो तिहुयणणाहु जें मुच्चहु संसारें ॥ २७ ॥

27. १ M सुसिवय°; B ससिवय°. २ MPK सिंहामणु, B सिंघासणु. ३ MB विमल°. ४ B सुब्भाणुहि. ५ B रत्तउ पुप्फ°. ६ MBP जिणमय°. ७ MBPT राहिउ. ८ MBP वि. ९ M मत्तसुकुंभसिहु णरमियल्लउ, BP मत्तसकोंतामिहुणु रमियल्लउ, but T सकुंता पक्षिणः. १० MBP पणवह.

12 समारिउ वृतम्.

27. 4 *a* रयणरहंग रत्नचक्रवाकः, दुरय हस्ती, गोधारि वृषभः; *b* आरणाल कमलम्; सुसिचय शोभावस्त्रम्. 5 *a* उरयवइरि गरुडः, दामय पुष्पमाला. 6 *a* तितीरु उपर्युपरि त्रिभिस्तीरैर्युक्तम्. 7 *a* जंबुण्णय° सुवर्णम्; चामीयर° रूप्यम्. 8 *b* कक्केयण° स्फटिकः. 11 *b* अइ आसंकेप्पिणु अतीव भीत्वा; सब्भाणुहि स्वर्भानो राहोः. 13 *b* राइउ शोभितः. 14 *b* मत्तसकुंतमिहुणु हृष्टपक्षियुग्मम्; रमियल्लउ क्रीडनयुक्तम्.

28

हेला—अविरलकुंदकुडयमंदारपंकयाइं ।
सभसलसिंदुवारकणियारचंपयाइं ॥ १ ॥

जिह जिह कुसुमइं पडियइं गयणहु तिह तिह करसरणिवडियमयणहु ।
णवपसंडिदंडइं सपसंसइं पीयपासपडियाइं व हंसइं ।
जक्खकरयलंदोलणचवलइं गुणठाणारुहणाइं व विमलइं ।
खीरतरंगा इव परिघुलियइं कित्तिहि अंगा इव संचलियइं ।
पंडुरइं चमरइं सुविसिट्ठइं दयवेल्लिहि फुल्लाइं व दिट्ठइं ।
जं जं सुंदरु लच्छिहि अंगउ जं जं काइं मि तिहुयणि चंगउ ।
तं तं मयणु वि तहिं जि समप्पिउ को वण्णइ जंभारिवियप्पिउ ।
णियपहणिज्जेइयचंदक्कउ समवसरणु गयणंगणि थक्कउ ।
पंचसहसधणुउंच्छयमाणइं सेणियं कहियउ जिणवरणाणइं ।

घत्ता—जो उच्छेहु जिणिंदें धणुपंचसएहिं घल्लिउ ॥
तरुघरगिरिखंभाहं सो बारहगुणु बोल्लिउ ॥ २८ ॥

29

हेला—अट्ठगुणेण इंदभावेण संपउत्तो ।
गाढं थूहवेइयाणं पि सो पउत्तो ॥ १ ॥

इय धणएं वेउव्विउ जायहिं इंदें णविउ भडारउ तावहिं ।
जय जिण कण्ह रुद्द चउराणण जय तवरामारइसुहमाणण ।

28. १ MB पियपायसपडियाइः P पियपासपडियाइ. २ MBP तिहुयणि काइं मि. ३ MBP उण्णयमाणें. ४ MP add after this: विंससहससोवाणविहाणें, चउदिसविरइयहत्थपमाणें; B adds these after सेणिय कहियउ जिणवरणाणइ. ५ MBP सेणिय कहिउ जिणें वरणाणें. ६ MBP पघल्लिउ; T पक्कुल्लिउ. ७ P पव्वुल्लिउ and gloss कथितम्.

29. MBPK अट्ठउणेण.

28. 4 *a* °पसंडिदंडइं कनकमया दण्डाः; *b* पीयपासपडियाइं पीतपाशबन्धकनकदण्डैः पाशस्य उपमा धृता. 12. उच्छेहु उत्सेधः; घल्लिउ कथितः.

जय केलिकलिलसलिलसोसणरवि जय वासरईसरदेहच्छवि ।
जय मणतिमिरभारहरणक्खम तियसकिरीडमउडमंडियकम ।
जय तिसल्लवेल्लीवणछिंदण जय कंदप्पदप्पभडमद्दण ।
कोहकलंकपंकओसारण जय माणइरिसिहरमुसुमूरण ।
मायापावभावविद्दावण जय लोहंधयारउड्डावण ।
तिट्ठारयणीयरिसंघारण जय सत्तभयकुरंगवियारण ।
जय मयमयगलकुलकंठीरव जय जगबंधव महियतिगारव ।
पढमपुरिस परमप्पय संकर जय जय रिसहणाह तित्थंकर ।

घत्ता—वंदिउ एम जिणिंदु तहिं बत्तीसहि सक्कहिं ॥
उज्जोइयभरहेहिं पुप्फयंतणामंकहिं ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे रिसहकेवलणाणुप्पत्ती णाम णवमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ९ ॥

॥ संधि ॥ ९ ॥

२ M कयकलिल°. ३ M तिसल्लवल्ली°. ४ MBP °भावउड्डावण ५ MBP °धयारविद्दावण, P लोहंधयारि विद्दावण.

29. 5 *a* °कलिल° पापम्. *b* वासरईसरदेहच्छवि वासरो दिवसस्तस्य ईश्वर आदित्यः तस्य देहस्य छविः कान्तिराकारो वा यस्य. 6 *b* °किरीड° त्रिशेखरो मुकुटविशेष. 10 *a* तिट्ठारयणीयरि° तृष्णैव रजनीचरी राक्षसी. 11 *b* महिय° मथितानि.

X

परमेसरु थुणिउ पुरंदरेण परिसेसियभवभयमरणरिण ॥
परमप्पय महु पसीय सुसम समवसरणपरियरिय जिण ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—तुह पहु वंदणाइ संतोसु ण णिंदइ वहसि मच्छरं ।
तह वि हु कुणसि अणयपणयाण दुहोहसुहोहवित्थरं ॥ १ ॥

तुहुं वीयराउ णिध्दूयकम्मु — तुहुं हिंसावज्जिउ परमधम्मु ।
जो पइं सेवइ तहु होइ सोक्खु — तुह पडिकूलहु संभवइ दुक्खु ।
तुहुं पुणु दोहिं मि मज्झत्थभाउ — इह एहउ फुडु वत्थुहि सहाउ ।
णिंदिज्जइ रवि पित्ताहिएहिं — चंदु वि वाएण णिवाइएहिं ।
ते दोण्णि वि पयहं किं करंति — ससहावें णहयलि संचरंति ।
ससिसूरोसहिसंघाउ जेम — भुवणोवयारि जिण तुहुं मि तेम ।
सरु दूसिवि जो ण वि पियइ वारि — तहु तण्हइ णिवडइ तिव्वमारि ।
जो रसइ तासु तिसणासु सज्जु — सरवरहु ण एण णं तेण कज्जु ।
जिह गरुलमंतु गरलंतयारि — तिह तुहुं वि सहावें दुरियहारि ।
अणवरउ भडारा भूयसामि — जहिं तुम्हइं तहिं हउं समउ जामि ।

All Mss. have, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

जगं रम्मं हम्म दीवओ चंदबिंबं
धरत्ती पल्को दो वि हत्था सुवत्था ।
पिया णिद्दा णिच्च कव्वकीला विणोओ
अदीणत्त वित्तं ईसरो पुप्फयंतो ॥

MBP however read धरित्ती for धरत्ती; सुवत्थं for सुवत्था; and पुप्फदंतो for पुप्फयंतो in the above stanza.

1. १ MB °भवभवणरिण; P °भवभमणरिण. २ MBP सिद्ध महामइ पढम जिण. ३ MBP पडिकूलहं. ४ M इय. ५ K णं तेण. ६ B तुम्हइं तहिं हउं सउं; P तुम्हइं हउ समउ.

---

1. 4 अणयपणयाण अनतानां प्रणतानां च. 8 *a* पित्ताहिएहिं पित्ताधिकैर्नरैः; *b* णिवाइएहिं पीडितैः 12 *a* रसइ आस्वादयति, तिसणासु तृषानाशः; सज्जु सद्यः. 13 *a* गरुलमंतु गरुडमन्त्रः; गरलंतयारि विषविनाशकः.

जहिं तुहुं तहिं ससुरु समग्गु सग्गु जँहिं हउं तहिं मणिमउ भूमिमग्गुं ।

घत्ता—तहिं समवसरणि जंभारिकए पॅरहियबुद्धिइ संचरइ ॥
सुँरणरतिरियहं सुहयरणु धम्मु भडारउ वज्जरइ ॥ १ ॥

2

दुवई—आरूढो वरम्मि उवयद्दिसिरम्मि व हरिणलंछणो ।
सोहइ सेंधुरारिवीढम्मि विहट्टियकम्मबंधणो ॥ १ ॥

अट्ठसय दह जाया सह भवेण चउवीस अवर णाणुब्भवेण ।
जगि अरहंतहु पर संभवंति जं ते एहा गणहर कहंति ।
गव्वूइसयाइं चयारि जाम वित्थरइ सुंहिक्खु सुखेउ ताम ।
ण वि कासु वि पाणिहि पाणणासु गयणयलि गमणु परमेसरासु ।
णउ भुत्ति पवत्तइ णोवसग्गु सरलक्खिपक्खपक्खेउ भग्गु ।
छाहियइ विवज्जिउ होइ गत्तु अवरु वि असेसु विज्जेसरत्तु ।
परिमिय थिय कररुह णील केस भूएसु मेत्ति पिसुण वि ण वेस ।
भास वि णीसेससरीरिगम्म णाणाभासहिं परिणवइ रम्म ।
महु तित्त कडुय परिणइवसेहिं जलधारा इव बहुदुमरसेहिं ।

७ MBP जहिं तुहुं तहिं, K जइं हउ but corrects it to जहिं; ८ MBP add after this the following line: पइं दिण्णाणइ वइसरामि जामि, तुह वयणामइ तित्ति ण जामि. ९ MBPT परिचिंतिय-सुवियारसहु and gloss in T भव्यैश्चिन्तितार्थानां शोभनो विचारः सभाया यस्य, शोभन विचारं वा सहते क्षमते यः स तथोक्तः, but P records in the margin a p परहियबुद्धिइ सचरइ. १० MBP चउ-देवणिकायहिं (M °णिकायह) परियरिउ आसणसठिउ दिट्ठु पहु, but P records in the margin a p सुरणरतिरियहं सुहयरणु धम्मु भडारउ वज्जरइ.

2. १ MBP सिंधुरारि°. २ B णाणुब्भरेण. ३ L °चयारि सयाइं. ४ MBP सुभिक्खु. ५ MBP पाणिहि पाण°. ६ M ण व. ७ MBP °विक्खेउ. ८ MBPT अरोस°. ९ P °दुमसरेहिं.

15 *a* ससुरु देवैः सह.

2. 1 उवयद्दिसिरम्मि उदयाद्रिशिखरे. 2 सेंधुरारिवीढम्मि सिंहासने; विहट्टिय° विघटित°. 4 *a* पर केवलम्. 5 *a* गव्वूइ° गव्यूतिः. 7 *b* °पक्खपक्खेउ पक्ष्मणां प्रक्षेपो मेषोन्मेषगतः. 8 *b* असेसु विज्जेसरत्तु परिपूर्णं विद्येश्वरत्वं केवलज्ञानमागमो वा. 9 *b* वेस द्वेष्याः. 10 *a* °गम्म परिच्छेद्या.

छक्कालसमयसंपयकरेण महिरुह णमंति गुरुफलभरेण ।
आदंसणसंणिह महि विहाइ परमाणंदें जणु जगि ण माइ ।
मंथरु सीयलु तरुसुरहिसारु जोयणपमाणु वियरइ समीरु ।
अणुगॅच्छंतउ[10] णाहहु सुहाइ पच्छइ लग्गउ णेहेण णाइ ।

घत्ता—जलें[11] दुध्दु वहंति तरंगिणिउ सामिउ विहरइ जहिं जि जहिं ॥
तणें[12] कंटय कीडय पत्थर वि धूलि पणासइ तहिं जि तहिं ॥ २ ॥

3

दुवई—सुरवइपेसणेण परिमलमिलियालिकुलेहिं माणियं ।
थणियकुमार मेह वॅरिसंति[1] मॅहावरगंधवाणियं[2] ॥ १ ॥

पहुअग्गइ पच्छइ परिघुलंति णलिणाइं सत्त सत्त जि चलंति ।
जहिं देइ पाउ तहिं कणयकमलु सुरसंजोइउ संचॅरइ[3] विमलु ।
एँवडु[4] पहुत्तणु भुवणि कासु हरि कुलिसधारि घरि जाँसु[5] दासु ।
अट्ठारह वरधण्णइं धरंति रोमंचिय णाइ णं धरित्ति ।
णहु सदिसु वि रेहइ मलविहीणु धोयंबणीलमाणिक्कभाणु ।
दिव्वझुणि पवियंभइ पवित्ति वसुसमसहासधणुमाणछेत्ति ।
जक्खिदसिराऊढउ विचित्तु रयणारॅत्तु[6] रविबिंबु दित्तु ।
लीलासंबोहियभव्वचॅक्कु[7] तहु अॅग्गाइ[8] गच्छइ धम्मचक्कु ।
जो पेच्छइ दूरहु माणु खंभु तहु विहडइ माणकसायडंभु[9] ।
णिज्जियबहुसमयणयंतराइं परवाइ वि देंति ण उत्तराइं ।

१० MBP अणुगच्छंतहु. ११ MB जलु दुध्दु. १२ B तिण.
3. १ P वरिसत. २ MBP महारव°. ३ P सचलइ. ४ B एवडु° ५ MBP कासु. ६ MBP रयणारादंतुरदिव्वादित्तु. ७ MB °चक्खु. ८ MBP अग्गइ. ९ MB माणखंभु.

---

12 *a* छक्काल° षड्ऋतवः. 14 *a* मंथरु मन्दः; तरुसुरहिसारु तरूणां सुरभिः सौरभं तेन सार उत्कृष्टः. 15 *a* सुहाइ सुखायते.

3. 3 *a* परिघुलंति विलसन्ति. 6 *a* अट्ठारह वरधण्णइं गोधूमशालियवसर्षपमाषमुद्गश्यामाककङ्गुतिलकोद्रवराजमाषाः । कीनाशनालमथ वैणवमाढकी च शिम्बा कुलत्थचणकादि सुबीजधान्यम्. 7 *a* सदिसु दिशासहितम्; *b* °भाणु भाजनम्. 9 *b* रयणारत्तु रत्नमयैररैः सहितं अत एव रक्तम्; 12 *a* णिज्जियबहुसमयणयंतराइं निर्जितानि बहुसमयानामनेकमतानां नयान्तराणि युक्तिविशेषा यैः.

पँडिहाहय[10] भंईयइ[11] थरहरंति आविहंडिउ मोणव्वउ वहंति ।
अवियाँरु[12] पहादूसियछणिंदु दीसइ चउदिसहिं मुहारविंदु ।
बारहकोट्ठेसु वि जे वसंति ते ते मुँहुं[13] महु संमुहु भणंति ।

घत्ता—मउलियकरउँ[14] पणावियसिरउ सच्छँउ[15] गव्वविमुक्कियउ ॥
परिवाँडिइ[16] कोट्ठि णिविट्ठियँउ[17] ताहिं पयाउ हयदुक्कियउ ॥ ३ ॥

4

दुवई—गणहर कप्पवासिसुररमणिउ अज्जियसंघें गइरई ।
देविउ वणणिवासदेवाण वि भावणतरुणिसंतई ॥ १ ॥

पुणु दह कुमार वेंतरसुरिंद पुणु जोइस कप्पामर णरिंद ।
पुणु तिरिय वियडदाढाकराल केसरि कुंजर सद्दूल कोल ।
बइसंति गणेसाइ व कमेण जिणभत्तिवंत भूसिय समेण ।
णव णव पंचविहहिं रूढएहिं सव्वहिं सविमाणारुढएहिं ।
सीहासणु मेल्लिवि खइयभाउ अहमिंदहिं थुंउ विद्धत्थराउ ।
जसरवितोसियजगपंकएहिं उग्घोसियकुलणामंकएहिं ।
मउडावलिचुंबियमहियलेहिं घोलंतकुसुममालाचलेहिं ।
उवगीइगाहाखंधएहिं उच्चारियललियथुइसएहिं ।
संथुउ सोहम्मीसाणएहिं अवरेहिं मि तियसपहाणएहिं ।

१० MBP पडिभा°; T परिहा° and gloss प्रतिभा. ११ B भइए. १२ MB अवियारपहा°, B अविहारपिया°. १३ MBP महु मह्णु ममुहु. १४ MBP °करउ. १५ BP सव्वउ. १६ MP परिवारिए. १७ MB णिविट्ठउ.

4. १ MBPK °सघु. २ MBP फुरिय°. ३ M वइसंत. ४ MBP गणेसाइय. ५ M संथुउ. ६ P °णामंकिएहिं.

13 *a* पडिहाहय आसूत्रप्रतिपत्तिः प्रतिभा सा हता येषाम्, *b* अविहंडिउ परिपूर्णम्. 14 *a* अवियारु अविकारः. 17 परिवाडिइ परिपाटिकया क्रमेण, पयाउ प्रजाः.

4. 1 गइरई ज्योतिष्कस्त्री. 2 वणणिवास° व्यन्तरा देवाः; भावण° भवनवासिनो देवाः; संतई श्रेणी. 5 *a* गणेसाइ गणधरादयः. 6 *a* रूढएहिं प्रसिद्धैः. 7 *a* खइयभाउ क्षायिकभावो जिनेश्वरः. 10 *a* °खंधएहिं स्कन्धकवृत्तैः.

घत्ता—जय दुम्महवम्महणिम्महण दोसरोसपसुपाससिहि ॥
जय सयलविमलकेवलणिलय हरणकरणउद्धरणविहि ॥ ४ ॥

5

दुवई—जय कंकालसूलणरकंदलविसहरविलयविरहिया ।
जयँ भगवंत संत सिव सकिव णिवंचियचरण परहिया ॥ १ ॥

जय सुकइकहियणीसेसणाम भीमंथण णियरिउवग्गभीम ।
वामाविमुक्क संसारवाम जय तिउरहारि हर हीरधाम ।
जयप्पयडियधुयससयंभुभाव जय जय सयंभु परिगणियभाव ।
जय संकर संकर विहियसंति जय ससहर कुवलयदिण्णकंति ।
जय रुद्द रउद्दतवग्गगामि जय जय भवसामि भवोवसामि ।
महएव महागुणगणजसाल महकाल पलयकालुग्गकाल ।
जय जय गणेस गणवइजणेर जय बंभ पसाहियबंभचेर ।
वेयंगवाइ जय कमलजोणि आईवराह उद्धरियखोणि ।
सहिरण्णविट्ठिपडिवण्णगब्भ जय दुण्णयणिहणण हिरण्णगब्भ ।
जय परमाणंतचउक्कसोह भावंधयारहर दिवसणाह ।
जय जण्णपुरिस पसुजण्णणासि रिसिसंसहिंसाधम्मभासि ।

5. १ MBP वलय°. २ P सुकय°. ३ MBT हीरवाम and gloss in T धीरप्रसन्न, अथवा हीरो रत्नविशेषस्तद्वन्मनोज्ञ. ४ MBP °ससइंभु°. ५ B परिगलिय°. ६ P °गणविसाल. ७ M पावधपारहर; BP पावंधयारहर. ८ M रिससंस अहिंसा°, BP रिसिसंस अहिंसा°.

12 °पसुपाससिहि पशुप्राशः पलालं तस्य शिखी अग्निः. 13 हरणकरणउद्धरणविहि हरणं मिथ्यादर्शनादेः; करणं सम्यग्दर्शनादीनाम्, उद्धरण दुर्गतिकूपे पतनामुध्दृत्य स्वर्गापवर्गप्रापणं तेषां विधिर्विधानं यस्मात्.

5. 1 °कंदल° कपालम्; °विलय° विलया वनिता स्त्री. 3 *b* भीमंथण भयहारक. 4 *a* वामाविमुक्क स्त्रीविमुक्त; संसारवाम संसारप्रतिकूल; *b* तिउरहारि जातिजरामरणस्य मिथ्यादर्शनादेर्वा त्रिपुरस्य विनाशक; हीरधाम धैर्यस्य धाम. 5 *b* परिगणियभाव ज्ञातपदार्थ. 6 *a* संकर शंकरः सुखंकरः. 7 *a* रउद्दतवग्गगामि उग्रतपसामग्रगामी, *b* भवोवसामि ससारोपशमकः. 9 *b* गणवइजणेर वृषभसेनादीनां शिष्याणां जनक. 10 *a* वेयंगवाइ सिद्धान्तवादिन्. 12 *a* °अणंतचउक्क° अनन्तचतुष्टयम्, *b* भावंधयार° अज्ञानम्. 13 *b* रिसिसंस + अहिंसाधम्मभासि ऋषिभिः प्रशस्य अहिंसाधर्मस्य च प्रतिपादक.

जय माहव तिहुवणमाहवेस महुसूयण दूसियमहुविसेस।
जय लोयणिओइय परमहंस गोवद्धण केसव परमहंस।
जगि सो केसउ जो रायवंतु तुह णीरायहु कहिं केसवत्तु।
के सव ते सव जे पइं हसंति जड पावपिंड रउरवि वसंति।
जय कासव का सवविहि तुमम्मि णेरंतरु चित्ति णिरोहु जम्मि।

घत्ता—जय गयण हुयासण चंद रवि जीवय महि मारुय सलिल॥
अट्ठंगमहेसर जय सयल पक्खालियकलिमलकलिल॥५॥

6

दुवई—जय जय सिद्ध बुद्ध सुद्धोयणि सुगय कुमग्गणासणा।
जय वइकुंठ विट्ठु दामोयर हयपरवाइवासणा॥१॥

णामाइं पसिद्धइं जाइं जाइं तुह देव अवंझइं ताइं ताइं।
इंदें चंदें उरयाहिवेण तुह णामहु लक्खिवउ छेउ केण।
मइविहवविहीणहिं आरिसेहिं किं थुव्वसि तुहुं अम्हारिसेहिं।
तावेत्तहिं पउरजसालएहिं कंचुइधम्माउहवालएहिं।
एक्कहिं खणि भरहहु कहिय वत्त भुंजहि महि महिवइ एक्कछत्त।
सयरायरवत्थुवियप्पजाणु परमेट्ठिहि अचलु अणंतु णाणु।
राणियहि पुत्तु पप्फुल्लवयणु आउहसालहि वरचक्करयणु।
उप्पण्णु भडारा पुण्णवंतु तुहुं जासु जणणु अरहंतु संतु।
ता राएं अवरेहिं मि णरेहिं पणविउ जिणवरु सिरकयकरेहिं।

९ MBP चित्तणिरोहु. १० MBP जीव मही.

6. १ MBP मइं विभव°. २ MBP ता एत्तहि. ३ P पवर°. ४ MB °बालएहिं, P °पालएहिं ५ MBP एयछत्त. ६ MBP °सालइ

14 *b* दूसियमहुविसेस मधु मद्यं क्षौद्रं दानवश्च 15 *b* गोवद्धण ज्ञानवर्धक 16 *a* सो केसउ जो रायवंतु यः केशेषु रागवान् स केशव. *b* केसवत्तु केशवत्वम्. 17 *a* केसवेत्यादि— के शवाः? ते शवा; ये त्वां हसन्ति. 18 *a* सवविहि मृतकाचार. 19 जीवय यजमान. 20 अट्ठगमहेसर गगनाद्यष्टाभिस्तनूभिर्युक्तो महेश्वर; सयल परमौदारिकशरीरयुक्त.

6. 3 *b* अवंझइं सफलानि. 4 *b* छेउ प्रान्त. 5 *a* आरिसेहिं अव्युत्पन्नै.. 8 *a* सयरायरवत्थुवियप्प° सचराचरस्य सक्रियनिष्क्रियस्य चेतनाचेतनस्य च वस्तुनो विकल्पा भेदाः.

पुणु चिंतिउ किं जोयमि रहंगु किं तणयतोंडुं दरियारिभंगु।
मज्झत्थु सच्छु णिम्मुक्कसंगु किं वंदमि मुणि सुद्धंतरंगु।
धम्मेण सुरत्तु कलत्तु पुत्तु पहरणु वि होइ णिद्दलियसत्तु।
धम्में संपज्जइ पुहविरज्जु कराणिज्जु पहिल्लउं धम्मकज्जु।
गंभीरणायणिम्महियवेरि देवाविय लहु आणंदभेरि।

घत्ता—मायंगतुरंगहिं णरवरहिं रहधयचमरहिं परियरिउ ॥
वेयालियकयकलयलमुहलु भरहणराहिवु णीसरिउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—पत्तो समवसरणमसुहहरणं खयकालवारणं।
मयराणणविणित्तमुत्ताहलमालालुलियतोरणं ॥ १ ॥

हरिणाहिवासणासीणगत्तु तिउणियससिसमसेयायवत्तु।
पउलोमीपियसेविज्जमाणु चउसट्ठिचमरविज्जिज्जमाणु।
जिणणाहु दिट्ठु भरहेसरेण णं णेसरु णवपंकयसरेण।
णं मत्तमऊरें वारिवाहु णं वाइएण रससिद्धिलाहु।
णं सिद्धें संभावियउ मोक्खु णं हंसें माणसु जणियसोक्खु।
कंपावियदिक्चक्काहिवेण पारद्धु थुणहुं चक्काहिवेण।
जय भुवणभवणतिमिरहरदीव जय सुइसंबोहियभव्वजीव।
जय भासियपयाणेयभेय जय णग्ग णिरंजण णिरुवमेय।
सकयत्थइं कमकमलाइं ताइं तुह तित्थु पसत्थु गयाइं जाइं।
णयणाइं ताइं दिट्ठो सि जेहिं सो कंठु जेण गायउ सरेहिं।
ते धण्ण कण्ण जे पइं सुणंति ते कर जे तुहुं पेसणु करंति।

७ MBP °तुंडु. ८ MP भरहु णराहिउ, B भरहणराहिउ.

7. १ MBP °सरण असुहहरण; KT °सरणमसुहरसरण. २ B °विलित्त°. ३ BK °ललिय°. ४ M तुव.

12 *b* दरियारि° दृप्ताः शत्रवः. 16 *a* °णाय° नादः. 18 वेयालिय° भट्टचारणादिकाः.

7. 1 असुहहरण अशुभनाशकम्. 2 °विणित्त° विनिर्गतः. 3 *b* तिउणिय° त्रिगुणितः. 4 *a* पउलोमी° इन्द्राणी. 5 *b* णेसरु सूर्यः. 6 *a* वारिवाहु मेघः; *b* वाइएण रसायनकारकेण. 8 *a* दिक्चक्काहिव लोकपालाः. 9 *b* सुइ° श्रुतिरागमः. 11 *b* तित्थु समवसरण निष्क्रमणादिस्थानं वा.

ते णाणवंत जे पइं मुणंति ते सुकइ सुयण जे पइं थुणंति ।
तं कव्वु देव जं तुज्झु रइउ सा जीह जाइ तुह णाउं लइउ ।
तं मणु जं तुह पयपोमलीणु तं धणु जं तुह पूयाइ खीणु ।
तं सीसु जेण तुहुं पणविओ सि ते जोइ जेहिं तुहुं झाइओ सि ।
तं मुहुं जं तुह संमुहउं थाइ विवरंमुहुं कुच्छियगुरुहुं जाइ ।
तेल्लोक्कताय तुहुं मज्झु ताउ धण्णेहिं कहिं मि कह कह व णाउ ।
णिट्ठवियदुट्ठकम्मट्ठ सिट्ठ दुट्ठोवसग्गणिहणेक्कणिट्ठ ।

घत्ता—पंचाणणकुंजरजलजलणविसविसहररुयपग्रजुयणियला ॥
पइं संभरिएण जि परमजिण उवसमंति कयकलह खला ॥ ७ ॥

8

दुवई—जय वइसमणचमरवेरोयणअसुरामरपसंसिया ।
सुरगुरुसुक्कसवुहअंगारयगहणहयरणमंसिया ॥ १ ॥

चरणइं तेरहगइभाविराइं णयणाइं पंच पहदाविराइं ।
एयारह सिंगइं उण्णयाइं उज्झियइं तिण्णि किर णिण्णयाइं ।
सीसाइं पंच अह भणमि एक्कु चउहुं मि परियरियउ तं जि थक्कु ।
बारह चोइंह ढेक्कारियाइं अंगाइं दह विउसवियारियाइं ।
रोमहं चउरासीलक्ख जासु दुग्गोवइकुल संजणिय तासु ।

५ MBP णामु. ६ MBP तइलोक्क°. ७ BPKT °कट्ठकम्मट्ठ. ८ MB °विसहरपय°; T रुय रोगाः. ९ MBPK °णियल. १० MBPK खल.

8. १ MBP वइसवण°. २ MBP °वइरोयण°; K वैरोयण. ३ MB परियरिउ. ४ MPK चउदह. ५ MBP अगाइं.

19 *a* °ताय रक्षक; ताउ पिता. 20 *a* णिट्ठ हे श्रेष्ठ. 21 °रुय° रोगाः.

8. 1 °चमरवेरोयण° चमरवैरोचनौ असुरेन्द्रौ. 3 *a* तेरहगइ° पञ्चव्रतानि, पञ्च समितयस्तिस्रो गुप्तयः; *b* णयणाइं पंच मतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलानि. 4 *a* एयारह सिंगइं सम्यक्त्वाद्येकादशगुणस्थानानि शृङ्गाणि; *b* तिण्णि णिण्णयाइं मायामिथ्यानिदानानि शल्यानि, मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्राणि वा त्रीणि निम्नानि, वृषभपक्षे, स्कन्धकुटीमस्तकानि निम्नानि. 5 *a* सीसाइ पंच सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथाख्यातानि पञ्च चारित्राणि, पञ्च महाव्रतानि वा; अह भणमि एक्कु अथवा एकं अहिंसाव्रतम्, सर्वसावद्ययोगविरतोऽस्मीति सामायिकं वा. 6 *a* बारह द्वादश अङ्गानि; चोइह चतुर्दश पूर्वाणि वा; ढेक्कारियाइं शब्दाः; *b* अंगाइं दह उत्तमक्षमादिदशप्रकारो धर्मः. 7 *b* दुग्गोवइ दुष्टा गोपतयः सर्वथैकान्तवादिनः.

जो कामधेणु सेविउ सुधामु जें तोडिवि घल्लिउ मोहदामु ।
दुद्धरवयभारधुरग्गु धरिवि अपवत्तियतित्थवहेण चरिवि ।
णित्थरिवि पराइउ णाणतीरु वीसमिउ असोयहु मूलि धीरु ।
जें लंघिउ भवदुप्पँहु दुलंघु जो धवलु धवँलवृंदहु महग्घु ।
तहु वसहहु कयपणिवाँउ भाउ णियणिलइ णिसण्णउ भरहराउ ।

घत्ता—कयपंजलियरु पणमंतसिरु भत्तिहरिसवियसियवयणु ॥
संसारदुक्खणिव्वेइयउ जोयँवि मिलियउ भव्वयणु ॥ ८ ॥

9

दुवई—ता णिग्गंतधीरदिव्वझुणितोसियँफणिणरामरो ।
जीवाजीवणामकयभेयइं तच्चइं कहइ जिणवरो ॥ १ ॥

सँभवाभव जीव दुभेय होंति ते सभव सकम्में परिणँमंति ।
चउँरासीजोणिहिं परिभमंति अण्णण्णदेहरायं रमंति ।
वियलिंदिय सयलिंदिय अणेय एक्किंदिय भासिय पंचभेय ।
आहारसरीरिंदियमणाहं आणाभासापरमाणुयाहं ।
जं कारणु णिव्वत्तणसमत्थु तं पज्जत्ति त्ति भणंति एत्थु ।
तं छव्विहु परमेसें पउत्तु अहमेण ठाइ अंतोमुहुत्तु ।
जिह णारएसु तिह सुरवरेसु दसँवरिससहासइं वसइ तेसु ।
परमें तितीस सायरसमाइं मणुएसु तिण्णि पलिओवमाइं ।
एइंदिएसु चत्तारि होंति वियलिंदिएसु पंच जि कहंति ।
ता जाम असण्णिउ पंचकरणु सण्णिउ पज्जत्तीछक्कधरणु ।

६ MB ° दुप्पउ. ७ M धवलचदहु; B धवलवंदहु; P धवलविंदहु and gloss समूहस्य. ८ MBPK कयपाणिवायभाउ. ९ MB जाएवि.

9. १ B °तासिय°. २ M भव वाभव. ३ MBP परिणवंति. ४ MBP चउरासिलक्खजोणिहिं भमंति. ५ BP दहवरिस°.

8 *b* °दा मु बन्धनम्. 9 *b* अ प व त्ति य ति त्थ व हे ण अवसार्पिणीचतुर्थकाले केनाप्यप्रवर्तिततीर्थमार्गेण. 11 *a* °दु प्प हु दुर्मार्गः. 14 जो य वि दृष्ट्वा.

9. 11 *a* च त्ता रि आहारशरीरेन्द्रियोच्छ्वासनिश्वासलक्षणाः पर्याप्तयः.

एयहिं जे पज्जप्पंति णेय   ते जंति अपज्जत्ता अणेय ।
पँज्जप्पंतहु लग्गइ खणालु   जगि सव्वहु भिण्णमुहुत्तु कालु ।

घत्ता—ओरालिउ तिरियहुं माणवहुं सुरणारयहुं विउँव्वियउ ॥
आहारअंगु कासु वि मुणिहि कम्मु तेउ सयलहं वि थिँयउ ॥ ९ ॥

10

दुवई—तिरिय हवंति दुविह तस थावर थावर पंचभेयया ॥
पुँहवी आउ तेय वाऊ वि य बहुविह हरियकायया ॥ १ ॥

मसुरिय कुसजल सूईकलाव   परिधाविरधयसंठाण भाव ।
तोरणतरुवेइयगिरियलेसु   सुरहरवसुसंखामहियलेसु ।
णाणाविहसाँयरि सरिसरेसु   पण्णारह जिणभँवभूयलेसु ।
अवरेसु वि बहुखेत्तंतरेसु   बंभंतपरिट्ठियणहयलेसु ।
अइसरसरसातोयासएसु   एयाण कमेण जि होइ वासु ।
खरजलिण ण भिज्जइ वालुयाइ   सण्ही सिंचिर्यं खणि बंधु लेइ ।
दुविह वि मट्टिय किर पंचवण्ण   जइ होइ होउ संकिण्ण अण्ण ।

घत्ता—कसिँणारुण हरिय सुपीयलिय पंडुर अवर वि धूसरिय ॥
एँही महिकायहुं मउय महि पंचवण्ण मइं वज्जरिय ॥ १० ॥

11

दुवई—कंचण तेउँय तंब मणि रुप्पय खरपुहई पयासिया ।
वारुणिखीरखारघयमहुसम जलजाई वि भासिया ॥ १ ॥

६ MBP पज्जत्तहु लग्गइ इय खणालु. ७ MBP विउव्विउ. ८ MBP थिउ.

10. १ K पुहई. २ MBP सायर°. ३ MBP जिणवरमाहियलेसु. ४ MB सित्तिय; P सेंचिय. ५ MBP कसणारुण. ६ P महिकायहुं जीवहं मउय मही.

11. १ MBP तउय.

14 *b* भिण्णमुहुत्तु अन्तर्मुहूर्तः. 15 ओरालिउ औदारिकम्.

10. 4 *a* तोरण° द्वारादितोरणम्; *b* वसुसखामहियलेसु अष्टपृथिवीषु. 6 *b* बंभंत° लोकान्तः. 8 *b* सण्ही मृदुः; *b* संकिण्ण मिश्रा.

दूरहु दरिसावियधूममलिणु असणी तडि रवि मणि जोई[2] जलणु।
उक्कलि मंडलि गुंजाणिणाउ दिसि[3]विदिसाभेएं भिण्णु[4] वाउ।
गुच्छेसु गुम्मवल्लीतणेसु पव्वेसु रुक्खसाहाघणेसु।
सुपसिद्धु[5] वणासइकाउ एसु उप्पज्जइ जई[6] घोसइ जईसु।
पज्जत्तेयर सुहुमेयरा वि दुमसाहारण पत्तेय के वि।
साहारणाहं साहारणाइं आणापाणाइं आहारणाइं।
पत्तेयहुं पत्तेयइं गयाइं[7] छिंदणभिंदणणिहणं[8] गयाइं।
बारहसहाससंवच्छराहुं सुहुमाइं दह जि दह दो खराहुं।
आउहि परमाउसु सत्त मुणइ अहरत्तइं त्रिचिहि तिण्णि भणइ।
तइयद्दसहासइं गंधवाहु दहसहसाइं जि वणसइसमूहु।
परमेण जि अइअवरेण उत्तु सव्वहं जीविउ अंतोमुहुत्तु।
तुंदाहि[9] कुक्खि किमि खुब्भ संख बीइंदियं[10] मइं भासिय असंख।
तीइंदियं[11] गोभिपिपीलियाइं चउरिंदिय मच्छियमहुयराइं।

घत्ता—परिवाडिए किं पि णाणभवणु एयहं जुत्तिइ सावडइ।
रसु गंधु णयणु फासहु उवरि एक्केक्कउं इंदिउ चडइ ॥ ११ ॥

12

दुवई—पज्जत्तीउ पंच कमसंठिय छह सत्तट्ठ पाणया।
तेसिं होंति एम पभणंति महामुणि विमलणाणया ॥ १ ॥

पंचिंदिय सण्णि असण्णि दोण्णि मणवज्जिय[1] जे ते धुवु असण्णि।

२ MB °मणिजाइ. ३ MBP दिसि°. ४ M दिण्णु; P भिण्णवाउ; ५ M सुवासिद्ध°; BP सुपसिद्ध°. ६ M जिइ, P जिउ. ७ MBPT पत्तेयगयाइं. ८ MBP णिहणइं. ९ M रुदाहि सुक्खि, रुंदाहि कुक्खि; T तुंदाहि गण्डूपदः. १० MBM बेइदिय. ११ MBP तेइदिय.

12. १ M मणि.

11. 4 *a* °गु जा णि णा उ घोषशब्दयुक्तः. 6 *b* ज इ जगति. 9 *b* णि ह ण विनाशम्. 10 *b* द ह जि-द ह दो द्वाविंशतिसहस्राणि; 11 a आ उ हि अपाम्; *b* त्रि चि हि अग्नेः. 12 *a* त इ य द्द स हा स इ त्रीणि वर्षसहस्राणि. 13 *a* अ इ अ व रे ण अतिजघन्येन. 14 *a* तु दा हि गण्डूपदः. 16 णा ण भ व णु ज्ञानाश्रयम्; सा व ड इ संपद्यते.

सिक्खालावाइं ण लेंति पाव अण्णाणगूढेदढमूढभाव।
असु णव जि समत्तिउ पंच ताहं वज्जरइ जिणिंदु असण्णियाहं।
छहिं पज्जत्तिहिं पज्जत्तएहिं संफासणलोयणसोत्तएहिं।
मणवयणकायरसघाणएहिं आणापाणाउ अप्राणएहिं।
दहहिं मि जियंति सण्णिय तिरिक्ख अक्खमि णाणाविह दुण्णिरिक्ख।
जलयर झसाइ पंचप्पयार कच्छव मयरोहर सुंसुयार।
णहयर समुग्ग फुंडवियडपक्ख अण्णेक्क चम्मघणलोमपक्ख।
थलयर चउपय चउविह अमेय एक्कखुर दुखुर करिसुणहपाय।
उरसप्प महोरय अजगराइ किं ताहं गइंदु वि कवलु होइ।
भुयसप्प वि वक्खाणिय सभेय सरडुंदुरगोधाणामधेय।

घत्ता—जलयर जलेसु खग तरुगिरिसु थलयर गामपुरेसु वणे॥
दीवोयहिमंडलमाज्झि तहिं पढमु दीवु भासंति जणे॥ १२॥

13

दुवई—जोयणलक्खु लक्ख बहुपविउल पुणु गयगणियमेरया।
अत्थि असंखदीववरसायरवलयायारधारया॥ १॥

जंबूदीवो धादइसंडो पुक्खरवरदीवो मिगचंडो।
महरो खीरो घयमहुणामो णंदीसो अरुणोरुणधामो।
कुंडलसण्णो संखो रुजगो भुजगवरो अवरो वि हु कुसगो।

१ MB मूढ धणगूढभाव, K मूद घणगूढभाव but corrects it to गूट धणमूढभाव. ३ MBP °पाणाउ. ४ MBP अपाणएहिं. ५ M अहयर. ६ M पड°; BP फड; ७ MBP दुक्खुर. ८ M महोयर. ९ MBP किर. १० MBP सरिसप्प. ११ MBP पढमदीउ. १२ M जिणे: K जिणे but corrects it to जणे.

13. १ MBP तह. २ P धाइयसंडो. ३ MBP मिगचडो. ४ MBP णामें. ५ MBP धामें.

12. 4 *b* अण्णाणेत्यादि—न विद्यते ज्ञान यस्मात्तदज्ञानं तेन गूढं प्रच्छादनं तस्माद् दृढा मुग्धभावा येषाम्. 5 *a* समत्तिउ पर्याप्तय. 6 *a* पज्जत्तएहिं परिपूर्णैः. 9 *b* उहर जलचरविशेषः.

13. 1 गयगणियमेरया गतगणितमर्यादाः. 4 *b* अरुणधामो रक्तच्छविः. 5 *a* रुजगो रुचकः.

कोंचो एवं दीवसमुद्दा दूणपिहु॑ दावियणियमुद्दाँ ।
एएसुं तिरियाणं ठाणं जलयरथलयरणहयरयाणं ।
वियलिंदियपंचिंदिययाणं एण्हि वोच्छं कायपमाणं ।
साहियजोयणसहसुच्छेहं पउमं दीसइ वड्डियदेहं ।
अवि य दुकरणो को वि वरिट्ठो बारहजोयणदीहो दिट्ठो ।
होइ तिकोसो तिकरणवंतो चउकराणिल्लो जोयणमेत्तो ।

घत्ता—लवणण्णवि कालण्णवि विउले होंति सयंभूरमणि झस ॥
सेसेसु णत्थि जिणभासियउ सेणिय णउ चुक्कइ अवस ॥ १३ ॥

14

दुवई—जाणसु जोयणाइं अट्ठारह लवणसमुद्दमच्छया ।
णव वरसरीमुहेसु छत्तीस जि कालोए दिसच्छया ॥ १ ॥

अवसाणमहण्णवि जे वहंति ते जोयण पंचसयाइं होंति ।
गयणंगणचरहं थलंभचरहं संमुच्छिमगब्भसरीरधरहं ।
कइवयचावइं काहं मि गणंति तणुमाणु एम मुणिवर भणंति ।
कासु वि संमुच्छिमजलयरासु पज्जत्तिल्लहु जोयणसहासु ।
जलगब्भजम्मि मवियाइं ताइं पंच जि जोयणइं सयाहयाइं ।
पयहं तीहिं मि संमुच्छिमाहं परिवज्जियपज्जत्तीकमाहं ।
अक्खिउ जिणेण दीसइ विअत्थि परमेणोगाहण णरविहत्थि ।
थलगब्भयदेहि तिगाउयाइं परमेण माणभावहु गयाइं ।
सुहुमहु बायरहुं मि धुवुं पवण्णु अंगुलअसंखभायउ जहण्णु ।

६ MBP दूण पि हु. ७ MB add after this: लवणोवहि कालोवहि सामें, सेस समुद्द (B सो समुद्द वि) वि दीवहु णामें.

14. १ M णवर सरी°; BP णव जि सरी°. २ BP वसंति. ३ P काहिं. ४ MBP पंच वि. ५ M विहत्थि; BP वियत्थि. ६ MPT विअत्थि. ७ MB धुउ; P धुव°; K धुवु.

6 दूण पिहु द्विगुणपृथवः; दावियणियमुद्दा दर्शितनिजाकाराः. 10 *a* दुकरणो को वि शंखः. 11 *a* तिकरणवंतो खर्जरकः; *b* चउकरणिल्लो भ्रमरः.

14. 1 सरीमुहेसु गङ्गादीनां समुद्रप्रवेशस्थानेषु. 2 दिसच्छया दिशां प्रच्छादकाः. 5 *a* काहमि केषांचित्. 7 *b* सयाहयाइं शतगुणितानि. 9 *a* विअत्थि विगतास्थि. 10 *a* तिगाउयाइं तिस्रो गव्यूतयः.

घत्ता—जगि सुहुमणिगोयसमुब्भवहं अवि यसमत्तहुं ण वि रहिउ ॥
णिकिट्ठु कुसुमयंतें पहुणा उत्तिमु जलयराहुं कहिउ ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे तिरिक्खोगाहणो णाम
दसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १० ॥
॥ संधि ॥ १० ॥

८ M णिकिट्ठुकुसुमपयत्तें. ९ M उत्तम°; P उत्तमु. १० MBP तिरिक्खोगाहणा.

12 यसमत्तहुं य + असमत्तहुं अपर्याप्तानाम्. 13 णिकिट्ठु सर्वजघन्यम्.

XI

पुणु इंदियभेउ वम्महपसरणिवारएण ॥
भासियउ असेसु लोयहु रिसहभडारएण ॥ ध्रुवकं ॥

1

जाणइ सण्णिउ जो पज्जत्तउ पुट्ठउ सुणइ सद्दु गयसोत्तिउ ।
णिल्लोयणतिउ पुट्ठपविट्ठउ रूवुं णियच्छइ अप्परिमट्ठउ ।
फासु गंधु रसु णवहि जि भावइ बारहजोयणेहिं सुइ पावइ ।
सत्तेतालसहस्सइं दिट्ठिट्ठइं अवरु वि दोण्णि सयइं तेसट्ठइं ।
चक्खिंदियहु विसउ वक्खाणिउ जेहउ केवलणाणें जाणिउ ।
गंधगहणु अइंवत्तसमाणउं सवणु वि जवणालीसंठाणउं ।
दिट्ठिइं पडिम णिपज्ज मसूरी अक्खिय जीहं खुरुप्पायारी ।
सहरियतसदेहेसु पयासउ फासु अणेयरूवविण्णायउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

सूर्यात्तेज गभीरिमा जलनिधेः स्थैर्यं सुराद्रेर्विधोः
सौम्यत्वं कुसुमायुधाच्च सुभगं त्यागं बलेः संभ्रमात् ।
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा सखे सांप्रतं
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशसः खण्डकवेर्वल्लभः ॥

M reads विधौ for विधोः; MB read कुसुमायुधात्सुभगता for कुसुमायुधाच्च सुभग, and खण्डः कवेर्वल्लभः for खण्डकवेर्वल्लभः.

GK do not giv› it.

1. १ MP गयसुत्तउ; B गयसोत्तउ. २ MB णिल्लोयणु. ३ B तिउपुट्ठु. ४ MBP रूउ. ५ MBP सत्तेचालीससहसइं. ६ MBP बिण्णि. ७ MBP अइमुत्त°. ८ MBP दिट्ठिहि. ९ M जीय. १० BT सुहरिय°. ११ MB तसदेवेसु.

---

1. 3 *a* स ण्णि उ समनस्कः, *b* पु ट्ठ उ स्पृष्टः; ग य सो त्ति उ श्रोत्रगतः. 4 *a* णि ल्लो य ण ति उ नेत्रं विना त्रीणि स्पर्शनरसनघ्राणानि, पु ट्ठ प वि ट्ठ उ नासिकादौ प्रविष्टमतिमुक्तकाद्याकारघ्राणेन्द्रियप्रदेशैः स्पृष्टं गन्धादिकं जानाति; *b* अ प्प रि म ट्ठ उ अस्पृष्टम्. 5 *a* ण व हिं जि भा व इ नवयोजनात् स्पर्शं गन्धं रसं जानाति. 6 *a* दि ट्ठि-ट्ठ इं चक्षुर्दर्शनस्येष्टानि. 8 *a* अ इं व त्त स मा ण उं अतिमुक्तकपुष्पाकारम्; *b* ज व णा ली सं ठा ण उं यवकणसाम्य-नालिकासदृशम्. 10 *a* °ह रि य° वनस्पतिकायः.

समच[12]उरंसु ठाणु सुरसत्थहु हुंडु वि णारयगणहु अहत्थहु ।
मणुयतिरिक्खहु छ[13] प्पि पवुत्तइं भोयभूमिवियलहु पढमंतइं ।
खु[14]ज्जउ वावणंगु णग्गोहउ उब्भासिउ तिरिक्खणररोहउ ।
एइंदिय णारइ[15]य सुसंपुड- जोणिहिं होंति सकम्मसमुब्भड ।
वियलिंदिय वि वियडजोणीहव संपुड वियड होंति गब्भुब्भव ।
पा[16]सुयजोणि देवणारइयहं मीसा गब्भणिवासें लइयहं ।
सीयलुण्ह उण्हेव हुयासहं ताहं विहि मि तिविहा पुणु सेसहं ।
मंथरगमणहं ससहरवयणहं संखावत्तजोणि थीरयणहं ।

घत्ता—तहिं जीव अणेय णउ लहंति संपुण्ण तणु ॥
णियकम्मवसेण होंति मरेप्पिणु जंति पुणु ॥ १ ॥

2

होंति अरुह कुम्मुण्णयजोणिहिं केसव राम चक्कि सुहजोणिहिं ।
अवरहिं जोणिहि रुहिरावत्तहि पायडजणव[1]यवंसावत्तहि ।
इंदियजुयल जियंति सहरिसइं मइं विण्णायउ बारहवरिसइं ।
तीइंदियहु मि राइविमीसइं [2]ऍक्कूणवण्णास जि किर दिवसइं ।
चउरिंदियहु आउ छम्मासिउ णिसुणहि पंचिंदियहु वि भासिउ ।
मच्छहु पुव्वकोडि उवइट्ठी कम्मभूमिभूयरहं मि दिट्ठी ।
वालहं बायालीससहासइं उरय जियंति जायजीया[3]सइं ।
पक्खिहिं ताइं दुसत्तरि भणियइं पलिओव[4]मइं तिण्णि परिगणियइं ।

१२ MB °चउरंम°. १३ MBP छ प्पि य उत्तइं. १४ K reads this line before line 12. १५ MBP णारयसुरसंपुड. १६ MBP फासुय°.

2\. १ P °जणवइ. २ MBP एकुण°. ३ P °जीवासइ. ४ M °ओवम्मइ.

11 *b* अहत्थउ अधोलोकवर्तिनः. 12 *b* भोयभूमिवियलहु पढमंतइ अत्र यथाक्रमसंबन्धो भोगभूमिजानां प्रथमं समचतुरस्रसंस्थानं विकलेन्द्रियाणामन्त्य हुंडसस्थानम्, 14 *a–b* सुसंपुडजोणिहिं संवृतयोनौ. 16 *a* पासुय अचित्ता; *b* मीसा सचित्ताचित्ता. 17 *a* सीयलुण्ह केषांचिच्छीता केषांचिदुष्णा, उण्हेव हुयासहं तेजस्कायिकानामुष्णैव योनिः; *b* ताहं विहिं मि देवनारकाणाम्, तिविहा शीता उष्णा मिश्रा च; सेसहं देवनारकतेजस्कायेभ्योऽन्येषाम्.

2\. 3 *a* इंदियजुयल द्वीन्द्रियाः. 4 *a* राइविमीसइं रात्रिविमिश्रितानि. 6 *b* भूयरहं भूचराणाम्. 7 *b* आयजीयासइं जाता जीविताशा येषु तानि.

खेत्तावेक्खइ कहिं मि तिरिक्खहं पहउ उत्तमाउ पंचक्खहं।
मायाविय कुपत्तदाणेण वि एए होंति अट्टझाणेण वि।

घत्ता—इय कहिय तिरिक्ख एवहिं माणव वज्जरमि॥
पण्णारह तीस णवइ छ भेय वि संभरमि॥ २॥

3

तिरियलोयमज्झत्थु सुहासिउ मणुउत्तरगिरिवलयविहूसिउ।
जोयणाहं णरखेत्तु रवण्णउ पणयालीसलक्खवित्थिण्णउ।
जंबूदीउ सव्वदीवेसरु एक्कु लक्खु जोयणपरिवित्थरु।
छावीसाइं पंच अहिययरइं जोयणसयइं विहियणरणयरइं।
दाहिणभरहु तेत्थु वित्थारें एरावउ भणु तेणायारें।
उत्तरदाहिणाहं वेयड्ढहं पण्णास जि पिहुलत्तु गुणड्ढहं।
पंचवीस उच्छेहु समासिउ एक्कु सहसु हिमवंतहु भासिउ।
सहुं बावण्णहुं वित्थरु साहिउ सउ तुंगत्तें सिहरि वि साहिउ।
पंचुत्तरसएण सहुं लक्खिय दोण्णि सहस हिमवइयहु अक्खिय।
अवरु हिरण्णवंतु तम्माणउ साहिउ दोहिं मि एक्कु पमाणउ।
होइ महाहिमवहु रुंदत्तणु चउसहासअहियउ उच्चत्तणु।
दोण्णि दहोत्तराइं धुवु सिट्ठउ रुम्मियगिरिंदि वि तेत्तिउ दिट्ठउ।

घत्ता—खेत्तहुं गुरु खेत्तु गिरि गरुयारउ गिरिवरहो॥
मा भंति करेज्ज वयणु ण चुक्कइ जिणवरहो॥ ३॥

3. १ MBP तिरियलोउ. २ MBP एकलक्खु जोयणहं पवित्थरु. ३ MBP छव्वीसाइं. ४ MBP अइरावउ. ५ MB तेणुपयारें; P तेण पयारें. ६ MB पयासिउ; T पसाहिउ. ७ MB हइमवयहु. ८ MBP अवरु. ९ MBP एक्क°. १० MBP धुउ. ११ MBP रुम्मिहि दुविहु वि. १२ P खेत्तहु चउगुणु खेत्तु गिरि वि चउगुणु गिरिवरहो, T seems to have the same reading: खेत्तेत्यादि- क्षेत्राद्गुरुःगुणं (?) क्षेत्रं गिरेर्गिरिश्चतुर्गुणः.

---

12 ण व इ छ षण्णवतिः, तथाहि- लवणोदकस्योभयोस्तटयोश्चतुर्विंशतिश्चतुर्विंशतिरन्तरद्वीपास्तथा कालोदस्यापि.

3. 4 *a* अ हि य य र इं अधिकतराणि. 5 *b* ते णा या रें तेन आकारेण. 6 *a* वे य ड्ढ हं विजयार्धानाम्. 8 *a* सा हि उ साधिकः, *b* सा हि उ कथितः. 10 *a* त म्मा ण उ तत्प्रमाणम्; *b* दो हिं मि द्वयोरपि हैमवत-हिरण्यवतोः.

4

चउसयाइं दिइंतिसहासइं एक्कवीस जोयणइं पयासइं।
अहियइं किं पि होंति हरिवरिसहु तं जि माणु रम्मयहु सहरिसहु।
अट्ठसयइं सोलहसहसालइं ताइं जि जाणहि बाएतालइं।
साहियाइं णिसिहहु पिहुलत्तणु सायरसयइं भणिउं तुंगत्तणु।
णीलिहि तं जि ण कोइ णिवारइ विहिं मि विदेहहं रुंदिम ईरइ।
परमेसरु तेत्तीससहासइं उडुसयाइं चउरासीमीसइं।
अट्ठसयाइं सबायालीसइं अण्णु वि भणु पयारहसहसइं।
उत्तरकुरुसुरकुरुहुं पउत्तउ एउ माणु णउ ल्हसइ णिरुत्तउ।

घत्ता—छह खेत्तइं एम भोयभुत्तिसंतोसियइं॥
इह जंबूदीवि तिण्णि जि कम्मविहूसियइं॥ ४॥

5

पोमु णाम हिमवंतसरोवरु पंचसयाइं तासु परिवित्थरु।
एक्कु सहसु दीहत्तणु वुच्चइ दहजोयणइं गहीरिम वुच्चइ।
पयहु अक्खिउ आगमि जेत्तिउ सिहरिमहापुंडरियहु तेत्तिउ।
अवरु महाहिमवंतु वरिल्लउ ओइल्लहु बिउणारउ भल्लउ।
तिविहेण वि गुणेण उवलक्खिउ णामु महापोमु जि मइं अक्खिउ।
तिंगिंछसरु वि णिसहासीणउं होइ महापोमक्खहु बिउणउं।

4. १ MBP होंति किं पि. २ MB रुम्मयहु. ३ MBP बाइत्तालइ. ४ MBP णिसहहु. ५ MBP णीलहु. ६ BP तेत्तीस°.

5. १ MBP पोमणामु. २ MBP हिमवंति. ३ MBP उवरिल्लहु. ४ MBP ओलक्खिउ. ५ MB तिग्गिच्छि वि सरु; P तिगिंछि वि मरु. ६ MBP महापउमक्खहु.

4. 1 *a* दिइ तिसहासइ अष्टसहस्राणि. 2 *a* अहियइ तद्योजनभागेनैकेनाधिकानि. 3 *b* बाएतालइं द्विचत्वारिंशत्. 4 *a* माहियाइ तद्योजनभागद्वयेनाधिकानि; *b* सायरसयइं चत्वारि शतानि. 6 *b* उडुसयाइं षट्शतानि; °मीसइं युक्तानि. 8 *a* °सुरकुरु° देवकुरवः, *b* ल्हसइ चलति न्यूनं भवति.

5. 4 *b* ओइल्लहु उपरितनस्य. 5 *a* तिविहेण विस्तारदीर्घत्वावगाहेन.

णिद्धणीलणयरायणिविट्ठउ तेवड्डु जि केसरिसरु दिट्ठउ ।
सोहइ रम्मरुम्मिकयठाणें पुंडरीउ तहु अद्धपमाणें ।

घत्ता—सिरिहिरिदिहिकंतिकित्तिलच्छिणामालियउ ॥
देवीउ वसंति सरवरि सुकयकीलियउ ॥ ५ ॥

6

पोममहापोमहं तिगिंछहं केसरिदोपुंडरियहं सच्छहं ।
जलपूरियगिरिकंदरदरियउ सुणसु महाणइउ णीसरियउ ।
गंगासिंधु रोहि भंगाली रोहियास मंथरगइ लीली ।
हरि हरिकंत सीय सीओयय णारी णरकंता वि महोयय ।
कणयकूल रुप्पयकूलाली रत्ता रत्तोया वि झसाली ।
एयउ भणियउ चोद्दह सरियउ वयगुणियउ सत्तरि वित्थरियउ ।
अड्डाइज्जहं पंच जि मंदर बहुवेयड्ढखयरकुलसुंदर ।

घत्ता—वक्खारगिरिंद कुंडलरुजगिरि सुकारगिरि ॥
खेत्तंतहिं अत्थि बहुविहसिहरुद्धरियासिरि ॥ ६ ॥

7

जंबूदीवहु बाहिरि थक्कइं ठाणइं जाइं सहावामुक्कइं ।
पढम सुसंकिण्णइं पुणु रुंदइं ताइं होंति मल्लयपडिछंदइं ।
कयतिहेयगुणणें संजुत्तइं कम्मभोयभावेण विहत्तइं ।

७ P महापुडरीउ तह अद्ध°. ८ MK °दिहिकित्तिबुद्धिलच्छि°. ९ M सुहकयकीलउ; BP सुहकयकीलियउ.

6. १ MBP तिगिंच्छहं. २ B omits this line. ३ B omits this line. ४ P कसयकूल. ५ MP चउदह.

7. १ M सल्लइपडि°. २ B कयतिहेण गुणणे; P कयतिभेयगुणण्णे.

---

7 *a* °णयराय° नगराजः पर्वतः.

6. 3 *a* भंगाली कल्लोलयुक्ता. 9 खेत्तंतहिं क्षेत्राभ्यन्तरेषु.

7. 1 *b* ठाणइ अन्तर्द्वीपाः; सहावामुक्कइं अपरित्यक्तस्वरूपाणि. 2 *b* मल्लयपडिछंदइं शरावाकाराणि. 3 *a* °तिहेय° उत्तममध्यमजघन्याः, अधोमध्योर्ध्वविस्तारविभिन्नानि वा; *b* कम्मभोयभावेण कर्मभूमिभावः स्वचेष्टया फलाहारादिग्रहणं तेन.

लवणसमुद्दि अट्ठचालीसइं कालोयइ तेत्तियइं जि देसइं।
बहुजोयणसयमाणविसेसइं संति कुभोयभूमिआवासइं।
थीपुरिसइं दो दो रइरत्तइं भद्दसहावइं मणहरगत्तइं।
विगयाहरणइं णिच्चेलकइं कँण्हइं धवलइं हरियइं सक्कइं।
रम्मइं सोमइं णिच्चपहिट्ठइं जिर्णणाहेहिं जिणागमि सिट्ठइं।

घत्ता—एक्को रुयधारि पुंछधारि तहिं सिंगधर॥
पुव्वादिसु होंति उत्तरदिसि णिब्भास णर॥ ७॥

8

सक्कुलिकण्ण कण्णपावरण वि लंबकण्ण ससकण्ण कुमणुय वि।
हरिमुह करिमुह झससामलमुह आदंसणमुह जलहर कइमुह।
सद्दूलाणण मेसविसाणण सत्तारहतरुहलरसमाणण।
सयल वि उज्जय पंकयलोयण एक्कोरुय गिरिमट्टियभोयण।
अट्ठारहजाईहिं रवण्णा छण्णवइहिं खेत्तेहिं विहिण्णा।
एकु जि पलिओवमु जीवेप्पिणु होंति भवणवणवासि मरेप्पिणु।
हरिहिमलोहियपीयलवण्णा तीससुभोयभूमिवित्थिर्ण्णा।
हारदोरकंकणकुंडलधर दिव्ववत्थ सिरवलइयसेहर।
मइरंगहिं वीणापडहंगहिं विविहविहूसणंगजुइअंगहिं।
भायणभोयणंगभवणंगहिं अंबरदीवकुसुममालंगहिं।
एयहिं कप्परुक्खहिं महि छज्जइ भोउ णिरंतरु मणुयहिं भुंजइ।
अहममज्झिमउत्तिमसुहसंगइं ललियसहावइं णिरु ललियंगइं।

३ MBP किण्हइं. ४ MBP जिणणाहेण. ५ MBB दिट्ठइं. ६ MBP पुच्छधारि.

8. १ P जलहरमुह कइ°. २ MPK पलियओवमु. ३ MBP °उप्पण्णा. ४ P °डोर°. ५ MBP भोयणभायणंग°. ६ MBP एहिं. ७ MBP रज्जइ. ८ B भाउ. ९ P भुजइ. १० BBP °मुत्तम°.

6 *b* भद्दसहावइं स्वभावमार्दवादियुक्तानि. 7 *b* सक्कइं रक्तवर्णानि.

8. 3 *b* सत्तारहतरुहलरसमाणण सप्तदशप्रकारास्तरुफलरसाहाराः. 4 *b* एक्कोरुय एकपादाः. 9 *a* मइरंगहिं मद्याङ्गैः.

पक्खु दु तिण्णि पल्ल जीवेप्पिणु होंति कप्पवासेसु चएप्पिणु[11]।

घत्ता—तीसविह[12] पउत्त भोयभूमि धुअ मणुय जिह ॥
सइं कालवसेण अद्भुव[13] दहविह होंति तिह ॥ ८ ॥

9

दहपंचविह कम्मभूमाणुस अज्ज मेच्छ इच्छामाणियरस ।
मेच्छ चीण हुण पारस बब्बर[1] भासारहिय णिरूह णिरंबर ।
इड्डिअणिड्डिवंत अज्जणवर इड्डिवंत जिणवर चक्केसर ।
वासुएव बलएव महाबल चारण विज्जाहर उज्जलकुल ।
होंति अणिड्डिवंत णाणाविह लिविदेसीभासावत्तण बुह ।
जिणु अहमेण[2] जियइ बाहत्तरि अहिउ सहसु वरिसइं[3] जीवइ हरि ।
तहु अहियग्उ सीरि पउत्तउ सत्तसयाइं चक्कि णिक्खुत्तउ ।
पुव्वहं चउरासीलक्खेयहं परमाउसु जिणहरिबलरायहं[4] ।
पुव्वकोडिसामण्णु वि थिरकरु जीवइ कम्मभूमिजायउ णरु ।
पक्खु मासु अयणइं संवच्छर के वि जियंति कइवय वासर ।
णर णिसइद्दवियंगकउग्गम[5] ते सज्जो मरंति संमुच्छिम ।
गब्भेसु वि गलंति तणु लेप्पिणु अवर वि कइवय दियह जिएप्पिणु ।
उत्तमेण धणुलयहं[6] णिसीहा पंच सयाइं सयइं[7] पईहा ।
सत्तहत्थ चउहत्थ तिहत्थ वि णिकिट्ठेण पउत्त दुहत्थ वि ।
तम्हाओ वि होंति लहुययरा अइरहस्स वामण खुज्जयरा ।

घत्ता—मणुएसु ण होंति सत्तममहिणारय[8] विसम ॥
जिह ए तिह ते उ वाउकायकयभावतम ॥ ९ ॥

११ MBP मरोप्पिणु. १२ P तीस वि इह उत्त. १३ MBP अद्धुय.

9. १ P वच्छर; but it records a *p* वव्वर. २ M अहउ. ३ M वरिसइं. ४ MBP °बल-एवह. ५ B णिसइ°; P विसइ°. ६ M धणुण्णयहं. ७ MB सवाइं सयाइं; P सयाइं सवाइं. ८ MB णाराय.

9 2 *b* णिरूह परस्परविवादरहिता निर्विचारा.. 7 *b* णिक्खुत्तउ निश्चितम्. 8 *a* एयहं एतेषाम्. 11 *a* णिसइद्दवियंगकउग्गम निसृष्टं प्रस्वेदादिद्रव्यं तस्मादुत्पन्ना.. 13 *a* णिसीहा नृसिंहाः, *b* पईहा प्रदीर्घाः. 15 *b* अइरहस्स अतिलघवः.

10

होंति के वि दूसहणिट्ठावस जोइसवणभवणंतहिं तावस ।
चरयपरिवायय[1] बंभामर आजीव वि सहसारालय सुर ।
जंति[2] तिरिक्ख वि तं जि जि वयहर[3] णर सम्मत्ताराहणतप्पर ।
सावयवयहलेण सोलहमउ सग्गु लहइ माणुसु दुहविरमउ ।
रिसिवएहिं विणु पुणु तहु उप्परि को वि ण भुंजइ अहमिंदहं सिरि ।
सत्तुमित्तुतणमणिसमचित्तें संजमेण सुद्धें चारित्तें ।
जिणलिंगेण होंति वयभरधर अभविय उवरिमगेवज्जामर ।
आ सव्वत्थसिद्धि[4] णिग्गंथहं होइ सूइ सम्मत्तपसत्थहं ।
णारउ मरिवि ण णारउ जायइ सुरु वि ण सुरु मुणिणाहु विवेयइ ।
अमरु ण णरयहु णारउ सग्गहु वच्चइ सविहिविहंसियमग्गहु ।
होइ तिरिक्खु वि चउगइगामिउ जिह तिह माणउ दुक्खायामिउ[5]
पमियाउहुं तिरियहुं तिरियत्तणु अविरुद्धउ मणुयहुं मणुयत्तणु ।

घत्ता—तिहिं गइहिं ण होंति मणुय तिरिक्ख सोक्खचुयहिं ॥
पलिओवमजीवि सग्गु लहंति सइंभुवहिं[6] ॥ १० ॥

11

संखाउस जे जीवाहारिय अण्णोण्णेण वियारिय मारिय ।
सरिसव[1] जंति पढम बीयावणि पक्खि तइय वालुप्पह[2] दुहखणि ।
पुहइ चउत्थी जंति महोरय[3] पंचमियहि केसरि मयमारय[4] ।

10. १ MBPT चारय. २ MP जंत निरिक्ख त जि जि. ३ MBP वयधर. ४ MBP सव्वट्ठ°. ५ M दुक्खायामिउ. ६ MT सयभुवहिं.

11. १ P विमणस सरड पढम°. २ K वालुयपह. ३ P महोयर. ४ MP मिगमारय, B मियमारय.

10. 2 *a* चरयपरिवायय आहिंडिकपरिव्राजकाः, *b* आजीव काञ्जिकाहाराः, 8 *b* सूइ सूतिरुत्पत्तिः. 10 *b* सविहिविहंसियमग्गहु स्वविधिना हिंसादिविधानेन विध्वंसितः स्वर्गप्रापको धर्मलक्षणो मार्गो यस्य, देवैस्तु नरकाप्रापकधर्मारम्भकचेष्टितविधानेन नरकमार्गो विध्वंसितः. 11 *b* °आयासिउ पीडितः. 12 *a* पमियाउहु प्रमितायुषाम्. 14 सइभुवहिं स्वोपार्जितपुण्यैः.

महिलउ छट्ठहि वि हुरक्कमियहि होंति मणुय मेच्छ वि सत्तमियहि ।
आयउ मघविहि लहइ णरत्तणु को वि अरिट्ठहि देसवयत्तणु ।
णिग्गउ अंजणाहि किर णिव्वुइ को वि काहिं मि पावइ पंचमगइ ।
सेलहि वंसहि घम्महि आइउ होइ को वि तित्थयरु महाइउ ।
णर तिरिया सलायपुरिसत्तणु णउ लहंति णिम्मलु जसकित्तणु ।
सव्वत्थ वि माणुसु उप्पज्जइ एम पउत्तइ सुत्तु पउंजइ ।
राम उड्ढगइ सोक्खहु सामिय केसव सव्व अहोगइगामिय ।

घत्ता—पडिसत्तु कयंत णउ णारायण पीणकर ॥
णरयहु णिग्गिवि होंति ण हलहर चक्कहर ॥ ११ ॥

12

तिहिं कायहिं णरत्तु ण विरुद्धउ तिरियत्तु वि जिणबुद्धें बुद्धउ ।
वायरपुहइ तोय पत्तेयहं देवें चवेवि होंति किर एयहं ।
णउ लहंति सुरणियर सतामस पुण्णसिलोयत्तणु आजोइस ।
अक्खमि णरयवासु भीसावणु णाणादुक्खलक्खदरिसावणु ।
पढमासीयहिं सिट्ठु सहासहिं पुणु बत्तीसहिं अट्ठावीसहिं ।
चउवीसहिं वीसहिं विहिं अट्ठहिं अट्ठहिं णाणसहाउवइट्ठहिं ।
एम सहससंखाहिउ घणु भणु खरपंकयलक्खु जि मंदत्तणु ।
आयामु वि असंखु संखेवें पुहइहि पुहइहि अक्खिउ देवें ।
रयणसक्करप्पह वालुयपह पंकप्पह धूमप्पह तमपह ।

५ MBP छट्ठिहि. ६ MP हुरक्किमयहि. ७ K देसवइत्तणु; P सव्वइवइत्तणु. ८ P महावउ. ९ K माणउ सु.

12. १ B पत्तेय वि. २ M देवत्तणु वि होइ किर एयहुं; B होंति समागय देवत्तहु कि वि; P देवत्तणु ण होइ किर एयहं. ३ MBPT पुण्णसलायत्तणु. ४ B सिद्धु समासहिं. ५ MB केवलणाण°; M records a *p* अट्ठहिं for केवल°. ६ B omits this foot; P reads it after 8 *b*; MBP add after this. सोलह चोरासी सहस जि गुण, एक्केकउ जि लक्खु रुंदत्तणु. ८ MBP रयणप्पह सक्कर वालुप्पह.

11. 4 *a* हुरक्कमियहि दुःखव्यासायाम्. 5 *a* मघविहि षष्ठ्याः; *b* अरिट्ठहि पञ्चम्या. 6 *a* अंजणाहि चतुर्थ्याः. 7 *a* सेलहि तृतीयायाः; वंसहि द्वितीयायाः, घम्महि प्रथमस्याः.

12. 1 *a* तिहिं कायहिं पृथिव्यब्वनस्पतिभिः. 2 *a* पत्तेयहं प्रत्येकवनस्पतिकायानाम्. 3 *b* पुण्णसिलोयत्तणु पुण्यश्लोकत्वं शलाकापुरुषत्वं च. 6 *a* विहिं अट्ठहिं षोडशभिः. 7 *a* घणु पिण्डः; *b* खरपंकयलक्खु खरभागे षोडश सहस्राणि पङ्कभागे चतुरशीतिसहस्राणि; मंदत्तणु पिण्डत्वम्.

अवर वि अंतिमिल्ल तमतमपह णिच्चपउंजियबहुणारयवह ।
एयउ घणतमजालणिरुद्धउ सत्त णरयधरणीउ पसिद्धउ ।

घत्ता—पुहईसु विलाहं होंति सहावभयंकरहं ॥
घणतिमिरहराहं अगणियजोयणवित्थरहं ॥ १२ ॥

13

तीस पुणु वि पणवीस जि लक्खइं पुणु पण्णारह दावियदुक्खइं ।
दह पुणु तिण्णि एक्कु पंचूणउं लक्खु विलाहं पंच अहिठाणउं ।
णारइयहं तहिं भत्थायरइं हंसियहरिकरिरूववियारइं ।
महिमयाइं परिमउलियवत्तइं हेट्ठामुहओलंवियगत्तइं ।
लोहकीलकंटालिकरालइं दुग्गंधइं दुग्गमतिमिरालइं ।
एसु सुकिण्हणीललेसावस उप्पज्जंति तिरिय अह माणुस ।
लेंति देहु सहमत्ति मुहुत्तें वेउव्विउ णिउत्तु हुंडत्तें ।
हवइ विहंगणाणु तहिं मेच्छहं अवहिसहावें जिणमयदच्छहं ।
कालिंगालपुंजसंणिहयर पयडियदंतपंति दट्ठाहर ।
विरइयभीमभिउडि रोसुब्भड कविलकेस परमारणकक्खड ।
जिह जिह ते मुणंति अप्पाणउं तिह तिह तं तं संभवठाणउं ।
दाढाभीसणु मुहुं णिव्वायइ अहवा पाउ किं ण किर घायइ ।

घत्ता—हेट्ठामुह झत्ति ते पडंति असिपत्तवणे ॥
सइं अण्णु हणंति अण्णहिं पडिहम्मंति रणे ॥ १३ ॥

९ B °भयकरइं १० MB °वित्थरइ

13. १ P विलागइ. २ MPT अहठाणउ, B आहिठाणइ. ३ M णरइयह, BP णेरइयहिं. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ P °कटाल°. ७ P सुमरइ ठाणउं. ८ P कं ण ९ MB अण्ण.

---

13 बिलाह बिलानाम्

13. 2 *b* अहिठाणउ सप्तमनरक 3 *a* भत्थायारइ भस्त्राकाराणि. 4 *a* महिमयाइं पार्थिवानि. 5 *a* °कटालि° कण्टकपंक्ति°. 8 *a* विहंगणाणु विभङ्गज्ञानम् . *b* जिणमयदच्छहं जिनमतोच्छेदकानाम्. 9 *a* कालिंगाल° कृष्णाङ्गार°. 10 *b* °कक्खड निष्ठुरहृदया°.

14

णउ मज्झत्थु मित्तु उवयारिउ जो जो दीसइ सो सो वइरिउ।
खेत्तसहाउ तेत्थु किं भण्णइ जं सुयकेवलिसमु वि ण वण्णइ।
सूइणिह तणु दुत्तरु भूयलु उण्हु सीउ दुद्धरु चंडाणिलु।
जं करेण लेंतहुं जि मरिज्जइ वइतरणीविसु विसु किं पिज्जइ।
खंडियकरचरणाणणगत्तइं रुक्खहं खग्गसमाणइं पत्तइं।
फलइं वज्जमुट्ठि व्व कढोरइं वरि पडंति णिद्दलियसरीरइं।
महिहरकुहरहिं विप्फुरियाणण खंति विउव्वणाइ पंचाणण।
कुहिणिउ जलणजालपज्जलियउ जहिं वच्चइ तहिं खलयणु मिलियउ।
ण्हाइ जहिं जि तहिं दूमियपिंडइं पूयरुहिरकिमिभरियइं कोंडइं।
जिहिं तिहिं पंचहिं पीडिवि धरियहु ण्हायहु पूयदहहु णीसरियहु।

घत्ता—उक्कत्तिवि तासु दिज्जइ कत्ति णियासणउं॥
आयसवलयाइं सिहितावियइं विहूसणउं॥ १४॥

15

पेच्छइ जहिं जि तहिं जि जमसासणु बइसइ जहिं जि तहिं जि सूलासणु।
भुंजइ जहिं जि तहिं जि दुग्गंधइं णीरसाइं फरुसाइं विरुद्धइं।
आहरियइं पुग्गलइं अकामहु असुहत्तेण जंति परिणामहु।
णिसुणइ जहिं जि तहिं जि दुव्वयणइं फंसइ जहिं जि तहिं जि खरसयणइं।
जं चक्खइ तं तं विरसिल्लउ जं चिंतइ तं तं मणसल्लउ।
जं अग्घायइ तं कुणिमंगउ णारयखेत्ति णउ काइं मि चंगउ।
उद्धसासु अइखासु जलोयरु अच्छिकुच्छिसिरवियण महाजरु।

14. १ P दुत्तरु. २ MBP जें. ३ MBP कठोरइं. ४ M वर; P उवरि. ५ MBP महिकुहरंतरि. ६ MBPT दुम्मिय°. ७ MBP कुंडइं. ८ MBP कित्ति. ९ MBP °तावियउं.

15. १ P जहिं तहिं जि. २ MBP कुणियंगउ. ३ MB णरयखेत्ति. ४ MBP उद्धखासु.

14 3 *a* सुइणिह सूचीसदृशम्. 8 *a* कुहिणिउ मार्गाः. 9 *a* दूमियपिंडइं पीडितस्य शरीराणि. 11 कत्ति चर्म; णियासणउं परिधानम्. 12 सिहितावियइं अग्निना तापितानि.

15. 7 *b* °वियण वेदना.

संभवंति दुक्कियहलगेहइ सव्वउ वाहिउ णारयदेहइ ।

घत्ता—अणुमीलणु कालु सोक्खु ण लब्भइ किं पि जहिं ॥
सारीरउं दुक्खु काइं कहिज्जइ राय तहिं ॥ १५ ॥

16

हउं णारायणु पडिणारायणु हउं महिवइ होंतउ सुहभायणु ।
एम भणंतु कयंतु व कुप्पइ माणसिएं दुक्खें संतप्पइ ।
दाणवणिवहहिं पडिचोइज्जइ जुज्झमाणु सो एम भणिज्जइ ।
तुहुं अणेण चिरभवि सरदारिउ वरमहिमहिलाकारणि मारिउ ।
विझमहागिरिगेरुयपिंजरु सीहें एण हयउ तुहुं कुंजरु ।
पक्खि एण गिलिउ तुहुं विसहरु महिसें णेण दलिय तुहुं हयवरु ।
अविरलखरणहरेहिं णिरुद्धउ वग्घेणेण हरिणु तुहुं खद्धउ ।
हणु हणु एहु एम पच्चारिउ णं वाएण जलणु संचारिउ ।
जुज्झइ णारउ णारय गोंदलि णिवडमाणु कोंतासणि सव्वलि ।

घत्ता—कंपणकणएहिं लंगलमुसलहिं रिउ दलइ ॥
णियदेहु जि ताहं पहरणरूवहिं परिणमइ ॥ १६ ॥

17

अण्णें अण्णु सुसलें सल्लिउ अण्णें अण्णु मुसुंढिइ पेल्लिउ ।
अण्णें अण्णु तिसूलें भिण्णउ अण्णें अण्णु रहंगें छिण्णउ ।
अण्णें अण्णु हुआसणि घित्तउ अण्णें अण्णु पसु व्व विहित्तउ ।
अण्णें अण्णु खुरुप्पें खंडिउ अण्णें अण्णु वियारिवि छंडिउ ।

५ BP अणुमीलणकालु. ६ MBP सारीरिउ

16. १ MBP कुंतासणि. २ MBPK कप्पण°, but GT कपण°. ३ MP परिणवइ.

17. १ MBP सुसेल्लें. २ MBP मुसंढिइ. ३ MBP read this line as अण्णें अण्णु रहगें छिण्णउ, अण्णें अण्णु तिसूलें भग्गउ. ४ MBP विहत्तउ

16. 3 *a* दाणवणिवहहिं दैत्यसमूहैः पडिचोइज्जइ प्रेर्यते. 8 *b* संचारिउ उद्दीपितः. 9 *a* गोंदलि संग्रामे मेलापके वा; *b* सव्वलि सर्वलोहमयी धार्या (?) तस्याम्.

अण्णहु अण्णें खग्गु विहाइउ तहु केरउ जि मासु तहु ढोइउ।
लइ[5] लइ एवहिं काइं णिरिक्खहि मृग[6] वराय मारिवि किं भक्खहि।
तउ अउ तंबउ सीसउ ताविउ अण्णहु मज्जु भणेप्पिणु दाविउ।
पिवसु पिवसु अरहंतु ण याणइ चंगउ कउलु तुज्झु वक्खाणइ।

घत्ता—उम्मग्गें जंति ण णिवारिय णिद्धम्ममइ॥
परघरिणि रमंति जिह पइं रमिय णिबद्धरइ॥ १७॥

18

अग्गिवण्ण तत्तिय[1] अइरत्ती लोहविणिम्मिय णं तुह रत्ती।
तिह एवहिं आलिंगहि माणिणि पह करिंदकुंभपीणत्थणि।
मण्णिवि णवजोव्वण परवाली अवरुंडहि सामरि कंटाली।
खेत्तुब्भउ माणसु[2] तणुजायउ असुरोईरिउ अण्णोण्णायउ।
एउ एम पावेहिं लइयहं पंचपयारु दुक्खु णारइयहं।
तेत्थु ण णारि ण पुरिसु सुयंसउ णग्गउ पिंडु असेसु णउंसउ।
पढमहि पुढविहि[3] णारयगत्तइं भयधणुतिरयणिछंगुलमेत्तइं।
बीयहि पण्णारस[4] दोवारहं धणुरयणिउ अंगुलइं वियारहं।

घत्ता—भवहरदेहाउ पहरंतहु रणि रणरणइ॥
गरुयारउ होइ णारयदेहु विउव्वणइ॥ १८॥

19

तइयहि एक्कतीसधणुतुंगइं एक्करयणि भणु कयदुरियंगइं।
चोत्थियाहि रयणीदुयजुत्तइं[1] धुउ चावइं बासट्ठि पउत्तइं।
पंचमियहि धणुसउ पणवीसउ वड्डिउ वउ आवइ आभीसउ।

---

५ MP लइ तइ एवहिं. ६ MBP मिग.

18. १ MBP तत्ती. २ MBP माणुस. ३ MBP पुहरहि. ४ MBP पण्णारह.

19. १ B रयणीअजुत्तइं.

---

17. 5 *a* विहाइउ विभक्तः. 8 *b* कउलु चार्वाकः.

18. 3 *a* परवाली परस्त्री, *b* सामलि कूटशाल्मलीतरुः. 4 *a* माणसु मानासिकम्. 6 *b* सुयंसउ शोभनशरीरावयवः. 9 रणरणइ अरतिजनके.

छट्ठियाहि बावँहं जिणभणियइं दोण्णि सयइं पण्णास जि गणियइं ।
देहुच्छेहु दुहोहदुँगमियहि पंचसयाइं होंति सत्तमियहि ।
एक्कु पहिल्लइ दुक्कियदुज्जइ जलहिपमाणइं तिण्णि दुइज्जइ ।
तिज्जइ णरइ सत्त चोत्थइ दह सायराइं पंचमि सत्तारह ।
छट्ठइ पुणु बावीस ण रहियइं सत्तमि तीस तिअहियइं कहियइं ।

घत्ता—कंदंत कणंत महिहि घुलंत सुहंतरिय ॥
जीवंति हयास णारय तिलु तिलु कप्परिय ॥ १९ ॥

20

ते जियंति अहमेण अरम्महि फुडु दहवरिससहासइं घम्महि ।
जं घम्महि उँत्तिमु तं वंसहि आउ जहण्णउं दलियसुहंसहि ।
जं वंसहि उत्तिमु तं सेलहि आउ जहण्णउं रउरँवरोलहि ।
जं सेलहि उत्तिमु णिद्दिट्ठउ अंजणाहि तं किर णिक्किट्ठउ ।
जं अंजणाहि परमु पवियप्पिउ तं जि अरिट्ठहि अहमु वियँप्पिउ ।
जं जि अरिट्ठहि किर परमाउसु तं मघविहि देसिउ अविराउसु ।
जं पूरउ मघविहि दुहतवियहि तं आसण्णु मरणु माघवियहि ।
विक्किरियासरीरविण्णासइं होंति अहोहो दीहाउस्सइं ।
होंति अहोहो रुंदइं विवरइं होंति अहोहो मंदइं तिमिरइं ।
होंति अहोहो रणइं दुवेक्खइं होंति अहोहो तिव्वइं दुक्खइं ।

घत्ता—जुज्झंतहं ताहं पहरणकोडिहिं णिद्दलिय ॥
तणुलव लग्गंति सूँयलवा इव संमिलिय ॥ २० ॥

२ MBP चावइ ३ B °दुग्गमियहि. ४ PK होइ.

20. १ MBP उत्तमु and also elsewhere in this kadavaka. २ P °लोलहि. ३ MBP पयपिउ. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ MBP दुपेक्खइं. ७P पारलवा.

19. 9 सुहंतरिय मुखरहिताः.

20. 2b °सुहंसहि °सुखाशायाम्. 8 b दीहाउस्सइं दीर्घाणि आयूंषि. 12 सूयलवा पारदस्य कणाः.

21

अक्खमि सुर दहवसुपंचविह वि सोलह दु णव पंचविह पुणरवि ।
पयहि रयणप्पहहि धरित्तिहि विवरंतरि बहुरइरसथत्तिहि ।
असुरवरहं चउसट्ठि समक्खइं णायघरहं चउरासीलक्खइं ।
बाहत्तरि लक्खाइं सुवण्णहं भवणहं भूरिभासमाइण्णहं ।
दीवसमुद्दथणियतडिणामहं आसाणलकुमारवरधामहं ।
एक्केक्कहु लक्खाइं छहत्तरि अक्खइ एम मयणमयकेसरि ।
लक्ख णवइ लेसाहिय धीरहं आवासाहं समीरकुमारहं ।
कोडिउ सत्त दुहत्तरि लक्खइं पिंडीकयइं होंति पच्चक्खइं ।
भावणभवणइं एम पउत्तइं चउदह सोलह सहस णिरुत्तइं ।
भूयरक्खसायासविसेसइं वीणावेणुपणवणिग्घोसइं ।
अवराइं मि पविमलसिरिहारइं वणगयणयलजलहिसरितीरइं ।
वेंतरणयरइं अयरमणीयइं होंति गणंतहं संखाईयइं ।

घत्ता—जोयण सय सत्त अण्णु वि णवइ मुएवि धर ॥
णहि जोइसवास ते णरलोयहु उवरिच्चर ॥ २१ ॥

22

अद्धकविट्ठसरिससंठाणइं संखारहियइं होंति विमाणइं ।
पंचवण्णरयणावलिखइयइं बाहल्लत्तें पुणरवि रइयइं ।
जोयणसइं खेत्तम्मि दहोत्तरि अयलइ माणुसलोयहु बाहिरि ।

21. १ MBP धगत्तिहि. २ MBP असुरघरइं. ३ MBP °भाइण्णह. ४ M बहत्तरि. ५ K चोद्दह. ६ K णउत्तइं. ७ MB परिमल°. ८ MBP सरितीरइ. ९ MBP विंतर°. १० MBP अइ°; K अय° but corrects it to अइ°.

22. १ MBPT वाहालत्तें पर ण वि and gloss in T परेण न विरचितानि केनापि. २ MBP जोयणसय°.

21. 3 *a* समक्खइं सर्वज्ञस्यावधिज्ञानिना वा प्रत्यक्षाणि. 4 *a* सुवण्णहं सुपर्णकुमाराणाम्; *b* भूरिभासमाइण्णहं प्रचुरप्रभासमाकीर्णानाम्. 5 *b* आसाणलकुमार° दिक्कुमाराणामग्निकुमाराणां च. 7 *a* लेसाहिय षडधिकाः. 10 *b* °पणव° पटहः. 11 *a* पविमलसिरिहारइ प्रविमलश्रीधारके.

22. 3 *a* जोयणसइ खेत्तम्मि योजनशतक्षेत्रे.

अवरें[3]इं लंबियघंटायारें थियइं असंखदीववित्थारें।
बत्तीस जि लक्खइं सोहम्मइ अट्ठावीसीसाणि सुरम्मइ।
दुदह[4] सणकुमारि माहिंदइ अट्ठलक्ख परिभामियसुरिंदइ।
अत्थि विमाणहं उवणियसोक्खइं बंभि सबंभुत्तरि[5] चउलक्खइं।
पण्णास जि लंतवि काविट्ठइ[6] सहसइं होंति जिणाहिवसिट्ठइ।
सुक्कमहासुक्कइ चालीस जि छह सयारसहसारहिं सहस जि।
आणय पाणय आरण अच्चुय चउकप्पहिं सत्तसय[7] संथुय।
हेट्ठिमगेवज्जइ एयारह अवरु वि सउ सुरपवरागारहं।
सत्तुत्तरु मज्झिमहि भणिज्जइ णवइ एक्कु उवरिमहि गणिज्जइ।
णव जि णउत्तरि पंचाणुत्तरि पंच विमाणइं सोक्खणिरंतरि।
चउरासीलक्खाइं णिकेयहं सत्ताणउदि[8]सहासइं एयहं।
एक्कीकयइं ण लेक्खि[9]विरुद्धइं अण्णु[10] वि तेवीसइं[11] लइ लद्धइं।

घत्ता—गेहहं तुंगत्तु विहिं कप्पहिं कवडेण विणु॥
जोयणहं सयाइं छडमाणइं वज्जरइ[12] जिणु॥ २२॥

23

पंचसयाइं विहिं मि उवरिल्लहिं चउ अड्ढ[1] जि विहि ताहं पहिल्लहिं[2]।
उप्परि विहिं चत्तारि सउद्धइं घरइं वरइं णाणामणिणिद्धइं।
पण्णासयइं तिण्णि विहिं अक्खमि सयइं तिण्णि पुणु विहिं जि णिरिक्खमि।
पुणु चउकप्पहं हम्मुच्छेहउ अड्ढाइज्जसयाइं सरेहउ[3]।
पुणु[4] दुइ दुइं दियड्ढु[5] पुणरवि सउ पुणु पण्णास समीरिउ उच्छउ।
पुणु उद्धरें उवरि विमाणइं पंचवीसजोयणइं पहाणइं।

३ K अवरें. ४ MBP दोदह सणकुमारि ५ MBP सुबंभोत्तरि. ६ P कापिट्ठइ. ७ MBP सत्तसयइं. ८ MP सत्ताणवदि°. ९ MBP लेक्खविरुद्धइ. १० P अण्णु वि पुणु तेवीसइ लद्धइ. ११ K तेवीस जि लइ. १२ K वज्जरिइ.

23 १ MBP अड्ढ. २ MBP पइल्लहिं ३ MBP सुरेहउ, K सुरेहउ but corrects it to सरेहउ. ४ MBP पुणु. ५ MBP दिवड्ढु.

6 *a* दुदह द्वादश.

23. 2 *a* चत्तारि सउद्धइं चतुःशतोर्ध्वानि. 4 *a* हम्मुच्छेहउ गृहस्योच्छ्रयः; *b* सरेहउ सशोभः.

सव्वट्ठहु चूलिय लंघेप्पिणु बारहजोयणाइं जाएप्पिणु ।
तम्मि तिलोयहु सिहरि णिसण्णी पणयालीसलक्खवित्थिण्णी ।
ससहरहिमणिहछत्तायारी सिद्धत्थत्ति भव्वयणपियारी ।
जोयणाइं जोव्वय णीसल्लें अट्ठमपुहइ अट्ठ बाँहल्लें ।

घत्ता—सविमाणहु मज्झि सँयणि महारुहि समयमणु ॥
उववादसहावे भिण्णमुहुत्तें लेंति तणु ॥ २३ ॥

24

मउडेहिं हारेहिं केऊरदोरेहिं ।
कंचीकलावेहिं मंजीररावेहिं ।
भूसापहासेहिं अइसुरहिसासेहिं ।
वेउव्वियंगेहिं लक्खणपसंगेहिं ।
चउरंसठाणेहिं माणवणिवाणेहिं ।
अँणमिसहिं णयणेहिं ससिसोम्मवयणेहिं ।
विच्छिण्णतावेण पुण्णप्पहावेण ।
कणयं व गयलेव जाँयंति खणि देव ।
णक्खाइं चम्माइं ण सिराउ रोमाइं ।
रत्ताइं पित्ताइं ण पुरीसमुत्ताइं ।
मीसियउ मासाइं ण वलासकेसाइं ।
मत्थिक्कसुक्काइं णउ अत्थि वोक्काइं ।
सोहग्गगेहम्मि देवाण देहम्मि ।

---

६ MBP बाहुल्लें. ७ MPT सयणु.

24. १ P °डोरेहिं. २ P °पसाहेहिं. ३ MBP अणिमिसहिं. ४ MBP °सोम°. ५ MBP °तावेहिं. ६ MBP °प्पहावेहिं. ७ MK जायत.

---

11 सयणि महारुहि शयने चित्रशालिकायां महार्हे; समयमणु समयमनुकृत्य प्रतिसमयं समयमारभ्य भिन्नमुहूर्तं यावत्तावत्कालेन परिपूर्णं शरीरं गृह्णातीत्यर्थः.

24. 5 *a* चउरंसठाणेहिं समचतुरस्रसंस्थानैः; *b* माणवणिवाणेहिं मानवाकारैः. 8 *a* कणयं व सुवर्णमिव. 11 *a* मीसियउ श्मश्रुः दाढिका; *b* वलास श्लेष्मा. 12 *b* वोक्काइं कालिजा (?).

उवहरकवाडाइं सइं होंति वियडाइं ।
हरिसेण वग्गंति सहस त्ति णिग्गंति ।
सुरजोणिसंपुडहु मणिकिरणपायडहु ।
जय देव देविंद जय णाह चिरु णंद ।
एवं पघोसंति परियणइं तूसंति ।
सव्वहिं मि तणुमाणु उद्दिट्ठु जिणणाणु ।

घत्ता—असुरहं पणवीस दह सेसाहं सवेंतरहं ॥
देहहु दीहत्तु सत्त जि धणु जोइसमरहं ॥ २४ ॥

25

बिहिं रयणीउ सत्त बिहिं छह भणु पुणु बिहिं पंच समुण्णउ सुरयणु ।
पुणु चउहुं मि चत्तारि जि गीयउ पुणरवि आहुट्ठ जि बिहिं णीयउ ।
तिण्णेव य रयणिउ सवियप्पहिं दहपंचमसोलहमयकप्पहिं ।
दो पुण अड्ढ पढमगेवज्जहि मज्झत्थियहि दोण्णि जगपुज्जहि ।
होइ दियड्ढ रयणि उवरिल्लहि अमरवोंदिपरिमाणु सुहिल्लहि ।
णव पंचाणुत्तरहं मि सारउ एक्कु जि रयणि पउत्तु सरीरउ ।
अणिमामहिमालघिमापत्तिहिं ईसत्तणवसित्तगइसत्तिहिं ।
जुत्तकामरूवें कामाउर कीलालोललील सयरामर ।
णउ खुज्जय वामण वड हुंडय णारी पुरिस जि णउ ते पंडय ।
आईसाणकप्पसंभवणउं जावज्जउ ता देविहिं गमणउं ।
भावणाइं णाणातणुधारा आईसाण कप्पपडिचारा ।

८ M णिरु.

25. १ MBP पुणु चहुं, T पुणु बिहि २ MBP जगि पुज्जहि. ३ MBP परमाणु. ४ MBP एक्क. ५ MB °मइसत्तहिं ६ MBP मयलामर. ७ MBP वावण. ८ M संढय. ९ MBP कायपाडि°.

14 *a* उवहर° वासगृहम्. 19 *b* उद्दिट्ठु जिणणाणु कथितं जिनज्ञानेन.

25. 1 *b* पुणु बिहिं पंच ब्रह्मब्रह्मोत्तरयोर्लान्तवकापिष्ठयोर्द्वयोर्द्वयो· कल्पयुगलयोः पञ्च रत्नयः. 2 *a* चउहुं मि शुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेषु कल्पेषु, *b* आहुट्ठ अर्धचतुर्थं·. 7 *b* गइ प्राकाम्यम्. 8 *b* सयरामर सकलामराः· 9 *a* वड न्यग्रोधसंस्थाना·, हुंड विकलावयवा·; *b* पंडय नपुंसकाः. 10 *a* °संभवणउं उत्पत्तिः.

घत्ता—फासें पडिचारु सणकुमारमाहिंदरुह ॥
रूवेण करंति उवरिम चउकप्पय विबुह ॥ २५ ॥

26

पुणु चउकप्पसमुब्भव सुरवर होंति सद्दपडिचार सुहंकर ।
वरि चउकप्पहिं मणपडियारा एत्तो उवरिम णिप्पडियारा ।
सप्पडियार णिएवि अणिंदहु अतुलसोक्खु णिहिलहु अहमिंदहु ।
अहमिंदहु पासाउ जिणिंदहु गयरायहुं तिरायवइवंदहु ।
कम्मभूमि आउ तियसहं सुहसंगमु असुर जियंति एक्कु सायरसमु ।
णायहुं पल्लइं तिण्णि वियाणसु वणदेवहुं पल्लु जि परमाउसु ।
अड्ढाइज्ज पल्ल सोवण्णहं दीवहं दोण्णि पुण्णपरिपुण्णहं ।
सेसहं होइ दिवड्ढु णिरुत्तउ चंदु जियइ लक्खें संजुत्तउ ।
एक्कु पल्लु सहुं सहसें वरिसहुं जीवइ दिणयरु वड्ढियहरिसहुं ।
एक्कु जि सुक्कु सएण समेयउ तारारिक्खहुं ऊणउ णेयउ ।
पंच सत्त पुणु णव एयारह तेरह पण्णारह सत्तारह ।
एक्कुण एक्कवीस तेवीस वि पंचवीस भणु सत्तावीस वि ।
चउत्तीसेक्कताल अडदाल वि पंचावण्ण जि पल्लइं जगरवि ।
सोहम्माइहिं भणइ सतिलयहं आउ अचुयंतहं सुरविलयहं ।

घत्ता—बे सत्त दसेव चोद्दहठारह वि ॥
वीस जि बावीस उड्डु एक्कु वड्ढिमु केह वि ॥ २६ ॥

26. १ MBPK अतुलु. २ MB णिराय°. ३ MBP पल्ल परिपुण्णहं. ४ MBP चउतीसे°. ५ MBP अडताल. ६ P सचुयंतहं. ७ MBP चउदह छद्दह अट्ठारह. ८ MBP उड्डु एक्कु. ९ K कहमि.

26. 2 *a* वरि उपरि. 4 *b* तिरायवइवंदहुं त्रिभुवनपतिवन्द्यानाम्, त्रिराज्यपतिवन्द्यानाम्. 8 *a* सेसहं विद्युदग्निवातस्तनितोदधिदिक्कुमाराणाम्. 10 *a* सएण समेयउ शतवर्षाधिकं पल्यमेकं शुक्रो जीवति; *b* ऊणउं किंचिदूनम्. 13 *b* जगरवि जगद्भास्करः. 14 *a* सतिलयहं सतिलकानां देवीनाम्; *b* सुरविलयहं सुरवनितानाम्.

27

ताम जाम तेत्तीसंसमुद्दइं सव्वट्ठम्मि आउ कयभद्दइं ।
कप्पहं कप्पाईयहं पहुउ अक्खमि णाणविसेसु वि जेहउ ।
सक्कीसाणहं अवहि पयावइ जाम पढममहिमंतु विहावइ ।
पुणु दोसग्ग देव बीयहि तलु पेच्छंति वि जाणंति वि णिम्मलु ।
अणु चउकप्प तियस तइयावणि चउसंभूय चउत्थी मेइणि ।
आणयपाणय सुर पंचमियहि आरणच्चुयामर छट्ठमियहि ।
णव गेवज्ज मुणंति महंतउ ताम जाम सत्तमणरयंतउ ।
खुद्दइ ओहिइ अणुदिस सुंदर तिजगणाडि पेक्खंति अणुत्तर ।
उप्परि णियविमाणचूडामणि जा ता देव मुणंति महागुणि ।
पंचवीस जोयणइं वणेसहं संखाजुत्तइं जोइसवासहं ।
अवरु वि हवइ ओहि कयसमरहं गणियउ जोयणकोडिउ असुरहं ।
जिह असुरहं तिह रिक्खहं तारहं चंदहं सूरहं गुरुअंगारहं ।
सुक्कहु पुणु मेइं अक्खिउ भल्लउ संखाहिउ ओहिविसउल्लउ ।

घत्ता—णारय वि मुणंति जोयणेक्कु रयणप्पहहि ॥
गाउय अद्धद्धु होइ हाणि सेसेहि महिहि ॥ २६ ॥

28

कम्माहारु असेसहं जीवहं णोकम्माहरु वि भवभावहं ।
लेवाहारु वि दीसइ रुक्खहं कवलाहारु णरोहतिरिक्खहं ।

27. १ MBP तेतीस°. २ MBPT सव्वट्ठहमि. ३ MBP °महिअंतु. ४ K छमियहि. ५ P ते जिणाडी. ६ MBP अवर. ७ P वहइ. ८ MB तिक्खहं. ९ MBP सइं. १० MP सखाई ओहीविसयल्लउ; B संखाईउ ओहिविसयल्लउ. ११ MBP जोयणेक्कु. १२ M णीसेसहि.

28. १ B लेवाहारु.

27. 1 *b* सव्वट्ठम्मि सर्वार्थसिद्धौ; कयभद्दइ कृतसौख्यानि कृतकल्याणानि वा. 3 *a* पयावइ प्रवर्तते; *b* °महिमंतु पृथिव्या अन्तः. विहावइ विभावयति जानाति. 8 *a* अणुदिस नव अनुदिशदेवाः. *b* अणुत्तर पञ्च अणुत्तरदेवाः. 10 *a* वणेसह व्यन्तराणाम्. 11 *a* कयसमरहं नारकयुद्धकारिणाम्. 13 *b* ओहिविसउल्लउ अवधिज्ञानविषयः.

28. 1 *b* णोकम्माहारु षण्णां पर्याप्तानां त्रयाणां शरीराणां योगपुद्गलादानं नोकर्माहारः; भवभावहं शरीरयुक्तानाम्.

ओजाहारु पक्खिसंघायहं मणभोयणु चउदेवणिकायहं ।
अहमिंद वि करंति तेत्तीसहिं वोलीणहिं वरवरिससहासहिं ।
बत्तीसेक्कतीस पुणु तीसहिं एक्कुणतीसहिं अट्ठावीसहिं ।
एक्केक्कउ जि एम पडिहम्मइ सोलहमे बावीसहिं जिम्मइ ।
आउणिबंध महोवहिसंखहिं णीससंति तेत्तियहिं जि पक्खहिं ।
पल्लजीवि पुणु भिण्णमुहुत्तें णीससंति अह ताहं पुहत्तें ।
ऊससंति केइ वि पक्खेण जि असुर असंति अहिय सहसेणं जि ।
सरसइं सुरहियाइं अइमिट्ठइं सुहुमइं सुद्धइं णिद्धइं इट्ठइं ।
आहूरंति दवियाइं सइत्तें परिणमंति सहस त्ति तणुत्तें ।

घत्ता—संसारिय जीव चउविह चउगइभिण्ण जिह ॥
इंदियभेएण पंचपयार पउत्त तिह ॥ २८ ॥

29

काएं छव्विह चवलथिरेण वि तिविह तिविहजोएं वेएण वि ।
जलणिहिविहि वि कसाएं जाया अट्ठभेय णाणें विण्णाया ।
संजमदंसणेण तिचउव्विह लेसापरिणामेण वि छव्विह ।
भव्वत्तेण विविह सम्मत्तें सण्णि असण्णी दो सण्णित्तें ।
आहारें आहारिय जे जे चउसु वि गइसु परिट्ठिय ते ते ।

१ MBPK ओजाहार. ३ MBP तेतीसहिं. ४ MBP °सेक्कतीस. ५ MBP पविहम्मइ. ६ MBPK सोलहमइ. ७ MBP आउ णिबद्धु. ८ MBP पुणु. ९ MBP केइ जि पक्खेण वि. १० MBP सहसेण वि.

29. १ MBP छव्विह थिरेण तसेण वि; T चवलछिरेण चपलस्वभावानां स्थिरपृथिव्यादीनाम्. २ MBP °विह व. ३ MB कसायं. ४ MBP असण्णि दोण्णि.

3 *b* मणभोयणु मानसाहारः. 4 *b* वोलीणहिं व्यतिक्रान्तैः. 6 *a* पडिहम्मइ प्रतिहन्यते. 8 *b* अह ताहं पुहत्तें अथवा तेषां भिन्नमुहूर्तानां पृथक्त्वेन आगमभाषया त्रयाणामुपरि नवानामधः निश्वसन्ति. 9 *b* असंति अश्नन्ति भोजनं कुर्वन्ति. 11 *a* दवियाइं पुद्गलद्रव्याणि; सइत्तें स्वचित्तेन; *b* तणुत्तें तनुरूपेण.

29. 1 *a* काएं छव्विह षड्जीवनिकायेन; चवलथिरेण चपलस्वभावेन पृथिव्यादिस्थिरस्वभावेन च. 2 *a* जलणिहिविह चतुर्विधाः; *b* अट्ठभेय णाणें पञ्चज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि तैरष्टभेदः. 3 *a* संजमेत्यादि—त्रयः संयमासंयमसंयमासंयमाः; तथा चत्वारः क्षायिकौपशमिकासंयमाः अथवा सामायिकच्छेदोपस्थापनसूक्ष्मसंपराययथाख्याताः परिहारविशुद्धेरभावात्; दंसणेत्यादि त्रीणि दर्शनानि क्षायिकौपशमिकक्षायोपशमिकानि; तथा चत्वारि चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानि. 4 *a* भव्वत्तेण विविह भव्याभव्यौ द्विविधौ.

केवलिसमुहय विग्गहगइगय   अरुह अजोइ सिद्ध परमप्पय ।
ते ण लेंति आहारु वियारिय   सेस जीव जाणहि आहारिय ।
मग्गणठाणइं चोद्दहभेयइं   णिसुणहि गुणठाणाइं मि पयइं ।
मिच्छादिट्ठि पहिल्लउं गीयउं   सासणु बीयउं मीसु वि तीयउं ।
अविरयसम्माइट्ठि चउत्थउं   पंचमु विरयाविरउ पसत्थउ ।
छट्ठउ पुणु पमत्तसंजमधरु   सत्तमु अप्पमत्तु गुणसुंदरु ।
अट्ठमु होइ अउव्वु अउव्वउं   अणियट्टिल्लउ णवमु अगव्वउं ।
दहमउं सुहुमराउ जाणिज्जइ   एयारहमुवसंतु भणिज्जइ ।
बारहमउ परिखीणकसायउ   तेरहमउं सजोइजिणु जायउ ।
उज्झियतिविहसरीरभरंतरु   उवरिल्लउं अजोइ परु अक्खरु ।

घत्ता—णारय चत्तारि चत्तारि जि पुणु सुरपवर ॥
तिरियंच वि पंच णीसेसंम्मि चडंति णर ॥ २९ ॥

30

कम्मविहम्ममाण ससरीरा   सासयकरणुज्जय विवरेरा ।
दंसणणाणसहावपहट्ठा   होंति जीव उक्किट्ठणिकिट्ठा ।
ताहं चेट्ठ जा होइ समासम   सा तद्दलियगहणभावक्खम ।
जेम तेल्लु सिहिसिहपरिणामहु   तेम कम्मपोग्गलु वि णिसामहु ।
जीवें लइयउ जाइ जियत्तहु   तिव्वकसायरसेंहिं पमत्तहु ।

५ MBPK चउदह° ६ MBPK मिच्छाइट्ठि. ७ MBP °सजमहरु. ८ MBP आणियट्टिल्लउ णवउं. ९ MBP परिहीण°. १० MBP णीसेसह मि.

30. १ MBP कम्मु पोग्गलु. २ MB जाय जियत्तहु; P जियंतहु.

6 *a* केवलीत्यादि—केवलिनो यदा समुद्घात कुर्वन्ति दण्डकपाटप्रतरपूरणत्वेन त्रैलोक्यं भरन्ति तदाष्टसमयादनाहारकाः, अन्यदा आहारका एव. 10 *b* विरयाविरउ विरताविरतो देशसंयतः. 12 *a* अउव्वउं अनुपमम्, *b* अणियत्तिल्लउ अनिवृत्तिकरणम्. 13 *a* सुहुमराउ सूक्ष्मसांपरायम्; *b* उवसतु उपशान्तकषायम्. 15 *a* °तिविहसरीर° औदारिक तैजसं कार्मणं च; *b* अक्खरु अविनश्वरं सिद्धस्वरूपम्.

30. 1 *a* ससरीरा संसारिणः; *b* सासयकरणुज्जय शाश्वतकरणाः शाश्वतपरिणामास्तेषूद्यताः; विवरेरा विपरीताः; सिद्धा इत्यर्थः. 3 *a* चेट्ठ चेष्टा मनोवाक्कायव्यापारः; समासम प्रशस्ता अप्रशस्ता च; *b* तद्दलियेत्यादि–तया शुभाशुभचेष्टया दलितो विभक्तः अनेकप्रकारः योसौ ग्रहणभावः कर्मादानपरिणामः तत्र क्षमाः समर्थाः. 5 *a* जाइ जियत्तहु जीवत्वं गच्छति.

जिह सिहिभावहु वड्ढइ इंधणु तिह कम्मेण जि कम्महु बंधणु ।
असुहें असुहु सुहें सुहु संधइ सिद्धभडारउ किं पि ण बंधइ ।
अभव जीव जिणणाहें इच्छिय एक्कु ण ते वि अणंत णियच्छिय ।
मइसुंओहिमणपज्जव केवल णाणावरणविमुक्क सुंणिक्कल ।
णिद्दाणिद्दा पयलापयला थीणगिद्धि णिद्दा पुणु पयला ।
चक्खुअचक्खुदंसणावरणउ अवही केवलदंसणवरणउ ।
तेहिं विणासिउ णवसंखायउ वेयणीयदुगु सायासायउं ।
दंसणमोहणीउ सम्मत्तु वि मिच्छत्तु वि सम्मामिच्छत्तु वि ।
दुविहु चरित्तमोहु विक्खायउ णोकसाउ णामेण कसायउ ।
तं कसायजायउ सोलहविहु इयरु भणेसमि पच्छइ णवविहु ।
पढमकसायचउक्कु सुभीसणु सत्तमणरयगामि दिहिदूसणु ।

घत्ता—अइकोहु समाणु माया लोहु वि दुत्थयरु ॥
उवसमहुं ण जाइ जइ वि पबोहइ तित्थयरु ॥ ३० ॥

31

अवरु अपच्चक्खाणु गुरुक्कउ पच्चक्खाणु चउक्कु विमुक्कउ ।
संजलणु वि जलंतु उल्हाविउ थीपुंसंढराउ उड्डाविउ ।
भयरइयरइदुगुंछउ जित्तउ हासु वि सहुं सोएण णिहित्तउ ।
सुर णर णरय तिरिय चउआउ वि बायालीसविहेयउं णाउं वि ।
गइणामउ वि जाइणामु वि भणु तणुणामउं पुणु तणुहि णिबंधणु ।
तणुसंघाउ तणुहि संठाणउं तणुअंगोअंगु वि णामाणउं ।

३ MBP सिद्धु भडारउ; K सिद्धभडारउ but corrects it to सिद्धु. ४ MBP °सुइओहि°. ५ MBP सुणिम्मल. ६ MBP °दसणहरणउ. ७ K दुक्खयरु but corrects it to दुत्थयरु.

31. १ MBP चउक्क. २ P उण्हाविउ. ३ MBPT उड्डाविउ. ४ MBP भइरइअरइ°. ५ MBP सइ. ६ P विहित्तउ. ७ P णिरय. ८ MBP जाइणाउ, ९ MBP तणुअंगोवंगु वि णिम्माणउ.

7 *a* संधइ उपार्जयति. 17 दुत्थयरु दुःखतरः.

31. 1 *b* विमुक्कउ विमुक्त सिद्धैः. 2*b* °राउ उड्डाविउ °भाववेदः क्षपितः. 3 *b* णिहित्तउ विनिक्षिप्तः. 4 *b* बायालीसेत्यादि—पिण्डत्वेन द्वाचत्वारिंशन्नामप्रकृतयः. 5 *a* गइणामउ नरकतिर्यङ्मनुष्यादिगतिनाम. 6*b* णामाणउं निर्माणम्.

तणुसंघडणु[10] वण्णगंधिल्लउं[11] रसणामउं अवरु वि फासिल्लउं ।
आणुपुव्वि[12] अगुरुलहु लक्खिउ उवघाउ वि परघाउ वि अक्खिउ ।
ऊसासु वि आदाउज्जोयउ[13] अण्णु विहायगइ वि तसकायउ ।
थावरु थूलुसुहुमु पज्जत्तउ अण्णु वि मण्णिउं अप्पज्जत्तउ[14] ।
पत्तेयंगणाउं साहारणु थिरु अथिरु वि सुहणाउं सकारणु ।
असुहु सुभगु दुब्भगु सुसरिल्लउ दुस्सरु आदेज्जउ जगि भल्लउ ।
णाउं अणादेज्जउ जसकित्ति वि तित्थयरत्तु णिमिणु मलकित्ति वि ।

घत्ता—चउगइजम्मेण गइणामउं अट्ठद्धविहु ॥
इंदियइं गणेवि जाइणामु भणु पंचविहु ॥ ३१ ॥

32

हणिवि पंच णामइं पंचविहइं एक्कु तिभेयउ दो[1] दो दुविहइं ।
दो छह पुणु दो चउ अट्ठविहइं उच्चारुयइं जाइं एक्कविहइं ।
समलामलइं दोण्णि जगि गोत्तइं ताइं मि जेहिं दूरि परिचत्तइं ।
दाणभोयउवभोयणिवारउ वीरियलोहु[2] हेउसंघारउ ।
अंतराउ पंचविहु धुणेप्पिणु अडयालीसउं सउ विहुणेप्पिणु[3] ।

१० K संघदणु. ११ P वण्णु गंधिल्लउ. १२ MBP अणुपुव्विय अगरुगलहु. १३ MBP आदाउज्जोयउ. १४ MB अप्पज्जत्तउ.

32. १ M दो पुण दुविहइं. २ MBP °लाह°, K लाहु but corrects it to लाह. ३ MBP विहुणेप्पिणु.

---

9 *a* आ दा उ आतापः 12 *b* आ दें ज्ज उ दीप्तिसहितम्. 13 *a* अ णा दे ज्ज उ अनादेयम्; *b* णि मि णु निर्म्न नीचम्; म ल किं त्ति अयशःकीर्ति 14 अ द्ध ट्ठ वि हु चतुर्भेदं चतुर्गतिरित्यर्थः. 15 जा इ णा मु एकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियजातिनाम, प च वि हु पञ्चप्रकारम—तथाहि, औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणशरीरनाम पञ्चविधम्.

32. 1 *a* पं च णा म इ पं च वि ह इं औदारिकादिशरीरनिबन्धननामानि पञ्च, तथा औदारिकादिशरीराणां संघातनामानि पञ्च, तथा कृष्णनीलश्वेतरक्तपीतवर्णनामानि पञ्च, तथा कटुतिक्तकषायाम्लमधुररसनामानि पञ्च; इति पञ्च नामानि पञ्चविधानि, *b* ए क्कु ति भे य उ औदारिकवैक्रियिकाहारकशरीराङ्गोपाङ्गनाम त्रिभेदम्; दो दो दु वि ह इं सुरभिदुरभिगन्धनाम प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिनाम च. 2 *a* दो छ ह समचतुरस्रवल्मीकन्यग्रोधकुब्जवामनहुंडस्थाननाम षड्विधम्, वज्रर्षभनाराचवज्रनाराचनाराचअसंप्राप्तास्पृष्टादिकादृसंघट्टननाम च षड्विधम्; दो च उ नरकगत्यादिनाम नरकगत्याद्यानुपूर्वीनाम च चतुर्भेदम्, अ ट्ठ वि ह इं कर्कशमृदुगुरुलघुशीतोष्णस्निग्धसूक्ष्मस्पर्शनामान्यष्टविधानि.

पयडिहिं माणवंगु मेल्लेप्पिणु　　सुद्धसहाउ[४] सयंभु[५] लहेप्पिणु ।
जे गयँ[६] जीव परमणिव्वाणहु　　दुहविरहिहु[७] सासयठाणहु ।
चरमसरीरमाण किंचूणा　　ववगयरोयसोय अविलीणा ।
णिम्मल णिरुवम णिरहंकारा　　जीवदव्वघण णाणसरीरा ।
उड्ढगमणसहावें[८] रंपिणु　　उड्ढलोउ सयलु वि लंघेप्पिणु ।
अट्ठमपुहइवट्टि[९] णिविट्ठा　　अभव जीव जिणदेवें दिट्ठा ।

घत्ता—ते साइ अणाइ दुविह अणंत जि विविहदुहे ॥
ते पुणु ण मरंति णउ पडंति संसारमुहे ॥ ३२ ॥

33

णउ बाल णउ वुड्ढ　　णउ मुक्ख सुवियड्ढ ।
णीसाव[१] णित्ताव[२]　　णिग्गाव णिप्पाव ।
णाणंग णिम्मेह　　णिण्णेह णिद्देह ।
णिक्कोह णिल्लोह　　णिम्माण णिम्मोह ।
णिव्वेय णिज्जोय　　णीराय णिब्भोय ।
णिद्धम्म णिक्कम्म　　णिच्छम्म णिज्जम्म ।
णीराम णिक्काम　　णिब्बाह णिद्धाम ।
णिव्वेस णिल्लेस　　णिग्गंध णिप्फास ।
णीरस महाभाव　　णीसद्द णीरूव ।
अव्वत्त चिम्मेत्त　　णिच्चिंत णिव्वित्त ।
ण छुहाइ घेप्पंति　　ण तिसाइ छिप्पंति ।
ण रुयाइ[३] झिज्जंति　　ण रईइ सिज्जंति ।

४ B सिद्धसहाउ. ५ MBP सयभु. ६ MB गय परम जीव. ७ MBP दुक्खविमुक्कहु. ८ K उड्ढे गमणु. ९ K अट्ठमि.

33. १ P णीसास. २ MBP णीताव. ३ MBP रुवाइ.

6 *a* माणवंगु नरशरीरम्, *b* सइभु सहजः. 8 *b* अविलीणा कदाप्यपरित्यक्तसिद्धस्वरूपाः. 11 *a* °वट्टि °पृष्ठे. 12 साइ अणाइ अनादिसादिकालद्वयापेक्षया पर्यायार्थिकद्रव्यार्थिकनयापेक्षया वा.

33. 3*a* णिम्मेह निर्मेधसः पञ्चेन्द्रियज्ञानरहिताः केवलज्ञानिनः. 8*a* णिव्वेस निर्द्वेषाः. 12 *b* सिज्जंति पीड्यन्ते.

णाहारु भुंजंति ओसहु ण जुंजंति ।
ण मलेण लिप्पंति ण जलेण धुप्पंति ।
णिदं ण गच्छंति अणयणा वि पेच्छंति ।
अमणा वि जाणंति सयरायरं झत्ति ।
सिद्धाण जं सोक्खु तं कहइ चम्मक्खु ।
किं माणवो को वि सुरु खयरु देवो वि ।

घत्ता—पंचिंदियमुक्कु परमप्पइ हुयँउ विमले ॥
जं सिद्धहं सोक्खु तं र्ण वि कासु वि भुवणयले ॥ ३३ ॥

34

एहा दुविह जीव मइं अक्खिय कहमि अजीव वि जेम णिरिक्खिय ।
धम्मु अधम्मु दो वि रूवुज्झिय आयासें कालें सहुं बुज्झिय ।
गइठाणोग्गहवत्तणलक्खण के वि मुणंति सुणाण वियक्खण ।
संतु अणाइ समउ वट्टंतउ तीउ कालु अगामि अणंतउ ।
तासु ठाणु भण्णइ णरलोयउ धम्माधम्महं सव्वतिलोयउ ।
बिहिं मि लोयणहमाण वियप्पउ आयासु वि अणंतु सुसिरप्पउ ।
तं जि अलोउ जोइपण्णत्तउ पोग्गलु होइ पंचगुणवंतउ ।
सद्दें गंधें रूवें फासें जुत्तउ भिण्णवण्णविण्णासें ।
खंधु देसु अद्धद्धपएसु वि परमाणुउ अविहाइ असेसु वि ।

घत्ता—तं सुहुमु वि थूलु थूलुसुहुमु पुणु थूलु भणु ॥
थूलाण वि थूलु चउपयारु महुं मुणइ मणु ॥ ३२ ॥

४ B भुजति, P हुजति and gloss योजयन्ति. ५ MBP अणयण जि. ६ MBP सुरु. ७ MBP हूयइ. ८ MBP णउ.

34, १ MBP रूउज्झिय. २ P वट्टतउ. ३ MB तीयउ, P तइयउ. ४ MBP धम्माहम्महं सयलु. ५ MBPK माणु वि अप्पउ, T लोयणमाणु. ६ MBP अद्धद्धु. ७ M सुहुमुसुहुमु तह सुहुमु वि पुणु; B चउपयारु सुहु मुणइ मणु, P सुहुमु सुहुमु तह सुहुमु पुणु

19 परमप्पइ परमपदे मोक्षस्थाने.

34. 4 *a* संतु मान्तः, अणाइ अनादिः; समउ वट्टंतउ वर्तमान. कालः समयः. 5 *a* तासु उक्तव्यवहारसमयस्य. 6 *a* लोयणहमाण लोकाकाशपरिमाणम्; *b* सुसिरप्पउ शुषिरस्वरूपम्. 9 *b* अविहाइ अविभाज्यः.

35

गंधु वण्णु रसु फासु [1]संसद्दउ सुहुमु थूलु वज्जरइ समद्दउ ।
थूलुसुहुमु जोण्हाछायाइउ थूलु सलिलु वीरेण णिवेइउ ।
थूलुथूलु पुणु धरणीमंडलु सग्गविमाणपडलु मणिणिम्मलु[2] ।
सुहुमइं कम्माइयइं सणामइं मणभासावग्गणपरिणामइं ।
वण्णाइयहिं रसेहिं अणेयहिं परिणमंति संजोयविओयहिं ।
पूरणगलणसहावणिउत्तइं पोग्गलाइं विविहाइं पउत्तइं ।
भासिज्जंतउ परमजिणिंदें णिसुणिवि धम्मु सुधम्माणंदें ।
वसहसेणु सुहभावें लइयउ पुरिमतालपुरवइ पावइयउ[3] ।
सोमप्पहु सेयंसणरेसरु[4] थिउ पव्वज्ज लेवि हयमयजरु ।
इय रिसहहु परिमुक्कविसाया णिव चउरासी गणहर जाया ।
बंम्ही[5] सुंदरि अज्जिय संघहु कंतियाउ जायाउ महग्घहु ।
दंसणमोहणीयपडिरुद्धउ[6] एक्कु मरीइ णेय पडिबुद्धउ ।
तावस कंदाहारु मुणेप्पिणु थिय कच्छाइय रिसिव्व लेप्पिणु ।
मोक्खमग्गगामिहि परमेसरु हुयउ अणंतवीरु अग्गेसरु ।

घत्ता—सावउ सुयकित्ति सावइ देवि पियंवइय ॥
भरहेण वि पुज्ज पुप्फयंत पइ[7] जिणि रइय ॥ ३५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महावत्थुणिद्देसो णाम
एयारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ११ ॥

॥ संधि ॥ ११ ॥

35. १ M सुसद्दउ. २ MBP add after this: सुहुमुसुहुमु परिमाणुविसेसइं; लग्गहिं णिवडवि अप्पपएसइं. ३ P पव्वइयउ. ४ MBP सेयसु णरेसरु. ५ MBP बंभी. ६ K °परिरुद्धउ. ७ MBP पइ; K पइ but corrects it to एह and gloss एतस्मिन् जिने.

35. 1 *b* समद्दउ मार्दवयुक्तः उपशमार्द्रो वा. 4 *a* सणामइं ज्ञानावरणादिनामयुक्तानि. 12 *b* एक्कु मरीइ एको भरतपुत्रो मरीचिनामा प्रतिबोधं न प्राप्तः, 16 एह जिणि एतस्मिन् जिने.

XII

अरिवरणिद्दारणि खत्तुद्धारणि तिजगलच्छिविजयाणउं ॥
विहलियसाहारणि मेइणिकारणि भरहें दिण्णे पयाणउ ॥ १ ॥

1

छुडु छुडु सरयागमि अप्पमाणु णहु णाइं धोयहरिणीलभाणु ।
णं दीसइ ओमन्थिउ अएण सरयब्भद्धहियखंडहुं कएण ।
णं जगहरि णीलुल्लोउ बद्धु तारामोत्तियझुंबुकणिद्धु ।
अइ दसे वि दिसा सइं गयरयाइं णं चारित्तइं सज्जणकयाइं ।
ससिकुंभगालियजोण्हाजलेण पक्खालियाइं णं णिम्मलेण ।
णिडुहेंइ कमलु सरए ससंकु तहु तेण जि लग्गउ पिंडपंकु ।
सो अज्ज वि दीसइ मलविरुद्धु णियडिंभपराहवि को ण कुद्धु ।
तेण जि रोसें रवि तिव्वु तवइ सररुहसुहि किं चिक्खिल्लु खवइ ।
पंकक्खइ सुक्कइ णलिणणालु अइउग्गत्तणु बंधवहं कालु ।
कुवलयदिहिगारउ णाइं राउ कयबंधुजीवसुच्छायभाउ ।
तरु कुसुमामोएं महमहंति रयकविलइं सलिलइं वणि वहंति ।
अलि रुणुरुणंति पावाहपिंड महुमत्ता णं गायंति सोंड ।

घत्ता—सारयमयलंछणु रइरंजियजणु जइ मयमलिणु ण होंतउ ॥
तो हउं कयसंतिहि जिणजसयंतिहि एहु जि उप्पउं देंतउ ॥ १ ॥

1. १ MPT खत्तुद्धारणि but gloss क्षत्रियधर्मप्रकटने. २ MBP दिण्णु. ३ P ओम्मत्थिउ. ४ P अइदिस°. ५ MBP णिद्दहइ. ६ MBP बिंबि पंकु. ७ MBP सुक्खइ. ८ T दिहिहारउ धृतेरपहारको धरकश्च. ९ MBP °सच्छाय°. १० P पावोह°. T पायोह°. ११ MP जइय. १२ MBP ह.

---

1. 1 अरिवरणिद्दारणि प्रचण्डशत्रून्मूलने, खत्तुद्धारणि दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनलक्षणक्षात्रियधर्मप्रकटने, °लच्छिविजयाणउ °लक्ष्मीविजययो प्रापकम्. 4 *a* अएण अजेन ब्रह्मणा. 5 *a* णीलुल्लोउ नीलचन्द्रोपकम्. 10 *b* सररुहसुहि सूर्यः कमलबान्धवः, खवइ सहते विनाशयति वा. 12 *a* राउ राजा चन्द्रो वा. 14 *a* पावाहपिंड पापसदृशशरीराः, कृष्णवर्णा इत्यर्थः ; *b* सोंड मद्यपाः. 16 उप्पउ उपमा.

2

पणवेप्पिणु लेप्पिणु सिद्ध सेस अवठंभिवि रुंभिवि सयल देस ।
आवेप्पिणु पइसेप्पिणु अउज्झ परचक्कमुक्कपहरणदुगेज्झ ।
मणु ढोयवि जोयवि तणयवयणु परियंचिवि अंचिवि चक्करयणु ।
दालिद्दु रउद्दु पवासियाहं काणीणहं दीणहं देसियाहं ।
णिहणिवि वरेण चामीयरेण णाणाविलासतोसायरेण ।
मंतिवि अहंगु पंचंगु मंतु को सत्तु मित्तु को तव्विरत्तु ।
परियाणिवि माणिवि वुड्ढ चारु ओहारिवि धारिवि रज्जभारु ।
अइवग्गिउ मग्गिउ को ण कप्पु भणु केण ण केण वि मुक्कु दप्पु ।
भुयदंडचंडविक्कमवएण छक्खंडमंडलावणिकएण ।
गंभीरतूरलक्खइं हयाइं दुप्पेक्खइं रक्खइं हयमयाइं ।
कयसमरहं अमरहं थरहरंति गत्तइं सोत्तइं बहिरत्तु जंति ।
असुरिंदहं णाइंदहं पियाइं पायालइं विउलइं कंपियाइं ।
तुट्टइं फुट्टइं गिरिमहियलाइं झलझलियइं वलियइं सरिजलाइं ।
थिरभावहं देवहं जाय संक रहपेल्लिय डोल्लिय रवि ससंक ।

घत्ता—तहु तिजगविमद्दहु तूरणिणद्दहु मिलिउ दुग्गणिव्वाहणु ॥
परमंडलसाहणु गहियपसाहणु खणि चउरंगु वि साहणु ॥ २ ॥

3

णिग्गयं णिवबलं धरियहलसव्वलं
कणयकुंतुज्जलं चंदणसुपरिमलं ।

2. १ MBP भयगयाइं. २ MB झलिझलियइं. ३ MBP चलियइं. ४ MBP रह°. ५ MP जेल्लिय. ६ M परमंडलु.

3, १ MB °कंतुज्जलं.

---

2. 1 *b* अवठंभिवि हठादाक्रम्य; रुंभिवि प्रतिग्राहयित्वा. 4 *d* देसियाहं परदेशजनानाम्. 6 *a* अहंगु अभङ्गोऽविकल.; पंचंगु मंतु सहायाः साधनोपायो देशकालबलाबलौ । विपत्तेश्च प्रतीकार. पञ्चाङ्गो मन्त्र इष्यते. 7 *b* ओहारिवि अवधार्य. 8 *a* अइवग्गिउ अतिगर्वित.. 15 दुग्गणिव्वाहणु दुस्तरे प्रदेशे निस्तारणसमर्थम्.

3. 1 *b* °सव्वलं तिलपीडनायुधं घाणी.

सरसघुसिणारुणं खयंतरणिदारुणं ।
तुरुतुरियकाहलं सुहडकोलाहलं ।
मुक्कहुंकारयं फुंसियअसिधारयं ।
बद्धतोणीरयं अहियखोणीरयं ।
गहियसंणाहयं णवियणियणाहयं ।
चलइयसरासणं परिहियविहूसणं ।
वूढजंपाणयं चोइयविमाणयं ।
जंतजक्खामरं चलियचलचामरं ।
खुहियणाणाणिवं जणियगमणुच्छवं ।
कामिणीसुललियं किंकिणीमुहलियं ।
रहियवाहियरहं छत्तछाइयणहं ।
बंदिवण्णियगुणं दिण्णमणिकंकणं ।
पवणधुयधयवडं गिरिगरुयगयघडं ।
गहियमयगारवं रणियघंटारवं ।
परिभमियमहुयरं मुक्कढकासरं ।
मलियफणिसेहरं काललीलाहरं ।
णडियसुरणरगणइं चडुलहयवरथडं ।
बहलधूलीरयं घुलियमणिहारयं ।

घत्ता—कयरिउवहुविरहें जगजसभरहें चलियएण पधाइउ ॥
वररहैमायंगहिं भडहिं तुरंगहिं सेण्णु ण कत्थइ माइउ ॥ ३ ॥

4

मणी कागणी कामिणी दंडरण्णं णिसीसक्कमाणिक्कभाभारभिण्णं ।
रहंगं णरिंदंगतुंगं पहारं अजेयं सुतेयं करालं किवाणं ।

२ MBP खयतरुणि°. ३ MP फुरिय°. ४ M रूट° ५ MBP °कचणं. ६ MBP °सुरवरणइं. ७ MBP °जयभरहें चलतेण, T जगजसभरहें, but records a *p* जगजयेति पाठे जगति जयेनोपलक्षितो भरतस्तेन. ८ P पधाइयउ. ९ MBP वररहवरमायंगहिं. १० P माइयउ.

---

3 *b* खयतरणिदारुणं प्रलयकालसूर्यसदृशम्. 6 *a* °तोणीरयं तूणीर, *b* अहियखोणीरयं शत्रुभूम्यासक्तम्.
4. 1 *b* णिसीत्यादि–चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमाणिक्यानां भासस्तासां भारेण भिन्नं कर्बुरिताङ्गम्. 2 *a* णरिंदंगतुंगं चक्रवर्तिशरीरप्रमाणम्.

पियं छत्तचम्मं सुरम्मं महंतं महावीरखंधारवित्थारवंतं ।
हरीकीरपिंछोहकंतिल्लकाओ करी णिज्जियाणिंददेविंदणाओ ।
पुरोहो णिरोहो व्व भीमावयाणं णिवासो पयासो पयासंपयाणं ।
समे वेसमं वेसमे सामकारी चमूपुंगवो दुग्गमग्गावहारी ।
गिही को वि देवो महिड्डीसमिद्धो महंतेण पुण्णेण रायस्स सिद्धो ।
सुरागारकिम्मीरकम्मावयारो परो को वि अण्णो णिकेऊहकारो ।

घत्ता—इय साहियभुवणहिं चोद्दहरयणहिं सहुं णरणाहहु इच्छइ ॥
हयगयरहवाहणु चलिउ साहणु सयलु रहंगहु पच्छइ ॥ ४ ॥

5

मणिरहवरे चडिउ णं इंदु णहि वडिउ ।
दढकढिणभुयजुयलु अइवियडवच्छयलु ।
किं भणमि पुरिसहरि बलतुलियकुलसिहरि ।
सद्दूलवरखंधु बहिरंधजणबंधु ।
अलिणीलधम्मेल्लु तेलोक्कपडिमल्लु ।
दूवंकुरालेण दहिचंदणालेण ।
उक्खित्तसेसेण मंगलणिघोसेण ।
संचलिउ भरहेसु णं मयणु णरवेसु ।
धउ धइण पडिखलिउ णरु हरिहिं दरमलिउ ।
भेसिउ अहद्देण करहस्स सद्देण ।
करि धुणइ णियकंठु महि णिवडिओ मेंठु ।
भरओ रउद्देण घित्तो बलद्देण ।
भग्गाइं भायणइं चुण्णाइं गोहणइं ।

4\. १ B °पिच्छोह°. २ M गिरी. ३ MBP महद्धी. ४ MP चउदह°.
5\. १ MB णहवडिउ. २ MBP °धम्मिल्लु. ३ P दलमलिउ. ४ MBP मेट्टु.

3 *b* देविंदणाओ ऐरावणो हस्ती. 5 *a* भीमावयाणं भीमानामापदाम्; *b* पयासो प्रकटम्; पयासंपयाणं प्रजानां संपदाम्. 6 *a* वेसमं विषमम्. 7 *a* गिही गृही भाण्डागारिकः. 8 *a* °किम्मीर° विचित्रम्; *b* णिकेऊहकारो सूत्रधारः स्थपतिः.

5\. 10 *a* भेसिउ भयं नीतः; अहद्देण अभद्रेण.

णवणलिणणेत्ताइ वेसरि णिहित्ताइ ।
परिगलियचेलाइ हा भणिउ बालाइ ।
खरवडणपडियाइ महुसीहुघडियाइ ।
रसवणिय जूरंति कह कह व वियरंति ।
अच्चंतपोढेण तेल्लोक्करूढेण ।
थिरथोरवाहेण सेणाहिणाहेण ।
पप्फुल्लवयणेण दढदंडरयणेण ।
गिरिणो दलिज्जंति मग्गा रइज्जंति ।
दूरं समग्गेण चक्काणुमग्गेण ।
संतोसपुण्णाइं गच्छंति सेण्णाइं ।
णयणाहिरामाइं गामाइं सीमाइं ।
विसमाइं मंठाइं विझोवकंठाइं ।
हलहरणिवासाइं लंघंतु देसाइं ।
पविसंतु रोहंतु अहिणो विरोहंतु ।
णिक्खवियणियसत्तु सुरवरसरिं पत्तु ।

घत्ता—पंडुर गंगाणइ महियलि घोलइ किंणरसरसुहभंतहो ॥
अवलोइय राएं छुडु छुडु आएं साडी णं हिमवंतहो ॥ ५ ॥

6

णं सिहरिघरारोहणणिसेणि णं रिसहणाहजसरयणखाणि ।
णिम्मल णावइ जिणणाहवाय मयरंकिय णं वम्महवडाय ।
णं विसमविडप्पभउत्तसंति धरणीयलि लीणी चंदकंति ।
णं णिद्धधोयकलहोयकुहिणि णं कित्तिहि केरी लहुय बहिणि ।

५ MBPK वेसर°. ६ MBPT खरचडुल°. ७ MBP add after this: णवणलिणणयणेण. ८ MP add after this. वज्जेण घडिएण. ९ MBP सठाइ. १० MB गेहंतु. ११ P °भत्तहो.
6. १ MBP वम्महपडाय. २ P विडप्पइ भउ तसंति. ३ G सिद्ध° but gloss स्निग्ध.

16 *a* खर° गर्दभ.. 25 *a* मठाइं निम्नोन्नतानि. 27 *b* अहिणो विरोहंतु नागान् विरोधयन्. 30 साडी परिधानवस्त्रम्.
6. 3 *a* °विडप्पभउत्तसंति राहुभयादुत्त्रस्यन्ती. 4 *a* °धोयकलहोय° अतिनिर्मलं रूप्यम्.

गिरिरायसिहरपीवरथणाहि णं हारावलि वसुहंगणाहि ।
विर्येलियकंदरदरिवडिय सच्छ धरणिहरकरिंदहु णाइं कच्छ ।
सिय कुडिल तहु जि णं भूइरेह णं चक्कवट्टिजयविजयलीह ।
आयासहु पडिय धरित्तियाइ सुपडिच्छिय णं पियसहि पियाइ ।
पक्खलइ वलइ परिभमइ ठाइ णियठाणभंसचिंताइ णाइं ।
णिग्गय णयवम्मीयहु सवेय विसपउर णाइं णाइणि सुसेय ।
हंसावलिवलयविइण्णसोह उत्तैरदिसिणारिहि णाइं बाह ।

घत्ता—बहुरयणणिहाणहु सुट्ठु सुलोणहु धवलविमलमंथरगइ ॥
सायरभत्तारहु सइं गंभीरहु मिलिय गंपि गंगाणइ ॥ ६ ॥

7

जहिं मच्छैपुच्छपरियत्तियाइं सिप्पिउडेंच्छलियइं मोत्तियाइं ।
घेप्पंति तिसाहयगीयएहिं जलबिंदु भणिवि बैप्पीहएहिं ।
जलरिट्ठहिं पिज्जइ जलु सुसेउ तमपुंजहिं णावइ चंदतेउ ।
सोहइ रत्तुप्पलदलरुईइ पुणु सो जि णाइं संझारुईइ ।
जहिं कीरउलइं कीलारयाइं दहिकुट्टिमि णावइ मरगयाइं ।
जहिं कंकहारणीहारछाय कल्लोल हंसपक्ख वि ण णाय ।
जहिं पाणिइ पंडुरु अच्छराइ उप्परियणु दिट्ठुँ ण जंतु जाइ ।
परिहाणु सहत्थें धरिउ ताइ जंपिउ हो ण्हाणें पत्थु माइ ।
मायंगहुं दाणें वहइ णेहु जा तहु धिवंति तवसि वि सुँदेहु ।
जडसंगें विउसु वि जडु जि होइ कमलावासेसु सुयंति भोइ ।

४ MBP विवरिय°. ५ MBP उत्तरदिस°. ६ MBP सलोणहु.
7. १ MBPK °पुंछ°. २ B °उडच्छलियइ. ३ MBP बप्पीहएहिं. ४ MBP जंतु ण दिट्ठु. ५ MBPK सदेहु.

6 *b* कच्छ कक्षा. 7 *a* भूइरेह भस्मरेखा. 10 *a* णयवम्मीयहु पर्वतवल्मीकात्; *b* विसपउर नदीपक्षे जलप्रचुरा, नागिणीपक्षे विषप्रचुरा. 11 *b* बाह बाहुः.
7. 1 *a* परियत्तियाइं अभिहतानि. 2 *a* तिसाहयगीयएहिं तृषया शुष्ककण्ठैः; *b* बप्पीहएहिं चातकैः. 3 *a* जलरिट्ठहिं जलकाकैः. 9 *a* मायंगहुं हस्तिनो चाण्डालानां च; णेहु चिक्कणत्वं रागश्च. 10 *b* भोइ सर्पाः.

सिररयण घणासइ घरइ ते वि घणवंत वहुँप्पिय सविस जेवि ।
दिव्वंगणघणथणजुयलखलिय जिणण्हवणारंभदिणम्मि गलिय ।
उच्छलियबहलसीयलतुसार णं खीरमहोवहिखीरधार ।

घत्ता—एयँहि महिणारिहि भुवणजणेरिहि ससिमणिरइयपहुज्जल ॥
सायरगिरिरायहिं धरिवि सरायहिं णाइं णिबद्धी मेहल ॥ ७ ॥

8

सरि पेच्छिवि महिपरमेसरेण पुच्छिउ सारहि भरहेसरेण ।
झसणयणी विब्भमणाहिगहिर णवकुसुमविमीसियभमरचिहुर ।
मज्जंतकुंभिकुंभत्थणाल सेवालणीलणेत्तंचलाल ।
तडविडविगलियमहुघुसिणपिंग चलजलभंगावलिवलितरंग ।
सियघोलमाणडिंडीरचीर पवणुद्धुयतारतुसारहार ।
वित्थिण्णमणोहरपुलिणरमण णइ णाइं विलासिणि मंदगमण ।
कवणेह भणसु सियकोमलंगि रइ जणइ विहंगहं णं विहंगि ।
तं णिसुणिवि रहियं वुत्तु एम कमणीयसुकामिणिकामएव ।
धरणीसमउडमणिकिरणराइ कइरंजियचरणणरेसराइ ।
दालिद्दपंकसोसणदिणेस भुयबलकंपावियतिहुयणेस ।
पणईयणपयणियपरमपणय णिसुणसु णरिंद णाहेयतणय ।
सुंधराधरिंदभेयणसमत्थ णं मंतिहि केरी मइ महत्थ ।
गंभीर पसण्ण सुलक्खणाल णं सुकइहि केरी कव्वलील ।
रहवरसिरि व्व दरिसियरहंग किं ण वियाणहि णामेण गंग ।
हिमवंतपोमसरणिग्गयंगि णं महिवहुयहि परियाणभंगि ।

६ MBPT वहूपिय. ७ MBP एयहिं.

8. १ M परमेसरेण २ MBP पवणुद्धुय°. ३ MBP कमणीयकामिणी°. ४ MB सधरा°. ५ MBP कव्वमाल. ६ MBPK परिहाण° and gloss in PK परिधानं.

11 *a* सिररयण सर्पाः, *b* बहुप्पिय वधूनां प्रियाः, अथवा, बहूनां प्रियाः.

8. 2 *a* °विब्भम° जलावर्तः. 5 *a* °डिंडीर° फेनः. 9 *b* णरेसराइ नरेश्वराणामादिः प्रथमचक्रवर्तीत्यर्थः. 12 *a* सुधराधरिंद° धराधराः पर्वता राजानश्च, शोभनाश्च ते धराधराः, तेषामिन्द्रः प्रधानः. 14 *a* °रहंग चक्रवाकः. 15 *b* परियाणभंगि गमनप्रकारः.

घत्ता—गिरिणहधराणियलहिं जलणिहिविवैरहिं वहइ छाय ससिदिसिहि ॥
भुवणत्तयगामिणि जणमणरामिणि एह सरिस तुह किसिहि ॥ ८ ॥

9

घणे जक्खिणी जक्खकीलावियारे तओ तम्मि गंगाणईचारुतीरे ।
पधावंतमायंगदाणंबुगंधं घुलंतुद्धपालिद्धयं चारुचिंधं ।
विसंकं जसंकं कयारिंदसंकं बलं रायसेणाहिवाणाइ थक्कं ।
पकीरंति दूरं समा भूमि एसा तडिज्जंति दूसाइं चंदोवहासा ।
गवक्खंतणिग्गंतधूमोहवासा रइज्जंति संचारिमा भूरिवासा ।
विमुच्चंति पल्लाणभारा हयाणं गयाणं पि ढक्कारवेणागयाणं ।
भरुम्मुक्कदेहा जहिच्छं वलद्दा गया रासहा रासहीदिण्णसद्दा ।
तरूणं तणाणं पधावंति दासा पलिप्पंति चुल्लीणिहित्ता हुयासा ।
पइज्जंति णाणाविहा भक्खभेया णरा के वि भुंजेवि णिस्संगसेया ।
सरिच्छेण दीहेण पंथेण भग्गा पसुत्ता सुहं गेहिणीकंठलग्गा ।
बलिज्जंति दिज्जंति गासा करीणं तणं भोयणं खाणलोणं हरीणं ।
पपेच्छंति अण्णे धयं साहिणाणं पयंपंति अण्णे पईहं पयाणं ।
ण संसंति अण्णे णरिंदस्स कामं भमामो कहं णिच्च गामाउ गामं ।
इमो वेसरो वेसरी लेउ चारं परेणेव वुत्तो परो वारवारं ।
कउद्धुद्धगीवा वणंते पयट्टा लयापल्लवं पाणियं लेंति उट्टा ।
हले होउ जत्ताइ पत्ता णिविग्घं पिए पेच्छ दूसाइं आगच्छ सिग्घं ।
इणं जत्थ केणावि रीणेण वुत्तं सवेसाणिवासं सचिंधोवउत्तं ।
सहट्टं सटेंटं सदेवं समिद्धं इमं एव राएण ठाणं णिबद्धं ।

७ MBPT °विवलहिं.

9. १ MBP झसकं. २ MB णिग्गंति. ३ MB वलिद्दा. ४ MBP पवच्चंति. ५ M खाणपाणं. ६ K ण पेच्छंति. ७ वयंसाहिणाणं. ८ M णमंसंति. ९ MBP णरिंदं सकामं. १० MB कओउद्धगीवा; P कओवुद्ध°. ११ PK उंटा. १२ MBP इम. १३ BP विबद्धं.

---

16 वहइ छाय शोभां धरति.

9. 2 *b* °पालिद्धयं वशवेष्टितपताका. 4 *b* चंदोवहासा मण्डपिका. 5 *a* °वासा गन्धाः. 9 *b* णिस्संगसेया निर्गताङ्गस्वेदाः. 11 *a* बलिज्जंति बलिदानेन तोष्यन्ते. 13 *a* कामं षट्खण्डपृथ्वीप्रभावना-भिलाषम्. 14 *a* चारं जीवन तृणं वा. 17 *b* सवेसाणिवासं वेश्यागृहसहितम्.

घत्ता—णियथवइ विरइयइ मणिगणखइयइ सइं सग्गहु उवइण्णउ ॥
णं सुरवरसुंदरु देउ पुरंदरु पहु सउहयलि णिसण्णउ ॥ ९ ॥

10

सामंत महासामंत जेवि मंडलिय महामंडलिय तेवि ।
सेणाहिवसिट्ठुद्देसणिलइ थिय रायपसायविइण्णपुलइ ।
हुय रयणि पुणु वि उग्गमिउ भाणु सगभत्थिजालजज्जलमाणु ।
गयमयमलेण मइलिज्जमाणु हरिलालाणीरें धुप्पमाणु ।
छत्तंधयारछाइज्जमाणु पहरणविप्फुरणहिं दीसमाणु ।
झल्लरिभेरीरवगज्जमाणु मणहरकामिणियणगिज्जमाणु ।
णग्गोररेणुधवलिज्जमाणु वणधूलियाइ कवलिज्जमाणु ।
मग्गयपहाइ णीलिज्जमाणु सोणंदु सविक्कमु साहिमाणु ।
अंसहंतिइ भडयणभरु महंतु णं वसुहावणियइ पित्तु वंतु ।
अणडुहवज्जरखरमाणिएण णरणियरकरहसंदाणिएण ।
णाणावाहणरहसंकडेण चल्लियउ तुरिउ गंगातडेण ।
चक्कीसचमूवइपेरियंगु चक्कहु पच्छइ बलु चाउरंगु ।
आरुहिवि विजयगिरिवरकरिंदि केसरिकिसोरु णं गिरिवरिंदि ।
खंधोवबद्धतोणीरजुयलु करणिहियचावगुणरावमुहलु ।
संचलिउ विजयदुंदुहिणिणाउ सुरवइदिसाइ रायाहिराउ ।

घत्ता—उल्लंघिवि भीयरु उवरयणायरु पुणु थलमग्गें आइउ ॥
महिहरदरिवासइं गोहणघोसइं पहु गोउलइ पराइउ ॥ १० ॥

१४ MBP सुरवरु सुदरु देव पुरदरु. १५MP णिसाण्णिउ.

10. १ MBP णव°. २ B omits णीलिज्जमाणु. ३ B omits this foot. ४ B omits this line. ५ MP पित्तु वतु. ६ B omits अणडुहु. ७ MBP गंगायडेण. ८ MP केसरकिसोरु. ९ MB करि णिहिय°. १० MBPT °दरवासइं.

10. 3 *b* सगभत्थिजाल° निजकिरणसघात·. 7 *a* णग्गोर° कर्पूरः. 9 *b* वसुहावणियइ वसुधावनितया; पित्तु वंतु पित्तं वान्तम्. 10 *a* °वज्जर° वेगसरोऽश्वतरः. 13 *a* विजयगिरि हस्तिनामेदम्. 15 *b* सुरवइदिसाइ पूर्वादिशि. 16 उवरयणायरु उपसमुद्रः.

11

जहिं मंथिज्जइ अइथड्डु दहिउं थड्डत्तणु कासु वि होइ ण हिउं ।
जहिं कड्डिउ मंथउ गोवियाइ दीहें गुणेण णं पिउ पियाइ ।
चप्पेवि धरिउ मंदीरएण परिभमइ णाइं घणथणकएण ।
हो हो हलि गोम्मिणि मइं जि रमइ मंथाणु ण तुह कामग्गि समइ ।
मा कड्डहि केयाकड्डणीइ इय गज्जिउ जहिं णं मंथणीइ ।
अइमहणें सिढिलीहूउं देहु किं दहिउं ण अण्णु वि मुयइ णेहु ।
तक्कइं पमेव जि जहिं पिवंति गामीणय तक्कहिं किं करंति ।
घयदुद्धइं जहिं पंथिय पियंति गयपहसम सुहु णिद्दइ सुयंति ।
जहिं गोविइ पेच्छिवि णरपहाणु वच्छुल्लउ मेल्लिवि वद्धु साणु ।
सूरविउ तक्कु अविचित्तियाइ घिउ छड्डिउं तग्गयणेत्तियाइ ।
महिवइमुहपंकयरमणतण्ह जहिं संठिय णीसासुण्ह सुण्ह ।
जहिं कुणरिंदहं रिद्धीउ जेम महिसिउ खलेहिं दुज्झंति तेम ।
काहलियवंससद्दइं सुणंति ण करइ घरकम्मु वि सिरु धुणंति ।
वच्चइ संकेयहु गोवि का वि मज्झण्णपासि बहुडिंभया वि ।
जहिं देंति तालु कीलावयासु मंडलिय गोव गायंति रासु ।
जहिं सिंगसमुक्खयतरुवरेहिं ढेक्कारिउ धीरु धुरंधरेहिं ।

घत्ता—तं गोट्ठु मुयंतें गहणि चरंतें हरिणासिंगखयकंदहिं ॥
मयमासाहारइं कुहरागारइं दिट्ठइं सवरपुलिंदहिं ॥ ११ ॥

11. १ MBP अइथट्टु. २ MBP थट्टत्तणु. ३ B मीदीरएण. ४ MBP गोमिणि. ५ MBP सिढिलीहूय. ६ B गामीणय. ७ MBP पंथिय जहिं. ८ B सुहणिद्दइ. ९ MBP मण्णिवि. १० MBP सूरविउ. ११ MBP अवचित्तियाइ. १२ M छंडिउ. १३ MBP महिसीउ खलहिं. १४ MBPK दुब्भंति. १५ M घरकम्मु वि सिरं; BP घरकम्मु सिरं. १६ MBP कीलावयासु. १७ M गीय. १८ MBP ढेक्कारिउ चारु. १९ M समरपुरिंदहिं.

11. 1 *a* अइथड्डु अतिघनम्. 2 *a* मंथउ रविका; *b* णं पिउ पियाइ प्रियः प्रियया इव. 3 *a* मंदीरएण रविकानिरोधकलोहवलयादिना, प्रियपक्षे, मन्दरतेन. 5 *a* केयाकड्डणीइ वरत्राकर्षिण्या. 7 *b* तक्कहिं तत्त्वविचारणे तर्कैः. 9 *b* साणु श्वा. 10 *a* सूरविउ उत्कालितं तापितम्. 11 *b* णीसासुण्ह निश्वासैरुष्णा; सुण्ह वधूः. 16 *b* धुरंधरेहिं वृषभैः. 18 मयमासाहारहिं मृगमांसाहारैः.

12

दुवई—[1]वामणथ[2]ड्डथोर[3]वलवलियकलेवरसंधिबंधणा ।
कढिणतिकंडचंडकोदंडकमागयजणणकुलहणा ॥ १ ॥
सुमडहथूलविरलदसणुज्जलमुहसिहिपि[4]च्छणिवसणा ।
गयमयपउरपंक[5]चच्चिक्कियगुंजादामभूसणा ॥ २ ॥
झंपडकविलकेसरुहिरारुणदारुणतंबणयणया ।
तिक्खखुरुप्पपहरपवि[6]यारियमारियमोरहरिणया ॥ ३ ॥
इसुहयदंतिदंतकयमंदिरसंचियचारबोरया ।
त[7]लतरुवत्तरत्तणीलुप्पलविरइयकण्णपूरया ॥ ४ ॥
दिसिपसरंतविमलससियरणिहणरवइजसभयंगया ।
घंसविसेसजायमुत्ताहलचमरीरुहकरग्गया ॥ ५ ॥
पीयसुसीयकुसुमरयसुरहियमहिहरकंदरंभया ।
सबरीवयणकमलरसलंपडखंधुद्धरियडिंभया ॥ ६ ॥
हरगलगरलमलिणणवजलहरछविसारिच्छकायया ।
आया पहुसमीवि मउलियकर विविहकिरायरायया ॥ ७ ॥
गुरुभयवसणिहित्तणियदेहमहीयललग्गभालया ।
ते अवलोइऊण करुणेण णवंतवणंतवा[8]ळया ॥ ८ ॥
ण्हंततरंतजक्खिथणघुसिणामोयमिलंतमहुयरं ।
चंचलसंगलंतकल्लोलगलत्थियखयरवहुवरं ॥ ९ ॥
कच्छवसुंसुयारमयरोहरपुंछुच्छालियणीरयं ।
पत्तो परियणेण सह महिवइ सुरवरसरिदुवारयं ॥ १० ॥

घत्ता—आवासिउ साहणु वणि सुपसाहणु णिसि पणविवि परमेसरु ॥
णं जिणु जिणसासणि थिउ दब्भासणि उववासेण णरेसरु ॥ १२ ॥

12. १ M has before this. छद पथटिका. २ MBP थड्ढ. ३ MBP °चलवलिय°. ४ MBP °पिंछ°. ५ P °चिच्चिक्कय°. ६ MBP °यारियतित्तिरमोर°. ७ M तिलतरु°; T तिलतरु but gloss ताड-वृक्ष°. ८ MBP ठिउ.

12. 2 °जणण° पिता; °कुलहणा कुलधनाः. 8 तलतरुवत्त° तालवृक्षपत्रम्. 11 °कंदरंभया °कन्दरजलाः. 14 °किराय° भिल्लाः. 20 °दुवारयं गङ्गायाः समुद्रानुप्रवेशस्थानम्.

13

अहिवासिउं राएं चक्करयणु जिह तं तिह अवरु वि दंडरयणु ।
सुयवण्णु अहंगु तुरंगरयणु करिरयणु लोह[1]वलयंकरयणु ।
उग्गमिउ णहंगणि दुमणिरयणु आरूढउ संदणि पुरिसरयणु ।
कइवयणरेहिं सह सूरसंसु णं माणसपंकइ रायहंसु ।
पहरणपरि[2]पुण्णु महामहंतु परिभमियचक्कचिक्कारु देंतु ।
चलपंचवण्णधयवडललंतु णाणामणिकिरणहिं पज्जलंतु ।
ओलंबियकिंकिणिरणझणंतु तियसिंदह मणि वि[3]म्हिउ जणंतु ।
[4]सलिलणिहिसलिलधोइयपएहिं मुहसंमुहघुलियतरंगएहिं ।
तक्कारिचम्मलट्ठीहएहिं रहु कड्ढिउ मारुयजवहएहिं ।
छक्खंडपुहइवलयाहिवेण अवलोइउ जलणिहि पत्थिवेण ।

घत्ता—हरिसेण व गज्जइ भरहु ण भज्जइ पहु ण कासु किर रुच्चइ ॥
मरुहयकल्लोलहिं चलभुयडालहिं रयणायरु णं णच्चइ ॥ १३ ॥

14

उक्खिवइ व मोत्तियतंदुलाइं तोयइं णं अग्घंजलिजलाइं ।
भीएण व रायहु लइय वेल दावइ व विउलसलिलंतसेल ।
णं ढोयइ[1] जलमयगल सरंत[2] जलणरकिंकरकररुहफुरंत ।
माणिक्कइं पवरपवालयाइं णं दरिसइ[3] तीरलयालयाइं ।
णं बोहइ वडवाणलपईवु[4] णं वेढिवि रक्खइ जंबुदीवु[5] ।
संखाऊरि[6]उ जिह संखु धरइ पहुआणइ किंकरु किं ण करइ ।
उम्मुक्कविविहजलयरसणेहिं णं जंपइ पायालाणणेहिं ।

13. १ P °वलियंक°. २ MP °परिपुण्ण°. ३ MBP विंभउ. ४ MBP °सलिलसुणिहियपएहिं.

14. १ P ढोयइ. २ MBP रसत; K सरंत but corrects it to रसंत. ३ BP दरसइ. ४ MBP °पईउ. ५ MBP जंबुदीउ. ६ MBP संखाऊरिउ.

13. 1 *a* अहिवासिउं पूजितम्. 2 *a* सुयवण्णु शुकवर्णम्; अहंगु अभङ्गम्; *b* लोहवलयंकरयणु लोहवलयबद्धदन्तम्. 3 *a* दुमणि° आदित्यः. 9 *a* तक्कारि सारथिः; चम्मलट्ठी° कशा.

14. 7 *a* °सणेहिं शब्दैः; *b* पायालाणणेहिं वडवामुखैः.

किं विहुमराएं तुहुं जि राउ तेल्लोक्कपियामहु जासु ताउ।
मा जोयहि महिवइ तिक्खभल्लि तउ तणिय वाय मज्जायवेल्लि।
होएप्पिणु अच्छउं एत्थु ताम णउ लंघमि महियलि वसमि जाम।
तुह मुहइ अंकिउ हउं समुद्दु मा किं पि करहि मच्छरु रउद्दु।

घत्ता—खारत्तु ण मेल्लइ जणु किं बोल्लइ णत्थि सहावहु ओसहु॥
जसु णामु जि सायरु अवसें सायरु सो संभासइ णिययपहु॥ १४॥

15

तरुणीअंगाइं व सलवणाइं अहिसिंचियतीरलयावणाइं।
लंघेप्पिणु रयणायरवणाइं पइसेप्पिणु बारहजोयणाइं।
ठाएप्पिणु पुणु तेत्तियहिं तेहिं तंबेहिं सरोसहिं लोयणेहिं।
रिउभवणु पलोइवि णिववरेण अप्फालिउ धणुहुं धणुद्धरेण।
अंदोलिय तारागहपयंग महि चलिय विवरणिग्गयभुयंग।
अच्छोडियबंधण विवलियंग णिण्णासिय तासिय रवितुरंग।
थरहरिय धराहर धरण वरुण आसंकिय जम वइसवण पवण।
संचालिय सरिसरसायरंभ गय मयगल मुढियालाणखंभ।
णिवडिय पुरवर पायार गेह मुय कायर णर भयभंतदेह।
धम्मीरहिं लग्गहु दिण्ण दिट्ठि अवर वि चवंति हा णट्ठ सिट्ठि।
दप्पिट्ठ दुट्ठ भुयबलविमद्दु भडभीयरु भावइ भीमु सद्दु।
किं मंदरसिहरु सठाणल्हसिउ किं जगु कवलिवि कालेण हसिउ।

घत्ता—पायालि फणिंदहिं महिहि णरिंदहिं सग्गि सुरिंदहिं कंपिउं॥
धणुगुणटंकारें अइगंभीरें कासु ण हियउं विप्पिउं॥ १५॥

७ MBP तेल्लोक°. ८ MBP. होएविणु अच्छमि. ९ ण हु.

15. १ MBP धराधर. २ M आसंकय, BP आसकइ. ३ P भयवंत. ४ MBP मुट्ठि. ५ MBP भीमसद्दु. ६ B °ण्हसिउ. ७ MBP ण जगु. ८ PK कंपियउ. ९ P विप्पियउ.

13 सायरु सागरः, सायरु सादरः

15. 2 *a* °वणाइं जलानि. 8 *b* मुढिअ° मग्नः. 11*a* भावइ चमत्करोति. 14 विप्पिउ भयम्.

16

धणुवेयजाणुं परिछिण्णमाणु   बंधेप्पिणु णिरुवमु किं पि ठाणु ।
णं कालें भासुरु कालदंडु   णरणाहें पेसिउ वज्जकंडु ।
धम्मुज्झिउ पलयहुयासलीलु   गुणकोडिविमुक्कउ णं कुसीलु ।
पिच्छंचिउ चंचलु णं विहंगु   उज्जयगइ णं सुयणंतरंगु ।
अइदूरगामि णं परमणाणु   अइसुद्धिवंतु णं सुक्कझाणु ।
अइदीहायारउ णं भुयंगु   अइप्राणहारि णं खलपसंगु ।
अइगुणिहि परंमुहुं होवि गयउं   णं माणुसु कुसमयभत्तिहयउ ।
अइलोहघडिउ णं लुद्धचित्तु   अइगयणगमणु णं खेयरत्तु ।
अइमोक्खगामि णं चरमदेहु   अइकढिणभेइ णं णइपवाहु ।
णावालउ णं तच्चिय महंतु   हुंकारें चोइउ णं सुमंतु ।

घत्ता—मागहहु णिहेलणि हरिणीलंगणि खुत्तु कणयपुंखुज्जलु ॥
रुइणिज्जियकज्जलि जउंणाणइजलि णं पप्फुल्लिउ सयदलु ॥ १६ ॥

17

भूभंगभीसभिउडीहरेण   विप्फुरियदसणडसियाहरेण ।
सुरसमरसहासभयंकरेण   दुणिरिक्खविवक्खखयंकरेण ।
देवेण समुद्दपरिग्गहेण   तं पेक्खिवि गज्जिउं मागहेण ।
भणु केणुप्पाडिय जमहु जीह   भणु केण लुहिय खयकाललीह ।
णायउलवलयविलुलंतु गीढु   भणु केण णिसुंभिउ धरणिवीढु ।
भणु केण कलिउ मंदरु करेण   उट्ठाविउ सुत्तउ सीहु केण ।
भणु केण हलिउ णाहि भाणु जंतु   णिव्विण्णउ प्राणहं को जियंतु ।
भणु कासु करोडिहि रिट्ठु रसिउ   भणु को कयंतदंतंति वसिउ ।

16. १ MB °जाण. २ MBP उज्जुय°. ३ MBP अइसिद्धिवंतु. ४ MBP °पाण°. ५ MBP होइ. ६ MBP °भंति°. ७ B लुद्धरत्तु.

17. १ MBP विलुलंत. २ M धरणिपीढु. ३ MBP पाणहं. ४ B रिद्धु. ५ P दंतंतवसिउ.

---

16. 4 *b* उ ज य ग इ सरलगतिः. 7 *a* गु णि हि शरासनान्मुनेश्च. 10 *a* णा वा ल उ नौयुक्तः, पक्षे नमनशीलः. त च्चि य नदीप्रवाहः तात्त्विकश्च; *b* सु मं तु परममन्त्रः. 12 ज उं णा ण इ° यमुनानदी.

17. 4*b* लु हि य प्रोञ्छिता. 5 *a* गी ढु गृहीतम्. 8 क रो डि हि शिरोस्थनि; रि ट्ठु काकः,

भणु केण विहंडिउ मज्झु माणु केणेहु विसज्जिउ कुलिसबाणु ।

घत्ता—जेणेउं वियंभिउं रणु पारंभिउं सो महु अज्जु ण चुक्कइ ॥
णिब्भंगु जमाणणु भीयउ काणणु बिहिं वि एकु धुंवु ढुक्कइ ॥ १७ ॥

18

इय भणिवि तेण कड्डिउ करालु धारालउ णावइ मेहजालु ।
पडुताडणखंडियभडवंमालु असि अरिकरिमोत्तियदंतुरालु ।
दढमुट्ठिणिवीडिउ वहइ वारि दासु व विज्झइरि व वंसधारि ।
वसुणंदउ ससिमंडलसरिच्छु उरि चप्पिवि उट्ठिउ लोहियच्छु ।
पहु पेच्छिवि केण वि लइउ कौंतु आरुट्ठु को वि हणु हणु भणंतु ।
मोग्गरु मुसुंढि परसु वि तिसूलु केण वि करि लइयउ भिंडिमालु ।
वावल्लु सेल्लु झसु सत्ति मुसलु हलु सव्वलु कंपणु जुज्झकुसलु ।
केण वि भुयंगु केण वि विहंगु केण वि तुरंगु केण वि मयंगु ।
केण वि अलियल्लि घुलंतजीहु केण वि खरणहरुक्केरु सीहु ।
केण वि संचोइउ करहु सरहु कु वि आहवि धाइउ जाम सरहु ।

घत्ता—ता मागहमंतिहिं कयकुलसंतिहिं पणवेप्पिणु उब्भाइउ ॥
छणससहरवयणहिं तारहिं णयणहिं रायसिलिम्मुहु जोइउ ॥ १८ ॥

19

तहिं लिहियेइं दिट्ठइं अक्खराइं सुरमणुयखयरदेसंतराइं ।
जिणतणयहु विविहणिहीसरासु णियकालवट्टसंधियसरासु ।
रायहु भरहहु ण णवंति जाइं णिच्छउ दोहाइं मरंति ताइं ।

६ MBP धुउ.

18. १ MBP °कवालु. २ MBP कुंतु. ३ MBPK पट्टिसु तिसूलु. ४ P भिंडमालु. ५ MBP वावल्ल. ६ MBP कप्पणु.

19. १ P तिहिं and gloss बाणे. २ MBP लेहियइ. ३ M °कालवट्टि. ४ M जे वि. ५ M ते वि.

---

11 णिब्भंगु अनिष्टम्.

18. 4 *b* लोहियच्छु रक्तलोचनः. 6 *b* भिंडिमालु गोलागोफणी (?). 7 *b* कंपणु सर्वलोहमयः कुन्तः 9 *a* अलियल्लि व्याघ्रः.

19. 2 *b* कालवट्ट° कालपृष्ठ नाम धनुः. 3 *b* दोहाइं द्विखण्डानि.

मणु रंजिवि जुंजिवि अवहिणाणु दक्खविउ ससामिहि गंपि बाणु ।
पुणु अक्खिउ खलयणमइयवट्टि उप्पण्णउ महियलि चक्कवट्टि ।
भो मागह किं जुज्झग्गहेण मुइ पहरणु किं विणडिउ गहेण ।
जइ अज्जु ण इच्छहि तासु सेव तो तुम्हइं णउ अम्हइं मि देव ।
तुहुं एक्कु ण अक्खरइं सुरसयाइं तहु मंदिरि दासत्तणु गयाइं ।
लिहियहु किं किरं कीरइ विसाउ दीसइ पणविवि रायाहिराउ ।
तें वयणें सो पैरिमुक्कदप्पु थिउ मंतपहावें णाइं सप्पु ।
अवलोयवि सँरलिविपंतियाउ भावेप्पिणु मंतिपउत्तियाउ ।

घत्ता—मागहिण अगावें सविणयभावें चक्केण व दिवसेसरु ॥
पणविवि थुइवयणहिं णाणारयणहिं पूइवि दिट्ठु णरेसरु ॥ १९ ॥

20

सविहवविम्हाँवियसयमहेण विहसेप्पिणु बोल्लिउ मागहेण ।
जय भरह महागयलीलगामि तुहुं इह जम्महु महु परमसामि ।
तुहुं इंदु इंदरिद्धीसणाहु तुहुं हुयवहु अरिवरदिण्णडाँहु ।
तुहुं जमु जमकरणु ण का वि भंति तुहुं वरुणु सयलजणविहियसंति ।
तुहुं धणउ धँणउ सुहिणिहियकामु तुहुं पवणु पबलबलदलणथामु ।
ईसाणु मँहेसरणवियपाउ तुहुं एक्कु जि जगि रायाहिराउ ।
तुँह असिजलधारइ हरियछाय अरिँणिरवइ तरु के के ण जाय ।
तुँह असिजलधारइ उद्धँसासु वड्ढारिउ भुवणंतरि ण कासु ।

६ B किंकर. ७ K पविमुक्क°. ८ MBP सरलियपंतियाउ. ९ MP add after this: भरहेसरायणामकियाउ, सुरणरखेयरभय(M सय)गारियाउ, ता तेण वि चिंति चमक्कियाउ, वाएप्पिणु अक्खरपंतियाउ, B adds: भरहेसरायणामंकियाउ, जइणिज्झियरवियरकतियाउ, ता तेण वि चिंति चमक्कियाउ, चक्कवइभरहणामकियाउ. १० M अकुडिल°.

20. १ MBP °विंभाविय°. २ MBP °दाहु. ३ MBP धणइं. ४ MBP महीसर°. ५ B omits this line. ६ MPK अहिणरवइ. ७ B omits this line. ८ MP उड्डसासु

5 *a* °मइयवट्टि सचूरक·. 6 *b* मुइ मुञ्च; गहेण पिशाचेन. 9 *a* लिहियहु भवितव्यतायाः. 11 *a* सरलिविपंतियाउ बाणलिखिताक्षरपंक्तयः.

20. 5 *a* धणउ लक्ष्मीदायकः कुबेरः. 7 *a* हरियछाय हतमहातमसः, अन्यत्र नीलवर्णाः. 8 *a* °सासु उच्छ्वासः सस्यं च.

तुह असिजलधारइ परिल्हसंति बहुसलिल वि रयणायर तसंति ।
तुह असिजलधारइ अइहुयाइं रिउबहुणयणंसुयबिंदुयाइं ।
तुह असिजलधारइ कुलि असोउ हूयउ णिव्वं चिय भुत्तभोउ ।

घत्ता—तुहुं भरह पयावइ पढेममहीवइ महिणाहहिं मणि भाविउ ॥
ताराणक्खत्तहिं पय पणवंतहिं पुप्फंदंतु जिह सेविउ ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे मागहपसाहणं णाम
बारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १२ ॥
॥ संधि ॥ १२ ॥

९ MBP पढमु. १० M पुप्फयंतु, BP पुप्फयंत.

9 *a* परिल्हसंति गर्वं मुञ्चन्ति. 10 *a* अइहुयाइं अतीव भूतानि. 13 पुप्फदंतु जिनचन्द्रादित्यौ च.

XIII

[1]साहिवि मागहु [2]गहविसमु णविवि पसिद्धसिद्धिणेयारहो ॥
झंजिवि सीहु व वरतणुहि भरहराउ गउ दाहिणदारहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

धरणीसरो चलइ गरुडद्धओ घुलइ ।
सिमिरं समुल्ललइ धूली णहे मिलइ ।
[3]सुरसिरिहरं कमइ पडिबलइं उवसमइ ।
हरिवयणलालाइ करिदाणवेलाइ ।
जणजणियसंकेण तंबोलपंकेण ।
चरणाइं लिप्पंति हारेहिं गुप्पंति ।
अइगरुयभारेण सामंतचारेण ।
दसदिसिवहं भमइ पुहईयलं णमइ ।
णाइणिहिं णउ रमइ विसवाणियं वमइ ।
कह क[4]ह व भरु सहइ मउ मुयइ गइ महइ ।
फणिपुंगमो तसइ लवणचो रसइ ।
णरवइभुए वसइ रणजयसिरी हसइ ।
पराणिवबलं गसइ विसमत्थलिं कसइ ।
धरवाहिणी चरइ [5]दुग्गं पि पइसरइ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

तीव्रापद्दिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजास्विना
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

GK do not give it.

1. १ P साहेप्पिणु. २ MB गहिवि समु; P महिवि समु. ३ P सुरासिहरि संकमइ. ४ MBP कह वि. ५ M दुग्गे पि.

1. 1 गहविसमु ग्रहे आक्रमणे विषमः; °णेयारहो° प्रापकस्य. 5 *b* पडिबलइं शत्रुसैन्यानि; 6 *b* °वेलाइ प्रवाहेण. 11 *b* वाणियं जलम्. 12 *b* गइ महइ कुत्रापि गन्तुं वाञ्छति. 15 *b* कसइ चूर्णीकरोति.

जलदुग्गमं तरइ तरुदुग्गमं हरइ ।
गिरिदुग्गमं समइ गयणंगणं कमइ ।
भडथडहिं तुरएहिं संदणहिं दुरएहिं ।
अमरेहिं खयरेहिं रिउवग्गखयरेहिं ।
छव्विह वि संकमइ अरिपत्थिवे दमइ ।
रायस्स वसि करइ अवसो भिसं रमइ ।

घत्ता—काणणि वइजयंतिणियडे बलु आवासिउ परगहणायरु ॥
गज्जइ गज्जंतहिं गयहिं पलयकालि णं खुहियउ सायरु ॥ १ ॥

2

उवजलहिजलहितीराइयउ गिरिगेरुयरेणुयराइयउ ।
सालालइ णट्टसालसहिउ तालालइ तूरतालमहिउ ।
उत्तुंगमड्डि कयमड्डुवरु रत्तासोयंकि असोयधरु ।
कंचणवंतइ कंचणफुरिउ पुण्णायपउरि पुण्णायरिउ ।
ससिरीसि सिरीसपसाहियउ बहुवंसि णिवंसविराइयउ ।
संठियसुवेसि वेसाभवणु सभुयंगइ भमियभुयंगगणु ।
सिहिगलरवि मंगलरवगहिरु सरिवहरिसु कूरवइरिवहिरु ।
सविसायइ अविसायउ सविहु माइंदथइइ मायंदणिहु ।

६ MBP परपत्थिवे. ७ MBP मरइ, K रमइ, but writes above it मरइ. ८ MPT वइजयत°; B वइजयते.

2. १ M मेरुय°, but records a *p* °गेरुय°. २ P °रेणुविराइयउ. ३ दूसामाल°. ४ MB छत्तुगमड्डि. ५ MB °मड्डधरु, P मडवरु. ६ P रत्तासोयकियसोय°. ७ MP सठिउ. ८ MBP सरिवहिरिसु; K °वहरिसु but corrects it to वहिरिसु

19 *a* °थ ड हिं समूहैः 21 *a* छ व्वि ह षड्विध सैन्यम्. 22 *b* अ व सो भि स र म इ यो वशं नागच्छति सोऽवश्यं प्राणैर्वियुज्यते. 23 व इ ज य ति णि य डि क्षीणसमुद्रानुप्रवेशद्वारसमीपे.

2. 3 *a* क य म ड्डु व रु कृतबलात्कारवर बकुम्. 4 *b* पु ण्णा य रि उ पुण्यमाचरितं येन. 5 *a* स सि री सि शिरीषपुष्पयुक्ते, सि री स प सा हि य उ शिरीषैर्मुकुटबद्धैः प्रसाधितमलंकृतम्. 7 *b* स रि व ह रि सु सरितां नदीनां कूटतटसहिते; कू र व इ रि व हि रु क्रूराणां शत्रूणां वधे आदृतम्. 8 *a* स वि सा य इ पक्षिभिः शाकवृक्षैश्च सहिते; स वि हु प्रभुसहितम्; *b* मा इं द थ इ इ आम्रस्थगिते, मा यं द णि हु लक्ष्मीचन्द्रसदृशम्, अथवा, मासि चन्द्रो माश्चन्द्रः सकलः पूर्णश्चन्द्रस्तेन सदृशम्.

कइलुक्कइ कइहिं पसंसियउ थिय हेरिवरि हरिवरभूसियउ ।
परलच्छीगहणुक्कंठियउ वणि साहणु सयलु वि संठियउ ।
अत्थमिउ सूरु तमभरियदिसि थिउ णिसि उववासें रायरिसि ।

घत्ता—महिणाहेण समच्चियइं णियकुलचिंधइं चावइं चक्कइं ॥
झायउ मंतु महारिहरु दीवकँवाडइं विहडिवि थक्कइं ॥ २ ॥

3

तर्हि अवसरि दिणयरु उग्गमिउ भरहेसें जिणवरिंदु णमिउ ।
रहु वाहिउ सहसा तेण किह संपुण्णमणोहरुं पुण्ण जिह ।
कसपहरतुरियपरियतुरउ मरुफंसफारफरहरियधउ ।
विरसियरहंगरोसियउरउ पहरणपरिपुण्णसुवण्णमउ ।
मणिघंटाजालहिं झणझणइ भडभारक्कंतउ णं कणइ ।
कइवयजोयणइं महासरहो जलु लंघिवि पुणरवि सायरहो ।
पव्वालंकरियउ णं वरिसु कोडीसरु किं ण जणइ हरिसु ।
सुविसुद्धवंसु गुणणमियतणु सुकलत्तु व पहुणा लइउ धणु ।
गुणु कड्ढिवि लीलइ जे णियउ करु सवणि ससि व्व सहइ थियउ ।
रेहइ सरु दिणयरणिम्मलहो णवणालु व कुंडलसयदलहो ।

घत्ता—कहइ व जाइवि णरवइहि महु संगेण वि वहइ खलत्तणु ॥
गुणथिरकरपरियड्ढियउ कण्णालग्गु चावकुडिलत्तणु ॥ ३ ॥

4

जीयाविमुक्क जीवियहरणु णं दिणयरु खरपसरियकिरणु ।
बहुलक्खगाहि सो मग्गणउ णं पेसिउ दूयउ अप्पणउ ।

९ MBP हरिवरेहिं हरि भूसिमउ. १० MBP दो वि.
3. १ MBP ° मणोरह. २MBP जोजियउ. ३ MBP °लग्गचाव°.
4. १ MBP जीयाइ मुक्क. २ MBP दूवउ.

13 दीवकवाडइं जम्बूद्वीपकपाटानि.
3. 3 *a* कस° चर्मयष्टिका; *b* मरुफंस° वातस्पर्शः. 6 *a* महासरहो महान् सरः शब्दो जलं च यस्य स समुद्रः. 7 *a* पव्वालंकरियउ पर्वभिरमावास्यादिभिः ग्रन्थिभिश्च अलंकृतम्. 9 *a* णियउ नीतः; सवणि कर्णे श्रवणनक्षत्रे च.
4. 1 *a* जीयाविमुक्कु प्रत्यञ्चया विमुक्तः. 2 *a* मग्गणउ मार्गणो बाणो याचकश्च.

णिवडिउ सहमंडवि वरतणुहि कह कह व ण लग्गउ तंहु[3] तणुहि ।
कंचणपुंक्खेणु[4]ज्जोइयउ सो तेण लएवि पलोइयउ ।
सुरदणुयदप्पलीलाहरइं दिट्ठइं णरवइणामक्खरइं ।
अरविंदचंदविमलाणणहो मह्हु आइजिणेसरणंदणहो ।
भरहहु जो जो ण सेव करइ सो सो अहि णरु अमरु वि मरइ ।
ता तेण जि तं जि समिच्छियउ थोवउ णियपुण्णु दुगुंछियउ ।
गउ तहिं जहिं सइं अच्छइ भरहु मयरहरमज्झि खंचियसरहु ।

घत्ता—अक्खिवि णाउं सगोत्तु कुलु पणविउ सो महिवइ[5]भत्तारहु ।
सुरहं[6] मि तुच्छधम्मफलिण लग्गइ सिरि करु परपडिहारहु ॥ ४ ॥

5

इंदीवरलोयणु सच्छमणु पभणइ वरतणुमहिलुलियतणु ।
तुह विग्गहु णिग्गहु विग्गहहो तुह[1] संधाणु जि कारणु महहो ।
पइं सामिय संधिउं[2] जासु सरु वउसंधिउ[3] भक्खइ तहु खयरु ।
पिउ जासु अणिंदु जिणिंदु सइं पुण्णहिं विणु पहु को लहइ पइं ।
लइ लइ पयउ हारावलिउ णं महिघुलियउ तारावलिउ ।
लइ सुरधरणीरुहसंभवइं कुसुमइं णिच्चं चिय णवणवइं ।
लइ णेउराइं लइ कंकणइं लइ दिव्वइं सत्थइं घणघणइं ।
लइ दिव्वंगइं[4] वत्थइं वरइं लइ खीरतरंगइं चामरइं ।
धम्मु व जीवहु अब्भुद्धरणु परमेसर तुहुं जि मज्झु सरणु ।
तं णिसुणिवि भरहें बोल्लियउ पउ वि अवरु वि मोक्कलियउ[5] ।
जज्जाहि लएप्पिणु णिययघरु अच्छहि महु होइवि आणयरु ।

३ M तउ. ४ MP °पुंखेण°. ५ MBP माहिवहुभत्तारहु. ६ MBP सुरहम्मि धम्मतुच्छफलिण.

5. १ MBP तुहु. २ B संधिय ३ M वउसधिउ. ४ MBP देवंगइं. ५ MP मोक्कल्लियउ.

9 *b* °सरहु स्वरथः. 11 सुरहं मि देवानामपि.

5. 2 *a* विग्गहहो शरीरस्य, *q* महहो पूजायाः. 3 *b* वउसंधिउ वपुषः शरीरस्य संधयः संधिबन्धनानि, खयरु गृध्रः.

घत्ता—पूरइ मडु महिवइ जसेण दविणविलासु वासु किं वण्णिउ ॥
उत्तमु जगि अहिमाणु धणु एउ वयणु किं पइं णायण्णिउ ॥ ५ ॥

6

पप्फुल्लियदुमरसदावणिय सुयपिंछरिंछकोड्डावणिय ।
वरतणु सुरु जिणेवि सुहावणिय वेइय धरेवि दीवहु तणिय ।
पुणु जयदुंदुहिसद्दहु मिलिउ सहुं राएं साहणु संचलिउ ।
पच्छिमदिसि संमुहु धाइयउ सव्वत्थ जि कहिं मि ण माइयउ ।
हयमुहपयलियफेणुज्जलउ सव्वत्थ जि भडथडसंकुलउ ।
सव्वत्थ जि गयमयसिंचियउ सव्वत्थ जि धयमालंचियउ ।
सव्वत्थ जि गेज्जावलिरणिउ सव्वत्थ जि वंदिविंदथुणिउ ।
सव्वत्थ जि छत्तणिरुद्धदिसु सव्वत्थ जि सुरहिगंधसरसु ।
सव्वत्थ जि भमियभमिरभमरु सव्वत्थ जि चलियचवलचमरु ।
सव्वत्थ जि परिधाइयअमरु सव्वत्थ जि संचरंतखयरु ।
सव्वत्थ जि कामिणिगीयसरु सव्वत्थ जि विलसियकुसुमसरु ।

घत्ता—रुक्ख मलंतु दलंतु गिरि जलु सोसंतु णिवेण णिवेइउ ॥
साहणु पम चलंतु पहे सिंधुमहाणइदारु पराइउ ॥ ६ ॥

7

अवलोइय राएं सिंधु किह विब्भमधारिणि वरवेस जिह ।
दावियमय णावइ हत्थिहड विबुहासिया वि संगहियजड ।
गिरितवसिहि णं परिघुलियजड रणवित्ति व सोहइ झसपयड ।

६ M विलास. ७ MBP आहिमाण°. ८ MBP पइं किं.

6. १ MP सुयरिच्छपिच्छ°; B सुयरिंछपिंछ°. २ B °दिससंमुहु. ३ B णडथड°. ४ M वंदविंद°. ५ MBP °गंधरसु. ६ MBP °भमरिभमरु. ७ M परिधाविय°. ८ B विओइउ, P णिवोइउ.

7. १ B हत्थिघड.

12 वासु व्यासो विस्तरः.

6. 1 *a* पप्फुल्लियेत्यादि—प्रफुल्लितैर्द्रुमैरुपलक्षिता रसायाः पृथिव्या दावणि या वेदिका; *b* °कोड्डावणिय कौतुकोत्पादिका. 8 *b* °सरसु शृङ्गारादियुक्तम्. 9 *a* °भमिर° भ्रमणशीलाः.

7. 1 *b* वरवेस वरा वेश्या.

अइकुडिल णाइं सुरमंतिमइ मलणासणि णं पंचमिय गइ ।
धणुलट्ठि व दीसइ मुक्कसर बहुरायहंसपिय णाइं घर ।
कमलेण कोसुलच्छि व धरइ जा महिवइसत्तिहि अणुहरइ ।
चलसारसजुयलपयोहरिय कणइल्लपक्खिपंतिहिं हरिय ।
रंगंतबयावलिपंडुरिय पवहंतकुसुमरयपिंजरिय ।
णं गहियविचित्तवरुत्तरिय अहवा णं मंडणकब्बुरिय ।
गयहयचंदणरसपरिमलिय चंदकवकलावसुकोंतलिय ।
जा मिलिय गंपि रयणायरहो रत्ती धुत्ति व रय णायरहो ।

घत्ता—ताहि तीरि मुक्कउ सिमिरु तामत्थइरिसिहरु संपत्तउ ॥
णं वारुणिदिसिकामिणिहि णिवडिउ मित्तु णिरारिउ रत्तउ ॥ ७ ॥

8

अत्थमिइ दिणेसरि जिह सउणा तिह पंथिय थिय माणियसउणा ।
जिह फुरियउ दीवयदित्तियउ तिह कंताहरणहदित्तियउ ।
जिह संझाराएं रंजियउ तिह वेसाराएं रंजियउ ।
जिह भुवणुल्लउ संताविययउ तिह चक्कउलु वि संतावियउ ।
जिह दिसि दिसि तिमिरइं मिलियाइं तिह दिसि दिसि जारइं मिलियाइं ।
जिह रयणिहि कमलइं मउलियइं तिह विरहिणिवयणइं मउलियइं ।
जिह घरहं कवाडइं दिण्णाइं तिह वल्लहखेवइं दिण्णाइं ।
जिह चंदें णियकरपसरु किउ तिह पियकेसहिं करपसरु किउ ।
जिह कुवलयकुसुमइं वियसियइं तिह कीलियमिहुणइं वियसियइं ।
जिह पीयइं पाणइं महुराइं तिह अहरइं महुरसमहुराइं ।

२ P सुरमंतमइ. ३ MP °णासिणि पंचमिय°. ४ MBP कोसु. ५ P °बहुत्तरिय. ६ MBP चंदक°. ७ MBP °सिहरि. ८ MBP वारुणदिसि°.

8. १ P दीवउ. २ B omits this foot. ३ MBP° खेमइं. ४ MB अवरइं महरइं; M records a *p* महुरइं for महरइं; P अहरइ महुरइ.

7 *b* कणइल्ल° शुकाः. 8 *a* °बयावलि° बकपङ्क्तिः. 10 *b* चंदकवकलावसुकोंतलिय मयूरपिच्छकुन्तला. 11 *a* रयणायरहो समुद्रम्; *b* णायरहो नागरपुरुष प्रति. 13 मित्तु सूर्यः; णिरारिउ अतिशयेन.

8: 1 *b* °सउणा निमित्तानि. 7 *b* °खेवइं आलिङ्गनानि.

जिह जिह गलंति जामिणिपहर　　तिह तिह विइण्ण मउरइपहर ।
जिह णहि सुकुंग्गमु दरिसियउ　　तिह विडि सुकुंग्गमु दरिसियउ ।

घत्ता—ता चक्कउलहं पंकयहं तंबकिरणपूरियभुवणोयरु ॥
विरयहं णरणारीयणहं जीविउ देंतु समुग्गउ दिणयरु ॥ ८ ॥

9

सिंधूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे
कोइलकुलकलयालि वियसियसयदलि रंभवणे ।
उववासु करेप्पिणु जिणु पणवेप्पिणु पीणभुउ
णरवइ जयमायरु कयणियमायरु रिसहसुउ ।
जंमभउंहाभावइं चक्कइं चावइं जियरणइं
अहिअंचिवि दिव्वइं हयरिउगव्वइं पहरणइं ।
णं भूरिपहायरु चंदु दिवायरु णहवडिउ
मणिगणवेयडियइ कंचणघडियइ रहि चडिउ ।
पेरिय जोत्तारें हरि हुंकारें तिक्कमइ
मणपवणमहाजव अमुणियखुररव गयणगइ ।
कयभडकडवंदणु वाहियसंदणु चैवलधउ
करिमयररउद्दहु लैवणसमुद्दहु मज्झि गउ ।
ता खंचिउँ रहवरु भेसियजलयरु सलिलवहे
जोयंति सुरासुर किंणर खेयर जक्ख णहे ।
राएं सुइसोक्खर णियणामक्खरभूसियउ
थिरु ठाणु णिबंधिवि सरु गुंणि संधिवि पेसियउ ।
अवरण्णवणाहहु लच्छिसणाहहु पडिउ घरे
तडिदंडु व भीसणु काणणणासणु गिरिसिहरे ।

५ MP सुकग्गमु. ६ MP सुकग्गमु.

9. १ M चिकमइ; B चिंकमइ. २ P °मद्दणु. ३ MBP धवल°. ४ MBP मज्झि समुद्दहु सो जि गउ. ५ MBP खंचिय°. ६ MBP थक्क. ७ P गुणु.

12 *b* वि डि विटे.

9. 4 जयमायरु विजयलक्ष्मीकरः. 8 °वेयडियइ खचिते. 9 जोत्तारें सारथिना. 15 सुइ-सोक्खर श्रुतिसुखदानि. 17 अवरण्णव° पश्चिमसमुद्रः.

सो णिवडिउ महियलि सहसा करयलि ढोइयउ
सुरवइसंकासें बाणु पहासें जोइयउ ।
ता तम्मि विसिट्ठइं लिहियइं दिट्ठइं अक्खरइं
णं मत्तावित्तइं मत्ताजुत्तइं णायरइं ।
हउं दाणवमद्दणु कासवणंदणु चक्कवइ
महु भरहहु केरी जगभयगारी सेव जइ ।
तुहुं करहि पियारी परिहवगारी तो जियहि
णं तो असिवाणिउ जयसिरिमाणिउ धुंबु पियहि ।
इय तेण पवाइउ कज्जु विवेइउ गयउ तहिं
अमरिंदसमाणउ पुहइहि राणउ थियउ जहिं ।
पविमुक्कपहासें[११] दिट्ठु पहासें भरहु किह
भविएं सपणामें सुहपरिणामें अरुहु[१२] जिह ।

घत्ता—कुसुमइं कप्परुक्खफलइं वाहणइं[१३] मि वरवाहणवाहहो ॥
रयणइं वत्थइं भूसणइं दिण्णइं तेण वसुंधरिणाहहो ॥ ९ ॥

10

सुरसिंधुसरिहिं देहलिय[१] धरिवि पइसरणु करिवि ।
पुव्वावरेसु परिसंठियाइं वइरट्ठियाइं ।
वेयड्ढगिरिहि ओइल्लयाइं सुधणिल्लयाइं[२] ।
चंडाइ मेच्छखंडाइं ताइं दोसाहियाइं ।
करवालें णिज्जिउ अज्जखंडु पट्ठविवि दंडु ।

८ MBPK सुरवर°. ९ MBP ता. १० MBP धुउ. ११ MBP °सहासें and T स्वोपहासेन स्वमाहात्म्येन वा. १२ MBP अरुहु १३ P वाहणाइ वर°.

10. १ M देहल, BPT देहलि. २ MBP सुवणिल्लयाइं.

20 पहासें प्रभासनाम्ना नृपेण. 22 मत्ताविस्तइं मात्रावृत्तानि आर्यादीनि; मत्ताजुत्तइं माला गुरुलघु गलआइईत्यादिस्वराश्च.

10. 1 सुरसिंधुसरिहिं गङ्गासिंधुनयोः; देहलिय मर्यादाम्; b पइसरणु करिवि पुव्वावरेसु पूर्वदिग्भागे प्रवेशनं कृत्वा. 2 b वइरट्ठियाइं वैरेणामर्षेण स्थितानि.

मालव मागह वंगंग गंग कालिंग कोंगे[3] ।
पारस बब्बर गुज्जर वराड कण्णाड लाड ।
आहीर कीर गंधार गउड णेवाल चोड ।
चेईस चेर मरु दुहरंडि[4] पंचाल पंडि ।
कोंकण केरल कुरु कामरूव सिंहल पह्लय ।
जालंधर जायव पारियाय णिज्जिणिवि राय ।
पच्चंतवासि णीसेस लेवि णियमुद्द देवि ।
हेलाइ तिखंडावणि[5] हरेवि असि करि करेवि ।
विजयद्धहु संमुहु चलिउ राउ सेणासहाउ ।
दियहिहिं पत्तु तं[6] सिहरि केम मणि[7] मोक्खु जेम ।
दिट्ठउ महिहरु सुसरेण[8] सुसरु कुहरेण कुहरु ।
सरहेण विहंडिय भीमसरहु समहेण समहु ।
कडयंकिएण कडयंकियंगु[9] तुंगेण तुंगु ।
गुरुवंसु गरुयवंसुब्भवेण थावरु थिरेण ।
गज्जियगउ पडिगज्जियगएण[10] उब्भियधएण ।
हिंसियतुरंगु[11] सतुरंगएण सरओरएण ।
अच्चंतससावउ सावएण पालियवएण ।
आसंधिउ पत्थिउ पत्थिवेण विजयहु कएण ।

घत्ता—गिरि सोहइ दीहत्तणेण पुव्वावरसमुद्दु[12] संपत्तउ ॥
तिहिं तिहिं खंडहिं मेइणिहि मेरादंडु व दइवें घित्तउ ॥ १० ॥

३ MBP कुंग. ४ MBP दहुरडि. ५ M हेलाइ वि खडावाणि. ६ MBP तहुं. ७ MBP मुणि; K मणि but corrects it to मुणि. ८ MB ससुरेण समुरु. ९ B कडियंकियंगु. १० GK add after it उब्भूयधउ. ११ MBPT सतुरगवयणु. १२ MB समुद्द°.

16 *a* सुसरेण शोभनस्वरेण; सुसरु शोभनं सरः पानीयं सरोवरो वा यत्र, *b* कुहरेण पृथिवीधरेण पर्वतेन; कुहरु नृपः. 17 *b* समहेण पूजनया सहितेन; समहु मधुयुक्तः. 21 *b* सरओरएण सरजतो गिरिः तत्रानुरक्तेन. 22 *a* सावएण लक्ष्मीपदेन; *b* पालियवएण पालितप्रतिज्ञेन. 23 *a* पत्थिउ पृथ्वीविकारः. 25 मेरादंडु मर्यादाकरणो दण्डः.

11

तहिं अवसरि गुहदारहु दूरें सुरतरुवरकरढंकियसूरें ।
आवासिउ गहणि सडंगु बलु करिदसणपहरकलुसियउ जलु ।
महिसउलमइकंइविउ सरु कम्मयरकुढारहिं छिण्ण तरु ।
आलुंखियाइं पिक्कइं फलइं णिल्लूरियाइं सद्दलदलइं ।
गोमंडलेहिं चिण्णइं तणइं मुसुमूरियाइं अंबयवणइं ।
उड्डावियाइं कोइलकुलइं भयतसियइं रसियइं णाहलइं ।
णिलुक्कइं मुक्कइं सयदलइं दसदिसु गयाइं सउणयकुलइं ।
मयवंद्रइं रुंदइं णिग्गयइं एत्तहिं तेत्तहि सहसा गयाइं ।
सुत्तइं रत्ताइं रइहरहिं णरमिहुणइं णववेल्लीहरहिं ।
णिवकरिहिं वियारिय विंझकरि सुहडेहिं णिहय रुंजंति हरि ।

घत्ता—वणसिरि उव्वासिय सुइरु एवहिं जणवएण णिरु णिवसइ ॥
पेच्छिवि भरहाहिवणिवइ कुंदपुप्फयंतहिं णं विहसइ ॥ ११ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे तिखंडवसुंधरापसाहणं णाम
तेरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १३ ॥
॥ संधि ॥ १३ ॥

11. १ MBP अवरगुहादारहु सदूरि. २ MBP °ढकियइ सूरि. ३ MB सडग°. ४ MBP कद्दमिउं. ५ MBPK सुक्कइं. ६ MBP सहसइ. ७ MBP रईयरेहि. ८ MBP °वल्लीहरेहिं. ९ MB रुंजंत; P रुजंति. १० BPK पुप्फदंतहिं.

11. 4 *a* आलुंखियाइं आस्वादितानि; 4 *b* सद्दल° सार्द्राणि. 5 *a* °मंडलेहिं संघातैः. 7 *a* णिलुक्कइं लोटितानि.

XIV

घरतणुमयमहेण जियमागहेण भुयबलणिद्दलियपहासें ॥
हयपरमहिवइहि सेणावइहि आएसु दिण्णु भरहेसें ॥ ध्रुवकं ॥

I

दुवई—ससिविरु जाम तेत्थु पहु णिवसइ सिद्धतिखंडमंडलो ।
ता पत्तो मयासि मणिसेहरु सवणविलंबिकुंडलो ॥ १ ॥

सो पभणइ[1] पणवियसिरु संहरिसु[2] मुहससिकिरणपसर[3]धवलियदिसु ।
णववण[4]थणियमहुरमणहर[5]गिरु सुयणु भुयणभरधरु णिरुवमु णिरु ।
भो कयविजयविजयगिरि उत्तर- दिसि अवर वि सुर णर रवि तुह धर ।
सा[6] वि तिखंड चंडरिउखंडण भो णाहेयतणय कुलमंडण ।
सिहरिगुहादुवारु उग्घाडहि कुलिसदंडखरपहरें ताडहि ।
जइ तो[7] मग्गु भडारा होसइ पुण्णु तुहारउ गरुयउ दीसइ ।
जयगिरिवरसिहर[8]णिकेयउ जासु अहं पि दासु संजायउ ।
ता चमुपमुहहु वयणु णिरिक्खिउ जसवइपुत्तें पेसणु अक्खिउ ।
भो मेहेसर करहि[9] महुत्तउ हणहि गिरिंदकवाडु णिरुत्तउ ।
णिविडु विहडिवि पडउ विसट्टउ जिह हयदुज्जणमणु तिह फुट्टउ ।
स पहुमणोरहकरणुक्कंठिउ सो पसाउ पभणंतु समुट्ठिउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

केलासुब्भासिकन्दा धवलदिसिगउब्भिण्णदन्तङ्कुरोहा
संसाहीबद्धमूला जलहिजससमुब्भूयाडिण्डीरवत्ता ।
बम्भण्डे वित्थरन्ती अमयरसमय चन्दबिम्बं फलन्ती
फुल्लन्ती तारओह जयइ णवलया तुज्झ भरहेस कित्ती ॥

M however reads °पिण्डीर° for °डिण्डीर°. GK do not give it.

1. १ MB संपइ जाम; P एत्तहि जाम. २ P सुहरिसु. ३ B °पसरि°. ४ MBPT °घणझुणिय°. ५ K °मणहरि. ६ MBP साधि. ७ MBP तउ. ८ P °सिहरणिकेयउ. ९ MBP करि महु वुत्तउ.

1. 1 °मयमहेण °मदमथनेन. 4 मयासि अमृताशी देवः. 11 *a* जयगिरिवर° विजयार्धः. 13 *a* महुत्तउ मया उक्तम्. 14 *a* पडउ पततु गच्छतु; विसट्टउ विकसितः.

[10]परिणयसुयतणुमरगयहरियइ णाणागमणविलासहुं भरियइ ।
वरभडसंगरपहरणपोढउ चडुलतुरंगरयाणि[11] आरुढउ ।
जाएवि पट्ठि देवि गिरिदारहु धरिवि तुरउ संमुहुं खंधारहु ।

घत्ता—अवहत्थिवि छलेण णियभुयबलेण हुंकारिवि णिरु रत्तच्छें ॥
परणर[12]पडिखलणु महिहरदलणु उम्मुक्कु दंडु परिहच्छें ॥ १ ॥

2

दुवई—मुक्कइ पहरणम्मि हरि णिग्गउ खुरदरमलियकाणणो ।
बलपुंगमु वि णविउ णरणियरहिं जग[1]जयपहसियाणणो ॥ १ ॥

ता दंडरयणणिट्ठुरपहारविहडियकवाडकिंकारसद्दसंमद्दखुद्दविद्दवियसप्पमुह-मुक्कफारफुक्कारजालियविसं[2]सिहिजालं ।

जालामालाकलावहेलापलित्तणासंतमत्तकरिचरणपेल्लणुल्ललियमणिसिलावडण[3]-कुड्डरुंजंतसद्दूलरोलभीमं ।

भीमु[4]ब्भापब्भारभरियकुहरंतणिग्गयाहिंदसुंदरीमुक्कसिचयपयडियपयोहरुल्लिहियं[5]-हिययरइरसियतावसुद्धरियं[6]चरियभारहारं ।

हा[7]रवमुयंतसवरीपुलिंदसिसुदीसमाणकेसरिकिसोरणहकुलिसकोडिदारिय-कुरंगरुहिरंभवाहदुग्गं[8] जायं गुहादुवारं ।

घत्ता—डज्झंतहं खगहं महिहरमृगहं[9] घोसेणप्पाणउं णिवइ ॥
अमुणियवेयणु वि णिच्चेयणु वि णं दंडें ताडिउ कंदइ ॥ २ ॥

१० M परियण°. ११ MB °रयंणआरूढउ. १२ P °परिखलणु माहिहरदलमलणु.

2. १ MBP °जणिय°. २ M विसग्गिसिहि°. ३ MBP °वडणरुट्ठुरुंजंत (P रुजंत) मत्तसद्दूल°. ४ MBP भीमुब्हा°. ५ B °ल्लिहियरइ°. ६ B °रियभार°. ७ P हाहारव°. ८ G °दुग्गं. ९ MBP °मिगहं.

16 *a* परिणयसुयतणु° तरुणशुकशरीरवन्नील·. 18 *a* पट्ठि देवि पृष्ठे दत्वा. 19 छलेण हननविज्ञानकुशलेन. 20 परिहच्छें वेगेन.

2. 3 °संमद्द° कोलाहलः, 4 °विद्दविय° उपद्रुताः. 5 °हेलापलित्त° युगपत्प्रज्वलितः. 7 भीमुब्भा प्रचण्डस्ताप·. 8 °पयडियेत्यादि—प्रकटितौ च तौ पयोधरौ ताभ्यामुल्लिखितं विदारितं हृदयं येषां ते; °रइरसिय रतिरसिकाः; °चरियभारहार चारित्रभारस्य हारो हरणं यत्र.

3

दुवई—ता मंजीरहारकेऊरकिरीडफुरंतभूसणो।
अमरो अमरसमरसंघट्टविहट्टियवइरिसासणो॥ १॥

छड्डियावलेवो इच्छियंघिसेवो।
रिद्धिबुद्धिवंतो आगओ तुरंतो।
भूयभत्तिकामो तम्गिरिंदणामो।
सेलसिंगवासो सुद्धसेयवासो।
वंदिओ णरिंदो तेण वीरचंदो।
हारमिंदुधामं दिव्वपुप्फदामं।
कंकणं किरीडं कुंभमंभणीडं।
पंडुरं पसत्थं चारु हारि वत्थं।
कुंजरारिवूढं हेमरण्णवीढं।
हित्तकंजलीलं भम्मदंडणालं।
सव्वलोयमोल्लं कित्तिवेल्लिफुल्लं।
चामरेण जुत्तं णिम्मलायवत्तं।
हासहंसवण्णं राइणो विइण्णं।
मंगलं पहाणं तित्थतोयण्हाणं।
रुक्खरोहियासे तम्मि भूपएसे।
अच्छिओ छमासं देवदारुवासं।
वल्लरीललंतं माणियं वणंतं।
णिग्गयग्गिजालं मंदधूममालं।

3. १ MB °संहट्ट°. २ MB छंडिया°. ३ P भूप°. ४ MB वीरवंदो. ५ MB °मंडणीडं. ६ MBP हेमवण्ण°.

3. 1 °केयूर° बाहुरक्षः. 2 °संघट्ट° मेलापकः संमर्दो वा; °सासणो सा लक्ष्मीस्तस्याः स्वनः आज्ञावचनं वा. 3 *b* इच्छियंघिसेवो इष्टा पादसेवा यस्य सः. 5 *a* भूय° भूपः; *b* तम्गिरिंदणामो विजयार्धनामा. 9 *b* अंभणीडं जलसृतम्. 11 *b* हेमरण्णवीढं हेमरत्नपीठम्. 12 *a* हित्तकंजलीलं हृता अनुकृता कञ्जस्य पद्मस्य लीला शोभा येन; *b* भम्म° सुवर्णम्. 17 *a* °रोहियासे °प्रच्छादितदिशि. 19 *a* वल्लरी° वल्ली,

मुक्कदीहसासं णं महीहरासं ।
दावियंधयारं तं गुहादुवारं ।
णट्ठतावखेयं सिट्ठमग्गभेयं ।
लग्गसीयवायं सीयलं च जायं ।

घत्ता—चंदणचच्चियउ कुसुमंचियउ ता पेसिउ पालियखत्तें ॥
आरासयफुरियउ सुरपरियरिउ संचलियउ चक्कु पयत्तें ॥ ३ ॥

4

दुवई—पुणु चक्काणुमग्गलग्गंतमहाभडकरितुरंगयं ।
चलियं साहणं पि रहभमियरहंगाहयभुयंगयं ॥ १ ॥

वसहकरहखरवरवलइयभरु हरिखुरदलियमलियवणतणतरु ।
मयगलमयजलपसमियरयमलु दसदिसिमिलियमणुयकयकलयलु ।
कसझसमुसलकुलिससरकरयलु जणवयपयभरपणवियमहियलु ।
असिवरसलिलपवहधुयपरिहवु सनिलयविलयवलयखणखणरवु ।
मसिणघुसिणरससुपुसियउरयलु पवणपहयधयचयचियणहयलु ।
चवलचमरचियलणपसरियकरु परिमलललुलियललियमहुलिहसरु ।
मरुवहविगयखयरसुरवरघरु अमरिसकसणपिसुणजयसिरिहरु ।
सहपरिभमियजिमियसुरमियसहु पहुसुहजणणकहियमणहरकहु ।
पहराविहुरु सुमरिवि मयभयरु णिवबलु गिलइ व गुहमुहगिरिवरु ।

घत्ता—तेण जि रिउमहहो मग्गियपहहो धरु आयहु फणिवहुलालिउ ॥
भरहहु भयवसेण सगुहामिसेण णियहियवउं दक्खालिउ ॥ ४ ॥

७ MBP सिद्धमग्ग°.

4. १ B °भग्गलग्ग महा°. २ B °खरखुरवलइय°. ३ MBP °पणमिय°. ४ B °चुवपरि°. ५ M धयचयवियणहलु; P °धयचुविवयणहयलु. ६ P °वियलिण. ७ MBP पहसुह°. ८ MBP °विहुर. ९ MBP धर. १० MBP °हियवउं ण दक्खालिउं.

21 *b* महीहरास पर्वतमुखम्. 23 *b* सिट्ठमग्गभेद शिष्टमार्गभेदम्.

4. 7 *a* °चिय° प्रच्छादितम्. 9 *a* मरुवह° पवनमार्गः आकाशम्; °सुरवरघरु देवविमानम्. 10 *a* °सहु सखा.

5

दुवई—कज्जलणीलबहलतमपडलविणासियणयणमग्गए ।
वच्चइ वाहिणीह ण सुहेण महीहरकुहरदुग्गए ॥ १ ॥

इय चिंतिवि करि ढोइवि कागणि चमुपमुहेण लिहिय ससि दिणमणि ।
ते सोहंति विवरघरभित्तिहि णावइं णयणइं णरवइकित्तिहि ।
करणियरेण ताहं तमु सारिउ णिसि दिवसइं सोहंति णिरारिउ ।
वहइ सेण्णु जयदुंदुहि वज्जइ पलयकालि णं जलणिहि गज्जइ ।
उग्गमंतपडिरवगंभीरहिं दुरयघडाघंटाटंकारहिं ।
संदणमुक्कचक्कचिक्कारहिं धाविरवीरधीरहुंकारहिं ।
महिहरविवरमग्गु णं फुट्टइ रोलें तिहुयणु णाइं विसट्टइ ।
इंदु वरुणु वइसवणु विसूरइ मेइणि कह व भारु साहारइ ।
सायरु कह व ण महीयलु रेल्लइ मंदरु कह व ण ठाणहु चल्लइ ।
चंदाइच्चजुयलु णहि झुल्लइ णीलु णिसहु केलासु वि हल्लइ ।
एम सेण्णु गच्छंतउ दिट्ठउ अद्धगुहाधरणियलि पइट्ठउ ।

घत्ता—रायहु केरएण परिवारएण पहि जंतें परमयसाडें ॥
मणि आसंकियउ मुहुं वंकियउ फणिसंखकुलियकंकोडें ॥ ५ ॥

6

दुवई—किंणरगरुडभूयकिंपुरिसमहोरयजक्खरक्खसा ।
पहुणो तण्णिवासि संजाया वेंतर के ण के वसा ॥ १ ॥

तओ दोण्णि भूमीहरंते णईओ सुकारंडभेरुंडलीलारईओ ।
समुम्मग्गणिम्मग्गणामालियाओ जलावत्तकीलंतमीणालियाओ ।
तडालग्गडिंडीरपिंडुग्गयाओ गिरिंदस्स गुज्झंतरा णिग्गयाओ ।

5. १ MBP °धीरवीर°. २ MBP वि जूरइ. ३ B णीलि णिसहु; K णीलणिसहु. ४ K धरणियलु. ५ P कंकोडें.

6. १ MBP विंतर.

5. 2 वाहिणीह सेनासंनाहः. 12 *a* झुल्लइ कम्पते. 14 परमयसाडें शत्रुमदविध्वंसकेन.

6. 2 के ण के के न के, अपि तु सर्वे. 3 *a* भूमीहरंते पर्वतमध्ये.

विसुल्लोलवेलावलीवंकियाओ पहेस्संतरे राइणो थक्कियाओ ।
महाणायरायस्स णं णाइणीओ झसुप्पिच्छसिंधुस्सरीजाइणीओ ।
अभग्गाइं दुग्गाइं णित्थारएणं सविण्णाणिणा संकमेणं कएणं ।
सरीसारतीराइं संदाणिऊणं पुरो भिच्चसंचारयं जाणिऊणं ।
दरीमाणियं पाणियं लंघिऊणं परं पारमाधारमासंघिऊणं ।

घत्ता—गिरिकुहरंतरहो रमियामरहो णिग्गंतउ सालंकारउ ॥
सहइ महारुहहो वियलिउ मुहहो बलु कव्वु व सुकइहि केरउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—ता णिग्गंति भरहि भेरीरवकंपियमेच्छमंडलं ।
परबलदलणवीरकोलाहलमिच्छियसमरगोंदलं ॥ १ ॥

जं गुलुगुलंतचोइयमयंगपयभूरिभारभारिज्जमाणभूकंपणमियणाइंदमुक्कपुक्कारराव घोरं ।

जं हिलिहिलंतवाहियतुरंगखरखुरखयावणीचलियधूलिणासंततियसतरुणीविचित्तघोलंतचेलचित्तं ।

जं हणुभणंतपक्कलपदुक्कपाइक्कमुक्कलल्लक्कहक्करिउसुहडविहडणुग्घुट्ठरोलफुट्टंतगयणभायं ।

जं रहियमुक्कपग्गहविसेसरंगंतरहरसाचलणपडियगुरुसिहरिसिहरचुण्णजायचंदणकुचंदणोहं ।

२ M पहासतरे; B पहाभंतरे. ३ MB झसुप्पत्तिसिंधूसरी°; P झसोपित्थ सिंधूसरी°; T उपित्थ उल्बण. ४ BP पारमावार°.

7. १ MBPK °णविय°. २ MP °फुकार°, B °सुंकार, K °पुकार°. ३ MP °खुरखरखयावणी°. ४ MBP हणुहणुभणंत°. ५ MBP °ललक्क°. ६ P °रगतवुरयरह°. ७ MP °चलणवडिय°; B °चलणचडिय°. ८ MBP °सिहरसयचुण्ण°.

6 *a* विसुल्लोल° जलकल्लोलाः. 7 *b* झसुप्पिच्छ° मत्स्योल्बणा सिंधु., °जाइणीओ °गामिन्यः. 8 *b* सविण्णाणिणा कुशलेन स्थपतिरत्नेन, संकमेण जलरोधार्थं कृतेन सेतुबन्धेन. 9 *a* संदाणिऊणं रुद्ध्वा. 12 महारुहहो अतिमहतः कवेः.

7. 2 °गोंदल मेलापकः. 2 °पक्कल° समर्थाः, °लल्लक्क° रौद्रः. 6 °पग्गह° रश्मयः; °कुचंदण° रक्तचन्दनादि.

जं हारदोरकेऊरकडयकंचीकलावमउडावलंबिमंदारदामसोभंतजक्खजक्खीविमाणछण्णं ।

जं भीयेरं वराराकरालचक्काणुगामिमंडलियसूरसामंतकोंतकरवालचावसंघायसंकडिल्लं ।

जं दंतिदाणधारापवाहपसमंतरेणुदीसंतदसदिसाणणभरंतसेणाणरुद्धरियविविहछत्तचिंधं ।

जं भिच्चदेहपरियलियसेयणीसंदबिंदुहयफेणसलिलचिक्खल्लतल्लखुप्पंतसयडसंकिण्णकुहिणिदेसं ।

घत्ता—तं पेच्छिवि पबलु उत्थरिउ बलु बोल्लिज्जइ मेच्छकुलेसहिं ॥
एवहिं को सरणु ढुक्कउ मरणु रिउ धाइय चउदुं मि पासहिं ॥ ७ ॥

8

दुवई—गिरिदरिसरिमुहाइं जो लंघइ पहु सामत्थवंतओ ।
सो अम्हारिसेहिं किं जिप्पइ णिज्जियदहदियंतओ ॥ १ ॥

बहुकालहु दइवेण णिवेइउ हा हा पलयकालु संप्राइउ ।
वयणु सुणिवि आवत्तचिलायहं मेच्छमहामंडलमहिरायहं ।
धीरें मंतें एउ पवुच्चइ आवइकालइ धाह ण मुच्चइ ।
सव्वु सहिज्जइ जं जिह ढुक्कइ हयविहिविहियहु को वि ण चुक्कइ ।
जहिं भंडणु तहिं अवसें खंडणु धीरत्तणु जि मणूसहु मंडणु ।
विसहर परणरसेण्णवियारा ते तुम्हहं कुलदेव भडारा ।
सुमरहु सामिसाल सब्भावें किं भएण किं किर बलगावें ।
तेहिं मि ए आलाव णिवेइय णाय मेहमुह माणि णिज्झाइय ।

९ MB भीयरंबदाढाकराल°; P भीयरावदाढाकराल°. १० MBP °चिक्खिल्ल°. ११ MBP वोलिज्जइ.
8. १ MBP °दहादिहंतओ. २ MBP संपाइउ. ३ MBP आवइकालि धाह णउ मुच्चइ. ४ MBP णिवेइय. ५ °मेहमुहु.

8 वराराº श्रेष्ठा आरा. 10 °णीसंद° निष्यन्दः.
8. 4 *a* आवत्तचिलायहं आवर्तकिरातनाम्नोः म्लेच्छराजयोः. 9 *b* बलगावें बलगर्वेण.

वियडफडाकडप्पदप्पुब्भड गरलाणलपलित्तगिरितडवड ।
उल्लुलंततरुधूममलीमस सिरमणिगणमऊहदीवियदिस ।
अग्घकुसुमरसवासुद्धाइय चलवलंत ते झत्ति पराइय ।

घत्ता—बोल्लिउ उरगइणा विसहरवइणा किं पाडमि गहणक्खत्तइं ॥
कीलियसुरवरहो माणससरहो णिल्लूरमि किं सयवत्तइं ॥ ८ ॥

9

दुवई—ता मेच्छाहिवेण भणिया फणिणो गज्जंतगयवरं ।
णिहणह वेरिसेण्णमिणमो तरुणीकरचलियचामरं ॥ १ ॥

खंधावारहु उप्परि अहणिसु ता णायहिं वेउव्विउ पाउसु ।
मयउलु तसइ रसइ वरिसइ घणु पीयलु सामलु विलसइ सुरधणु ।
महिणीहरिउ हरिउ वड्डइ तणु पवसियपियहि पियहि तप्पइ मणु ।
फुल्लकलंबतंबु दीसइ वणु तिम्मइ तम्मइ मणि जूरइ जणु ।
तडि तडयडइ पडइ रुंजइ हरि तरु कडयडइ फुडइ विहडइ गिरि ।
जलु परियलइ घुलइ घुम्मइ दरि अइरय सरइ भरइ पूरें सरि ।
जलु थलु सयलु जलु जि संजायउ मग्गु अमग्गु ण किं पि वि णायउ ।
सरु कुसुमसरु णिरारिउ संधइ विरहें मंथिय पंथिय विंधइ ।

घत्ता—पाणिउ णीयगइ विज्जु वि डहइ धणु णिग्गुणु कुडिलु सुरिंदहो ।
पाउसु हयमणहो समु दुज्जणहो जो वरिसइ उवरि णरिंदहो ॥ ९ ॥

६ MBP उल्ललंतबहुधूम°, ७ K चलचलंत.

9. १ MB णिहणिवि. २ MBP तणु. ३ BP °कलंबु तबु. ४ MBP अमग्गु वि किं पि ण णायउ.

---

12 *a* °तद्धूममलीमस वटवृक्षसमुद्धूतधूमवन्मलिनाः. 13 *a* °वासुद्धाइय °गन्धेन सत्वरमागताः. 14 उरगइणा सर्पेण.

9. 2 इणमो इदम्. 3 *a* अहणिसु अहर्निशम्, *b* पाउसु मेघः. 6 *b* तिम्मइ तम्मइ जलार्द्रीभवति खिद्यते च. 8 *b* अइरय शीघ्रवेगा; सरइ वहति. 11 णीयगइ निम्नेन गच्छतीति.

10

दुवई—सलिलुत्थल्लरेल्लपडिपेल्लणहयदुमविगयरिंछओ ।
णवघणरावमुइयचंदक्ककलावुद्धसियपिंछओ ॥ १ ॥

दीसइ लग्गउ वासारत्तउ सेणामहिलहि णावइ रत्तउ ।
असिजलि णिवडिवि जलु पुणु धावइ भडभुयदंडहु संमुहुं आवइ ।
ताहिं तं ण मिलइ गमणु जि मग्गइ लोहें गिलियहु को किर लग्गइ ।
धुवइ किं पि अलिपिंछहिं दलियउ बहुमुहलिहियउ पत्तावलियउ ।
कं मंडणु विसहइ रिउघरिणिहि ढालइ सिरसिंदूरइं करिणिहिं ।
वंस वंस तुहुं मइं वड्ढारिउ एवहिं परचिंधें वेयारिउ ।
महु सरु प्रेणहारि णावइ सरु इय गज्जंतु व पभणइ जलहरु ।
धोयइ मयमायंगहं दाणइं दुम्मेहहं दवंति ण दाणइं ।
थक्क सचक्कवाय रह णं सर तोइ तरंति ण के के किर णर ।
ताँ पभणइ णरणाहपुरोहिउ लोउ देव उवसग्गें रोहिउ ।
पयहु पडिविहाणु लहु किज्जइ अइंणु वारिवारणु चिंतिज्जइ ।
ता राएं बलवइमुहुं जोइउ तेण वि पेसणु झत्ति विवेइउ ।

घत्ता—णियमणि चिंतियउ तेलि घित्तियउं तं चम्मरयणु जणभरधरु ॥
उप्परि पुणु थविउ जगगउरविउ धवलायवत्तु जियससहरु ॥ १० ॥

11

दुवई—बारहजोयणाइं वित्थारें सिविरु कुलीरमाणिए ।
पविउलछत्तचम्मकयसंपुडि थिउ वरिसंतु पाणिए ॥ १ ॥

10. १ K सलिलुच्छल्ल°. २ MB पाणहारि; P पाणिहारि. ३ MBP ताम भणइ. ४ M अयणुं. ५ MBP घत्तियउ. ६ K °आयपत्तु जिह ससहरु.

11. १ MBP वरिसंत.

10. 1 सलिलुत्थल्ल° जलेनोत्पाटितः; रेल्ल° चालितः. २ °चंदक्ककलावुद्धसियपिंछओ मुक्तचन्द्रकाणां मयूराणां कलापाः उद्ध्वसिताः. 3 *a* वासारत्तउ वर्षाकालः. 6 *a* धुवइ क्षालयति. 8 *a* वंस वंस हे ध्वजदण्ड. 10 *b* दुम्मेहहं दुष्टमेघानां दुर्मेधसां च. 13 *b* अइणु चर्मरत्नम्; वारिवारणु छत्ररत्नम्. 16 जियससहरु निर्जितः चन्द्रः येन तादृशम्.

11. 1 कुलीरमाणिए मत्स्यानां प्रीतिकरे.

गयणयलु धरणियलु गिरिसिहरु रेल्लियउ पडिएण पउरेण तोएण पेल्लियउ ।
अइणायवत्तेहिं रइए समुग्गम्मि णिवसंति णरवइणरा णाइं सग्गम्मि ।
ते दोण वरिसंति ते णेय जाणंति इट्ठाइं मिट्ठाइं सोक्खाइं माणंति ।
रयणोयरे साहणं जाम संचरइ अरविंदगब्भम्मि अलिउलु व रइ करइ ।
खलबलहरोवाय हिययम्मि संभरइ कागणिकयाइच्चससियरहिं वावरइ ।
सत्ताहरत्ते गए णवर कुद्धेहिं चूडामणिल्लेहिं मारणविरुद्धेहिं ।
इंगालहरिणीलकालिंदिकालेहिं मुहकुहरणिम्मुक्कगरलग्गिजालेहिं ।
उत्तुंगभूभंगभंगुरियभालेहिं सिसुससहरायारदाढाकरालेहिं ।
णिट्ठवियपरदंडजमदंडदीहेहिं आरत्तलोलंतचलजमलजीहेहिं ।
गरुयाहिमाणेहिं परिगहियमेच्छेहिं कलहिच्छदुप्पेच्छरोसारुणच्छेहिं ।
णीलासविसलवमलोलित्तचंदेहिं मरु मरु भणंतेहिं मरुगासिवंदेहिं ।
हरिकरिमहाजोहसामंतपब्भारु विउणयरु तिउणयरु वेढियउ खंधारु ।
रामाहिरामेण संगामधुत्तेण रूसेवि देवाहिदेवस्स पुत्तेण ।

घत्ता—परणरदुज्जयहो राएं जयहो वीरपट्टु सइं बद्धउ ॥
सो विसहरवरहं णवजलहरहं जुगखयकयंतु णं कुद्धउ ॥ ११ ॥

12

दुवई—ता सोलहसहासजक्खामरविरइयगंधवाहिणं ।
भग्गा सलिलवाह पीलू विव चलयरहरिणणाहिणं ॥ १ ॥

चक्कें वइरिमहाभड छिण्णा दइवें णाइं दिसाबलि दिण्णा ।
तं अवलोयवि गय भयवस फणि गय णवघण गय सा सोदामणि ।
मेच्छणरिंदहिं सकरुणु रुण्णउं दोजीयहुं किं किरं पडिवण्णउं ।

१ MBP °विलुद्धेहिं. ३ B °ससिहरायार°. ४ MBPK °घोलत°. ५ MBP °मलालित्तदेहेहिं. ६ MBP मरुगासिमंडेहिं. ७ P °देवेसपुत्तेण. ८ MBP सइं वीरपट्टु सिरि बद्धउ. ९ MB °धरहं; P °धारहं. १० °हारहं; GK omit णवजलधरहं. ११ MBP जुगखइ कयतु.

12. १ MBP सोलस°. २ MBP दोजीहहिं. ३ MB किंकर.

4 *a* अइणायवत्तेहिं चर्मातपत्राभ्याम्; समुग्गम्मि संपुटे. 5 *a* दोण द्रोणमेघाः. 7 *b* खलबलहरोवाय दुष्टानां बलापहारिण उपायान्. 13 *b* मरुगासि° सर्पाः. 14 *b* विउणयरु द्विगुणतरम्.

विसँभरियहं किं किर सुयणत्तणु वंकगइल्लहं किं गुणकित्तणु ।
छिद्दँण्णेसिहिं को रंजिज्जइ अणिलासिहिं किं परु पोसिज्जइ ।
चरणविवज्जिउ को जसु पावइ णिच्चभुयंगहं णिच्चु जि आवइ ।
रणजइ जउ गज्जिउ घणणाएं घणणाउ जि सोँ कोक्किउ राएं ।
सिरचूलाचुंबियभूभायहिं दूरंतरहु णमंसियपायहिं ।
दिण्णहिरण्णवत्थसंघायहिं दिट्ठु राउ आवत्तचिलायहिं ।
साहिवि मेच्छराउ गंजोल्लिउ अणुतीरें सिंधुहि पुणु चल्लिउ ।
पहु हिमवंतु पराइउ जावहिं आइय सिंधु भडारी तावहिं ।
देवँय दिव्वदेह णउ सा सरि सिंधुकूडवासिणि परमेसरि ।
राउ णिहालिवि कलसविहत्थइ लहु भद्दासणि णिहिउ पसत्थइ ।

घत्ता—सिंधूँदेवयए जलयरधयए अहिसिंचिवि थुउ मउलिवि कर ॥
दिण्णी माल तहो भरहाहिवहो णवपुप्फयंतथिँयमहुयर ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे आवत्तचिलायपसाहणं णाम
चोद्दहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १४ ॥
॥ संधि ॥ १४ ॥

४ P विसहरियहं. ५ P छिद्दाणेसिहिं. ६ MBP कोक्किउ सो. ७ P सिंधुवदेवइ. ८ B °पियमहुयर.

12. 7 *b* अणिलासिहिं वायुभक्षैः सर्पैः. 8 *a* चरण° चारित्रं पादाश्च. 12 *a* गंजोल्लिउ रोमाञ्चितः उल्लसितः प्रभुः. 17 णवपुप्फयंत° नवानि पुष्पाणि कान्तानि यस्याम्; नवपुष्पाणां वा अन्तो मध्यम्.

XV

मेल्लिवि सिंधुसरि पणवेप्पिणु रिसहजिणिंदहो ॥
पुणु संचलिउ पहु भयरसु जणंतु अमरिंदहो ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

1

सेणासेणाहिवपरियरिय हिमवंतु धरेप्पिणु संचलिय ।
सोहइ गच्छंती पुव्वमुह कुरुवंसणाहपत्थिवपमुह ।
दीसइ सेलत्थलि काणणउं महिसीदुद्धु व साहाघणउं ।
णाणामहिरुहफलरसहरइं कत्थइ किलिगिलियइं[2] वाणरइं ।
कत्थइ रइरत्तइं सारसइं कत्थइ तवतत्तइं तावसइं ।
कत्थइ झरझरियइं णिज्झरइं कत्थइ जलभरियइं कंदरइं ।
कत्थइ वीणियवेल्लीहलइं दिट्ठइं भज्जंतइं णाहलइं ।
कत्थइ हरिणइं उल्ललियाइं पुणु गोरीगेयहु वलियाइं ।
कत्थइ हरिणहरुक्कसियइं करिकुं[3]भुच्छलियइं मोत्तियइं ।
कत्थइ सुम्मइ जक्खिणिझुणिउं खयरीकरवीणारणरणिउं ।
कत्थइ भसलउलहिं रुणुरुणिउं कत्थइ सुयएण किं किं भणिउं ।

घत्ता—कत्थइ किंणरहिं गाइज्जइ सवणपियारउ ॥
रिसहणाहचरिउ फणिणरसुरलोयहु सारउ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

त्यागो यस्य करोति याचकमनस्तृष्णाङ्कुरोच्छेदन
कीर्तिर्यस्य मनीषिणा वितनुते रोमाञ्चचर्चं वपुः ।
सौजन्य सुजनेषु यस्य कुरुते प्रेमान्तरां निर्वृतिं
श्लाघ्योऽसौ भरतः प्रभुर्बत भवेत्काभिर्गिरां सूक्तिभिः ॥

MB read प्रेम्णोऽन्तरां for प्रेमान्तरां. G does not give it.

UK give it at the commencement of Samdhi XCV.

1. १ MB °महिरुहरुहरस°, P °महिरुहफलरस°, but records a *p* °महिरुहरुहरस°. 4 MBP किलिकिलियइं. ३ MBP °कुंभत्थलियइं.

---

1. 5 *b* साहाघणउं क्षीराग्रं तरिका तया घनं महिषीदुग्धम्, शाखाभिश्च घनं काननम्. 9 *b* णाहलइं शबराः. 11 *a* हरिणहर° सिंहस्य नखैः

2

णिक्खिलसुरासुररइणियले हिमवंतकूडतलधरणियले।
णवचंपयकुसुमावासियउ साहणु सडंगु आवासियउ।
बहुदोरहिं दूसइं ताडियइं रणवडहसहासइं ताडियइं।
करिसालाणडसालाहरइं उब्भियइं पउरसालाहरइं।
हरिवरमंदुरउ समुंडियउ णं घडदासीउ सुमुंडियउ।
ठवियइं मणिमंडवियासयइं[1] अवराइं मि दिव्वइं आसयइं[2]।
दुव्वारवइरिमयपहरणइं अहिवासिवि भूसिवि पहरणइं।
दक्खालियससहर[3]रयणियहि पोसहु पडिवज्जिवि रयणियहि।
कुलसयणि पसुत्तउ सइं भरहु उग्गमिउ दिणाहिवु णहि भरहु।
करि धरिउ सरासणु राणएण बहु विहरिउ मंडलराणएण।
आरुहिवि रहंगि[4] ण संकियउ वइसाहठाणु सइं संकियउ।
जो लोहवंतु परमग्गणउ सो गुणि संणिहियउ मग्गणउ।
किं अच्छइ णवर उद्दु[5] गयउ हिमवंतकुमारहु णं गयउ।

घत्ता—पडिउ सपंगणए[6] उप्पुंखु[7] बाणु अवलोइउ॥
चिंतिउ तेण मणे को पहउ कालें चोइउ॥ २॥

3

किं पाणि पसारिउ फणिमणिहे तडयडिहे णहि सोदामणिहे।
दीहरजालामालाजलिउ पलयाणलु केण पडिक्खलिउ[1]।
केसरिकेसरु उलूरियउ कालाणिलु[2] केण वियारियउ।

2. १ P reads after this: मिहुणइं रमंति रत्तासयइं, अवराइं मि दिव्वइं आसयइं, णियपहाणिज्जयदेवासयहिं. २ MB read after this. मिहुणइं रमंति रत्तासयइं, णियपहणिज्जियदेवासयइं. ३ BP ससिहररयणियहि. ४ P रहंगि. ५ MBP उद्धगयउ. ६ M पपगणए; B पसंगणए. ७ MB उप्पंखु.

3. १ MBPK पाडिखलिउ. २ MBP कालाणलु.

---

2. 5 *a* समुंडियउ मन्दुरोभयपार्श्वनिखातकाष्ठद्वयेन सहिताः. 6 *b* आसयइं आश्रया गृहाणि. 8 *a* दक्खालिये त्या दि–दर्शितः शशधरश्चन्द्र एव रत्नं चूडामणिरत्नं यया रजन्या; *b* रयणियहि रजन्याम्. 9 *b* भरहु नक्षत्रप्रच्छादकः. 10 *a* राणएण राः द्रव्य तस्य आनयनग्रहणकारिणा राज्ञा. 11 *b* वइसाहठाणु वामपदजानुं भुवि मुक्त्वा अपरमूर्ध्वीकृत्य वैशाखस्थानमुच्यते; संकियउं सम्यक् कृतम्. 13 *b* गयउ गदो रोगः.

3. 3 *b* कालाणिलु प्रलयवातः.

किउ केण गरुडपक्खाहरणु भणु केण णिसुंभिउ जमकरणु ।
दलवट्टिउ माणु पुरंदरहो किं सिहरु पलोट्टिउ मंदरहो ।
णियहत्थें णिम्मंथिउ जलहि पडिकूलिउ केण हवंतु विहि ।
दिट्ठीविसवयणु णिरिक्खियउ कें हालाहलु विसु भक्खियउ ।
जगि केण भाणु णित्तेइयउ महु केण रोसु उप्पाइयउ ।
को पारु पराइउ णहयलहो को सुपहुत्तउ णियभुयबलहो ।
किं ण मरइ करवालेण हउ ण वियाणहुं किं सो वज्जमउ ।
सरु मज्झु वि केण विसज्जियउ खयडिंडिमु कासु पवज्जियउ ।

घत्ता—जेण विमुक्क सरु अइदीहु समाणु फणिंदहो ॥
सो महु मरइ रणे जइ पइसइ सरणु सुरिंदहो ॥ ३ ॥

4

इय तेण गज्जियउं पुणु कज्जु सज्जियउं ।
पिंछेहिं पत्तियउ दित्तीइ दित्तियउ ।
चित्तेण चित्तियउ मंतेण मंतियउ ।
हिययम्मि चिंतियउ राएण घत्तियउ ।
गंधेहिं चच्चियउ फुल्लेहिं अंचियउ ।
पुण्णेहिं संचियउ केण वि ण वंचियउ ।
हयवेरिसंताणु अवलोइओ बाणु ।
ता तम्मि लिहियाइं सुरणियरमहियाइं ।
णिज्जियदियंताइं परिछेयवंताइं ।
वाईसिअंगाइं छंदाणुलग्गाइं ।
बिंदुयहिं चप्पियइं मत्तावियप्पियइं ।

३ M णिमत्थिउ, BP णिम्मत्थिउ. ४ P हणतु. ५ MBP किं. ६ MBP खयडिंडिमु. ७ M विमुक्क सरु.
4. १ MK चिंतियउ. २ M अच्चियउ. ३ MP परिच्छेयवत्ताइं.

5 *a* दलवट्टिउ खण्डितः. 9 *b* सुपहुत्तउ अतीव पर्याप्त.. 11 खयडिंडमु यमपटहः.
4. 1 *b* सज्जियउ प्रगुणीकृतम्. 6 *a* संचियउ उपार्जितः. 10 *a* वाईसि° सरस्वती. 11 *b* मत्तावियप्पियइं मात्रारचितानि.

वेल्लीहिं वलियाइं   अक्खरइं ललियाइं ।
गाढं विसिट्ठाइं   सरसाइं मिट्ठाइं ।
इट्ठाइं दिट्ठाइं   हियए पयट्ठाइं[4] ।
अरिसीहसरहस्स   आणाइ भरहस्स ।
जो जियइ सो जियइ   इयरस्स खयणियइ ।
अइरेण अवयरइ   बहवसु वि भुवु[5] मरइ ।
पुणु पुणु वि जोएवि   इय तेण वाएवि ।
सह समियसमरेहिं   अवरहिं[6] मि अमरेहिं ।

घत्ता—दिट्ठउ चक्कवइ चमरहिं चामीयरदंडहिं ॥
रयणहिं मोत्तियहिं पणवंतें[7] णियभुयदंडहिं ॥ ४ ॥

5

णरणाहें रयणहिं पुज्जियउ   हिमवंतु[1] कुमारु विसज्जियउ ।
सो किंकरत्तु[2] मणि धरिवि गउ   राणउ पुणु तिहुयणलद्धजउ ।
हरिसद्दसुभीमगुहाहरहो   सइं आइउ[3] वसहमहीहरहो ।
दीसइ गिरिमेहलघुलियघणु   णं धरणिहि केरउ एक्कु[4] थणु ।
णिज्झरजलदुद्धपवाहधरु   णिरु णाहलडिंभहुं सोक्खयरु ।
रइगारउ णावइ कुसुमसरु   मयवंतु णाइ कुपुरिसपसरु ।
रसवंतु णाइं णच्चणु[5] पवरु   बहुणावालंकिउ बहुविवरु ।
बहुविद्दुमोहु णं मयरहरु   बहुफलपयासि णं पुण्णभरु ।
बहुकंकणु णं महिमहिलियरु[6]   बहुओसहिल्लु णं भिसयवरु ।
हरिसेविउ णं जिणु परमपरु ।

४ MBP पइट्ठाइं. ५ MBP धुउ. ६ MBP अवरेहिं अमरेहिं. ७ MBP पणवंतहिं.

5. १ MBP हिमवंत°. २ B किं करंतु. ३ MBP आयउ. ४ M एक. ५ MBP णच्चण°. ६ MBP महिलयरु.

12 *a* वेल्लीहिं आवलीभिः. 16 *b* खयणियइ क्षयकाल. 17 *a* अइरेण अचिरेण, शीघ्रम्. 18 *b* वाएवि वाचयित्वा.

5. 7 *b* बहुविवरु बहुच्छिद्र. बहुपक्षी च. 8 *a* विद्दुमोहु प्रवालौघः; मयरहरु समुद्रः. 9 *a* महिमहिलियरु पृथ्वीमहिलायाः करः; *b* भिसय° वैद्यः. 10 *a* हरिसेविउ इन्द्रेण सिंहैश्च सेवितः.

करिदसणमुसलणिब्भिण्णतणु णं को वि महाभडु रइयरणु ।
सुरदाणवरमणीमाणपिउ णं णिवजससासणखंभु थिउ ।

घत्ता—तहु महिहरहु तडु पच्छाइउ चउहुं मि पासहिं ॥
णरलिहियक्खरहिं गयपत्थिवणामसहासहिं ॥ ५ ॥

6

जहिं दीसइ तहिं अक्खरसहिउ मोक्खु व गिरिंदु मुणिगणमहिउ ।
चिंतइ भरहाहिउ बहुगुणउ कहिं णामु लिहिज्जइ महु तणउ ।
अण्णण्णहिं रायहिं भुत्तियइ इह पयइ वसुमइधुत्तियइ ।
वोलाविय के के णउ णिवइ मोहंधहु मुज्झइ तो वि मइ ।
धण्णउ परमेसरु एक्कु पर जो हुउ पव्वइयउ मुएवि धर ।
बहुणरवइकरयललालियइ हउं विणडिउ सिरिपुण्णालियइ ।
ससंगररज्जभारेण हय मयमइरइ मत्ती मुच्छ गय ।
धारागलंतलीलावयहिं अहिसिंचिय मंगलघडसयहिं ।
जा विज्जिय चलचमरहिं जियइ जा छत्तें छाइय णउ णियइ ।
असिवाणियककसत्तु महइ अंकुससंगें वंकिम वहइ ।
चवलत्तणु कुलधयवडवरहो गुणु मेल्लिवि गमणु पासि सरहो ।
सिक्खियउ जाइ तहि गोमिणिहि आसत्तपुरिस णरयावणिहि ।
णिवडंति महंत वि झत्ति किह वारिहि करिणीरय पीलु जिह ।

घत्ता—ताएं भुत्त चिरु पुणु पुत्तें सहुं सुहुं अच्छइ ॥
वसुमइ झेंदुलिय जगि केण वि समउ ण गच्छइ ॥ ६ ॥

७ MBP °पाणपिउ.

6. १ MBP इय. २ MB °रज्जहारेण. ३ MBP आसिपाणिय°. ४ MBP °वडधरहो. ५ MBP परहो. ६ MP आसत्तु पुरिसु, B आसत्तपुरिसु. ७ MBPT झिंदुलिय.

---

6. 4 *a* वोलाविय अतिक्रामिताः त्यक्ताः. 6 *b* पुण्णालियइ पुंश्चल्या 8 *a* °लीलावयइं °लीला-पयोभिः. 9 *a* विज्जिय वीजिता. 10 *a* महइ वाञ्छति. 11 *b* गुणेत्यादि—गुणं मुक्त्वा गच्छति शर-पार्श्वात्. 12 *b* णरयावणिहि नरकभूमेः. 13 *b* वारिहि गजबन्धनगर्तायाम्. 15 झेंदुलिय पुंश्चली वेश्यावृत्तिः.

7

णक्खहु वि ण लब्भइ थत्ति जहिं किं णाउं लिहिज्जइ एत्थु तहिं ।
मइं जेहा पत्थिव को गणइ जे जे गय ते पुरेहु भणइ ।
परमेस महायणु जेण गउ सो पंथु जयम्मि ण केण कउ ।
परु फेडवि झिड घेप्पइ पुहइ तिह णामु वि फेडिज्जइ णिवइ ।
ता बालमराललीलगइणा वीलामलमलिणेण वि पइणा ।
राएं रायहु ओहारियउ अण्णहु कासु वि उत्तारियउ ।
करकागणिरेहादावियउ णियणाउं गिरिंदि चडावियउ ।
रिसहहु रइरमणखयंकरहो हउं पुत्तु पढमतित्थंकरहो ।
णामेण भरहु भरहाहिवइ बोल्लउ परु महियलि अत्थि जइ ।
हिमवंतजलहिपेरंत सइं छक्खंड वि णिज्जिय वसुह मइं ।
ता णियसहिं साहुकारियउ भरहेसरु जयजयकारियउ ।
पइं जेहउ को वि ण चक्कवइ को एम ससंकि णाउं थवइ ।
कहु अग्गइ धावइ कमलकरि कमलालय कमलाणणिय सिरि ।
दालिद्दहारि किर कासु वसु तिजगंसगामि किर कासु जसु ।
असि कासु वइरिविद्धंसयरु पइं मेल्लिवि को किर कप्पयरु ।
पइं मेल्लिवि णाणहु कवणु घरु परमप्पु कासु देउ पियरु ।

घत्ता—रूवें विक्कमेण गोत्तें बलेण णयजुयत्तें ॥
तुज्झ समाणु तुहुं किं अण्णें माणुसमेत्तें ॥ ७ ॥

8

सरवरजलकीलियसारसयं दरिसावियचंपयसारसयं ।

7. १ P किउ. २ MB °मलिणाणण वि पइणा, P ° मलिणाणणपइणा. ३ MBP णियणामु. ४ MB पढमु. ५ P वहुअग्गइ. ६ M दारिद्दहरि. ७ MBP तिजगंत°. ८ MBP वइरिवीरतयरु. ९ MBP परमप्पु. १० MB कुलेण. ११ MBP णयजुत्तें.

7. 5 *b* वीलेत्यादि—लज्जामलमलिनेन स्वामिना. 6 *a* ओहारियउं चित्ते अवधारितम्. 10 *a* °पेरंत पर्यन्ता.

8. 1 *b* °चंपयसारसयं चम्पकवृक्षाणां मध्ये सारास्तेषां शतानि, चम्पकलक्ष्म्या रसो वा यत्र.

काणणपरिहिंडियकुंजरयं गयणंगणविगयणिकुंजरयं।
फलभारोणयसुरतरुविडवं रइयरेणिलयहिं खेयरविडवं।
ओसहिओसारियविसहरयं वणसुरहिसमीहियविसहरयं।
मोत्तूण तममलं धरणिहरं सधयं सेण्णं परेधरणिहरं।
चलियं सह पहुणा पउरहयं सारहिकरकसचोइयरहयं।
अहिमाणवंतु णीसंकमइ पुव्वादिसभाएं संकमइ।
हिमवंततलेण जि विक्कमइ दियहेहिं जंतु वसुहं कमइ।
गोगइहहरिकरिमहिसयल अवठंभिवि रुंभिवि महि सयल।
णियवइहि णिहालिवि चंदबलु मंदाइणिपुलिणइ थियउ बलु।
जगसंसियअसिधारासियहिं अणुयहिं णिवखंधारासियहिं।

घत्ता—दीसइ पंडुरउ हिमवंतसिहरि सिंगग्गउं॥
णं भरहहु तणउं जसविलसिउं सग्गि विलग्गउं॥ ८॥

9

ससिरयणमए परिभमियमए।
उववणगहिरे घणविहुरहरे।
खगणियरहरे सुरसारिसिहरे।
णिवसइ गुणिणी अमरवइरमणी।
चलहारमणी जणमणदमणी।
छणससिवयणा कुवलयणयणा।

8. १ MBPT °णिलएहिं. २ MP add after this: सिंगग्गवत्तु धुयविसहरय, ज सहइ चक्कि-जसविसहरय; सइ सेवियविसहरसेहरयं, महिवहुसिरि ण मणिसेहरय, B adds after this. सइ सेवियविसहर-सेहरयं, सिंगग्गवत्तु धुयविसहरयं, ज सहइ चक्किजसविसहरयं, महिवहुसिरि णं मणिसेहरय. ३ MBP मोत्तूणं तममलधरणिहरं. ४ MP परयरणिहरं. ५ MBP मणुयहिं.

9. १ MK अमरवररमणी but T अमरवइरमणी.

2b °णि कुं ज र यं वृक्षसमूहपुष्परजः. 3 a °वि ड व शाखा. b र इ य रे त्या दि–रतिकरस्थानैः कृत्वा खेचरविटपालकम्. 4 b व णे त्या दि–वनसुरभिभिर्वनगोभिः समीहित वृषभाणां रतं सुरतं यत्र. 5 b प र ध र णि ह रं शत्रुभूमिहारकम्. 7 a णी सं क म इ निशङ्कमतिः; b सं क म इ स्थानात्स्थानान्तर चरति. 8 b क म इ लङ्घयति. 11 a अ सि-धा रा सि य हिं असिधारावन्निर्मलैः; b अ णु य हिं अनुगैः; °खं धा रा सि य हिं स्कन्धावारास्थितैः.

घरगयगमणा कयजिणण्हवणा ।
पविउलरमणा पीव[२]रसिहिणा ।
पंक[३]यचलणा सिरकयसुमणा ।
पलरियपुलया वणसुरकुलया ।
विरइयतिलया मणसियणिलया ।
णरणवियपया चलमयरधया ।
मुणिमइविमला हिमकरधवला ।

घत्ता—गंगा णाम सइ सुरसुंदरि णयणपियारी ॥
रूवें जोव्वणेण देवाहं मि विम्ह[४]यगारी ॥ ९ ॥

10

णरवइचरियं गुणविप्फुरियं ।
हियए[१] धरियं चलिया तुरियं ।
तिवलितरंगा देवी गंगा ।
णिवसामीवं पीणियभावं ।
पत्ता धीरा सालंकारा ।
भुवणपसत्था मंगलहत्था ।
दुत्थियमित्तो परहियजुत्तो ।
जगगुरुपुत्तो पंकयणेत्तो ।
उत्तमसत्तो गुरुय[२]णभत्तो ।
जायविवेओ भावियभेओ ।
ढोइयदाणो कयसंमाणो ।
खलकुलचंडो दावियदंडो ।

२ K omits पीवरसिहिणा. ३ K omits पंकयचलणा. ४ MBP विंभय°.
10. १ MBP हियवइ. २ K गुणयणभत्तो.

9. 9 *b* °सुमणा पुष्पाणि. 10 *a* °पुलया पुलको रोमाञ्चः; *b* वणसुरकुलया व्यन्तरदेवकुले आता. 11 मणसिय° मदनः.
10. 4 *a* °सामीव °समीपम्; *b* पीणिय भावं हृष्टचित्तम्.

भासियसामो ससिरविधामो ।
रामाकामो पायडणामो ।
हयसिरिघिरहो दिट्ठो भरहो ।
भत्तिभराए कुसुमकराए ।
थोत्तगिराए णवियसिराए ।
दिण्णासीए पुणरवि तीए ।

घत्ता—वरुणदिसासियहो णं पुण्णिमाइ ससिकंदहो ॥
अमयभरिउ कलसु पल्हत्थिउ सीसि णरिंदहो ॥ १० ॥

11

कडउल्लउ कडयाणंदु करे[1] कर मउलिवि[2] मउलु वि णिहिउ सिरे ।
मणहारु[3] हारु णीहारणिहु उरबंधु बंधु माणिक्कसिहु ।
हिमवंतसिहरिसिहरेसरिए[4] दिण्णउ देविइ सुरवरसरिए ।
जिह वंभसुत्तु तिह वंभसुए ण सहइ परम्मि आयारचुए ।
रसणा महुरसणा घंटियहिं माला[5] अलिमालारुंटियहिं ।
सोहंती दिण्णी णरवइहि उल्लंघियचउसायरवइहि ।
पंतीउ[6] विइण्णउ सुरयणहं रंजिउ हियउल्लउ सुरयणहं ।
छत्तइं सयवत्तइं सिरिलयहे वत्थइं णेवत्थइं भणमि तहे ।

घत्ता—इय गेण्हिवि णिवेण मणहरमरालललीलागइ ॥
पुज्जिवि पट्ठविय णियभवणहु गय गंगाणइ ॥ ११ ॥

11. १ MBP कडयाणंद. २ B मउलिवि. ३ MB मणहार. ४ MB °सिहरासिहरे°. ५ B मालइ. ६ B पत्तीउ.

13 *b* ससिरविधामो सौम्यस्तेजस्वी च. 19 वरुणदिसासियहो पश्चिमदिगवस्थितस्य; पुण्णिमाइ पूर्णिमया कन्या. 20 पल्हत्थिउ सीसि मस्तकोपरि विसर्जित·.

11. 1 *b* मउलु मुकुट·. 2 *b* उरबधु बंधु उरोबन्धस्य ब्रह्मसूत्रस्य बन्ध·. 4 *a* बंभसुए वृषभनाथ-पुत्रे, अन्यत्र ब्राह्मणे. 5 *a* महुरसणा मधुरशब्दा·, *b* °रुंटियहिं शब्दैः. 6 *b* उल्लंघियेत्यादि— उल्लंघिता पादाक्रान्ता या चतु·सागरा चतु समुद्रा पृथ्वी तस्याः पतिः तस्मै. 7 *a* पंतीउ मालाः; सुरयणहं शोभनरत्नानाम्; *b* सुरयणहं देवसंघातानाम्. 8 *b* तहे गङ्गायाः.

12

पहु विजयलच्छिआलिंगियउ   भणु केण ण दंसणु मग्गियउ।
सुरसरि साहेप्पिणु णीसरइ   बलु दिण्णदाणु कयणीसरइ।
सरितीरेण जि पुणु संचरइ   हा हरिणवंदु तहिं किं चरइ।
जहिं धूलि होंति गिरि तरुवर वि   उल्ललियरओहें रहिउ रवि।
सरि छज्जइ उग्गयपंकयहिं   बलु छज्जइ चित्तछत्तसयहिं।
सरि छज्जइ हंसहिं जलयरहिं   बलु छज्जइ धवलहिं चामरहिं।
सरि छज्जइ संचरंतझसहिं   बलु छज्जइ करवालहिं झसहिं।
सरि छज्जइ चक्कहिं संगयहिं   बलु छज्जइ रहचक्कहिं गयहिं।
सरि छज्जइ सरतरंगभरहिं   बलु छज्जइ जलतुरंगवरहिं।
सरि छज्जइ कीलियजलकरिहिं   बलु छज्जइ चल्लियमयकरिहिं।
सरि छज्जइ बहुजलमाणुसहिं   बलु छज्जइ किंकरमाणुसहिं।
सरि छज्जइ सयडहिं सोहियहिं   बलु छज्जइ सयडहिं वाहियहिं।

घत्ता—जिह जलवाहिणिय तिह महिवइवाहिणि सोहइ॥
महिहरभेयणिहिं एयहिं किं किर को णउ बीहइ॥१२॥

13

अक्खिउ णिग्गमणपवेसु जहिं   पत्तउ णरणाहु दिणेहिं तहिं।
वेयड्ढगिरिंदहु पच्छिमहे   जिह आसि तिमीसहि दुग्गमहे।
मृगमग्गलग्गअलियल्लियहि   कंडयगुहाहि पुव्विल्लियहि।

12. १ MBI °आलिंगियउ. २ MBP दिण्णदाण. ३ MBP हरिणविंदु किं तहिं. ४ MBP गय. ५ MBP विंधछत्त°. ६ M चक्कहिं हंसगयहिं. ७ P °तरंगतरहिं, but gloss तरङ्गसमूहे.. ८ M adds after this: बलु छज्जइ कीलियजलकरिहिं, which obviously is the scribe's mistake. ९ MB किं किर. १० MBP णिववर°. ११ M महिहरभोयणिहिं. १२ MBP एयहं किर.

13. १ M णिग्गमणु. २ MBP मिग°.

12. 2 *b* कयणीसरइ कृता निःस्वानां दरिद्राणां रतिर्येन. 4 *b* उल्ललियेत्यादि—उच्छलितो यो रज·संघातस्तेन रहिओ आच्छादितो रविः. 9 *a* सरतरङ्ग° जलस्य तरङ्गाः. 12 *a* सयडहिं स्वतटैः; *b* सयडहिं शकटैः. 13 जलवाहिणिय जलवाहिनी नदी; °वाहिणि सेना. 14 महिहर° पर्वता राजानश्च.

13. 2 *b* तिमीसहि तिमीससंज्ञायां सिन्धुगुहायाम्. 3 *a* अलियल्लि° व्याघ्रः.

तहि[3] णियडउ सेण्णु णिसण्णु किह ण विलग्गइ गिरि[4]कुहरुम्ह जिह।
णिहिणाहें भणिउ बलाहिवइ तुहु जोग्गउ पेसणु दिण्णु लइ।
हणु दंडें पुणु[5] वि कवाडु तिह विहडेप्पिणु वच्चइ झत्ति जिह।
पच्चंतु पसाहिवि एहि लहु ज[6]ज्जाहि तु[7]रयसेण्णेण सहु।
छम्मास वसेवउ एत्थु मइं जाएसमि पडिआएण पइं।
असिजलधाराधुयजसवडेण ता चमुपमुहेण महाभडेण।

घत्ता—पुव्वकमेण पुणु हरि[8]रयण चडेवि पयंडें ॥
आरूसिवि हयउ गिरिगुहकवाडु पविदंडें ॥ १३ ॥

14

जिणदंसणि जिह दुक्कियपडलु जिह दिवसयरुग्गमि तिमिरमलु।
जिह सुद्धसहावें मयणसरु जिह पिसुणें दूसिउ णेहभरु।
सुकइंदसमागमि कुकइ जिह विहडिउ कवाडु फुडु झत्ति तिह।
तहिं सहु भीमु जो णीहरिउ[1] तहु भइयइ को[2] वि ण थरहरिउ।
तेत्थु जि सिहरत्थलि रइयपुरु सिरिणट्टमालि णामेण सुरु।
पडिहारें रायहु दरिसियउ कमकमलालोय[3]णहरिसियउ।
बलवइणा साहिय मेच्छमहि वसि हूई तहु जयलच्छिसहि।
आवेवि णमंसिय पहुहि पय तहिं णिव[4]संतहुं छम्मास गय।

घत्ता—ण वर गुहाकुहरु णरवइगइजोगउ[5] आयउ ॥
सव्वहं सीयलउ णं दीसइ कज्जु परायउ ॥ १४ ॥

३ MBPK तिह. ४ MB °कुहरुभ, P कुहरुभु, K कुहरम्ह. ५ MBP पुव्वकवाडु. ६ P जाजाहि. ७ MBP तुरिय सेण्णेण ८ MBP हरिरयणि.

14. १ MBP णीसरिउ. २ MBP को व ण. ३ MBP °लोयणि. ४ MBP णिवसतहिं. ५ P °जोग्गा.

---

4 b गिरिकुहरुम्ह गिरिकुहरस्योष्मा.

14. 6 b कमेत्यादि– पदकमलयोरालोकनेन हर्षितः. 7 b जयलच्छिसहि जयलक्ष्म्याः सखी.

15

ता मंतिहिं गुज्झु ण रक्खियउ परमप्पयतणयहु अक्खियउ ।
तुह माउयाहि मंथरगइहि ते दोण्णि वि भायर जसवइहि ।
णामें णमि विणमि कुमारवर गंभीर धीर रणभारधर ।
णहयरवइ हूयउ अवियलहे णिवसंति एत्थु गिरिमेहलहे ।
हल्लियसाहाफुल्लियवणइं पण्णास सट्ठि खगपट्टणइं ।
उद्दामहं गामहं तेत्तियउ कोडिउ धरणेण विहत्तियउ ।
भुंजंति रमंति गमंति दिणु पणवंति तुहारउ जणणु जिणु ।
तं णिसुणिवि भूसियसमरधुर पहुणा पेसिय गणबद्ध सुर ।
गय तेहिं भणिय खयराहिवइ छक्खंडमंडलावणिविजइ ।
महियलि उप्पण्णउ चक्कवइ जो रिसहणाहु भुवणाहिवइ ।
तहु पुत्तु भरहु लहु अणुसरहो अहिमाणु मडप्फरु परिहरहो ।

घत्ता—पत्थिववित्ति जइ णउ सयणवित्ति पडिवज्जइ ॥
गुरुहुं सडिंभहं मि दोसिल्लहं दंडु पउंजइ ॥ १५ ॥

16

तो बंधुणेहभउ भावियउ खयरिंदहिं कज्जु विहावियउ ।
हियउल्लउ धीरु वि कंपियउ पणएण णएण पयंपियउ ।
तणुतेयपूरपिंगलियणहु जिह देवदेउ तिह पुणु भरहु ।
अम्हहं आराहणिज्जु हवइ भणु तवणहु उप्परि को तवइ ।
भणु जलणहु उप्परि को जलइ भणु पवणहु उप्परि को चलइ ।
भणु मोक्खहु उप्परि कवण गइ भणु भरहहु उप्परि को णवइ ।
इय घोसिवि ताइं विसज्जियइं आयइं अमरउलइं पुज्जियइं ।

15. १ MBP गुज्झु. २ P सडिंभरहं.
16. १ MBP ता. २ MBP णिवइ.

15. 2 *a b* माउयाइ भायर तव मातुर्यशोमत्या भ्रातरौ. 5 *a* हल्लियसाहा° चलितशाखाः. 8 *b* गणबद्धसुर अङ्गरक्षका देवाः. 11 *b* मडप्फरु मिथ्यागर्वः.

16. 3 *a* तणुतेयेत्यादि–तनुतेजसो देहप्रभाया भरेण पिङ्गलितं नभो येन.

तूरइं गुरुरवइं वियंभियइं कुलचिंधसयाइं समुब्भियइं ।
चोइय हरिकरिवरसंदणइं आहूयइं णियणियपरियणइं ।
खणि बे वि सहोयर णीहरिय दिब्भित्तिवित्तजाणहिं भरिय ।

घत्ता—खेयरकिंकरहिं परिवारिय देव समाणहिं ॥
जहिं णिवसइ णिवइ तहिं आइय रयणविमाणहिं ॥ १६ ॥

17

मउलियकरेहिं पणवियसिरेहिं पहु बोल्लिउ णमिविणमीसरेहिं ।
अम्हारउ णिव कुलसामि तुहुं पइं दिट्ठइ णयणहं होइ सुहुं ।
पइं दिट्ठइ आवइ ओसरइ पइं दिट्ठइं घरि सिरि पइसरइ ।
तुह तायहु हयवम्मीसरहो आएसें परमजिणेसरहो ।
चामीयरमणिणिम्मियघरइं अइरम्मइं खेयरपुरवरइं ।
अहिराएं आसि विइण्णाइं जइ एवहिं पइं पडिवण्णाइं ।
तो भुंजहुं णं तो तुहुं जि लइ अम्हहं पुणु दइयंबरिय गइ ।
तं णिसुणिवि राएं भासियउ अप्पाणउं जें ण विणासियउ ।
मेहु आणावयणु ण णिरसियउ तं तुम्हहिं चंगउ ववसियउ ।
जिह मउडग्गयचूडामणिणा चिरयालि महायरेण फणिणा ।
तिह एवहिं मइ वि समप्पियइं पालहि खेयरणयरइं पियइं ।

घत्ता—जिणवरणंदणहो बलवंतहु रिद्धिम्पणाहहो ॥
णमिविणमीसरेहिं पडिवण्ण सेव णरणाहहो ॥ १७ ॥

18

रायहु कंपावियतिहुयणहो पणवेप्पिणु गय सणिहेलणहो ।

३ P °दंसणइं. ४ MBP णीसरिय. ५ M दिहिभित्तिचित्त°, B दिहिचित्तिचित्त°; P दिब्भित्तिहि. ६ MBP अमरविमाणहिं.

17. १ M आवय. २ MBP तुहु मि लइ. ३ MB दईयंबरिय. ४ B णु. ५ B पहु°.

18. १ P कपाविउ.

---

10 *b* दिब्भित्तिचित्तजाणहिं दिश एव भित्तय. ता एव नानायानानि तैः.

17. 6 *a* अहिराएं सर्पराजेन धरणेन्द्रेण. 7 *a* दइयंबरिय दिगंबराणां गतिः.

ते बंधव सिरिधव पट्ठविवि रणधीरइं वइरइं णिट्ठविवि ।
संचल्लइ डोल्लइ धरणियलु उद्धरियसूलकरवालहलु ।
मरुचलियलुलियचलचिंधबलु गुहदारि उदारि ण माइ बलु ।
णउ जंपइ कंपइ फणिणिवहु पहु वंचइ णच्चइ तियसवहु ।
पउ गुप्पइ घिप्पइ आहरणु परिघोलइ लोलइ पंगुरणु ।
अइमल्हइ मेल्लइ सद्दु करि रहु थक्कइ वंकइ कंधु हरि ।
तहु दाणें फेणें समिय रय विक्खलइ खोल्लइ खुत्त पय ।

घत्ता—बंदिण पढियहिं जयणंदवड्ढणिग्घोसहिं ॥
गज्जइ गिरिविवरु वज्जंतहिं पडहसहासहिं ॥ १८ ॥

19

जणु जूरइ पूरइ मग्गु ण वि णरलिहियउ णिहियउ चंदु रवि ।
कागिणियइ घणियइ मट्टियइ अंधारवियारविहट्टियइ ।
उज्जोयउ जायउ उज्जलउ खंधारु वीरु धारियपुलउ ।
संकमेण कमेण जि संचरइ सरभरियउ सरियउ उत्तरइ ।
तहु कुहरहु कुहरहु णिग्गयउ केलासगिरीसहु लहु गयउ ।
सुरणियरहिं खयरहिं परियरिउ णिज्झरझरंतवारिहिं भरिउ ।
गंधव्वहिं भव्वहिं सेवियउ सिहिजालहिं चवलहिं ताविउ ।
तरुजालहिं णीलहिं छाइयउ कइबुक्कारेहिं णिणाइयउ ।

घत्ता—सो महिहरपवरु दीसइ गयणंगणि लग्गउ ॥
णं महिकामिणिहि भुयदंडु पदंसियसग्गउ ॥ १९ ॥

२ MBP रणवीरइं. ३ P °चिंधउलु. ४ MBT उयारि; P उयरि. ५ B वंचइ णंचइ. ६ M खंधु, BP कंधु. ७ MBP विक्खिलइ. ८ MBP वद्ध. ९ P गिज्जइ.

19. १ MBP कागणियइ मणिमइ. २ MB सकमेण. ३ MBP जलभरियउ. ४ MB णिण्णाइयउ.

18. 2 *a* सिरिधव लक्ष्म्या भर्तारौ. 7 *a* अइमल्हइ मन्दगमनं करोति.

19. 1 *a* पूरइ मग्गु ण वि परिपूर्णो मार्गो दृष्टिविषयो न भवति. 2 *a* घणियइ कठिनया. 4 *a* संकमेण सेतुबन्धेन; *b* सरभरियउ जलपूर्णाः. 5 *a* कुहरहु पर्वतस्य, कुहरहु गुहायाः.

20

जो अच्छरचित्तालिहियसिलु विसहरसिररयणारुणियबिलु ।
जो दरिसियसीहसिलिंबसुहु सद्दूलपसाहियरुंदगुहु ।
जहिं दिट्ठइं दुमसाहागयइं किंणरवीसरियहारसयइं ।
अलि झंकारेहिं ण रडि मुयइ जहिं णाहलडिंभउ सुहुं सुअइ ।
जहिं सलहिज्जंति अमच्छरहिं सवरीरूवाइं वि अच्छरहिं ।
जहिं मणिभित्तिहि पेच्छिवि सयणु महिसिहिं कीरइ पडिवक्खमणु ।
जहिं दोमवीढु मणिवि तरुणु मरगयवट्टहु धावइ हरिणु ।
जहिं चंदणमहिरुहु परिहरिवि णहयरवहु सुत्ती संभरिवि ।
मुहसासवासु विसहरु पियइ अवरहु वि भुयंगहु एह मइ ।

घत्ता—पेच्छिवि जममहिसु जहिं जक्खिणिसीहु ण रूसइ ॥
जिणमाहप्पएण पडिवक्खपक्खि खम दीसइ ॥ २० ॥

21

जहिं इंदणीलरइरंजियउ सिहि मंजारें ण विभंजियउ ।
किं मोत्तिउ किं वँ तुसारकणु जहिं संकइ संजउ सीलहणु ।
जहिं ओसहिदीवउ पज्जलइ रयणिहिं पुलिंदु सुहुं संचलइ ।
जहिं जायउ गुणगणमंडियउ मुणिसंगें सुयउलु पंडियउ ।
जिणणाहें घोसिय जीवदय जहिं पसु वि विलाय वि धम्मरय । 5
सुरहत्थिणि सेवइ जासु तडु जहिं हिंडइ चक्केसरिगरुडु ।

20. १ MBP °सुहु. २ MBP दीसहिं दुम°. ३ M °झंकारेण णं रडि, B °झंकारण णं रडि; P °झंकारेण ण रडि. ४ MB अमरच्छरहिं. ५ MBP °रूवाइं वरच्छरहिं. ६ MBP दोवपीढु. ७ MBP °महिरुहु.
21. १ B मजारेण. २ MBPT विहंडियउ and gloss in T विवेचितः. ३ P च. ४ MBP पोसिय.

20. 2 *a* °सीहसिलिंब° सिंहशावकः. 4 *a* ण रडि मुयइ न रटनं मुञ्चति, गानमेव करोतीव अलिझंकारैः. 6 *a* सयणु स्वशरीरम्, *b* पडिवक्खमणु सपत्नीबुद्धिः. 7 *a* दोमवीढु दूर्वासंघातः; *b* °वट्टहु एकखण्डपाषाणम्. 8 *b* संभरिवि ज्ञात्वा. 9 *b* भुयंगहु विटस्य. 11 पडिवक्खपक्खि खम दीसइ प्रतिपक्षपक्षे शत्रौ अपि क्षमा दृश्यते.

21. 1 *b* ण विभंजियउ न ज्ञातः. 2 *b* संकइ शङ्कते; संजउ संयतो मुनिः. 4 *b* सुयउलु शुककुलम्.

पोमावइहंसु कडक्खियउ जहिं वरुणहु मयरु णिरिक्खियउ ।
जसु तीरइ पवणहु तणउ मउ सिहि मेसें सहुं कीलाणिरउ ।
बारहकोट्ठेहिं अहिट्ठियउ जहिं समवसरणु सइं संठियउ ।

घत्ता—तहु गिरिवरहु तले धरणीसें सिविरु विमुक्कउं ॥
णावइ मंदरहो चउदिसु तारायणु थक्कउं ॥ २१ ॥

22

मणिमउडपट्टभूसणहरिहिं सुरवरकरिकरदीहरकरहिं ।
कंठालंबियमुत्तावलिहिं उब्भाइयणवकुसुमंजलिहिं ।
तणुतेउज्जलियवणत्थलिहिं उवसमवंतहिं पसमियकलिहिं ।
कइवयणिवेहिं सहुं सुहमइ पहु गिरिसिहरारोहणु करइ ।
आवंतहु रायहु सो सिहरि णिज्झरजलधाराभरियदरि ।
सीहासणचमरीचामरइं छायादुमछत्तइं सुंदरइं ।
मयणिब्भर वर गज्जंत गय वणयर किंकर गंडय गवय ।
णं दरिसणु अग्गाग्गइ ठवइ णं कोइल कलरवेण लवइ ।

घत्ता—तरुवत्तें गिरिणा फलु फुल्लु पत्तु णं दिण्णउं ॥
महिहरु महिहरहु अवसें पालइ पडिवण्णउं ॥ २२ ॥

23

आरुहिवि धराहरवरसिहरु अइउंदचंदकररासिहरु ।
परमेप्पय पयपइ पइसरइ जिणसमवसरणि तहिं पइसरइ ।

५ P सिमिरु ६ MBP पमुक्कउ. ७ B थक्कइ.

22. १ MBP °हरहिं. २ B °णउकुसुमं°. ३ MBP सह. ४ MBP सिंहासण°. ५ MB तरुवंतें.

23. १ MBP धराधर°. २ MB परमप्पय पइपइ पयसरइ; T पयपइ प्रजापतिः; P परमप्पय पयवइ पइसरइ and gloss परमात्मपादौ प्रजापतिर्भरतः स्मरति.

---

9 *a* अहिट्ठियउ सहितम्.

22. 8 *a* दरिसणु प्राभृतम्. 9 तरुवत्तें तरुपात्रेण, वृक्षभाजनेन. 10 महिहरु पर्वतः; महिहरहु नृपस्य.

23. 1 *b* °कररासिहरु किरणसमूहाभिभावकम्. 2 *a* परमप्पय परमात्मानम्; पयपइ प्रजापतिर्भरतः.

दिट्ठउ परमेसरु णि[3]हयसरु तिसिएण व हरिणें कमलसरु ।
भरहें बहुछंदपसंगिरए थुउ सुद्धु [4]सलक्खणाइ गिरए ।
अरहंत अणंत भव्वभवइ तुह सेवइ सोक्खु समुब्भवइ ।
तिट्ठासरितीरु पराइयउ तुहुं कामें पर ण पराइयउ ।
पइं रोस[5]जलणु उवसामियउ तुहुं रिसि भुवणत्तयसामियउ ।
पइं पेच्छिवि देउ अहिंसवरु ण हणइ दंडेण अहिं सवरु ।
ण[6] वि भक्खइ तं कया वि णउलु महिसंतयारि वग्घहं ण उलु ।

घत्ता—पइं संबोहियइं केलासवा[7]सिव्रउ लेप्पिणु ॥
थक्कइं खेयरइं केलासवास मेल्लेप्पिणु ॥ २३ ॥

24

तु[1]ह वयणु विणीसिउ काणणए णिसुणेप्पिणु इह गिरिकाणणए ।
ण पवत्तइ कत्थ वि जीववह जय संदरिसियपरलो[2]यपह ।
सीहु वि सरहु वि एक्कहिं वसइ सिहिचुयपिच्छ[3]इं सवरी वसइ ।
क[4]लु गेउ ण गायइ सावयहो सा[5]मिय पइं लाइय सा वयहो ।
पइं मंसगिद्धि मज्जा[6]रयहं सोंडत्तणु महुमज्जारयहं ।

३ BP णिहियसरु. ४ MBP सुलक्खणाइ. ५ K रोसु जलणु. ६ K णउ. ७ MBP °वासवउ.

24. १ MBP तुहु. २ K ° लोयवह. ३MBPK °पिंछइ. ४ MBP कलगेउ. ५ B सा चिय; P सा विय; T साविय स्वामिन्, अथवा साविय श्राविका; K सा मि य and gloss सा शबरी. ६ P मजारयहं.

---

3 *a* णिहयसरु निर्जितकामः. 4 *a* °छंदपसगिरए छन्दोऽभिप्रायः मात्राप्रस्तारश्च तेन पसंगिरए संबन्धवत्या वाण्या. 5 *a* भव्वभवइ भव्या एव भानि नक्षत्राणि तेषां पतिश्चन्द्रः. 6 *a* तिट्ठा° तृष्णा. 8 *a* अहिंसवरु अहिंसा वरा यस्य, *b* अहिं सवरु अहिं सर्पं शबरो दण्डेन न हन्ति. उपलक्षणमेतत्; न कोऽपि किमपि केनापि हन्तीत्यर्थः. 9 *a* तं सर्पम्, णउलु नकुलः, *b* महिसतयारि महिषाणामन्तकारि न व्याघ्राणां कुलं समूहो भवति. 10 केलासवास हे देव कैलासपर्वतवासिन्; व्रउ लेप्पिणु व्रतं गृहीत्वा. 11 केलासवास मेल्लेप्पिणु केल मद्यभाजनं अल आसवो मद्य तस्य आशां त्यक्त्वा; अथवा के मस्तके लसन्तीति केलासा केशाः वासो वस्त्रं तानि मुक्त्वा.

24. 1 *a* विणीसिउ विनिर्गतम्, काणणए हे ब्रह्मन्, *b* गिरिकाणणए पर्वताटव्याम्. 3 *b* सिहिचुयपिंछइं सवरी वसइ शबरी पुलिन्दस्त्री परिधानं करोति, मयूरपिच्छैर्निजशरीरमाच्छादयतीत्यर्थः. 4 *a* सावयहो श्वापदस्य वधार्थम्, *b* सा शबरी, वयहो लाइय व्रतं ग्राहिता.

परँयारु वि वारिउ आरयहं तुहुं णाहु सुट्टु विआरयहं।
जं अणुहरियउ अलियंजणहो तं गाढु पाउ अलियं जणहो।
मुहणिग्गंतउ पइं खंचियउ तुह संभवि देवहिं खं चियउ।

घत्ता—इय भरहेण थुउ परमेसरु जियपंचिंदिउ ॥
अमरासुरमणुयखगपुप्फदंतफणिवंदिउ ॥ २४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे उत्तरभरहपसाहणं णाम पण्णरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १५ ॥
॥ संधि ॥ १५ ॥

७ MBP परदारु णिवारिउ. ८ B जिउ पचि°. ९ MBP °पुप्फयंत°.

6 b विआरयहं रत्नत्रयविचारतानाम्. 7 a अणुहरिअउ अलियंजणहो भ्रमरस्य कज्जलस्य च अनुकृतं, सदृशमित्यर्थः; b अलियं मिथ्या. 8 b खं चियउ आकाशं व्याप्तम्.

XVI

पणवेप्पिणु जिणवरकमकमलु ओयरेवि कइलासहो ॥
साकेयहु संमुहुं संचलिउ धरापिणाहु पियवासहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

आरनालं—रविविहिकण्णकुंडला रयणमेहला मउडपट्टधारा ।
चलिया मंडलेसरा खयरसुरणरा कंठवद्धहारा ॥ १ ॥

होइ गिरित्थलु णिविसें समथलु किं ण किं ण किर कद्दमियउं जलु ।
किं ण किं ण किर संचूरिउ घणु किं ण किं ण धूली जायउ तणु ।
किं ण किं ण देसंतरु लंघिउ किं ण किं ण दुग्गु वि आसंघिउ ।
किं ण किं ण पहरणु अवलोइउ किं ण किं ण पडिसेण्णु णिवाइउ ।
किं ण किं ण वरवाहणु वाहिउ किं ण किं ण परमंडलु साहिउ ।
कणयदंडमंडियपडिहारें आवंतें पहुखंधावारें ।
पुरणारिहिं आहरणु लइज्जइ मउ देवंगवत्थु परिहिज्जइ ।
कुंकुमेण छडउल्लउ दिज्जइ कप्पूरें रंगावलि किज्जइ ।
घिप्पइ कुसुमकरंबु ससंडयणु बज्झइ सुरतरुपल्लवतोरणु ।
घरि घरि गाइज्जइ जिणणंदणु दोव्वदहियसिद्धत्थयचंदणु ।
दप्पणु कलसु धरिज्जइ अण्णहिं उग्घोसिउ मंगलु सुरकण्णहिं ।
सलहिज्जंतु महंतु सुरिंदहिं सहुं जक्खिंदखगिंदणरिंदहिं ।
करिवरकंधरत्थु मणहारिहिं विज्जिज्जंतउ चामरधारिहिं ।

GMBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:–

प्रतिगृहमटति यथेष्टं बन्दिजनैः स्वैरसंगता वसति ।
भरतस्य वल्लभा सा कीर्तिस्तदपीह चित्रतरम् ॥

MBP read स्वैरसंगमा for स्वैरसगता; and वल्लभासो for वल्लभा सा. K does not give it.

1. १ MBP खयरणरसुरा. २ M अवसें; B णिवसें; P पिवसिं and gloss निमेषेण; T णिविसें. ३ B कद्दवियउं. ४ M संचूलिउ. ५ MBP आवंतें. ६ M देवंगु वत्थु. ७ P ससयडणु but gloss सषट्चरणः. ८ MBP धाइज्जइ. ९ MB दुव्व°; P दोव्व°. १० MP दप्पण. ११ M मणिहारिहिं. १२ MBP °धारहिं.

1. 2 पियवासहो निजगृहं प्रति. 5 a णिविसें अक्षिनिमीलनमात्रेण. 6 b तणु तृणम्. 13 a घिप्पइ क्षिपति; कुसुमकरंबु नानावर्णकुसुमानां समूहः; ससडयणु षट्चरणैर्भ्रमरैः सहितः.

घत्ता—महि सयल वि सग्गें णिज्झिणिवि कयदिव्विजयविलासहिं[१३] ॥
उज्झहि भरहाहिउ[१४] पइसरइ सट्ठिहिं वरिससहासहिं ॥ १ ॥

2

आरणालं—णउ पइसरइ पुरवरे रयणमयहरे जयसिरीवरंगं ॥
भंगुरभासुरारयं णिसियधारयं राइणो रहंगं ॥ १ ॥

थक्कउ चक्कु ण पुरि परिसक्कइ कुक्कइहि कव्वु व णउ चिम्मक्कइ ।
णं कोवाणलजालामंडलु णं पुरलच्छिइ परिहिउ कुंडलु ।
भरहपयावें कायरिजायउ भाणुबिंबु णं छज्जइ आयउ ।
इंदचंदपडिकूलणसीलउ धगधगंतु सयहुयवहलीलउ ।
एहु जि चक्कवट्टि अवलोयहु णयरें दीउ धरिउ णं लोयहु ।
मणिमऊहमालावेलाउलु रायदिवायरपुण्णयरुज्जलु ।
सुरहिगंधु सिरिसेविउ सभसलु णं णहसरि विहसिउ रत्तुप्पलु ।
वलयायारहु णिरु सच्छायहु अवसें देइ धरणि करु आयहु ।

घत्ता—तं चक्कु ण णयरिहि पइसरइ वेसहि जणियवियारउ ॥
हियउल्लउ कवडसयहं भरिउ णावइ धुत्तहं केरउ ॥ २ ॥

१३ MBP विलासिहिं. १४ MBP भरहेसरु.

2. १ MBP ° मयहरे. २ MB भासुरारयं. ३ MBP कायरु आयउ. ४ MBP धरिउ दीउ. ५ K °वेलाजलु. ६ MBP वियसिउ. ७ MBPKT करु. ८ M हियडुल्लउ.

---

19 पइसरइ प्रतिसरति.

2. 3 *b* चिम्मक्कइ चमत्कृतिं करोति. 5 *a* कायरिजायउ कातरीभूतम्; *b* आयउ आगतम्. 6 *a* °पडिकूलणसीलउ अभिभवं कर्तुं समर्थम्. 7 *b* दीउ दीपो दिव्यं वा. 8 *b* रायेत्यादि—रक्तोत्पलं राजमाने-र्दिवाकरस्य पुण्यैः प्रशस्तैः करैरुज्ज्वलं विकसितं भवति, चक्रं तु राजदिवाकरस्य चक्रवर्तिनः पुण्यान्येव करास्तै-रुज्ज्वलं भवति. 10 *a* वलयायारहु वृत्ताकारस्य चूडाकारस्य वा; *b* धरणि भूमिः की वा; करु दण्डो हस्तश्च; आयहु अस्य चक्रस्य. 11-12 जणियेत्यादि—यथा धूर्तस्य हृदयं वेश्यायां न प्रविशति तथा चक्रं नगर्यां न प्रविशति.

3

आरणालं—फणिणरसुरपसंसियं जसविहूसियं गुणगणोहदित्तं ।
णं दुविणीयमाणसे पिसुणमाणुसे सुयणसच्छवित्तं[3] ॥ १ ॥

अक्कमियक्कउ बाहिरि थक्कउ णावइ दइवें खीलिवि मुक्कउ ।
णउ पइसइ पुरि चक्कु णिरुत्तउ सुइघरि णं अण्णायविढत्तउ ।
परपुरिसाणुराइ सइचित्तु व परदासत्तणम्मि सवसित्तु व ।
मायाणेहणिबंधणि मित्तु व पत्तदाणि पाविट्ठहु वित्तु व ।
चुणयविलीणइ दिण्णउ भत्तु व रइरसंतुरियइ णवउ कलत्तु व ।
सुद्धसिद्धमंडलि जमकरणु व पत्थणिसेविरि रुयवित्थरणु व ।
णिव्वलणीसणिहेलणि सरणु व दुरियमलिणमणि पंडियमरणु व ।
उवसमिल्लि सामरिसायरणु व णिव्वियारि तणुभूसायरणु व ।
णिसिसमयागमि रविउग्गमणु व वुड्ढत्तणि तरुणीयणरमणु व ।
पुण्णहीणि जिणगुणसंभरणु व णिद्धणि णिग्गुणि विहलुद्धरणु व ।

घत्ता—थिउ चक्कु ण पुरवरि पइसरइ णावइ केण वि धरियउ ॥
ससिबिंबु व णहि तारायणहिं सुरवरेहिं परियरियउ ॥ २ ॥

4

आरणालं—ता भणियं णिराइणा रूढराइणा चंडवाउवेयं ।
किं थियमिह रहंगयं णिच्चलंगयं तरुणतरणितेयं ॥ १ ॥

तं णिसुणेप्पिणु भणइ पुरोहिउ जेणेयहु गइपसरु णिरोहिउ ।
अक्खमि तं णिसुणहि परमेसर देवदेव दुज्जय भरहेसर ।

3. १ M °माणुसे. २ B पिसुणु माणुसे. ३ M °चित्तं. ४ B °मियंकओ. ५ MP णिरुत्तउ. ६ M सुइघणि. ७ M णिच्चल°; BP णिव्वल°. ८ B reads this foot after 11*a*. ९ K भूसाकरणु. १० MBP तारामयहिं सुरणरेहिं.

3. 2 दुविणीय अगृहीतगुणशिक्षम्; सुयणसत्थवित्ते महामुनिसार्थस्य वृत्तं चरितम्, अथवा सज्जनसार्थः सत्पात्रसमूहस्तस्य वित्तं दानार्थम्. 3 *a* अक्कमियक्कउ आक्रमितार्कम्, अभिभूतादित्यम्. 4 *b* सुइघरि पवित्रगृहे. 5 *b* सवसित्तु स्ववशित्वं स्वातन्त्र्यम्. 7 *a* चुणयविलीणइ अरोचकपीडिते. 8 *b* रुयवित्थरणु रोगविस्तारः. 9 *a* °णीस° दरिद्रः.

4. 1 णिराइणा नृराजेन: रूढराइणा रूढप्रसिद्धं यथा भवत्येवं राजते.

भुयजुयबलपडिबलविद्दवणहं पयभरथिरमहियलकंपवणहं ।
तेओहामियचंददिणेसहं अणणदिण्णमहिलच्छिविलासहं ।
किंत्तिसित्तिजणमेत्तिसहायहं को पडिमल्लु एत्थु तुह भायहं ।
सेव करंति ण णहभाईवइं णउ णवंति तुह पयराईवइं ।
देंति ण करभरु केसरिकंधर पर मुहियइ भुंजंति वसुंधर ।
अज्ज वि ते सिज्झंति ण जेण जि पइसइ पट्टणि चक्कु ण तेण जि ।

घत्ता—रइवरु परमेसरु उच्छुधणु धरणिहरणरणपरियरु ॥
कासवतणुरुहु णवणलिणमुहु भुवणुद्धरणधुरंधरु ॥ ४ ॥

5

आरणालं—विलसियकुसुममग्गणो गरुयगुणगणो तरुणिहिययथेणो ।
असरिसविसमसाहसो वसि हयालसो णिहयवेरिसेणो ॥ १ ॥

अण्णु वि जसवइतणयहं जेट्ठउ पुत्तु सुणंदहि तुज्झु कणिट्ठउ ।
सायरु जिह तिह मयरधयालउ चावहं चारुवयणु चरियालउ ।
पंचसयाइं सवायइं तुंगउ भण्णइ संपहिं सो ज्जि अणंगउ ।
बालु बंभसुंदरिहि सहोयरु पिंडपयपयरुहरयरउ महुयरु ।
हरियदेहु णं मरगयगिरिवरु अरिकरिदसणमुसलपसरियकरु ।
विमलकुलालवालसुरतरुवरु चरमदेहु सासयसुहसिरिहरु ।
गुरुचरणारविंदरइरसवसु मंदरकंदरंतगाइयजसु ।
दुत्थियदीणाणाहहं दिहियरु णरहरिसरणागयपविपंजरु ।
लीलादलियमहायलमयगलु कढिणबाहु बाहुबलि महाबलु ।

4. १ MBP पयथिरभर°.
5. १ MBP °वयण. २ MBP संपइ. ३ M बाल. ४ B पिउपयरुह°. ५ MBP हरियवण्णु. ६ K चरिम°. ७ BPK °महियलु.

8 *a* णहभाईवइं नखप्रभादीप्तानि, *b* पयराईवइं पदपद्मानि. 9 *a* करभरु दण्डस्य भारः प्राचुर्यम्; *b* मुहियइ मुधा वृथैव. 11 °रणपरियरु संग्रामसामग्रीकः.

5. 2 असरिसविसमसाहसो असदृशान्यद्वितीयानि विषमाणि मनसोऽप्यगोचराणि साहसानि अद्भुतकर्माणि यस्य; वसि जितेन्द्रियः. 4 *b* चरियालउ परनारीसहोदरः, चरितस्य वा काव्यविशेषस्याश्रयः. 5 *b* संपहिं संप्रति. 11 *a* °महायल° महापर्वतः.

घत्ता—सो अच्छइ उवसमु धरिवि मणे जइ राणि कई वि वियंभइ ॥
तो सहुं चक्कें सहुं साहणेण पइं मि णरिंद णिसुंभइ ॥ ५ ॥

6

आरणालं—जो जिप्पइ ण हारिणा कुलिसधारिणा पयडसुहडरोले ।
सो णिम्महइ माणवे जिणइ दाणवे देव कलहकाले ॥ १ ॥

हित्तभिण्णमहिवइसामंतें दसदिसिवहपेसियसामंतें ।
रूवरिद्धिरंजियरामोहें अइपरिवड्ढियसुधरामोहें ।
णियभुयसत्तिपराजियभरहें तं णिसुणेवि पयंपिउ भरहें ।
जमहु जमत्तणु को दरिसावइ मइं मुएवि किर कवणु रसावइ ।
एम को वि किं जगि संतावइ को किर सिहिसिहाहि[1] सं तावइ ।
कहु महु तणउं पहुत्तु ण भावइ के[2] पडिखलिउ जंतु णहि[3] भावइ ।
केर महारी को णावज्जइ एह पुहइ को[4] किर णावज्जइ ।
आसमुद्दमेइणिकरवालहु को णासंकइ महु करवालहु ।
को किर भिच्चु महारा मारइ को विणिवारइ मज्झु वि मारइ ।
किं किरे[5] वण्णिएण कंदप्पें अणवंतहु णिवडइ कं दप्पें ।

घत्ता—इय जंपिवि राएं णिक्करुणु अविणयविहियमणोज्जहं ॥
सयलहं मि सयलसंपय[6]धरहं लेहु दिण्णु दाइज्जहं ॥ ६ ॥

८ MBP कह व.

6. १ MB °सेहाहि. २ MBP किं. ३ P णहु. ४ MBP किर को. ५ M करि. ६ MBP °संपयहरहं.

6. 1 हारिणा उत्तमेण. 3 *a* हित्तेत्यादि—हित्तौ गृहीतौ भिन्नौ उद्दालितौ महीपतीनां सामंतौ लक्ष्मीश्च मन्त्रश्च येन तादृशेन भरतेन. 4 *b* °सुधरामोहें शोभनायाः पृथिव्या मोहेन. 5 *a* भरहें भरतक्षेत्रेण. 6 *b* रसावइ पृथ्वीपतिः. 7 *b* सिहिसिहाहि संतावइ अग्निज्वालाभिः स्वमात्मानं तापयति; 8 *b* भावइ आदित्यः. 9 *a* णावज्जइ न गृह्णाति; *b* णावज्जइ न अर्जयति. 10 *a* °मेइणिकरवालहो मेदिनीकरग्राहकस्य. 12 *b* णिवडइ कं दप्पें कं मस्तकं दर्पेण सह निपतति. 13 अविणयविहियमणोज्जहं अविनयविधिना विनयाकरणेण अमनोज्ञानां द्वेष्याणाम्.

7

आरणालं—ता विगया बहुयरा जणमणोहरा णिवकुमारवासं ।
दुमदललुलियतोरणं रसियवारणं छिण्णभूमिदेसं ॥ १ ॥

तेहिं भणिय ते विणउ करेप्पिणु सामिसालतणुरुह पणवेप्पिणु ।
सुरणरविसहरभयइं जणेरी करहु केर णरणाहहु केरी ।
पणवहु किं बहुवेण पलावें पुहइ ण लब्भइ मिच्छागावें ।
तं णिसुणेवि कुमारगणु घोसइ तो पणवहुं जइ वाहि ण दीसइ ।
तो पणवहु जइ सुसुइ कलेवरु तो पणवहु जइ जीविउ सुंदरु ।
तो पणवहु जइ जरइ ण खिज्जइ तो पणवहु जइ पुट्ठि ण भज्जइ ।
तो पणवहु जइ बलु णोहट्टइ तो पणवहु जइ सुइ ण विहट्टइ ।
तो पणवहु जइ मयणु ण तुट्टइ तो पणवहु जइ कालु ण खुट्टइ ।
कंठि कयंतवासु ण चुहुट्टइ तो पणवहु जइ रिद्धि ण तुट्टइ ।

घत्ता—जइ जम्मजरामरणइं हरइ चउगइदुक्खु णिवारइ ॥
तो पणवहु तासु णरेसहो जइ संसारहु तारइ ॥ ७ ॥

8

आरणालं—पुणरवि तेहिं गहिरयं सवणमहुरयं परिसं पउत्तं ।
आणापसरधारणे धरणिकारणे पणविउं ण जुत्तं ॥ १ ॥

पिंडिखंडु महिखंडु महेप्पिणु किह पणविज्जइ माणु मुएप्पिणु ।
वक्कलणिवसणु कंदरमंदिरु वणहलभोयणु वर तं सुंदरु ।

7. १ MBP वओहरा; T वउहरा दूताः. २ BPK °लुलिय°. ३ MBP बहुएण. ४ MBP तइ and throughout elsewhere in this Kadavaka. ५ MBP सुथिरु but T सुसुइ. ६ MBP फिट्टइ. ७ MBP आउ. ८ MBP कयंतपासु. ९ MBP चहुट्टइ. १० MPB °दुक्खइं वारइ. ११ MP ता; B तहो. १२ MBPK णरेसरहो.

8. १ B omits धरणिकारणे; P महिहि कारणे. २ MBP वरि.

7. 1 बहुयरा बहुतरा वचोधरा दूताः. 7 *a* सुसुइ सुष्ठु शुचि. 9 *b* विहट्टइ विनश्यति. 11 *a* चुहुट्टइ लगति; *b* कालु आयुः.

8. 1 गहिरयं गभीरम्. 3 *a* पिंडिखंडु खलखण्डम्.; महेप्पिणु अभिलष्य.

वर[3] दालिद्दु[4] सरीरहु दंडणु णउ[5] पुरिसहु अहिमाणविहंडणु ।
परपयरयधूसर किंकरसरि[6] असुहाविणि[7] णं पाउससिरिहरि[8] ।
णिवपडिहारदंडसंघट्टणु को विसहइ करेण उरलोट्टणु ।
को जोयइ मुहुं भूभंगालउ[9] किं हरिसिउ किं रोसें कालउ ।
पहु आसण्णु लहइ धिट्ठत्तणु पविरलदंसणु णिण्णेहत्तणु ।
मोणें[10] जडु भडु खंतिइ कायरु अज्जवु[11] पसु पंडियउ पलाविरु ।
अमुणियहिययचारुगरुयत्तें कलहसीलु भण्णइ सुहडत्तें ।
महुरपयंपिरु चाडुयगारउ केम वि गुणि ण होइ सेवारउ ।

घत्ता—अइतिक्खहं धम्मगुणुज्झियहं वम्म[12]वियारणवसणहं ॥
को बाणहं संमुहुं थाइ रणे को महिवइघरि पिसुणहं ॥ ८ ॥

9

आरणालं—अहवा तेहिं किं हयं जं समागयं दुलहं णरत्तं ।
तं जो विसयविसर[1]रसे घिवइ परवसे[2] तस्स किं बुहत्तं ॥ १ ॥

कंचणकंडें जंबुउ विंधइ मोत्तियदामें मंकडु[3] बंधइ ।
खीलयकारणि देउलु मोडइ सुत्तणिमित्तु दिसु[4] माणि फोडइ ।
कप्पूरायरुरुक्खु[5] णिसुंभइ कोद्दवछेत्तहु वइ पारंभइ ।
तिलखलु पयइ डहिवि चंदणतरु विसु गेण्हइ सप्पहु ढोयवि[6] करु ।
पीयइ कसणइं लोहियसुक्कइं तक्कें विक्कइ सो माणिक्कइं ।

३ MBP वरि. ४ M दारिद्दु ५ MBP ण हि. ६ MBP °सिरि and a long note in M. यथा वर्षाकालनदी परः अन्यहीनस्थाना झिल्लरादिपयैः (?) मलिनै रजोभिः धूसरिता मलिना प्रवहति हिरि अतिलज्जाकारिणी, तथा किंकरश्री. शोभा परपदरजोभिः धूसरिता. ७ MBP असुहावणि. ८ MBP °हिरि; K °हिरि but corrects it to °हरि. ९ P भूसंगा°. १० MBP मउणें. ११ MBP अज्जउ. १२ KBP मम्म°.

9. १ P °रसो. २ P परवसो. ३ MBP मक्कडु. ४ MBP दित्तमणि. ५ MBP कप्पूरायररुक्ख. ६ MBP अप्पइ परु.

6 *a-b* परेत्यादि—यथा वर्षाश्रीधारिणी नदी सरजस्का सकर्दमा असुखावहा भवति, एवं किंकरसरि किंकरा एव नदी परस्य स्वामिनः पदरजसा धूसरा मलिना भवति. 13 °वसणहं °शीलानाम्. 14 पिसुणहं बाणानां खलानां च.

9. 1 तेहिं बाणैः पिशुनैश्च. 3 *a* जंबुउ शृगाल.. 5 *a* कप्पूरायररुक्खु कर्पूरवृक्षं अगुरुवृक्षं च; *b* वइ वृतिः.

जो मणुयत्तणु भोएं णासइ तेण समाणु हीणु को सीसइ ।
विसु समत्तणि णेय णियत्तइ पुसु कलत्तु वित्तु संचितइ ।
मरइ रसणफंसणरसदड्ढउ मे मे मे करंतु जिह मेंढउ ।
खज्जइ पलयकालसद्दूलें डज्झइ दुक्खहुयासणजालें ।
मंजरु कुंजरु महिसउ मंडलु होइ जीउ मंकडु माहुंडलु ।

घत्ता—केलासहु जाइवि तवयरणु तापं भासिउ किज्जइ ॥
जेणेह सुदूसहतावयरि संसारिणि तिस छिज्जइ ॥ ९ ॥

10

आरणालं—इय भणियं कुमारया मारमारया समरमा पसण्णा ।
दरिवियरियवराहयं सवरराहयं काणणं पवण्णा ॥ १ ॥

दिट्ठु तेहिं केलासि जिणेसरु संथुउ रिसहणाहु परमेसरु ।
जय रिसिणाह वसह वसहद्धय जय तियसिंदमउलिलालियपय ।
जय जाणियपरमक्खरकारण जय जिण मोहमहातरुवारण ।
जय सुहवास दुरासावारण जय ससहरसियवारिणिवारण ।
पुणु वि पंच परमेट्ठि णवेप्पिणु पंचमुट्ठि सिरि लोउ करेप्पिणु ।
पंचमहारिसिवयइं लएप्पिणु पंचासवदाराइं पिहेप्पिणु ।
पंचिंदियपमाउ वज्जेप्पिणु पंच वि सर मयणहु तज्जेप्पिणु ।
पंचायारसारु पावेप्पिणु पंचपंचविहु धम्मु धरेप्पिणु ।

७ M मिंढउ; BP मेढउ. ८ MBP मंकडु.

10. १ MBP भणिओ. २ MBP समरमापवण्णा and gloss in MP उपशमलक्ष्मीं प्राप्ताः. ३ MP सवररायइं, but T सवरराहयं शबराणां भासो भा यत्र. ४ MP केलास°. ५ B लहेप्पिणु. ६ B °दाराइं रुंभेप्पिणु.

9 *a* णेय णियत्तइ नैव नियन्त्रयति. 12 *b* माहुंडलु सर्पविशेषः. 14 संसारिणि तिस संसारतृष्णा विषयाकांक्षा.

10. 1 समरमा उपशमलक्ष्मीकाः, पसण्णा प्रसन्नाः. 2 °वियरिय° विचरिताः; सवरराहयं शबराणां राहा शोभा यत्र. 5 *a* परमक्खर° मोक्षः. 6 *a* सुहवास शुभस्य सुखस्य वा गृहरूप. 6 *b* ससहरेत्यादि—शशधरश्चन्द्रः तत्तुल्यं सितं शुक्लं वारिणिवारणं छत्रं यस्य. 8 *b* पंचासवदाराइं मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगाः. 10 *b* पंचपंचविहु दशविधः.

घत्ता—दढगुणि मणमग्गणु संणिहिउ मोक्खहु संमुहुं पेसिउँ ॥
संतहिं अरहंतहु तणुरुहहिं अप्पउ चरिएं भूसिउँ ॥ १० ॥

11

आरणालं—ता पत्तो चरो पुरं णिवइणो घरं भणइ सुणसु राया ।
इसिणो तुह सहोयरा सीलसायरा अज्जु देव जाया ॥ १ ॥

एक्कु जि पर बाहुबलि सुदुम्मइ णउ तउ करइ ण तुम्हहं पणवइ ।
तं णिसुणेवि पुरोहें उत्तउं भडसामंतमंतिसंजुत्तउं ।
कोसु देसु परियणु पयभत्तउ मणहरु अंतेउरु अणुरत्तउ ।
कुलु छलु बलु सामत्थु सुइत्तणु णिहिलजणाणुराउ जसकित्तणु ।
विणउ वियारहारि बुहसंगमु पोरिसु बुद्धि रिद्धि दइवुज्जमु ।
कुंजर णावइ महिहर जंगमु अत्थि तासु रह करह तुरंगमु ।
अत्थसत्थु जावज्ज वि ण मरइ जाम सहायसहासइं ण करइ ।
जाम ण लग्गइ खलसंसग्गे खत्तधम्मणिम्महणुम्मग्गे ।

घत्ता—जावज्ज वि चाउ ण करि धरइ तोणाजुयलु ण बंधइ ॥
णिम्मज्जिए भालसेयलवहि जाम ण गुणि सरु संधइ ॥ ११ ॥

12

आरणालं—ण हु मारइ महाहवे जा महाहवे दाइओ समत्थो ।
जा ण हरइ णिराउलं तुह महीयलं तिक्खखग्गहत्थो ॥ १ ॥
ताम तासु दूयउ पेसिज्जइ जइ पइं पणवइ तो पालिज्जइ ।
णं तो पुणु बाहुबलि धरिज्जइ बंधिवि कारागारि णिहिज्जइ ।
एम मंतु जं तेण पउंजिउ ता राएं तहु दूउ विसज्जिउ ।

७ MBP पेसियउ. ८ MBP भूसियउ.

11. १ MBP हरं. २ MBP स दुम्मइ. ३ MBP वुत्तउ. ४ MBP दोसु. ५ MB परयणु. ६ MBP बुह°. ७ M रिद्धि बुद्धिदइउज्जमु. ८ MBP णिम्मज्जिय°.

12. १ MBP दूवउ.

11. 6 *b* जसकित्तणु यशोवर्णनम्. 7 *a* बुहसंगमु बुधसंगमः. 11 चाउ चापम्.

12. 1 महाहवे महासंग्रामे, महाहवे महाधवान्, महाभटान्.

णियवइरत्तु सत्तुविद्धंसणु सुहडु सुलक्खणु सोमु सुदंसणु ।
देसजाइकुलसुद्धु पसिद्धउ पंडिउ पडु पहुलच्छिसमिद्धउ ।
विविहविसयभासाभासिल्लउ दिट्ठसरु महिमाइ महल्लउ ।
तेयवंतु रक्खियपहुतेयउ महुरवाणि आदेउ अजेयउ ।
गेउ दूयउ परिचोइयपत्तउ पोयणपुरु बहुदिवसहिं पत्तउ ।
जहिं वणतरुसाहहिं महु वियलइ चलकंकेल्लीपल्लवु विलुलइ ।
अइदीहरपवाससममहियहिं पइसंतहिं वि समंतहिं पहियहिं ।
रसविसेसधारामहमहियइं जहिं खज्जंति फलाइं सुरहियइं ।
पुप्फहिं गुप्फइ माल विहिंडिर चउदिसु रुणुरुणंति इंदिंदिर ।

घत्ता—सरु मेल्लिवि करेण णियड्डियउ रत्तु पवट्टलु रसियउ ।
बिंबीफलु अहरु व वणसिरिहे जहिं कणइल्लें डसियउ ॥ १२ ॥

13

आरणालं—वरकेदारदारए सालिसारए कसणधवलपिच्छो ।
अणुझणझणियघणकणं कणिसमणुदिणं जहिं चुणंति रिंछा ॥ १ ॥

णिद्धणत्तु जहिं चंदें दाविउ माणुसि कत्थइ णेय विहाविउ ।
जहिं विहारु पासाउ पियारउ णउ णारियणकंठु रइगारउ ।
उववासु वि चडएण रइज्जइ णउ रोएं दुक्कालिं किज्जइ ।
जहिं केण वि कीरइ ण सुरागमु होइ गुणीण गुणेहिं सुरागमु ।

२ M पत्तु विद्धंसणु. ३ MBP आदेय. ४ MBP गयउ दूउ. ५ MBP °दियहहिं. ६ MBP पल्लउ. ७ MBP समत्तहिं. ८ MP add after this. ण कामिणिवयणइं अइसरसइं, पुणु पिज्जहिं जलाइं सरिसरसहिं. ९ MBP गुंफइ. १० MBP विहडिर. ११ MBP पवट्टलु. १२ MBP बिंबीहलु.

13. १ MBP वरु; T केयार°. २ MBP °पिंछा. ३ MBP चरंति. ४ MBP णारियणदेहु.

6 *a* णियवइरत्तु निजस्वाम्यनुरक्तः. 9 *b* आदेउ आदरवान्. 10 *a* परिचोइयपत्तउ वाहितवाहनः. 12 *b* समंतहिं समन्तात्. 13 *b* सुरहियइं देवहितानि सुगन्धानि वा. 14 *a* विहिंडिर पर्यटनशीलाः; *b* इंदिंदिर भ्रमराः. 15 सरु मेल्लिवि शब्दं कृत्वा. 16 कणइल्लें शुकेन.

13. 1 केदारदारए वप्रमार्गे. 2 अणु स्तोकम्. 3 *a-b* णिद्धणत्तु स्निग्धं ज्योत्स्नायुक्तं नक्तं रात्रिः, न पुनर्मनुष्ये निर्धनत्वम्. 4 *a-b* विहारु पासाउ विहारशब्दवाच्यः प्रासादः, अथवा वीनां पक्षिणां धारकः प्रासादः, न तु नारीजनो विगतहारः. 5 *a* उववासु गृहमध्ये वासः आहारत्यागश्च; चडएण चटकेन पक्षिणा. 6 *a* सुरागमु मद्यागमः मद्यपानम्, *b* सुरागमु देवागमनम्.

दिट्ठु सिहाछेउ वि रिसिदिक्खहि णउ माणिक्कमऊहपरिक्खहि ।
असिलाहवरूउं जहिं लेप्पइ णउ विसिट्ठमारणसंकप्पइ ।
वहइ सया णवत्तु वणु जोवणु णउ णिरुवद्दउ णिवसंतउ जणु ।
जेत्थु कुसादूसणु णीसंगइ णासवारि णउ रायवयं गइ ।
थंड्ढत्तणु णिवडणु थणउल्लइ धरणु णिवीडणु जहिं अहरुल्लइ ।

घत्ता—पुक्खरिणिहिं कीलागिरिवरहिं जलखाइयपायारहिं ॥
जं सोहइ मोत्तियतोरणहिं मंडिउ चउहुं मि दारहिं ॥ १३ ॥

14

आरणालं—तहिं सुरगुरुसुरूयओ रायदूयओ पट्टणे पइट्ठो ।
रायालेयदुवारए हिययहारए णायरेहिं दिट्ठो ॥ १ ॥

कणयदंडेयरु भल्लउ भाविउ तहिं पडिहारु तेण बोल्लाविउ ।
बुद्धिवंतु अचब्भुयभूयउ भणु अच्छइ दुवारि पहुदूयउ ।
तं णिसुणिवि गउ लट्ठिविहत्थउ कहइ कुमारहु पणमियमत्थउ ।
अच्छइ दारि णरिंदवओहरु अत्थि णत्थि भणु सामिय अवसरु ।
ता कंदप्पें भणिउं म वारहि भायरकिंकरु लहु पइसारहि ।
ता कट्ठियहरेण जसणिम्मलु पइसारिउ पसण्णमुहमंडलु ।
बाहुबलीसु देउ कयमंडलु दूएं दिट्ठउ णं आहंडलु ।
संथुउ मउलियपंजलिपोमें को वसि ण कियउ तुह परिणामें ।

घत्ता—तुह धणुगुणटंकारएण केण ण माणु णिहित्तउ ॥
पइं वम्मह पंचहिं मग्गणहिं सयलु वि तिहुयणु जित्तउ ॥ १४ ॥

५ MBP °हवरूवउं, K °हवरूवउं but corrects it to °रूउं. ६ MBPT धणु. ७ MBP जोव्वणु. ८ MT कुसादूसण. ९ P णीसग्गइ. १० MBP थड्ढत्तणु.

14. MBPT सरूयओ. २ MB रायालए. ३ MBP °दंडकरु. ४ MBP पणमिय°. ५ MBP बारि. ६ M °टंकारवेण. ७ MBP केणहिमाणु ण चत्तउ; T णिहित्तउ त्यक्तः.

8 *a* असिलाहवरूउं आशिलाभव रूपम्. 9 *a* वहइ इत्यादि–वहति धरति णवत्तु अभिनवत्वं वनं यौवनं च, न तु जनो नवत्व चिरतनव्यवस्थात्यागं धरति. 10 कुसादूसणु कुः पृथ्वी, सा लक्ष्मीस्तयोर्दूषणम्; णीसंगइ मुनौ; *b* णउ रायवयं गइ राज्यपद प्राप्ते न, णासवारि अश्ववारेऽपि न.

14. 1 °सुरूयओ सदृशः. 4 *a* अचब्भुयभूयउ आश्चर्यभूतः. 8 *a* कट्ठियहरेण द्वारपालेन. 9 *a* कयमंडलु रचितसभः.

15

आरणालं—पियवयणं पि भासियं सुहसुहासियं भुत्तकामभोया ।
तुह जयवडहसद्देणं जगविमद्देणं णउ सुणंति लोया ॥ १ ॥

जय कुसुमाउह रइरमणीवर अलिमालाजीयासंधियसर ।
पइं पेच्छिवि घोलइ उप्परियणु वियलइ णारिहि णीवीबंधणु ।
चिहुरभारु दढबंधु वि पसिढिलु हवइ रयंबु सवइ सोणीयलु ।
चलइ वलइ लोयणजुयलुल्लउ दीसइ अंगु वूढसेउल्लउ ।
रंभा णवरंभा इव डोल्लइ रइवायं आहल्ल वि हल्लइ ।
देवें तिलोत्तिम तिलु तिलु खिज्जइ विरहें उव्वसि उव्वेइज्जइ ।
मेणइ मीणि व थोवइ पाणिइ पिय संतप्पइ रवियरमाणिइ ।
पम थुणंतहु दिण्णउं आसणु णिवसणु भूसणु किउ संभासणु ।
हिमइरिजलहिमज्झि महिरायहु कुसलु खेउं भरहहु महु भायहु ।
कुसलु खेउं कुरुवंसणरेसहु कुसलु खेमु जलहरणिग्घोसहु ।
कुसलु खेमु णमिविणमिकुमारहु कुसलु खेउं पत्थिवपरिवारहु ।
दूवें वुत्तउ कुसलु णरिंदहु कुसलु णाह णिहिलहु णियविंदहु ।
एक्कु जि अकुसलु सुहिउक्कंठिउ जं तुहुं देवें दूरि परिसंठिउ ।

घत्ता—दूरत्थहं बंधुहुं णेहु जइ णासइ पिसुणकयंतरु ॥
रवि मेल्लइ किरणइं पंकयहं ताइं णिवारइ जलहरु ॥ १५ ॥

16

आरणालं—भो भो दणुयणिम्महा सुणसु वम्महा कुणसु चारु चित्तं ।
सह गुरुएण भाइणा निजगताइणा रूसिउं ण जुत्तं ॥ १ ॥

15. १ MB जयवडसद्देण. २ B सिढिलु. ३ P देवि. ४ MBP उव्वस. ५ MBP मीणइ. ६ MBP दूरि देव
16. १ M °णिम्मुहा. २ MBP गरुएण.

15. 5 *b* रयंबु शुक्रम्. 6 *b* वूढसेउल्लउ उत्पन्नस्वेदार्द्रम्. 9 *b* पिय प्रभो; रवियरमाणिइ सूर्यकरसंतापेन. 16 पिसुणकयंतरु पिशुनकृतचित्तभेदः.
16. 2 ° ताइणा रक्षकेन.

को ससहरु को किर करमेलउ को समुद्दु को जलकल्लोलउ ।
को तुहुं भरहु कवणु किर बुज्झइ पहुउ बुहहं वियप्पु ण रुज्झइ ।
कप्परुक्खु किं कुसुमहिं अंचमि रयणायरु करसलिलें सिंचमि ।
सूरहु अग्गइ दीवउ बोहमि हउं णिहीणु किं पइं संबोहमि ।
तायहु पच्छइ भरहु जि राणउ तुहुं जुयराउ जगेक्कपहाणउ ।
माणें मरट्टु विसट्टु मुएप्पिणु जीवहु एक्कमेक्क अणुणेप्पिणु ।
तरुणिकंठकंदइयपवट्टहिं अरिवरदंतिदंतपरिहट्टहिं ।
आयड्डियपईहकोदंडहिं आलिंगियउ जेहिं भुयदंडहिं ।
तेहिं ण पुणरवि रणि जुज्झिज्जइ गुरुरयणि अविणएण लज्जिज्जइ ।

घत्ता—कुलसामि महाबलु सुयणु गुणि णउ णवंति जे राणउ ॥
घरि ताहं होइ दालिद्दडउ अह जमपुरिहि पयाणउं ॥ १६ ॥

17

आरणालं—बाहुबलिपहु अक्खइ मुयभूयउ ...उवार ...
तं णिसुणिवि ...
...—जो वरचरमकुलयरो पढमाणवरो पंकयच्छियाए ।
जिणवंसो पयासिओ जेण भूसिओ रायलच्छियाए ॥ १ ॥

जासु चक्कु रिउचक्कु णिसुंभइ जासु दंडु परदंडु णिरुंभइ ।
जासु पुरोहु पुराइउ पेच्छइ तुरउ तुरिउ हियएं सहुं गच्छइ ।
कायणि दिणमणि ससि वि दुगुंछइ थवइ थवइ तिहुयणु जइ इच्छइ ।
छायइ छत्तु होंतु विवरेरउ असि असु कड्ढइ सत्तुहुं केरउ ।
चम्मु चमू धरंतु अइभासइ सेणावइ सेणावइ णासइ ।
मागहु वरतणु जेण पहासु वि णिज्जिउ सुरु वेयड्ढणिवासु वि ।
जेण तिमीसकवाडु विहाडिउ सिंधुदेविअहिमाणु पलोट्टिउ ।

३ MB हउं मि हीणु. ४ MP जगेकु पहाणउ. ५ MBPK माणु मरट्टु विसट्टु. ६ P परिवट्टहिं and gloss परिघृष्टैः. ७ MBP °पयड°. ८ MBP गुरुयण°.

17. १ MBP अइहासइ.

8 *a* मरट्ट दर्पः; विसट्टु चित्तभेदः. 8 *b* अणुणेप्पिणु अनुकूलं कृत्वा. 13 पयाणउं प्रयाणं गमनम्.

17. 3 *b* णिरुंभइ प्रतिबध्नाति. 4 *a* पुराइउ पश्चाद्भावि वस्तु. 5 *b* थवइ रचयति. 6 *a* छायइ आच्छादयति; *b* असु प्राणाः. 7 *a* अइभासइ अतिशयेन शोभते; *b* सेणावइ सेनाया आपदः.

दिण्ण केर हिमवंतकुमारहु पुणु आइउ वसहेहरिसुतीरहु ।
तहिं अप्पणउं णाउं संणिहियउ छाहिछलेण व ससिणा गहियउ ।
तं तहिं दीसइ ण उण कलंकउ णिवणामंकिउ भमइ ससंकउ ।
विसहरउलइं सविसहरवरिसइं जित्तइं मेच्छउलइं सामरिसइं ।
णं पालेययसेलकिरीडहु पुणु भउ जणियउं गंगाकूडहु ।

घत्ता—ढुकी मंदाइणि कलसकर लोएं दीसइ केही ॥
थिय ण्हाणकरणमणणिवणियडि मज्जणवालिणि जेही ॥ १७ ॥

18

आरणालं—जस्सायासगामिणो खयरसामिणो विहियहियसल्ला ।
णमिविणमीसणामया णिरह णिम्मया जायया वसिल्ला ॥ १ ॥

पुणु वेयड्ढहु कुलिसें ताडिउ पुव्वकवाडु जेण उग्घाडिउ ।
णट्टमालि साहिउ मालायरु पयजुइ पाडिउ णं पायडणरु ।
असमु वइरु किं तेण समाणउं जं माणुसु रित्तउ उत्ताणउं ।
पिंछकमंडलुमंडियहत्थहु रोसु जणइ तं मुणिवरसत्थहु ।
चक्कवट्टि गुणमणिरयणायरु आउ जाइं अवलोयहि भायरु ।
मा पज्जलउ तासु कोवाणलु मा णिड्डहउ तुहारउ भुयबलु ।
हा मा दुरयरएहिं विहिज्जउ पोयणपुरपायारु दलिज्जउ ।
मा उच्छलउ छइयदिसमेरउ हरिखुरखयखोणीधूलीरउ ।
मा धावंतु महंत महारह मा पिसुणहं पूरंतु मणोरह ।

२ MPB वसहहरिउ तीरहु. ३ MBP °णामंकउ. ४ MBP मिच्छाउलइं. ५ M records a p राएं for लोएं.

18. १ MB विहय°. २ M पुव्विकवाडु. ३ MP णं माणसु; B माणुसु. ४ MBP °कमंडल°. ५ MBP णिड्लउ. ६ B वहिज्जउ. ७ BP हयखुर°.

10 *a* केर आज्ञा. 11 *b* छाहिछलेण छायाव्याजेन. 13 *a* सविसहरवरिसइं विसहरा मेघास्तेषां वर्षणेन सहितानि. 14 *a* पालेययसेल° हिमपर्वतो हिमवान्. 16 मज्जणवालिणि स्नानपालिका दासी.

18. 2 णिरह निष्पापाः; णिम्मया निर्मदाः. 4 *b* पायडणरु सामान्यमनुष्यसदृशः. 9 *a* दुरयरएहिं हस्तिनां दन्तैः; विहिज्जउ विभज्यताम्. 10 *a* छइयदिसमेरउ आच्छादितदिङ्मर्यादम्.

काउ कंदलावलिहि म विरसउ पलयकालु सोणिउं मा करिसउ।
देहि कप्पु णिद्दप्पुं हवेप्पिणु पेक्खु भरहु भावें पणवेप्पिणु।
तं णिसुणेप्पिणु बाहुबलीसें पडिजंपिउं भूभंगविहीसें।

घत्ता—कंदप्पु अदप्पु ण होमि हउं दूयवकरउ णिवारिउ॥
संकप्पें सो महु केरएण पहु डज्झिहइ णिरारिउ॥ १८॥

19

आरणालं—जं दिण्णं महेसिणा दुरियणासिणा णयरदेसमेत्तं।
तं मेह लिहियसासणं कुलविहूसणं हरइ को पहुत्तं॥ १॥

केसरिकेसरु वरसइथणयलु सुहडहु सरणु मज्झु धरणीयलु।
जो हत्थेण छिवइ सो केहउ किं कयंतु कालाणलु जेहउ।
हउं सो पणवमि को सो भण्णइ महिखंडेण कवणु परमुण्णइ।
किं जम्मणि देवहिं अहिसिंचिउ किं मंदरगिरिसिहरि समच्चिउ।
किं तहु अग्गइ सुरवइ णच्चिउ सिरिसइरिणियइ किं रोमंचिउ।
चक्कु दंडु तं तासु जि सारउ महु पुणु णं कुंभारहु केरउ।
करितुरयरहवरडिंभयरहं णर णिहणमि रणि जे वि महारह।
भरहु हरइ किं मज्झु भुयाभरु तइ चुक्कइ जइ सुंयरइ जिणवरु।

घत्ता—तहु मेइणि महु पोयणणयरु आइजिणिंदें दिण्णउं॥
अब्भिडउ पडउ असि सिहिसिहहिं जइ ण सरइ पडिवण्णउं॥ १९॥

८ MBP वरिसउ. ९ MBP णियदप्पु हरेप्पिणु.

19. १ MBP दिण्णउं. २ B omits त मइ लिहियसासण. ३ M वरहइ, but records a p वरसइ°. ४ MBP पणवउ. ५ MBP °सइरिणियइ सो रोमंचिउ. ६ BP add after this· हरिगइहकिंकरकेलयणिह. ७ MBPT भरइ. ८ M भुयातरु, T भुयाहरु बाहुसामर्थ्यम्. ९ MBP ता. १० M सुमरइ. ११ MBP पडिवण्णउं.

12 *a* कंदलावलिहिं मनुष्यकपालपंक्तौ; विरसउ रटतु; *b* करिसउ कृषतु. 14 *b* भूभंगविहीसें भ्रूभङ्गभयानकेन.

19. 3 *a* वरसइथणयलु वरायाः सत्याः स्तनतलम्. 4 *a* छिवइ स्पृशति. 7 *b* °सइरिणियइ स्वैरिण्या पुंश्चल्या. 9 *b* महारह महारथाः. 10 *a* भुयाभरु भुजसामर्थ्यम्.

20

आरणालं—ता दूएण जंपियं किं सुविप्पियं भणसि भो कुमारा ।
बाणा भरहपेसिया पिंछभूसिया होंति दुण्णिवारा ॥ १ ॥

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ किं खरेण मायंगु खलिज्जइ ।
[1]खज्जोएं रवि णित्तेइज्जइ किं घुट्टेण जलहि [2]सोसिज्जइ ।
गोप्पएण किं णहु [3]मौणिज्जइ अण्णाणें किं जिणु जाणिज्जइ ।
वायसेण किं गरुडु णिरुज्झइ णवकमलेण कुलिसु किं विज्झइ ।
कीरेणा किं मयारि मारिज्जइ किं वसहेण वग्घु दारिज्जइ ।
किं हंसें ससंकु धवलिज्जइ किं मणुएण कालु कवलिज्जइ ।
[4]डेंडुहेण किं सप्पु डसिज्जइ किं कम्मेण सिद्धु वसि किज्जइ ।
किं णीसासें लोउ णिहिप्पइ किं पइं [5]भरहेणराहिउ जिप्पइ ।

घत्ता—हो होउ [6]पहुप्पइ जंपिएण राउ तुहुप्परि वग्गइ ॥
करवालहिं सूलहिं सव्वलहिं परइ [7]रणंगणि लग्गइ ॥ २० ॥

21

आरणालं—ता भणियं सहेउणा मयरकेउणा एत्थ कहिं मि जाया ।
जे परदविणहारिणो कलहकारिणो ते जयम्मि राया ॥ १ ॥

वुड्डउ जंबुउ [1]सिवें सद्दिज्जइ एण णाइं महु हासउ दिज्जइ ।
जो बलवंतु चोरु सो राणउ [2]णिब्बलु पुणु किज्जइ [3]णिप्राणउ ।
हिप्पइ [4]मृगहु मृगेण जि आमिसु हिप्पइ मणुयहु मणुएण जि वसु ।
रक्खाकंखइ [5]जूहु रएप्पिणु एक्कहु केरी आण लएप्पिणु ।

20. १ MBPK किं खज्जोएं. २ P सोखिज्जइ. ३ P मण्णिजइ. ४ MBP डिंडुहेण. ५ MBP भरहु. ६ MBP पहुच्चइ. ७ K रणंगणु मग्गइ.
21. १ MBP सिउ. २ M णिब्बल. ३ MBP णिप्पाणउ. ४ MBP मिगहु मिगेण. ५ P वूहु.

20. 5 *a* माणिज्जइ उपमीयते. 10 *a* णिहिप्पइ निक्षिप्यते. 11 वग्गइ विग्रहाय चेष्टते. 12 परइ प्रभाते.
21. 1 सहेउणा सयुक्तिकेन. 3 *b* एण णाइं अनेन न्यायेन. 5 *b* वसु धनम्.

ते णिवसंति तिलोईंगविट्ठउ सीहहु केरउ वंदुँ ण दिट्ठउ ।
माणभंगि वरं मरणु ण जीविउ एहउ दूय सुट्ठु महं भाविउं ।
आवउ भाउं घाउ तहु दंसमि संझाराउ व खणि विद्धंसमि ।
सिहिसिहाहं देविंदु वि ण सहइ महु मणासियहु विसिहं को विसहइ ।
एक्कु जि परउव्वारु णरिंदहु जइ पइसरइ सरणु जिणयंदहु ।

घत्ता—संघट्टमि लुट्टमि गयघडहु दलमि सुहड रणमग्गइ ॥
पहु आवउ दावउ बाहुबलु महु बाहुबलिहि अग्गइ ॥ २१ ॥

22

आरणालं—ता दूउ विणिग्गओ णियपुरं गओ तम्मि णिवणिवासं ।
सो विण्णवइ सायरं सारसायरं पणविउं महीसं ॥ १ ॥

विसमु देव बाहुबलि णरेसरु णेहु ण संधइ संधइ गुणि सरु ।
कज्जु ण बंधइ बंधइ परियरु संधि ण इच्छइ इच्छइ संगरु ।
पइं णउ पेच्छइ पेच्छइ भुयबलु आण ण पालइ पालइ णियछलु ।
माणु ण छंडइ छंडइ भयरसु दयवु ण चिंतइ चिंतइ पोरिसु ।
संति ण मण्णइ मण्णइ कुलकलि पुहइ ण देइ देइ बाणावलि ।
तुज्झु ण णवइ णवइ मुणितंडउ अंगु ण कड्ढइ कड्ढइ खंडउ ।
देव ण देइ भाइ तुह पोयणु पर जाणमि देसइ रणभोयणु ।
ढोयइ रयणइं णउ करिरयणइं ढोएसइ भुवु णरउररयणइं ।

घत्ता— संताणु कुलक्कमु गुरुकहिउ खत्तधम्मु णउ बुज्झइ ॥
मज्जायविवज्जिउ सामरिसु अवसें दाइउ जुज्झइ ॥ २२ ॥

६ B तिलोउ°. ७ MBP विंदु. ८ MBP वरि. ९ M भामिउ. १० MBPK राउ; G भाउ but writes adove it राउ in second hand. ११ M सिहसिहहिं देविंदु ण बि ण सहइ. १२ MT विसह. १३ MBPK जिणइंदहु.

22. १ MBP दूवउ. २ MB पणवउ; P पणविओ. ३ MBP दइउ. ४ BPP मग्गइ मग्गइ. ५ MBP भुउ.

10 *b* विसिह बाणाः. 11 *a* परउव्वारु परोद्धरणं रक्षणम्.

22. 1 सायरं सादरम्; सारसायरं सा लक्ष्मीः रसा पृथिवी, तयोः आकरम्. 8 *a* मुणितंडउ मुनिसमूहः. 10 *b* णरउररयणइं नरवक्षःस्थलविदारकानि. 12 दाइउ दायादः सपत्नीजातभ्राता.

23

आरणालं—ता परिल्हसिउ दिणमणी णं सिरोमणी गयणकामिणीए ।
अत्थं पडि णिवेइओ रुइविराइओ णाइ जामिणीए ॥ १ ॥

मावेसहि भणेवि अइरत्तउ दिवसहु दिण्णु दीवुं सिहितत्तउ ।
णं चउपहरहिं वणु अहिकंतिहि जायउ लोहियहु णहदंतिहि ।
णाइं पवालकुंभुं दिसणारिइ घरिवि मुक्कुं दिक्करिगणियारिइ ।
पउलिवि तलिवि दंलिवि दलवट्टिवि जीवरासि जगभायणि घट्टिवि ।
दंडछुहियजणलोहियलित्ती कालेंडों विव दिसिवेंहि घित्ती ।
उग्घाडिवि ससहरमुह णिद्धहिं संमुहियहि तियसासामुद्धहि ।
णं सिंदूरकरंडु झसच्छिइ दाविउ लवणजलहिजललच्छिइ ।
मयरंदुल्लोलु व जगकमलहु णिउ वाएण वरुणमुहकमलहु ।
गोमिणीइ हरिरइरसभेंरिउं पोमरायंवत्तु व वीसंरिउं ।
अत्थमियउ जाइवि अवरासइ रत्तु मित्तु णं गिलियउ वेसइ ।

घत्ता—पुणु दीसइ संझारायएण भुवणु असेसु वि रत्तउ ॥
सहुं गिरिदरिसरिणंदणवणहिं लक्खारासि णं घित्तउ ॥ २३ ॥

24

आरणालं—आसोसियखमारसो खवियतावसो तरुणिदंसणाओ ।
णं णरमाणि ण माइओ दिसहिं धाइओ सहइ मयणराओ ॥ १ ॥

संझारायजलणु जो भमियउ सो तमजलकल्लोलहिं समियउ ।
संझारायघुसिणु जं संकिउ तं तमोहमयणाहें ढंकिउ ।

23. १ MBP दीउ. २ MBP कुंभ. ३ MBP मुक. ४ MBP मलिवि. ५ B कालिं दाविय. ६ MB दिसवहि; P दिवसहिः. ७ MBP °भरियउ. ८ MBP °पत्तु. ९ MBP वीसरियउ. १० MBP गिरिसरसरि°.

23. 2 अत्थं पडि णिवेइओ अस्तपर्वतं प्रति समर्पितः; रुइविराइओ दीप्तिविराजितः; णाइ तया यामिन्या. 3 *a* मावेसहि मा आवेसहि मा प्रवेशं कुरु. 5 *b* दिक्करिगणियारिइ दिक्करिहस्तिन्या. 7 *b* कालेंडा विव दिसिवहि घित्ती कालेन अण्डमिव दिक्षु क्षिप्तम्. 11 *a* हरिरइरस° कृष्णक्रीडारसः; *b* पोमरायवत्तु पद्मरागभाजनम्. 12 *a* अवरासइ अपरदिशा.

24. 3 *b* समियउ पीडितः. 4 *b* °मयणाहें मृगेन्द्रेण.

संझारायविडवि जो फुल्लिउ सो तमतंबेरमवइपेल्लिउ ।
चंदमइंदें तमकरि भग्गउ किं जाणहुं सो तासु जि लग्गउ ।
मयणिहेण दीसइ सुहयारउ तप्पवेसु वइरिहिं भल्लारउ ।
विसइ गवक्खहिं थणयलि घोलइ बहुहारु व ससितेउ णिहालइ ।
रंधायारें थियउ अंधारइ दुद्धसंक पयणइ मज्जारइ ।
रइपासेयबिंदु तेणुज्जलु दिट्ठु भुयंगहि णं मुत्ताहलु ।
दिट्ठउ कत्थइ दीहायारउ घरि पइसंतउ किरणुक्केरउ ।
मोरें पंडुरु सप्पु वियप्पिवि मुद्धें केंह व ण गहिउ झडप्पिवि ।

घत्ता—गंगासरि हंसपक्खदलइं पियविरहिणिगंडयलइं ॥
जायइं ससियरपक्खालियइं धवलाइं जि णिरु धवलइं ॥ २४ ॥

25

आरणालं—मम्मणमणियजंपिरं मयणकंपिरं पणयविणयवंतं ।
रइरसरहसरंजियं पिययमा पियं रमइ णिसि रमंतं ॥ १ ॥

केण वि घणथणि णिहियउ करयलु कणयकलसि णावइ रत्तुप्पलु ।
काइ वि को वि सुहउ आलिंगिउ मैडुमइमुहचुंबणु मग्गिउ ।
णीहरंति पडिवहुरोसुब्भावि केण वि का वि धरिय करपल्लवि ।
पणयकलहि रमणीचरणंगउ को वि सकुंकुमेण पाएं हउ ।
सोहइ विड्डु अइरा रिउ संकिउ णं मयरद्धयमुद्दइ अंकिउ ।
हारें बद्ध का वि सयणालइ ताडिय णाहें चंपयमालइ ।
बिंबाहररसघयसंसित्तउ काँहं वि मयणहुयासु पलित्तउ ।
उल्हाविउ रइसलिलपवाहें काइ वि किलिकिंचिउ उच्छाहें ।

24. १ MBP जं. २ P वेरिहि. ३ M सियतेउ. ४ B omits this foot. ५ M रंधायार. ६ M पियविरहिणं.

25. १ B °रहसजापिय. २ MBPK सुहडुः ३ MBP मडमंड. ४ MBP कासु.

5 *b* °तंबेरम° हस्ती. 7 *a* मयणिहेण मृगमिषेण. 9 *a* रंधायारु छिद्राकारः; *b* पयणइ प्रजनयति. 11 *a* दीहायारउ सर्पाकारः; *b* °उक्केरउ समूहः. 13 °पक्खदलइं पक्षयुगलानि.

25. 6 *a* °चरणगउ पादयोः पतितः. 7 *a* अइरा अचिरात्.

का वि रयावसाणसमरीणी चंदणकद्दमवाविहि लीणी।
को वि का वि सवहहिं रंजइ गुणि अक्कसमाण मज्झु परपणइणि।
जाम एहु वेसाणरु अच्छइ तावण्णहि को वयणु णियच्छइ।
जणणि महेली मणि अवहारमि गुरुपय छिवमि ण पइं अवहेरमि।

घत्ता—इयँ कवडकूडमउजंपियहिं दाणेण वँ वसिहूयउ ॥
णारीयणु रमिउ विडाहिवहिं वेढिवि णिरुवमरूवउ ॥ २५ ॥

26

आरणालं—दीहा वि रयमिहुणहं चक्कवियणहं पहियवंद्याणं।
मउहा हवइ रयणिया चंदवयणिया रयविडिंदयाणं ॥ १ ॥

ता उग्गमिउ सूरु पुव्वासइ रइरंगु व दरिसिउ कामासइ।
किंसुयकुसुमपुंजु णं सोहिउ णं जगभवणि पईवु पबोहिउ।
चारु सूरु वंसहु णं कंदउ लोहिउ ससि रोसेण दिणिंदउ।
मज्झु परोक्खइ आवइ पाविय कमलिणि वेल्लि भणिवि संताविय।
एम भणंतु व गयणि व लग्गउ णं रयणियरहु पच्छइ लग्गउ।
तंबु करोहउ रुहिरु णिसाडें चिंतिउ एंतु सछिद्दकवाडें।
कुंकुमलोलु व मण्णिउं घरिणिइ रत्तु दुवंकुरु कंदरहरिणिइ।
मिलियउ सोहइ विद्दुममहियलि मिलियउ सोहइ कंकेलीदलि।
मिलियउ सोहइ रत्तइ सयदलि मिलियउ सोहइ रमणीकरयलि।
मिलियउ सोहइ जण अहरुल्लइ महिहरतीर धाउ जलरेल्लइ।
राउ मुयंतु जि गुणसंजुत्तउ अरहंतु व रवि उण्णइं पत्तउ।

५ P °रयावसाणि. ६ MBP वि.

26. १ MBP रइ°. २ MBP पईवउ बोहिउ. ३ MBP सूर°. ४ MBP दिणंदउं. ५ MB तंब. ६ M रुहिर. ७ MBP ककेल्लिहि दालि.

11 *a* °समरीणी °श्रमेण क्रान्ता. 12 *b* अक्कसमाण मातृतुल्या. 14 *b* गुरुपय छिवमि गुरुपादौ स्पृशामि; ण पइं अवहेरमि त्वां न वञ्चयामि. 16 वेढिवि आलिङ्ग्य.

26. 1 दीहा वि दीर्घापि; चक्कवियणहं चक्रवाकानां एव विगणानां पक्षिगणानाम्. 2 मउहा लघ्वी, रयविडिंदियाणं रतानां विटेन्द्राणाम्. 8 *a* णिसाडें निशाचरेण.

घत्ता— हयतिमिरें भरहपयासएण रविणा किं ण वि दाविउ ॥
सिरिरामासेवियसच्छसरपुप्फयंतु वियसाविउ ॥ २६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे बाहुबलिदूयसंपेसणं णाम
सोलहमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ १६ ॥

॥ संधि ॥ १६ ॥

८ MBP दावियउ. ९ MB वियसावियउ.

15 सिरीरामा दि—श्रीसेवितानां स्वच्छसरोवरपद्मानां मध्ये विकासितम्.

XVII

दूवागमि रविउग्गमि चलकरवालललावियजीहहो ॥
जाइवि णंदाणंदणहो भिडिउ भरहु रणि सीहु व सीहहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

ता समरचित्तु विसरिसु विरुद्धु विप्फोरियदसणडसियाहरुद्धु ।
कढिणयरपाणिपीडियकिवाणु उद्धुयमीसियहयभउंहकोणु ।
तिवलीतरंगभंगुरियभालु णं सीहु कुडिलदाढाकरालु ।
अरुणच्छिछोहरंजियदियंतु णं पलयजलणु धगधगधगंतु ।
दूययवयणहिं वड्डियकसाउ जंपइ सरोसु रायाहिराउ ।
सुयरेप्पिणु तायहु तणउं चारु जइ कहँ व ण मारमि रणि कुमारु ।
तो धरिवि णिरुंभवि करमि तेम अच्छइ करि जिह णियलत्थु जेम ।
महु कुद्धहु रणि देव वि अदेव सो ण करइ किं महु तणिय सेव ।
इय गज्जिवि असितासियसुरिंदु जा उट्ठिउ भरहु महाणरिंदु ।
तो मउडबद्ध मंडलिय चलिय केऊरसकंठाहरणघुलिय ।
महिवडियकणयकंचीकलाव अइभीसण थिय णं कालभाव ।
पक्केक पहाण गिरिंदधीर सहुं राएं लहु संणद्ध वीरें ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

वलिभङ्गकम्पिततनु भरतयशः सकलपाण्डुरितकेशम् ।
अत्यन्तवृद्धगतमपि भुवनं बम्भ्रमति तच्चित्रम् ॥

M reads °तनुवरं and B reads कम्पितवर for कम्पिततनु; MP read विभ्रमति for बम्भ्रमति. GK do not give it.

1. १ MBP दूयागमि रविउग्गमणे. २ MBP विप्फुरियडसणु डसिया°. ३ M recods a *p* for this foot: धणुगुणे रोवि दिढवजबाणु. ४ MBP दूयहि वयणें. ५ MBP सुमरेप्पिणु. ६ P कह वि. ७ MB णिरुंभिवि; B णिरुंजिवि. ८ P करिवरु णियलत्थु. ९ MBP तो. १० MBP चलिय. ११ MBP णरिंद. १२ B धीर.

---

1. 3 *a* विसरिसु आद्वितीयम्; *b* अहरुद्धु अधरोपरितनभाग., 6 *a* °छोह° विक्षेपः, 8 *a* चारु आचारः, 12 *a* चलय उत्थिताः, 13 *b* कालभाव यमस्वरूपाः.

घत्ता—संणज्झंतहु[13] तहु भडयणहु का वि णारि पभणइ जइ जाणहि ॥
किं पि महारउ उवयरिउ[14] तो पियमम सुररमणि म माणहि ॥ १ ॥

2

वहु का वि भणइ हत्थागएण | किं कीरइ मणिकंकणसएण ।
अरिकरिदंतुब्भउ[1] एक्कु जइ वि | वलउल्लउ सोहइ हत्थि तइ वि ।
तं धवलउ तुह पोरिसजसेण | आणेज्जसु पिय महु रइवसेण ।
वहु का वि भणइ एहु वि सुतारु | किं तुज्झ पसाएं णत्थि हारु ।
तुह करणिसिंसुक्कत्तिएहिं | परकुंभिकुंभचुयमोत्तिएहिं ।
हउं कित्तिलया इव कुसुमियंगि | छेज्जमि दाविज्जसु[3] एह भंगि[2] ।
वहु का वि भणइ महिमाहरेण | मइं विज्जहि किं चीरें[4] करेण ।
रिउचामरु[5] पिय उवयारकारि | आणेज्जसु रयसमसेयहारि ।
वहु का वि भणइ अहिमाणगाहि | लग्गिज्जसु पिय पडिवक्खणाहि ।
ऊणेण[6] हएण वि णत्थि लाहु | उडुगणहु ण रूसइ तेण राहु ।
जिम मिहरहु[7] जिम हिमयरहु भिडइ | बलिणा[8] हएण जसु चंदि चडइ ।
वहु का वि भणइ णीसंकयाइं | तावियपिसुणइं पावियजयाइं ।

घत्ता—कइणा कव्वें[9] मणोहरए जेण भडेण महाभडगोंदलि ॥
दिण्णइं पयइं सुउज्जुयइं तासु कित्ति भमइं[10] महिमंडलि ॥ २ ॥

१३ MBP संणज्झंतहु भडयणहु. १४ K उवरिउ but gloss उपकृतम.

2. १ MBP अरिकुंभि°. २ P पहिरेसमि सामिय एत्थ भगि, but rocaids a *p* छिज्जमि दाविज्जसु. ३ MBP दाविज्जसि. B वीरें करेण. ५ MBP रिउचामर. ६ MBP किं जणेण हएण. ७ MBP मिहिरहु. ८ MBP इय णाहएण, but M records a *p* in tho margin: बलिणा हएण. ९ M कव्वेण. १० MBP हिंडइ.

16 उवयरिय उपकृतम्.

2. 5 *a* करणिसिंसुक्कत्तिएहिं करानीर्निशोत्कर्तितैः. 6 *b* छज्जमि शोभे. 7 *a* महिमाहरेण माहात्म्यस्फेटकेन; *b* विज्जहि वीजय. 8 *a* उवयारकारि माहात्म्यजनकम्. 9 *b* पडिवक्खणाहि प्रतिपक्षनाथे प्रधाने. 10 *a* ऊणेण पदातिपुरुषेण.

3

ता रायवयणेण रणतूरलक्खाइं किंकरकराहयइं तासियविवक्खाइं ।
सुरदंतिखयजलयजलणिहिणिणायाइं थेंगिथगिगिदुगिदुगिगि संदिण्णघायाइं ।
पडुपडहमद्दलमहारावरोलाइं किंकरकरब्भमियसलसलियतालाइं ।
मुहपवणतुरुतुरियकाहलवमालाइं गज्जंतभेरीहिं हलमुहलबोलाइं ।
तडिवडणतडयडियगुरुकरडटिविलाइं विरसंतझल्लरिसरोसरियसेलाइं ।
णीसासभरेण पूरियइं विमलाइं हुहुहुयंताइं वरसंखजमलाइं ।
अवरइं वि पहयाइं परियलियसंखाइं जयविजयसिरिकामिणीसोक्खकंखाइं ।
रुंजंतरुंजाइं भंभंतभंभाइं हल्लावियाहिंदमहिसीयरब्भाइं ।
चलियाइं सेण्णाइं संणाहसोहाइं वरकुंजरारूढरणरूढजोहाइं ।
णरकरविमुक्कासखुरखयधरग्गाइं चलधूलिकविलाइं विप्फुरियखग्गाइं ।
परिमिलियमंडलियबलसारवंताइं धावंतपाइक्ककरधरियकोंताइं ।
रहचक्कचिक्कारभेसियभुयंगाइं णिवछत्तछाहीहिं छाइयपयंगाइं ।
जक्खिदक्खयरिंदभूमिंदभीमाइं खयकालकीलाहि कीलाविरामाइं ।

घत्ता—इय भरहाहिउ णीसरिउ जाम समउ मंतिहिं सामंतहिं ॥
ता वेयालियचरणहिं विण्णवियउ बाहुबलि णवंतहिं ॥ ३ ॥

4

परियणजलेण णहु महि पिहंतु उत्तुंगतुरंगतरंगवंतु ।
करिमयरपसारियचंडसोंडु सियपुंडरीयडिंडीरपिंडु ।
लायण्णपउरगंभीरघोसु दुग्गउं चोद्दहरयणाहिवासु ।

3. १ B °करहयइं. २ MBP ठगिदुगिगिठगिदुगिगि. ३ MBP °करब्भमिय°. ४ B °सललिय°. ५ MBP °पवणहयकुहर (P कुहय) तुरुतुरियकाहलइं. ६ P °हलमुसल°. ७ MBP °खरकरड°. ८ MBP °जुयलाइं. ९ MBP अवराइं पहयाइं. १० MBP भंभंतभंभाहिं. ११ MBP °सायरंभाइं. १२ BP °कवलाइ. १३ MBP विप्फरिय° K विप्फरिय° but corrects it to विप्फुरिय°. १४ P धावंति. १५ MBP °कुंताइं. १६ MBK °कालकालाहि. १७ B कीराहिरामाइं. १८ भरहणराहिउ.

4. १ MB महि णहु. २ MB दुग्गमु. ३ MBP चउदह°.

---

3. 5 *b* सरोसरियसेलाइं °शब्देनोत्सारितपर्वतानि. 8 *a* °रुंजाइं वादित्रविशेषाः; *b* सायरब्भाइं सागराः अभ्राणि मेघाश्च. 10 *a* °विमुक्कास विमुक्ताः अश्वाः. 15 वेयालिय° वैतालिकाः.

संदणबोहित्थसमूहबवलु पंचंगमंतपायालविउलु ।
जसमोत्तियमंडियतिजगतीरु आणंदियणियकुलें कुद्दहीरु ।
धयवडजलयरपरिघुलणरंगु दूरयरणिहित्तमलोहसंगु ।
तुज्झुवरि देव असिझसरउद्दु उत्थल्लिउ णरवइ बलसमुद्दु ।
सुविचित्तपत्तपत्तियसरेण ता वुच्चइ बाहुबलीसरेण ।
हउं एक्कु वइरि किं पउर भणहि किं कालहु अग्गइ जीव गणहि ।
किं डज्झइ हुयवहु तरुवरेहिं किं खज्जइ खगवइ विसहरेहिं ।
किं कुसुमबाण जिणमणु हरंति गोमाउ मइंदहु किं करंति ।
छाइज्जइ किं भयणेहिं भाणु पउर वि रिउ महु ण मलंति माणु ।

घत्ता—एक्कु वि पउ ण समोसरमि णायायारहिं पंथु णिरुंभमि ॥
आवंतहु णिवसायरहो सरवरपंतिहिं वरणु णिबंधमि ॥ ४ ॥

5

गज्जंतु एम पलयक्कतेउ संणज्झइ सिरिबाहुबलिदेउ ।
जोयंतहु णियभुयथामसंचु कासु वि वड्ढिउ रोमंचु उंचु ।
हियवइ संणाहु ण माइ केम बहुलोहवंतु काउरिसु जेम ।
केण वि बद्धी जयकामएण असिधेणुय रसणादामएण ।
केण वि इच्छिय संगामदिक्ख सरमोक्खहु केरी परमसिक्ख ।
केण वि गुणु वलइउ कहिं वि चावि चंप्पिवि णं खलयणि कुडिलभावि ।
केण वि णिबद्धु तोणीरजुयलु णं गरुडें दाविउ पक्खजमलु ।
केण वि कड्ढिउ करवालु चंडु णं मेहें दरिसिउ विज्जुदंडु ।

४ P पायालि. ५ MB °कुलछुद्दहीरु, P °कुलु छुद्दहीरु, K °कुलकुद्दहीरु but corrects it to °छुद्दहीरु T चद्दहीरु चंद्रारंगुस्थानम्. ६ MBP °घुलियरगु. ७ K उत्थल्लउ. ८ MBP °वत्तापत्तिय°. ९ MBP जणहि. १० BP णिरुंभिवि. ११ MBP °सायरबलहो. १२ MB वरुण. १३ B णिबधिमि; K णिरुंभमि.

5. १ G सतु; K थावसचु. २ MP उच्चु. ३ MBP असिधेणुव. ४ MBP लाविउ. ५ MBP चप्पेविणु खलयणकुडिलभावि. ६ Mपक्खजुयलु, BP पखजुयलु. ७ P दाविउ.

4. 4 *a* °बोहित्थ° नौः. 5 कुद्दहीरु चन्द्रः. 6 *b* °मलोहसंगु अन्यायमलसंगः. 11 *b* गोमाउ शृगालः. 12 *a* भयणेहिं नक्षत्रसमूहैः. 13 णायायारहिं सर्पाकारैः. 14 वरणं तटं सैन्यसमुद्रस्य.

5. 1 *a* पलयक्कतेउ प्रलयार्कतेजाः. 2 *a* थामसंचु सामर्थ्यसंचयः. 4 *b* असिधेणुय छुरिका.

भडु को वि भणइ परु हणमि अज्जु णिक्कंटउ सामिहि देमि रज्जु ।
पहु तुच्छु पउर रिउ हउं वि धीरु भणु सुंदरि किं कीरइ वियारु ।
अवरुंडहि लहु दे देहि हत्थु को जाणइ पुणु संजोउ केत्थु ।
आयल्लिउ पहुहि पसाउ जेहिं रणि जुज्झमि अज्जु भुएहिं तेहिं ।

घत्ता— भासइ को वि महासुहडु मुइ मुइ कंति ण एवहिं मंज्झमि ॥
णिग्गवि रायहु नणउ रिणु अज्जु सीसदाणेण विसुज्झमि ॥ ५ ॥

6

भडु को वि भणइ कयवणमुहेहिं जइ भिज्जइ उरु करिमुहरुहेहिं ।
जइ खज्जइ आमिसु रक्खसेहिं जइ पिज्जइ सोणिउं वायसेहिं ।
जइ अंतइं गिद्धइं लइवि जंति तो मरणमणोरह मेहु सरंति ।
भडु को वि भणइ हलि हत्थु देमि गयदंतमुसलु कड्ढेवि लेमि ।
कंडवि णरकण अवर वि करेणु उद्धावमि अयसतुसोहरेणु ।
भडु को वि भणइ हुइ खंडखंडि महु करु पेक्खेज्जसु पक्खितोंडि ।
सुंदरि गयणंगणि लंबमाणु अविमुक्कवेरि दावियकिवाणु ।
अह धरणिघुलिउ लइ रिउ विहत्तु तुह मंगलंसुकज्जलविलित्तु ।
जं पेच्छहि बहुरुहिरें किलिण्णु परिमुक्कदीहणारायभिण्णु ।
वच्छयलु महारउ तं जि लेहि सघुसिणु करयलु अहिणाणु देहि ।
हलि सामलंगि उप्फुल्लवयणु जंइ णिवडिउं पेच्छहि तंवणयणु ।

घत्ता—तो मेरउ सिरु तरुणि तुहुं चित्ततुलारोहेण विवेयहि ॥
सहुं पत्थिवपरिवालिएण सरिसउ किं व ण सरिसउ जोयहि ॥ ६ ॥

८ K हणिवि. ९ MBP करमि. १० MBP मुज्झमि and gloss in MP मोह करोमि; K मज्झमि but मुज्झमि in second hand.

6. १ MBP गिद्ध. २ B मय. ३ K °मुसल. ४ M पेक्खिज्जहि. ५ MBP पक्खितुंडि. ६ MBP परमुक्क°; M records a *p* सरु मुक्क°. ७ M अहिणाहु. ८ MBP ओफुल्ल°. ९ M जं णियडउ; BP जं णियडिउं. १० MBP सो. ११ MBP परिपालिएण.

13 मज्झमि मनोहरं करोमि.

6. 5 *a* कंडवि चूर्णीकृत्य; *b* अयस° अपयशः.

7

छुडु गज्जिय गुरु संगामभेरि णं भुक्खिय तिहुयणु गिलिवि मारि ।
छुडु णिग्गउ भुयबलि साहिमाणि छुडु एत्तहि पत्तउ चक्कपाणि ।
छुडु कालें णीणिय दीह जीह पसरिय माणुसमंसासणीह[1] ।
थिय लोयवाल जीवियणिरीह डोल्लिय गिरि रुंजिय गहणि[2] सीह ।
छुडु भडभारें ढलहलिय[3] धरणि छुडु पहरणफुरणें हसिउ तरणि ।
छुडु चंडबलाइं[4] पलोइयाइं छुडु उहयबलाइं[5] पधावियाइं ।
छुडु मच्छरचरियइं[6] वड्डियाइं छुडु कोसहु खग्गइं कड्डियाइं ।
छुडु चक्कइं हत्थुग्गामियाइं छुडु सेल्लइं भिच्चहिं भामियाइं ।
छुडु कोंतइं धरियइं संमुहाइं धूमंधइं[7] जायइं दिम्मुहाइं ।
छुडु मुट्ठिणिवेसियं[8] लउडिदंडं[9] छुडु पुंखुज्जल[10] गुणि णिहियं[11] कंडं[12] ।
छुडु गय कायर थरहरियप्राण[13] छुडु ढोइय[14] संदण णं विमाण ।
छुडु मेंठ[15]चरणचोइयमयंग छुडु आसवारवाहियतुरंग ।

घत्ता—छुडु छुडु कारणि वसुमइहि सेण्णइं जाम हणंति परोप्परु ॥
अंतरि ताम पइट्ठ तहिं मंति चवंति समुब्भिवि णियकरु[16] ॥ ७ ॥

8

विहिं बलहं मज्झि जो मुयइ[1] बाण तहु होसइ रिसहहु तणिय आण ।
तं णिसुणिवि सेण्णइं सारियाइं वडियइं चावइं उत्तारियाइं ।
तं णिसुणिवि रहसाऊरियाइं वज्जंतइं तूरइं वारियाइं ।
तं णिसुणिवि धारापहसियाइं करवालइं[2] कोसि णिवेसियाइं ।
तं णिसुणिवि णिद्धंगइं[3] घणाइं णिम्मुक्कइं कवयणिबंधणाइं ।

7. १ MB °मसाण सीह. २ MBP गहणसीह. ३ MBP ढलढलिय. ४ MBP चंड°. ५ MBP उभय°. ६ MBP °चडियइ. ७ MB धूमंधइ. ८ M °णिवेसिउ. ९ M °दंडु. १० MBP पखुजलु. ११ M णिहिउ. १२ M कंडु. १३ MBP °पाण. १४ P ढोयइ. १५ MBP मेट्ठ°. १६ M वरयरु; BP वरकरु.
8. १ MBP मुवइ. २ MBP खग्गइं पडियारि. ३ MBP णद्धंगइं; T णिद्धंगइं दीप्राणि णद्धंगइं वा बद्धानि.

7. 1 *a* छुडु शीघ्रम्. 3 *b* °मंसासणीह मांसाशनेच्छा 4 *b* गहणि वने.
8. 5 *a* णिद्धंगइं भास्वराणि.

तं णिसुणिवि मय मायंग रुद्ध पडिगयवरगंधालुद्ध कुद्ध ।
तं णिसुणिवि मच्छरभावभरिय हरि फुरुहुरंत धावंत धरिय ।
रह खंचिय कड्डिय पग्गहोह वारिय विंधंत अणेय जोह ।

घत्ता—परिसेसियरणपरियरइं गुरुयणचरणसवहसंणिहियइं ॥
सेण्णइं उज्झियकलयलइं थक्कइं कुड्डि णाइं आलिहियइं ॥ ८ ॥

9

पणमियसिरेहिं मउलियकरेहिं बाहुबलि भरहु महुरक्खरेहिं ।
उग्गमियरोसपसमंतएहिं विण्णि वि विण्णविय महंतएहिं ।
तुम्हइं बिण्णि वि जण चरमदेह तुम्हइं विण्णि वि जयलच्छिगेह ।
तुम्हइं बिण्णि वि अखलियपयाव तुम्हइं बिण्णि वि गंभीरराव ।
तुम्हइं बिण्णि वि जगधरणथाम तुम्हइं बिण्णि वि रामाहिराम ।
तुम्हइं विण्णि वि सुरहं मि पयंड महिमहिलहि केरा बाहुदंड ।
तुम्हइं बिण्णि वि णिवणायकुसल णियतायपायपंकरुहभसल ।
तुम्हइं बिण्णि वि जण जणहु चक्खु इच्छहु अम्हारउ धम्मपक्खु ।
खरपहरणधारादारिएण किं किंकरणियरें मारिएण ।
किर काइं वराएं दंडिएण सीमंतिणिसत्थें रंडिएण ।
दोहं मि केरा मज्झत्थ होवि आउहु मेल्लिवि समभाउ लेवि ।

घत्ता—अवलोयंतु धराहिवइ पत्तिउ किज्जउ सुत्तु सुजुत्तउ ॥
तुम्हहं दोहं मि होउ रणु तिविहु धम्मणाएण णिउत्तउ ॥ ९ ॥

४ MB मच्छरभावरहिय; P मच्छरभारभरिय. ५ MB फुरफुरंत. ६ MB अणंत. ७ M चरणसवहसाल्लिहियइं; B °चरणवसहसंणिहियइं; T सवहसंणिहियइं. ८ P कोड्डि.

9 १ MBP उग्गमिउ रोसु. २ MBP read: तुम्हइं बिण्णि वि जयलच्छिगेह, तुम्हइं बिण्णि वि जण चरमदेह. ३ MB महियल केरा. ४ MBP आउह. ५ MBP किज्जइ सुट्ठु. ६ MBP धम्मु णाएण.

8 *a* पग्गहोह रश्मिसमूहः. 9 °सवहसणिहियइं शपथभृतानि. 10 कुड्डि कुड्ये भित्तौ.

9. 2 *b* महंतएहिं मन्त्रिभिः. 7 *a* णिवणायकुसल राजनीतिकुशलौ. 10 *b* सीमंतिणिसत्थें स्त्रीसमूहेन. 12 सुत्तु सुभाषितम्. 13 धम्मणाएण धर्मन्यायेन.

10

पहिलउ अवरोप्परु दिट्ठि धरहु मा पत्तलपत्तणचलणु करहु ।
बीयउ हंसावलिमाणिएण अवरोप्परु सिंचहु पाणिएण ।
तइयउ पुणु णहि जोयंतु देव करु करि घिवंतु सुरदंति जेंव ।
जुज्झहु बिण्णि वि णिवमल्ल ताम एक्केण तुलिज्जइ एक्कु जाम ।
अवरोप्परु जिणिवि परक्कमेण गेण्हहु कुलहरसिरि विक्कमेण ।
तणुसोहाहसियपुरंदरेहिं ता चिंतिउ दोहिं मि सुंदरेहिं ।
किं दूहवियहि णवजोव्वणेण किं फलिएण वि कडुएं वणेण ।
किं सलिलें चंडालंकिएण किं दासें पेसणसंकिएण ।
किं राएं गुरुपडिकूलएण सुविणीयसुयणसिरसूलएण ।

घत्ता—जे ण करंति सुहासियइं मंतिहिं भासियाइं णयवयणइं ॥
ताहं णरिंदहं रिद्धि कओ कहिं सीहासणछत्तइं रयणइं ॥ १० ॥

11

इय चिंतिवि इच्छिउ मंतिमंतु वुड्ढाणुगामि णीसेसु संतु ।
अवलंबिउ रोसु ण परियणेहिं आयंबकसणसियलोयणेहिं ।
सकसायभाव आसण्णु ढुक्कु दोहिं मि अवलोइउ एक्कमेक्कु ।
उद्धाणणु पहु भुयबलिहि तोंडु पेच्छइ रविबिंबु व किरणचंडु ।
हेट्ठिल्ल दिट्ठि उवरिल्लियाइ णिज्जिय दिट्ठिइ अविहल्लियाइ ।
णं होंति कुगइ पंचमगईइ विसयासा इव मुणिवरमईइ ।

10. १ MP पत्तलयत्तणु चवलु; B पत्तलयत्तणु चलणु; T पत्तलयत्तणु. २ B करि करु. ३ MBP घिवंतु. ४ MBP अणुहुंजहु मेइणि. ५ T चंडालट्ठिएण. ६ MBP कहिं कहिं. ७ MB सिंघासण°, P सिंहासण°.

11. १ MBP आसण्ण ढुक्क. २ MBP एक्कमेक्क. ३ MBP तुंडु. ४ MBP पेक्खिवि. ५ P पंचमगयाइ. ६ MBP विव. ७ P °मयाइ.

---

10. 1 *b* पत्तलपत्तणचलणु पत्तलपक्ष्मचालनम्. 8 *a* चंडालंकिएण चाण्डालस्वीकृतेन. 9 *a* गुरुपडिकूलएण मन्त्रिपुरोहितप्रतिकूलेन. 10 सुहासियइं सुभाषितानि; णयवयणइं नीतिवचनानि.

11. 1 *b* वुड्ढाणुगामि वृद्धाश्रितम्; णीसेसु संतु सर्वमुत्तमम्. 5 *b* अविहल्लियाइ अविचालितया स्थिरया.

णं तावसि भग्गी विडरईइ णं सेलभित्ति गंगाणईइ।
णं कमलपंति ससियरतईइ कुमुओलि व मउलिय रविरुईइ।

घत्ता—ठिउ हेट्ठामुहुं चक्कवइ णिज्जिउ पडिभडदिट्ठिपहावहिं ॥
घल्लियणवकुसुमंजलिहिं णंदातणुरुहु संथुउ देवहिं ॥ ११ ॥

12

मओमत्तमायंगलीलावहारा रमावासवच्छत्थलोलंतहारा।
फणिंदेण चंदेण इंदेण दिट्ठा पुणो दो वि राया सरंते पइट्ठा।
सरंतेहिं आलोइयं सच्छणीरं विसालं गहीरं तुसारोहतारं।
महापोमसुत्ताहिमाणिक्कदित्तं मरुद्धूयतिंगिच्छिधूलीविलित्तं।
महीरंगरंगंतकल्लोलमालं मरालीपहालग्गलीलामरालं।
सिरीणेउरालावणच्चंतमोरं भिसाहारपूरंतचंचूचऊरं।
तरंतामरं रोयरारद्धकीलं जलुब्भंतमीणं लयापत्तणीलं।
ससीछाहिसारंगडेवंतसीहं समुत्तुंगफेणावलीछण्णतूहं।
झुणंतालिकोलाहलं सारसिल्लं इणुम्मुक्कपायावलीफुल्लफुल्लं।
सुयाणेयपक्खिंदजक्खिंदसद्दं पमज्जंतहत्थिंदसोंडाविमद्दं।

घत्ता—तहिं बिण्णि वि जण ओयरिय पहुणा घित्त जलंजलि भायहु ॥
वियलइ उप्परि मेहलहे णं मंदाइणि हिमइरिरायहु ॥ १२ ॥

८ P °रुईइ. ९ M णं कुमुउलि वररावियररुईइ; B ण कुमुउण्णिव णवरवि°; P णं कुमुउालिव णवरवि°.

12. १ MBP वच्छत्थलोलंबि°. २ M °तिंगिच्छ°; B तिगिंछि°; P तिगिंगछ°. ३ MB गेयपारद्ध° P खेयरारद्ध° ; T रोयर चक्कवालं. ४ MBP °सिंहं. ५ M सारिसिल्लं. ६ MP °पेक्खंत°. ७ MBP णिमज्जंत°. ८ MBP सुडा°. ९ MBP वियरइ.

7 *a* विडरईइ विटरत्या. 8 *a* °तईइ °संतत्या; *b* कुमुओलि कुमुदपंक्तिः. 9 पडिभड° बाहुबलिः.

12. 1 *b* रमावास° लक्ष्मीनिवासम्. 2 *b* सरंते सरोवरमध्ये. 3 *b* °तार शुभ्रम्. 7 *a* रोयर° रुचिरम्. 8 *a* ससीछाहिसारंग° चन्द्रप्रतिबिम्बे स्थितं हरिणमुद्दिश्य; °डेवंत° धावन्; *b* °तूहं तटम्. 9 *b* इणुम्मुक्कपायावली° आदित्येन मुक्तानां किरणानां समूहेः.

13

वच्छत्थलु पाविवि पुणु वि वलिय हेट्ठामुह खलमेत्ति व घुलिय ।
कडियलि धावंती सुंदरासु दीसइ तारालि व मंदरासु ।
णं मरगयमहिहरि चंदकंति णं णीलमहीरुहि हंसपंति ।
डेवंती दीसइ सलिलधार णं कंठभट्ठ कंठिय सुतार ।
णं सुरसरि चवलतरंगफार गयणुल्ललंत झससुंसुमार ।
आरूसिवि पुणु भरहहु विमुक्क णंदातणएं गुरुजलझलक्क ।
पच्छाइउ चउदिसु ताइ राउ धवलइ जिणकित्तिइ णं तिलोउ ।
कणयइरि व सरयब्भावलीइ णं उययसिहरि ससहररुईइ ।
सलिलें णवसोत्तइं पूरियाइं बहुपरियणसयणइं जूरियाइं ।
उग्घोसिउ विजउ महासरेहिं बाहुबलिणराहिवकिंकरेहिं ।

घत्ता—सीसु धुणंतु मुयंतु छलु सरवरवारिपवाहें सित्तउ ॥
पडिओसारियउ पुहइवइ णाइं करिंदु करिंदें जित्तउ ॥ १३ ॥

14

जलभरियसुणासावंसएण वड्ढियपडिभडबलसंसएण ।
वज्जियमंडलियकुरंगएण परिहच्छें सरतीरंगएण ।
रोसारुणच्छिरंजियदिसेण सप्पेण व अइआसीविसेण ।
सीहेण व उद्धयकेसरेण णिब्भच्छिउ भाइ णरेसरेण ।
पीलिज्जइ तेरउ उच्छुचाउ रसु पिज्जइ सज्जइ गुलु सुसाउ ।
फुल्लसर वि कयधम्मेल्लसोह पइं जेहा कहिं लब्भंति जोह ।
अवियाणियखत्तियधम्मसार महिलाण गोहहो मोट्टियार ।
किं किरें वयणेण पलोइएण जीवंतहं सलिलें ढोइएण ।

13. १ MB पुणु वलिया. २ MBP घुलिया. ३ MBP तारावलि मदरासु. ४ MP महिरुहि; B महीहरि. ५ MBP धवल°. ६ MBPK मुणंतु. ७ MBP °ओसरियउ.

14. १ MBI " तज्जिय°. २ MBP °धम्मिल्ल°. ३ MB किंकरवयणेण.

13. 2 *b* तारालि ताराश्रेणी. 3 *b* °महीरुहि वृक्षे.

14. 1 *b* वड्ढियेत्यादि—वर्धितः प्रतिभटाद्बाहुबलिनः सकाशाद्बले संशयो जयविषये यस्य. 2 *b* परिहच्छें वेगेन.

ए एहि देहि भुयजुज्झु तेम अज्जु जि पयंतरु होइ जेम ।
ता भणइ जइणि णिप्फलु जि भसहि धणुबाण महारा काइं हसहि ।
जाणंतु वि देवि णिरत्थु भणहि पियविरहुव्वेइउ किं ण कुणहि ।
माहेलाण गोट्ठु हउं सयणमग्गि गोहाण गोट्ठु कड्डियइ खग्गि ।

घत्ता—जइ सयणत्तणु मण्णियउं तो किं मग्गहि पुहइ भडारा ॥
णियधणकणयमयकयविवस पत्थिव सयल होंति विवरेरा ॥ १४ ॥

15

तओ भुयभंडणि भायर लग्ग णरिंदसिरोमणि घट्टपयग्ग ।
कुलीण कुकारणि माणमहल्ल पहाण महाबल बिण्णि वि मल्ल ।
सुकंचणकुंडलमंडियगंड पसारियबाहु सरोस पयंड ।
चिराउस चंदचडावियणाम सुविक्कमवंत णराहिवकाम ।
समत्थ सिरीण रईण णिकेय महारह भारह भक्खरतेय ।
असंक खगंक झसंक विपंक जसंसुपसाहियपुण्णससंक ।
मिलंति मिलेप्पिणु हत्थि धरंति धरेप्पिणु देह घडेवि पडंति ।
पडंत जि गाहणिबंधणु देंति कडीयलु कंठु णिरुंभिवि ठंति ।
विरुद्ध वि गाह बलेण मुयंति मुएप्पिणु उड्डिवि झत्ति वलंति ।
अलंभुयजुज्झविहाणसयाइं पचप्पणकड्डणवेढणयाइं ।
करंति वि धीर अविद्धवियंग णिरंकुस णाइं मयंध मयंग ।
पयाणभरस्स धरित्ति ण तिण्ण विमुक्क रवेण दिसाकरि खुण्ण ।
फलोणयपायवपिट्ठु व छुण्ण णहे गय पक्खि वणेयर रुण्ण ।
ण चल्लिय कुंचिय कूर फणिंद दरीकुहरेसु णिलीण पुलिंद ।
तओ हयमाणिणिमाणमएण णरामरसंगरलद्धजएण ।

४ P भुयजुयलु. ५ BK देव. ६ MBP कुणइ. ७ M मोहु, but records a *p* गोट्ठु. ८ P कणयमय°.

15. १ K °घुट्ठ° and gloss घृष्ट. २ P सकंचण°. ३ MBP बारहभक्खर°. ४ MBP घडेण. ५ MBP पडंति जि गाढ°. ६ MBP णिरुद्धु वि बाहु; K णिरुद्ध वि गाह. ७ MBP जंति. ८ MBP पचंपण°. ९ PK चुण्ण.

10 *a* जइणि जिनपुत्रः; भसहि असंबद्धं प्रलपसि.

15. 2 *a* कुकारणि पृथ्वीनिमित्तम्. 4*b* णराहिवकाम देवौ. 5 *b* भक्खर° आदित्यः. 6 *b* जसंसु° यशःकिरणाः. 12 *b* खुण्ण संकुपिताः. 13 *b* वणेयर मृगाः.

सुरिंदकरीकरथोरभुएण अणिंदजिणिंदसुणंदसुएण ।
पहुस्स करेण करा परताविं परेण थिरेण धरेँण[10] कमावि ।

घत्ता—कुँअरें[11] राउ समुद्धरिउ णायणियंबिणिसेवियकंदरु ॥
कयइच्छाकोउहलेण किं णं[12] पुरंदरेण गिरि मंदरु ॥ १५ ॥

16

उद्धरिउ सुपुत्तें णं सुवंसु कमलायरेण णं रायहंसु ।
णं सुहपरिणामें जीवें[1] भव्वु णं सुयणसमूहें सुकइकव्वु ।
णं मुणिवरणाहें वयविसेसु णं णरवरिंदणाएण देसु ।
णं गमणवियारें[2] बालभाणु णं वाएं चंपयकुसुमरेणु ।
णं कामुयसत्थें कामचारु णं सो जि तेण संसारसारु ।
खयरामरमाणविमद्दणेण पढमेण पढमजिणणंदणेण ।
अइलुद्धें बहुमण्णियधणेण[3] कुद्धें अवगण्णियसज्जणेण ।
परिपालियसयलवसुंधरेण ता चिंतिउ चक्कु सुकंधरेण ।
जमदाढावलयहु अणुहरंतु उद्धाइउ चंचलु विप्फुरंतु ।
रविबिंबेण व जियविसमवेउ[4] तँ परियंचिउ बाहुबलिदेउ[5] ।
थिउ दाहिणभुयदंडहु समीउ को पहउ किर णियकुलपईउ ।
को सुरयधुत्तिचित्ताणुवट्टि को पम जिणइ जगि चक्कवट्टि ।

घत्ता—विंभिउ भरहणराहिवइ बाहुबलीसु जगेण पसंसिउ ॥
गयणभाउ सुरमुक्कियहिं पुप्फदंतपंतिहिं[6] णं पहसिउ ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहबाहुबलिजुज्झवण्णणं णाम
सत्तारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १७ ॥

॥ संधि ॥ १७ ॥

१० P धरेवि. ११ MBP कुमरें. १२ M णाइं, but T किं गिरिमंदरो पुरंदरेण नोध्दृतः.
16. १ MBP जीउ. २ MBP गयण°. ३ BP बहुमाणिय°. ४ K °विसमवेरु. ५ K बाहुबलि मेरु. ६ MBP पुप्फयंत°.

16. 4 *a* गमणवियारें गमनपरिणत्या आकाशेन वा; *b* वाएं वातेन. 5 *b* सो जि भरतः; तेण बाहुबलिना. 14 पुप्फदंतपंतिहिं पुष्पाणीव दन्तपंक्तयः ताभिः.

XVIII

णहु लंघिउ सुरगिरि चालियउ धीरें सायरु मावियउ ॥
करडिंभु व बंभहु तणउं सुउ उच्चाइवि पुणु थवियउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

णं कमलसरु हिमोहयकायउ दवदड्ढउ रुक्खु व विच्छायउ ।
जं ओहुल्लियमुहु पहु दिट्ठउ तं बलि भणइ हउं जि णिकिट्ठउ ।
चक्कवट्टि णियगोत्तहु सामिउ जेण महंत भाइ ओहामिउ ।
हा किं किज्जइ भुयबलु मेरउ जं जायउ सुहिदुण्णयगारउ ।
महि पुण्णालि व केण ण भुत्ती रज्जहु पडउ वज्जु समसुत्ती ।
रज्जहु कारणि पिउ मारिज्जइ बंधवहुं मि विसु संचारिज्जइ ।
जिह अलि गंधें गउ संघारहु तिह रज्जेण जीउ तंवारहु ।
भडसामंतमंतिकयभायउ चिंतिज्जंतउ सव्वु परायउ ।
तंदुलपसयहु कारणि राणा णरइ पडंति काइं अवियाणा ।
डज्झउ रज्जु जि दुक्खु गुरुक्कउ जइ सुहु तो किं ताएं मुक्कउ ।
सुहणिहि भोयभूमि संपयंयर कहिं सुरतरु कहिं गय ते कुलयर ।

घत्ता—दुल्लंघहु दुक्कियलंछणहो दूसहदुक्खदुरंतहो ॥
भणु दाढापंजरि पडिउ णरु को उव्वरिउ कयंतहो ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

शशधरबिम्बात्कान्ति तेजस्तपनाद्गभीरतामुदधेः ।
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥

GK do not give it.

1. १ P उच्चाविवि. २ P हिमहय° but gloss हिमाहत. ३ P दवदड्ढु व. ४ B ओहुल्लिय महुं. ५ MBP महंहु. ६ P हा जं जायउ. ७ P बंधवाहु विसु. ८ B दुक्खगुरुक्कउ. ९ P संपयधर. १० B दुल्लंघिय-दुक्किय°. ११ MB दूसहो.

1. 2 करडिंभु हस्ते बाल इव; थवियउ भूमौ मुक्तः. 4 *b* बलि बाहुबलिः. 5 *b* ओहामिउ अभिभूतः तिरस्कृतः. 6 *b* °दुण्णय° अविनयः. 9 *b* तंवारहु नरकम्.

2

कालभुयंगहु को वि ण चुक्कइ सुयणत्तणु जि एक्कु पर थक्कइ ।
मइं पइ जेहा बहु वेहाविय पुहइ पुहइपाल वोलाविय ।
एयहिं अइअहिलासु ण गम्मइ जणणि जणणु भायरु किह हम्मइ ।
पडिवण्णउं ण केम पालिज्जइ किह हियवउ कलुसें मइलिज्जइ ।
जं माणुसु धम्मेण ण भिज्जइ सो णिक्किट्ठु तेण किं किज्जइ ।
देव मज्झु खमभाउ करेज्जसु जं पडिकूलिउ तं म रूसेज्जसु ।
अप्पउ लच्छिविलासें रंजहि लइ महि तुहुं जि णराहिव भुंजहि ।
णहणिवडियणीलुप्पलविट्ठिहि हउं पुणु सरणु जामि परमेट्ठिहि ।
तं णिसुणिवि भरहेसें वुच्चइ परिहवदूसिउ रज्जु ण रुच्चइ ।

घत्ता—अंतेउररसयणहं परियणहं णीसेसहं मि णियंतहं ॥
हउं जित्तउ पइं तुहुं सहइ खंचिउं खम भूसणु गुणवंतहं ॥ २ ॥

3

जइ पइं णियभुएहिं अंदोलिउ भूमंडलि तडत्ति अप्फालिउ ।
तो किं चक्कें रयणु मइं रक्खइ पुणु जीयंतु को वि किं पेक्खइ ।
पइं जित्ती खमा वि खमभावें पइं तोसिउ कउसिउ सपयावें ।
पइं जिह तेयवंतु ण दिवायरु णउ गंभीरु होइ रयणायरु ।
पइं दुज्जसकलंकु पक्खालिउ णाहिणरिंदवंसु उज्जालिउ ।
पुरिसरयणु तुहुं जगि एक्कल्लउ जेण कयउ महु बलु वेयल्लउ ।
को समत्थु उवसमु पडिवज्जइ जगि जसढक्क कासु किर वज्जइ ।
पइं मुएवि तिहुयणि को चंगउ अण्णु कवणु पच्चक्खु अणंगउ ।

2. १ MBP णिक्किउ काइं तेण किर किज्जइ, K णिक्किट्ठु तेण काइं किर किज्जइ; but corrects it to सो णिक्किट्ठु तेण किं किज्जइ. २ MBP खमिउ.

3. १ MBP महिमंडलि. २ MBP चक्करयणु. ३ MB पुणु वि जयंतु; PK पुणु वि जियंतु. ४ MB तोसिउ. ५ M पोउसिउ; B कोसिउ.

2. 2 *a* वेहाविय वञ्चिताः; *b* वोलाविय निष्कासिताः यापिताः. 5 *a* ण भिज्जइ न अनुरज्यते.

3. 3 *a* खमा वि पृथिव्यपि; *b* कउसिउ इन्द्रः. 6 *b* वेयल्लउ वैकल्यम्.

अण्णु कवणु जिणपयकयपेसणु अण्णु कवणु रक्खियणिवसासणु ।

घत्ता—ससि सूरहो मंदरु मंदरहो इंदहु इंदु अणीयउ ॥
पर एक्कहु णंदाएविसुय तुह ण णिहालमि बीयउ ॥ ३ ॥

4

जं तुहुं दुव्वयणेहिं णिब्भच्छिउ जं दिट्ठीइ सरोसु णियच्छिउ ।
जं सरवाणिएण णिरु सित्तउ जं जुज्झंतें पेल्लिवि घित्तउ ।
तं एवहिं खम करि महुं बंधव जिणवरतणय तिजगमणसंभव ।
आउ जाहु उज्झाउरि पइसहि अज्जु जि तुहुं सिंहासणि वइसहि ।
पट्टु णिबंधमि भालि तुहारइ अक्ककित्ति जीवउ तुह केरइ ।
एवहिं रज्जु करंतउ लज्जमि एवहिं परमदिक्ख पडिवज्जमि ।
एवहिं इंदियछंदु विवज्जमि एवहिं पुण्णु ण पाउ समज्जमि ।
एवहिं कम्मणिबंधण भंजमि एवहिं जीएं प्राणं विसज्जमि ।

घत्ता—बंधव वणवासहु पट्ठविवि धरणिमोहरसभंतें ॥
मइं एवहिं दुज्जसभायणेण भायर काइं जियंतें ॥ ४ ॥

5

सज्जणकरुणें सज्जणु कंपइ तं णिसुणिवि भरहाणुउ जंपइ ।
जइयहुं हउं सिसुत्ति सहकीलिउ तइयहुं पइं वि किं ण परितोलिउ ।
मज्झु वि तुज्झु वि कवणु पराहउ मज्झु वि तुज्झु वि कवणु महाहउ ।
जे गय ते सयल वि मग्गिवि मिसु भावइ भोउ ताहं णावइ विसु ।
तेत्थु ण काइं वि दोसु तुहारउ वंदणिज्जु तुहुं जगि गरुयारउ ।
जइ एवहिं धरित्ति ण समिच्छहि तो जं दिण्णी तहु जि पयच्छहि ।

4. १ MBP जं दुव्वयणेहिं. २ M महुं खम करि. ३ MBPK °णिबधणु. ४ MBP पाण.
5. १ MBP किं ण पइं मि. २ P adds after this. तुहुं जि जेट्ठु महु सामि महारउ. ३ MPK तो.

10 अणीयउ प्रतीन्द्रः, उपमां प्रापितो वा.
4. 7 *a* °छंदु °वशत्वम्.
5. 1 *b* भरहाणुउ भरतानुजो बाहुबलिः. 4 *b* भावईत्यादि—भोगस्तेषां विषमिव प्रतिभासते.

तहिं अवसरि वयणेहिं णिरोहिउ मंतिहिं भूमिणाहु संबोहिउ ।
सुउ संताणि थवेवि महाबलि गउ केलासु परायउ भुयबलि ।

घत्ता—वणु जंतु मुयंतु णरिंदसिरि महि महंतु अहिमाणिउ ॥
साकेयहु राउ विसण्णमणु मंतिहिं मंडुइ आणिउ ॥ ५ ॥

6

एत्तहि गिरिवरि बाहुबलीसें अइदूराउ पणावियसीसें ।
णिट्ठाणिट्ठउ णट्ठाणट्ठउ दिट्ठउ भट्टदुट्ठकम्मट्ठउ ।
अइदट्ठोट्ठरुट्ठपाविट्ठहिं हेट्ठाकोट्ठगयहिं दप्पिट्ठहिं ।
जो णउ दीसइ कुंठियवायहिं मंसासिहिं मज्जवहिं सवायहिं ।
वयणुग्गयगहीरजयकारें सो जिणु संथुउ तेण कुमारें ।
रोसु तुज्झु रोसेण व णिग्गउ राउ ण याणहुं कहिं लग्गउ ।
पइं मेल्लिवि दोसु वि दोसायरि थियउ कलंकमिसेण व ससहरि ।
तुह झाणग्गिभएण व णट्ठउ मोहु मोहणोसहिहिं पइट्ठउ ।
पइं तासिउ बहुारियसंगउ लोहु वि सव्वलोहभावं गउ ।
कंदप्पहु वि दप्पु पइं साडिउ कालहु उप्परि कालु भमाडिउ ।
तुहुं णिग्गंथु अणीहियगंथउ तवणियमं थउ दावियपंथउ ।
विज्जा णावइं पइं जम्मंबुहि उल्लंघिउ तुहुं रवि हरि हरु विहि ।
एम देउ गरु भत्तिइ वंदिवि मिच्छादुक्किउ गरहवि णिंदिवि ।
णावइ भवतरुमूलुप्पाडणु करिवि ससिरवरि चिहुरुप्पाडणु ।

४ MBP मंडइं.

6. १ MBP पणामिय°. २ G कुट्ठिय°. ३ P दोसु दोसायरि. ४ MP मोहणोसहहिं. ५ MB सव्वु लोह°. ६ MBT °मत्थउ; T records a p तेम णिमत्थउ इति पाठे ज्ञानावरणविनाशकः. ७ MB गरहेवि; P गिरिहिं वि. ८ MBP ससिरि वरचिहुरु°.

9 अहिमाणिउ अभिमानवान्. 10 मडुइ बलात्कारेण.

6. 2 *a* णिट्ठाणिट्ठउ परमानुष्ठाने स्थित., णट्ठाणट्ठउ नष्टानर्थः. 3 *b* हेट्ठाकोट्ठ° अधोमुखम्. 4 *a* कुंठियवायहिं प्रमाणबाधितवचनैः, *b* मज्जवहिं मद्यपैः, सवायहिं श्वपाकैश्चाण्डालैः. 9 *b* लोहे त्यादि- लोभोऽपि सर्वलोहानि सुवर्णादीनि तन्मयत्व गतः 11 *b* तवणियमं थउ तपसि नियमे च स्थितः. 14 *b* ससिरवरि समस्तके.

घत्ता—सर पंच वि घल्लिय वम्महेण धणु रइ बिण्णि वि मुक्कइं ॥
पडिवण्णइं पंच महव्वयइं पयजुयपाडियसक्कइं ॥ ६ ॥

7

णत्थि उवाणहउ सयणासणु मुक्कउं छत्तु असेसु विहूसणु ।
विसहइ दंसमसयसीउण्हइं छुहजणतुव्वयणाइं सयण्हइं ।
चरिय णिसेज्ज सेज्ज रइ अरइ वि वहबंधणु गयजण वणवसइ वि ।
सीह सरह तणु लग्ग ण वारइ मुणि जच्चिण्णहि चित्तु ण पेरइ ।
जल्लमलेहिं मि लित्तउ अच्छइ वउसक्कारु किं पि ण समिच्छइ ।
असुहसुहेसु समत्तणु मण्णइ विविहातंक रोय अवगण्णइ ।
लोयकएहिं ण मुज्झइ दोहिं मि सक्कारेहिं पुरक्कारेहिं मि ।
अहंसेण अलाहु रिसिसारउ पण्णपरीसह सहइ भडारउ ।
वयसमिदिंदियरुंभणु लोउ वि अचेलक्कावासयजोउ वि ।
ण्हाणविवज्जणु महिसंसोवणु दंताधोवणु कयठिदिभोयणु ।

घत्ता—वणि णिवसइ दुक्खसयइं सहइ ण चवइ थोवउ जेंवइ ॥
परमिट्ठि करइ णिहु वि जिणइ मणु वेरग्गें भावइ ॥ ७ ॥

8

एम चरंतु चरित्तु सुदुद्धरु महि विहरंतु पइट्ठु वणंतरु ।
तहिं थिउ एक्कु वरिसु लंबियकरु वेल्लीवलयहिं वेढिउं णं तरु ।
जासु अंगि पयघट्टियसिंगहं कंडुविणोउ सरइ सारंगहं ।
जासु वच्छि फणिमणि पविराइउ बहुसो विसहरेहिं हाराइउ ।

7. १ MBP सतण्हइं; T सयण्हइ. २ B जच्चिहे. ३ MBP अहंसणु. ४ M अचेलक्क आवासयजोइ वि; B अचेलक्क पवासयजोउ वि. ५ MP दताधोयणु; B दंताभोयणु.

8. १ BP सुदुद्धरु. २ MBP णं वेढिउ.

---

7. 1 *a* उवाणहाउ उपानहौ. 2 *b* सयण्हइं सतृष्णानि. 4 जच्चिण्णहि याच्ञायाम्. 5 *b* वउसक्कारु शरीरसंस्कारः. 8 *b* पण्ण° प्रज्ञा. 9 *a* लोउ केशलोचः; *b* °आवासय° आवश्यकानि. 10 *a* °संसोवणु संस्वपनं शयनम्.

8. 4 *b* हाराइउ हार इवाचरितम्.

जासु गम्मु कयमयजलण्हवणउं आयउ करिहिं करडकंडुयणउं ।
चरणंगुट्ठयणक्खि णिहिज्जइ सरहलु वणयरणरहिं णिसिज्जइ ।
देहि चडंति जासु सुरघरिणिहिं उल्लूरिय लय णहयरतरुणिहिं ।
तणुकंतीइ जासु हयछाया हंस वि हरियवण्ण संजाया ।
जासु रत्तकंदासिइ[3] वट्टइ पण्हिय सूयरु घोणइ[4] घट्टइ[5] ।

घत्ता—आसण्णइं जासु मुणीसरहो तवपहावउवसंतइं ॥
करि केसरि णउलइं फणिउलइं सह हिंडंति रमंतइं ॥ ८ ॥

9

एक्कहिं दियहि पउत्तु सपत्तिइ[1] तासु भरहु गउ वंदणहत्तिइ ।
थुणइ णराहिउ पयपडियल्लउ पइं मुएवि जगि को वि ण भल्लउ ।
पइं कामें अकामु पारद्धउ पइं राएं अराउ कउ णिद्धउ ।
पइं बालें अबालगइ जोइय पइं अपरेण वि परि[2] मइ ढोइय ।
पइं णियभुयबलेण हउं जोक्खिउ पइं जि पुणु वि कारुण्णें रक्खिउ ।
पइं महु दिण्णी पुहइ सहत्थें[3] तुहुं परमेसरु[4] जगि परमत्थें ।
परउवयारि[5] धीर दमवंता महि मुएवि णियमेणुवसंता ।
पइं जेहा जगगुरुणा जेहा एक्कु दोण्णि जइ तिहुयणि तेहा ।
अत्थि रसणफंसणरसलालस अम्हारिस घरि घरि जि कुमाणुस ।
रोसवंत हियपर विस्संभर पावबहुल परवस अप्पंभर ।

घत्ता—हा मइं बहुकम्मपरव्वसेण विसयबलाइं ण महियइं ॥
एक्कहो णियजीवहु कारणिण जीवसयाइं वि वहियइं ॥ ९ ॥

३ MBPK कंदाराइ. ४ MB घोणें. P घोणिहि. ५ B घुट्टइ

9. १ BP °भत्तिइ. २ B सरे मइ. ३ M समत्थें, but records a p सहत्थें. ४ MB परमेसर. ५ MBP °उवयार°.

---

6 *b* सरहलु शरफलम्, णिसिज्जइ तीक्ष्णीक्रियते. 9 *a* रत्तकंदासिहि रक्तकन्दाशया; *b* पण्हिय पार्ष्णिः; घोणइ मुखाग्रेण.

9. 1 *a* सपत्तिइ स्वपदातिना. 2 *a* °पडियल्लउ पतितः. 3 *a* अकामु वैराग्यम्; *b* अराउ वीतरागता, णिद्धउ स्नेहलः पुष्टो वा. 4 *a* अबालगइ विद्वद्गतिर्मोक्षगतिः; *b* परि अर्हत्सिद्धस्वरूपे परमात्मनि. 11 महियइ मथितानि.

10

इंदचंदवंदारयवंदें तहिं अवसरि बाहुबलिमुणिंदें ।
एक्कहु जीवहु गुण मणि भाविय [1]राय रोस दोण्णि वि उड्डाविय ।
तिण्णि वि सल्लइं हियउद्धरियइं तिण्णि वि रयणइं लहु [2]संभवियइं ।
तिण्णि वि डंभ[3] मुक्क संखेवें गारव तिण्णि विवज्जिय देवें ।
चउगइकम्मणिबंधणर[4]मियउ सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ ।
पंचमहव्वयाइं अविहंडइ पंचासवदारइं णिच्छ[5]ड्डुइ ।
पंचिंदियइं कयाइं णिरत्थइं पंच वि णाणावरणइं गंथइं ।
[6]छावासयउज्जमु [7]सविसेसिउ छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ ।
छह लेसहं परिणामु [8]वइट्ठइं छ वि दव्वइं पच्चक्खइं दिट्ठइं ।
सत्त भयाइं हयाइं गहीरें सत्त वि तच्चइं णायइं धीरें ।
अट्ठ वि मय णिट्ठविय अदुट्ठें अट्ठ सिद्धगुण भरिय वरिट्ठें ।
णवविहु बंभचेरु परिपालिउ णवपयत्थपरि[9]माणु णिहालिउ ।

घत्ता—द[10]सविहु जिणधम्मु वि[11]याणियउ एयारह हयजडिमउ ॥
[12]अवियारहं धीरहं सावयहं बारह भिक्खुहुं पडिमउ ॥ १० ॥

11

तेरह किरियाठाणइं मुणियइं तेरहभेय चारित्तइं गणियइं ।
चोद्दह गंथमला वि समुज्झिय [1]चोद्दह भूयगाम लइं बुज्झिय ।
पण्णारह पमाय मेल्लंतें पुण्णपावभूमिउ जाणंतें ।
सोलहविह कसाय पसमंतें सोलहविह[2]वेयणेसु रमंतें ।

10. १ BP राय दोस. २ MBP समरियइ; K संभावियइं but corrects it to संभरियइं. ३ MBP वेय. ४ P रसियउ. ५ BP णिच्छंडइ. ६ B छावासउ. ७ PK सुविसेसिउ. ८ B उवट्ठइ. ९ MBP परिणामु. १० MB दहविहु. ११ MP वियारियउ. १२ M अवि बारह, but records a *p* अवियारहं.

11. १ B चउदह. २ MBP °वयणें सुमरंतें.

10. 1 *a* °वंदें वन्येन. 7 *b* गंथइं परिग्रहरूपाणि. 9 *a* वइट्ठइं उपदिष्टानि सर्वज्ञेन.

11. 4 *a* सोलहविह कसाय कषायाः क्रोधमानमायालोभाः प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाः सन्तः षोडशविधा भवन्ति.

अवि य असंजमोह सत्तारह जाणिवि संपराय अट्ठारह ।
एउणवीस वि णाहज्झयणइं वीसविहइं असमाहीठाणइं ।
एक्कवीस सवल वि णिरु णीसइं सहिवि दुवीस दुसज्झ परीसह ।
तेवीस वि सुत्तयडइं सुत्तइं चउवीस वि जिणतित्थइं होंतइं ।
पंचवीस भावणउ धरंतें छव्वीस वि पुहवीउ णियंतें ।
सत्तवीस जइगुण सुमरंतें ।
अट्ठवीस णियचित्ति समप्पिवि पवैरायारकप्प पवियप्पिवि ।
एउणतीस वि दुक्कियसुत्तइं तीस मोहठाणइं बलवंतइं ।
एक्कतीस मलवाय धुणंतें जिणुवएस बत्तीस मुणंतें ।

घत्ता—थिरु सुक्कझाणु आऊरियउ घाइचउक्कु पणट्ठउ ॥
उप्पाइउ केवलु मुणिवरेण लोयालोउ वि दिट्ठउ ॥ ११ ॥

12

तो सुर चलिय समउ सुरिंदें तारायणु चल्लिउ सहुं चंदें ।
णरवइ धाइय समउ णरिंदें उरय समागय सहुं धरणिंदें ।
तेहिं कसायविसायवियारउ संथुउ सिरिबाहुबलि भडारउ ।
रायचक्कु पइं तणु परिगणियउं कम्मचक्कु झाणाणलि हुणियउं ।
देवचक्कु तुह अग्गइ धावइ चक्कु वि चक्किहि रमणु ण भावइ ।
पइं दिट्ठइं रिसि[3] राउ ण वड्डइ पइं मुएवि को णरयहु कड्डइ ।
जीवरासि णिब्भरु विहडंती विहुरंभोहिविवरि णिवडंती ।
भोयासत्तएण पुहईसरु दिक्ख लेवि णिज्जिउ वम्मीसरु ।

३ P दुसज्झ दुवीस. ४ MBP संतइं. ५ P सुअरंतें. ६ MBP add after this: पुणु वि तेण मुणिणा भयवंतें. ७ P एम ण यारकप्प. ८ MBP जिणउवएस. ९ P लोयालोय.

12. १ MBP read the first two lines as: ता सुर चल्लिय समउ सुरिंदें, उरय समागय सहुं धरणिंदें; णरवइ धाइय समउं णरिंदें, तारायणु चल्लिउ सहुं चंदें. २ MB वयणु; P रयणु; T रमणु रमणीयम्. ३ MBP सिरिराउ. ४ MBP णिरु भवि हिंडंती. ५ MBK विवडंती. ६ P सुहईसरु. ७ BPK णिज्जिउ.

6 *a* एउणवीस वि णाहज्झयणइं उक्कोड–णागे–कुम्म–अंडय–रोहिणि–सेल–दंव–संघादे । मोदंगिमल्लि–चंदिमा–तावद्दव–तिको–तडौया–किणे । सुंसुकेय–अवरंकके–णंदिफलं–उदगणाह–(मंडूक)–पुंडरिगोयेणि इत्येकोनविंशतिर्नाहज्झयणाइं.

12. 5 *b* रमणु रमणीयम्.

को किर भंण्णइ तुज्झ समाणउ तुहुं जि मुंडकेवलिहिं पहाणउ।
एम थुणंतें बुद्धिसमिद्धें इंदें वेउव्वियउ खणद्धें।

घत्ता— पेउमासणु धवलु चमरजुयलु एक्कु जि छत्तु मणोहरु॥
दीसइ पप्फुल्लिउ पंडुरउ णं तवसरि इंदीवरु॥ १२॥

13

पयणियजणणमरणविड्डमरइं संसमंतु भाउग्गयतिमिरइं।
देंतु देसजइजइवरचरियइं संबोहंतु भव्वपुंडरियइं।
पायपोमपाडियसंकंदणु भूमि भमंतु सुणंदाणंदणु।
गउ केलासहु पावपरंमुहु समवसरणि णियतायहु संमुहु।
आसीणउ पसण्णु पसमियकलि देउ समाहि बोहि महु भुयबलि।
आयरणाणेलंभसंतुट्ठउ एत्तहि णरणारीयणदिट्ठउ।
उज्झाणयरिहि भरहु पइट्ठउ उरयमाणि हरिवीढि वइट्ठउ।
वज्जंतहिं जयवज्जणिहायहिं गाइयणारयतुंबुरुगेयहिं।
दरिसियमेइणिरिद्धिविहोयहिं उव्वसिरंभाणट्टविणोयहिं।
मंडलियहिं मंडियणियवक्खहिं अहिसिंचिउ मंगलघडलक्खहिं।

घत्ता—चउसट्ठि सरीरइ लक्खणइं बहुवंजणइं अणिंदहो॥
जं णिहिलहं भारहणरवइहिं तं बलु भरहणरिंदहो॥ १३॥

14

वण्णु तत्ततवणीयपहायरु सासणु जासु चक्कलच्छीहरु।
वज्जरिसहणारायणिबंधेउ समचउरंसु ठाणु रुइरिद्धउ।

८ K भण्णउं and gloss भणामि. ९ MBP हरियासणु धवलु.

13. १ MBPT सक्कंदणु. २ MBP णाणलंभि. ३ MBP °णारीयणि. ४ MBP खंडियसविवक्खहिं. ५ M बहुवेंजणइं; BP बहुविंजणइं. ६ M °णरवरहिं.

14. १ MBP चक्कु. २ MBP °णिबद्धउ.

---

13. 1 *a* विड्डम° भयम्; *b* संसमंतु उपशमयन्. 3 *a* संकंदणु इन्द्रः. 8 *a* णिहायहिं समूहैः. 9 *a* °विहोयहिं विभोगैः. 11 लक्खणइं शंखकुलिशादीनि.

14. 1 *b* चक्कलच्छीहरु चक्रशोभाधरम्.

पुण्णपहावें अतुलु वि लद्धउ छक्खंडु वि महिमंडलु सिद्धउ ।
दोण्णि तीस सहसाइं सुदेसहं दोसत्तरि पुरवरहं पयासहं ।
णवइ णव जि दोणामुहसहसइं पट्टणाहं अडदाल सहरिसइं ।
खेडहं सोलह ताइ पउत्तइं चोद्दह संवाहणहं णिरुत्तइं ।
कलवकणिसभरभारियसीमहुं छण्णवइ जि कोडिउ वरगामहुं ।
सत्तसयाइं कुकुच्छिणिवासहं पंच तहं मि धरियपरिहासहं ।
अट्ठवीस वणदुग्गइं रिद्धइं छप्पण्णंतरदीवइं सिद्धइं ।
सहसट्ठारह मेच्छणरेसहं बत्तीस जि मंडलियमहीसहं ।

घत्ता—देवीहिं दुतीस बत्तीस पुणु मेच्छणराहिवदिण्णहं ॥
बत्तीससहस अवरुद्धियहं णिरु णिरुवमलायण्णहं ॥ १४ ॥

15

धरि भावाणुविभावपयासइं णडहं णडंति दुतीससहासइं ।
चउरासीलक्खइं मायंगहं तेत्तीयं जि रहाहं सरहंगहं ।
तइकोडिउ किंकरहं अहंगहं अट्ठारह भणियाउ तुरंगहं ।
चुल्लिहिं कोडि रसायणरसियहं सट्ठइं तिण्णि सयइं भाणसियहं ।
करिसणि णंगरकोडि पयट्टइ फलभारेण धरित्ति विसट्टइ ।
कालणामु णिहि देइ विचित्तइं वीणावेणुपडहवाइत्तइं ।
णिवहु महाकालु वि संजोयइ पंडु देइ णाणाविहवण्णइं ।
सालिवीहिपमुहइं बहुधण्णइं असिमसिकिसिउवयरणइं ढोयइ ।
णेसप्पु वि सयणासणभवणइं वत्थइं पोमु पिंगु आहरणइं ।

३ MBP छक्खड. ४ MP पट्टणाइं *b* ५ MBP संवाहणइं. ६ MBP पचंतहं. ७ M मेंछ°. ८ P °सहासहं. ९ M मेंछ°. १० MBP °कण्णह. ११ MP अवरुद्धियहं.

15. १ M णर्टातेउ, B णर्डातहु. २ MBP लक्खहं. ३ MBP तेत्तियइं. ४ MBP सारंगहं. ५ M तईयकोडिउ ६ B सड्डइ. ७ MBP लगल°. ८ M धरत्ति°. ९ MBP omit this foot. १० MBP omit this foot. ११ MBP add after this. सव्वइं धण्णइं सव्वरमोहइं, पंडु वि णिहि वि देइ अविरोहइं.

8 *a* कुकुच्छिणिवासहं रत्नोत्पत्तिस्थानानाम्.

15. 4 *b* भाणसियह रसवतीकारपुरुषाणाम्. 5 *b* विसट्टइ स्फुटति. 9 *a* णेसप्पु नैसर्पो निधिः.

अत्थइं सत्थइं मोणवु[12] वेंतउ संखु ण थाइ सुवण्णु वहंतउ।
सव्वरयणणिहि सव्वइं रयणइं देइ सिरीवइ उरयलि णयणइं।
घत्ता—असि चक्कु दंडु छत्तु वि धवलु पहरणसालहि जायइं॥
कागणि मणि चम्मु वि सिरिभवणे[13] सइं णरणाहहु आयइं॥ १५॥

16

रुप्पयमहिहरि सोहियवयणहं संभउ हरिकरिणारीरयणहं।
पच्छइ पुणु संपत्तइं णरवइ घरवइ थवइ पुरोहिउ बलवइ।
चत्तारि वि हूयइं साकेयइ वरसिरधयवारियरवितेयइ।
णव णिहि ते वि तहिं जि संभूया संपाइयइच्छियहलरूया।
णिच्चमेव तणुरक्खालुद्धहं सोलहसहस सुरहं गणबद्धहं।
विविहंघरइं[1] कणयधरणियलइं विविहासणइं विविहसयणयलइं।
विविहइं[2] छत्तइं मुत्ताहामइं[3] विविहइं आहरणाइं सकामइं[4]।
विविहइं वत्थइं कयवउसोक्खइं[5] विविहइं सरसइं भोयणभक्खइं।
को सो[6] बंभु कासु सुकइत्तणु को वण्णइ चक्कवइपहुत्तणु।
णारी रयणत्तणविक्खायइ[7] खेयररायवंससंजायइ।
रूवें सोहग्गें लायण्णें णेहें रइयसुरयणेउण्णें।
अब्भुयभूयइ जणमणमहइ सुहुं भुंजंतउ समउ सुहद्दइ[8]।
घत्ता—सिरिरमणीवरघणथणजुयलसिहरुप्पेल्लियउरयलु॥[9] [10]
थिउ उज्झहि भरहणराहिवइ पुप्फदंततेउज्जलु[11]॥ १६॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहविलासवण्णणं णाम
अट्ठारहमो परिच्छेओ समत्तो॥ १८॥

॥ संधि ॥ १८॥

१२ MBP माणउ. १३ M °भुवणे.

16. १ MB घर घर. २ MBP विविहइं घरइं. ३ P मोत्तिय°. ४ MP संकामइ. ५ MB कयउवसोक्खइं. ६ M सइ. ७ MBP रयणत्तणि. ८ M समुद्दइ. ९ MB °रवणी°. १० M °जुयलु. ११ MB पुप्फयंत°; P पुप्फयंतु.

13 सिरिभवणे भाण्डागारे.

16. 2 *b* घरवइ भाण्डागारिकः, थवइ स्थपतिः. 7 *b* सकामइं समीप्सितानि चित्तानुरागजनकानि वा. 8 *a* कयवउसोक्खइं कृतवपु-सौख्यानि.

XIX

चिंतइ भरहेसरु महिपरमेसरु दविणें किं किर किज्जइ ॥
जइ णियमियचित्तहं पउं सुपत्तहं दियहि दियहि णउ दिज्जइ ॥ ध्रुवकं ॥

1

एक्कहिं दिणि पयंणावियणिवइ वसुहाहिवु णियमणि चिंतवइ ।
किं छज्जइ विणु चंदें गयणु किं छज्जइ छिण्णंणासु वयणु ।
किं छज्जइ णाणु णिरुवसमउं किं छज्जइ रज्जु अविक्कमउं ।
किं छज्जइ तणयविरहिउ कुलु किं छज्जइ पिक्कउं कडुयफलु ।
किं छज्जइ भीरुहि गज्जियउं किं छज्जइ अडयणलज्जियउं ।
किं छज्जइ मयडहु भूसणउं किं छज्जइ अविणियरूसणउं ।
किं छज्जइ हिमहयकमलवणु किं छज्जइ सलिलविरहिउ घणु ।
किं छज्जइ परवसजीवें जणु किं छज्जइ तिट्ठालुयदाविणु ।

घत्ता—जं दिण्णु ण पत्तहु गुणगणवंतहु पहउं बुहयणु पेच्छइ ॥
मणयइ मलबंधणु तं ... अट्ठारह भाणय... गच्छइ ॥ १ ॥
चुल्लिहिं कोडि रसायणरसियहं. सावउं धणु मुंयहो पउ वि ण... .

2

णउ ण्हाणु विलेवणु परिहणउं तूंयाविंदु ण माणिउ घणथणउं ।
जवणोलतंवसित्थइं खरइं ताइं वि सीसक्कभारधरइं ।
एंसीरसु दोण्णि कुलत्थकणं अच्छउ कंजिउ धाडिवि सयण ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

श्यामरुचि नयनसुभग लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।
भरतच्छलेन सप्रति कामः कामाकृतिमुपेतः ॥ १ ॥

1. १ MBP °णामिय°. २ MBP वसुहाहिउ. ३ M किं ण तासु. ४ MBP णिविक्कमउं. ५ MBP तणएं रहिउ. ६ MBP कडुयउ पिक्कफलु. ७ MBP विप्पियहसणउं. ८ MBP सलिलें रहिउ. ९ MBPK °जीवि. १० B सचियधणु. ११ P मुयहहु पउ वि ण गच्छइ.

2. १ MBP तियविंदु. २ MB जवणालवंन. ३ M एरसीरसु. ४ MBP °कणु. ५ MBP सयणु.

---

1. 7 *b* अडयण° पुंश्चली. 12 पउ वि पदमात्रमपि.

2. 1 *b* तूयविंदु आक्रन्दम्. 2 *b* सीसक्क° कृकसं तुषम्. 3 *a* एसीरसु अलसीतैलम्.

असरालु लोहधणु धरिवि मणे जेवंति दीर्णं गरुए वि छणे ।
रिणु मग्गमाण हिंडंति पुरे जणरंजणु पत्तु करेवि करे ।
णिव्वरंयरु पूयफलु खंति किह पंक्केण जि रवि अंत्थवइ जिह ।
पंचिंदियंत्थु सुहुं खंचियउं लुद्धहिं अप्पाणउ वंचियउ ।
जरचीरणियासण फरुससिर दालिद्दिय सधण वि किविण णर ।
ण वियाणइ दुक्कंती णियइ णियहत्थहु हत्थु ण पत्तियइ ।
बंधइ मेल्लइ पुणु पुणु मवइ धणु गुज्झंपवेसहिं पुणु ठवइ ।
सा सट्ठि ण पूरइ किह भरमि मणि जूरइ काइं दइव करमि ।
लोहिट्ठु दुट्ठु पाविट्ठु खलु पाहुणयहु उत्तरु देइ खलु ।

घत्ता—गेहिणि गय गामहो इच्छियकामहो भणु णं भल्लिइ भिज्जइ ॥
मज्झ वि दुक्खइ सिरु तुहुं आयउ घरु भणु एवहिं किं किज्जइ ॥ २ ॥

3

किं किज्जइ थेरें कामुएण किं सत्थें पावपुरिससुएण ।
कुलेपुत्तएण किं णित्तवेण समएण वि किं किर णित्तवेण ।
अवि विज्जाहरवरकिंणरेण णिव्विणएं समएं किं णरेण ।
धरणियलरंधपडिपूरएण किं लुद्धदविणपब्भारएण ।
सा राई जा ससिविप्फुरिय सा कंता जा हियवइ भरिय ।
सा विज्जा जा सयरु वि णियइ तं रज्जु जम्मि बुहयणु जियइ ।
ते बुह जे बुहहं ण मच्छरिय ते मित्त णं जे विहुरंतरिय ।

६ P हीण. ७ M णिब्भरु पूयप्फलु; BP णिव्वरु पूयप्फलु. ८ MP एक्केण वि; B पक्केण वि. ९ MBP अत्थमइ. १० MBP °दियत्थ° ११ MB गुज्झपएमहिं परिठवइ; P गुज्झपएहिं परिट्ठवइ. १२ M सिट्ठु. १३ MBP महु मणु भल्लिइ.

3. १ MBP पावपसंसिएण. २ MBPK कुलउत्तएण. ३ MBP °परिपूरएण. ४ B रयणी. ५ B हरिय. ६ MBP सपरु. ७ M वहहिं ण मउच्छरिय; BP बुहहिं ण मच्छरिय. ८ P जे वि.

4 *a* असरालु बहुलम्; *b* छणे पर्वणि महोत्सवे दीपोत्सवे वा. 6 *a* णिव्वरयरु निर्व्ययतरं जीर्णमित्यर्थः. 8 *a* °णियासण अधोवस्त्रम्. 10 *b* गुज्झपवेसहिं गुह्यप्रदेशप्रवेशैः. 11 *a* सट्ठि ण पूरइ षष्टिर्न पूर्यते.

3. 1 *b* सत्थें शास्त्रेण; °सुएण श्रुतेन. 2 *a* णित्तवेण निस्त्रपेण निर्लज्जेन व्रतरहितेन वा; *b* समएण सम्यक्त्वेन; णित्तवेण तपोरहितेन. 3 *b* समएं समदेन. 5 *a* राई रात्रिः. 6 *a* सयरु वि णियइ सकलमपि पश्यति. 7 *b* विहुरंतरिय दुःखे अन्तरिताः.

तं धणु जं भुत्तउं दिणि जि दिणि जं पुणरवि दिण्णउं विहलयाणि ।

घत्ता—सा सिरि जा गुणणय गुण ते जे गय गुंणिहिं वित्तु हयदुरियउ ॥
गुंणि ते हउं मण्णमि पुणु पुणु वण्णमि जेहिं दीणु उद्धरियउ ॥ ३ ॥

4

इय चिंतिवि राएं दविणगइ हक्काराविय णाणा णिवइ ।
ते आइय संचियधम्मधण जे जोयकिरणगणसुहमण ।
तेंगुणपरिक्खसुपयासिरयं सज्जीयवीयणित्तंकुरयं ।
तरुपल्लवपिहियं पंगणयं णं वणसिरिदिण्णालिंगणयं ।
चप्पंति ण ते विरया गिहिणो परिपालियसावयवयविहिणो ।
कय जेहिं तसंतहुं तसहुं दय परंताविरि अलियवायविरयं ।
णादिण्णउं कहिं वि समिच्छियउं णउ अण्णु कलत्तु णियच्छियउं ।
घरसंगपमाणु जेहिं गहिउ रयणीभोयणविरइसहिउ ।
दिसिविदिसागमणमाणकरणु भोगोवभोयसंखाधरणु ।
विरमणु अणत्थदंडासियउं भावियउं जेहिं जिणभासियउं ।

घत्ता—सामाइउं पोसहु अतिहिपरिग्गहु कामकोहपरिहरणें ॥
किउ जेहिं पसत्थहिं पवरघरत्थहिं सहुं सण्णासणमरणें ॥ ४ ॥

5

तं भरहें विप्प परिट्ठविय कर मउलिवि सइं सिरेण णविय ।
उववीयहु केरउ चिंधधरु दंसणहरि घल्लिउ एक्कु सरु ।

९ MBP गुणहिं १० M हउ गुण ने मण्णमि, B गुण हउं ते मण्णामि. P गुणि हउ ने मण्णामि.

4. १ MB ते गुण°. २ MBP परताविर°; K °ताविरि but corrects it to ताविर. ३ MP add after this: परधणु परवत्थु दुगुंछियउ. ४ MBP add after this: दिण्णउ णियजोग्गु (P °जोगु) पडिच्छियउ, कुलवतु विवाहिउ वछियउ. ५ B °गमणकरणु. ६ MBP °भोग°. ७ MBP समत्थहिं.

8 *b* विहल° दुःखितः. 9 गुणणय गुणेण नता.

4. 2 *b* °जोय° चन्द्र. 3 *b* °णित्तकुरय निर्गताङ्कुरम्. 6 *a* तसंतहुं त्रस्तानाम्; तसहुं त्रसजीवानाम्.

5. 2 *a* उववीयहु कार्पाससूत्रस्य, यज्ञोपवीतस्येत्यर्थः.

वयवंति णिरूविय दोण्णि सर सामाइयट्ठि पुणु तिण्णि सर।
पोसहवंतइ चत्तारि सर सच्चित्तविरत्तइ पंच सर।
अणिसाभोयणि उंडुमाण सर दढबंभचेरधरि सत्त सर।
आरंभविवज्जिइ अट्ठ सर अपरिग्गहि कय णवसुत्त सर।
अणुमोयणमुक्कइ दह जि सर एयारह सर हयमयणसर।
उद्दिट्ठचायकारिहि विहिय ए दियवर राएं सुहुं णिहियँ।
तंवु बंभ जेण घोसंति जए बंभणकुलु संठिउ तेण वए।

घत्ता—चिरु सव्वु जि माणुसु पुणु णीइंवसु रिसहें खत्तु पवत्तिउ ॥
जिणपुज्जायारउ धम्मपियारउ भरहेण वि कउ सोत्तिउ ॥ ५ ॥

6

धणि वाणिज्जारउ जाणियउं किसियरु हलधारउ भाणियउ।
सो सोत्तिउ जो जिणवरु महइ सो सोत्तिउ जो सुतच्चु कहइ।
सो सोत्तिउ जो ण दुट्ठु भणइ सो सोत्तिउ जो णउ पसु हणइ।
सो सोत्तिउ जो हियँएण सुइ सो सोत्तिउ जो परमत्थरुइ।
सो सोत्तिउ जो णे मासु गसइ सो सोत्तिउ जो ण सुयणि भसइ।
सो सोत्तिउ जो जणु पहि थवइ सो सोत्तिउ जो सुतवें तवइ।
सो सोत्तिउ जो संतहुं णवइ सो सोत्तिउ जो ण मिच्छु चवइ।
सो सोत्तिउ जो ण मज्जु पियइ सो सोत्तिउ जो वारइ कुगइ।
सो सोत्तिउ जो जिणदेसियउ पण्णासतिकिरियहिं भूसियउ।

5. १ MB उदुमाण. २ P °चेरु धरि. ३ MBP संणिहिय. ४ MBP तउ बभु. ५ MBP पवत्तियउ. ६ MBPK धम्मवियारउ.

6. १ M सुतच्च. २ P पसु णउ. ३ MBP हियवयणु सुणइ. ४ M परमत्थ मुणइ, P परमत्थु मुणइ. ५ B मासु ण.

9 *a* तवु बंभ तपो द्वादशविधं व्रतानुष्ठानं वा ब्रह्म परमात्मस्वरूपम्; घोसंति प्रतिपादयन्ति; *b* वए व्रते पदे वा.

6. 9 *b* पण्णासतिकिरियहिं त्रिपञ्चाशता क्रियाभिः, ताश्च सम्यक्त्वमेकम्; अणुव्रतानि पञ्च; गुणव्रतानि त्रीणि; शिक्षाव्रतानि चत्वारि; अनस्तमित–सयम–जिनपूजा–ध्यानानि चत्वारि; चत्वारि दानानि; षड्विधं बाह्यं तपः; षड्विध प्रायश्चित्तम्; चतुर्विधो विनयः; नवविधं वैयावृत्यम्; पञ्चविधः स्वाध्यायः; द्विविधो व्युत्सर्गः; इति त्रिपञ्चाशत् क्रियाः.

घत्ता—जो तिलकप्पासइं दव्वविसेसइं दुणिवि देव गह पीणइ ॥
पसु जीव ण मारइ मारय वारइ परु अप्पु वि समु जाणइ ॥ ६ ॥

7

सो सोत्तिउ जाणसु एक्कु जिह लक्खाइं दिएसहं तेण तिह ।
वण्णासमकोडिचडावियइं गुणगणणाभेयं भावियइं ।
दिण्णाइं ताहं सुद्धासयइं भूसेप्पिणु वरकण्णासयइं ।
दिण्णाइं ताहं परतीरयइं सियसुहुमइं सिचयइं णीरयइं ।
दिण्णाइं ताहं मणिराइयइं कडिसुत्तकडयमउडाइयइं ।
दिण्णाइं ताहं मणमोहणइं घडपूरणदुद्धइं गोहणइं ।
दिण्णाइं ताहं देसंतरइं हयगयरहछत्तइं पंडुरइं ।
दिण्णाइं ताहं जियससहरइं धणकणभरियइं विविहइं घरइं ।
दिण्णाइं ताहं करभरधरइं सासणलिहियग्गहारपुरइं ।
आरामगामसीमइं सरइं दिण्णाइं ताहं णयरायरइं ।

घत्ता—महि कसणरवण्णी धवलि वि दिण्णी विप्पहं जिणतणुजाएं ॥
तिह जिह णउ खिज्जइ अज्जि वि दिज्जइ णिहिलें णिवइणिहाएं ॥ ७ ॥

8

अण्णहिं दिणि सुत्तें सयणहरे णरणाहें णिसि पच्छिमपहरे ।
दिट्ठी दुक्किय सिविणावलिय आगामिदोसजुत्ति व मिलिय ।
सुपहायकालि गउं सज्जियउ केलासु गंपि जिणु पुज्जियउ ।
संथुउ परमेसरु परमपरु जिण तुहुं चिंतामणि अमरतरु ।
तुहुं सरसु रसायणु अमयमउ तुहुं मयरकेउ रणि लद्धजउ ।

६ MBP दब्भविसेसइ.

7. १ B णीरियइ. २ MBPK धवल वि. ३ MBP अज्ज.

8. १ MBP सुत्तइ. २ MBP दिट्ठिय. ३ MP गमु. ४ MBP सुरसु. ५ MB रण°.

11 मारय मारकान्.

7. 1 *b* दिएसहं द्विजेशानाम्. 2 *a* °कोडि° परमप्रकर्षम्. 5 *a* मणिराइयइं रत्नजडितानि. 10 *b* °आयर° आकराः. 11 कसणरवण्णी कर्षणेन रमणीया, कृष्णा रमणीया च. 12 °णिहाएं °समूहेन.

तुहुं कामधेणु अक्खीणणिहि तुहुं पुरिसुत्तमु जणदिण्णदिहि ।
तुहुं सिद्धमंतु सिद्धोसहि वि तुह णामें णउ भक्खइ अहि वि ।
तुह णामें णासइ मत्तकरि कउं देंतु वि थक्कइ णरहु हरि ।
तुह णामें हुयवहु णउ डहइ परबलु गयपहरणु भउ वहइ ।
तुह णामें संतोसियखलउ तुट्टंवि जंति पयसंखलउ ।
तुह णामें सायरि तरइ णरु ओसरइ कोहकंदप्पजरु ।
तुह णामें केवलकिरणरवि णीरोय होंति रोयाउर वि ।

घत्ता—ण फलइ दुस्सिविणउं जणि अवसवणउं तिहुवणभवणुक्किट्ठइ ॥
पूरंति मणोरह गह साणुग्गह होंति देव पइं दिट्ठइ ॥ ८ ॥

9

इय वंदिवि पुच्छइ भरहवइ मइं दियवर णिम्मिय परमजइ ।
होहिंति अहिंसपवित्तियर कालेण किं णं भणु तित्थयर ।
किं अक्खमि हउं तुह केवलिहि णिसि दिट्ठहिं मइं सिविणावलिहिं ।
फलु काइं भडारा वज्जरहि संदेहु महारउ अवहरहि ।
परमेसर णाहिणरिंदसुउ पुण्णेण केण तुहुं अरुहु हुउ ।
पुण्णेण केण हउं चक्कवइ जायउ भारहभूयलविजइ ।
कंपावियसिहरिणियंबथलि पुण्णेण केण बाहुबलि बलि ।
उप्पण्णु पवट्टियदाणरहु पुण्णेण केण सेयंसपहु ।
पुण्णेण केण सोमप्पहहो हूयउ संभवु सोमप्पहहो ।
पुण्णेण केण पालियविणय संभूया सयल वि तुह तणय ।

६ M कमु देंतु; B कउ देंतउ; P कमु देंतउ. ७ BP °संकलउ. ८ P सायरु. ९ MB तिहुयणु भुयणुक्किट्ठइ.

9. १ P पुंछइ. २ MB °पवात्तियर°. ३ MBP णु. ४ P अरहतु हुउ. ५ MB °भूबल°; P °भूअल°. ६ MBP केण हुउ बाहुबलि. ७ MBP सेयंसु. ८ MBP संभउ. ९ MBPK add after this मइं पइं जेहा होहिंति कइ (P पइं मइं), कइ हलहर हरि पडिसत्तु (B पत्तिसत्तु) कइ; MBP add further: तवभट्ठकामिणिहिं बद्धमइ (P तवभट्ठ य कामिणिबद्धरइ), कइ होसहिं रुद्द रउद्दमइ; कासु वि किर होसइ कवण गइ, भो मयणकारिंदमयाहिवइ; एउ (P इहु) सयलु वि अक्खहि परम जइ.

8. 10 *a* संतोसियखलइं संतोषिताः खलाः याभिः; *b* °संखलउ शृखलाः. 13 तिभुवणभवणुक्किट्ठइ त्रिभुवनोत्कृष्टे.

9. 4 *b* अवहरहि अपनय.

13

जं दिट्ठउ धवलहं तणउ गणु तं चरिही णउ एक्कु जि सवंणु ।
संघाडएण भमिहिंति जइ जाणेप्पिणु दुस्समकालगइ ।
जं पइं सिविणुल्लइ तकियउं जं दिणयरमंडलु ढंकियउं ।
जं मेहहिं जगु अंधारियउ तं केवलु पुरउ णिवारियउ ।
जो दिट्ठउ सुक्खउ ढंखंतरु सो णरणारिहिं दुचरित्तंभरु ।
पुत्तइं उल्लंघियपिउवयइं होहिंति कलत्तइं पररयइं ।
किउ काइं वि णउ सहिहिंति परे कांणीण दीण खल घरि जि घरे ।
होहिंति मित्त कंड्डियवइर पिप्पलबबूलपायंव खयर ।
होहिंति विरुंवि णिप्फल विरस होहिंति मुणि वि बद्धामरिस ।

घत्ता—जिह जिह जिणु जंपइ वयणु समप्पइ भरहि भुवंणपंकयरवि ॥
तिह तिह तमु पहरइ दंसविसु पसरइ कुंदपुप्फदंतच्छवि ॥ १३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहसिविणयसंसयाउच्छणं
णाम एकुणवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १९ ॥
॥ संधि ॥ १९ ॥

13. १ MBP समणु. २ MBT ढंक°. ३ P दुचरित्तु. ४ MBPT वड्डिय°. ५ MB °पायर.
६ MBP विडव. ७ MB भुवणु. ८ P दसदिसि. ९ MBP भरहसंसयाउच्छणं.

13. 1 *b* चरिही चरिष्यति. 5 *a* ढंखतरु पत्रपुष्पफलरहितो वृक्षः. 8 *a* कड्डियवइर गृहीतवैराः.
11 कुंदपुप्फदंतच्छवि कुन्दपुष्पवत् शुभ्रा दन्तानां छविर्दीप्तिः.

XX

रिसहें भरहहु भासियइं चिरु पवहिं हउं गुज्झु ण रक्खमि ॥
भासइ गोत्तमु सेणियहो सुणि तिसट्ठिपुराणइं अक्खमि ॥ ध्रुवकं ॥

1

तहिं तइया देवें वुत्तु एम | णिसुणहि णंदण हो मणुयदेव ।
तेल्लोक्कु देसु पुरु रज्जु तित्थु | तवु दाणु गईहलु सुहपसत्थु ।
अट्ठ वि पारंभियपुण्णठाणि | साहेवा होंति महापुराणि ।
लोलंति पलोइज्जंति जेत्थु | दव्वइं तें लोउ भणंति एत्थु ।
सो केण वि किउँ ण कया वि धरिउ | जीवाजीवहं णिक्खुब्भु भरिउ ।
चलु णिच्चलु सो ससहावघडिउ | आयासणिवासु वि णेय पडिउ ।
बालिस कहंति जडयणहं हेउ | देवें सिट्ठारें कियेउ लोउ ।
दव्वाइं लोयउप्पायणाइं | महिमारुयवेसाणरवणाइं ।
जइ णत्थि ताइं तो लहइ केत्थु | णीरूवहु होइ णिरुं वि वत्थु ।
किं गयणि होइ पंकयपवित्ति | दीवाउ दीवि पज्जलइ वत्ति ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

फणिनि विमुञ्चतीव मेचकरुचि कचनिचयेषु योषिता-
मलकिषु मूर्च्छतीव हसतीव तमालतलेषु पुञ्जितम् ।
मदमुचि माद्यतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले
दिशि दिशि लिम्पतीव पिबतीव निमीलयतीव खञ्जणे ॥

P reads खण्डगे for खञ्जणे. GK do not give it.

1. १ P भासियए. २ MBP तेलोक्क. ३ MBP तवदाणगईहलु. ४ MP सट्ठु. ५ MBP तं लोउ. ६ P तेत्थु. ७ MBP किउ केण वि ण धरिउ. ८ MB णिक्खुत्तु; P णिखुत्तु; T णिक्खुब्भा निरंतरम्. ९ K कयउ. १० MBP ण रूवि वत्थु; K ण णरु वि वत्थु and gloss नरोऽपि वस्तं पि न भवति.

1. 1 चिरु पूर्वम्. 3 *a* तहिं समवसरणे. 5 *a-b* त्रैलोक्यादयोऽष्टौ पदार्था महापुराणे साधयितव्या भवन्ति. 6 *b* तें तेन कारणेन. 7 *b* णिक्खुब्भु निरन्तरम्. 8 *a* चलु णिच्चलु चलो जीवः पुद्गलापेक्षया; निश्चलो धर्माधर्माकाशकालापेक्षया. 9 *a* बालिस अज्ञाः; हेउ कर्ता; *b* सिट्ठारें विधात्रा. 10 *b* °वणाइं जलानि, 11 *b* णिरु वि अपि निश्चयेन.

धम्मत्थकाम णउ अत्थि जासु कहिं लब्भइ इच्छापसरु तासु।
णिक्किरियहु कहिं किरियाविसेसु णिक्कलुसहु होइ ण हरिसु रोसु।
विणु तिट्ठातंतें[11] णउ फलंति किह करणहरणबुद्धीउ होंति।
विणु छत्तें किं सांवडइ[12] छाहि सिवि लग्गी[13] किं कत्तारवाहि।

घत्ता—कुंभहु भिण्णउ कुंभयरु करउ कुंभु तं महु मणि भावइ॥
सिवु[14] अप्पणु[15] जगु अप्पउं जि करिवि काइं गुणवंतहं सावइ॥ १॥

2

विणु[1] घडयारेण[2] सरूउ[3] लेइ मिप्पिंडउ[4] जइ सइं कलसु होइ।
तो एक्कु कम्मु कत्तारु भणमि णं तो पुणु भेयविभिण्णु गणमि।
जइ ईसरु भुवणयलहु णिमित्तु तो तासु कवणु तंगुणविचित्तु[5]।
जइ णिच्चु ण तो परिणामरिद्धि णिप्परिणामहु कहिं कम्मसिद्धि।
विरएप्पिणु भंजइ[6] भुवणकोसु जइ एही दीसइ कील तासु।
जइ[7] सयल वि पसु णिक्किरिय करइ संघारसमइ ससरीरि धरइ।
पुणु पासु ताहं संजोयमाणु पावेण ण लिप्पइ किं अयाणु।
जइ लिप्पइ णउ दुरिएण सिध्दु तो किं अयसिरलुंचणि[8] असुध्दु।
जइ पभणह ण सिवु[9] सिवसु खंडु तो णाउं होइ किं हेमखंडु।
पुरदाह वइरिवह रुहिरपाणु णच्चेवउ किं संतहु विहाणु।

११ MBP तिट्ठातत्तें; T तृष्णा करणहरणाभिलाष. सैव तन्त्रम्. १२ MBKT सावडइ, P छावडइ. १३ P लग्गउ. १४ MBP सिउ. १५ P अप्पाणु.

2. १ K विण. २ MB घडयारएण. ३ MBP सरूउ. ४ MBP मिइपिंडउ. ५ MT तं गुणु विचित्तु. ६ MBP भण्णइ. ७ M जइ जयल, K जइ सयल. ८ P अयसिरि लुंचणि. ९ MBP सिउ.

14 *a* णिक्किरियहु निर्व्यापारस्य; किरियाविसेसु कार्योत्पत्तिविशेषः; णिक्कलुसहु कर्मरहितस्य. 15 *a* तिट्ठेत्यादि-तृष्णा करणहरणाभिलाषः सैव तन्त्र कारणमौषध वा तेन विना कथं करणहरणादिबुद्धयो भवन्ति, तथा नैवैताः फलन्ति. 16 *a* सांवडइ सपद्यते; *b* कत्तारवाहि कर्तृत्वव्याधिः 17 भावइ घटते. 18 सावइ शापं ददाति.

2. 3 *b* तंगुणविचित्तु कर्तृत्वगुणविचित्रम. 5 *b* कील क्रीडा. 6 *a* पसु कर्मबद्धा जीवाः सर्वे पशवः कथ्यन्ते; *b* ससरीरि धरइ स्वस्वरूपतां नयति.7 *a* पासु कर्मबन्धनं गले पाशो वा. 8 *b* अयसिर° ब्राह्मणस्य शिरः; असुद्धु ब्रह्महत्यायुक्तः. 9 *a* सिवसु शिवकला; *b* णाउं सीसकं नागम्; हेमखंडु सुवर्णखण्डम्.

परियाणिउं होंतउ जइ हरेण तो दाणव णिम्मिय काइं तेण ।
जइ वच्छल्लेण जि कियउ लोउ तो किं ण कियउ सव्वहु विहोउ ।

घत्ता—जिणणाहेण ण दिट्ठाइं मिच्छाविसबिंदुयणीसंदइं ॥
किं वण्णियइ कुवाइयहं सिवगयणारविंदमयरंदइं ॥ २ ॥

3

अण्णाणु ण याणइ लइं जि मग्गु णिव णरयविवरु सग्गापवग्गु ।
जइ जाइ जीउ सिवपेरणाइ तो किं कयायइ तवभावणाइ ।
को जाणइ केही हरहु चेट्ठ होसइ भीसण णिट्ठवियइट्ठ ।
कम्माणुय सा जइ भणसि एम ता पलइ सुयण संहरइ केम ।
माहेसर किं गोवइ थवंति जड मत्त पिसल्लय किं चवंति ।
अणिबंद्धउं महु णरजम्मयारि पिउ बंभयारि जणणि वि कुमारि ।
जिह सिवु तिह बंभु ण विण्हु अत्थि विणु हत्थिउलेण ण होइ हत्थि ।
विणु णरसंताणें मणुउ केम अणिहणु अणाइ जगु सिद्धु एम ।
सत्तेक्कपणेक्कसुरज्जुपिहुलि अहमज्झउड्ढभुवणग्गकुयलि ।
वेत्तासणझल्लरिमुरयरूवि चोद्दहकेयाउच्छेहभावि ।
तहु मज्झि परिट्ठिउ तिरियलोउ गयसंखदीवजलणिहिसमेउ ।
एक्केण एक्कु वेढियउ ताम छेहंलु सयंभूरमणु जाम ।

घत्ता—तहिं लवणण्णवमेहलइ मंदरमउडें मंडिउं भावइ ॥
जंबूदीउ पसिद्धुं जगि सयलहु दीवहु राणउ णावइ ॥३ ॥

१० MBP जिणणाहेण वि. ११ P दिट्ठियइं.

3. १ MBP कयाइ. २ MBP होही. ३ MBPT कम्माणुवसा. ४ MPK अणिबद्धइं. ५ MBP बंभणु विण्हु. ६ MBP °भुयणंतकुयलि. ७ M °मरवरूवि; BP मुरवरूवि. ८ BP चउदह°. ९ MB विठियउ. १० MBP छेयल्लु. ११ MBP लवणंबुहि°. १२ MP मंदिर°. १३ P वेढिउ. १४ MBP पसत्थु.

12 *b* विहोउ विशिष्टो भोगः. 13 मिच्छेत्यादि—मिथ्यात्वजलबिन्दूनां निष्यन्दो येषु गगनारविन्दमकरन्देषु.

3. 1 *b* णिव हे भरत, अथवा, हे श्रेणिक. 2 *b* कयायइ कृतया. 3 *b* णिट्ठवियइट्ठ निष्ठापितं ध्वस्तं इष्टं प्राणिनां वाञ्छितं यया. 4 *a* कम्माणुय कर्मानुसारिणी. 5 *a* माहेसर शैवाः; गोवइ शंकरः. 9 *a* सत्तेकेत्यादि—यथासंख्यं सप्तैकपञ्चैकशोभनरज्जुके विस्तीर्णे; *b* °कुयलि भूतले. 10 *b* °केया° रज्जवः; °उच्छेहभावि दीर्घत्वम्.

4

दहखेत्तभाय जहिं रिद्धिवंत छव्वरिसधारि वरसाणुमंत ।
दढकुलिसकवोडंचियपहाइं चउदारइं चोद्दह णइमुहाइं ।
सप्पुरिसचित्तु जिह तिह विसालु परिवड्डियमरगयरयणडालु ।
फलिहमयकुसुममंजरिसुसेउ पवरिंदणीलमयँहलणिकेउ ।
जंबूतरु जंबूदेवठाणु जसु देवँहिं दिट्ठउ धुवुँ णिवाणु ।
णं जगलच्छिहि भूसणवियार जसुवरि भमंति दो चंदसूर ।
णक्खत्तहं संख ण मुणि भणंति अम्हारिस जड कइ किं मुणंति ।
तहिं दीवि मेरुपच्छिमदिसाहि सीओयहि जलकीलियझसाहि ।

घत्ता—दक्खिणतीरि रम्मि विउले णीलइरिहि उत्तरदिसि मंडिवि ॥
गंधेलु णामें विसयविडु थिउ महिवहु णावइ अवरुंडिवि ॥ ४ ॥

5

जो पारियायचंपयकलंबमुचुकुंदकुंदमंदारसारसेरिंधगंधगुमुगुमियमहुयराली-मिलंतवयमोरकीरकलहंसकुररकारंडकोइलारावरम्मो ॥ १ ॥

जो मत्तदंतिगंडयलगलियमयतुप्पबिंदुचित्तलियवारिवियरंतणहंततियसिंद-कामिणीसिहिणघुसिणपिंगलियफेणसोहियसरंतो ॥ २ ॥

जो विविहघण्णफलणीवियछेत्तकणसुराहिपरिमलामोयघुलियसउणउलकुद्ध-हलिणीविमुक्कछोक्करणकलरवोदिण्णकण्णथियचरणहरिणसंछण्णसीममग्गो ॥ ३ ॥

जो कलवकंगुजवमुग्गमाससंतुट्ठमंथरोमंथमाणगोमहिसोहदुब्भंतदुद्धघयदहिय-वाविमज्जंतपंथियसमूहो ॥ ४ ॥

4. १ T साणुवत. २ PT °कवाडइ चियपहाइ. ३ MBP °मेहलणिकेउ. ४ MBP देवें. ५ MBP धुउ. ६ MBP जगलच्छिहि ण. ७ MBP उत्तरतीरि. ८ MBP दक्खिणदिसि; T सीतोदाया उत्तरदिशि इति संबन्धः, दक्षिणतीरे णीलइरि इति सबन्धः. ९ MBPK गधिलु.

5. १ MBP° कयब°. २ MBP °महुयरोली°. ३ MB °कुरल°; P °कुरुल°. ४ B °मयरुप्पबिंदु°; P °मयतोयबिंदु but gloss स्निग्ध. ५ MBP °भरिय°. ६ M °संछरोमथ°, BP °सच्छरोमंथ°. ७ K °माहिसोह°. ८ MBP °मज्जंतजतपथिय°.

---

4. दहखेत्तभाय भरतहैमवतहारिरम्यकहैरण्यवतैरावतक्षेत्राणि पूर्वविदेहो अपरविदेहः कुरव. उत्तरकुरवश्च; *b* छव्वरिसधारि षट्कुलपर्वताः. 4 *b* °हल° °फल°. 5 *b* णिवाणु निर्माणं संस्थानं वा. 10 विसयविडु देश एव विटः.

5. 2 °सिहिण° स्तनौ. 3 थियचरण° स्थितं त्यक्तं चरणं भक्षणं गमनं यैः.

जो रुंदचंदकिरणाहिरामसामारमंतगोवालगोवियागीयगेयरसवसविसण्णसुण्हाणिहित्तणीसासतावविहडंतगोट्ठिसोहंतगोट्ठो[9] ॥ ५ ॥

जो वसहसिंगखयखोल्लमहियलुच्छलियसरसथलकमलमंदमयरंदपुंजपिंजरियतुंगणग्गोहरोहपारोहडालडोल्लायमाणजक्खीविलुंपियासण्णपामरोहो ॥ ६ ॥

जो खयरचंचुहयपडियपिक्कमायंदगोच्छधावंतवाणरोमुक्कधीरबुक्कारतसियणासंतरायरमणीपयग्गपविलुलियणेउरालग्गहेमरयणंसुफुरियवेल्लीहरंतो ॥ ७ ॥

जो रत्तचूलकीलावियंभणुड्डाणमेत्तणिवसंतगामपुरणयरखेडकब्बडमडंबसंवाहणाइरमणीयभूपएसो ॥ ८ ॥

*जो हीरणारसीहारणालसंभवकुवाइकयसमयविरहिओ वीयरायणयतोयधोयलोयंतरंगसुद्धो सहावसोम्मो ॥ ९ ॥

जो घोरवीरतवचरणकरणपरिणयमुणिंदपायारविंदवंदणपसत्तणरमिहुणगरुअचारित्तभत्तिविहवियविसमपावावलेवो[14] ॥ १० ॥

घत्ता—जहिं[15] वेयड्ढमहासिहरि मज्झि परिट्ठिउ दीसइ केहउ ॥
रुप्पयदंडउ घल्लियउ पुहइ मवंतें विहिणा जेहउ ॥ ५ ॥

6

तहिं उत्तरसेढिहि[1] रमियखयरि अलयाउरि णामें अत्थि णयरि ।
पप्फुल्लियसयदलपरिमलेण[2] परिवेढिय जा परिहाजलेण ।
पडिवक्खचित्तकयदूसणेण जा सोहइ णाइ णियासणेण ।
आबद्धें रयणविचित्तएण पायारकणयकडिसुत्तएण ।
णाणादुवारमणितोरणेहिं णं छज्जइ कंठाविहूसणेहिं ।
दीसइ णंदणवणणीलकेस पुरि णं अवयरिय[3] अउव्व वेस ।
चूलामणिचुंबियणहयलाइं जहिं घरइं सत्तभूमीयलाइं ।

९ M °गोहो. १० MP °मयरंदपुंजरिय°. ११ MBP °डोलायमाण°. १२ M °कयमय°. १३ M सहावसोमो. १४ All Mss add:- इमी विसमसीसयछंदजाई कहिया. १५ MBPK तहिं.
6. १ MB उत्तरे सेढिहि. २ MBP पप्फुलिय. ३ K अवयरियउव्व वेस.

5 °सामा° रात्रिः. 9 हीर° शंकरः; °णारसीह°: नरसिंहः; आरणालसंभव° ब्रह्मा. 10 °परिणय °प्रवृत्तः.
6. 3 b णियासणेण परिधानवस्त्रेण. 6 b वेस वेश्या.

णं धूवें सुधूमें णीससंति णं मुत्तावलिदंतहिं हसंति ।
णं अलिझंकारें सरं गुणंति णं गुरुगवक्खकण्णहिं सुणंति ।
धयवड णं णियकरयल धुणंति णं सिहिरवेहिं के के भणंति ।
अम्हहुं सारिच्छा दिव्वगेह जहिं सिहरोलंबियणीलमेह ।
पवसियपियाहिं पेल्लियकरेहिं संतावयार तर्लतंबिरेहिं ।

घत्ता—अमलियमंडणु मुहकमलु विरहिणीइ मणिभित्तिहि दिट्ठउं ॥
संझेइ सुत्तविउद्धियइ जहिं अप्पउं मण्णिउ णिकिट्ठउं ॥ ६ ॥

7

जहिं पोमरायपहणिरसियाइं बहुपायालत्तयविलसियाइं ।
घरु हरिणीलें णीलियउ जाम ताविच्छहु केरी सोह ताम ।
णयणाइं ण लहंति णयाणणाइ जहिं पम कहिं मि जूरिउ धणाइ ।
णिद्देप्पिणु रंगावलिपयारु जहिं कुलवहु बंधइ कंठि हारु ।
जहिं रिद्धि वि रेहइ पवर का वि जहिं पंगणि पंगणि तोयवावि ।
उग्गयकिंजक्करयंकयाइं जहिं वाविहि वाविहि पंकयाइं ।
जहिं पंकइ पंकइ हंसु थाइ जहिं हंसि हंसि कलरव विहाइ ।
जहिं कलरवि कलरवि हयणिमाण कामेण समप्पिय कामबाण ।
जहिं उववणाउ घरि सिरि चडंति पुणु विविह पक्खि उववणि पडंति ।
हयमुहफेणहिं कुंजरमएहिं तंबोलहिं माणवमुहचुएहिं ।
संजणियपंक जहिं रायमग्ग वच्चंतजाणजंपाणदुग्ग ।
जहिं णिच्चुच्छव मंगलपसत्थ असिमसिकिसिविज्जावजियत्थ ।
जिणधम्माणंदिय भुत्तभोय णिरुवद्दव जहिं णिवसंति लोय ।

४ MBP धूव सधूमें. ५ MBP दंतिहिं. ६ MBP सरु. ७ MP अम्हइं; B अम्हहं; K अम्महुं but gloss अस्मत्सदृशाः. ८ P °तंबरेहिं. ९ MBPT संझहि सुत्तविउद्वियहि.

7. १ MBPK सोहइ. २ MBP कलरउ; K कलरव but corrects it to कलरवु. ३ MBP घरसिरि. ४ MP °मुहमुएहिं; ५ MB °वेज°.

12 *b* संतावयार संतापकरा मेघाः. 14 सुत्तविउद्धियइ सुप्तविबुद्धया जागरितया.

7. 1 *a* °णिरसियाइं तिरस्कृतानि. 2 *b* ताविच्छहु कज्जलस्य. 3 *a* णयाणणाइ नम्रमुख्या; *b* धणाइ वध्वा स्त्रिया. 8 *a* हयणिमाण हतनूमानः.

घत्ता—अइबलु णामें तेन्थु पहु सो जइ वि हु ण होइँ दोसायरु ॥
तह वि हु कुवलयतोसयरु सोम्मुँ वि चंडपयाव पहायरु ॥ ७ ॥

8

कुलणहसवियारु वि णिव्वियारु सुहसीलु वि धरियधरित्तिभारु ।
इहलोयत्थुँ वि परलोयभत्तु गोवालु वि जाणियरायवित्तु ।
जयगहियगुणु वि अक्खयगुणोहु णिब्बाहु वि करिकरदीहबाहु ।
बलवंतु वि अबलासयहं गम्मु अविडप्पु वि लंघियसूरहम्मु ।
णीसु वि लक्खणलक्खियसरीरु ससहावें धीरु वि पावभीरु ।
दूरत्थु वि णियडत्थु वि हयारि रइवंतु वि परबहुबंभयारि ।
सुयभिण्णमणु वि दढचित्तवित्ति बहुपालिरो वि दिसघित्तकित्ति ।
अइसच्छु वि गहियसमंतचारु गुरुओ वि गुरुहुं लहु विणयसारु ।
संगरु वि जिणइ संगरि दुजेय लच्छीवासु वि खरदंड णेय ।
सुपसुत्तु वि चलणयणेहिं णियइ ठाणत्थु वि तच्चरणेहिं भमइ ।

घत्ता—जो महिमाहरु पुरिसहरि महिमावंतु भुवणि विक्खायउ ॥
जो अहिमाणवंतु सुयणु जो रिउमाणवंतु संजायउ ॥ ८ ॥

६ MB होय. ७ MBP सोमु. ८ MBP चडपयाउ.

8. १ MBPK जग°. २ P °गुणि. ३ K लक्खियलक्खणसरीरु ४ P णिवडत्थु. ५ M बि. ६ P रइय°. ७ MB गरुवो, P गरुओ. ८ M खरदडु; BP खरदंडु. ९ MBP चर°, T चल°. १० M वाणत्थु; MP थाणत्थु. ११ MBP तच्चरणिहिं भमइ.

15 चंडपयाव चण्डप्रतापः, पहायरु प्रभाकरः.

8. 1 *a* कुलणहेत्यादि– यः कुलाकाशे सविकारः स कथं निर्विकार इति विरुद्धम्; अन्यत्र कुलाकाशे सवियारु सविता; *b* सुहसीलु सुखशील उत्तमशीलश्च. 2 *a* परलोयभत्तु मोक्षश्रद्धालुः. गोवालु पशुपालः; अन्यत्र गौः पृथ्वी ज्ञानं च तत्पालयतीति गोपालो ज्ञातराजवृत्तिश्च. 3 *b* णिब्बाहु निर्बाध प्रलम्बबाहुश्च. 4 *b* अविडप्पु विदर्पो राहुः सः अभवन्नपि विलंघितसूर्यतेजाः, अन्यत्र विदात्मा न भवति. 6 *a* णियडत्थु निकटस्थः, आसन्नधनश्च. 7*b* बहुपालिरो बहुपुरुषान् पाति पुष्णातीति बहुपा पुंश्चली तां आलिं सखीं राति आदत्ते य सः कथं दिक्षु प्रवृत्तकीर्तिः; अन्यत्र बहुपालकः प्रख्यातकीर्तिश्च. 9 *a* संगरु स्वाङ्गे स्वशरीरे रुग् व्याधिर्यस्य स स्वाङ्गरुक्. 10 *a* सुपसुत्तु यः सुष्ठु प्रसुप्तः स कथं चलनयनैः पश्यति; अन्यत्र, सुष्ठु प्रकृष्ट सूत्र नीतिर्यस्य स चारलोचनैश्च कृत्वा पश्यति; *b* बमइ व्रजति गच्छति. 11 महिमाहरु पृथ्वीलक्ष्म्या गृहम्.

9

णं पेम्मसलिलकल्लोलमाल णं मयणहु केरी परमलील ।
णं चिंतामणि संदिण्णकाम णं तिजगतरुणिसोहग्गसीम ।
णं रूवरयणसंघायखोणि णं हिययहारि लायण्णजोणि ।
णं घरसरहंसिणि रइसुहेल्लि णं घरमहिरुहमंडणियवेल्लि ।
णं घरवणदेवय दुरियसंति णं घरछणससहरबिंबकंति ।
णं घरगिरिवासिणि जक्खपत्ति णं लोयवसंकरि मंतसत्ति ।
महएवि तासु घरकमललच्छि णामेण मणोहर पंकयच्छि ।
तहि जणिउ तणउ खयराहिवेण अलयाउरिघरणाहेण तेण ।
घत्ता—जाएं जेण थणंधएण दुज्जणवंदु सयलु संताविउ ॥
णलिणु व णवदिवसाहिवेण णियगोत्तु हरिसें विहसाविउ ॥ ९ ॥

10

कुम्मुण्णयकमु दुज्जयविकमु ।
केसरिकडयलु वियडोरत्थलु ।
आयंबिरणहु कणयसमप्पहु ।
णवजलहरझुणि कुलचूडामणि ।
सुरकरिकरकरु तरुणीमणहरु ।
विसवइकंधरु रज्जधुरंधरु ।
गुणरंजियजणु अहिणवजोव्वणु ।
उण्णयभालउ पेच्छिवि बालउ ।
अलिणिहकोंतलु चिंतइ अइबलु ।
मणुयकलेवरु अट्ठियपंजरु ।
किमिकुलसंकुलु रुहिरचिलिव्विलु ।

9. १ MBP °खोणि. २ P मणोहारि. ३ MBP कुवलयच्छि. ४ MBP °वरणाहेण. ५ MBP दुज्जणवग्गु. ६ MBP वियसाविउ.

10. १ MBP °कडियलु; K कडयलु but corrects it to कडियलु. २ P रज्ज. ३ MBP °कुंतलु. ४ K omits अट्ठियपंजरु.

9. 4 *a* रइसुहेल्लि रतिसुखयुक्ता. 6 *a* जक्खपत्ति कुबेरभार्या. 9 थणंधएण पुत्रेण.
10. 11 *b* °चिलिव्विलु बीभत्सम्.

लालाविट्टलु　　अंतहं पोट्टलु ।
पिउवणभोयणु　　पक्खिहिं भोयणुं ।
सोलहकंदरु　　णवदारंतरु ।
कामें जिप्पइ　　लोहें घिप्पइ ।
कोहें तप्पइ　　छम्में लिप्पइ ।
कम्में बज्झइ　　मोहें मुज्झइ ।
सत्थें भिज्जइ　　रोएं झिज्जइ ।
जरइ कुहिज्जइ　　कालें खिज्जइ ।

घत्ता—भणिउ सणंदणु पत्थिवेण संति करेज्जसु णियसंताणहो ॥
तुहुं अणुहुंजहि रायसिरि मइं पुणु आपवउ णिव्वाणहो ॥ १० ॥

11

चवलयर कुसासणवस चरंति　　महुं वाइ कुवाइहिं अणुहरंति ।
जरमरणहं किंकर किं करंति　　मायंग अंग किं मोक्खु देंति ।
णिम्मलमइ रायहु रह रहंति　　ए अवर वि जगि असुवह हवंति ।
अंतेउरु अंते उरु जि हणइ　　रोवइ वइवसहु ण रक्ख कुणइ ।
भवपासबंधु सुहिबंधुणियरु　　खणधंसि णयरु गंधव्वणयरु ।
धणु इंधणु लोहहुयासणासु　　वरु विग्घरु केवलदंसणासु ।
फणिभोउ व भोउ ण भुंजणिज्जु　　आकोसु वि कोसु वि वज्जणिज्जु ।
दुक्कियणिहेसु व देसु भणमि　　खयरवइपहुत्तणु तणु व गणमि ।
सीहासणु हासणु मेल्लमाणु　　किं रक्खइ खइ गच्छंतु पाणु ।

५ M °भावणु. ६ B reads this line as पिउवणभायणु, गुणगणमोयणु and adds further सोयक्कोयणु, पक्खिहिं भोयणु. ७ MB add after this: गुणगणमोयणु, सोयक्कोयणु. ८ MBPT °कंडरु. ९ MBP छिप्पइ. १० B कामें. ११ MBP खज्जइ.

11. १ MBP वहंति. २ MB केवलु दंसणासु. ३ P खजंतु. ४ MBP पाणु.

13 *a* पिउवण° श्मशानम्. 16 *b* छम्में मायया.

11. 1 *a* कुसासणवस कुशायास्तर्जनकस्य असनवशास्ताडनवशाः, पक्षे कुशासनवशाश्चार्वाकादयः; *b* वाइ वाजिनोऽश्वाः. 2 *b* अंग संबोधनेऽव्ययम्. 3 *b* असुवह प्राणघातकाः. 4 *a* अंते विनाशे; उरु हृदयम्. 6 *b* विग्घरु विघ्नकरम्. 8 *a* °णिहेसु उपदेशः. 9 *a* हासणु हा इति स्वनः शब्दः.

किं छत्तहिं छत्तायारभूमि पाविज्जइ विज्जउ जहिं ण कामि ।
चामरु मरु देइ ण मरणहारि ण समंति केउ झसकेउधारि ।
पलियंकियसीसु ण सीसु होइ जो मुणिहिं मूढु सो कुगइ जाइ ।

घत्ता—एम पयंपिवि राणएण णं मेहहिं धाराजलवरिसहिं ॥
बद्धउ पट्टु महाबलहो अहिसिंचिवि सिएहिं सिरिकलसहिं ॥ ११ ॥

12

जं जयजयसद्दें बद्धु पट्टु तं पुरु मेल्लिवि णरवइ पयट्टु ।
मणिभूसणु णिवसणु परिहरेवि थिउ णिज्जणि वणि जिणदिक्ख लेवि ।
जो छिंदइ सिंचइ चंदणेण विंधइ सरेण मण्णइ मणेण ।
जो थुणइ जो वि दुव्वयणु देइ दोहिं मि समाणु हुउ परमजोइ ।
सामंतमंतिभडसेवणिज्जु एत्तहि वि तासु सुउ करइ रज्जु ।
देवंगहिं विविहहिं परिहणेहिं आहरणें मणिकंचणघणेहिं ।
कामिणिथणसिहरालिंगणेहिं उज्जाणहिं जाणहिं वाहणेहिं ।
तंतीपुक्खरवज्जाइएहिं स रि ग म प ध णी सरगाइएहिं ।
उच्छलियपहयघडियारवालु भोयासत्तहु तहु जाइ कालु ।
पढमिलु महामइ णिहयभंति बीयउ संभिण्णमउ त्ति मंति ।
तिज्जउ सयमइ बहुरिद्धिरिद्धु सइंबुद्धु चउत्थउ जगपसिद्धु ।

घत्ता— तेण णराहिवु विण्णविउ हुयवहु तरुतणेहिं किं धायउ ॥
सायरु बहुसरिवाणिएहिं विसयसुहेहिं मि जीउ वरायउ ॥१२॥

५ MBP सीसे.

12. १ MBPK आहरणहिं. २ M पढमिल्ल. ३ MBP णराहिउ. ४ MBP किं तरुणेहिं. ५ P धाविउ. ६ M सायर. ७ MBP ° वाणियहि.

10 *a* छत्तायारभूमि मुक्तिशिला. 11 *b* झसकेउधारि काम. 12 *a* सीसु शिष्यः. 14 सिएहिं रूप्यमयैः.

12. 3 *b* मण्णइ अनुमतिं करोति. 10 *a* णिहयभंति निःसंदेहः. 12 धायउ तृप्तः.

13

जिहँ पामा कररुहफंसणेण संभासणपियमुहदंसणेण ।
तिह णिच्चे कामु सेविज्जमाणु वित्थरइ होइ अइअप्पमाणु ।
वड्ढइ लोहेण महंतु लोहु वड्ढइ हंकारें तिव्व कोहु ।
वड्ढइ णयहीणु णिप्पवि माणु परवंचणेण मायाविहाणु ।
वड्ढइ रइ अणुअंधेण मोहु इय जीउ करेप्पिणु धम्मदोहु ।
महिणाहु होवि पुणु होइ साणु संसारि कवणु रायाहिमाणु ।
उप्पज्जइ जा कंदप्पवाहि संकप्पें तप्पइ ताइ देहि ।
सा केण वि कत्थइ आणियाइ पसमिज्जइ जाइ सुमाणियाइ ।
सा णारि सहावदुगंध चडुल अण्णासत्ती धणगम्म कुडिल ।
घत्ता—भुक्ख सरीरि समुब्भवइ तं जि दहइ सा झत्ति पलित्ती ॥
अत्थि ण देहि गविट्ठ मइं तहि उवसमविहि परवस उत्ती ॥ १३ ॥

14

फासरसवसंगय महि भमेवि ।
गायंति के वि णच्चंति के वि वायंति के वि वण्णंति के वि ।
सीवंति के वि तुण्णंति के वि धणकज्जि पढंति लिहंति के वि ।
करिसणु करंति पहरणु धरंति चडुयम्मर्हि पराहियवउ हरंति ।
आवंतु विसिट्ठु ण संसहंति अम्हइं गुणवंता सइं कहंति ।
कम्मेहिं धणाइं समज्जिऊण आणेवि णिहेलणि पुंजिऊण ।
दिवसावसाणि समसंत होंति णिव्वाइयमुह माणव सुयंति ।
अह उड्ढमग्ग वड्ढियणिणाय धावंति सइच्छइ बे वि वाय ।

13. १ P जहिं. २ P णिच्चु. ३ MBP अणतु. ४ MBP तिव्वु. ५ MBPK णियहीणु. ६ MP °वंचणेण मणि मायठाणु; B °वचणेण मणि माइ ठाणु. ७ MBP अणुबंधेण. ८ BP डहइ. ९ M गव्विट्ठ. १० MBP वुत्ती.

14. १ MB भमेमि. २ G पुजिऊण. ३ B पाय.

13. 5 *a* अणुअंधेण संतत्या प्रवर्धनेन. 8 *a* आणियाइ आनीतया स्त्रिया. 11 गविट्ठ गवेषिता; उवसमविहि परवस उत्ती उपशमविधिर्न दृष्टा शरीरे किं तु अन्येन भोजनादिना कृत्वा शाम्यति, तेन परवश एव उपशमविधिर्दृष्टा.

14. 7 *a* समसंत श्रमश्रान्ताः; *b* णिव्वाइयमुह प्रसारितमुखाः. 8 *b* बे वि वाय अधोवात ऊर्ध्ववातश्च.

णिद्दइ रीणत्तणु खयहु जाइ खलु छिण्णउ छिण्णउ रसु वि थाइ।
आहारु भुत्तु परिणवइ अंगि पज्जलइ पित्तु हयसेंभसंगि।
उट्ठंति गोसि पुणु णीससंत किह रक्खहं धणु पणइणि भणंत।

घत्ता—भयसण्णावस थरहरिय लेंति केर कासु वि बलवंतहो॥
जीहामेहुणरसरसिय जंति जीव णरयहु सुदुरंतहो॥ १४॥

15

धणणियरविहीणें किं कुलेण णियणाहविहीणें किं बलेण।
वरसलिलविहीणें किं सरेण सुकलत्तविहीणें किं घरेण।
सुवियड्ढविहीणें किं पुरेण परवहुणहवणिएं किं उरेण।
चारित्तविमुक्कें किं सुएण पिउपयपडिकूलें किं सुएण।
किं चाएं मणसंतावरेण किं माणें पियमुहदाविरेण।
किं करिणा अवगणियंकुसेण किं हरिणा अवगण्णियकुसेण।
किं पुरिसें पसरियदुज्जसेण किं णक्खिएण वियलियरसेण।
किं मुणिणा पंचिंदियवसेण किं धुत्तें पेम्मपरव्वसेण।
किं मत्तें कयबहुवइरएण किं परियणेण परवइरएण।
किं गुरुणा मोहंधारएण किं सीसें अविणयगारएण।
किं दुज्जणमहुरालावएण किं धम्मविहीणइं जीविएण।

घत्ता—पुणु सहंबुद्धु पसण्णमइ खगवइ रायहु अग्गइ भासइ॥
धम्महु एत्तिउ सारु णिव जं परु अप्पसमाणउ दीसइ॥ १५॥

४ MBP सभवइ. ५ MBP °सिंभ°.

15. १ MBP °संतावएण. MB °दाविएण. ३ B अविगणियं°. ४ MP मंतें; B सत्तें. ५ P बहु-कयवइरएण. ६ MP मोहें धारएण. ७ MBP °लावएण. ८ MBP धम्मविरहिएं. ९ MP जीवएण. १० MBP परमहियत्तें मंतिवरु खयरवइ रायहु.

6 *b* खलु छिण्णउ तिलखलश्चर्वितश्चर्वितः सन् रसो दुग्धं भवति, तथा निद्रया श्रमो गच्छति. 10 *b* हयसेंभसंगि श्लेष्मसंगे हते सति पित्तमुत्पद्यते. 11 *a* गोसि प्रभाते. 12 केर आज्ञाम्.

15. 4 *a* सुएण श्रुतेन; *b* सुएण सुतेन. 6 *b* हरिणा अश्वेन, °कुसेण °चाबुकेन (तर्जनकेन). 9 *a* मत्तें मर्त्येन मनुष्येण; *b* परवइ° परपतिः.

16

सव्वेण दयादाणेण धम्मु अलिएण जीवहिंसइ अहम्मु ।
तेणेत्थ कुणर णारय तिरिक्ख कुच्छिय सुर होंति तिसल्लतिक्ख ।
धम्मेण होंति कप्पामरिंद अरहंत[1] चक्कि चारण मुणिंद ।
अहमिंद रुंदचंदाहजोण्ह धम्मेण होंति जगि राम कण्ह ।
मणिमउडसिहरसोहिल्लसीस मंडलियमहामंडलवईस ।
पडिवासुएव कुसुमसर रुद्द धम्मेण होंति णाणाणरिंद ।
कइगमयवम्मिवाइत्तणाइं धम्मेण हवंति बुहत्तणाइं ।
सोहग्ग[2] रूवु[3] कुलु सीलु कंति पोरिसें[4] जसु भुयबलु विमल खंति ।
जं दीसइ चंगउ गुणविसेसु तं धम्महु केरउ फलु असेसु ।

घत्ता—धवलीहूयउं सिरकमलु भोउ देव केरिउ भुंजिज्जइ ॥
धम्मु जिणागमभासियउ मणवयकायतिसुद्धिइ किज्जइ ॥ १६ ॥

17

पहु साहिज्जइ सग्गापवग्गु ता दिसइ महामइ तहु कुमग्गु ।
अणिहणइं अणाइअहेउयाइं महिमारुयवेसाणरउयाइं ।
भूयइं चयारि जहिं जहिं मिलंति तहिं तहिं चेयणचिंधइं चलंति ।
गुलजलपिट्ठेहिं[1] मयसत्ति जेम भूएहु जीउ[2] संभवइ तेम ।
ण सरीरिसरीरहुं भेउ अत्थि करु कण्णु[3] दंतु को कवणु हत्थि ।
जम्माउ ण वच्चइ अण्णु[4] जम्मु अणु जेण जियइ तं करइ कम्मु ।
जो परहरु पुच्छिवि परहु पासि गच्छइ इंदियबुद्धीपयासि ।
विणु तेहिं केम सो सग्गं[5] जाइ पुज्जिउ पत्थरु किं पुण्णमाइ ।
जासुवरि मुवइ[6] मलु जीवलोउ परजम्मि तेण कहिं कियउ पाउ ।
जलबुब्बुय जइ कम्मेण होंति तो जीव वि राय म करहि भंति ।

16. १ K अरिहंत. २ P सोहग्गु सीलु कुलु रूउ. ३ MB रूउ. ४ MBPK पोरिसु जसु.

17. १ MBP °जलधाइहिं. २ M जीव. ३ MBP कण्ण दंतु. ४ MB अण्णजम्मु. ५ MB सग्गु; P सग्गि; K सग्ग but corrects it to सग्गु. ६ K मुयइ.

16. 4 *a* °जोण्ह °कान्तिः. 7 *a* कइगमय° सैद्धान्तिकः सिद्धान्तवेत्ता; °वम्मि° वाग्मी.

17. 2 *b* °उयाइं उदकानि. 7 *a* परहरु परगृहम्; *b* °पयासि °प्रकाशेन. 10 *b* राय हे राजन्.

घत्ता—कहिं किर सुकियदुकियइं विणु भूयॅपहिं जीउ कहिं दिट्ठउ ॥
जो वाहिउ पासंडियहिं सो हउं मण्णमि चोरॅहिं मुट्ठउ ॥ १७ ॥

18

तं णिसुणिवि चविउं चउत्थएण मंतिहि पहुपणवियमत्थएण ।
परिपालियसमहिंसावएण सुयवंतें परिणयसावएण ।
जणि मइरहि दीसइ दिण्णु राउ चउदव्वपसूयहि एक्कु साउ ।
देहें भावेण वि भिण्णु लोउ किह घडइ तुहारउ भूयजोउ ।
खरवडवारइरॅसि वेसरासु संभॅवु णिदिट्ठु कत्थइ णरासु ।
दव्वेंहिं तेहिं तेहउ जि होइ वइचित्तु काइं संजोयवाइ ।
सिहि उल्हॅविज्जइ पाणिएण पाणिउ सोसिज्जइ झत्ति तेण ।
चवलयरु पवणु थिर जड धरित्ति असरूवहं कहिं मेलावजुत्ति ।
एमेयँ करिवि अप्पणिय उत्ति किं जंपसि पउरंदरिय वित्ति ।
विणु जीवें कॅहिं भूयइं मिलंति कायाकारेण ण परिणॅवंति ।
जइ परिणॅवंति भासहि कुहेउ तो काढयपिढरि सरीरु होउ ।

घत्ता—पंचिंदियहिं विवज्जियउ मणविरहिउ चिम्मेत्तुं अयाणउ ॥
जीउ जाइ किह भणसि तुहुं सग्गि होइ किह सुरवरराणउ ॥ १८ ॥

19

दीसइ पयत्थु जगि सहुं गुणेण पाहाणेण वि णिच्चेयणेण ।
कड्ढिज्जइ आयसु कड्डुएण जिह तिह सो कम्मणिबंधणेण ।

७ MBP भूएहिं. ८ MBP चोरें.

18. १ MB दिण्ण राउ. M विभिण्णलोउ; BP °विहिण्णलोउ. ३ MBP °रसु. ४ MBP उप्पात्ति करइ अण्णहु विणासु. ५ M उल्हाविज्जइ. ६ MB एमेवि, P एमेव. ७ MBP भूयइ कहिं. ८ MBP परिणमंति. ९ MBP परिणयति १० M चिमित्तु, B चिम्मित्तु.

19. १ B कड्ढिएण P कट्ठएण.

18. 1 *a* च उ त्थ ए ण स्वयंबुद्धेन; *b* मं ति हि मन्त्रिणा. 2 *a* °स म हिं सा व ए ण सम्यक्त्व–आहिंसाव्रतेन, अथवा, शमश्च आहिंसा चेति, *b* प रि ण य सा व ए ण परिपक्कश्रावकेण. 3 *b* सा उ स्वादः. 5 *a* °व ड वा° अश्वी. 6 *b* सं जो य वा इ हे संयोगवादिन् . 9 प उ र द रि य वि त्ति चार्वाकमतम्. 11 *b* का ढ य° क्काथः. 12 चि म्मे त्तु चैतन्यमात्रः.

19. 1 *a* प य त्थु पदार्थः. 2 *a* क ड्डु ए ण चुम्बकपाषाणेन.

जंपिउ पइं बहुपुज्जाहरेण किं किउ सुकिउ भवि पत्थरेण।
णउ रूसइ सो कयणिग्गहेण णउ तूसइ भोयपरिग्गहेण।
णिज्जीउ ण याणइ सोक्खु दुक्खु जहिं जीउ तहिं जि तुहुं ताइं पेक्खु।
भो भूयवाइ भूयहिं भुत्तु तुहुं तुज्झ णत्थि जिणवयणमंतु।
अइतंडिय पंडिय कव्वु कवहि अणिबद्धु असद्धउं काइं चवहि।
तहिं अवसरिं संभिण्णें पउत्तु उप्पज्जइ खणि खणभंगचित्तु।
हसियच्छियरमियकयासणाइ परियाणइ सुइरु वि वासणाइ।
जो दीसइ सो खणवट्टि खंधु णउ अप्पउ णउ णिव पासबंधु।

घत्ता—ता रिसिसमयहु भत्तएण उत्तरु दिण्णु तेण खणवाइहिं॥
वत्थु णिरण्णउ णत्थि जगि तणजलरसु जि दुद्धु धुवुं गाइहिं॥ १९॥

20

जं णत्थि बप्प तं कुम्मरोमु तं वंझडिंभु तं गयणपोमु।
तं ण हवइ भणु को खणु वि थाइ अत्थिल्लउ किं पुणु खयहु जाइ।
को जाणइ जिणवरु मुइवि सच्चु वज्जिवि अरूवि परिणामि तच्चु।
जइ छिण्णउं मणु मणभाउ चेइ तो अण्णें थवियउ अण्णु लेइ।
जइ दव्वइं तुह खणभंगुराइं तो खणधंसिणि वासण ण काइं।
किं सा खंधहं बाहिरिय दिट्ठ अणणुहवु खणिउं किं भणिउं धिट्ठ।
ता सयमइ चवइ मईविसालु मायण्हिय सिविणय इंदजालु।
जिह पयडु केरी सव्व माय दीसंतु वि तिह जगु णत्थि राय।
गुरु सीसु धम्मु ववहारु एहु परमत्थें णउ परु णउ सदेहु।

२ MBP भवि सुकिउ. ३ MBP तह तुज्झु. ४ MBP असुद्धउं. ५ MBP खणि भंगाचित्तु. ६ MB खणवाढि, P खणि वाढि. ७ MBP तेण दिण्णु. ८ MB खणवाइहो. ९ B अत्थि. १० MBP धुउ. ११ MB गाइहो.

20. १ MBP भणासि. २ MBP माइण्हिय. ३ P गुरुसीसधम्मु.

7 *a* कवहि काव्यं करोषि; *b* असद्धउ अश्रद्धं अप्रतीतिजनकम्. 8 *b* खणभंगचित्तु क्षणविनश्वरो जीवः. 9 *b* वासणाइ चित्तसंस्कारेण. 10 *a* खंधु रूपविज्ञानवेदनासंज्ञासंस्काराः पञ्च स्कन्धाः; *b* पासबंधु कर्म. 12 णिरण्णउ निरन्वयम्.

20. 2 *b* अत्थिल्लउ अस्तित्वयुक्तम्. 3 *b* वज्जिवी त्यादि—अरूपि जीवादि वर्जयित्वा. 4 *b* चेइ जानाति. 6 *b* अणणुहवु अननुभूतम्. 7 *b* मायण्हिय मृगतृष्णिका.

घत्ता—जंबुउ मासखंडु मुइवि धायउ सलिलुग्गयपाढीणहो ॥
आमिसु गिद्धें णहि णियउ मीणु णिमज्जिवि गउ णियठाणहो ॥ २० ॥

21

जिह सोणरि तिह णरु उहयभट्ठु परलोयहु लग्गिवि को ण णट्ठु ।
अलियाइं जि णिसुणिवि मुयइ धीरु णियतणु दंडइ किं णरयभीरु ।
आयासु पडेसइ भणिवि तसइ टिट्टिहु उत्ताणियचरणु वसइ ॥
इसिपायपणामविणीयएण ता गुरुणा भणिउं तुरीयएण ।
जइ णत्थि किं पि कारणु ण कज्जु तो किं बीहहि जइ पडइ वज्जु ।
जइ होइ असंतउ अत्थकारि तो आणहि सिविणंतरि मयारि ।
णिण्णासहि तेणाहियकरिंद किं चवहि असब्भउ विउसयंद ।
णउ सद्दु ण तुहुं णउ हउं ण वत्थु भणु होइ इट्ठपडिवत्ति केत्थु ।
सुणि राय जिणागमहासियाइं सुम्मंति ण जडयणभासियाइं ।

घत्ता—आसि तुहारइ वंसि हुउ पहु अरविंदु णाम विक्खायउ ॥
पढमपुत्तु हरिचंदु तहो पुणु कुरुविंदु इंदुसमु जायउ ॥ २१ ॥

22

तहि णयरिहि सुहिकल्लाणकारि रिउघरिणिहारकरवलयहारि ।
गयगंधहत्थि भडकालदूय पडिकूलपिसुणसिरसूलभूय ।
ते तिण्णि वि सुहुं अच्छंति जाम लग्गउ डाहज्जरु पिउहि ताम ।

४ MBP जबू. ५ MBP सलिलगयहु. ६ MB णियथाणहो.

21. १ MBP उभय°. २ K धीरु but corrects it to चीरु and gloss वस्त्रं. ३ K टिट्टिह. ४ MB सिविणतर°. ५ MMB णिण्णासिय. ६ MBP विउसइद. ७ MBPK °गमदूसियाइं. ८ K अरिविंदु. ९ MBP पढम् पुत्तु. १० M इदुसम, B इंदसमु.

10 °पाढीणहो मत्स्यस्य.

21. 1 *a* सोणरि शृगालः. 4 *b* गुरुणा मन्त्रिणा. 7 *a* अहियकरिंद अहितकरीन्द्रा अधिकहस्तिनो वा, *b* विउसयंद विद्वच्चन्द्र.

णिड्डहइ हारु मलयरुहपंकु घगधगइ पलयसूरु व ससंकु ।
जलजलिउ आलजलणु व जलद्द आवइकालइ आवइ ण णिद्द ।
उवसमइ ण केम वि अंगडाहु थिउ कायरमुहुं वरखयरणाहु ।
तहिं अवसरि पंकयवत्तणेत्तु पिउणा कोक्काविउ पढमपुत्तु ।
सो भणिउ तेण हयरवियराइं जहिं घणइं वणइं वेल्लीहराइं ।
जहिं सुरहिउ कंपिउ देवदारु सीयलु संचारियं हिमतुसारु ।
जहिं वाइ वाउ णीवइ सरीरु तं णेवावहि सीओयतीरु ।
आएसहि सविज्जादेवयाउ मइं णेंतु तुरिउ मारुयरयाउ ।
ता तेण भणिवि पेसणपसाउ आवाहिउ खगदेवीणिहाउ ।
घत्ता—सुएण सविज्जउ पेसियउ ताउ तासु जोयंति ण संमुहुं ॥
मंतु देउ ओसहु सयणु पुण्णि परंमुहि होइ परंमुहुं ॥ २२ ॥

23

पाविट्ठहु कह व ण जाइ पाणु आढत्तउ तेण रउद्दु झाणु ।
लोएहिं भणिज्जइ देव जीय संपयसुहि सुहियहं सेवणीय ।
कंदइ करेहिं ताडंतु तोंदु दुहिदेसएण संणिहु णरिंदु ।
जुज्झंतहं कप्पिउ कायदंदु पल्लीदेहंतहु रुहिरबिंदु ।
णिवडिउ आसासिउ सो रविंदु सीयलु वणरुहलवुं णं छणिंदु ।
तं पेच्छिवि हरियंदाणुयासु आएसु दिण्णु तायं सुयासु ।
जइ रत्तद्दहि जलकील करमि तो पुत्त णिरुत्तउ णउं मरमि ।

22. MBPK णिड्डुहइ. २ MBP जलजलइ जालिउ जलणु. ३ MB °पत्त°. ४ MBP पढमु पुत्तु. ५ P वल्लीहराइं. ६ MBP संचारिउ. ७ MBP सुविज्जउ.

23. १ MBP पाणु. २ MBP तुंडु; T तोंडु उदरम्, K तोंदु, but records तोंडु in second hand. ३ M reads this foot as 4 *a*. ४ P °देसिएहिं. ५ M reads this foot as 3 *b*. ६ MBP हिययत्थिउ आसासिउ णरिंदु. ७ MBP °लउ. ८ MBP रत्तद्दहि. ९ MBP णेय.

22. 4 *a* मलयरुह° चन्दनम्. 5 *a* जलद्द जलार्द्रं वस्त्रम्. 11 *b* मारुयरयाउ वायुवेगाः. 12 *b* आवाहिउ आकारितः; °णिहाउ समूहः.

23. 1 *b* आढत्तउ प्रारब्धम्. 2 *b* संपयसुहि लक्ष्मीसुखार्थम्. 3 *a* तोंदु उदरम्; *b* कायदंदु शरीरद्वयम्. 4 *b* पल्लीदेहंतहु विश्वंभरदेहमध्यात्. 5 *b* वणरुह° रुधिरम्; छणिंदु पूर्णिमाचन्द्रः. 6 *a* हरियदाणुयासु कुरुविन्दस्य; *b* सुयासु सुतस्य.

किंकरकरसिरघडथाणिएण ससमेसमहिसमृगंसोणिएण ।
खणि खोल्लु खणेप्पिणु भरहि तेम सुविहाणइ हउं तहिं ण्हामि जेम ।

घत्ता—णिसुणिवि हिंसावयणविहि गउ कुरुविंदु पिउहि मउलिवि कर ॥
कारिमकीलालहु भरिय विरइय वावि विहाणइ दुत्तर ॥ २३ ॥

24

तूसेप्पिणु तेत्थु पइट्ठु राउ ण्हंतेण तेण बुज्झियउ साउ ।
णउ लोहिउं लक्खारसु णिरुत्तु भायारउ णिहणमि एहु पुत्तु ।
मणि पसरिउ तहु दुक्कम्मरेणु आयड्ढिय भीसणु खग्गधेणु ।
अइबुद्धिवंतु परचित्तजाणु दिट्ठउ कुरुविंदु पलायमाणु ।
णं करिहि विरुद्धउ जरकरेणु णरवइ तहु पच्छइ धावमाणु ।
पक्खलिवि पडिउ गिरिरायतुंगु णियकरछुरियाणिव्वट्टियंगु ।
मुउ गउ णरयहु सुहिसोयभग्गि हाहारउ उट्ठिउ बंधुवग्गि ।
अवरु वि णिसुणहि तुह वंसकेउ रूवेण णाइं सइं मयरकेउ ।
चिरु होंतउ णरवइ दंडधारि दंडउ णामें दंडियणियारि ।
तहु तणउ तणउ वज्जियदुवालि मणिमालि सउलगयणंसुमालि ।
तो देव दीहकालेण एत्थु धणरासिहि उप्परि देंतु हत्थु ।

घत्ता—पुत्तु कलत्तु चित्ति धरिवि पुंजियविविहदव्वपब्भारइ ॥
अट्टज्झाणें पिउ मरिवि अजयरु हुयउ णिययभंडारइ ॥ २४ ॥

१० MBP °मिग°. ११ GK भरिय वावि.

24. १ MBP तुहु णिसुणहि. २ P णामेण जि दडियारि. ३ MBP °दुयालि. ४ MBP ता. ५ MBP अजगरु.

9 *a* खणि गर्ता. 11 करिमकीलालहु कृत्रिमरुधिरेण; विहाणइ प्रभाते.

24. 1 *b* साउ स्वादः. 9 *b* णिव्वट्टियगु विदारिताङ्गः. 10 *a* °दुवालि अन्यायः; *b* सउलगयणंसुमालि स्वकुलगगनसूर्यः.

25

माणुसु दाढहिं दंतहिं दलई[1] जं घरि पइसइ तं तं गिलई[2] ।
ससिमणिजलकयसिहरग्गणहवणि पुणु रयणमालि[3] पइसंतु भवणि ।
संभरियपुव्वजम्मंतरेण ओलक्खिउ णियसिसु विसहरेण ।
मब्भीसिउ[4] भोयाहोयणेण[5] ता चिंतिउ खगवइजायएण ।
महु एहु को वि चिरजम्मबंधु[6] णं तो किं णउ भक्खइ मयंधु ।
पुणु गंपि तेण पुच्छिउ मुणिंदु भासियउ तेण दंडयणरिंदु ।
हयउ असमाहिइ मरिवि सप्पु किं ण वियाणहि अप्पणउ बप्पु ।
तं सुणिवि तेण णिवणंदणेण पिउणेहकरुण[7]कंपिय[8]मणेण ।
पडिआवेप्पिणु घरु खवियकम्मु जिणणाहहु केरउ कहिउ धम्मु ।
बुज्झिवि फणिणा संणासु कयउ मुउ जायउ सुरु उरयत्तु गयउ ।
देवेण तेण जाणियभवेण कय गुरुपुज्जा सुमहुच्छवेण ।
आविवि मणिमालिहि दिण्णु हारु जाणइ पुरु देसु कहावयारु[9] ।
इहु अज्ज वि अच्छइ तुज्झ कंठि ताराणियरु वं[10] णं मेरुकंठि ।

घत्ता—तं णिसुणेवि महाबलेण भरहमोत्तियावलि जोयप्पिणु ॥
हयतमु पुप्फदंत[11]सरिसु आलिंगियउ मंति विहसेप्पिणु ॥ २५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वितंडापंडियपंडाविहंडणं णाम बीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २० ॥

॥ संधि ॥ २० ॥

25. १ MBP दलेइ. २ MBP गिलेइ. ३ MBP रयणिमालि. ४ MBP मं भीसिउ. ५ MB भोयाभोयणेण; PT भोयाभोयएण. ६ B चिरधम्मबंधु. ७ MBP °करण°. ८ M °कप्पिय°. ९ T कयावयारु कृतावतारः १० MBP व मेरूवकंठि. ११ MBP पुप्फयंत°.

25. 4 *a* मब्भीसिउ मा भैषीस्त्वम्, भोयाहोयणेण फणामण्डपाधःकृतेन फटाटोपेन. 10 *b* गयउ नष्टम्. 12 *b* कहावयारु कथावतारः.

XXI

बुड्डंतहु णरइ पडंतहो बहुमणियभवतरुहलहो ॥
सइंबुद्धं णाणविसुद्धं दिण्णउ हत्थु महाबलहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

पुणु तेण पजंपिउ सुइमइरु भवसयसंचियमलभारहरु ।
तुह तायपियामहु कुलधवलु णामेण पसिद्धउ सहसबलु ।
उप्पाइवि केवलु णाण गुणि गउ मोक्खणिवासहु परमझाणि ।
तुह तायताउ सयबलु णिवरु परिपालिवि सावयवयपवरु ।
माहिंदसग्गि हूयउ अमरु सत्तंबुहिआउपमाणधरु ।
गउ मेरुहि तइया भावियउ तुहुं मइं सहुं तें बोल्लावियउ ।
अइबलु तुह पिउ भयवंतु वसि गउ वणवासहु होएवि रिसि ।
णयविणयालहं णवजोव्वणहं सिरि अप्पिवि णियणियणंदणहं ।
तुह एम पियामहपियपहुइ सुम्मंति देव साहियसुगइ ।
रुद्दट्टझाणआरूढदुइ संपत्ता णरयानिरिक्खगइ ।

घत्ता—हयकम्में जिणवरधम्में उवरि उवरि रंकु वि चडइ ॥
कयगावें पत्थिव पावें हेट्ठामुहुं राउ वि पडइ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

यस्य जनप्रसिद्धमत्सरभरमनवमपास्य चारुणि
प्रतिहतपक्षपातदानश्रीरुरसि सदा विराजते ।
वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे
राजति जयतु जगति भरतेश्वरमयममलमङ्गलः ॥

MP read विराजयते for विराजते, °मलाणिल° for मनाविल°, स जयति जयतु for राजति जयतु; M reads °श्वरसुखमयममल°; P reads °श्वरजयमयममल° for °श्वरमयममल°. GK do not give it.

1. १ MBP पयपिउ. २ MBP केवलणाणु गुणि. ३ MBP °पवरु. ४ P °जोव्वणाइं. ५ P °णंदणाइं. ६ MBP °पिउ°.

1. 6 *a* णिवरु नृवरः. 11 *a* °पिय° पिता.

2

तं सुणिवि[1] पबुद्धउ भव्वयणु अइबलसुउ[2] हुउ उवसंतमणु ।
संकाकंखाहिं विवज्जियउ गुरु तेण सुवण्णहिं पुज्जियउ ।
अण्णहिं दिणि उडुगणमेहलहो खलखलखलंतणिज्झरजलहो ।
कंचणधूलीरयपिंगलहो करिदंतविहिण्णसिलायलहो ।
मणियरकब्बुरियणहंतरहो सिहरुच्छाइयसयमहघरहो ।
आसीणसुरासुरसुंदरहो गउ वंदणहत्तिइ[3] मंदरहो ।
सिरिभद्दा[4]सालसुणंदणइं सउमणससरसपंडुयवणइं ।
वज्जियफणिकामिणिणेउरइं चालियचंदुज्जलचामरइं ।
किंणरपारद्धथोत्तसयइं विद्धंसियमाणवभवभयइं[5] ।
अकयाइं विलंबियतोरणइं पयसिवि[6] जिणबिंबणिहेलणइं ।
मंडिय सीहासण[7]वेइयउ परियंचिवि अंचिवि चेइयउ ।

घत्ता—णरविहुणा खगवइगुरुणा करु णिउ सेसासयदलहो ॥
तं मणियहिं महुयरझुणियहिं भणइ व तर[8] दुक्कियजलहो ॥ २ ॥

3

ता तहिं ओलंबियभुयजुयलु संपत्तउ चारणमुणिजुयलु ।
मलु जासु सरीरि ण झाणि मलु णउ परतावणि बलु सुतवि बलु ।
जसु भमइ जासु णउ भमइ मणु णहु भज्जइ कहिं मि ण सीलगुणु ।
वंकत्तणु भउंहइ आयरिउ णउ जासु मइइ[1] किं पि वि धरिउ ।
रसु परमागमि णउ कामरसु वसु जं[2] ण समिच्छइ धम्मवसु ।
सिरि केसजडत्तणु जासु गय णउ सीस वियाणियसत्तणय ।

2. १ MB णिसुणिवि. २ MB अइबलु सुउ. ३ BP वंदणभत्तिइ. ४ P °भद्द°. ५ MBP ° भवसयइं. ६ MBP पइसिवि. ७ MBP सिंहासण°. ८ MBPKT तरु.
3. १ P मइ and gloss मतौ. २ MBP जो.

2. 8 *a* व ज्जि य° शब्दायमानः. 10 *b* प य सि वि प्रवेशं कृत्वा. 11 *a* °वे इ य उ चतुष्किकाः; *b* चे इ य उ प्रतिमाः. 12 °वि हु णा °चन्द्रेण; से सा स य द ल हो निर्माल्यस्थपद्मस्य कृते. 13 म णि य हिं मनोज्ञैः; त र दु क्कि य ज ल हो दुष्कृतजलात् तर, पापं मुक्त्वा सुखी भव.
3. 3 *b* ण हु णखम्.

दुम्मह मय अट्ठ वि जासु मय कय पंचिंदियहुं णं जेण दय ।
तं रिसिजुयलुल्लउ वंदियउ सइंबुद्धें अप्पउ णिंदियउ ।
हउं अज्जि वि एम ण करमि तउ केत्तिउ किर पोसमि असुइचउ ।

घत्ता— सिरिगेहइ पुव्वविदेहइ देसु महाकच्छउ वसइ ॥
तंणयरहु सुरगिरिसिहरहु आयउ तं तहु दिहि दिसइ ॥ ३ ॥

4

तं अरुहजुंयंधरतित्थसरे ण्हायउ ण वडइ संसारजरे ।
तहिं एक्कु साहु आइच्चगइ अण्णेक्कु अरिंजउ सुद्धमइ ।
ते पुच्छिय बुद्धें बे वि जण तुम्हइं तिणाणपाणीयघण ।
महु सामि महाबलु संभरह किं भव्वु अभव्वु व वज्जरह ।
जाणियतसथावरजीवगइ तं णिसुणिवि जंपइ जेट्ठु जइ ।
इह जंबुदीवि दाहिणभरहे अग्गइ जुयाइपारंभवहे ।
आसण्णभव्वु सो णिवखयरु दहमइ भवि होसइ तित्थयरु ।
भोयासिउ जं तं णेउ रहमि दुम्मोयत्तणु तहु तुह कहमि ।
पच्छिमविदेहि गंधिलविसए सीहउरि णरिंदु विमुक्कभए ।
णामें सिरिसेणु सिरीणिलउ सुंदरिदेविहि दरिसियपुलउ ।
तहु पढमु पुत्तु जयवम्मु हुउ बीयउ सिरिवम्मु णरेहिं थुउ ।
सो रुच्चइ जणणिजणणमणहो सो भावइ सयलहु परियणहो ।

घत्ता—सुहडत्तणु बुद्धिवुहत्तणु घिवहिं असेसु वि जलहिजले ॥
किं गुणगणु मण्णइ सज्जणु वण्णइ पुण्णु जि भल्लउ भुवणयले ॥ ४ ॥

३ BP ण जी जीवदय. ४ MBP अज्ज.

4. १ MBP °जुयंधरि. २ MBP ससारवरे. ३ MBP जणा. ४ MBP °घणा. ५ M जेट्ठु जइ. ६ MBP दसमइ. ७ B जंतउ णउ; P ज त ण उ. ८ MBP पढमु पुत्तु. ९ MBP अजवमु. १० MBP णरिंदथुउ. ११ P घिवहुं. १२ M मण्णइ.

7 *a* मय मदाः; मय मृताः. 11 दि हि धृतिः.

4. 1 *a* °स रे जले. 6 *b* जु या इ पा रं भ व हे कर्मभूमिप्रथमप्रवेशमार्गे.

5

मेल्लंतें संतें रज्जरइ वउ लेंतें जंतें परमगइ ।
णरणाहें[1] अइअजुत्तु कियउ लहुतणयहु रज्जु समप्पियउ ।
जेयवम्में[2] ता परिचिंतियउ को फेडइ दइवणियंतियउ ।
णिद्दइवहु[3] सव्वु वि चप्फलउ णिद्दइवकाज्जि जगु सीयलउ ।
णिद्दइवु[4] णवंतु वि को गणइ णिद्दइवहु भासिउ को सुणइ ।
णिद्दइवहु सुक्कइ[5] भरिउ सरु ण फलइ णिद्दइवें णिहिउ तरु ।
णिद्दइवहु बंधु वि होइ परु णिद्दइवहु देव ण देंति वरु ।
ण हणइ भेसहु वि रुयापसरु वियलइ सुवण्णु पत्तउ वि करु ।
णिद्दइवहु विहडइ घरिणि घरु ण करइ सणेहुँ[6] मायापियरु ।
उज्जमुँ[7] करेवि अप्पउ दमइ णिद्दइवहु किं सिरि संकमइ ।
घत्ता—णहु लंघउ गिरि आसंघउ जं जि करइ तं णिप्फलउ ॥
हयकाएं किं ववसाएं सव्वहु दइवु जि अग्गलउ ॥ ५ ॥

6

इणं चिंतमाणो अहं णिंदमाणो[1] ।
अरायं वहंतो अणंगं वहंतो ।
पिउस्सायहंतो[2] रमासायहंतो ।
रईसूहवेणं सयासूहवेणं ।
जसेणं सियं जं[3] मुहेणं जियं जं[4] ।

5. १ P णरणाहें अजुत्तु २ MBP अजवम्में. ३ P णिद्दइयहु. ४ MBP णिद्दइउ. ५ MBP सुक्खइ. ६ BP सिणेहु. ७ MBP उज्जउ.

6. १ B णिद्दमाणो. २ B °स्सायहुंतो. ३ MBPT सियज्ज. ४ MBPT जियज्ज and gloss in T मुखेन कृत्वा जिताब्जं यद्यौवनम्.

---

5. 4 *a* चप्फलउ चपलम्.

6. 1 *a* इणं एतत्पापम्. 2 *a* अराय वैराग्यम्. 3 *a* पिउस्सायहंतो पितर कथयन्, *b* रमासायहंतो लक्ष्मीस्वादहन्ता. 4 *a* रईसूहवेणं कामदेवोद्भवेन, *b* सयासूहवेण सर्वदा सर्वेषामभिलषणीयेन. 5 *a* जसेणं सियजं यशसा निर्मलं यद्यौवनम्; *b* जिय जितम्.

दयंगं समंतो समेणं समंतो ।
णियं जोव्वणंतं गओ सो वणंतं ।
किडीखद्धकंदं णयासीणकंदं ।
सरेणं सवंतं महावंसवंतं ।
सवेल्लीपियालं पुलिंदीपियालं ।
विणित्तंकुरोहं विचित्तंकुरोहं ।
अलीपीयवासं फणिंदाहिवासं ।
महूहिं पलित्तं दवग्गीपलित्तं ।
पवड्ढंतपीलुं पगज्जंतपीलुं ।
हुयातावसीयं सया तावसीयं ।
पवित्तं पसण्णं हयाणेयसण्णं ।
विलुत्तंतयासं पफुल्लंतयासं ।
सुसंतावयासं णिहित्तावयासं ।

घत्ता—तहिं काणणि थियपंचाणणि दिट्ठु भडारउ दुरियमहु ॥
जेयवम्में समियकुकम्में मोक्खहु केरउ णाइ पहु ॥ ६ ॥

7

जसु तित्थगमणु अहवावठाणु जसु धम्मभणणु अहवा सुमोणु ।
जसु इंदियरणु अह परमकरणु जसु अरुहचिंत अह सुयसरणु ।
जसु जोयणिद्द अह जागरणु जसु खलिकिउ दुद्दु अह तवचरणु ।

५ MBP गिरीलग्गकंदं, T णयामीणकंद गिरीलग्गमेघं. ६ M °वियाल. ७ T पहुल्लतयास. ८ MBP अजवम्में.

7. १ MBPT अहवा सठाणु २ P धम्मसवणु. ३ MBP ममोणु. ४ MBT परमकरणु. ५ P खलिकिउ.

6 *a* दयगं दयालवम्. *b* समतो उपशमयन. 8 *a* किडी° सूकर., *b* णयासीणकंद गिरिलग्नमेघम्. 10 *b* पुलिंदीपियालं पुलिन्दीप्रियम्. 11 *a* विणित्त° विनिर्गतः. 12 *a* अलीपीयवास भ्रमरैः पीतगन्धम्; *b* °अहिवास °अधिष्ठानम् 14 *a* °पीलु °वृक्षविशेषम् *b* °पीलु °गजम्. 15 *a* हुयातावसीयं संजातोष्णशीतम्, *b* तावसीयं तापसेभ्यो हितम्. 16 *b* हयाणेयसण्ण हता अनेकैराहारादिसंज्ञा यत्र. 17 *a* विलुत्ततयास विलुप्ता अन्तकस्याशा येन, अजरामरपदप्रापकत्वात्.

7. *a* अवठाणु कायोत्सर्गः.

जसु सयणु धरणि अह कट्ठु[6] तिणु जो तणुमैल[7]धरु मणमलेण विणु ।
उववासु जासु अह जिणकहिउ परपिंडु जेण सुद्धउ गहिउ
तहु दुम्महवम्महणिम्महहो ि वाउ करेवि सयंपहहो ।
सिरिसेणसुएण[8] समिच्छियउ अणगारत्तणउं पडिच्छियउ ।
लुहु केसभारु आलुंचियउ लुहु करणावियारु वि खंचियउ ।
तामोयउ[9] पणवहुं परमजइ महिहरु णामें खयराहिवइ ।

घत्ता—जंपाणहिं विविहविमाणहिं णिहिलु णहंगणु छाइयउ ॥
वेंभइएं णवपावइएं मुहुं[10] णिव्वाय[11]वि जोइयउ ॥ ७ ॥

8

बद्धउ णियाणु परिसिय जहिं कुलि रिद्धि होउ महु जम्मु तहिं ।
जइ अत्थि किं पि रिसिधम्मफलु तो होउ रज्जु विहवियखलु ।
ना तक्खणि णिग्गउ गिरिविवरे कालउ विसहरु तहु लग्गु करे ।
रुहिरुल्लउ धारहिं परिगलिउ[1] धरणियलि कलेवरु रुलुघुलिउ ।
गुरुणा भवपासणासकरइं कहियाइं पंचपरमक्खरइं ।
असुथामु विसेणं[2] झडत्ति हउ गउ जीउं[3] ईसिउवसमियरउ ।
अलयाउरि रायहु तणइ घरे उप्पण्णु मणोहराहि उयरे ।
सो एहु महाबलु भोयरसु णउ मुयइ तेण सणियाणवसु ।

घत्ता—मिच्छत्तें मणकुडिलत्तें अवरु णियाणणिबंधणेण ॥
जगु ताविउ आवइ पाविउ णं वणगयउलु बंधणेण ॥ ८ ॥

६ MB कट्ठुतिणु. ७ MBP मलहरु वि मलेण. ८ P °सेणु सुएण. ९ MBP तात्रायउ. १० MP मुहु. ११ MBK णिव्वाइवि.

8. १ MBP परियलिउं. २ P झडत्ति विसेण. ३ P जीविउ इसिउवसमियउ.

11 णवपावइएं नवप्रव्रजितेन जयवर्ममुनिना.

8. 6 *b* ईसिउवसमियरउ ईषदुपशमितरजाः.

9

णत्थित्तविवाइहिं दुम्मइहिं संभिण्णमहामइसयमइहिं ।
भुयदंडिहिं चप्पिवि पेल्लियउ अप्पाणउं कद्दमि घल्लियउ ।
पइं कड्ढिवि सुइविवारिहिं ण्हविउ उच्चाइवि सीहासणि थविउ ।
णिसि सिविणइ अज्जु णियच्छियउ तुह णाहें दुरिउ दुगुंछियउ ।
सुत्तुट्ठिउ काइं मि णउ चवइ अच्छइ चिंताऊरिउ णिवइ ।
दिट्ठउ णिमित्तु तं णउ कहइ आगमणु तुहारउ मणि महइ ।
अचिरेण जाहि पहुमंदिरहो भमरु व भमंतु इंदीवरहो ।
जा ण कहइ सो पत्थिवु सुयणु ता पहिलउ सिविणउं तुहुं जि भणु ।
अण्णु वि लइ ढुक्की खयणियइ एवहिं सो एक्कु मासु जियइ ।
पडिवज्जइ धम्मु म भंति करु दिवसहिं होसइ तेलोक्कगुरु ।
संबोहहि जाइवि तुरिउं तुहुं पावेसइ भव्वु अणंतु सुहुं ।
तं णिसुणिवि जइवरबोल्लियउ णियहियवउ दुक्खें सल्लियउ ।
साहारिवि सुमरिवि जिणवयणु आलोइवि गमणिच्छइ गयणु ।

घत्ता—रिसि संसिवि बे वि णमंसिवि लहु संचल्लिउ मंतिवरु ॥
पहु पविमलु गुरु दंसणजलु तण्हइ जोयइ चोमसरु ॥ ९ ॥

10

तावेत्तहि णहयालि णिव्वडिउ खेयरु खगवइदिट्ठिहि चडिउ ।
चिंतइ सो बहुविहु भिण्णमइ किं गिरिवरु णं णं खयलगइ ।
किं घणु णं णं पडिखलियमरु किं पक्खि ण एहु पलंबकरु ।
इय जाम कमेण विवेइयउ ता बुद्धु समीवु पराइयउ ।

9. १ MBP मिच्छत्तविवाइहिं. २ MBP सुइवारिहिं. ३ P सिविणउ अज्ज. ४ MBP बुहमंदिरह. ५ MB खयणिवइ. ६ MBP गयणिच्छइ गमणु.

10. १ MBP ता एत्तहि. २ MB बहुविह. ३ MB खयरगइ. ४ MBP णिवेण णिवेइयउ. ५ MBP समीउ.

---

9. 1 *a* णत्थित्तविवाइहिं नास्तिकविवादैः 9 *a* खयणियइ क्षयस्यावश्यभावः. 13 *b* गमणिच्छइ गमनेच्छया.

10. 1 *a* णिव्वडिउ प्रकटीभूतः. 2 *b* भिण्णमइ नानामतिः; *b* खयलगइ खतलगतिः. 3 *b* पडिखलियमरु प्रतिहतवातः

उट्ठिवि आलिंगिउ णिववरेण तेण वि णिउं पणविउ णियसिरेण ।
पुणु भणिउं अउव्वु पसाउ किउ किंकरु हउं परमुण्णइहि णिउ ।
ता भणइ राउ णिसि लक्खियउ पइं जीवियव्वु महु रक्खियउ ।
मंतें पउत्तु भो णउ रहमि पइं दिट्ठउ दंसणु हउं कहमि ।
चंप्पियउ जेहिं ते जड कुगुरु जो पंकु तं जि दुग्गइविहुरु ।
जं जलु तं जिणवरिंदवयणु धोयउ मइं तुहुं सुविसुद्धतणु ।
हरिवीढारोहणु सुगइसुहुं पुणु कहइ संतु वियसंतमुहुं ।

घत्ता—मइं देसिउ चारणभासिउ देव कयाइ ण संचलइ ॥
सहुं मासें एक्कें मासें आउ तुहारउ परिगेलइ ॥ १० ॥

11

ता भणइ महाबलु रयविरमु कल्लाणमित्तु बंधउ परमु ।
तुहुं बप्प मज्झु दाहिणउ करु आलम्बणखंभु सुसंतियरु ।
आसंण्णमरणु किं तउ करमि हउं एवहिं संणासिण मरमि ।
इय जंपिवि मउलियकरयलहो पुरि अप्पिवि पुत्तहु अइबलहो ।
परियणसयणाइं खमाइयइं मुंणिभावणसुत्तइं भावियइं ।
तणुमणवयसिरइं वि मुंडियइं इंदियइं खगिंदें दंडियइं ।
मलभरियइं चरियइं छंडियइं मायामिच्छत्तइं खंडियइं ।
णीसेसं परिग्गहु परिहरिवि अरहंतु भडारउ संभरिवि ।
पच्छा घुलंतसाहारवणि थिउ सहससिहरि जिणवरभवणि ।

घत्ता—अहिसित्तइं सुद्धंपवित्तइं जिणपडिबिंबइं पुज्जियइं ॥
हयभमरहिं चालियचमरहिं खयरकुमारहिं विज्जियइं ॥ ११ ॥

६ MBP णिउ. ७ P परमुण्णइ णिहिउ. ८ B चंपियउ. ९ B परियलइ.

11. १ MBP आसण्णु मरणु. २ MBP चरामि. ३ MBP संणासणु करामि. ४ M णियभावण°. ५ MBP णीसेसु. ६ MBP पुण्णपवित्तइ.

6 *b* परमुण्णइहि णिउ परमोन्नतिं नीतः. 8 *b* दंसणु स्वप्न..

11. 9 *b* सहससिहरि सहस्रशिखरे.

12

कमकमलपडियभुवणत्तयहो उब्भासियसियछत्तत्तयहो ।
तियसिंदविंदवंदियपयहो पारद्ध पुज्ज परमप्पयहो ।
उक्खित्त चरुय पीणीय[1] भूय माया इव उच्चाइय धूयं[2] ।
हत्थिहडा इव घंटामुहल वरणरवइसेवा इव सहल ।
जलणिहिवेला इव सरयणिय वेसा इव दरिसियदप्पणिय[3] ।
तरुराइ व विविहकुसुमथइय णहलच्छि व पउरकेउछइय ।
घम्मा इव दित्तदीवसहिय सुसिहरि[4] व चंदणमहमहिय ।
अट्ठाहइं महिवि जिणाहिवइ बावीस दिवस संणासगइ ।
पाउग्गमरणविहि तेण कय सुहझाणारंभे प्राणं[5] गय ।

घत्ता—ईसाणइ सग्गविमाणइ[6] सिरिपहि सिरिकमलिणिभमरु ॥
णिच्छम्में णिउ णियधम्में खणमेत्तेण अजरु अमरु ॥ १२ ॥

13

मणिमइ सुमहंतधंतविलइ उववायसयणि[1] संपुडणिलइ ।
सो मरिवि महाबलु तियसकुले णं विज्जुपुंजु[2] जलहरपडले ।
हुउ देउ दिव्वु ललियंगधरु ललियंगु[3] णाम णं कुसुमसरु ।
वेउव्वियणयणसुहावणिय तवणीयतेय[4] ओहावणिय ।
बिहिं घडियहिं रंजिय सुरवणिय जिह तणु तिह जोव्वणसिरि[5] जणिय ।

---

12. १ MBP पीणियभुयहो. २ MBP उच्चाइयधुवहो, T भूय पुत्री धूपश्च. ३ MB °दप्पणय. ४ K omits this line. ५ MBP पाण. ६ MBP सग्गि विमाणइ.

13. १ MBPK °सयण°. २ P विज्जपुज. ३ MBP ललियगणामु. ४ MBP तवणीयकंति°. ५ P जोव्वणु.

---

12. 3 *b* मायाइव जननीव; धूयपुत्री धूपश्च. 6 *a* °राइ पङ्क्तिः. 7 *a* घम्मा इव प्रथमनरकभूमिस्तत्संबन्धि तिर्यक्क्षेत्रम्. 8 *a* अट्ठाहइं अष्ट दिनानि.

13. 1 *a* °धतविलइ ध्वान्तविनाशे. 4 *b* तवणीयतेयओहावणिय सुवर्णदीप्तितिरस्कारिका. 5 *a* सुरवणिय सुरवनिता.

लइ पुण्णविसेसें सावँडिउ   पाएं सहुं णेउरु तहु घडिउ ।
हत्थें सहुं कंकणु मणिजडिउ   सीसें सहुं मउडु वि पाँयडिउँ ।
मउडें सहुं कुसुममाल चडियँ   कंठें सहुं सियहारावलिय ।
वच्छें सहुं बंभसुत्तु विमलु   सहुं कडियलेण कडिसुत्तु चलु ।
तहु जम्मविलासपयासणउं   सहजायउ णिवसणभूसणउं ।
णयणहिं सहुं अंणमिसपेच्छणउं   लायण्णु भणामि किं तहु तणउं ।

घत्ता—णउ रोमइं अट्ठियचम्मइं ण छिरेउ णउ मुहि मीसियउ
घणघंडिमहि कंचणपडिमहि संणिहु देहुँ पयासियउ ॥ १३ ॥

14

छुडु देउ णिसण्णउ गब्भहरे   णियदिट्ठि देंतु णियबाहुसिरे ।
ता दुंदुहि वज्जिय गहिरसर   धाइय जयजय पभंणंत सुर ।
वरिसिय कप्पयरु कुसुमवरिसु   अमरंगणगणु णच्चिउ सेरसु ।
एए के को हं कवणु घरु   अवलोयइ णियउरु पाँउ करु ।
सुत्तुट्ठिउ जिह जा संभरइ   तों अवहि तासु मणि वित्थरइ ।
बुज्झिउ सइंबुद्धहु संचरिउ   संणासु वि जं णरभवि चरिउ ।
उट्ठिउ सीहांसणि संणिहिउ   देर्वहिं अहिसेउ तासु विहिउ ।
जिणु कामकसायविवज्जियउ   तेण वि परमेसरु पुज्जियउ ।
उरॅपेल्लियपीणपयोहरहं   चालीससयइं पवरच्छरहं ।
णक्खत्तकंतिसंकासणह   महएविसयंपहकणयपह ।
चिरभवपरिपालियसुद्धवय   कणयलय सुहासिणि विज्जुलय ।
सो एयहिं सहुं सुंहुं तहिं वसइ   एक्कें पक्खेण समूससइ ।

घत्ता—सुहसाउ परु परमाउ जलहिमाणवित्थरिएण ॥
सो जीवइ एक्कसु जेमइ वरिससहासें भरियएण ॥ १४ ॥

६ M सपडउ; BP संपाडिउ. ७ B पायपउ. ८ MBP add after this: कण्णें सहुं कुंडलु विप्फुरिउ. ९ MBP चलिय. १० MBP आणिमिस°. ११ MBP सिरउ. १२ T घणणिविडं. १३ MB देउ.

14. १ P पभणति. २ MP सारिसु. ३ MRP पाय. ४ MBP तो. ५ P सिंहासणि. ६ MB देविहिं. ७ M घरि, BP उरि. ८ P °हरिहं. ९ M बिज्जुलिय. १० MBP सहुं तहिं. ११ MB थिरु; P थियउ १२ MBP °वित्थरियएण. १३ M एक्कुसु.

14. 10 *a* संकासणह सदृशनखाः. 14 एक्कसु एकवारम्.

15

सो रयणिउ सत्त समुच्छियउ सुहकारि ण केण णियच्छियउ ।
तहु पल्लपुंहुत्ताउसि वणिय मालूरपीणपीवरथणिय ।
कालेण चिरंतण अवहरिय अण्णेक्क सयंपह अवयरिय ।
तहि अहरल्लइ कामेण रसु तहिं दिट्ठिसियत्तणि णिययजसु ।
तहि णाहिदेसि गहिरत्तणउं तहिं भउंहाजुइ कुडिलत्तणउं ।
तहि थणजुयलइ कढिणत्तणउं तेण जि संणिहियउं अप्पणउं ।
मंदरकंदरि कीलियखयरे कुंडलरुजगदिगुहाविवरे ।
तहि तणुपवियारें गय दिवस तहु ललियंगहु रइरमणवस ।

घत्ता—भरहाहिव णिसुणि महाणिव रिसिहिं पुराणहिं वज्जरिए ॥
गयकालइ अइअसरालइ पुप्फयंतगइसंभरिए ॥ १५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महाबलसंणासमरणं ललियंगुप्पत्ती णाम
एक्कवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २१ ॥
॥ संधि ॥ २१ ॥

15. १ B समिच्छियउ. २ MBP °पहुत्ताउस धणिय. ३ Tp रिसहु. ४ MB पुराणइं; P पुराणिहिं. ५ MBP वजरिय; T वज्जरइ. ६ MBP °समरिय, T मभरइ. ७ MBPK सणासण.

15. 1 *a* समुच्छियउ समुच्छ्रितः उच्चः. 2 *a* पल्लपुहुत्ताउसि पल्य पृथुत्व आयुर्यस्याः; वणिय वनिता. 9–10 भरहाहिवेत्यादि—गौतमस्वामी श्रेणिकं कथयति । हे भरताधिप श्रेणिक, निशृणु त्वम् । पूर्वगते कालेऽतीवासराले अतिशयेन बहुतरे भरतो नष्टः । रिसहु ऋषभनाथस्तस्य पुराणानि वज्जरइ कथयति । तस्य च कालस्यानोपायभूतां (?) पुष्पदन्तगतिं चन्द्रादित्यगतिं स्मरति सप्रधारयति । अथवा पुष्पदन्तजिनस्य गतिं मुक्तिं तत्प्रापकमार्गं वा सभरइ धरति पुष्णाति वा । रिसिहि मि ति पाठे 'गए कालए अइअसरालए तह तणुपवियारें गयदिवसहो ललियंगहो' इति भरताधिप निशृणु । कथंभूते काले पुराणए वज्जरिए ऋषिभिर्गणधरदेवादिभिः पुराणे कथिते तत्कालनयनार्थं पुष्पदन्तगतिः सस्मृता' इति.

XXII

सज्जणमणसंताविरइं रइसुहवारणाइं दुप्पेच्छइं ॥
दिट्ठइं दुक्कियदुमहलइं ललियंगेण मरणणेवच्छइं ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुद्धरखयकालें पडिपेल्लिउ दिट्ठउ कुसुमदामु ओहल्लिउ ।
मउ देवंगवत्थु दरमइलिउ दिट्ठउ अंगु किं पि मलकालिउ ।
परिवड्ढिउ भोएसु विरायउ आहरणोहु दिट्ठु णित्तेयउ ।
परियणु सोयविरसु जंपंतउ दिट्ठउ सुरतरुवणु कंपंतउ ।
मोहियमणु माणिणिउ णिरिक्खइ जा सो माणसदुक्खं सुक्खइ ।
ता तियसगुरु को वि तहिं भासइ णियइणिओएं सक्कु वि णासइ ।
भो ललियंग पमल्लहि भयजरु तिहुयणि णत्थि को वि अजरामरु ।
सुयरहि जं सइंबुद्धें सिट्ठउ जसु सेवाहलु एत्थु जि दिट्ठउ ।
तं जिणपायपोमु सब्भावें जेण विमुच्चहि भवकयपावें ।
दुल्लसाइ णरत्तणहाणिहि मा पडिहीसि बप्प मिगजोणिहि ।
संसारंधिवमूलुम्मूलइं मा होहिंति दूरि व्रतसीलइं ।

घत्ता—जायइं पुणु वि पणट्ठाइं रंगणडा इव भावविचित्तइं ॥
मेल्लिवि सासयसिद्धिसिरि दुलहाइं णउ होंति सुरत्तइं ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza –

मदकरिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना
मृगपतिनादरेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम ।
निर्मलतरपवित्रभूषणगणभूपितवपुरदारुणा
भारतमल्ल सास्तु देवी तव बहुविधमम्बिका मुदे ॥

GK do not give it.

1. १ MB °दाम. २ MB °वत्थ. ३ MBP दरमालियउ. ४ MBP °कलियउ. ५ M परियड्ढिय; B परिवाड्ढिय. ६ P दुक्खइ. ७ MBP को वि णत्थि. ८ M सुम्वरहि, BP सुमरहि. ९ MBP जेण जि मुच्चहि भवभयपावें. १० MBPT मिग°. ११ MBP मा हो होंति. १२ MBP वयसीलइं; K व्रयसीलइं. १३ MB सासयरिद्धि.

1. 2 °णेवच्छइ चिह्नानि. 3 *b* ओहल्लिउ म्लानम्. 4 *a* दर° ईषत 8 *b* णियइणिओएं भवितव्यतासंसर्गेण.

2

ता ललियंगें तं आयण्णिवि वारवार णियहियवइ मण्णिवि ।
तित्थइं जाइवि सुहतित्थंकरु चंपएहिं पयं परमसुहंकरु ।
कुवलएहिं कुवलयउद्धारणु कुंदहिं कुंददसणु सुहकारणु ।
सेंदूरेहिं दूरुज्झियवम्महु मंदारहिं दारासाणिम्महु ।
वासंतहिं वसिलु जियविग्गहु जूहियाहिं रिसिजूहपरिग्गहु ।
तिलयहिं तिजगतिलउ जो जाणिउ सुरहिं ण मेरुहु मेरुहु ण्हाणिउ ।
बंधूएहिं बंधविद्धंसणु बउलहिं अवउलकेवलदंसणु ।
घणसालेहिं सलिलसुसालिलघणु चंदणेहिं पसमियणिच्चंदणु ।
धूवहडेहिं णिहीहडदावउ दीवएहिं तेल्लोकहु दीवउ ।
मालईहिं मालइयामहिरुहु जिणु पुज्जियउ तेण पूयारुहु ।
अच्चुयकप्पजिणालउ जाइवि चेईतरुतलि जइवइ झाइवि ।
जीविउ मुक्कउ खणि ललियंगें अंगु विलीणउं पुण्णविहंगें ।

घत्ता—जंबूदीवहु मंडणिय मणुयजणाणि चिंतियसुहदाइणि ॥
मेरुहि पुव्वविदेहि थिय णाम पुक्खलावइ जणमेइणि ॥ २ ॥

3

कुरारविंदविंददलवट्टणु उप्पलखेडु णाम तहिं पट्टणु ।
साहुद्धरणु जेत्थु णंदणवणि णउ णंदंति कहिं मि दीसइ जणि ।
जेत्थु लोउ विणएणोणलउ उद्धाणणु एक्कु जि करहुल्लउ ।

2. १ MBP °तित्थकर . २ M पऊ, B पर ३ BP °सुहकर. ४ MBP सिंदुरहि. ५ P °णिम्मुहु. ६ PT वासंतिहि. ७ P मेरुहि मेरुहि ८ MPK बंधणविद्धंसणु. ९ MB अवियल°, P अविउल°; T अवउल°. १० P °सुललिय°. ११ धूवडहेहिं. १२ P पुज्जिउ. १३ MBP पुज्जारुहु. १४ MBPK °विहगें, T °विहगे.
3. १ M उप्पलु खेडु. २ MB णामें, णामु ३ T साहुलाअओणलउ.

2. 4 *b* दारासा° कलत्राभिलाषः. 5 *a* वासतहिं अतिमुक्तकैः. 7 *b* अवउलकेवलदंसणु अशरीरग्राहि सिद्धस्वरूपप्रापक केवल केवलज्ञान यस्य. 8 *a* घणसालहि कर्पूरैः; *b* °णिच्चंदणु नित्याक्रन्दनम्. 10 *a* मालइया° लक्ष्मीलतिका. 12 *b* पुण्णविहगें पुण्यक्षयेण.

3 2 *a* साहुद्धरणु शाखानामुद्धरणम्. 3 *a* विणएणोणलउ विनयेन प्रणतः; *b* करहुल्लउ उष्ट्रः.

करि कंकणु बंधणु पँइ णेउरु अण्णु ण जेत्थुँ अत्थि दुक्खाउरु ।
खलु तेल्लियँहरि णिरु णिण्णेहउ अण्णु सव्वु जहिं सुयणु सणेहउ ।
चाहि लिहिय भित्तिहि चित्तयरें दीसइ तणुहि ण णरवँइरणियरें ।
सरसंधाणु जेत्थु वायरणइ णउ परँयक्कभीमि रायरणइ ।
जहिं हयवरु हरि णउ णारीयणु वंसु जि छिद्दसहिउ णउ पुरयणु ।
कुणडि रसक्खउ णउ विवणीवहि अँसिहि अपेउ वारि णउ सरिद्दहि ।
अंजणु णयणि जेत्थु ण तवोहणि णायभंगु गारुडि ण धणज्झणि ।
संकरु पहु ण वण्णविहिसंकरु दोहउ गोवालु जि णउ किंकरु ।
जहिं कुंजरु भण्णइ मायंगउ णउ माँणवु कइ वि मायं गउ ।

घत्ता—जणु कलहं सहुं सज्जणेण ण करइ को वि ण विप्पिउ भासइ ॥
जहिं कलहंसहं गइपसरु पंगँणि पंगणि वावहि दीसइ ॥ ३ ॥

4

वज्जबाहु णामें तहिं णरवइ रिद्धिइ जेण पँरिज्जिउ सुरवइ ।
जासु कित्ति गय दसँहिं दियंतहिं आरूढी वरदिक्करिदंतहिं ।
जासु खँग्गु वेरंतु वियंभिउ जासु रज्जु ण परेहिं णिसुंभिउ ।
जासु कोसु चाएण पँवित्तिउ जेण तिजगु सुँकुडुंबु वि चिंतिउ ।
जेण गोत्तु धम्मेणुज्जोइउ जेण चित्तु जिणपयजुइ ढोइउ ।
पेम्मसासवासालवसुंधरि तँासु देवि णामेण वसुंधरि ।
सग्गहु गब्भवासि अवयरियउ णवमासहिं उयरहु णीसरियउ ।
ताहि तेण जणियउ ललियंगउ णंदणु णं णरवेसु अणंगउ ।

४ M पउ, B पए. ५ P अत्थि जेत्थु. ६ MBP तेल्लियागिहि. ७ B णरवइणियरें. ८ MB परचक्कभीमरायरणइ; P परयक्के भीम° ९ MB आसि अप्पेउ. १० MBP माणउ कया वि. ११ MBP मंदिरपगणवाविहि.

4. १ MBP पराजिउ. २ MBP दिसाहिं. ३ MB खग्गि धीरत्तु. ४ MB पवत्तिउ. ५ MBP सकुडुंबु व. ६ MBP तहु वल्लह महएवि वसुंधरि.

7 *a* सरसंधाणु स्वरसंधिः, पक्षे, शरसंधानम्; वायरणइ व्याकरणे. 8 *a* हयवरु अश्ववर , हतो वरो यस्य नारीगणस्य; *b* छिद्द° छिद्रं दोषश्च. 9 *a* कुणडि कुत्सितनटे, विवणीवहि अट्टमार्गे. 10 *a* अंजणु अञ्जनं पापं च; *b* णायभंगु सर्पभङ्गो न्यायभङ्गश्च. 11 *a* संकरु पहु प्रभुरेव सुखकारी शंकरो न तु वर्णसंकरः; *b* दोहउ गोदोहकः, द्विधवः स्वामिद्वययुक्तः. 12 *b* मायंगउ मायां गतः. 13 कलहं सकण्टकम्.

4. 6 *a* पेम्मेत्यादि—स्नेहधान्यस्य वर्षयुक्ता भूमिः.

कुडिलहिं केसहिं उज्जुयगत्तउ रहसहिं जंघहिं दीहरणेत्तउ।
किसमज्झेण थोरभुयजुयलें वियडें कडियलेण वच्छयलें।
सत्तें णाहि सरें गंभीरें छज्जइ सीसें छत्तायारें।
कोमलपयहिं अकोमलहत्थहिं अवरेहिं मि लक्खणहिं पसत्थहिं।

घत्ता—लक्खणपुंजु व पुंजियउ एक्कहि विहिणा अकयविहायउ॥
वज्जंकियकरचरणयलु वज्जजंघु वज्जोवमकायउ॥ ४॥

5

सो कुमारु तहिं वड्ढइ जइयहुं णवरीसाणकप्पि ता तइयहुं।
रुयइ सयंपह पियविरहालस हा ण सुहासि मज्झु सर माणस।
हा हे सग्गलोय विच्छायउ विणु णाहेण णिरुव्वसु जायउ।
हा कप्पद्दुम किं किर फुल्लहि पइमरणे वि कट्ठ णो हुल्लहि।
हा तुंबरु गाइयउं पहुच्चइ रमणें विणु महु किं पि ण रुच्चइ।
हा ललियंगदेवु कहिं पेच्छमि हा हे सांवि केव कहिं अच्छमि।
को वारइ भवियव्वु हवंतउ इह देवहु वि कम्मु बलवंतउ।
एम्व चवंति विमुक्कुच्छाहिय दढधम्में सुरेण संबोहिय।
तावसघरिणि व मंदरवण्णी मंदरसेलहु मंदरवण्णी।
गय सउमणससुरासाजिणहरि मुइय सरारिबिंबु धारिवि सिरि।
पुव्वविदेहि तहिं जि सकमलसर णयरि पुंडरिंगिणि पंडुरघर।

घत्ता—जहिं घरसिहरि णडंतएण घरसिहरोवरि णियडि विलंबिउ॥
णवजलकणचक्खंतएण णूसिवि मेहु मऊरें चुंबिउ॥ ५॥

७ MB उज्जुयगत्तहिं; P उज्जयगत्तहिं. ८ MBP दीहरणेत्तहि, ९ MBP सुत्तें १० MBP लक्खणेहिं.

5. १ P तुंबरु. २ MBP ललियगु देउ. ३ MBT सामि and gloss in T सखि. ४ MBP भवंतउ. ५ P उरि. ६ MB ° सरि. ७ M णयर. ८ MB °घरि. ९ P णिवडि.

11 *a* सत्तें सत्त्वेन. 13 अकयविहायउ अकृतविभाग .

5. 1 *b* णवरीसाणकप्पि केवलईशानकल्पे. 6 *b* सांवि स्वामिन्. 9 *a* मंदरवण्णी मेरुसदृशवर्णा; *b* मंदरवण्णी स्तोकरमणीया 10 *a* °सुरासा° पूर्वदिशा, *b* सरारिबिंबु स्मरारिर्जिनस्तस्य बिम्बम्. 12 विलंबिउ स्थितः.

6

णिवेसेण रम्मा णाहालग्गहम्मा ।
मुणिंदेहिं सोम्मा जिणुं[1]दिट्ठधम्मा ।
धणेणं समिद्धा जसेणं पसिद्धा ।
[2]सुएणं पबुद्धा घएणं विसुद्धा[3][4] ।
घणारामवंती विसाला वसंती[5] ।
सु[6]पायारदुग्गा कयाणेयमग्गा ।
अणे[7]यादुवारा अणेयप्पयारा ।
जणेणं महत्था कएणं कयत्था ।
भ[8]एणं विमुक्का सया जा णिरिक्का ।
इमाए पुरीए [9]अमेओ सिरीए ।
महेणं महंतो गुणी वज्जदंतो
पहू चक्कवट्टी सुमग्गाणुवट्टी ।
कयंतो व्व दंडी सई तस्स चंडी ।

घत्ता—लच्छि व सोहइ लच्छिमइ तासु विउलि वच्छयलि विलग्गी ॥
झत्ति झसंकें कुद्धएण मुक्की भल्लि व हियवइ लग्गी ॥ ६ ॥

7

अरिहरिणोहवियारणवाहहु[1] तहि सुंदरिहि तासु णरणाहहु ।
सिरि व सिरिप्पहसुरहरवासिणि चविवि सयंपहतियसविलासिणि ।
सिरिमइ णामें तणुरुह हूई णाइ कुमारहं कामविसूई ।
पाय सकुंकुम किं तहि वण्णमि वम्महमुद्दावेसु व मण्णमि ।

6. १ P जिणांदिट्ठ°. २ B omits this foot. ३ MP विसुद्धा. ४ MBP add after this: गुणाण पवित्ता. ५ MBP add after this: महातेयवती. ६ MBP सपायार°. ७ MBP अणेयहुवारा. ८ B रएण. ९ P इमेया सिरीए.

7. १ B °वावहु.

---

6. 1 *a* णिवेसेण रचनया. 9 *b* णिरिक्का चोररहिता. 11 *a* महेणप्र तापेन. 13 *b* चंडी भार्या.
7. 2 *a* सिरिप्पहसुरहर° श्रीप्रभविमानम्. 4 *b* °मुद्दावेसु °मुद्रावतारः

तंबइं पोमरायरुइचोक्खइं रत्तउ किं रावंति ण णक्खइं ।
पेच्छिवि तरुणिजाणुसंधाणइं मुणि वि करंति मयणसंधाणइं ।
ऊरुवाहियालिअंतरि चुउ कासु ण चलइ बप्प मणझेंदुउ ।
कासु ण णिण्णासिउ कयकित्तणु सोणीगरुयत्तणि ण गुरुत्तणु ।
मयरद्धयहुयवहधूमावलि रोमावलि तरुणहं हिययावलि ।
णाहिकूउ रइवइरससासणु तिवलिभंगु वयभंगपयासणु ।
थणथड्डत्तें विडथड्डत्तणु अवसें णासइ विसेण विसत्तणु ।
वम्महभूमि जासु देही करु तासु जि कामकुंडु थिउ सुहयरु ।

घत्ता—पोप्फलिकंठसमाणहो कंठहु को ण होइ उक्कंठिउ ॥
मुहरसु मुद्धहि सिद्धरसु सुहसुवण्णसिद्धियरु परिट्ठिउ ॥ ७ ॥

8

बहुवण्णहिं णयणहि कयरायउ रत्तउ एक्कवण्णु जगु जायउ ।
कासु ण हित्तउ किर धुत्तत्तणु भउंहावंकत्तें वंकत्तणु ।
अंगोवंगपएसघुलंतहं केसपासु पासु व परचित्तहं ।
जाहि रूउ सुरगुरु ण वियक्कइ जा वण्णहुं फणिवइ वि ण सक्कइ ।
सा जामच्छइ मउलियणेत्ती सिरिहरि सत्तमभूमिहि सुत्ती ।
णिसि ससहरकरहिमलव लेंती सालसु अंगविलासु वहंती ।
मणहरवणु जसहरु जिणु आयउ कहिं मि णं मायउ देवणिकायउ ।
वीणावंसमउंदाणिणद्दहिं णाणाथोत्तवित्तथुइसद्दहिं ।
ता उट्ठिउ कलयलु गरुआरउ वियलिउ कण्णहिं णिद्दाभारउ ।

२ MK कियकित्तणु. ३ MBPK सोणीगरुयत्ते ण. ४ MK गुरुयत्तणु. ५ M reads this line as: अवसें णासइ विसेण विसत्तणु, थणथड्डत्तें विडथड्डत्तणु. ६ P पिउ. ७ MB कोकिलकंठ°. P कोकिलिकंठ°.

8. १ MP विहुवण्णहिं रयणहिं; B विहवण्णहि रयणहिं. २ M हित्तइं. ३ MBK केसपास. ४ MBP सुरगुरु वि ण अक्खइ. ५ B समाइउ. ६ P °णिणायहिं. ७ B ° थुइभद्दहिं.

---

6 *b* मयणसंधाणइं कामसंकल्पाः. 7 *b* °झेंदुउ कन्दुक. 8 *a* कयकित्तणु कृतव्यावर्णनम्. 10 *a* रइवइरस° कामरसः. 11 *a* विसेण विसत्तणु विषेणेव विषत्वं नश्यति.

8. 8 *a* ° मउंद° मृदङ्गः.

घत्ता—सुर जोयंतिहि ताहि तहिं जम्मावरणइं खणि ओसरियइं ॥
सग्गभवंतरु संभरिवि थक्कइं मणि ललियंगहु चरियइं ॥ ८ ॥

9

हा ललियंग देव पभणंती पंडिय स महियलि तणु विहुणंती ।
मुच्छिय सिंचिय सलिलणिवाएं आसासिय चलचामरवाएं ।
उट्ठिय णीससंति अइरीणी दइयविओगवेयविद्दाणी ।
वम्महु अट्ठ वि अंगइं तावइ चित्त जलइ जलइ जणियावइ ।
मलयाणिलु पलयाणलु भावइ भूसणु सणु करि बद्धउ णावइ ।
जहिं संजायउ चित्तु जि सयदलु तहिं किं किज्जइ सीयलु सयदलु ।
ण्हाणु सोयण्हाणु व णउ रुच्चइ वसणु वसणसंणिहु सा सुच्चइ ।
असुहारु व आहारु ण गेण्हइ णंदणवणु पिउवणसमु मण्णइ ।
फुल्लु णयणफुल्लु व असुहावउ तंबोलु वि बोल्लु व कयतावउ ।
पुरु जमपुरु व घरु वि अरइयरउ पंरहुयलविउ महुरु णं महुरउ ।
गेयसरु वि णं रिउमुक्कउ सरु सवलहणउं सबलहणु व दिहिहरु ।
चंदणु इंधणु विरहहुयासहु ता सहीहिं विण्णविउ महीसहु ।

घत्ता—आवेप्पिणु लच्छीमइह सह सपियाइ पईहरवाहें ॥
पियसुमरणदुहदुम्मणिय दुहिय णिहालिय णरवरणाहें ॥ ९ ॥

८ M पुव्वभवंतरु.

9. १ MLP पडिय महीयलि. २ MBP °णिहाएं. ३ MBP उट्ठी. ४ MBPK °विओय°. ५ MBP अट्ठइं अगइं. ६ BP पलयाणिलु. ७ MBP परहुय°. ८ MBP विरहु. ९ M सहीइ.

9. 2 *a* णिवाएं °निपातेन. 3 *b* दइये त्यादि– दयितेन प्रियेण सह वियोगस्तस्य वेग आवेशः वेदोऽनुभवो वा, तेन विदीर्णा. 5 सणु शणबन्धनम्. 6 *a* सयदलु शतखण्डम्; *b* सयदलु कमलम्. 7 *b* वसणु वस्त्रम्, वसण° व्यसन दुःखम्. 8 *a* असुहारु प्राणहारकः. 10 *a* अरइयरउ अरतिकरम्. 11 *b* सवलहणउ समालम्भनं चन्दनादि; सबलहणु स्वबलघातकं मृतकस्नान वा. 13 सपियाइ स्वप्रियया; पईहरवाहें प्रदीर्घबाष्पेण.

10

सुर्यरिउ मुद्धइ पुव्विलउ वरु किं जाणहुं सुरु किंणरु किं णरु ।
इय परिणामपवित्ति वियप्पिवि पंडियधाइहि पुत्ति समप्पिवि ।
गउ धरणीसु णिहेलणु जावहिं पहरणउववणवालेय तावहिं ।
ऑइय दोहिं मि कहिउ णवेप्पिणु देव देव णिसुणहि मणु देप्पिणु ।
जसहरासु उप्पण्णउ केवलु आउहसालहि चक्कु णिरग्गेलु ।
ता राएं सीहासणु मेल्लिवि सिरमउडेण महीयलु पेल्लिवि ।
भणिउ जयहि अरहंतभडारा जय संसारमहण्णवतारा ।
जयहि तिसल्लवेल्लिणिल्लूरण सविणयसुयणमणोरहपूरण ।

घत्ता—तिमिरु हणंतु करंतु दिहि उवसमवंतहु वियलियगव्वहो ॥
ताँवुग्गमियउ दिवसयरु णाणविसेसु व सोहइ भव्वहो ॥ १० ॥

11

दंतघायगिरिभित्तिवियारणि कण्णतालअलिवारणि वारणि ।
कुलिसदसणु कयमणतमणिरसणु आरुहेवि ससिसियसुइणिवसणु ।
समवसरणु गउ सेण्णें सहियउ अण्णु वि जो एहउ सो सहियउ ।
दिट्ठु असोयहु मूलि असोयउ कुसुमंचिउ हयकोसुमसायउ ।
दिव्ववाणि मुणि णिव्वाणेसरु अमउ मयारिवीढि संठिउ परु ।
चलचामरु णिच्चामरसेविउ भामंडलरुइमंडलदीवउ ।
दुंदुहिरउ दुहिरवणिव्वारणु लोयसारु संसारुत्तारणु ।
छत्तसमासिउ छत्तातियालउ अतियालउ संबुद्धतियालउ ।

10. १ MBP सुमरिउ. २ MBP णिहेलणि. ३ MBP °वालहि. ४ MBP आविवि. ५ MBP सुणिम्मलु. ६ MBP ता उग्गमियउ.

11. १ P णिचामरु. २ P दुंदहि°. ३ MBP दुहरव°; T दुहिरव°.

11. 1 *b* °ताल° व्यजन-. 2 *a* कुलिसदसणु वज्रदन्त.. 3 *b* सहियउ आत्महित., 4 *b* कोसुमसायउ कामः. 5 *b* मयारिवीढि सिंहासने. 6 *b* °मंडलदीवउ लोकप्रकाशक-. 7 *a* दुहिरव° दुःखितशब्द-. 8 *a* छत्ततियालउ छत्रत्रिकयुक्तः, *b* अतियालउ स्त्रीरहितः अनिकान्तकालो वा, °तियालउ °त्रिकालः

कमलासणु केसउ जगि सो हरु तित्थणाहु णामेण जसोहरु ।
देउ अणिंदिउ वंदिउ भावें वड्ढंतेण विसुद्धें भावें ।
अवहिणाणु राएं उप्पाइउ[4] रूवि दव्वु[5] णीसेसु वि वेइउ ।

घत्ता—विद्धउ कणयरसेण जिह लोहु वि हेमत्तणु पडिवज्जइ ॥
तिह जिणभावें भावियहो भवियहु णाणभाउ संपज्जइ ॥ ११ ॥

12

पहु गुरु वंदिवि आयउ गेहहु तित्ति ण पुण्णी पुत्ति सणेहहु ।
आलिंगिवि अंके वइसारिय सा तप्पंति तेण विणिवारिय ।
चवइ णिवइ थिरु पइं जाणंतउ अच्चुइ सुरवरिंदु हउं होंतउ ।
बीयइ कप्पि विमाणि णिवासिणि[1] तुहुं ललियंगहु तणिय विलासिणि ।
महुरालाविणि[2] पाणपियारी एवहिं हूई धूव महारी ।
मा झिज्जहि सो तुज्झु मिलेसइ हारु व उररुहजुयलि घुलेसइ ।
बालहि[3] मइ वीलइ पच्छाइय पुणु वि धाइ पहुणा संकेइय ।
दुत्थिउ जडयणु[4] कूरसरावहु गोणाइहि खरु खरहु सरावहु ।
उल्हावियविओयसंतावहु[5] णवजोव्वणु जणु कामालावहु ।
विबुहहु बुहु गोवालु वि गोवहु महिलहि महिल जाइ सब्भावहु ।
णिवेण कहिवि दिट्ठंतकहाणउं पुणु दिग्विजयहु दिण्णु पयाणउं ।

घत्ता—आउंचियतणु थरहरिउ फणिवइ भीयउ किं पि ण जंपइ ॥
हयगयरहणरपयदलिय जंतें राएं मेइणि कंपइ ॥ १२ ॥

४ MBP उप्पायउ. ५ MB दिव्वु.

12. १ MBP विलासिणि. २ MBP °लावणि. ३ MB बाल एंम वीलइ. ४ MP जडयण. ५ B उण्हाविय°.

---

13 भवियहु भव्यस्य.

12. 8 *b* सरावहु सशब्दस्य.

13

तरलतमालतालतालीघणि गइ णरिंदि णंवकंकेल्लीवणि ।
फलिहसिलायलम्मि आसीणी परभवपियसंभरणें झीणी ।
सुइरु महारुहाउ संचालिवि कोमलकरकमलें तणु लालिवि ।
एक्कहिं दिणि करणिहियकवोली पंडुगंडविलुलियचिहुराली ।
णवकयलीकंदलसोमाली कंचुईइ औंउच्छिय बाली ।
पुत्ति पुत्ति मोणव्वउ छंडेंहि पुत्ति पुत्ति तणु तणुलय मंडहि ।
पुत्ति पुत्ति किं अप्पउ दंडहि पण्णवीडि दंतग्गहिं खंडहि ।
मायहि गुज्झु काइं किर रक्खहि मज्झु वि किं णियमणु ण समक्खहि ।

घत्ता—तं आयण्णिवि रायसुय णीससंति णियजम्मु पयासइ ॥
धरणि व वेल्लिहि मज्झु तुहुं जणणि माइ तुह काइं ण सीसइ ॥ १३ ॥

14

धायइसंडि मेरुपुव्विल्लइ पुव्वविदेहि देसि गंधिल्लइ ।
भूयगाउं जिह लोयपसिद्धउ पाडलिगाउं अत्थि धणरिद्धउ ।
गोरसड्ढु जो तवसि वसिल्लु व करिसणजाणउ जो सुंकरिल्लु व ।
पविउलखलु वि ण जो खलसंकुलु जो हलहरु वि भुवणि ण भाणिउ बलु ।
जो करि व्व णरवइढोइयकरु बहुकंकणु णं वरकामिणिकरु ।
कच्छुज्जलु णं गिहिवयधारउ णियवइगविंउ णं सेवारउ ।
णागयत्तु णामें तहिं वणिवरु सुरइवहुल्लियाहि वल्लहु वरु ।

13. १ MP तहिं ककेल्लीवाणि, B तहिं किंकेल्लीवाणि. २ MBP °कयलीसुकद°. ३ MBP आउच्छी. ४ MBP छडुहि.

14. १ MB धायइ°, P धाइय°. २ T भूयगामु. ३ MB सकरिल्लु.

13. 1 *a* तरल° दीर्घा.. 5 *b* कंचुईइ पण्डितया धात्र्या. 8 *a* मायहि धात्र्याः.

14. 2 *a* भूयगाउं भूतग्राम. शरीरम्. 3 *a* गोरसड्ढु गोरसाढ्यः, पक्षे, गौः वाणी तत्र रसिकस्तपस्वी स्यात्; *b* करिसण° कर्षकः, पक्षे, हस्तिशब्द॰, सुकरिल्लु हस्तिपालक॰. 4 *a* °खलु धान्यमलनस्थानम्. 5 *b* बहुकंकणु बहुजलधान्यः, पक्षे, बहुसुवर्णवलयः. 6 *b* णियवइ° निजपतिः; पक्षे, निजवृतिः; सेवारउ सेवकः. 7 *b* सुरइवहुल्लियाहि सुरतिरेव वधूस्तस्याः.

णंदु णंदिमित्तु वि सुउ जायउ   णंदिसेणु तहि गब्भि समायउ ।
पुणु मायइ मणमोहणु लद्धउ   धेरसेणु विजयसेणु थणद्धउ ।

घत्ता—सिरिवह सिरिहर वणितणय अवर वि हउं तिज्जी लहुयारी ॥
णामें णिण्णामिणि विसम दालिद्दिणि जणविप्पियगारी ॥ १४ ॥

15

अम्हारउ घरु मोक्खु विसेसइ   णिक्कलसउ णीरंजणु दीसइ ।
णिद्धणु णं घणणासि णहंगणु   णिक्कणु तोलीरु व सारियरणु ।
णीरसु कव्वु व कुकइहि केरउ   तं जिह तिह पुणु णिरलंकारउ ।
अट्ठभाउ हंडइं दो पियरइं   कयखलचणयमुट्ठिआहारइं ।
कडियलवेढियवक्कलवासइं   हडहडफुट्टफरुससिरकेसइं ।
अम्हइं दहजणाइं तहिं सयणइं   कलहंतइं भासियदुव्वयणइं ।
पंडुरपविरलदीहरदंतइं   जावच्छहुं परकम्मु करंतइं ।
वारणचारियहु तरुसंछण्णहु   तावेक्कहिं दिणि हउं गय रण्णहु ।
तहिं अंबरतिलयम्मि महीहरि   विहरंतियइ गहीरदरीहरि ।
सरलेहरियपत्तहु तंबिरयहु   मइं उच्चोलि भरिय माहुरयहु ।
अण्णु वि दारुभारु गरुयारउ   सीसि णिहिउ णं दुक्खहं भारउ ।

घत्ता—जा पल्लट्टमि णियघरहो ताम लोउ मइं पंतु पलोइउ ॥
रयणालंकारहिं विप्फुरिउ जिणु वंदहुं णं सुरयणु आइउ ॥ १५ ॥

16

ता कट्ठभारु   णं दुक्खभारु ।
महियलि घिवेवि   णरु मइं णवेवि ।

४ M णदि णंदिमित्तु वि सुउ जायउ; B णदिमित्तु णंदि वि सुउ जायउ; P णंदि णंदिमित्तु वि संजायउ. ५ MBPK वरसेणु. ६ P जणविप्पिय° but adds °मण° in the margin between जण and विप्पिय.

15. १ MBPK तोणीरु. २ M ज जिह. ३ MK गउ. ४ MBP तहिं पुणु अंबरतिलयमहीहरि. ५ MB सरलु. ६ M भरय. ७ MBPK दुक्किय°. ८ MBP फुरिउ. ९ M सुरयणु आइउ; P सुरयणु चल्लिउ.

15. 1 *b* णिक्कलसउ घटरहितम्, अन्यत्र, निष्कलानां चरितमनुष्ठान प्रवृत्तिर्वा.

पुंच्छियउ हेउ कहिं चलिउ लोउ ।
ता तेण वुत्तु सुतिगुत्तिगुत्तु ।
सिद्धत्थकामु जो[2] जित्तकामु ।
जो मुक्कसत्थु मैंणधरियसत्थु ।
जो बुहणिहाणु गुणमणि णिहाणु ।
धुयमोहवासु तरुमूँलवासु ।
जो पांउसेसु चम्मट्ठिसेसु ।
गयसरियालि जो सिसिरयालि ।
बहि सयणसाइं जो सुअवसाइं ।
तिव्वुण्हजेट्ठि वइसाहजेट्ठि ।
रवियर विसहइ जोण्ण सहईं ।
जो मुणिससंकु हयपरमसंकु ।
तहु गंपि वासु पिहियासवासु ।
पणँवंति पाय पुच्छंति राय ।
परलोयमग्गु सग्गापवग्गु ।
चिरसंभवाइं जाणइ भवाइं ।
रिसि णाणधारि जिणधम्मचारि ।
इह गिरिवरम्मि सो कंदरम्मि ।
णिवसइ कुलीणि दोगच्चखीणि ।

घत्ता—ता मइं थोरथणत्थलिए दंडिखंडु पसरेप्पिणु थवियउ ॥
पइसिवि साहु महाँसहहि जइपयजुयलउ भत्तिइ णवियउ ॥ १६ ॥

16. १ P पुछियउ. २ G omits this foot; K however adds it the margin. ३ M मणि धरिय°. ४ B °मूलु. ५ P पावसेसु. ६ MB add after this: वरिसति मेहि, दुहु सहिय देहि. ७ M पणवत. ८ MBP महासहहो.

16. 5 *a* सिद्धत्थकामु सिद्धार्थे मोक्षे कामोऽभिलाषो यस्य. 7 *b* °णिहाणु नृभानुः. 10 *a* गयसरियालि गतो नदीनां वेगो यस्मिन् काले. 11 *b* सुअवसाइ षडावश्यकादिषु सुष्ठु उद्यतः. 12 *a* °जेट्ठि °महति. 13 *b* सहइ शोभते. 14 *b* हयपरमसंकु हतपरमशङ्कः. 22 दंडिखंडु शतजर्जरं जीर्णं सिवितं वस्त्रम्.

17

तवपहावविभावियवासवु पुच्छिउं पुणु तेहिं सो पिहियासउ ।
कवणें दइवें हउं दालिद्दिणि हूई दोग्गयगोत्तणियंबिणि ।
कहहि देव तुहुं सव्वउ जाणहि दीण वि मइं पियवयणें पीणहि ।
ता पभणइ समणगणपहाणउ दीणु वि राउ वि मज्झु समाणउ ।
णिसुणि पुत्ति अक्खमि जम्मंतरु आसि कयउ जं पइं कम्मंतरु ।
गामि पलासपुव्वि तहिं गहवइ देविलु सुमइ तासु रंजियमइ ।
गेहिणि ताहि धूय तुहुं हूई हलिय जुवाणहं णं रइदूई ।
वीयरायसिद्धंतु पढंतहु जीवाजीवभेय भावंतहु ।
एक्कहिं दिणि वणि खंतिसणाहहु हसिवि समाहिगुत्तमुणिणाहहु ।
अण्णाणइ पइं उप्परि घत्तिउ रिसिणा तणुभूसणु व विचिंतिउ ।
किमिकुलपूयरुहिरदुग्गंधउ पयडियदंतउ विहडियरंधउ ।
सुणहकलेवरु दियहि दुइज्जइ तेवं जि पुणु वि पदिट्ठु तइज्जइ ।
घत्ता—णउ तूसहिं रूसंति ण वि सुइ कंदप्पदप्पखयगारा ॥
जो मंडइ जो खंडइ वि बिहिं मि समाणा समणभडारा ॥ १७ ॥

18

पेच्छिवि मुणि परिहरियसकायउ तुह अणुकंपभाउ संजायउ ।
भसणसरीरु घित्तु अण्णेत्तहि पइं णयणेहिं ण दीसइ जेत्तहि ।
पणउ करेप्पिणु जोइ खमाविउ तेण जि खमभाउ जि संभाविउ ।
ईसिं समेण मरेवि असुहाउलि तुहुं हूइसि एत्थु दुग्गयकुलि ।
धम्में मुच्चहि दुक्कियदुक्खहु धम्मु णिसुणि सुह कारणु सोक्खहु ।
फणिचरणइं जगि को अहिणाणइ परमत्थेण धम्मु को जाणइ ।

17. १ MBP °वासउ. २ MBP पुच्छिउ तें पुणु सो. ३ MBP पभणइ मुणि समणपहाणउ. ४ MP पइं जं. ५ MBP गाम. ६ MB ललिय°. ७ MBP तेम जि पुणु पइ दिट्ठु. ८ MBP तूसंति.

18. १ MP परिहरियकसायउ; B परिहरिसंकायउ. २ B °भाव. ३ MBP इसि उवसग्गें मरिवि. ४ M असुहाहलि. ५ MB दुग्गम°.

17. 7 *b* हलिय कर्षकस्त्री.

18. 1 *a* परिहरियसकायउ परित्यक्तस्वशरीरः.

लोइयधम्मु होइ जलण्हाणें वीरपुरिसभंडणवक्खाणें ।
धम्मु होइ पुणु पुंणु अच्चवणें पाहाणुप्परि पत्थरठवणें ।
धम्मु होइ घइ णियमुहदंसणि धम्मु होइ सुरहीतणुफंसणि ।
धम्मु होइ तिलपायसभोयणि धम्मु होउ आसत्थालिंगणि ।
धम्मु होइ गोमुत्तु पियंतहु धम्मु होइ महु मज्जु रसंतहु ।
धम्मु होइ पलवेहु करंतहु छेलउ कुक्कुडु किडि मारंतहु ।

घत्ता—एहु कुलिंगु कुधम्मु सुए पण णवर दुग्गइ जाइज्जइ ॥
जिणणाहेण पयासियउ धम्मु अहिंसालक्खणु किज्जइ ॥ १८ ॥

19

मेहलकण्हाइणदब्भयणइं धरिवि काइं जणु मारइ हरिणइं ।
किं लिंगेण लिंगिसंदोहहु जइ णउ मुच्चइ णिच्चु जि कोहहु ।
अंतरंगु जसु सुध्दु ण दीसइ कायकिलेसें तहु किं होसइ ।
दंडउ अप्पउ मुणिविहियारउ तासु तहिंट्ठिउ भवसंसारउ ।
उवसमपुव्वाणुव्वयधारहिं अलिउ म जंपहि जीउ म मारहि ।
करपल्लउ परदविणि म ढोवहि परपुरिसु वि सराउ मा जोयहि ।
मुयहि संगु बहुलोहुप्पायणु रयणीभोयणु दुक्खहं भायणु ।
अवरु पव्वपोसहु पप्पिालहि जिणपडिबिंबइं णिच्च णिहालहि ।
अहिंसिंचिवि अंचिवि णियसत्तिइ ताइं णवेज्जसु गरुयइ भत्तिइ ।
तुसमासु वि उवसंतहु देज्जसु णियमएण णियमणु णियमेज्जसु ।

घत्ता—पण्णासट्ठुत्तरु सउ वि सियपंचमिहि बालि जइ उवसहि ॥
सुयहरि मुणिवरि जं कियउ तो तुंहुं तं चिरदुरिउ पणासहि ॥ १९ ॥

६ M होय. ७ MBP फुडु अच्चमणें. ८ MBP नणु मुरही फंसणि. ९ P पियनह.

19. १ B किं लिंगिण सलिंगिसंदोहहु. २ MBP सीसइ. BPT मुणिवहियारउ. ४ P तहिट्ठिउ. ५ P उवसमु. ६ MBP जीव. ७ MBP त तुहुं.

8 *a* अच्चवणें आचमनेन. 9 *a* घइ घृते, *b* सुरहीतणु° गोशरीरम्.

19. 1 *a* मेहलकण्हाइण° मेखला कृष्णाजिन कृष्णहरिणचर्म च, दब्भयणइं दर्भतृणानि. 11 पण्णासट्ठुत्तरु सउ वि सियपंचमिहि शुक्लपञ्चमीनामष्टपञ्चाशदधिकशतपरिमाणोपवासैः. 12 सुयहरि श्रुतधरे.

20

मुणिहिं सरीरि परमु समु णिवसइ ते णिंदंतहं दुम्मइ विलसइ ।
चूडामणि किं चरणि णिहिज्जइ वंदणिज्जु भणु किह णिंदिज्जइ ।
दुच्चिंतियउ दुबोल्लिउ दुक्किउ आसि जम्मि एवहिं करि सक्किउ ।
ता सा खविय तविय गयगावें अंतोअंतो पच्छुत्तावें ।
महु पावोहे कहिं पावणियत्तणु जाइ कयउ गुरुहुं मि पिसुणत्तणु ।
मायामोहु मुइवि मणु रोहिवि एमप्पाणउं णिंदिवि गरहिवि ।
गय रिसिवइ वंदिवि णियवासहु हउं लग्गी सहि सुयउववासहु ।
काइं वि दविणु ण विज्जइ जइयहुं मइं दालिद्दिणीइ तहिं तइयहुं ।
खलु वि सुपत्तहु अणुदिणु दिण्णउं छड्डिउ सव्वजीवपेसुण्णउं ।
पुज्जिउ जिणवरु दोणयहुल्लें बोहिउ दीवउ दुल्लहतेल्लें ।

घत्ता—पुज्जउ इंदु णराहिवइ अवरु वि णिद्धणु सिरिमइ भासइ ॥
एक्कु जि फलु मइं अक्खियउ जइ मणि णिम्मलभत्ति ण णासइ ॥ २० ॥

21

एम तेत्थु हउं चिरु जीवेप्पिणु गुरुउवएसलेसु पालेप्पिणु ।
पुणु आहारु सरीरु मुएप्पिणु परमक्खरइं पंच सुमरेप्पिणु ।
मुइय गंपि ईसाणविमाणइ सिरिपहणामि रमियगिव्वाणइ ।
ललियंगहु महएवि सयंपह हुई जुइणिज्जियचंदप्पह ।
मुइ पिययमि छम्मास जिएप्पिणु इह हुई सग्गाउ चएप्पिणु ।

20. १ MBP किह भणु. २ BP पच्छत्तावें. ३ BP पावहि. ४ MBPK मणु ण रहिवि. ५ MBP सणिवासहु. ६ P दालिद्दिणि एत्तहि. ७ MBP भोयणु.

21. १ P °उवएसु. २ MB पावेप्पिणु. ३ B omits this foot.

20. 6 *a* मणु रोहिवि मनो निरुध्य. 10 *a* दोणयहुल्लें दमणपुष्पेण; *b* दुल्लहतेल्लें परसमीपे याचितेन तैलेन.

पिउँ सुयरंतिहि चंदु वि तावइ चंदणु देहि ण लग्गउ भावइ ।
अट्ठ वि अंगइं हयइं अणंगें तुहुं किं ण मुणहि इंगियलिंगें ।
एम चवेप्पिणु पडु आणाविउ णाहु लिहेप्पिणु धाइहि दाविउ ।
णियचिररूउ तहिं जि आलिहियउ फुरइ व चेलंचलि संणिहियउ ।
अण्णण्णइं कीलासंताणइं लिहियइं सरिसरगिरिवरठाणइं ।
अण्णइं तहिं रइरहसंचरियइं धुत्तहं भइयइं गूढइं धरियइं ।
एत्थु वसंती एत्थु रमंती सो एहउ हउं एही होंती ।
एम भणेप्पिणु गुज्झु ण रक्खिउ सुंदरीइ णियहियवउ अक्खिउ ।

घत्ता—आणहि पंडिइ पाणपिउ फेडहि वम्महवाहि महारी ॥
भरह पुप्फदंतुज्जालिय अण्ण ण तियमइ मइगरुयारी ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णिण्णामियाधम्मलंभो णाम
बावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २२ ॥
॥ संधि ॥ २२ ॥

४ MBP पिय सुमरंतिहि. ५ B इंदियलिंगें. MB सरसरि°. MBP °गहणइं. ८ MBP रइरससंचरियइं.
९ P भइए and gloss भयेन. १० MBP कहेप्पिणु. ११ MBP पाणपिउ. १२ MBP फुप्फयंतु°.
१३ MBP णियमइ.

21. 6 *a* पि उ प्रियम्. 11 *a* °रहस° एकान्त., 15 भ र ह स्मरत; ति य म इ स्त्रीमतिः.

XXIII

तं णिसुणेवि पहु करयलि कणिवि गय पंडिय जिणगेहहो ॥
अइकुंडल सुतेय मणोहरिय चंदलेह णं मेहहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—एत्तहिं सा णरिंदसुय विसहइ पियथमविरहवेयणं ।
एत्तहिं पंडियाइ पविलोइउ परमप्पयणिहेलणं ॥ १ ॥

पवणुद्धुयधयमालाचवलं — हिमकुंदसमाणसुहाधवलं ।
गायणंगणगाइयजिणधवलं — भिच्छंतपढणकलयलमुहलं ।
गयणंगणलग्गमहासिहरं — अइरुंदचंदकररासिहरं ।
जंखिखजक्खपडिमाणिलयं — विद्दुमतलउंभयतलसिलयं ।
मरगयमयखंभसमुद्धरियं — मणिमत्तवारणालंकरियं ।
आयासफलिहमयभित्तियलं — हरिणीलणिबद्धधरित्तियलं ।
उव्वाइयधूवंगारवरं — गुमुगुमुगुमंतमत्तालिसरं ।
घल्लियपप्फुल्लियफुल्लचयं — ओलंबियमोत्तियदामसयं ।
पइसेप्पिणु तं मुणिणाहघरं — णविऊण जिणं जियजम्मजरं ।
पड विउसिइ पसरिवि दाविय3 — णायरणरेहिं परिभाविय3 ।

MBP give, at the commencement of this Saṃdhi, the following stanza:-

अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नखनिकुरम्बकर्णिक
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुव्रतचक्रचुम्बितम् ।
विलसदणुप्रतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमल
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

GK do not give it.

1. १ P सतेय. २ MBPK पवणद्धुय.° ३ M गायणगइ°. ४ M आरुद°. ५ M जक्खिखदजक्ख°. ६ MBP तलउभय°. ७ M °खंभ°. ८ P मयमत्त°. ९ MBP °भित्तियल. १० MBP उव्वाइयधूमंगार°.

1. 5 b °सुहा° सुधाचूर्णम्. 8 b विद्दुमेत्यादि-विद्रुमघटिता तले कुम्भिका तलशिला-यत्र. 14 a विउसिइ विदुष्या धात्र्या.

घत्ता—इय दसदिसु वत्त समुच्छलिय जो पडवइयरु जाणइ ॥
धरणीसरतर्णयहि[11] सिरिमइहि सो थणजुयलं[12] माणइ ॥ १ ॥

2

दुवई—विविहाहरण[1]किरणविप्फरणोहामियफणिसुरेसरा ।
ता मायंगतुंगतुरे[2]यासण चाह्लिय णरवरेसरा ॥ १ ॥

सेयत्तं णिज्जियसियसरयं णिवसियचिरयं वारियणरयं ।
पत्ता राया तं जिणहरयं दुक्कियहरयं सुभवियवरयं ।
दिट्ठो लिहिओ[3] तहिं पडो झसइंधणडो मणि णंचियओ ।
तं पेच्छिवि अहिलसियसिवो भणु को ण णिवो रोमंचियओ ।
केण वि भणिया—पुत्तलिया लयकोमलिया वण्णुज्जलिया ।
एसा बाला सामलिया णामें ललिया अलिकोंतलिया ।
चिरभवि होंती मज्झ पिया पच्चक्खसिया विहिकत्थणिया ।
केण वि भणियं—मइं मुणिया सुरवरगणिया मृगलोयणिया[11] ।
होंती कंनें[12] महु तणिया णीलंजणिया पीणत्थणिया ।
केण वि भणियं—दिण्णसिरि इंदु[13] मेरुगिरि इह सा तरुणि ।
इह मइं देवें होंतइण गायंतइण मोहिय हारिणि[14] ।
कु वि भणइ—आसाइ थिणु गुरु एकु खणु किह दिणु गंवमि ।
कु वि[15] भणइ—हा किं करमि णिच्छउ मरमि जइ णउ रममि ।

११ P °तणयहु, K तणहे. १२ MBP जुयलउ.

2. १ M °हरणकिरणविप्फुरणोहामिय°; B °हरणविप्फुरियणोहामिय°; P हरणकिरणविप्फुरिणोहामिय°. २ P तुरयासणा. ३ B लिहिओ तहे तेहिं, P लिहिओ सो तेहिं. ४ MBP झसचिंध°. ५ MBP चिंतविओ. ६ P पेच्छेविणु. ७ MBP भणिय. ८ MBP पत्तलिया. ९ MPB लइ°. १० M मइं मुणिमुणिया; P माणे मुणिया. ११ MBP मिय°. १२ MBP कना. १३ MBP महुललियगिरि. १४ MBP add after this: मज्झु वि घरिणि. १५ MBP को वि एम्व भणइ.

---

15 पडवइयरु चित्रपटव्यतिकरः.

2. 3 सियसरयं शुक्लशरत्पक्षे शुक्लमेव. 4 सुभवियवरयं सुष्ठु भव्यानां वरदम्. 7 लयकोमलिआ लतावत्कोमला. 9 °सिया लक्ष्मी विहिकत्थणिया विधिना कुत्रापि नीता, विधिकदर्थितेत्यर्थः.

को वि सं[16]दीहउ णीससइ तावँ सुसइ उरयलु हणइ ।
अप्पउ घल्लइ धरणियले आणेहि हले तं[17] मुहुं भणइ ।
को वि मुच्छावसु णिवडियउ रइविणडियउ णिज्जीवँ[18] थिउ ।
उच्चाएप्पिणु परियणिण दूमियमणिण णियघरहु णिउ ।
धाइ[19] जिणेप्पिणु उं[20]त्तरहिं पच्चुत्तरहिं कु वि चवइ वरु ।
हउं वरइ[21]त्तु भ[22]वंतरिउ इह अवयरिउ ताहि धं[23]रिवि करु ।
घत्ता—विहसेवि पवोल्लिउ पंडियइ जो गुज्झइं महुं अक्खइ ॥
सो सुं[24]अवेल्लीरइसुहहलहो रसु परमत्थें चक्खइ ॥ २ ॥

3

दुवई—अह वररमणिरूवरंजियमणु जो णरु अलिउं[1] भासए ।
सो सरसरविहिण्णु सा ण लहइ पं[2]इसइ णरं[3]यवासए ॥ १ ॥

ता तें[4]त्थंतरि विरहमहाभरि ।
कुं[5]मरिहि घणथणि जायइ जोव्वणिं[6]
छक्खंडावणि जिणिवि महाफणि ।
देव वि खयर वि णित्तेयइ रवि ।
चोयं[7]वि गयवइ आयउ महिवइ ।
पुरिहि पइट्ठउ सघरि णिविट्ठउ ।
महुरालावें सपणयभावें ।
सुय बोल्लाविय णिरु संताविय ।
पियपरिणामें णिहयकामें ।
पुत्ति म खिज्जहि लइ पडिवज्जहि ।
ण्हाणु विलेवणु कं[8]कणु परिहणु ।

१६ MB सुदीहउ. १७ MBP तम्मुहुं. १८ MBP णिज्जीउ; १९ MBP धाइउ. २० MBP दुत्तरहिं. २१ P वरयत्तु. २२ M भवंतरु. २३ MBP धरमि. २४ M सुह°.

3. १ P अलियउ भासइ. २ MBP णिवडइ. ३ P णरइ°. ४ MBP एत्थंतरि. ५ MBP read this line as: पसरियरायइ, कुत्ररिहि (P कुवरहि) जायइ. ६ MBP add after this: उत्तुंगत्थणि, घणि घाणि जोव्वाणि. ७ P चोइयगयवइ. ८ M कंकणु पहिरणु, B कंकणु परिहरणु; P कंचणु पहिरणु.

17 तं तां तरुणीम्; मुहुं वारंवारम्. 23 °सु अ° सुता.

3. 2 सरसरविहिण्णु स्मरबाणविभिन्नः.

गुरुयणु रंजहि भोयणु भुंजहि ।
वज्जउ वायहि णच्चहि गायहि ।
अक्खरु भावहि पक्खि पढावहि ।
तुज्झु मुहुल्लउ तिहुयणभल्लउ ।
हउं णालोयमि तो णउ जीवमि ।
तायहु जंपिउ तं मुद्धइ किउ ।
पुणु आवेप्पिणु पणउ करेप्पिणु ।
णियडि णिसण्णी विरहविसण्णी ।
आलिंगेप्पिणु सिरि चुंबेप्पिणु ।
णयणाणंदें भणिय णरिंदें ।
चारु चिराणउं कहमि कहाणउं ।
मयरद्धयसिरि णिसुणि किसोयरि ।
घत्ता—चिरु एत्थु पुंडरिंगिणिपुरिहि इमहु भवहु पंचमभवि ॥
हउं अद्धचक्कवट्टिहि तणउ होंतउ कुलि णिम्मुच्छवि ॥ ३ ॥

4

दुवई—णामें चंदाकित्ति जयाकित्ति सुमित्तवेरेण भूसिओ ।
मुइ जणणे अहं पि लच्छीइ महीइ चिरं समासिओ ॥ १ ॥

णिरुवमसुहसयहरिसियमणेहिं चिरु भुत्तु रज्जु दोहिं मि जणेहिं ।
अवसाणि बिहिं वि सिरि परिहरेवि पीईवड्ढणि वणि पइसरेवि ।
पयसेवियचंदसेणगुरुहि किउ तवु णिज्जणि उग्गयकुरुहि ।
दोहिं वि विणिवारिय पावमइ सह चेय बिहिं वि कय कालगइ ।
बिण्णि वि जाया माहिंदसुर सत्तंबुहिआउपमाणधर ।
चिरु जीवेप्पिणु तेहिं नियसयुय पुण्णक्खइ सुंदरि तहिं वि मुय ।

९ P भक्खर. १० MBP जइ ओहुल्लउ. ११ MB हउ आलोयमि, P हउ अवलोयमि. १२ G omits विरहविसण्णी. १३ MB पचमइ भवि.

4. १ MBP जमाकित्ति. २ M °धरेण. ३ MBP तउ. ४ MBK हियनियसणुय.

19 *a* ज पिउ यत्प्रियं, जल्पितं वा.

पुक्खरवरि पुव्वमेरुसिहरे तहु पुव्वविदेहि रसंतकरे।
धणधण्णरिद्धि जायाइसउ णामेण मंगलावइ विसउ।
जहिं दहिउ दुध्दु जलु जिह सुलहु जहिं णत्थि दोसु गुणगणु जि बहु।

घत्ता—जहिं धणछेत्तावलिपालियहि सुउ हॅलिणिहि कह भासइ ॥
आरत्तचंचु चंचेलमुहु जंपमाणु मॅणु तोसइ ॥ ४ ॥

5

दुवई—मत्तमहंतधॅवलगलगज्जियबहिरियविउलगोउले।
विसरिसविसमभिडियघरसेरिहकयकाहलियकलयले ॥ १ ॥

तहिं किडिदाढाहयथलकमले कमलदलच्छाइयविमलजले।
जलजंतसित्तकेलीतरुणे तरुणतरुकुसुमरयछच्चरणे।
छच्चरणालंकियदियपवरे दियपवरकलरवुट्टंतसरे।
सरसीमारामपपससुहे सुहयरछुहपंडुरि रायगिहे।
गिहसिहरालिंगियघणणियरे।
णियरायणायणिज्जियतैपए पयपाडियपरणरवीरसए।
सयवत्तपसाहियजलपरिहे परिहरियपावि मंदिरि सिरिहे।
सिरिहरु पुरि रयणसंचि णिवइ णिवइच्छियवित्ति सुधम्मरइ।
रइ विव कामहु कंत सइ सइ णं देविंदहु हंसगइ।

घत्ता—सा णामें देवि मणोहरिय जिह तिह सॅव्वसउव्वें ॥
अॅम्हइं बिण्णि वि सग्गहु ल्हसिय हयखयकालदइव्वें ॥ ५ ॥

---

५ P हालिणिहि. ६ M अणु.

5. १ M °धवलगज्जियरवबाहिरिय°. २ MB °तरुणी. ३ MB तरुणतर°. ४ MB छच्चरणि. ५MBP °पंडुर°. ६ B दियराय°. ७ MBP णिच्चत°. ८ MBP पयासिय°. ९ P मदरीसिरिहे. १० MBP कामहु तहु कंत. ११ MB सिरिमइ सव्वें. १२ P अण्ण वि सिरिमइ सग्गहु ल्हसिय अम्हइं हयणियमिव्वें.

---

4. 10 *a* जायाइसउ जातातिशयः. 12 सुउ शुकः; हलिणिहि कर्षकस्त्रियः 13 चंचेलमुहु वक्रमुखः.

5. *a* जलजंत° जलयन्त्राणि; *b* °छच्चरणे भ्रमराः षडाचरणकाः पठनपाठनयजनयाजनदानप्रतिग्रहाः. 5 *b* दिय° द्विजाः पक्षिणः.

6

दुवई—जाया ताहं गब्भि हलहर हरि विण्णि वि सुकयकारिणो।
चडिय जुवाणभावि सिरिवम्मविभीसणणामधारिणो ॥ १ ॥

दोहिं मि भायहं जयलच्छिसहि अहिसिंचिवि अम्हहं देवि महि।
गउ जणणु सुधम्मसूरिसरणु किउ घोरु वीरु जिणतवचरणु।
छिण्णउं उप्पत्तिजरामरणु पत्तउ कवलु णिक्कलकरणु।
छुडु परिभाविउ कंचणु वि तणुं राएण विमुक्कहु घरु जि वणु।
णिज्झाइयअज्झासाइयहो थंडिलु वि थणत्थलु राइयहो।
गिरिकंदरमंदिरु किं करइ दुक्कियपरिणामु ण तं धरइ।
इय भणेवि मणोहर थिय भवणे ज़िणवरु झायंतिइ णिययमणे।
चिण्णउं जणणिइ दुच्चरु चरिउ पक्खालिउ अब्भंतरदुरिउ।
संणासणि झाइवि पंचगुरु सा हूई दिवि ललियंगसुरु।

घत्ता—सिरि भुंजिवि भोयतिसातिसिउ मुयउ बिहीसणराणउ ॥
उप्पण्णउ णरयमहाविवरि कालें को ण विलीणउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—लच्छिसरामईण सहवासु व विहिणा दलिवि घल्लिओ।
दुत्थियकप्परुक्खु व सुहाहिउ खयकरिदसणपल्लिओ ॥ १ ॥

सवु पेच्छिवि हउं दुक्खाउलिउ सोयग्गि देहरुक्खु जलिउ।
हा चक्कपाणि हा पाणपिय हा बंधव किं अवहेरि किय।
सुसहोयर दामोयर चवहि हा एक्कवार मइं संथवहि।
सुर णरवइ णिहिवइ पुहइवइ किं मग्गइ भडारउ चक्कवइ।
मइं मिच्छाभावं भावियउ मडउल्लउ खंधि चडावियउ।

6 १ MBP °विहीमण°. २ MBP मुधम्मु. ३ MB पत्तउ णिक्कलु णिम्मलु करणु; P पत्तउ णिम्मलु णिक्कलकरणु; T णिक्कलु करणु. ४ M निणु. ५ M घर. ६ P °कदरु. ७ MB भरिवि, P भणिवि. ८ P °तिसातिसउ. ९ B बिहीसणु.

7. १ MBT सउ. २ P एकवार.

---

6. 4 *a* जणणु पिता श्रीधर 5 *b* णिक्कलकरणु सिद्धावस्थाप्रापकम्. 7 *a* णिज्झाइये त्यादि- निध्यांना अभिनवा वधूस्तस्या. स्वाद आलिङ्गनम्. 11 *b* दिवि स्वर्गे.

7. 3 सवु मृतकम्.

तं पुसमि हसमि हउं तेण सहुं   जंपेवि पच्चुत्तरु देहि महु ।
मईमूढु ण काइं मि संभरमि   पुरगामसीमरण्णहिं चरमि ।
तहिं अवसरि आयउ जणणिचरु   ललियंगु ललियभासिरु अमरु ।
पहि थिउ चोयंतु वसह सभय   सो जंत णिप्पीलइ सियय ।
मइं भणिउं म्म णियचलु णिट्ठवहि   किं पाणिइ लोणिउं उद्धवहि ।
किं णेहु होइ दासीसुयहे   किं तेल्लु विणिग्गइ वालुयहे ।
तं णिसुणिवि देवें भाणियउ   जइ एउं बप्प पइं जाणियउं ।

घत्ता—तो एउं वियाणहि किं ण तुहुं कीस विसूरहि हलहर ॥
जे मुअ ते पुणरवि दिट्ठ पइं कहिं जीवंता णरवर ॥ ७ ॥

8

दुवई—हाहाकारु पुत्त किं मेल्लहि धीरिवि जाहि अप्पयं ।
धीराधार वीरं विउलं भुयणं पि गणंति गोप्पयं ॥ १ ॥

किं भायर भायर पुक्करहि   हउं माय तुहारी संभरहि ।
तुह मंदिरि णिवसिवि कियउ तउ   संपत्ती तेण सुहासिभवु ।
गउ एम भणिवि सुरु णियघरहो   मइं मुहुं जोइउ चक्केसरहो ।
सवउ णिवेयणु जाणियउं   सलु रइउ हुयासणु आणियउ ।
लहु वासुएउ सक्कारियउ   तणुरुहु सरज्जि वइसारियउ ।
वयसंजमभारधुरंधरहो   दिक्खंकिउ पासि जुयंधरहो ।
पंचिंदियगयउलु पीडियउ   तउ कियउ सोहणिक्कीडियउ ।
पुणु सव्वभद्दु उवाइयउ   मिच्छत्तजडत्तु णिवाइयउ ।

३ MBP जंपमि. ४ मइमूढ. ५ P चोवतु. ६ P लोणउं. ७ B मय.

8. १ MBP पुत्त मं मेल्लहि. २ MBP धीर. ३ P विउणं. ४ भायरु भायरु. ५ MK कयउ. ६ P जोयउ. ७ P सलु रयउ. ८ MBP सकारियउ. ९ P पालियउ. १० B omits this foot. ११ B omits this line. १२ K मिच्छत्त जडत्तु.

10 *a* जणणिचरु पूर्वभवस्था जननी. 11 *b* सियय सिकता वालुका. 15 कीस किमर्थम्.

8. 2 धीराधार धैर्याधाराः. 4 *b* सुहासिभवु देवभवः 6 *b* सलु शवशयनं चिता. 7 *b* सरज्जि स्वराज्ये.

[13]अणसणविहाणि जं साहियउ तं चउविहु मइं आराहियउ ।
हउं अरुहु भरेण भरेवि मुउ अच्चुइ आहंडलु णवर हुउ ।
घत्ता—ता रयणविमाणारोहियउ मइं अच्चुय[14]कप्पहो णियउ ॥
ललियंगदेउ सो णिययगुरु [15]गरुयइ भत्तिइ पुज्जियउ ॥ ८ ॥

9

दुवई—चुउ [1]ललियंगदेउ जंबूतरु[2]लंछणि दीवि सुहवई ॥
सुरगिरि सुरदिसाइ [3]सुविदेहइ जणमहि मंगलावई ॥ १ ॥

खगसंसाहियविज्जावलिहे [4]रुप्पयगिरिंदउत्तरथलिहे ।
गंधव्वणयरि तहिं विमलजसु वा[5]सउ णामें वासवसरिसु ।
पायडपयाउ णरवइ वसइ जसु दिट्ठिहि कलिकयंतु तसइ ।
तहि देविहि उयरि पहावइहि उप्पण्णउ कलमरालगइहि ।
णामेण महीधरु धीरमणि ताएण आरंजउ दिव्व[6]मुणि ।
सुउ रज्जि थवेप्पिणु सेवियउ णिग्गंथभाउ संभावियउ ।
मुत्तावलितवतावें ताविउ दढकम्मालाणु परि[7]क्खाविउ ।
संतें दंतें रुद्धासवेण अप्पउ णिउ मोक्खहु वासवेण ।
णं ससिसिणिसाहि पहावइहि पणवंतिहिं ताहि पहावइहि ।
तउ दिण्णउं [8]कयजगसंतियइ सुद्धइ पोमावइकंतियइ ।
सीसिणियइ पुण्णु समज्जियउ सविसयकसायबलु णिज्जियउ ।
रयणावलि णामें [9]अणियदिहि कयदहमोसउववासविहि ।
घत्ता—स वि मय ताहिं णिरु णिरसणु करिवि आउक्खइ किं [10]जिज्जइ ॥
सोलहमइ सग्गि थाहिंदु [11]हुय भणु किह धम्मु ण किज्जइ ॥ ९ ॥

१३ B omits this foot. १४ P °कप्पाहि. १५ P गुरुयइ.

9. १ MBP ललियंगु देउ. २ B °लंछणदीवि. ३ MBP सुविदेहइ. ४ MBP °पुव्वत्थलिहे. ५ P वासव. ६ P दिव्वझुणि. ७ MBP परिक्खयउ. ८ MBP जगकयसंतियइ. ९ MBP जायदिहि. १० MBP किज्जइ. ११ MBP हुउ.

11 *b* चउविहु चतुर्विधमाराधनास्वरूपम्. 12 भरेण भरेवि अत्यर्थं स्मृत्वा.

9. 1 सुहवई सुखवती. 2 जणमहि जनपदः 5 *b* कलि° कलहः पापं वा. 9 *b* कम्मालाणु कर्मबन्धनम्. 11 *a* ससिसिणिसाहि चन्द्रयुक्तायां रात्रौ. 15 जिज्जइ जीव्यते.

10

दुवई—अह णलिणंकि दीवि पच्छिम[१]दिसमंदरपुव्वि रिद्धिया ।
पुव्वविदेहि छोणि वच्छावइ पुरि पहयरि पसिद्धिया ॥ १ ॥

तिजगवइधरियछत्तत्तयहो जइणिद्देसियरयणत्तयहो ।
परिगणियमुणियकाल[२]त्तयहो हयजाइजरामरणत्तयहो ।
थिर[३]चरियधरियगुत्तित्तयहो सु[५]इसंबोहियभुवणत्तयहो ।
विद्धंसिय[४]णियसल्लत्तयहो परियाणियजीवगइत्तयहो ।
वियलियरसाइगव्वत्तयहो गई[६]कम्माइयदेहत्तयहो ।
वज्जियहेट्ठिमझाणत्तयहो कयकिरियाछेयपयत्तयहो ।
केवलचेयणगुणइत्तयहो सीदीभूयहु ण णियत्तयहो ।
णिव्वाणपुज्जविणयंधरहो हउं करिवि कुहरकक्करयरहो ।
फणिमणिभाभासियअहिहरहो गउ पढमदीवसुरमहिहरहो ।
तहिं णंदणि सुपसिद्धम्मि वणे इंदासासंठियजिणभवणे ।
विज्जउ पुज्जंतउ दिट्ठु सइं महिहरु बोल्लाविउ मुद्धि मइं ।

घत्ता—किं ण मुणहि तुहुं खयराहिवइ हउं णंदणु तुह होंतउ ॥
सिरिवम्मु सीरिभायरमरणे जइयहु कलुणु रुयंतउ ॥ १० ॥

11

दुवई—तइयहुं तइं सुरेण संबोहिउ एवहिं किं ण याणसे ।
सिरिहररायघरिणिमणहरिभं[१]वु किं णे[२]उ सरसि माणसे ॥ १ ॥

अज्ज वि किं भुंजहि[३] विसयविसु विसु मारइ मित्त एक्कु णिमिसु ।
भवि भवि संघारइ विसयविसु ता तेण जि लद्धउ तं जि मिसु ।

10. १ MBP पच्छिमदिसि मदरि पुव्व°. २ MBP सयलत्तयहो. ३ MBP थियचरिय°. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ MBP गयकम्मा°.

11. १ MBP °भउ. २ MBP ण सरसि. ३ MBP भुंजसि.

10. 1 णलिणंकदीवि पुष्करद्वीपे. 5 *b* सुइ° आगम.. 6 *b* °गइत्तय° पाणिमुक्ता लाङ्गली गोमूत्रिका च. 7 *b* देहत्तय° कार्मिकमौदारिक तैजस च. 8 *b* °पयत्तय° प्रयत्न.. 9 *a* ° इत्तयहो युक्तस्य. 15 सीरि° बलभद्रः.

अहिणंदिवि सुरवरराउ खयरु संपाइउ सहसा णियणयरु।
भडभक्खिणि णावइ डाइणिय महिकंपहु पुत्तहु मेइणिय।
ढोइवि णंदणु मुणिगुरुविहिउ वयमग्गि उग्गि ववसिउ सहिउ।
सहुं अइबहुयहिं विज्जाहरहिं तरुकोडरगिरिविवरंतरहिं।
तवु चिण्णु तेण कणयावलिय चिरसंचियदुरियावलि गलिय।
कालेण गलंतें महिहरहो पुणु अंतयालु संपण्णु तहो।
सो पाणिप्राणपरिरक्खयरु पाणइ जायउ तियसिंदवरु।

घत्ता—जीवियउ वीससमायरसमइ पुणु कालें संचालिउ॥
धादइसंडइ पुव्विल्लसुए जो सुरगिरितरुमालिउ॥ ११॥

12

दुवई—तस्सावरविदेहि गंधिलविसयम्मि विमुक्कविप्पिया।
उज्झाणयरि तीइ जयवम्मु णरेसरु सुप्पहा पिया॥ १॥

तहि चविवि पुरंदरु हुउ तणउ अजियंजउ णामें लद्धजउ।
दिक्खहि कारणि ओलग्गियउ जणणें अहिणंदणु मग्गियउ।
तें दिण्णइं पंच महव्वयइं मुक्काइं तेण सत्त वि भयइं।
मयणिज्जियसीहें णाइं मया इहपरलोयास वि खयहु गया।
आयंबिलु तवु दुच्चरु चरिवि कमट्ठयगंठिहि णीहरिवि।
होऊण सिवो गउ सिवंवयहो सिवु सुहहु णामु णिरु णीरयहो।
सूलिहि णरसिरमालाधरहो णउ अण्णहु तं कवालकरहो।

४ MBPK सुरवइ गउ. ५ MBP सपाइउ. ६ MBP णंदण. ७ MP तवमग्गि उग्गि; B वयमग्गे ववसिउ समसहिउ. ८ MBP तरुकोट्टरि. ९ MBP तउ. १० MBP वहंतें. ११ MBP संपुण्णु. १२ M पाणिपाणु; B पाणिपाण°. १३ MBP पाणइ. १४ MBP सचालियउ. १५ MBP °मालियउ.

12. १ B omits this line. २ MBP °महावयइ. ३ MBP तव दुद्धर धरिवि. ४ B कम्मट्ठहं. ५ MBP णीसरिवि. ६ MBP सिवहरहो. ७ MBP सिवसुहहु णाम.

11. 7 *b* सहिउ स्वाहित॰. 13 °सुए पुत्रि.
12. 8 *a* सिववयहो शिवपदम्. 9 *a* सूलिहि शंकरस्य.

छुहकामकोहविद्धंसणहे गणिणिहि पासम्मि सुदंसणहे ।
जं वउ परिपालिउ सुप्पहइ तं किं वण्णिज्जइ कइकहइ ।
सुइचक्खुसोक्खणिण्णासियइ संरुद्धफासरसणासियइ ।
रंण्णावलिकयरण्णासियइ पच्छाविरइयसंणासियइ ।
घत्ता—मेल्लेप्पिणु माणवकुणिमतणु देवणिकायहुं वल्लहु ॥
अच्चुइ अणुदिसदेवत्तु खणे पत्तउ ताइ सुदुलहुं ॥ १२ ॥

13

दुवई—चोईहरयणपहरणुत्तासियणासियरिउभडत्तणं ।
कयमजियंजयण वरिसहरणयावहि महिपहुत्तणं ॥ १ ॥
धर्म्मघोसउडिंडिमपहयउ एक्कहिं दिणि समवसरणु गयउ ।
थिउ अग्गइ मउलियउहयकरु वंदिउ अहिणंदणु तित्थयरु ।
मेरु व समेणु णिच्चलु थविउ पंचासवदारणिरोहु किउ ।
सुविसुद्धचित्तु रिसि चिव गणिउ पिहियासउ सो सुरेहिं भणिउ ।
मायासुयवइयरु साहियउ तहिं अवसरि मइं संबोहियउ ।
मुणिधर्म्मसवणसामियमइहिं वीसहिं सहसहिं सहुं णरवइहिं ।
गुरुमंदरथविरु समासियउ हुउ जइवरु मोहु विणासियउ ।
आलिंगिउ चारणरिद्धियए सैव्वोहिणाणसंसिद्धियए ।
वणि पुक्खिइ पावयखामियए होइवि णामें णिण्णामियए ।
अहिहरिणभिल्लभिल्लीणिलए दिट्ठउ गिरिवरि अंबरतिलए ।
पइं तासु पासि सुउ धम्मु चिरु किं बहुएं मज्झु वि सो जि गुरु ।
दिवि जीविउ हउं माणियरमइं दह दह जि दोण्णि सायरसमइं ।
घत्ता—जणणी ललियंगु आइ करिवि सुंदरि कैलिमलवज्जिय ॥
बावीस देव ललियंग मइं गुरु मण्णेप्पिणु पुज्जिय ॥ १३ ॥

८ MBP गणियहि. ९ MBP त वण्णिज्जइ कइ. १० MP रयणावलि°.

13. १ P चउदह°. २ MBP धम्मुग्घोसउ डिंडिमु हयउ. ३ MBP सममणु. ४ MBP °धम्मु समण°. ५ MBP संबोहियणाणसमिद्धियए. ६ MP कलमल°.

10 *b* गणिणिहि पासि आचार्यानीसमीपम्, गणिनीसमीपम्. 13 *a* रण्णावलि° रत्नावली नाम तपः; °रण्णासियइ रत्नत्रययुक्तया.

13. २ वरिसहरणयावहि क्षेत्रविभागकरपर्वतावधि. 10 *b* सव्वोहिय° सर्वावधिज्ञानम्. 14 *a* माणियरमइं अनुभूतलक्ष्मीकाणि.

14

दुवई—चंचलतरुणहरिणलोयणजुइ छणससिबिंबजंपणे ।
अवरु वि कह वि तुज्झु पिय विरहमहाणलसुसियचंदणे ॥ १ ॥

जम्मंतरि चित्तउं संभरमि अहिणाणु णिसुणि तुह वज्जरमि ।
हउं पुच्छिउ वियलियदुम्मइणा वंभेंदं लंतवसुरवइणा ।
लीलाउद्धरियवसुंधरहो मइं अक्खिउं चरिउं जुयंधरहो ।
दीवम्मि जंबुरुक्खंकियए मेरुहि विदेहि पुव्वासियए ।
सीयासरिदक्खिणयलि पवरु वच्छावइदेसु वच्छपउरु ।
णामेण सुसीमा वर णयरि तहिं पहु अजियंजउ पुरिसहरि ।
अमयमइ मंति सइरत्तमण तहु सच्चहाम णामेण धण ।
तहि सुउ पहसिउ पहसियवयणु तहु सहयरु वियसिउ सियणयणु ।
सह ते विण्णि वि कवडेण विणु णिसुणंति पढंति गमंति दिणु ।
ते बे वि विउस विच्छिण्णमय छलजाइहेउकुविवायरय ।
एक्कहिं दिणि राएं सहुं सुहय मइसायररिसिसामीवु गय ।
सो पहुणा पुच्छिउ जीवगइ आहासइ सच्चउ तासु जइ ।
संतेण जेण जगु परिणमइ तं कारणु कालु महाणिवइ ।

घत्ता—जहिं अच्छइ तं धुवु गयणयलु गइहि धम्मु सहकारिउ ॥
फुडु होइ अहम्मु थिरत्तणहो परमेसहिं उंवईरिउ ॥ १४ ॥

15

दुवई—पोग्गलदव्वु होइ णिच्चेयणु जं जं णिव सुचेयणं ।
तहिं तहिं कहमि तुज्झु परमत्थें जीउ जि णाणकारणं ॥ १ ॥

14. १ BP विरहाणल°. २ MBP चिण्णउ. P पुंछिउ. ४ MP पच्छपवरु, B सुवच्छपवरु. ५ MBP °सामीउ. ६ P पुछिउ. ७ MBPK सच्चउ. ८ MBP परिणवइ. ९ MBP धुउ. १० MB एउ ईरिउ; P इउ ईरियउ.

15. १ MBP सचेयण.

14. 12 *b* °जाई °मिथ्योत्तरम् . 17 उवईरिउ प्रतिपादितम् .

विणु जीवें पोग्गलु किं[2] तसइ विणु जीवें पोग्गलु किं हसइ।
विणु जीवें पोग्गलु किं[3] रमइ विणु जीवें पोग्गलु किं भमइ।
विणु जीवें पोग्गलु किं जियइ विणु जीवें पोग्गलु किं णियइ।
विणु जीवें किं[4] पोग्गलु[5] सुणइ किं विद्धउ[6] वेयणाइ कणइ।
ता वुत्तउ पहसियवियसियहिं अणुहुत्तपुहइपत्थिवसियहिं[7]।
जइ जीउ जि पेच्छइ कहहि कह तो विणु णयणहिं[8] ण णियइ कह।
जो पंतु ण दीसइ जंतु ण वि तहु कवणु भाउ किर कवण छवि।
जइ चिंतियमेत्तें[9] तहु कुणइ तो चिंतइ पूरइ किं ण रइ।
दालिद्दिउ भुक्खइ किं मरइ भोयणु चिंतविउ किं ण करइ।
को जाणइ भासिउ केण किह आगमु णवकंबलु पुरिसु जिह।
सिद्धंतहु[10] किं जणु गुरु णवइ तवतावें किं अप्पउ खवइ।
किं वाहिउ वट्टा णउ हवइ[11] तं णिसुणिवि मुणिवरिंदु चवइ।

घत्ता—चित्तयरहु लहणिवज्जियहो चित्तलिहणु[12] ण संतउ ॥
इह दव्विंदियभाविंदियहं जाणइ जीउ णिरुत्तउ ॥ १४ ॥

16

दुवई—जो जो पेच्छसे ण णेत्तेहिं ण सो सो जइ पयट्ठओ[1]।
ता सपियामहस्स सपियामहु पुत्तय[2] पइं ण दिट्ठओ ॥ १ ॥

जइ सो जि णत्थि तो तुहुं ण पुणु चिम्मेत्तहु कहिं वण्णाइगुणु।
ससहाउ भाउ परिभाउ[3] ण वि जं णहु तं णहु जि ण चंदु रवि।
जइ चित्तें विचित्तिउं[4] णउ हवइ ता झाइय देवय किहं[5] चवइ।

२ MBP किह. ३ B किम. ४ P किह. ५ MBP पोग्गलु. ६ MB बद्धउ. ७ B °पत्थिवसयहिं. ८ MBPK णयणेण. ९ B चिंतिए. १० MBT सिद्धत्थहु; and gloss in T सिद्धत्वस्वरूपप्राप्त्यर्थम्; P सिद्धतउ and gloss आगमनिमित्तम. ११ MBP वहइ. १२ M चित्तलिहणु.

16. १ M पयत्थओ; P पइत्थओ. २ M पुत्त. ३ BPT परिभावि. ४ MBP चिंतिउ. ५ MBP किं.

---

15. 9 *b* भाउ परिणति, छवि आकारो वर्णो वा. 12 *b* णवेत्यादि–यथा नवकम्बलः पुरुष इति वाच्य नव वा कम्बला अस्येति संशयहेतुत्वादप्रमाण तथा आगमेऽपि. 13 *a* सिद्धतहु आगमनिमित्तम्. 14 *a* वट्टा मार्गः. 15 ण संतउ अविद्यमानम्.

16. 1 पयट्ठओ पदार्थः. 4 *a* ससहाउ भाउ स्वस्वभावो भावः.

पविरइयसुहासुहरयदलइं जइ जीउ ण गेण्हइ पोग्गलइं ।
तो कंचुयसुत्तजालु तियहिं किहँ तुट्टइ प्रिउँ पेच्छंतियहिं ।
जइ सद्दु जि ण घडइ पइं भणिउ तो गहणु केण जाणिउं गणिउं ।
घडघोसु ण वसहि बुद्धि जणइ इय बालु वि गोवालु वि मुणइ ।
धम्मु जि कयमोक्खउ गयसरहो पंडिउँ पुणु लावइ गयसरहो ।
कइभावु कव्वु किह परुं घडइ जिह रुक्खहु उप्परि सिहिँ चडइ ।
घत्ता—जइ जं जेहउ तं तेहउ जि पइउं पइं संभावियउ ॥
तो किरियाजोएं किह जणेण लोहिं सुवण्णउं दावियउ ॥ १६ ॥

17

दुवई—हो हो जाइहेउछलवयणविरयणु मुएवि चप्फलं ।
कुरु कुरु परमधम्मु जिणभासिउ लहसि समिच्छियं फलं ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि हूई सम्मइय वाईसर णिव्वेएं लइय ।
गुरुभत्ति करिवि पणविय गुरुहे रविउयइ जहत्तणु अंबुरुहे ।
जिह णउ थक्कइ तिह भव्वयणे आयण्णियमण्णियमुणिवयणे ।
कल्लाणमित्त ते बे वि जण संसारवियारविरत्तमण ।
तासु जि तेलोक्कदिवायरहो पावइय पासि मइसायरहो ।
आयंबिलु वड्ढमाणु कियउ तउ भीमु सुदंसणसंणियउ ।
दोहिं मि दुकम्मु णिरोहियउ खय वेण्णि वि णियमवि णियहियउ ।
सिट्ठुत्तमट्ठदिट्ठीइ मुय सुक्कामर इंद पडिंद हुय ।

६ P °रइदलइं. ७ MBP कि. ८ MBP पिउ. ९ MBPT ज पंडिउ पलवइ गयसयहो.
१० MB किं परु, P किं पडु. ११ MBPKT सिहि, T सिहि मयूर· कवेरभिपायः, अन्यस्य पुनराग्निरिति.
१२ M पइं सभासियउ, B पइ जइ भावियउ. १३ M सुवण्णउ दाविउ; B सुवण्ण दावियउ.

17. १ MB समीहियं; P समाहियं. २ MBP णिसुणिवि. ३ BP सुदंसणु सणियउ. ४ MBP णियमिवि.

---

6 *a* रयदलइं कर्मभेदाः. 8 *a* मइ आगम.. 9 *a* घडघोसु घटशब्दः; वसहि वृषभे. 10 *a-b* धम्मु जीत्यादि–गयसरहो नष्टकामस्य मुनेः धम्मु जि चारित्रमेव कृतमोक्षम्; पंडिउ वैतण्डिकः लावइ योजयति धनुरेव गतबाणस्य कृतमोक्षम्. 11 *b* सिह पक्षी.

17. 1 जाइ° मिथ्योत्तरम्. 8 *b* सुदंसणसणियउ मेरुसंज्ञितम्, मेरुपंक्तिविधिरित्यर्थः. 10 *a* सिट्ठुत्तमट्ठदिट्ठीइ मुय शिष्टा आगमे प्रतिपादिता चतुर्विधा आराधकस्य या उत्तमार्थदृष्टिः चतुर्विधाहारत्यागस्तया मृतौ.

ओसारियकायकंतिसिहइं णिवसिवि सोलहजलणिहिणिहइं ।
धादइसंडइ थिय सिसुससिहि पच्छिममंदरपच्छिमदिसिहि ।
पच्छिमविदेहि णरदिण्णसुह णामेण पुक्खलावइ वसुह ।
घत्ता—तहिं अत्थि पुंडरिंकिणि णयरि राउ धणंजउ णिवसइ ॥
जयसेण सेण णं वम्महहो अवर वि भज्ज जसस्सइ ॥ १७ ॥

18

दुवई—ससिसिय भमरणील णंळपाउसणासपवेसकुसवहा ।
इंद पडिंद बे वि आवेप्पिणु जाया ताहं तणुरुहा ॥ १ ॥
जयसेणहि णंदणु सीरधरु पहसियउ इंदु दणुयारिवरु ।
वियसिउ पडिंदु सणियाणवसु तवरयणें किणियणिकामतुसु ।
णारायणु जायउ जससइहि भूहरवियारि वेउ व णइहि ।
णामेण महाबलअइबलहं तहि ताहं जगत्तयमंगलहं ।
सिरि भुंजंतहुं गउ मरिवि हरि अइबलु वि ण खयकालहु उवरि ।
अवलोयवि णियबंधवपलउ मणु मुक्कु ण वीरें मोक्कलउ ।
वणु पइसिवि सरु णिसुणिवि मयहं पणवेवि समाहिगुत्तपयहं ।
तउ लेवि महाबलु तहिं मरिवि प्राणयतियसेसरत्तु करिवि ।
वीसद्धिसमाणहिं पुणु पडिउ अंतयराएण ण को णडिउ ।
पुव्वुत्तदीवभायंतरए पुव्वुत्तसुरहिदियंतरए ।
पुव्वुत्तविदेहि तवियतरणि णामेण वच्छयावइ धरणि ।
पुरि तम्मि पहायरि जणभरिय महसेणहु देवि वसुंधरिय ।
घत्ता—तहि देविहि मयणमयालसहि गब्भवासु सेवेप्पिणु ॥
चउदहमयकप्पसुराहिवइ थिउ माणुसु होएप्पिणु ॥ १८ ॥

५ MBP पुंडरिंगिणि. ६ MBP धणजउ. ७ M*p* जसमइ.

18. १ MBP णं पाउसणासपवेसि. २ MBP जसमइहि. ३ MBP पाणइ. ४ P मरुसेणहु. ५ MBP °महालासिहि. ६ P चउदहमइ.

---

11 *a* ओसारियेत्यादि-उत्सारिता स्फेटिता अवसाने कायकान्तिः शिखाज्योतिर्यैः; *b* °जलणिहिणिहइं सागरोपमाणि.

18. 1 ससिसिय चन्द्रवत्पाण्डुरः; कुसवहा मेघाः. 3 *a* सीरधरु हलधरः; *b* दणुयारि° वासुदेवः. 4 *b* °णिकामतुसु तुषवत्तुच्छा मानुष्यकभोगाः. 5 *b* वेउ व वेगः प्रवाह इव. 11 *a* वीसद्धिसमाणहिं विंशतिसागरोपमैः.

19

दुवई—हुउं जयसेणचक्कि को वारइ होंती पुण्णसत्तिया ।
तेत्थु वि तेण भीमकरवालें महि छक्खंड भुत्तिया ॥ १ ॥

पुणु केवलणाणसिरीहरहो　　पायंतियम्मि सीमंधरहो ।
चोद्दहरयणइं णिहि परिहरेवि　　दुद्धरु चारित्तभारु धरेवि ।
घणपावको व्व विद्दावणउ　　भावेप्पिणु सोलह भावणउं ।
फणिणरसुरवइकयकित्तणउं　　अज्जेप्पिणु तित्थयरत्तणउं ।
गउ प्राणं विसज्जिवि घुलियधए　　उवरिंगेवज्जहि मज्झमए ।
तीसंबुहिसंणिहाइं जिएवि　　अहमिंदु देउ तेत्थहु चएवि ।
पुक्खरदीवहु पुव्विल्लु गिरि　　णामेण मेरुसरि वूढसिरि ।
तहि पुव्वविदेहइ दिण्णसुह　　णरजोणि मंगलावइ वसुह ।
तहिं रयणसंचि अजियंजयहो　　रायहु पालियसावयवयहो ।
जोइयसुहसिविणयसंतइहे　　हुउ सुउ देविहि तसु वसुमइहे ।

घत्ता—सो देउ जुयंधरु परमजिणु वम्महवम्मवियारउ ॥
उप्पण्णु जि सयलहिं सुरवरहिं मेरुहि ण्हविउ भडारउ ॥ १९ ॥

20

दुवई-- पुणु णरखयररायरायत्तणु मेल्लिवि गउ वणंतरं ।
रुंभिवि अंतरंगु पविलंबियकरु थिउ सो णिरंतरं ॥ १ ॥

भयवंतहु विहुणंतहु दुरिउ　　पालंतहु सुत्तउत्तु चरिउ ।
उप्पण्णउं जगसंखोहणउं　　केवलु किउ तच्चणिरूवणउं ।
आइल्लउ तित्थु पवत्तियउ　　तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ ।

19. १ P हुव जयसेणु. २ P चउदह°. ३ MBP पाण. ४ P विवज्जिवि. ५ MB मज्झवए; P मज्झिमए. ६ MBP पुक्खरवरदीवइ पुव्वगिरि. ७ MBP मेरुदरि.

20. १ MBP read this line as: तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ, आइल्लउ तित्थु पवत्तियउ.

19. 3 *b* पायंतियम्मि पादसमीपे. 8 *a* अंबुहिसणिहाइं सागरोपमाणि.
20. 3 *b* सुत्तउत्तु आगमोक्तम्. 5 *a* आइल्लउ प्रधानम्.

गउ मोक्खहु अक्खरु अक्खरहो तणु सक्कारिउ परमेसरहो।
अग्गिदहिं णियमउड्डाणलिण भणु किं ण होइ सुकियफलिण।
इय कहपवंचि मइं संकहिए सम्मत्तु लइउ देवहिं सहिए।
हे हे मह कुलकमलेक्कसिए ललियंगहु तुह ललियंगपिए।
हियउल्लउ णिदियइंदियउ तइयहुं जिणधम्माणंदियउ।
संभरसु पुत्ति रमियामरहो अंजणणामयहु धराधरहो।
अम्हइं तुम्हइं मि महासरहो दीवहु गयाइं णंदीसरहो।
संभरसु पुत्ति पविउलकमले कीलियइं सइंभूरमणजले।
किय आपच्छिणु रुद्दासवहो णिव्वाणपुज्ज पिहियासवहो।

घत्ता—संभरसि पुत्ति मइं भासियइं पयइं व हुअहिणाणइं॥
तुम्हइं दंपइहिं रईयरइं सुरवरकीलाठाणइं॥ २०॥

21

दुवई—तहिं णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु अच्छइ बिहि वि जइयहुं।
हउं कालेण कह व णिल्लोट्टिउ इंदवयाउ तइयहुं॥ १॥

हमच्चुया सुओ सुए कुले सुरिंदसंथुए।
वसुंधरावहूयरे महंतपुण्णगोयरे।
णिबद्धपेम्मराइणा जसोहरेण राइणा।
सुओ हुओ हियंतओ इहेव वज्जदंतओ।
कुवाइएहिं मोहिओ सुमंतिणा पबोहिओ।
कयंगयारिण्हाणओ मरेवि दिण्णदाणओ।
सुधम्मभावणामलो खगाहिवो महाबलो।
दुइज्जसग्गठाणए सिरिप्पहे विमाणए।

२B अक्खर अक्खरहो. ३ MBP भणु होइ किं ण. ४ M मइ सइ कहिए; B सइ मइं कहिए. ५ P सयभू°. ६ B दंपइरईयरइं.

21. १ MP सए.

---

6 *a* अक्खरु लब्धानन्तचतुष्टयरूपतयाविनश्वरम्.

21. 1 णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु नियुत लक्षं तस्यार्धं पञ्चाशत्सहस्राणि तत्प्रमाणानि पूर्वाणि आयुर्यत्र. 3 *a* हं अहम्; सुए हे पुत्रि. 4 *a* °वहूयरे वधूदरे. 8 *a* °अगयारि° मदनान्तको जिन°.

लयारपुव्वणामओ सरूवजित्तकामओ ।
हुओ सुरो दुवीसमो महं गुरू स पच्छिमो ।
पियव्वया अणामिया गयाउणा [2]खयं णिया ।
[3]तुमं पि तप्पिइल्लिया प[4]इंय अंतिमिल्लिया ।
दिवायरस्स णं पहा [5]सलक्खणा सयंपहा ।
[6]कयंतचंडिमाहओ तुहं पिओ तहिं मओ ।
वरुप्पलाइ खेडए पुरे विचित्तणीडए ।
पलंबथोरबाहुणो णिवस्स वज्जबाहुणो ।
सुवण्णवण्णकायओ कुलंगणाइ जायओ ।
रवि व्व सो दुलंघओ मयच्छि वज्जजंघओ ।
पिओसुया सुहंकरा महं सुहीण ते परा ।
[7]समीवु भूमिमंडले वसंति ते [8]सुकोंतले ।
सुरालयाउ आइया रमावईइ जाइया ।
तुमं [9]सया पहायरी महं सुया किसोयरी ।
वरं वरं विहाविही वियक्खणा [10]विहाविही ।
पियागमं पयासिही दिणेहिं तीहिं भासिही ।
सिरीमईइ भासियं तए महं पयासियं ।
[11]भरामि हं [12]परं भवं चिरं पि ताय णं णवं ।

घत्ता—सुणि सेणिय आसि समासियउ भरहहु रिसहजिणिंदें ॥
णवकुंद[13]पुप्फदंतहिं हसिवि पुणु सुय भणिय णरिंदें ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सिरिमइभवसंभरणं णाम
तेवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २३ ॥

॥ संधि ॥ २३ ॥

२ MBK खयाणिया. ३ BP तुम ति. ४ MBP पइ अयं ति मिलिया. ५ MBP सुलक्खणा. ६ MP कयंति. ७ MBP समाव° ८ MBP सुकोमले. ९ BP सयपहायरी. १० M इहाविही. ११ MBP सरामि. १२ P गयं. १३ MBP °फुप्फयंतहिं.

11 *a* लयारपुव्वणामओ ललिताङ्गः. 16 *a* °चंडिमा° रौद्रत्वम्. 20 *b* मयच्छि हे मृगाक्षि. 21 *a* पिओसुया पितापुत्रौ. 23 *b* रमावईइ लक्ष्मीवत्याम्. 25 *a* विहाविही द्रक्ष्यति; *b* वियक्खणा पण्डिता धात्री, विहाविही वि+इह+ आविही आगमिष्यति. 26 *b* भासिही शोभिष्यते विवाहेन.

XXIV

सहुं णंदणेण णियपरियणेण महु लोयणसुहु देसइ ॥
सुणि राउलउ तुह माउलउ अज्ज पुत्ति आवेसइ ॥ ध्रुवकं ॥

1

म करहि वयणकमलु तुहुं दीणउं अज्ज पुत्ति जायउ सुविहाणउं ।
आयहु वज्जव हुपाहुणयहु अज्ज करमि करणिज्जु सविणयहु ।
सोयकिलेसपंकु पक्खालहि अज्ज पुत्ति तुहुं णाहु णिहालहि ।
आया माणणिज्ज ते माणमि लहु अद्धवेहि गंपि घरु आणमि ।
जाँमि भणिवि गउ णरवइ जावँहिं पंडियभवणु पराइय तावँहिं ।
मुणिहि वि मयणुक्कोवजणेरी दिट्ठी सुय णरणाहहु केरी ।
णं गंगाणईहि जउंणाणइ णं कइमइहि मिलिय सुयसंतइ ।
णियडि णिसण्णी सा तरलच्छिहि पुरिसुज्जमलीला इव लच्छिहि ।
करिणिइ कराणि जेम करु मग्गिय वेल्लिइ णववेल्लि व आलिंगिय ।
मत्थइ चुंबिवि पुरउ णिवेसिय हंसिइ कलहंसि व संभासिय ।
मुहराएण जि सिट्ठुं णियच्छिउ कज्जु तो वि णिवकण्णइ पुच्छिउ ।

घत्ता—विउसिइ कहिउ ढंकिवि लिहिउ पइं जं तहिं मइं ढोइय ॥
णरवइ दमिय ओसरिवि थिय वासवदुद्दताइय ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डल
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसुमसकरे ।
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमधः क्षिते-
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

GK do not give it.

1. १B लोयणु सुहु. २ P रावलउ. ३MBP अज्जु-and throughout this Kadavaka. ४ P सुविणयहु. ५ B अद्धवहु. ६ M एम. ७ MB जावेहिं; P जाविहिं. ८ MB तावेहिं; P ताविहिं. ९ MBP मयणुक्कोय°. १० MB सुट्ठु; P सिद्धु. ११ P पुंछिउ.

---

1. 6 *b* अद्धवहि अर्धपथे. 8 *a* मयणुक्कोव° मदनप्रसरः.

2

पच्छइ सयलहं आयउ जो वरु सो णं सोहग्गहु केरउ घरु।
सो णं वम्महेण पेसिउ सरु सो णं जुवइयणहं जीवियहरु।
सो णं रइरससलिलहु सायरु सो णं तुह मुहकमलदिवायरु।
सो णं रूवविलासु पसारिउ सो णं कंतिकोसु वड्ढारिउ।
सो णं विज्जाविहि वित्थारिउ सो णं पुण्णपुंजु अवयारिउ।
सो णं सूहउ मज्झु मणि भावइ जो तुह अट्ठ वि अंगइं तावइ।
पुन्ति महासिहरहु दुहणासहु देवि पयाहिण जिणवरवासहु।
फेणहिमट्टहाससंकासहु णाइं पुरंदरेण कैलासहु।
हियवउ रइवियसिउं मउलेप्पिणु तेण बे वि णियकर मउलेप्पिणु।
वंदिउ जिणु सुहवज्जियवज्जिउ वंदिउ जिणु सुरपुज्जियपुज्जिउ।
वंदिउ जिणु जगवंदियवंदिउ वंदिउ जिणु बुहणिंदियणिंदिउ।
जम्मवासु देवहु णउ जुज्जइ विणु सयलेण सत्थु किह णज्जइ।
अकिरिउ णिक्कलु गयणसरिच्छउ जंपउ जडयणु बुद्धिइ तुच्छउ।

घत्ता—गरुयउ णहहो सीयलु हिमहो जिण तुह पर गुरु केहउ॥
वलइयभुयहो वंझासुयहो खकुसुमसेहरु जेहउ॥ २॥

3

जिणु वंदेप्पिणु वंदिय मुणिवर मुणिवर ते सुयहर णं गणहर।
अंगणहररुइरंजियदसदिस दसदिसिवहपसरियणिम्मलजस।
जसु ण कलंकु गोत्ति णउ हियवइ वंयवालिणि मइ जसु थिय जिणणइ।

2. १ MBP °णिलयहु. २ MP °हिमहि°. ३ P कइलासहु. ४ MBP रइ°. ५ MP मेलेप्पिणु. ६ BPT सुहवज्जिण°. ७ M जयनंदियवंदिउ, BP भयवज्जियवंदिउ. ८ MBP परगुरु.

3. १ MBP °दसदिसु. २ MBP °जसु. ३ MP वयपालिणि.

2 9 *a* रइवियसिउ कांडोल्लसितम् 10 *a* सुहवज्जिय° शुभकर्मरहिते. 12 *a-b* जम्मेत्यादि- जन्मवासो गर्भावतारो देवस्य न युज्यते, अयोनिसंभवत्वादस्य. अत्रोत्तरमाहाचार्य —विणु इत्यादि–कलाभिरवयवैर्मूर्तिभिर्वा सह वर्तते इति सकलं शरीरं तेन विनान्यमुक्तात्मवत् शिवस्य शास्त्रं कथं णज्जइ युज्यते. 15 वलइयभुयहो वल्गितभुजस्य.

णयसिरु पट्टसाल स पइट्ठउ सपइट्ठउ मइं संमुहुं दिट्ठउ ।
दिट्ठउ पडु सहुं सुलिहियचित्तें चित्तें चिंतिउ तेण ससंतें ।
संतें इट्ठविओयकंतें कं तें धुणियउं भवसंकंतें ।
कंतें[5] जयलच्छिहि विकंतें [6]कंतें सुमरियपेम्मुकंतें ।
कंतें चंदेण व संपुण्णें पुण्णें पियसंजोउ ण रुण्णें ।
रुण्णें पर सरीरु णिव्वट्टइ णिव्वट्टिउ देउ वि ण पवट्टइ ।
वट्टइ जाणिउं कहिं दीसइ सा सा मणणलिणोयरवासिणि जा ।
जा सा सा भणंतु सो मुच्छिउ सोमुच्छिउ चंदु व्व णियच्छिउ ।
अच्छिउ विमणु पपुच्छिउ धाइइ धाइइ परियणि कहिं मि ण माइइ ।
माइइ भणइ रमणु तुह अक्खमि अक्खेमियं जं तं किह रक्खमि ।

घत्ता—भवें[10]संचरिउ पडिउद्धरिउ बहुपयारु परढंकिउ[11] ॥
णरवइसुयइ सुललियभुयइ कीस सहियवउ वंकिउं[12] ॥ ३ ॥

4

एहु ईसाणकप्पु विविहामरु लिहियउ एहु सिरिमहु सुरहरु ।
एहु दिव्वतरुवरु णंदणवणु पलवमाणु चलकलकोइलगणु ।
एहु ललियंगु देउ हउं होंतउ एत्थु वसंतउ एत्थु रमंतउ ।
थणयलघुलियहारमणहारी एह सयंपह देवि महारी ।
अच्चुयणाहु एहु तियसेसरु कुलिसपाणि लिहियउ परमेसरु ।

४ B °सिरपइ°. ५. M omits this foot. ६ BPK पेम्मकंतें सुयरियकंतें. ७ MBPT णीवट्टइ. ८ MBP णीवट्टिउ देहु. ९ B अक्खामियउं. १० MBP भवि. ११ MBP °ढकियउ. १२ MBP वांकयउ.

4. १ P इहु and throughout this Kadavak. २ MB सुप्पहसंपयसुर°.

---

3. 4 *a* पट्टसाल स पइट्ठउ ग पट्टशालां प्रविष्टः; *b* सपइट्ठउ सप्रतिष्ठः. 5 *b* ससंतें निश्वसता. 6 *a* संतें उत्तमपुरुषेण, °विओयकंतें वियोगपीडितेन, *b* कं तें धुणियउ तेन मस्तकं कम्पितम्. 7 *b* °पेम्मुकंतें स्नेहयुक्तेन. 8 *a* कंतें चंदेण व कमनीयेन चन्द्रेणेव; *b* पुण्णें पुण्येन. 9 *a* णिव्वट्टइ विनश्यति. 10 *a* वट्टइ जाणिउं ज्ञानं वर्तते. 11 *a* जा सा सेत्यादि—या जगत्प्रसिद्धा लक्ष्मी 'सेयम्, सेयम्' इति मूर्च्छितः; *b* सोमुच्छिउ सौम्यः उच्छ्रितः. 12 *a* धाइइ धात्र्या, *b* धाइइ धाविते. 13 *a* माइइ हे पुत्रि; *b* अक्खमिय इन्द्रियैर्ज्ञातम्.

कहइ जुयंधरदेवकहाणउं लंतवबंभेसर मइं लीणउं ।
एयइं अम्हइं बे वि वइट्ठइं कँह णिसुणिवि णियँमणि संतुट्ठइं ।
इय मेरुहि गयाइं जगखंभहु इह लग्गइं जिणण्हाणारंभहु ।
एहु अंजणमहिहरु महु रुच्चइ एहु दीउ णंदीसरु वुच्चइ ।
इह सहुं सुरणाहें सुहललियइं वंदणहत्तिइ विण्णि वि चलियइं ।
अंबरतिलउ एहु गिरिसारउ इहु पिहियासउ लिहिउ भडारउ ।
एत्थु तासु कमकमलु णमंतइं थियइं बे वि जिणधम्मु सुँणंतइं ।

घत्ता—एहु मलरहिउ हउं पाडहिउ एह सयंपह णच्चइ ॥
तियसिद्धिवणे जिणवरभवणे महि पयपोमहिं अंचइ ॥ ४ ॥

5

अण्णेत्तहि वि एत्थु णेो लिहियउ जो मइं कीलारंभु पविहियउ ।
रइणेउरसद्दें रोमंचिउ एत्थु ण लिहियउ मोरु पणच्चिउ ।
अम्हहं तणुपरिमलपरिभमियउं एत्थु ण लिहियउं अलिगुमुगुमियउं ।
एत्थु ण लिहियउ लज्जादेसिरु सुँय गुरुँयणआगमणुब्भासिरु ।
सवणभरणु इह णलिणु ण लिहियउ जं वहुणयणहं सोहइ महियउ ।
एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ ।
इह कवोलपत्तावलिमोडणु एत्थु ण लिहियउ किसलयताडणु ।
एत्थु ण लिहियउ विरहाउरु मुहुं एत्थु ण लिहियउ प्रिउँ विवरंमुहु ।
एत्थु ण लिहियउ भूँसणु पेसिउ एत्थु ण लिहियउ दूययभासिउ ।
एक्कु जि लिहियउ अणुणयगारउ ईहु महु दिण्णउ पायपहारउ ।

३ MB कहि. ४ MB णियमण°. ५ MB सरंतइ.

5. १ MBP णालिहियउ. २ B मेरु. ३ MBP सुउ. ४ MB गुरुयणु. ५ MBP read this line as:. एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ, एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ. ६ MBP विरहाउर. ७MBP पिउ. ८ MB भूमण. ९ M एत्थु ण; B एउ महु.

4. 13 पाडहिउ नाट्याचार्यः. 14 तियसद्दि° मेरु..

5. 4 *b* सुय शुकः. 10 *a* अणुणय° अनुकूलता.

पयवडिए सारंभु मुयाविउ पत्थु ताइ हउं आसि खमाविउ ।
अण्णहि णेही रूवविहूई देवि सयंपह माणवि हूई ।
अण्णहि पसहणिहाणइं[10] णेत्तइं अण्णु[11] लिहइ किं महु चारित्तइं ।

घत्ता—भणु किं कहमि ण विरहु सहमि दूइइ पिय महु आणहि ॥
सा तेत्थु[12] पुरे थिय जम्मि घरे[13] तहिं जायवि संमाणहि ॥ ५ ॥

6

ता दूईइ[1] उंचु अम्हारी णयरि पुंडरिंकिणि पुरिसारी ।
वज्जदंतु पहु तहु सुहगारी लच्छीमइ महएवि भडारी ।
धीय ताहि[2] सिरिमइ उप्पण्णी पिउ सुमरिवि जीवियणिव्विण्णी ।
पहु तोइ लिहियउ कहवइयरु पइं जाणियउं णिरुत्तउ तुहुं वरु ।
एम भणेप्पिणु हउं पत्थाइय पइसंबंधिणि वत्त णिवेइय ।
तावेत्तहि कुमारु गउ तेत्तहि उप्पलखेडउ पुरवरु जेत्तहि ।
पियविओयसिहिजालाछित्तउ घरि तलिमयलइ देहु णिहित्तउ ।
तरुणीवग्गुरवडिउ[3] पलोइउ णं वणवाहें मृगु[4] संभाविउ ।

घत्ता—रइरिद्धएण[5] मयरद्धएण विद्धउ पंचहिं बाणहिं ॥
विवरीउ हुउ सो रायसुउ कह व ण मुक्कउ प्राणहिं[6] ॥ ६ ॥

7

दुप्परिणामें कामें तप्पइ सीयलमलयजपंकें लिप्पइ ।
रसइ हसइ णीससइ विरुज्झइ उट्ठइ बइसइ मोहें मुज्झइ ।
कर मोडइ धम्मेल्लय मेल्लइ अहरु डसइ अणिबद्धु[1] पबोल्लइ ।
वेवइ वलइ विलासहिं गच्छइ परु पच्छण्णु[2] पउत्तिहिं पुच्छइ ।
एक्कहिं णिलइ ण णिविसु[3] वि अच्छइ दिसि लिहियं पिव पियमुहुं पेच्छइ ।

१० MBP °णिहाइं ण. ११ MB अण्ण. १२ MBP जेत्थ. १३ MBP हरे.

6. १ MPB वुत्तु. २ MBP ताहि. ३ M °वग्गुरु पडिउ विलोइउ; P वग्गुरु वडिउ विलोइउ. ४ MBP मिगु. ५ M रइविद्धएण, P रइरिद्धिएण. ६ MBP पाणहिं.

7. १ MBP अणिबद्धउ बोल्लइ. २ MB पच्छण्ण°. ३ P णिमिसु.

11 a सारंभु कोपः 15 संमाणहि मदीयकुशलवार्तया संतोषय.

6. 10 विवरीउ कामजनितोन्मादादसंबद्धप्रलापी.

ण्हाइ ण धुवइ ण जिणवरु पुज्जइ भूसणु लेइ ण भोयणु भुंजइ ।
रमइ ण कंदुउ तुँरउ ण वाहइ करि वि रहु वि णयँणेहिं ण चाहइ ।
गेउ ण सुणइ ण वज्जउ वायइ पर्ँ णिम्मीलियच्छु पॅय झायइ ।
एक्कु वि रायविणोउ ण माणइ कामगहिल्लउ किं पि ण याणइ ।
मंतिहिं वज्जबाहु विण्णवियउ तणउ देव मयणें परिँहवियउ ।

घत्ता—हुई सइहि लच्छीमइहि जा सिरिमइ तहि रत्तउ ॥
दुक्की णियइ दुक्करु जियइ कामाणलसंतत्तउ ॥ ७ ॥

8

तं णिसुणिवि णहछोडउ देप्पिणु उट्ठिउ णरवइ दूर विहसेप्पिणु ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ सो बालउ पभणइ पहु सुय थिउँ किं कालउ ।
आवहि जाम ण होइ वियालउ अज्जु जि किज्जइ तुह पॅयमेलउ ।
सुणह महारी पइं कहिं दिट्ठी अवरें वत्त णरिंदहु सिट्ठी ।
गउ कुमारु परिभमहुं सलीलइ दिट्ठउ पडु आलिहिउ जिणालइ ।
पुव्वजम्मु तहिं एण णियच्छिउ चिरॅकंतावयारु परिहच्छिउ ।
कामु वि कामरूवि जं पाडइ ताहि रूउ कं कं ण भमाडइ ।
पट्टॅइ लिहियउ हियवइ लिहियउ को तं पुसइ णिडालॅइ लिहियउ ।
अवसें होसइ णिव विहिविहिॅयउ एम जाम मइॅबंधें कहियउ ।
ता सहुं पुत्तें समउ कलत्तें सहुं सेण्णेण धॅवलधयछत्तें ।
वज्जबाहु सहस त्ति पधाइउ णयरि पुंडरिॅकिणि संपॅाइउ ।
रच्छसोह पुरि कारावेप्पिणु लीलइ मत्तकरिंदि चडेप्पिणु ।

घत्ता—आवंतु पहे पहु अद्धवहे पविभुएण जयकारिउ ॥
सो तेण जिह देवीइ तिह तिह सुएण णॅवयारिउ ॥ ८ ॥

४ M तुरिउ. ५ MBP णयणहिं ति ण. ६ P परि. ७ MBP पिय. ८ P परिहाविउ.

8. १ MB सो अच्छइ. २ MBP किं थिउ. ३ MBP पियमेलउ. ४ MBP चिरु कंता°. ५ MBP पट्टालिहियउ. ६ B omits this line. ७ MBP णिलाडइ. ८ B °वहियउ. ९ MBP मइवंतें. १० BP धवलछत्तें. ११ MBP संपाइउ. १२ M णवियारिउ.

---

7. 7 *a* तुरउ तुरगः. 10 *b* परिहवियउ विह्वलीकृतः कदर्थितो वा. 12 णियइ भवितव्यता.

8. 1 *a* णहछोडउ नखोच्छोटिका. 6 *b* परिहच्छिउ ज्ञातः. 7 *a* कामरूवि कामावस्थायाम्. 9 *b* मइबंधें मतिबन्धनेन बुद्धिप्रपञ्चेन. 13 पविभुएण वज्रबाहुना. 14 णवयारिउ नमस्कृतः.

9

सालउ सस बिण्णि वि जोयप्पिणु णयणहुं केरउ फलु पावेप्पिणु ।
राएं अवलोइयउ स[1]स्सीयउ अच्छिउडेहिं रूवरसु पीयउ ।
पु[2]रणारीयणु कहिं मि ण माइउ अवरुप्परु चूरंतु पधा[3]इउ ।
णिवडहिं केरउ सहि धरणीवइ वज्जबाहु पहु[4] सो बहिणीवइ ।
जसहरणामहु धीय जिणिंदहु एह वसुंधरि बहिणि[5] णरिंदहु ।
एयहु उप्पलखेडणरेसहु दिण्णी सुंदरि णिरुवमवेसहु ।
जो सग्गाउ देउ अवयरियउ जो सिरिमइवरु जम्मंतरियउ ।
इहु सो वज्जजंघु हलि णरवरु एयहु संमुहुं मइं पसरिय[6] करु ।
सो वि ण पावइ चिंचु जि पावइ तं पावंतु[7] वि तणु संतावइ ।
पुरिसु होइ जइ एहउ वम्महु णं णं सो अणंगु मुणिमणमहु ।
का वि भणइ उच्चायहि मइं पिय लंघवि कोट्टु पलोयमि वरसूय[8] ।
ताइ णियंतिय रूवु कुमारहु पेम्मजलोल्लिय तणु भत्तारहु ।
घत्ता—रइपेल्लियउं उव्वेल्लियउं णिच्छुट्टंतु णिरंभइ ॥
कविणिम्मलए चुये[9] मेहलए दढु परिहं[10]णु णिब्बंधइ ॥ ९ ॥

10

का वि भणइ णगयग्गदुवारें अंतरियउ सूहउ पायारें ।
उब्भिउ करु करयलइ ण णयणइं किह पेच्छमि अंगाइं समयणइं ।
का वि भणइ भासिय दुव्वयणइं अज्ज परइ मेल्लि[1]मि पइसयणइं[2] ।
एयहु घरि दासित्तु समिच्छमि जीवमि छुडु[3] मुहकमलु णियच्छमि ।
का वि भणइ णिवसुय सकयत्थी[4] ण वियाणहुं चिरु[5] काइं वउत्थी ।

9. १ MBPT ससीयउ. २ MBP पुरि. ३ K पराइउ. ४ MBP एहु; K एहु but corrects it to पहु. ५ MBPK बहिण. ६ MBP पसरिउ. ७ MBP पावंतु जि. ८ MBP वरसिय. ९ MP चुउ मेहलए दढ°; B चुए मेहलए दढ°. १० MBP परिहाणु णिबंधइ.

10. १ B मेल्लिवि. २ MBP पिउसयणइं. ३ MBP फुडु. ४ P सकियत्थी. ५ B चिर.

---

9. 2 *a* ससीयउ भागिनेयः 11 *b* कोट्टु भित्तिः वरसूय वरश्रीः. 13 उव्वेल्लियउ उच्छ्वासितम्.

10. 1 *a-b* णगेत्यादि—नगश्च प्राङ्गणवृक्षः, अग्रद्वारं प्रतोली, ताभ्यामन्तरितः प्राकारेण च; अथवा, न गता अहमग्रद्वारेण प्रतोल्यां निसृत्य तं द्रष्टुम्. 5 *b* वउत्थी व्रतस्था.

पहुउ जाहिं रमणु संपण्णउं   मं छुडु को वि महातउ चिण्णउं ।
तहिं अवसरि पहुभवणि पइट्ठइं   पाहुणाइं पीढेसु णिविट्ठइं ।
उवणिउ ण्हाणु विलेवणु णिवसणु   ताहं सुकुसुमदामु मणिभूसणु ।

घत्ता—पुणु विविहु रसु सुरहिउ सुवसु पंचिंदियहुं पियारउ ॥
जेवणु जिमिउं णावइ रमिउं रइसुहुं धुत्तिहि केरउ ॥ १० ॥

11

भणइ णरिंदु ण किं पि वियप्पमि   धणु जं मग्गहि तं जि समप्पमि ।
तुहुं घरु आयउ तुह किं किज्जउ   भणु भणु वज्जबाहु किं दिज्जउ ।
चवइ कुलिसयरु धणुकयसंकउ   धणु गुणेण सहुं णिच्चु जि वंकउ ।
धणु मज्जु व मज्जावइ माणुसु   धणु मारणउं बंधुद्रोहयविसु ।
धणु णयणइं जाणमि मइमइलइं   तेण जि धणि इट्ठु वि ण णिहालइ ।
धणु किं संणिवाउ जरु होसइ   तेण जि धणि अणिबंधउं भासइ ।
धणु काणीणहु दीणहुं दुलहु   उत्तिमपुरिसहुं माणु सुदुलहु ।
सयलु अत्थि महु तुज्झ पसाएं   एक्कु जि मग्गमि सुहिअणुराएं ।
सकुलायउ सोहद्दउं दावहि   सिरिमइ वज्जजंघकरि लावहि ।
तं णरणाहें वयणु समत्थिउ   खिच्चहु उप्परि घिउ ओमत्थिउ ।
परभवाउ सुरमिहुणु जि आयउ   महु तुह मंदिरि माणुसु जायउ ।
अच्छइ विरहाणलसंतत्तउ   संजोइज्जइ दइवविहित्तउ ।

घत्ता—चक्केसरहो तहु पवियरहो कण्णइ लिहियउ आणिउ ॥
गुणभूसियए ता विउसियए पडपवंचु वक्खाणिउ ॥ ११ ॥

६ MB सवसु. ७ MBP जेमणु.

11. १ B वियप्पिमि २ MBP कुलिसकरु. ३ MBP धणु णरणयणइं जाणमि मइलइं. ४ MBP धणु इट्ठइ ण. ५ MBP अणिबद्धउ. ६ MBP माणु सुवल्लहु. ७ M मत्थि. ८ MBP लायहि. ९ MBP एउ जि. १० MBP °विहत्तउ. ११ MBP बालइ लिहिउ त्रियाणिउ.

9 सुवसु जारक·

11- 3 *a* कुलिसयरु वज्रबाहु. 9 *a* सोहद्दउं मित्रत्वम्. 10 *b* खिच्चहु उप्परि खीचडी उपरि (?) कृसराया उपरि; ओमत्थिउ प्रक्षिप्तम्. 13 पवियरहो वज्रबाहोः.

12

पियराहिरामाइ संपुण्णकामाइ ।
मुक्काइ वायाइ तुट्ठाइ मायाइ ।
परिखवियकम्माइ कइयाइ रम्माइ ।
*जिणणाहपूयाइ दिण्णाइ धूवाइ ।
सुइसायकुंभेहिं घणघडियखंभेहिं ।
रुप्पभयकुड्डेहिं आलिहियभद्देहिं ।
विप्फुरियरयणेहिं वरहीरगहणेहिं ।
आसणविराइयहिं माणिक्कवेइयहिं ।
पडिणेत्तपच्छइउ कंतीइ चँचैइउ ।
रुंलंतमोत्तियहिं णं दंतपंतियहिं ।
विहसंतु पडिहाइ दिट्ठीसुहं देइ ।
णाणापयारेहिं णाणादुवारेहिं ।
कउ मंडओ ताम संमाइ जणु जाम ।
मिलिएहिं सुहियँणहिं भरिएहिं तोरणहिं ।
घणरवगहीरेहिं पहएहिं तूरेहिं ।
णच्चंततरुणीहिं मंडलियघरणीहिं ।
खयरीहिं जक्खिणिहिं णायरणियंबिणिहिं ।
हिमहारसरिसेहिं सजलेहिं कलसेहिं ।
पइपुत्तवंतीहिं महिणाहपत्तीहिं ।
सोहग्गसुंदरइं ण्हावियाइं वहुवरइं ।
पुणु पुणु पसाहियइं णवरइरसाहियइं ।
थुइवयणकलयलहिं धवलेहिं मंगलहिं ।
पुणु पुणु जि गाइयइं आसण्णढोइयइं ।

घत्ता—पसरियकरहे मयणिब्भरहे मणु मयणें सुंवियारिउ ॥
मुहवड्ड पियहे णं गयघडहे वरसुहडें ओसारिउ ॥ १२ ॥

12. १ P संदिण्णधूवाइ. २ MBP घरु घडिउ खंभेहि. ३ MBP °कुडेहिं. ४ MB °मडेहिं. ५ MBP चिंचइउ. ६ MBP झुलंत°. ७ P सुहयणहिं. ८ BP घरिणीहिं. ९ M °सरसेहिं. १० MB सवियारिउ.

12. · 8 *b* °वे इ य हिं चतुष्किकाभिः.

13

सोहणे वासरे चारुलग्गुग्गमे उग्गदोहग्गदुक्खावलीणिग्गमे ।
पाणिणा पाणि तीए तिणा धारिओ अंगडाहो परं दूसहो हारिओ ।
रायराएण भिंगारएणाणियं भायणेयस्स घित्तं करे पाणियं ।
अण्णजम्मागया तुज्झ सीमंतिणी तुज्झु मे दिण्णिया पेसलालाविणी ।
वाइणो वाउवेया पमत्ता गया पंचवण्णा पवित्ता विचित्ता धया ।
जाण जंपाण छत्तं सियं चामरं देस गामं पुरं सत्तभूमं घरं ।
उज्जलं हंसतूलक्कसेज्जायलं दीवओ मंचओ दासदासीउलं ।
हारिवीरोहओ इच्छियं मंडलं कंचिदामं वरं कंकणं कुंडलं ।
राइणा पुत्तिसंतोसउप्पायणं वत्थुसारं अणेयं पि दिण्णं घणं ।
रायपुत्तिं करेणुं व लीलागओ तं करे गण्हिऊणं वरो णिग्गओ ।
मंडवे वेइयापट्टि आसीणओ वज्जबाहू समाणंदिओ राणओ ।
अक्खया पूयदूवंकुरुम्मीसिया बंधुलोएण घित्ता सिरे सेसिया ।
जाव गंगाणई जाव मेरू गिरी ताम्व भुंजेह तुम्हे वि णिच्चं सिरी ।
होंतु पुत्ता महंता पहाभासुरा जंतु अच्छिण्णणेहेण वो वासरा ।
अच्छमाणाइ लच्छीविसाला जहिं सो वरो सा वहू दो वि ताइं तहिं ।

घत्ता—लग्गिवि वरहो वहु वासरहो परिवाडिइ सुहवासहिं ॥
अहिसिंचियइं पुणु अंचियइं णिवहिं दुतीससहासहिं ॥ १३ ॥

14

वालमुणालसरलकोमलयरु दियहहिं जंतहिं कीलइ वहुवरु ।
वरु सकामु काइं वि जंपावइ बहु लज्जंति तं जि संभावइ ।
वरु तणुपयइजोग्गु आलिंगइ वहु मुक्की तं पुणु मणि मग्गइ ।

13. १ P भगार°. २ MBP भाइणेयस्य. MBP °तुलक°; K °तूलक but crrects it to °तूलक्क° and gloss अर्कपिचु अर्कतूल·. ४ M हार°. ५ MB पदिण्ण. ६ MBP रायपुत्तें. ७ P करेणुव्व. ८ MBP दूवंकुरामीसिया. ९ M भुंजेवि. १० MBP भासुर. ११ MBP वासरं. १२ MP पडिवाडिइ.

14. १ P बालु. २ MBP °पइयजोगु.

13. 2 *a* तिणा तेन राज्ञा. 7 *a* तूलक्क° अर्कपिचुरर्कतूलः. 8 *a* हारिवीरोहओ मनोहरवीरसमूहः. 12 *a* पूय° पवित्राः. 16 सुहवासहि सुखवासैः.

14. 2 *a* जंपावइ अनुमन्यते. 3 *a* तणुपयइजोग्गु शरीरस्वरूपयोग्यम्.

वरु केसग्गहेण[3] ओणामइ वहु हेट्ठामुहुं मुहुं ल्हिक्कावइ[4]।
वरु मउँअउ[5] जि करइ अहरग्गहु हुं हुं[6] मेल्लि दर भासइ णववहु।
वरु थणसिहरइं छिवइ सहत्थें वहु वीलावस ढंकइ वत्थें।
वीरु पसारिउ सणियउं पुंजइ वरु करु[7] ऊरूजुयलि[8] णिउंजइ।
वरु फेडवि मल्लइ पल्लंकइ पाणि देइ वहु वयणससंकइ[9]।
वरु सोणीयलहुत्तउ[10][13] जोयइ वहु तहु दिट्ठि[11] करहिं पच्छायइ।
अलियणहेहिं णाहु संघट्टइ वहु उम्मायपुलएण विसट्टइ।
चवइ रमणु रइहरि सिज्जंतइं आसि वे वि भणु किं लज्जंतइं।

घत्ता—कीलिवि पवरे हिमगिरिसिहरे चलियइं उज्झायासहो ॥
तुह सिरिहरहो भरहेसरहो पुप्फयंतकइवासहो[12] ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वज्जजंघसिरिमइसमागमो णाम चउवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २४ ॥

॥ संधि ॥ २४ ॥

३ P केसगाहेण. ४ BP णिक्कावइ. ५ P मउ जि. ६ M महु मेल्लहि दर; BP लहु मेल्लहि दर. ७ B कर. ८ P °जुयलु. ९ MBP णियवयण°. १० M सोणीयलु हुत्तउ; P सोणीयलहुत्तइ. ११ MBP करहिं दिट्ठि. १२ MP °कयवासहो; T records a *p* पुप्फयंतरइवासहो इति पाठे चन्द्रादित्यदीप्तिस्थानकात्.

13 °हुत्तउ °अभिमुखम्.

XXV

अणुदिणु दंसणेण संभासणेण दाणसंगवी[1]सासें ॥
[2]पिउभाउग्गमणे रमणीरमणे रमइ विसेसविल[3]सें ॥ ध्रुवकं ॥

I

पप्फुल्लपोमपहसियमुहाहं कल्लाणण्हाणपुज्जारुहाहं ।
मउमणियमम्मणुल्लाविराहं [4]उरुउररुहजुयलालियकराहं ।
अवरुंडणपसरियभु[5]यवलाहं मुहकंठ[6]मूलि चुंबणर[7]याहं ।
रइजलरेल्लियसयणोयराहं घियकेसहं महुपीयाहराहं ।
कयपणयको[8]वसंभाविराहं लीलाकडक्खविक्खेविराहं ।
पविजंघसिरीमइवहुवराहं कीलंतहं गयबहुवासराहं ।
रूवें सोहग्गें अ[9]हुईय हिमकिरणकंति [10]कुलिसयरधीय ।
सिरिमइ[11]वरलहुईसस [12]मयच्छि णं वि[13]कमलकर सयमेव लच्छि ।
णामेणाणुंधरि सोक्खहेउ णियणंदणु णं सो कामएउ ।
[14]लच्छीमइदेवीगब्भजाउ परि[15]णामिउ राएं अमियतेउ ।

घत्ता—तणय वसुंधरहि घरभरधरहि छज्जइ तहु करि लग्गी ॥
कुलउत्तहु हिरि व कण्हहु सिरि व दिहि व रिसिहि आवग्गी ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

उन्नतातिमनुमात्रपात्रता भाति भद्र भरतस्य भूतले ।
काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

GK do not give it.

1. १ MBP °वीमासहिं. २ MBP पिय°. ३ MBP °विलासहिं. ४ MBP उरि उररुह°; K उरउररुह°. ५ MBP °भुयलयाह°. ६ MB °मूलु. ७ B °रहाहं ८ MBP °कोवसमाविराहं. ९ MBPT अहुतीय. १० B कुलिसेयवीय. ११ MBPK °वइ°. १२ MB मियच्छि. १३ MP विगयकमल, B विकमलकल. १४ MBP लच्छीमइदेविहि गब्भि जाउ. १५ MBP परिणाविउ.

---

1. 6 *a* सयणोयराह स्वजनोत्कराणां स्वजनसमूहानाम्; *b* महुपीयाहराहं मधुनोपलक्षितः पीतोऽधरो ययोः. 8 *a* पविजघ° वज्रजंघः. 9 *a* अहुईय अद्वितीया; *b* कुलिसयरधीय वज्रबाहुपुत्री. 12 *b* अमियतेउ अमिततेजाः नाम श्रीमत्या भ्राता. 14 आवग्गी आवल्गिता.

2

अण्णहिं दिणि दिण्ण पयाणभेरि दससु वि दिसासु थरहरिय वेरि ।
णरणाहें करिकरदीहबाहु णियणयरहु पेसिउ वज्जबाहु ।
सहुं सुण्हइ सहुं णियतणुरुहेण सहुं सकलत्तें ससहरमुहेण ।
आउच्छिवि इट्ठ विसिट्ठ बंधु संचलिउ सुयणु चंदक्कविंधु ।
उप्पलखेडाहिउ चमुसमेउ अम्मणु अंचहुं णीसरिउ राउ ।
हरिखुरधूलीधूसरिउ सग्गु छत्तहिं छाइउ दिसिविदिसमग्गु ।
पहरणविप्फुरणहिं जिगिजिगंतु चउपासहिं दीसइ महिदियंतु ।
गयमयजलधारहिं भरइ तल्लु हयलालइ हुउ चिक्खल्लु खोल्लु ।
गुरुयणविओयतावें चुयाइं पुत्तियहि पुंसेप्पिणु अंसुयाइं ।
सह कामिणीहिं पंकयमुहीइ पंडिय संपेसिवि समउ ताइ ।
आसण्णपंथि सुंदरपएसि सरसीमारामसिरीणिवासि ।
पेच्छिवि परिपुच्छिवि सयणविंदु णियभवणहु पल्लट्टउ णरिंदु ।
घत्ता—इयरु वि जंतु पहे भल्लइ दियहे उप्पलखेडु पइट्ठउ ॥
पुरयणपरियणहिं कयतोरणहिं मंगलसेसहिं दिट्ठउ ॥ २ ॥

3

पिउघरि णं रइरंजियउ मारु सहुं वहुयइ सुहुं अच्छइ कुमारु ।
लक्खणवंजणहिं पसाहियाइं जमलइं पण्णासेक्काहियाइं ।
वरतणयहिं जणियइं सिरिमईइ सुललियकव्वाइं व कइमईइ ।
एक्कहिं दिणि राणउ वज्जबाहु आवच्छइ सुहलीलंवुबाहु ।
सउहइ सेहीरासणणिसण्णु तां कालीयरवरकिरणवण्णु ।
णहयलि अवलोइउ सरयमेहु णं विहिणा णिम्मिउं दिव्वुं गेहु ।

2. १ MBPK °धूलिइ धूसरिउ. २ MBP दिसिविदिसि°. ३ M °भारहिं. ४ MBP चिक्खल्लु. ५ K °णिवेसि. ६ MBP पल्लट्टिउ. ७ MBP उप्पलखेडि.

3. १ MB °रंजियकुमारु. २ MBP °वंजणहिं. ३ K सुइसीलंवु°. ४ MBP सउहयलइ. ५ MBT सीहासण°; P सीहासणि. ६ MBP ता तें कालीयरकिरण°. ७ MBP दिव्वगेहु.

2. 5 *b* अम्मणु इत्यादि—कियन्मात्रमार्गवोलापनं कर्तुं निःसृतः. 7 *b* महीदियंतु पृथिव्या दिगन्तः. 8 *a* तल्लु क्षुद्रसरः.

3. 1 *b* कुमारु पृथिव्यां कामः. 5 *a* सेहीरासण° सिंहासनम्; कालीयर° चन्द्रः.

उत्तुंगसिहिरसुरहरसमाणु पुणरवि सो दिट्ठु विलीयमाणु ।
चिंतइ पहु गउ वारिहरु जेम जायसमि पलयहु हउं मि तेम ।
जीविउ धणु पुत्तु कलत्तु वासु होसइ थिरु घणसंकासु कासु ।
इय भणिवि तेण परणरवुलंघु कुलसिरिहि समप्पिउ वज्जजंघु ।
सहु सुयसुएहिं सुयबहुसुएहिं अवरेहिं मि रायहिं थिरभुएहिं ।
जिणदिक्ख लेवि कउ कम्ममोक्खु तेणाव्भाइउ तं परमसोक्खु ।
रच्छाहिंडियसुरसुंदरीहि एत्तहि वि पुंडरीकिणिपुरीहि ।
घत्ता—जा सो चक्कवइ सुहबद्धरइ अच्छइ महुलिहमाणिउ ॥
ता णिसि मिलियदलु सुरहिउं कमलु उववणवालें आणिउं ॥ ३ ॥

4

जोइउ णरणाहें लेवि णलिणु को किर ण णियइ गोमिणिहि भवणु ।
उग्घाडइ तं सो रमणराइ लच्छीमुहदंसणि कामु णाइं ।
तं वारवार चप्पिवि करेण विहडियउ कमलु सूरेण तेण ।
पुणु पुणु लीलइ कीलंतएण एक्केक्कु पत्तु अवणंतएण ।
इच्छिउ रायं खरदंडणासु खरदंडणासु तहु गुणविसेसु ।
ववगयमलदलवलयंतरालि अवलोइउ अलि केसररयालि ।
सररुहकरंडि णिम्मुक्कजीउ णं इंदणीलमणि णियवि राउ ।
भासइ हे मामि सिलीमुहेण करिकण्णझडप्पणु सहिउ एण ।
दाणुल्लि कवोलि घुलंतएण संपत्तउ दुक्खु रडंतएण ।
घत्ता—दिसहिं समुल्ललइ लोलइ वलइ रुद्धउ काहिं पसरइ करु ॥
णिसि तमपिहियमुहे पत्थंबुरुहे गंधलोलु मुउ महुयरु ॥ ४ ॥

८ MBP °सिहरु. ९ MBP सो पुणरवि. १० MBP होहइ. ११ MBP पुंडरिकिणि°. १२ MP जो.
4. १ M णडिणु. २ MBP °दसणकामु. ३ MBP णिम्मुक्कु जीउ. ४ MBP इंदणीलु मणि. ५ MBPK घुलंतएण. ६ M संपत्तु दुक्खु करदंडएण; MP संपत्तु दुक्खु करडंतएण. ७ BP समुल्लसइ. ८ MBP मुउ.

11 *a* सुय सुएहिं पुत्राणां पुत्रैः; सुय बहु सुएहिं श्रुतबहुश्रुतैः अधीतागमैः.
4. 2 *a* उग्घाडइ विकासयति; रमणराइ क्रीडानुरागी. 4 *b* अवणंतएण त्रोटयता. 5 *a* खर-दंडणासु कमलम्; *b* खरदंडणासु तीव्रदण्डनाशः तस्य गुणविशेषः 8 *a* मामि हे सखि.

5

आरोहणबंधंणताडणाइं अंकुसखयाइं कइवेयणाइं ।
गणियारिफासवसमागएण भणु किं ण विहुरु विसहिउं गएण ।
रसलालसु मासकणावलुद्धु परिधावमाणु संमुहउं मुद्धु ।
सरिविउलविमलजलि कीलमाणु धीवरगलेण गलि भिण्णु मीणु ।
संगीयगोरिगयचित्तसोत्तु णउ पेक्खइ संमुहुं सरु सरंतु ।
णउ पेक्खइ विसयासाइ दमिउं चउदिसँहिं वि वग्गुरवेढु भमिउं ।
प्राएं संप्राविउ प्राणणिहणु वणि वाहें विद्धउं हरिणमिहुणु ।
पवसियमहिलंसुयहँतसिहेण तिडितिडियतिडिक्कारवणिहेण ।
वेच्छिँल्लकुसुमसमवण्णएण दीवुच्छवि देहलिदिण्णएण ।
रूवरयपयंगहं कयखएण णं भासिउ भावइ दीवएण ।
एमेव कयंताणणि पडंति मोहंध सयल सहि खयहु जंति ।
एक्केक्किंदियवसमुवगयाहं एवडु दुक्खु तेहिं जंतुयाहं ।
असँरियपंचक्खरसामिसाहं चक्खियपंचक्खरसामिसाहं ।
कंपावियदसदिसिवहरसाहं अक्खवि तं किं अम्हारिसाहं ।

घत्ता—इय संभरिवि मणे आहूउ खणे अमियतेउ णवसंसिउ ॥
तेण समायएण जुवरायएण जणणु सिरेण णमंसिउ ॥ ५ ॥

5. १ MBP °ताडणबंधणाइ. २ MBP कय°. ३ B मुद्ध. ४ MBP °दिसहिं वग्गुरावेढु. ५ MBP पावें संपाइउ पाण°. ६ MBPK हय°. ७ MBP कंकेल्लिकुसुम°, T विच्छिल्ल कोरण्टकः. ८ M रूवयरपयरंगहं; BP रूवयरपयंगहं. ९ MBP जहिं. १० M असारिसपच°; T असरिय°. ११ MBK दस-दिस°; T दसादिसि°. १२ MBP अक्खमि. १३ MBP णिव°.

5. 1 *b* °खयाइं° क्षतानि. 2 *a* गणियारि° हस्तिनी. 3 *a* मासकण° मांसखण्डम्. 7 *a* प्राएं प्रायः; णिहणु विनाशः. 8 *b* °रवणिहेण °शब्दव्याजेन. 9 *a* वेच्छिल्लकुसुमसमवण्णएण कोरण्टक-पुष्पवत्पीतवर्णेन. 10 *b* भावइ प्रतिभासते. 13 *a* असरियपंचक्खरसामिसाहं न स्मृता पञ्चाक्षरस्वामिनां पञ्चपरमेष्ठिनां सा लक्ष्मीर्यैस्तेषाम्; *b* चक्खियपंचक्खरसामिसाहं आस्वादितं पञ्चानामक्षाणामिन्द्रियाणा रसो रतिसुखं तदेवामिषं यैः. 14 *a* कंपावियदसदिसिवहरसाहं कम्पिता भयं नीता दशदिक्पथा मार्गाः रसा च भूमिर्यैस्तेषाम्.

6

रायण भणिउं भो भो कुमार घरि धरणिभारु धं[1]उरेयधीर ।
कलिकलुसपंकु तवहुयवहेण हउं सोसे[2]मि कंपियसयमहेण ।
तुहुं देहि कुलक्कमभरहु खंधु ता चवइ तणउ सो मयरचिंधु ।
मइं पहणेवउ परमायरेण तमणियरु व बालदिवायरेण ।
कामिणि मेइ[3]णि वि जगेक्कराय पइं भुत्ती भुंजमि केम ताय ।
तुह पयपंकयरयचंचरीउ कूरारिलुलाययपुंडरीउ ।
जिह लच्छीहरु तिह पुंडरीउ आसणु अ[4]लिवहि सपुंडरीउ ।
महु तणउ तणउ सो पुंडरीउ इह करउ रज्जु [5]णिवपुंडरीउ ।
हउं तुहुं मि बे वि साहहुं परत्तु तं णिसुणिवि राएं तं जि उत्तु ।
घत्ता—तं[6] सिसु ससिसरिसु जयकयहरिसु महिणाहें सोमालउ ॥
रज्जि परिट्ठविउ णरवरणविउ पुत्तु पुत्तु पय पालउ ॥ ६ ॥

7

प[1]रिसेसियमत्तमहागएण प[2]रिसेसियचलहिंसियहएण ।
परिसेसियकंचणसंदणेण परिसेसियभडवरणं[3]दणेण ।
परिसेसियबहुदेसंतरेण परिसेसियपउरंतेउरेण ।
परिसेसियसयलवसुंधरेण जायावि देवें चक्केसरेण ।
जसहरलीलहु गणहरहु पासि पव्वज्ज लइय गिरिकुहरवासि ।
दिज्जंति ण इच्छिय पुहइ जेंण[4] सह अमियतेयणामेण तेण ।
उच्चारियजिणवरथुइमुहाहं सहसु जि वयमासिउ तणुरुहाहं ।
पव्वइ[5]या मुणिमयजाणियाहं सह सट्ठिसहस रायाणियाहं ।

6. १ MBPK धोरेय°. २ K सोसवि. ३ M मेइणि जगि एक्क°, BP मेइणि व जगेक्क°. ४ MBPT अलवहि. ५ MBP णिव°. ६ MBP तो.

7. १ K adds this foot in the margin. २ K omits this foot. ३ M णंदरेण, P °दंसणेण, but records a *p* °णदणेण. ४ M तेण. ५ MBP पव्वइयइं.

---

6. 1 *b* धउरेय° धुरि साधुः. 4 *a* पहणेवउं परित्याज्यम्. 6 *b* लुलायय° महिषः; °पुंडरीउ व्याघ्रः. 7 *b* अलिवहि देहि, सपुंडरीउ सच्छत्रम्. 10 सोमालउ कोमल,. 11 पय पालय प्रजाः पालय.

7. 7 *b* वयमासिउ व्रतं गृहीतवान्.

दिक्खंकियाइं लुंचेवि केस णाणाणिवाहं सहसाइं वीस ।
इय रायं किउ णिक्खवणु जाम संपत्त विलासिणि तहिं जि ताम ।

घत्ता—पंडिय तवचरणु दुकियहरणु लेवि थक्क णियजोग्गउ ॥
किउ मणु अप्पवसु कंदप्पवसु होंतउ खंतिइ भग्गउ ॥ ७ ॥

8

णिरुद्धयं णिराइणा समाणसं विराइणा ।
विमुक्कओ सवासओ सभूसणो सवासओ ।
समस्सिओ तवासओ लुओ कयंतवासओ ।
णिवारिओ कसायओ समीहिओ कसायओ ।
मईहरा पिसायओ जिओ पहुल्लसायओ ।
चलेहिं जाण साहिया थिरेहिं जाण साहिया ।
दढं दिही हणंति मा परज्जिया छुहा तिसा ।
सरंतु सो वसी अयं सहेइ माहसीययं ।
विइण्णवाणरीडरं भरंतरुक्खकोडरं ।
णियाहिदेहकंचुयं घणागमे वि कं चुयं ।
महीहरे भयालए हुयम्मि गिण्हयालए ।
रविस्स संमुहो ठिओ तवेइ मोक्खपंथिओ ।
अहिण्णभूतणग्गयं सबाहिरंतणग्गयं ।
महाखले वि सामिणं णमंसिऊण सामिणं ।

६ P कंदप्पु वसु.

8. १ T ı·मुक्कणग्गवासओ and adds सवासउ इति पाठे निजगृहमित्यर्थः. २ MBP समाहिओ. ३ P कसाईओ. ४ MT पिहुल्ल°. ५ MB दिहि; P दिट्ट. ६ GK यय but gloss अजम्. ७ MBPK गिंभयालए. ८ M संमुहे. ९ MBP थिओ. १० MBP अभिण्ण°.

8. 1 *a* णिराइणा नृराजेन चक्रवर्तिना; *b* विराइणा वीतरागेण. 2 *a* सवासओ स्वगृहम्, *b* सवासओ सवस्त्रम्. 3 *a* तवासओ तपआश्रवम्, *b* कयंतवासओ कृतान्तपाशः. 4 *b* कसायओ क· परमात्मा तस्य स्वादोऽनुभवः. 5 *b* पहुल्लसायओ पुष्पबाणः कामः. 6 *a* चलेहिं चञ्चलचित्तैः; *b* थिरेहिं जाण साहिया स्थिरचित्तैः परीषहेभ्योऽक्षुभितचित्तैः जानीहि साधिता निर्जिता. 8 *a* अय अज जिनम्; *b* माहसीययं माघमासे शीतम. 10 *a* णियाहिदेहकचुयं प्रवाहितसर्पकम्, *b* कं चुयं पतितं जलम्. 13 *a* अहिण्णभूतणग्गय अखण्डितभूमितृणाग्रम्. 14 *a* महाखले वि सामिणं महाखलानामप्युपशामकम्.

तओ वसुंधरीसुया अणुंधरी ससासुया[11] ।
धरेवि पुंडरीययं सिरि[12] व्व पुंडरीययं ।
पईविओयकालिया अचंदिम व्व कालिया ।
समंदिरं समाइया अमेयतेयमाइया ।

घत्ता—सुंयरिवि[13] णिययवइ सा हंसगइ घिवइ सरीरु महित्थले[14] ॥
णयणंजणमइलु कुंकुमकविलु अंसुपवाहु थणत्थले ॥ ८ ॥

9

पुणु सोउ मुएप्पिणु हसियचंदु जोइउ णत्तियवयणारविंदु ।
घरमंतिमंतणिम्मलमईइ संचिंतिउ मणि लच्छीमईइ ।
णिज्झइ दवग्गि वणि मारुएण णिज्जीव णाव वेणि ताराएण ।
असहायहु कासु वि णत्थि सिद्धि चिंतेवी पढम सहायरिद्धि ।
जो धरिउ भारु णाहें विसालु तं वहइ केम अव्वत्तु बालु ।
जं धवलु धुरंधरु धीरु धरइ तहि भरिण व वच्छु ण पउ वि सरइ ।
गंधव्वणयररायहु सुवाय मंदरमालिहि सुंदरिहि जाय ।
चिंतागइ मणगइ खयरराय देवीइ भणिय ते बे वि भाय ।
इहु लिहिउं लेहु मइं कउं मणम्मि सामुग्गइ णिहिउं सलंछणम्मि ।
जाइवि वररमणीदुल्लहासु णिक्खिवहु सिरीमइवल्लहासु ।
णिसुणिवि अम्महि कम णवेवि पाहुडु लेविउं आहरणु लेवि ।
गय ते णहेण कंटइयदेह पयजुयणेहीराउणियमेह ।

घत्ता—खणि मणपवणगइ खयराहिवइ उप्पलखेडु[11] पराइय ॥
वज्जजंघणिवेण इच्छियसिवेण ते पणवंत पलोइय ॥ ९ ॥

११ K ससासुया but corrects it to सुमासुया. १२ P सरि व्व. १३ MBP सुमरिवि; K सुंयरिवि. १४ MP महीयले, B महयले.

9. १ MBP °मंतिमत°, K °मते मंत°. २ K जलि. ३ MBPT अबुहसु. ४ B ° णयरे रायहु. ५ MBP लेहु लिहिउ. ६ M कय. ७ BP लिहिउ. ८ MBP णिक्खेवहु सिरिमइ°. ९ MBP तं णिसुणिवि अवहियवयणु बे वि. १० MBP चेलिउ. ११ MBP उप्पलु खेडु.

15 *b* ससासुया श्वश्रूसहिता. 17 *b* कालिया रात्रिः. 18 *b* अमेयतेयमाइया अमृततेजोमातृका.

9. 1 *b* °णत्तिय° पौत्रः. 3 *b* वणि जले; ताराएण कर्णधारेण. 5 *b* अव्वत्तु अप्रगल्भः. 9 *b* सामुग्गइ करण्डके; सलंछणम्मि मुद्रायुक्ते. 12 *b* °णेहीर° कुङ्कुमम्.

10

तहु तेहिँ समप्पिउ मणिकरंडु　　उग्घाडिउ तेणुवरिल्लखंडु ।
उव्वेढिवि वाइउ झत्ति लेहु　　जिह जाउँ जोइ महिणाहणाहु ।
जिह दिज्जंते चि परिहरिवि भूमि　　हुउ अमियतेउ तस्साणुगामि ।
जिह पुंडरीयसिरि बद्धु पट्टु　　मेल्लेप्पिणु णियजोवणमरट्टु ।
जिह लइय दिक्ख णवकामिणीहिँ　　जिह मंडलियहिँ मुक्कावणीहिँ ।
जिह तणुरुहेहिँ जिह पंडियाइ　　हयकामकोहविच्छड्डियाइ ।
गउ पइ जिह अवरु वि अमियतेउ　　तुहुं पालहि तेरउ भाइणेउ ।
जं जिह तं तिह लेहेण कहिउ　　ता सुहिणा सुहिहि चरित्तु महिउ ।
चंगउ किउ देवें मयणजूरु　　जं लइयउ तवु भवतिमिरसूरु ।
चंगउ किउ तासु तणुब्भवेण　　जं मउ संगहियउ णववएण ।

घत्ता—धण्णउ सो णिवइ परिहरिवि रइ अरिहु जेण मणि भाविउ ॥
णिहिघडदरिसियइ घडदासियइ महियइ को ण विहाविउ ॥ १० ॥

11

इय भणिवि तुरिउ संचलिउ राउ　　दिसिगयजत्ताभेरीणिणाउ ।
सव्वत्थ रहेहिँ ण जाहुं जाइ　　जंपाणु खलइ मायंगु थाइ ।
संचारु ण लब्भइ हयवरेहिँ　　जलु थलु संदाणिउं किंकरेहिँ ।
छत्तइं णं कुसुमइं वियसियाइं　　सिरिमइमुहससहरपहसियाइं ।
चमरइं चलंति कामिणिकरेसु　　णं हंसइं रत्तिंदीवरेसु ।
दीसंति सुवंसारूढकेउ　　णावइ सुपुत्तकुलकित्तिहेउ ।

10. १ MBP °णुवरिल्लु. १ MBPT उव्वेल्लिवि, K उव्वेढवि. ३ K तेण लेहु. ५ MBP जोइ जाउ. ५ MBP दिजती. ६ M मियउ तेउ. ७ B बद्ध पट्टु. ८ MBP आमेल्लेप्पिणु जोव्वणु मरट्टु. ९ MBP णवकामिणीहिं. १० MP तउ; B तव. ११ MBP वउ; K वउ but corrects it to मउ. १२ MBP घरदासियइ महिए.

11. १ MBP कुमुयइं.

---

10. 2 *a* उव्वेढिवि प्रमार्य, *b* महिणाहणाहु चक्री. 6 *b* °विच्छड्डिया समूहः. 10 *b* णव-वएण यौवनस्थेन. 12 विहाविउ विखण्डीकृतो बाधितः.

11. 4 *b* °पहसियाइं प्रभाशुभ्राणि.

लीलाइ मिलिय मंडलिय जंति   मइवरु सुरगुरुसारिच्छु मंति ।
आणंदु पुरोहिउ दिव्वदिट्ठि   धणवइसमाणु धणमित्तु सेट्ठि ।
बलवइ वि अकंपणु कंपियारि   संचलियउ चलकरवालधारि ।
णिवसंतगामपुरपट्टणेहिं   वणु संपाइय कइवयदिणेहिं ।

घत्ता—चवलरहेल्लिचलु फुल्लियकमलु तहिं सरवरु अवलोइउ ॥
णं रायहु महिए आयहु सहिए अग्घवत्तु उच्चाइउ ॥ ११ ॥

12

करिकरडगलियमयबिंदुमलिणु   मयमिहुणणिसेवियविउलपुलिणु ।
मयलंछणयरकरदलियणलिणु   मयमत्तभमरगइरइयखलिणु ।
मयगयदलवाट्टियसिरिणिकेउ   मयवइमुहजीहाविलिहियाउ ।
तहु तीरि विमुक्कउ सिमिरु जाम   सहुं सायरसेणें सूरि ताम ।
चिंतंतु भोज्जभायणपरिक्ख   रिसि परिभमंतु कंतारभिक्ख ।
दमवरु णामें पुहईसरासु   संपत्तउ दूसावासु तासु ।
आवंत णियवि मउलियकरेण   सिरिमइपविजंघवइवरेण ।
ठाभणिय बे वि उवसमवसेण   थिय चारणमुणिविणयंकुसेण ।

घत्ता—सुरसिरकुसुमरयरयमुक्करयमहुयरपंतिहिं कालिउं ॥
चंदयरुज्जलेण फासुयजलेण पयजुयलउं पक्खालिउं ॥ १२ ॥

२ MB धणयत्तु. ३ K सचल्लिउ. ४ MBP सपाइउ. ५ M रहिल्लु चलु; B°रहिल्लिचलु; P रहिल्लचलु.

12. १ MBP °लछणकर°. २ MBP मयरत्त° ३ K मयगल°. ४ MBP सिबिरु. ५ MBP भोयभायण°. ६ BP परिभवतु. ७ B दमवर. ८ BP आवंतु. ९ MBP णिएवि. १० MP चारणगय.

11 °रहल्लि° लहर्य कल्लोलाः. 12 सहिए सख्या.

12 2 *a* मयलछणयरे त्यादि–मृगलाञ्छनं चन्द्रं करोतीति मृगलाञ्छनकर आदित्यः; तत्करैर्दलितं नलिन यत्र 3 *a* °दलवट्टिय° चूर्णम्. सिरिणिकेउ पद्मम् 6 *b* दूसावासु पटगृहमयं शिबिरम्. 9 सुरे-त्यादि–सुराणां देवाणां शिरःकुसुमरजसि रताः मुक्तवेगा निश्चला ये मधुकरास्तेषां पङ्क्तिभिः.

13

वंदेप्पिणु भावें चरणकमलु   उच्चासणि णिहियउ साहुजमलु ।
तं दीसइ भोयणु भुंजमाणु   सुरसेसु वि णिरसेसु वि समाणु ।
हत्थु वि उड्डंतुं ण होइ दीणु   लेंतु वि पाणइं णं वि धम्महीणु ।
णिक्कुरु बिक्कुरहु दिट्ठि देइ   णिण्णेहु वि दिण्णुं सणेहुं लेइ ।
तिम्मणु गेण्हंतु वि बंभयारि   रसु जाणंतउ रसणिव्वियारि ।
णित्थद्धे लइयउ थद्धु दहिउ   जगमहियं पीयउ सीउं महिउ ।
मणसच्छहु ढोइउ सच्छ वारि   इय भुंत्तु भोज्जु बहुदोसहारि ।
उच्चाइयथिरदीहरभुएण   आसीस दिण्ण तहु मुणिजुएण ।
उवविट्ठ णिहित्तइं आसणाइं   विहियइं पयपणमणपेसणाइं ।
पुणु दीहु वेल्लु जिणधम्मु सुणिवि   जंपिउ णिवेण णियसीसु धुणिवि ।
घत्ता—रूवइं मुणिवरहं संजमधरहं आसि कहिं मि मइं दिट्ठइं ॥
णवर ण संभरामि हा किं करमि विहिं[13] लोयणइं सुइट्ठइं ॥ १३ ॥

14

तो भासिउं विहसिवि मइवरेण   तुह तणुरुह दमवर जलहिसेण ।
जमलहं पण्णासहं पच्छिमिल्लु   सुयजुयलु ण याणहि किं गहिल्लु ।
पत्थिव जइवर जाणंति सव्वु   ता चवइ णिवइ परिगलियगव्वु ।
गुणकारणु किं थेरत्तु होइ   जरेणिवु ण महुरत्तणहु जाइ ।
मद्दु महुरुं जि दीसइ सयलुं कालु   तवुं तणुरुहेहिं मइं मोहजालु ।
आयरियउ किं परिणयवएण   कम्मु जि बलवंतउ किं वएण ।
मद्दु दमवर दमियाणंगलील   गयभवइं समासहि सामिसाल ।
अण्णु वि पयहि तुह माउयाहि   जइपुंगव चक्काहिवसुयाहि ।

13. १ MBP सरसेसु णीरसेसु वि. २ P उड्डुंतु. ३ P णउ. ४ M दिण्ण. ५ K सिणेहु. ६ MBP णिरु णिव्वियारि. ७ MBP णित्थड्ढें ८ MBP थड्ढु. ९ MBP जगि महिएं. १० MBP सीय. ११ MBP सच्छु. १२ MBP भुत्तभोज्जु. १३ MBP विहिलोयणह.

14. १ MBP तो. २ B जइ णिंबु; P जरु णिंबु. ३ P महुर. ४ M सयल. ५ MBP तउ. ६ MBP मह. ७ MBP किह परिणयवसेण, T परिणतवयसा. ८ MP °भवहिं.

---

13. 5 तिम्मणु व्यञ्जनविशेषः स्त्रीचित्तं च. 7 *b* महिउ तक्रम्.

14. 1 *b* जलहिसेण सागरसेनः. 5 *b* मइ मयि. 6 *a* परिणयवएण परिणतवयसा.

आणंदपुरोहियमइवराहं घणमित्ताकंपणकिंकराहं ।
चिरजम्मु कहसु महुं गरुउ णेहु किं कारणु ता वज्जरइ साहु ।
रिसिणा पउत्तु परिचत्तणाणु जयवम्मु णाम बंधिवि[11] णियाणु ।
जाओ सि बप्प तुहुं खयरणाहु णामेण महाबलु बलसणाहु ।
घत्ता—चिरु रुप्पयगिरिहि अलयाउरिहि सइंबुद्धें संबोहिउ ॥
मुउ खयराहिवइ सुविसुद्धमइ सीलगुणेहिं पसाहिउ ॥ १४ ॥

15

जाओ सि देवु अहिलसिउ काउं ईसाणकप्पि ललियंगु णाउं ।
तहिं मरिवि भवंतरि एत्थु आउ तुहुं वज्जजंघु महं तणउ ताउ ।
पुणु कहइ साहु भवभावमुक्कु सुणि सिरिमइजम्मंतरचउक्कु ।
गहवइसुय धणसिरिसुयहरासु उवसग्गु करेप्पिणु मुणिवरासु ।
हूई दालिद्दिणि वणियधीय पिहियासवेण उवसमहु णीय ।
सा मइं सावयवउं किं पि लेवि हूई देवत्तणि तुज्झु देवि ।
णामेण सयंपह चविवि तेत्थु हूई णरणाहहु धूय एत्थु ।
सिरिमइ सइ सुंदरि मज्झु माय आयण्णहि भिच्चपवंचु ताय ।
जंबूदीवामरगिरिविदेहि पुरिमिल्लिइ गयणविलंबिमेहि ।
वच्छावइदेसि रुसा समिद्धु होंतउ णरवइ णामेण गिद्धु ।
गउ णरयहु दससायरसमाउ अणुहुंजिवि पंकप्पहि वराउ ।
णियणयरणियडि णियवसुणिवासि हुउ वग्घु दिसागयकुसुमवासि ।
घत्ता—ता तहिं महिहरए लवलीहरए पीईवद्धणु[13] भासिउ ॥
उप्परि भायरहो समरायरहो जंतु राउ आवासिउ ॥ १५ ॥

९ M परचित्तणाणु. १० MBP अजवम्मु; K अजवम्मु but gloss जयवर्मा त्वं. ११ K बंधवि.

15. १ MBPK अहिलसिय. २ P कामु. ३ P णामु. ४ MBP एत्थ जाउ. ५ MBP महु. ६ MBP °मुक्क. ७ MBP °चउक्क. ८ MB सुहयरासु. ९ MB करेविणु. १० P दालिद्दिय. ११ P मुय. १२ BP रसासमिद्ध; GK note this as *p* in the margin : रसासमिद्धु इति पाठे पृथ्वीपरिपूर्णः; T रसासमिद्धु अतिकोपी रसासमृद्धो वा पृथ्वीपरिपूर्णः. १६ M पीईपद्दणु; BP पीईवद्दुणु.

11 *a* परिचत्तणाणु परित्यक्तज्ञानः.

15. 1 *a* काउ कामः.; 10 *a* रुसा कोपेन; समिद्धु ज्वलितः. 11 *b* वराउ वराकः. 12 *a* °वसुणिवासि धृतधनस्थाने. 41 समरायरहो संग्रामादरस्य.

16

तहिँ णिवसइ पहयरिणयरिणाहु जा तांवोलंबियलंबबाहु ।
चारणमुणि णहयलि ओयरंतु वणि चरियामग्गे पइसरंतु ।
गिरिवरविवरंतरसंठिएण मयमासाहारुक्कंठिएण ।
दिट्ठउ पुल्लि पिहियासवक्खु परमेसरु णिम्मलणाणचक्खु ।
संभरियजम्मु हउं मंदभाउ एत्थु जि चिरु होंतउ पुहइराउ ।
गउ सब्भहु पुणु अलियहि जाउ पसुमासें पोसमि काइं काउ ।
मणु जाणिवि मुणि वि समीउ आउ संबोहिउ साहिउ धम्मणाउ ।
थिउ संणासणि मृगु णिक्कसाउ गउ भिक्खहि भिक्खु महाणुभाउ ।
तो थाहि भणिवि महुरें सरेण पडिगाहिउ झत्ति चक्केसरेण ।
पक्खालिउ उमिकमजुगु जलेण अंचिउ पोमेण सकेसरेण ।
गुणवंतहु संतहु कयउ माणु तें तहु दिण्णउं आहारदाणु ।
तं पुच्छिउ इच्छिउ णियहिएहिं सेणावइमंतिपुरोहिएहिं ।
सो णाहं तेण दरिसियउ पुल्लि अइणा पत्तउ सुरवइसुहिल्लि ।
ईसाणि दिवायरु णाम तियसु अण्णु वि सुहुं पावइ किं ण सवसु ।
गउ महिवइ मोक्खहु खविवि कम्मु तिहिं तिण्णि समीहिवि दाणधम्मु ।

घत्ता— मुणिपयपोमरय कालेण मय चमुवइ मंति पुरोहिय ॥
कुरुभूमिहि मणुय हुय पीणभुय णाणाहरणहिं सोहिय ॥ १६ ॥

17

मुउ मंति कुरुहि गइ आउमाणि कणयाहु णाम कंचणविमाणि ।
उप्पण्णउ सुरु ईसाणसग्गि विप्फुरियविविहमाणिक्कमग्गि ।

16. १ K तिहि. २ G तारोलंबिय°. ३ P णिम्मलु. ४ MBP समरिउ जम्मु. ५ MBP सुब्भहु; T सब्भहु नरके. ६ MBP मिगु. ७ M तो ठाहु भणिवि; BP तो थाहु भणेवि; K भो थाहि भणिवि ८ M पुणु कमजुउ जलेण BP कमजुयलु णरेसरेण; T कमजुगु गरेण. ९ MBP इच्छिय. १० MBPT इल्लि ११ BPK सुरवर°. १२ BP तहिं.
17. १ MBP मुउ.

16. 1 *a* पहयरिणयरिणाहु प्रभकरांनाथः श्रीनिवर्धनः. 4 *a* पुल्लि व्याघ्रेण; पिहियासवक्खु पिहिताश्रवाख्य.. 6 *a* सब्भहु श्वभ्रं नरकम्. 7 *b* धम्मणाउ धर्मोपदेश.. 10 *a* सरेण जलेन. 13 *b* सुहिल्लि सुखपरंपरा. 15 *b* तिण्णि सेनापत्यादय..

हंसियइ वरभवणि पहंजणंकु जायउ पुरोहचरु गलियसंकु ।
सेणाणि पहायरु पहधरंति हुउ दिव्वदित्ति दीवियदियंति ।
चत्तारि वि णिच्चु जि विहियसेव देवंत्ति तुज्झु परिवारदेव ।
पइं चुइ पुणु हुया जेत्थु जेम आहासमि णिसुणहि तेत्थु तेम ।
सद्दूलदेउ सिरिमइहि उयरि सायरसेणो हुउ पुण्णपवरि ।
मइवरु मइवरु तुह मंति राय को पावइ एयहु तणिय छाय ।
हे नाह पहायरु मरिवि देउ अज्जवहि अकंपणु पुत्तु जाउ ।
सेणावइ तेरउ तिव्वतेउ पग्वलहु समुग्गउ धूमकेउ ।
कणयाहु तियसु चुउ कहिंहिं भणिउ सुयकित्तिअणंतमईहिं जणिउ ।
जो एहु बप्प सो दिण्णसुद्धि आणंदु पुरोहिउ विमलबुद्धि ।

घत्ता—अमरु पहंजणउ रंजियजणउ हंसियविमाणहु-आयउ ॥
दत्तयवणियहणा विग्गइयरइणा धणयत्तहि सुउ जायउ ॥ १७ ॥

18

धणमित्तु सट्टिकुलणलिणमित्तु किंकरु अहवा तुह परममित्तु ।
एयइं छह बद्धसिणेहयाइं तुम्हइं सग्गाउ समागयाइं ।
णरवइ चउ किंकर समरभीम सिरिमइ राणी मोहग्गसीम ।
णिसुणेवि भवावलि विम्हियाइं छ वि जिणवरविगुण चिंतिवि थियाइं ।
पुणु भणइ राउ भयवंत विमल सद्दूल कोल गोपुच्छ णउल ।
चत्तारि वि णरहं ण ओसरंति अच्छंति णिसण्ण ण वणि चरंति ।
णउ भक्खु लेंति णउ जलु पियंति णवियाणण तुह भासिउं सुणंति ।
किं कारणु कहहि मुणिंदचंद ता भणइ सूरि सुणि भो णरिंद ।

> MBP हंसियवर° ३ P चत्तारि जि णिच्चु वि ४ B देवत्तु. ५ MB सायरसेणु म हुउ P सायरसेणहो हुउ, K सायरसेण हुउ. ६ MBP कहहि

18. १ MBP विम्भियाइं २ MBP जिणवर°. ३ PT गोपुछ. ४ MBP भो मुणि.

---

17. 4 *a* पहधरंति प्रभाविमाने 9 *b* अज्जवहि आर्जवाराभ्याम. 10 *b* धूमकेउ वह्निः.

18. 5 *b* गोपुच्छ मर्कटः 7 *b* णवियाणण नमितानना .

इह देसि हत्थिणायउरि रम्मि   वणि सायरदत्तु विचित्तहम्मि।
तहु धण धणवइ सुउ उग्गसेणु   सो कामुउ कामिणिपायरेणु।
पहु कोट्ठागारि अइक्कमेवि   भत्तइं भग्गइं बलि मडु लेवि।
उववणेतु पणयसीमंतिणीहिं   बंधाविउ राएं णिययणीहिं।
मुउ कोहें जायउ एत्थु वग्घु   ओहच्छइ मइं मण्णिवि सलग्घु।
घत्ता—होंतउ सूयरउ चिरु माणरउ विजयणयरि वुड्ढिए किसु॥
महणंदें जणिउ अणंवइमुणिउ णिव वसंतसेणाहि सिसु॥ १८॥

19

हरिवाहणु णामें वूढमाणु   दप्पंधु समंदिरि कालमाणु।
णरणाहें णंदणु भणिउ एंव   माणेण परंमुहुं होंति देव।
तं णिसुणिवि धाइउ चवलु डिंभु   सिरि लग्गु सिलामउ भवणखंभु।
मुउ एत्थु एहु हयउ वराहु   पुणु कहइ साहु अवइंतमाहु।
उद्धुयधयमालापंचवण्णि   कइ आसि जम्मि णयरम्मि धण्णि।
वणिवरिण कुबेरें जणिउ पुत्तु   पणइणिहि सुदत्तहि णागदत्तु।
बहिणिहि विवाहु किज्जइ धणेण   भासिउ मायइ ता सा अणेण।
थंत्तिवि चामीयरु णियउ सव्वु   ता तहिं वि ताइ तहु गहिउ दव्वु।
सुउं मायारउ हुउ एत्थु एहु   वणि मंकडु माणुसमेत्तदेहु।
णायारि णिसुणि णिव पुव्वयालि   सुपइट्ठियपट्टणि तोरणालि।
होंतउ कंदुवि लोलुयउ णाम   दियवेहिं णवर रामाहिराम।
पारंभिउ जिणहरु पत्थिवेण   कारवहुं एण कारावएण।
घत्ता—जुण्णउं रायहरु तम्हाउ तरु लेवि वहइ पुरु परियणु॥
इट्ट विसट्ट जहि सहस त्ति तहिं कंदुइ पेच्छइ कंचणु॥ १९॥

५ MBP हत्थिणाउरि पुरम्मि. ६ BP वन्धाभरणइ. ७ MBP बालिमड. ८ MBP उवयतु T उवणेंत. ९ MB तुह अच्छइ. P हुउ अच्छइ. १० MBP वुद्धीए ११ MBP मह णंदें १२ MBP जणवय°.

19. १ MBP धाविउ चवल. २ B अवइत्तमाहु. ३ MBP त गहिउ. ४ MBPK सुउ. ५ MBP मक्कडु माणुसु. ६ MBP लोलुउ ७ M तुम्हाउ भरु. ८ B विसिट्ट. ९ MB कदुउ, P कदुव

12 *b* णिययणीहिं वरत्रामि 13 *b* ओहच्छइ ऊर्ध्वं. स्थितः.

19. 5 *b* कइ वानरः 9 *a* मायारउ मायावी. 10 *a* णायारि नकुल. 11 *a* कंदुवि कांदविक., *b* रामाहिराम हे रामाभिराम वज्रजंघ. 12 *b* एण अनेन कांदविकेन. 13 तरु शीघ्रम्. 14 विसइ स्फुटिताः.

20

तोलेप्पिणु चलकरयलतुलाइ परियाणेप्पिणु वणिवरकलाइ।
दट्टउ चामीयरपूरियाउ बेहिं मिप्पिंडेहिं समारियाउ।
कइवयउ ण केण वि भावियाउ लहुं णियभवणहु णेवावियाउ।
कम्मंयरहु दिण्णउं सरसु भोज्जु लुद्ध वि दाणेणें करेइ कज्जु।
इय गंगहिउं कम्मु करेवि गुढु अण्णहिं दिणि मोहवसेण मूढु।
घरि तणउ थवेप्पिणु वियसियासु गउ गामंतरु तणुरुहहिं पासु।
एत्तहि पुत्तें पियगाण भिण्ण सोवण्ण इट्ट दारियहि दिण्ण।
तं लेंइ जाम सुवण्णयारु तां पेच्छइ पहुपिउणाम सारु।
ते गंपि पकंपियजीयएण जाणाविउ रायहु भीयएण।
भासिउ वम्मइ विसंतु सव्वु तं जायउ रायहु तणउं दव्वु।
धरणीसरकुलचिंधेण जडिय लोलुयगेहे णिवमुद्द पडिय।
परिरक्खियमाहिवमाणवेहि परभीयरेहिं णं दाणवेहिं।
सुउ बंधिवि कारागारि घित्तु तहिं अवसरि कहइ तहिं जि पत्तु।

घत्ता—णंदणु तेण हउ कह वि हु ण मउ दंडपहारहिं ताडिउ॥
परधणलोलुयउ सो लोलुयउ राउलेण विब्भाडिउ ॥२०॥

21

पुणु बहुदविणासाऊरिएण कहि गये भणेवि उंडूरिएण।
तुम्हइं बिण्णि वि महुं सत्त जाय पाहाणें चूरिवि णियय पाय।
मुउ लोहकसायमलेण मइलु इह हूयउ पेक्खु णरिंद णउलु।

20. १ MP बहि मिउपिंडेहिं. B बाहिमिपिंडेहि २ M कम्मरयह. ३ MBP दाणेण जि करइ ४ MBP गहिरउ ५ MBP ता. ६ MBP तो. ७ MBP त. ८ MBP लोलुय गेहि ९ T माहिव मा लक्ष्मीईना माहिव माहिना इति पाठे
21. १ MBP गउ २ MBP कुछूरिएण.

20. 2 b बहिं बाहे 6 a वियसियासु विकसितास्यः. 7 a पियगाण पितृजा. 12 माहिव° लक्ष्मीपती राजा.
21. 1 b उंडूरिएण कंदुकिना

णिसुणेप्पिणु महुमहुरक्खराइं सुयरेप्पिणु गय जम्मंतराइं ।
उवसंत वहंति ण भउ ण रोसु सुहझाणें अज्ज खवंति दोसु ।
पइं दिण्णु दाणु मज्झिउं इमेहिं कईकंठवग्घविसहरदमेहिं ।
बहुभोयभावमुइदाइणीहिं पग्गाउ वन्धु कुरुमेइणीहिं ।
अट्ठमइ जम्मि तुहुं जिणवरिंदु होसहि पयजुयणमियसुरिंदु ।
सिग्गिमइ होसइ सेयंसराउ पहिलउ जि दाणतित्थयरदेउ ।
सुरणरसुहाइं संपाविहिंति ए तुह सुहिं होइवि सिज्झिहिंति ।
संसारविहुरणिव्वेइएण जिणणाहधम्मअणुराइएण ।
कमकमलजमलवलइयसिरेण तं णिसुणिवि पणविय बहुवरेण ।
वंदिय मंतिहि सावयगणेण गय रिसि णहयर णहपंगणेण ।
संपत्ता दुरिएं वणयरत्तु संभासिवि चत्तारि वि णिरुत्तु ।
घत्ता—मगहत्थें ऽसिवि तहिं णिसि वसेवि सुरुग्गमि पहु णिग्गउ ॥
करिघंटासरहिं पसरियकरहिं भयभसमाविवियदिग्गउ ॥ २१ ॥

22

छणयंदु व णवकंतिइ पसण्णु दियहेहिं पुंडरिंकिणि पवण्णु ।
साणुधरि पइवयणिलयकुहिणि ओलोइय तेण णवंति बहिणि ।
पणमिय सासुय जामाउएण अविरयसणेहपसरियभुएण ।
आलिंगिउ राएं भाइणिज्जु अविउलु बालु पहसियमुहज्जु ।
मिलियउ लच्छीमइसिरिमईउ णं गंगाणइजउणाणईउ ।
णियबंधुहि संचिंतियसिवेण तहिं तेण वज्जजंघें णिवेण ।
सामित्तणगुणि संणिहिउ सामि मंनि वि किउ विउहणयाणुगामि ।

३ MBP °झाणेण ।ज ज खवहि ४ B कइकदुवग्घ°, P कइकोलवग्घ° ५ M बहुभेय° ६ MBP °दावणीहि. ७ MBP °णाविययणरिंदु ८ M दाणु तित्थु° ९ PK करकमल°. १० M मगहत्थें फासिवि तहिं णिसि णिवसेवि B मगहत्थें फासिवि तहिं वणि णिवसेवि P मगहत्थें फासिवि तहिं णिव सासिवि.

22 १ M णवकतिइ २ MBP अवलोइय ३ MBP पणविय ४ MBP जामाइएण ५ MBP °सिणेह° ६ MBP भाइणेज्जु ७ MBP अविउलु वि T अविलु इति पाठेऽप्ययमेवार्थः. ८ MBP ता णियबंधुहि चिंतिय° ९ MB विवुह°, P विवुहु

6 *b* °कंठ° सूकर

22 4 *b* मुहज्जु मुखाब्जम 7 *b* विउहणयाणुगामि विद्वनयानुगामिन .

णिरुवद्दउ णिवसावियउ देसु सुहि संमाणिय संचियउ कोसु।
वित्तीइ थलाइं णियंतियाइं[10] जोग्गइं दुग्गइं परिचिंतियाइं।
पडिवक्खु असेसु वि खयहु णीउ थिरु रज्जि थवेप्पिणु[11] पुंडरीउ।
अप्पणु[12] पुणु घरवत्ताइ लइउ महुं कंतइ उप्पलखेडु[13] अइउ।
सेहुं[14] भिच्चचउक्कें ससिमुहेण थिउ रज्जु करंतु सुही[15] सुहेण।
को एम ससयणहं देइ रिद्धि एवड्ड कासु सामत्थसिद्धि।

घत्ता—थिर परकज्जरय णियवंसधय सुपुरिस को णासंघइ॥
घणतमभरहरणें दित्तीयं[16] रणे पुप्फदंत को लंघइ॥ २२॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वज्जबाहुवज्जदंततवचरणकरणं
णाम पंचवीसमो परिच्छेओ समत्तो॥ २५॥
॥ संधि॥ २५॥

१० MP यतियाइ. ११ MBP समप्पिवि १२ BP अप्पुणु १३ MBP उप्पलु खेडु १४ B omits this foot. १५ MBP महामुहेण. १६ P दित्तीहरणें.

11 *b* अइउ आगतः. 13 *a* ससयणह स्वस्वजनस्य 14 णासघइ नाश्रयति.

XXVI

कामभोयसुहरसयमहो तहु वसुमइहि काइं वण्णिज्जइ ॥
जं जं चिंतइ किं पि मणे तं तं सयलु वि खणि संपज्जइ ॥ ध्रुवकं ॥

I

जक्खवपंको दढं वल्लहालिंगणं मालईमालिया कुंकुमालेवणं ।
उंचओ मंचओ चारुसेज्झायलं आवरोहारि सोम्हं थणाणं थलं ।
उण्हयं भोयणं तुप्पधागाहरं रत्तओ कंबलो छण्णरंधं घरं ।
पुव्वपुण्णेण सव्वं पि संजुत्तयं सीययालम्मि तेणेरिसं भुत्तयं ।
चंदणं चंदपाया पिया णेहली मल्लियादामयं तारहारावली ।
दाहिणो मंथरो मारुओ सीयलो रुक्खकीलाणिओ पल्लवो कोमलो ।
वल्लरीमंडवो पोमजुत्तो सरो वीयणंदोलणालीणओ सीयरो ।
थड्ढथड्ढं दहिं सीययं पाणियं उण्हयालम्मि तेणेरिसं माणियं ।
फुल्लियासाकयंबोहधूलीरओ मत्तमाऊरवंदस्स केयारओ ।
णीरधारासुयंतंबुवाहज्झुणी संगया सूहवा पासि सीमंतिणी ।
णिग्गलं मंदिरं णिक्कियं भूयलं धावमाणं रयालं पणालीजलं ।
इट्ठगोट्ठीविसिट्ठेहिं विण्णाययं दिव्वगंधव्वयं कव्वयं पाययं ।
विज्जुमालाफुरंतं णहं दिप्पहं तस्स महागमे तं पि सोक्खावहं ।
दीहरो कालओ जाव वोच्छिण्णओ गेहए धूवओ ताम से दिण्णओ ।

MBP gi e, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

घनधवलताश्रयाणामचलास्थितिकारिणा मुहुर्भ्रमताम ।
गणनैव नास्ति लोके अरतगुणानामराणा च ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. MBP उच्चओ २ M °सेज्जावल P सेज्जालयं ३ MBP सोण्ह ४ GK मारओ but gloss वायु . ५ MBP पोमपुण्णो ६ MB थड्ढथड्ढ P बद्धथट्ट ७ MBP सीयलं. ८ M रयाणं. ९ MBP वोलीणओ, T वोच्छिण्णओ.

---

1. 4 b आवरोहारि स्थूलोन्नत मनोज्ञ च सोम्ह उष्मसहितम् 9 b सीयरो शीकरो जललवाः, 11 b °माऊरवंदस्स केयारवो मयूरवृन्दस्य केकारव . 13 b रयाल सवेगम्.

सोत्तसंचारि धूमेण ताणं हओ दंपईणं खणेणेव जीओ गओ ।
कारणं मच्चुणो किं जणो कंखए होइ एत्थं सिरीसं पि आउक्खए ।

घत्ता—जंबूदीवसुरालयहो उत्तरकुरुहि रमणमणहारिहे ॥
मरिवि वहूवरु अवयरिउ उयरि अणिंदहु अज्जवणारिहे ॥ १ ॥

2

णवमासहिं गब्भहु णीसरियइं ताहं बिहिं वि संचियसुहचरियइं ।
उत्ताणियमुहाहं णिवसंतहं करकमलंगुलियाउ पियंतहं ।
सत्त सत्त दिण गय रंगंतहं पुणु वि पुणु वि उट्ठंतपडंतहं ।
सत्त खलिय पयवयणइं देंतहं अवरोप्परु दरकेलि करंतहं ।
पुणु सत्तहिं थिराइं संजायइं गयकुसलाइं परिप्फुडवायइं ।
अवरहिं सत्तहिं अलिणिहचिहुरइं णिहिलकलाकलावणिउणयरइं ।
अण्णहिं सत्तहिं दियहहिं पोढइं णवजोव्वणसिंगारारूढइं ।
ताइं तिगाउयतुंगसरीरइं वरबदरीहलमेत्ताहारइं ।
सो वि गासु गेण्हंति तिदिवसहिं इय भासिउं रिसीहिं हयहरिसहिं ।

घत्ता—जहिं चामीयरधरणियलु पाणिउं मिट्ठउं णाइं रसायणु ॥
मणिमयकप्पमहीरुहहिं थिउं रवि सत्तावीसं जोयणु ॥ २ ॥

3

जहिं अणियमोक्ख दहभेय रुक्ख ।
जणमणु हरंति चिंतियउ देंति ।

१० MBP खणेणेय. ११ B मत्थ पियाओखए P सत्थ सिरीसं पयाओ खए. १२ MBP °हारहो. १३ MBP °णारिहो

2\. १ B सचियसुहसुहचरियइं २ MBP पिय. T पय पदानि ३ MBP गइ°. ४ MPB वर-बदरीहल°, T कुवली बदरी. ५ B सुदिवसहि. ६ MBP भामियउ रिसिहिं. ७ MP थिउ B विउ. T विउ प्रच्छादितम्.

18 *b* सिरीस श्रामुखं पुष्पं वा. 19 °सुरालयहो मेरोः.

2\. 4 *a* पयवयणइं पदानि वचनानि च. *b* दरकेलि स्तोकक्रीडा. 8 *b* °कुवली° बदरी. 11 थिउ प्रच्छादितम्.

महसहिउं पेज्जु मज्जंगु मज्जु ।
तूरंगतूरु भूसंगु हारु ।
केऊरु दोरु वच्छंगु चीरु ।
गेहंगु गेहु णं सग्गमेहु ।
ढोयंति तुंग तरुभायणंग ।
भायणविहत्ति दित्तंगदित्ति ।
जे भोयणक्ख ते विविहभक्ख ।
भोयणसयाइं रसमंगयाइं ।
उवणेंति ताइं जगु महइ जाइं ।
पुण्णाय णाय वर पारियाय ।
णवमालियाउ अलियालियाउ ।
मालंगकुरुह ढोयंति णिरुह ।
हयतिमिरभावु दीवंगु दीवु ।

घत्ता—णिच्चु जि उच्छउ णिच्चु दिहि णिच्चु जि तगुतारुण्णु णवल्लउ ॥
भोयभूमिरुहमाणुसहं जं जं दीसइ तं तं भल्लउ ॥ ३ ॥

4

ण दुज्जणु दूसियसज्जणवासु ण खासु ण सोसु ण रोसु ण दोसु ।
ण छिंक ण जिंभणु णालसु दिट्ठु ण णिद्द ण णेत्तणिमीलणु सुट्ठु ।
ण रत्ति ण वासरु धंतु ण धम्मु ण इट्ठविओउ ण कुच्छिय कम्मु ।
अयालि ण मच्चु ण चिंत ण दीणु कयाइ कहिं पि सरीरु ण झीणु ।
पुंगीसविसग्गु ण मुत्तपवाहु ण लाल ण सिंभु ण पित्तु वि डाहु ।

3. १ MBPKT मयसहिउ. २ MBP भूसगु ३ MBP केऊर°. ४ M वन्छग. ५ MBP गेहंग. ६ MBP °विहित्ति. ७ MP भोयणेक्ख ८ P णिरुह. ९ MBP °भाउ १० MBP दीवगदीउ. ११ MBP उच्छउ. १२ MBP णिच्चु.

4. १ MB दुज्जण. २ MBP ण रोसु ण सोसु. ३ MBP णाल्स. ४ M णित्त°. ५ MBP वण्णु; T धण्णु. ६ MB मिच्चु. ७ MBP पुरीसुवसग्गु. ८MBP सिंभ. ९ MBP पित्त ण डाहु.

3. 3 *a* महसहिउ हर्षसहितम्; पेज्जु पातव्यम्. 8 *a* °विहत्ति विभक्ति भेदः 9 *a* भोयणक्ख भोजनाख्याः. 14 *b* णिरुह निर्दोषा .

4. 3 *a* धंतु ध्वान्तमन्धकारः पाप च.

ण रोउ णं[10] सोउ ण सेउ विसाउ किलेसु ण दासु ण को वि[11] वि राउं[12] ।
सुरूव[13] सलक्खण माणव दिव्व अगव्व सुभव्व समाण जि सव्व ।
मुहाउ विणीसिउ सासु सुयंधु कलेवरि वज्जसमट्ठियबंधु ।
तिपल्लपमाणु थिराउणिबंधु करीसँर[14] केसरि ते वि हु बंधु ।
ण चोरु ण मारि ण घोरुवसग्गु अहो कुरुभूमि विसेसइ सग्गु ।

घत्ता—बिहिं मि ताहं तहिं संठियहं एक्कमेक्करइरमणालुद्धहं ॥
भुंजंतहं[15] णाणासुहइं जाइ कालु दिढ[16]णेहणिबंधहं ॥ ४ ॥

5

तहिं जि पईहरथोरकर सद्दूलाइय[1] जाय णर ।
पत्तमोयभूमीभवेण वज्जजंघरायज्जवेण ।
समहिलेण अच्छंतएण सुर[2]तरुसिरि पेच्छंतएण ।
कालु वि भासियसम्मयहो कज्जेणेयँ[3] समागयहो ।
देवहु दीवियदिप्पहहो णिएवि विमाणु रविप्पहहो ।
पुव्वभवंतरु संभरिउ तं ललियंगदेवँ[4]चरिउ ।
थिउ णियमणि जा विंभइउ भवणिव्वेयभावलइउ ।
ता णहाउ चारणजुयलु ओयरिउ णहणिहु विमलु ।
पंतु तेण हक्कारियउ हरासणि वइसारियउ ।
सीसें सीसेण जि णँविउ[5] सविणयवायइ विण्णविउ ।
के तुम्हइं किं आगमणु किंउ[6] किं तुम्हहं उवरि मणु ।
महु वट्टइ णेहुल्लियउ ता गुरुमुणिणा बोल्लियउ ।

घत्ता—जइयहुं तुहुं अलयाउरिहि होंतउ आसि महाबलु राणउ ॥
तइयहुं हउं सइंबुद्धु तुह मंति मंतसब्भावबियाणउ ॥ ५ ॥

१० MBP ण सेउ ण सोउ. ११ MBP कोइ. १२ MBP add after this: मुहजि (B महुजि; P मुहजे) ण भीसिय भासिय (B चम्मु ण) राम, सुरेसहु बुद्धि विसेसियकाम (B °कम्म). १३ MBP सरुव. १४ M करीसरि. १५ MBPK भुंजतह. १६ MB दढणेहणिबद्धह.

5. १ MBP सद्दूलाइ वि. २ MBP सुरहरसिरि. ३ MBP कज्जें केण. ४ P °देउ. ५ P वि. ६ MBP किं अम्हहं तुम्हहं.

9 *a* सुयंधु सुगन्धः. 11 *b* विसेसइ अतिशेते.

5. 10 *a* सीसेण जि शिष्येणैव. 12 *a* णेहुल्लियउ स्नेहार्द्रम्.

6

णिद्दाइ भुत्तो सि　　　विवरंतचित्तो सि।
अइया कुवाईहिं　　　सिविणंतरे तीहिं।
हो बप्प दुग्गेज्झ　　　तइया मए तुज्झ।
संसारहाराइं　　　जिणवयणसाराइं।
सिद्धा रिसी जेहिं　　　दिण्णाइं तं तेहिं।
होऊण ललियंगु　　　मोत्तूण दिव्वंगु।
भीमारिणिण्णासि　　　भूमीसु हुओ सि।
मुणिदाणबुद्धीइ　　　बहुपुण्णसिद्धीइ।
तुहुं एत्थु जाओ सि　　　णाणेण णाओ सि[3]।
संबंधिओ होसि　　　किं णेय जाणासि।
खगवइविओएण　　　मइं मुक्कमोएण।
किउ घोरु तवयरणु　　　इंदियछिहाहरणु।
सोहम्मि सोहालु　　　हुउ देउ मणिचूलु।
सइंपहविमाणम्मि　　　दुक्खावसाणम्मि।
इह जंबुदीवम्मि　　　पुव्वे विदेहम्मि।
पुक्खलहि मेइणिहि　　　पुरिपुंडरिंकिणिहि।
पियसेणरायस्स　　　पसरंतरायस्स।
कयणाहणेहम्मि　　　सुंदरिहि देहम्मि।
जाओ मि हं भद्द　　　आलोविणीसद्द।
पीइंकरो णाम　　　सुणि रामिणीकाम।
अलिवलयणिहकेस　　　पीईसरो एस।
मज्झाणुओ होइ　　　दिव्वो महाजोइ।

6. १ MBP विवरंति. २ MBP हा बप्प. ३ MP add after this: णयणेहिं दिट्ठो सि, णेहं गओ तो सि ४ B °छुहा°; T °छिहा°. ५ MBP आलावणी°. ६ MBP पीईकरो. ७ MBP कामिणी°; T रामिणी°. ८ P ईस.

---

6. 12 *b* °छिहा° स्पृहा वाञ्छा. 19 *b* आलाविणीसइ वीणासदृशशब्दः. 20 रामिणी° स्त्री.

घत्ता—णिच्चं चिय णेहाउलहो णिग्गय बिण्णि वि णियघरवासहो ॥
जाया सीस सयंपहहो अरहंतहो संतारिविणासहो ॥ ६ ॥

7

अवहिणाणि चारण संजाया बिण्णि वि पइं संबोहहुं आया ।
लइ सम्मत्तु अलाहि पलावें भावहि जिणदंसणु सब्भावें ।
अत्थि णत्थि किं संक ण किज्जइ इहपरलोयकंख वज्जिज्जइ ।
गुणवंतहु दोसु वि ढंकिज्जइ मग्गभट्ठ पुणु मग्गि ठविज्जइ ।
असुइकलेवरु जणु ण वियप्पइ साहुहुं देहदुगुंछ ण घिप्पइ ।
वेज्जावच्चु समउ वच्छल्लें किज्जइ हियएं संघेहियल्लें ।
मिच्छु तुच्छु जो वंझु कहिज्जइ अण्णदिट्ठिवहु सो ण थुणिज्जइ ।
वड्डइ वड्डियदुक्कियलेवइ मलु कुदेवकुच्छियगुरुसेवइ ।
समयवेयलोइयमूढत्तणु अवसें करइ अणत्थपवत्तणु ।
अच्छइ वुहयणगंथणिबद्धउ विउ णाणम्मि धाउ सुपसिद्धउ ।

घत्ता—वेएं किज्जइ जीवदय अप्पउ परु सयलु वि जाणिज्जइ ॥
हम्मइ जेण जियंतु पसु तं कव्वालु ण वेउ भणिज्जइ ॥ ७ ॥

8

सया णारिरत्तो सया मज्जमत्तो ।
सया वित्तलुद्धो सया सत्तुकुद्धो ।
समोहो ममाओ सदोसो सराओ ।
ण सो होइ देवो ण खं सुण्णभावो ।
पलं जस्स खज्जं महुं जस्स पेज्जं ।

7. १ M अलंहि. २ MBP वि दोसु ३ P असुह°. ४ M देहु दुगुञ्छण, P देहु दुगुंछु ण. ५ B संहहियल्लें. ६ MBPT °पहु. ७ MP थुणिज्जइ. ८ MBP °गंथहिं बद्धउ T गथणिबद्धउ. ९ MBP जीवदया.

8 १ P मज्जि मत्तो. २ P सत्तकुद्धो. ३ MBP सय सुण्ण°, T खं ण न गगन देवः.

२ 4 संतारिविणासहो परमवीतरागस्य कर्मविनाशकस्य च

7. 2 *a* अलाहि प्रतिषेधेऽव्ययम्. 6 *b* °हियल्लें हितत्वेन 7 *b* अण्णदिट्ठिवहु मिथ्यादर्शनादिमार्ग. 10 *a* वुहयणगंथणिबद्धउ पण्डितैः शास्त्रे रचितः *b* विउ इति—विद ज्ञाने इति धातुः प्रसिद्धः.

8. 4 *b* ण खं न गगन देवः.

वहू जस्स गेहे रई जस्स देहे ।
गुरू सो वि हा हे जगे मंदमेहे ।
सपावं सपावा णवंता विगावा ।
ण गच्छंति सग्गं ण वा तेऽपवग्गं ।
पउत्ता महंता ण कायस्स चिंता ।
विसस्सावि हारे खमा होइ भारे ।
पमोत्तूण वेयं खगं वइणतेयं ।
जिणिंदं अणिंदं सुरिंदोहवंदं ।
विहुं वीयरोसं अहिंसाणिघोसं ।
विहाऊण एक्कं णयाणीयसक्कं ।
परो को हयारी जगे मोहहारी ।
तिणा जो पउत्तो असव्वेण चत्तो ।
अहिंसापयासो वियाणागमो सो ।

घत्ता—पँत्तीय धम्मु दयापॅरमु रिसि गुरु देउ जिणिंदु भडारउ ॥
लइ लइ तुहुं सम्मत्तगुणु मइं अक्खिउं संसारहु सारउ ॥ ८ ॥

9

भो ललियगत्त भो धवलणेत्त ।
सद्दहसु मित्त तच्चाइं सत्त ।
छद्दव्वभेय छज्जीवकाय ।
पंचत्थिकाय चउँ सुरणिकाय ।
णाणाइं पंच गँइभेय पंच ।
रिसिवयइं पंच गिहिवयइं पंच ।

४ MBP तस्स. ५ MBK विसस्सावहारे; P विसस्साहवारे. ६ MBP मोहयारी; T मोहयारी मोहदारकः ७ MB एत्तीय; P पत्तिय and gloss प्रतीत्या. ८ MB °पवरु; P °परु.

9. १ K adds this lino in the margin but scores it out. २ MBP सुरचउणिकाय. ३ M गयभेय.

7 *a* हा हे हा कष्टम्. 8 *b* विगावा विगतगर्वाः. 9 *b* अपवग्गं मोक्षम्. 11 *b* खमा समर्थाः. 12 *b* वइणतेयं गरुडम्. 15 *b* णयाणीय° नमनार्थमानीतः. 16 *a* हयारी विनाशितकर्मारातिः. 18 *b* वियाणागमो सो विजानीहि सः आगमः. 19 पत्तीय प्रतीत्यः, अथवा प्रतीतिं कुरु.

छल्लेसभाव मुणि तिण्णि गाव।
तेरह चरित्त गुँत्ति वि तिहुत्त।
णवविह पयत्थ दह धम्मपंथ।
सत्त भय सिट्ठ मय अट्ठ दुट्ठ।
अप्पाणुवाउ कम्माणुवाउ।
चरणाणिओउ करणाणिओउ।
जं कहिउ तेण मुणिपुंगवेण।
णिसुँणिवि कमेण तँ गहिउँ तेण।
अज्जेण जेम अज्जाइ तेम।

घत्ता—जिह सद्दूलंजवणरेण कोलणरेण वि तिह पडिवण्णउं॥
वाणरचरफणिरिउंचरेहं सम्मइंसणु मुणिणा दिण्णउं॥ ९॥

10

भत्तिए णविय भवियणरवग्गें गय रिसि उँल्ललेवि णहमग्गें।
कुलिसबाहुतणयहु ते किंकर मइवराइ चत्तारि सुहंकर।
तउ करेवि जाया णिरवज्जहि अहमिंदाणि हेट्ठिमगेवज्जहि।
लोयसारु अहेमिंदसुरत्तणु पत्ता पुण्णपहावपहुत्तणु।
वज्जंघु सइ सिरिमइ अज्जइ बे वि मँयाइं समंचियपुज्जइं।
हुउँ ईसाणकप्पि वरु सुरवरु सिरिपहमंदिरि णामें सिरिहरु।
तहिं जि कप्पि कुंदेंदुसमप्पहि सीमंतिणि सुरगेहि सयंपहि।
जिणचरणारविंदरयचित्तें णारिलिंगु छिंदवि सँमत्तें।
हुई अमरु सयंपहु णामें सो रूवेण ण णिज्जिउ कामें।

४ MP रयणइं तिहुत्त. ५ K °पुगमेण. ६ B सिसुणवि, P णिसुणवि. ७ MBP महिउ. ८ MP सद्दूल अजणरेण; B सद्दूलवजणरेण. ९ MP °रिउचरहं.

10. १ P उल्लुलेवि. २ MBP अहमिंदु. ३ MBP वज्जजंघु सिरिमइ तह अजइ. ४ P मुयाइं. ५ P हुव. ६ MBPK सम्मत्तें.

9. 7 *b* मुणि जानीहि. 11 *a* अप्पाणुवाउ जीवास्तित्वम्, *b* कम्माणुवाउ कर्मानुवादः. 12 *a* चरणाणिओउ चरणानुयोगः. 17 फणिरिउं° नकुलः.

वग्घंचरु वि णरु मुउ ललियंगउ णिलइ मणोहरि हुउ चिसंगउ।
देउ वराहचरु वि संजायउ णामें कुंडलिल्लु सुच्छायउ।
णंदविमाणि सरयकंदाहइ खणि सोदामणिपुंजु व मेहइ।
घत्ता—कुरुभूमिहि माणवु मरिवि कंतिइ णाइं मियंकु दुइज्जउ॥
णियसुहकम्में पेरियउ पहयरि मणरहु हुउ णउलज्जउ॥ १०॥

11

होंतउ आसि जम्मि जो वाणरु सुहुं भुंजेप्पिणु कुरुधरणीणरु।
णंदावत्तविमाणइ हूयउ णाम मणोहरु देउ सरूयउ।
जो सइंबुद्धु बुहेहिं भाविउ जेण महाबलु धम्महु लाविउ।
पीयंकरु तिलोयपीइंकरु सो संजायउ केवलिजिणवरु।
णाणें परियाणिवि सुरसहयरु गउ वंदणहत्तिइ तहु सिरिहरु।
अमरसहंतरालि पइसेप्पिणु थुउ णियगुरु गुरुभत्ति करेप्पिणु।
णिवडंतहु भवविवरि मुणीसर पइं महु दिण्णु हत्थु परमेसर।
पइं सइंबुद्ध बुद्धं जगु बुद्धउ पइं हियउल्लउ कयउ विसुद्धउ।
पइं जोइयउं तवु णीसेसु वि तुहुं समु सहणेसु वि णीसेसु वि।
तुहुं महु लग्गणखंभु अभंगउ हउं तुह चरणजुयलु सरणं गउ।

घत्ता—मिच्छादिट्ठि सुदुट्ठमण पावयम्म णिद्धम्म वराया॥
कहहि मयणमयणिम्महण कहिं ते मंति महारा जाया॥ ११॥

12

कहइ भडारउ बिण्णि कुधामहु गय संभिण्णसहसमइ भीमहु।

७ K विग्घचरु. ८ MP कुंडिलिल्लु. ९ MBP माणउ.. १० MBP मणहरु, K मणहर but corrects it to मणरहु.

11. १ K सो. २ MBP °विमाणे पहूयउ. ३ M मणोहर. ४ MBP सुरूयउ. ५ M पीइंकरु, P पीईकरु. ६ MP पीइंकरु; B पीयंकरु. ७ MB °भत्तिहिं; P °भत्तिइ. ८ B करेविणु. ९ MP सुद्धु. १० MBP जाणियउं. ११ MBP अभग्गउं. १२ MB सुदिट्ठिमण; P सुदुट्ठमण.

10. 12 *a* कंदाहइ मेघाभे.

11. 6 *a* °सहंतरालि समान्तरे. 9 *b* सहणेसु सधनेषु; णीसेसु निःस्वेषु दरिद्रेषु.

असहविहुर संतइ संजोयहु णिव्वतमंधहु णिव्वणिगोयहु ।
सुण्णवायविवरणदूसियमइ णिवडिउ णरइ दुइज्जइ सयमइ ।
तं णिसुणिवि सिरिहरु गउ तेत्तहि णारउ णरइ णिसण्णउ जेत्तहि ।
पइसेप्पिणु तं सतिमिरु कुविवरु भणइ विमाणारूढउ सुरवरु ।
अहो अहो सयमइ सुणहि महाबलु हउं सो खयरराउ जसणिम्मलु ।
भुत्ती सुइरु जेण अलयाउरि सामिसालु तुहुं रिउकरिकेसरि ।
सुरदुंदुहिगंभीरणिणायं तुम्हइं तिण्णि वि जिणिवि विवायं ।
गुरुणा जिणवयणम्मि णिउत्तउ सोक्खपरंपराउ हउं पत्तउ ।
जीवदयादमेण परिचत्तउ तुहुं पुणु पावें पत्थु णिहित्तउ ।
दुण्णयहिं मा विणडहि अप्पउ वीयराउ जिणु भणु परमप्पउ ।

घत्ता—धम्मु अहिंसउ सद्दहहि मोक्खमग्गु णिग्गंथु वियाणहि ॥
जीहोवत्थछिहारहिउ मुणि णिमुंक्कमोहु संमाणहि ॥ १२ ॥

13

पहाजित्ततरणी विहंगेण करुणी ।
पइ तेण मुणिओ जेयाणिंद भणिओ ।
दढं झत्ति गहिओ सया दोसरहिओ ।
जिणिंदस्स समओ अमोहेण वि मओ ।
तमुब्भूयदुरियं महादुक्खभरियं ।
पवोत्तूण महुरं गओ सग्गसिहरं ।
सुरो सोम्मवयणो सियायंबणयणो ।
तओ विहुरदलिओ सकालेण चलिओ ।
रिऊ विहियसमरा महाणंरयविवरा ।

12. १ P सो जोयहु. २ MBP मुणहि. ३ P सुयरु. ४ MBP °परपराइ. ५ MBP °दयादाणें. ६ MBP भणु जिणु. ७ MB णिम्मुक्कमोहु; P णिमुक्ककोहु.

13. १ B करणी. २ MBP जिणिंदेण भणिओ. ३ MBP भत्ति°. ४ M समुब्भूय°. ५ MBP पमोत्तूण. ६ MBP सोम°. ७ MB °णयर°.

12. 13 जीहोवत्थछिहारहिउ जिह्वोपस्थक्षुधारहितः.

13. 5 *a* उब्भूयदुरियं उदयप्राप्तपापम्.

मणीणलिणणिलए		वरे दीववलए ।
सिगारूढहरिणो		महामेरुगिरिणो ।
सुरासाइ सहले		विदेहम्मि विउले ।
जलाऊरिया णई		मही मंगलावई ।

घत्ता—पट्टणु रयणसंचु सधणु तेत्थु जि णरिंदु महीधरु णामें ॥
सुहवंसुब्भवु गुणमहिउ चावदंडु णं दाविउ कामें ॥ १३ ॥

14

तहु गेहिणि[1] सोहग्गें सुंदरि		किं वण्णिज्जइ णामें सुंदरि ।
पाउ असेसु वि अणुहुंजेप्पिणु		जिणमयसद्दहाणु पावेप्पिणु ।
सयमइ गुहहलेण तहि तणुरुहु		हुउ छणयंदबिंबसंणिहमुहु ।
सो जयसेणु माणुसंणिहियरु		जाम विवाहि धरइ कण्णाकरु ।
ता सिरिहरसुरु तहिं जि पढुक्कउ		वाउ धूलिउवलोहुवि मुक्कउ ।
तेण विग्घु भीसणु पारद्धउ		उच्छवि केण वि सोक्खु ण लद्धउ ।
तं पेच्छिवि वरइत्तें भाविउ		एहउ विरु मइं कह व णिसेविउ ।
एम कहिं मि पाहाणिहिं ताडिउ		एम्व कहिं वि खरपवणें मोडिउ ।
एम कहिं मि रयपुंजें झंपिउ		एम्व कहिं मि हउं दुक्खें कंपिउ ।
एम सरेवि सुमरिउ णारयभउ		जमहरग्गिसिहि पालि लइयउ वउं ।
तउ करेवि बंभिंदु पहूयउ		धम्मु जि जीवहु अग्गइ हूयउ ।

घत्ता—अइगरुआ वि णवंति गुरु चंदसूरवंदारयवंदें ॥
सामण्णु वि सुरु धम्मगुरु सिरिहरु पुज्जिउ बंभसुरिंदें ॥ १४ ॥

८ MBP °ऊरिय, K °ऊरिय but corrects it to °ऊरिया in second hand. ९ MBPK तेत्थु णरिंदु. १० MBP महीधरु. ११ MBP °वसुब्भव.

14. १ P गेहणि. २ MBP जिणमइ°. ३ K पालेप्पिणु. ४ MBP °साणिय°. ५ MBP सिरिहरु. ६ K omits this foot. ७ MB कहिं मि. ८ BK पाहाणहि ९ MBP णायर°. १० MBP तउ; K वउ. ११ MBP सग्गहु, K सग्गहु, but corrects it to अग्गइ

10 *a* मणीणलिणणिलए मणिमयपद्मस्थाने; *b* वरे दीववलए पुष्करार्धद्वीपे.

15

चुउ मुइवि णियकाउ सिरिहरु वि सग्गाउ ।
ससिसूरदीवम्मि इह जंबुदीवम्मि ।
हरिणियगिरीसस्स मंदरगिरीसस्स ।
उत्तुंगदेहम्मि सुरदिसिविदेहम्मि ।
वित्थिण्णसीमाहि णयरिहि सुसीमाहि ।
सुहदिट्ठि णरणाहु रणि जस्स ण रणाहु ।
जो रोसु संवरइ जो सिरिवहुं धरइ ।
जो कामु परिहरइ परणारिरइ हरइ ।
जो माणु णिग्गहइ मउयत्तु संगहइ ।
जें जणिउ जणि हरिसु जें णं किउ अइहरिसु ।
जें लोहु णिम्महिउ पुरिसत्थु जें महिउ ।
मउ जेण णिट्ठविउ मणु जेण थिरु ठविउ ।

घत्ता—रूवें सोहग्गें गुणेण णावइ उव्वसि णं इंदाणी ॥
किं थुव्वइ अम्हारिसिहिं सुंदरि णंद णाम तहु राणी ॥ १५ ॥

16

सुरवरु सग्गु मुएप्पिणु आयउ ताहि गब्भि सो णंदणु जायउ ।
तेण सुविहिणामेण जुवाणें णं पच्चक्खें वम्महबाणें ।
मुणिहिं वि मयणुम्मायजणेरी अभयघोसचक्कवइहि केरी ।
सुय लीलाणिज्जियतंबेरम परिणिय पणइणि णाम मणोरम ।
जो सिरिमइहि जीउ स सयंपहु सुरमंदिरचुउ बहुपुण्णावहु ।

15. १ M हरिणिव°. २ M उत्तुंगगेहम्मि. ३ MBP सिरिवहू वरइ. ४ MBP जणहरिसु. ५ P जि ण कउ. ६ MBP इंदाइणि. ७ K मुंदर. ८ B राइणि.

16. १ MBP सिरिहरु. २ MB °पुण्णाउहु.

15. 3 *a* हरिणियगिरीसस्स हरिणा इन्द्रेण नीतो गिरा वाचामीशस्तीर्थंकरो यत्र. 6 *b* रणाहु रणाघ सग्रामदोषः.

16. 4 *a* °तंबेरम हस्ती. 5 *b* बहुपुण्णावहु बहुपुण्यधारकः.

पुत्तु मणोरमाइ संजणियउ केसउ णामें जणवइ भणियउ ।
जो सद्दूलजीउ चित्तंगउ सग्गहु णिवडिउ कालवसं गउ ।
सो वि विहीसणेण सियणेत्तहि हुउ सुउ वरयत्तउ पृयंदत्तहि ।
जो चिरु कालजीउ कुंडलसुरु सो संपाइउ पुणु जम्मंतरु ।
णंदिसेणराएं अणुरूवउ तणउ अणंतमईहि पहूयउ ।
मयणहिं वरसेणु जि जणि कोक्किउ जो वाणरहं जीउ मइं तक्किउ ।
सो जि मणोहरु माणव सुगइहि रइसेणें हूयउ चंदमइहि ।

घत्ता—तहु चित्तंगउ णाउं किउ णउलु मणोहरु सुरु सग्गायउ ॥
जो सो णिविण पहंजणेण पुत्तु चित्तमालिणियहि जायउ ॥ १६ ॥

17

संतमयणु जाणिज्जइ णामें ए णरवइसुय सुहपरिणामें ।
कय रिसि सुविहिहि सुविहिहि सहयर अभयघोसराएं सहुं किंकर ।
विमलवाह जिणवंदणहत्तिइ गय विविहच्चणवण्णविहत्तिइ ।
अभयघोसु जिणघोसु सुणेप्पिणु चक्कु णिहाणइं वसुह मुएप्पिणु ।
कामकसायविसायविहंजणु हुउ मुणिवरु णिग्गंथु णिरंजणु ।
पंचसयाइं सुयाहं अणिंदहं अट्ठारहसहसाइं णरिंदहं ।
तेण समउ दिक्खिय हयराया वरदत्ताइ वि तहिं रिसि जाया ।
सुविहिणिहालियकेसवदेहें घरवइ संठिउ णंदणणेहें ।
पंचाणुव्वय तिण्णि गुणव्वय चउ सिक्खावय कय वज्जिय मय ।

घत्ता—जेण सचित्तु णिरोहियउ इंदियँ विसयरसेसु ण थक्कइ ॥
तहु माणवियहु घरि जि तउ जो अप्पाणउं दंडहुं सक्कइ ॥ १७ ॥

३ MBP वरदत्तउ. ४ MBP पियदत्ताहि ५ MBP कुंडालिसुरु. ६ MBP सपाइउ. ७ MBP णउल.

17. १ MBP °वंदणभत्तिइ. २ MB चक्क. ३ MBP णियसुवणेहें. ४ P इंदिउ. ५ MBP दंडिवि.

10 *a* अणुरूवउ आत्मसदृशः.

17. 1 *a* संतमयणु प्रशान्तमदन. 3 *b* विविहच्चणवण्णविहत्तिइ अर्चन पूजा, वर्णविभक्तयो गद्यपद्यादिषु विविधभागा., विविधा अर्चनवर्णविभक्तयो यत्र.

18

दंसण[1] वउ सामाइउ[2] पोसहु सच्चित्तयविरमणु जणदूसहु ।
वासरि णारिसंगपरिवज्जणु बंभचेरु आरंभसमुज्झणु ।
दुविहु वि संगभारु अवगण्णिउ पाउं[4] ण काइं वि मणि अणुमण्णिउं ।
णिद्दिट्ठउ ण तेण पडिवण्णउं भुत्तउ परकिउ केण वि दिण्णउं ।
अंतइ संथारयसवणत्तणु[5] करिवि पत्तु अच्चुइ[6] इंदत्तणु ।
तायविओएं मेइणि मेल्लिवि सीलायारभारु उच्चल्लिवि ।
जिणतउ तिव्वु चरेप्पिणु[7] केसउ तहिं[8] जि तासु जायउ पडिवासउ ।
दो वि दुवीसंबुहिसरिसाउस इंदाउहधरु णं णवपाउस ।
वरदत्तय वरसेण जियंगय संतमयण मुणिवर चित्तंगय ।
ए चत्तारि वि चारुविमाणहं तेत्थु जि जाया मज्झि समाणहं ।

घत्ता—किं ससि भरहुज्जोययरु णं[10] णहकडित्ति णिहित्तिय[11] कागणि ॥
अच्चुयवइ गुणगणु गुणइ पुप्फयंतु सुग्गुरु बुहसिरमणि[12] ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भोयभूमीसिरिहरसयंपहसुविहि[13]-केसवइंदपडिंदभवावण्णणं णाम छव्वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २६ ॥

॥ संधि ॥ २६ ॥

18. १ MBP दसणु. २ P सामायहु. ३ M जिण°. ४ P पाउ वि काउ ण ५ MBP °सरणत्तणु. ६ MBP अच्चुयइंद°. ७ P करेप्पिणु. ८ MB पांडजायउ, P पडिभायउ. ९ MBP °उहधरणें णं (P णउ) पाउस . १० M णहकडित्ति णं. ११ MBP घित्तय. १२ MB बुहगिरिमणि. १३ MBP °सुविहि°.

18. 8 *b* इंदाउह° इन्द्रधनुः 9 *a* जियंगय जित अङ्गज कामो यैः यास्. 10 समाणहं सामानिकानां देवानाम्.

XXVII

संजायइं विच्छायइं तेओहामियचंदहो ॥
णियग्रंगइं खयलिंगइं अच्चुयकप्पसुरिंदहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

अइसोमसहाव महारउद्द संचलिय चल ससिरवि वलद्द ।
किंह[1] वंचवि कालरहट्टचारु घडिमालइ लंघिउं[2] आउणीरु ।
अप्पउ जाणेप्पिणु वियलियाउ छम्मास समच्चिवि वीयराउ ।
सिरिणिहिउं[3] णिरहु तहु चरण[4]जमलु भवियहु भवणासे[5] वि वित्तु विमलु ।
चुउ कालें अच्चुयसग्गणाहु कहु कालें किर कवलिउ ण देहु ।
इह जंबुदीवि[6] सुरगिरिहि पुव्वु किं भणमि विदेहु विलासदिव्वु ।
रमणीयउववणा[7]वलिणिवेसु तहिं[8] वर पुक्खलवइ णाम देसु ।
बहुवण्णमणिसिलाबद्धभूमि पुरु[9] पुंडरिंकिणी तेत्थु सामि ।
हरिमउडपडिच्छियपायरेणु णरणाहु जिणेसरु वज्जसेणु ।
मुहससिजोण्हाधवलियदियंत सिरिकंता णामें तासु कंत ।
सो तियसराउ हयदुरियवाहि तहि हुउ णामें वज्जणाहि ।

घत्ता—सग्गायउ संभूयउ वग्गत्तु वि तहि बालउ ॥
विजयंकउ हरिणंकउ णं उग्गमिउ सुहालउ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it.

1 १ MBP किं वण्णमि २ MBP चित्तउं. ३ M सिरि°. ४ MBP चलणजुयलु. ५ MBP भवणासे विचित्तु विमलु ६ P जंबुदीउ. ७ MBP °उववणावणि°. ८ MBP तहि पुक्खलवइ णामेण देसु. ९ MBP पुरि.

1. 3 *b* वलद्द बलीवर्दौ. 11 *a* हरि° इन्द्रः. 15 विजयंकउ विजयनामा, हरिणंकउ चन्द्रः. सुहालउ सुखालयः, सुधालयोऽमृतालयश्च.

2

वरसेणु वि हूयउ वइजयंतु विंतंगउ णामें पुणु जयंतु ।
सुरलोयहु चलिवि पसंतमयणु अवराइउ हूउ पहुल्लवयणु ।
ए सद्दूलाइय चउ सहाय जाया जुवरायहु इट्ठ भाय ।
हेट्ठिमगेवज्जविमाणवासु मेल्लेप्पिणु जम्महु माणवासु ।
आयउ मइवरु जायउ सुबाहु आणंदु वि णाम महंतबाहु ।
अहमिंदु अकंपणु हुयउ पीढु धणमित्तु वि तेत्थु जि गरुयपीढु ।
जे वज्जजंघभवि भिच्च तासु रायहु उप्पलखेडाहिवासु ।
होंता चिरु एवहिं विहिवसेण हूया चत्तारि वि महुं जसेण ।
ते देविहि गब्भि महासईहि ताहि जि सुरसिंधुरवइगईहि ।
सुसणेहा जेट्ठसहोयरासु को होइ वेसु णियभायरासु ।
पालेप्पिणु भवकयकम्मछंदु तेत्थु जि पुरि केसवु सो पडिंदु ।
वणिउत्तें सुरयाससमइहि सिसु जणिउ कुबेरें णंतमइहि ।

घत्ता—हयतूरहिं गंभीरहिं बंधुवग्गु आणंदिउ ॥
संमाणें धणदाणें धणदेउ जि सो सद्दिउ ॥ २ ॥

3

एक्कहिं दिणि झत्ति समागएहिं भासिउ किं तुहुं मोहिउ गएहिं ।
किं हित्तबुद्धि तुह हिय हएहिं जेंहिं रंजिओ सि णारीरएहिं ।
तुहुं देवदेउ तेलोक्कणाहु तहिं अण्णहि को किर बोहिलाहु ।
इय संबोहिउ लोयंतिएहिं सो वज्जसेणु कयसंतिएहिं ।
सिंगारभारवेहवमरट्टु पत्तिणाहिहि बंधिवि रायपट्टु ।
अंबयवणि खणि णिक्खवणु कियउ तित्थंकरेण णियहियउ जियउ ।
उप्पण्णउं तायहु धम्मचक्कु पुत्तहु असिसालइ रयणचक्कु ।

2. १ MBP चविवि. २ MBP सद्दूलाइ वि ३ G वम्महु. ४ MBP अहमिंद. ५ M धणमेत्तु, BP धणमेत्तु. ६ MBP ससणेहा. ७ G सुहोयरासु. ८ M तवकय°; BP भवु कयकम्मछेंदु°. ९ MBP केसउ.
3. १ M सोहिउ. २ M जिह. ३ K कहिं किर.

2. 4 *b* जम्महु माणवासु मानवस्य जन्मन., 11 *a* °छंदु इच्छा.
3. 7 *a* धम्मचक्कु केवलज्ञानम्.

ताएण परज्जिउ मोहचक्कु पुत्तेण वि णिज्जिउ वइरिचक्कु ।
तायहु संठिय[4] णिहि समवसरणि पुत्तहु वि णव वि संभूय सरणि ।
तायहु इंदा वि करंति सेव पुत्तहु वि भिच्च गणबद्ध देव ।
हुउ ताउ धम्मवरचक्कवट्टि सुउ छक्खंडावणिचक्कवट्टि ।
घत्ता—सिरि[5] मेइणि सुहदाइणि जुण्णउं तणु व वियप्पिवि ॥
पविदंतहो णियपुत्तहो पच्छइ रज्जु[6] समप्पिवि ॥ ३ ॥

4

अंगुलिदलु[1] णहपहकेसरालु सुरवरहंसावलिरवबमालु ।
मुणिभमरपीयमयरंदबिंदु आसंघिउ पिउचरणारविंदु ।
पव्वज्ज लइय धरणीसरेण विजएण वइजयंतेण तेण ।
संवेउ विवेउ पराइएहिं धीरेहिं जयंतवराइएहिं ।
तउ लइउ सुबाहुं[2] पत्थिवेण संतेण महाबाहुं णिवेण ।
णीसेसजीवविरइयकिवेण पीढेण महापीढाहिवेण ।
धणदेवें णिवइघराहिवेण[3] ।
सज्जीवें पहुरयणुल्लएण णिम्मुक्कविविहरयणुल्लएण ।
दस गायहं सुयहं वि दससयाइं जइभावहु तेण समउ गयाइं ।
एक्कु जि विहरइ रिसि वज्जणाहि परिगणइ सदेहि घुलंत णाहि ।
घत्ता—महि हिंडइ तणु दंडइ णिवसइ कहिं मि णिरासइ ॥
भीसावणि[4] ठिउ पिउवणि सुण्णावासपएसइ ॥ ४ ॥

5

दंसणविसुद्धि गुरुविणयसारु सीलव्वएसु अइअणइयारु[1] ।
णेरंतरु थिरु णाणोवभाउ[2] सत्तिइ तउ णिरु संवेयभाउ[3] ।
किउ बज्झब्भंतरगंथचाउ मुणिसंघहु वेज्जावच्च[4]जोउ ।

४ MBP णिहि सठिय. ५ B सिरिमेइणिहि सुहदाइणिहि. ६ M रज्ज.

4. १ MBP °दल. २ P सुबाहुहु ३ MB add after this line: धणय व्व विविहदव्वाहिवेण. ४ M भीसावणि पिउउववणि, BP भीसावणि वाणि पिउवणि.

5. १ P अइसणइयारु. २ MBP णाणोवओउ. ३ MBP संवेयचाउ. ४ MB वेज्जावज्ज°, P विज्जावज्ज°.

9 *b* सरणि गृहे.

4. 10 *b* णाहि न + अहि, अहीन् सर्पान् न गणयति. 11 णिरासइ आश्रयशून्यप्रदेशे अभ्रावकाशे.

जिणभत्तिपउरसुयसाहुभत्ति तें विरइयपवयणि परमभत्ति ।
छावासएसु णायरइ हाणि अरहंतमग्गु पायडइ णाणि ।
भव्वेसु करइ कलिमलिणसमणु वच्छलु पवोहणु धम्मठवणु ।
णीरायं सहुं रयहारणाइं अरुहंतहु सोलहकारणाइं ।
एयइं अपवग्गारोहणाइं तेलोक्कचक्कसंखोहणाइं ।
भावेण तेण संभावियाइं घोरइं दुरियइं उड्डावियाइं ।
घत्ता—संपुण्णउं वउ चिण्णउं कालक्कमेण जि लद्धउं ॥
जगपियरहो तित्थयरहो णाउं गोत्तु तें बद्धउं ॥ ५ ॥

६

को एम देउ दइवेण पुण्णु को संचइ किर एवड्डु पुण्णु ।
उग्गतउ तत्तु घोरतउ तत्तु दित्तनउ तत्तु संखीणगत्तु ।
आमोसहीहिं खेलोसहीहिं जल्लोसहीहिं विप्पोसहीहिं ।
सव्वोसहीहिं णावइ सहीहिं सो सहइ साहु रंजियमहीहिं ।
तहु कोट्ठबुद्धि वरबीयबुद्धि संभिण्णसोत्त णामेण बुद्धि ।
पायाणुसारिणी अवर बुद्धि उप्पण्णी तणुविकिरियरिद्धि ।
अणिमामहिमालहिमाइ सिद्धि सुरसद्धि अहीणमहाणसद्धि ।
सो सुहुमसंपरायत्तकरणु चडियउ गुणठाणु अउव्वकरणु ।
णिस्सेसमोहसंदोहसमणु सिरिपहमहिहरमेहलहिं समणु ।
आहारसरीरहं चाउ करिवि पाउवगमणमरणेण मरिवि ।
सव्वत्थसिद्धि सुरहरि सुराहु अहमिंदु हुयउ रिसि वज्जणाहु ।
घत्ता—पडिवडियहिं विहिघडियहिं दिव्वु सरीरु लएप्पिणु ॥
सुकयंगउ अइचंगउ अप्पाणउ जोएप्पिणु ॥ ६ ॥

५ P छावस्सएसु. ६ MBP आराहिवि मोलह. ७ G अपवग्गइं रोह° ८ MBP नेलोय°.

6. १ MBP आमोसहीहिं जल्लोसहीहिं खेल्लोसहीहिं विट्ठोसहीहिं (P विप्पोसहीहिं). २ MBP सुरसिद्धि; T सुरसाद्धि. ३ MBP °महाणसिद्धि. ४ MBP सुहुमु. ५ MBP गुणठाणु. ६ M सिरिपहमहिहरमेहलिहि; B सिरिपहमहिहलिहे, P सिरिपहमहिहरमेहलिय. ७ MBP पाउग्गमरणमरणेण. ८ M सुरहरे सराहे, BP सुरहरि सरेहु, K सुरहरि सराहु; T राराहु. ९ BP परिवडियहिं.

5. 6 *a* कलिमलिणसमणु कालि. पापं दोषो वा तेन मलिणं मलिनता तस्य शमन उपशमः.

6. 7 *b* सुरसद्धि शोभनरसार्द्धिः. 8 *a* सुहुमसंपरायत्तकरणु सूक्ष्मसंपरायत्वस्य करणं यस्मादपूर्वकरणात्. 9 *b* समणु रासिक.. 11 *a* सुराहु सुशोभ..

7

अवहीइ तेण जाणियउं जम्मु   पणविउ जिणु जिणवर[1]कहिउ धम्मु।
घणमणिमऊहपिंजरियमग्गि   तेसट्ठिपडलसिरि[2]चूलयग्गि।
सिवपयणिवासु सिरिसोहमाणि   बारहजोयणहिं आ[3]पावमाणि।
पिहुजंबूदीवपरिप्पमाणि   हिमसंखससिप्पहि तहिं विमाणि।
पवि[4]णाहभाउ कयधम्मसेव   अट्ठ वि जाया अहमिंददेव।
णव ते परमेसर सुकयपुण्ण   सुविसुद्धफलिहमाणिक्कवण्ण।
तणुमाणें जाणिय रयणिमेत्त   अहिणवसयदलदल[6]सरलणेत्त।
ते सुक्कलेस मज्झत्थभाव   अपिसुणसहाव परिहरियगाव।
मउडग्गघुलियमंदारदाम   [8]परियाररहिय सं[9]पुण्णकाम।
खेत्ताउ ण खेत्तंतरहु जंति   उत्तरवेउव्विय तणु ण लेंति।
वरिसहुं ति[10]तीससहसहिं असंति   ते[11]त्तियहिं जि पक्खहिं णीससंति।
तेत्तीससमुद्दोवमु जियंति   जगणाडि असेस वि ते णियंति।

घत्ता—णाइंदहो खयरिंदहो तं [12]णउ झसधयमंदहो॥
[13]पुहईसहो ण सुरेसहो जं सुहुं जगि अहमिंदहो॥ ७॥

8

गयगव्व भव्वत्तणारूढ धरणीस   पुणु भणइ रिसहेसरो णिसुणि भरहेस।
ज[1]यवम्मु होऊण [2]सणियाणदोसेण   [3]जाओ मि खयरिंदु कयधम्मलेसेण।
होउं महाबलिण संणासु मइं कियउ   सइबुद्ध[4]बुद्धीइ बहुपुण्णु संचियउ।
तहिं मरिवि ईसाणि ललियंगु सुरु जाउ   तेत्थाउ अवयरिवि पविजंघु हुउ राउ।

7. १ MBP °कहिय. २ MBP °सिरिचूलिय°. ३ MP अपावमाणि, B आयावमाणु. ४ K पवि-णाहि°. ५ MBP add after this: दहमउ धणदेउ उप्पण्णु तेत्थु, अहिलच्छि णिरलरु सोक्खु जेत्थु. ६ MBP °सरिसणेत्त. ७ MBP परिगलिय°. ८ MBP पवियार°. ९ MBP संपुण्ण°. १० BP तेतीस°. ११ P तेत्तियहहिं पक्खहिं. १२ MB तण्णज्झसद्धयचिंधहो, P त णउ मुहु जयमद्दहो, T झसद्धयमंद. १३ MBP पुहईसरहो ण सुरेसरहो.

8. १ MBP अजवम्मु. २ MBP सुणियाण°. MP जाओ सि. ४ P सइबुद्ध.

7. 9 *b* परियाररहिय प्रतीचाररहितः. 13 झसधयमदहो झषध्वजेन कामेन मन्दस्य विषय-व्यावृत्त्यनुद्यतस्य.

कुरुधरणिणरु पुणु वि बीयम्मि कप्पम्मि सिरिहरु सुँहासीय हं कयवियप्पम्मि ।
पुणु सुविहिविहिविहियजिणसासणाणंदु अम्रु मुहवि हउं हुउ सोलहमसग्गिंदु ।
पुणु वज्जणाहेण होऊण मे चिण्णु पडिखलियजमकरणु तवचरणु संपैण्णु ।
सँव्वत्थि अहमिंदु होउं अहत्तिहरु पुणु भद्द हूओ अहं एत्थ तित्थयरु ।
गहवइसुया धणसिरी णिहयणयजुत्ति णामेण णिण्णामिणी विहण वणिउत्ति ।
जाया पुणो सूहवा बद्धणेहस्स सिरिसरिस सीमंतिणी ललियदेवस्स ।
सिरिमइमहीसस्स मैय पुणु वि कुरुणारि पुणु रवि स्रयंपहु पुंणरवि दणुयारि ।
केसवु पुणो मरिवि संभूउ पडिसक्कु संसारि संसरइ जगि जीउ इह एक्कु ।
धणदेउ वउ धरिवि पुणु हुयउ अहमिंदु सयलत्थि सरयब्भि संकैमिउ णं चंदु ।
तम्हा समोयरिवि कुरुवंससरहंसु इहु एत्थु उप्पण्णु णरणाहु सेयंसु ।

घत्ता—मलु छिंदह जिणु वंदह तिरयणाइं मणि भावह ॥
अमरत्तणु सुणरत्तणु गहणु ण मोक्खु वि पावह ॥ ८ ॥

9

जो णरवइ णामें आसि गिद्धु आहारणारिरससायगिद्धु ।
णरयम्मि चउत्थइ सहिवि विहुरु पुणु हुयउ पुल्लि चलकुडिलणहरु ।
पुणु देउ दिवायरु मइवरक्खु णरु गेवँज्जामरु सो दिव्वचक्खु ।
पुणु रवि सुबाहु चिरजम्मभाउ णिहिलत्थदेउ अहमिंदु जाउ ।
अणुहुंजिवि जायउ एत्थु भरहु महु सुउ लइ होसहि तुहुं वि णिरहु ।
पीढवद्धण चमुवइ सुँगण्णु कुरुमणुयपहायरु सुरु पसँण्णु ।
हयपंकु अकंपणु रिद्धिपोढु गइँवेयदेउ पुणु हुयउ पीढु ।
सव्वत्थइंदु मँहु सुउ अरेणु पुणु एहु पहूयउ वसहसेणु ।

५ MB सुहासियउ ह कय°, P सुहासीय हुउ बीय°. ६ MBK संपुण्णु. ७ MBPT अहलच्छि. ८ MB °देहस्स. ९ MB मुय, P मुय and gloss मृता. १० MBP पहावइ दंडारि. ११ MBP संकमिय.

9. १ MBP गेज्जामरु. २ MBP °भाइ. ३ MBP जाइ. ४ M जि. ५ MBP सुगत्तु. ६ M °अपायरु. ७ MBP पसुत्तु. ८ P गइवेइ°. ९ MBP राउ. १० MBP महु तणउ सूणु; T अरणु ज्ञानावरणादिरजोरहितः.

8. *a* अहत्तिहरु पापार्तिहरः. 9 *b* विहण निर्धना. 13 *b* सयलत्थि सर्वार्थसिद्धौ.
9. 2 *b* पुल्लि व्याघ्रः. 8 *a* अरेणु ज्ञानावरणादिरजोरहितः.

जो [11]होंतउ सुइरु महीसमंति कुरुकुवलयमाणउ अमियकंति ।
जो पुणु आयउ कणयाहु तियसु आणंदु णाम होएवि सवसु ।
हुउ पढमहिं [12]पहु चविवि साहु पुणु [13]सं महाबाहु धरित्ति[14]णाहु ।

घत्ता—गउ इट्ठहो सव्वट्ठहो णट्ठहमिंदसरीरउ ॥
हुउ भुयबलि पसमियकलि केवलि भाइ तुहारउ ॥ ९ ॥

10

जो रायपुरोहिउ समियडमरु कुरुमणुयपहंजणु पवरु अमरु ।
धणमित्तु पुणु वि [1]हेउ सुहपहाणि ओइल्लु[2] अहंविंदु पर[3]मठाणि ।
पुणु हविवि महापीढु वि [4]संभेउ सव्वत्थसिद्धि संभूउ देउ ।
सो मरिवि महारउ णंतविजउ उप्पण्णु पुत्तु जीवेसु सदउ ।
जो आसि मरेप्पिणु उग्गसेणु होएवि वग्घु मुणिचलणलीणु ।
कुरुमाणुसु सो [5]चित्तंगयक्खु वरदत्तु णराहिउ कमलचक्खु ।
अच्चुइ समसुरु हुउ विजयराउ तव[6]चरणें खीणु करेवि काउ ।
सव्वट्ठइंदु ववगयसरीरु जसवइसुउ [7]पहु सोणंतवीरु ।
पहिलारउ हरिवाहणकुमारु पुणु सूयरु पुणु कुरु अज्जसारु ।
[8]सुरु कुंडलिल्लु वरसेणु संतु समविबुहु पुणु वि जो वइजयंतु ।
अहअमरणाहु संजणियविणउ तहिं चुउ अच्चुउ हुउ मज्झु तणउ ।
वणि णागदत्तु वाणरु [9]पलासि अज्जउ हूयउ कुरुभूमिवासि ।

घत्ता—[10]सुमणोरहु सुरु हयदुहु पुणु चित्तंगउ पत्थि[11]वु ॥
संचियसमु सुरवइसमु पुणु जयंतु णामें णि[12]वु ॥ १० ॥

११ B सो हुंतु. १२ M एहु चएवि; B एहु तं चएवि; P पहु चएवि; T पहु अहमिन्द्र., १३ MBP सुमहा°. १४ P धरत्ति°.

10. १ MBP हुउ. २ MBP ओविल्लु. ३ MBP पढम°. ४ PK सहेउ. ५ K सुरु चित्तं°. ६ P तवयरणें. ७ P एहु अणंतवीरु. ८ MBP सुर. ९ P फलासि. १० MBP समणोरहु. ११ MBP पत्थिउ. १२ MBP णिउ.

---

10. 2 *b* अहंविहु अहमिन्द्रः 7 *a* समसुरु समारिकदेवः. 10 *b* समविबुहु सामानिकदेवः. 11 *a* अहअमरणाहु अहमिन्द्रः. 14 सुरवइसमु सामानिकदेवः

11

पुणरवि अहमीसरु मोक्खणियडि हूयउ विमाणि माणिक्कपयडि ।
जो सो दुद्दंसणदुरियभीरु इहु अम्हारउ सुउ णाम वीरु ।
लोलुउ कंदुइ लोहेण मुयउ जो विरु गिरिकाणणि णउलु हुयउ ।
पुणु अज्ज मणोहरु अमयभोइ पुणु संतमयणु णरणाहु जोइ ।
पुणु हरिसमाणु गिव्वाणु चारु अपराज्जिउ णामें णिवकुमारु ।
पुणु अंतिमिल्लु सुरवासवासु सुप्रसिद्धु अहंवइ तिमिरणासु ।
आवेप्पिणु हुउ तुह माउदेहि सो एहु वीरु महु तणइ गेहि ।
जा वज्जजंघभवि मज्झु बहिणि साणुंधरि णं परलोयकुहिणि ।
हूई णंदहि णं धम्मलील बाहुबलिहि लहुई ससं सुसील ।
जा सिरिमइभवि पंडीय धाय सा भमिवि एत्थु रमणीय जाय ।
बंभी वि तुज्झ जाणहि महीस जणु मोहें तम्मइ एहु कीस ।
परिभमियसयलभुवणन्थलीउ केत्तिउ किर कहमि भवावलीउ ।
रंगं गउ णडु बहुरुवधारि अणवरयदुविहकम्माणुयारि ।
सा णत्थि थत्ति जहिं जिउ ण जाउ पुणु पुच्छिउ भरहें वीयराउ ।

घत्ता—कइ हलहर कइ सिरिहर कइ पडिसत्तु णरेसर ॥
मइं जेहा पइं जेहा कइ होहिंति जिणेसर ॥ ११ ॥

12

तं णिसुणिवि देवें वुत्तु एम्व मइं जेहा जिणवर गयविलेव ।
होहिंति भुवणि तेवीस एत्थु करिहिंति पयडु सिरिधम्मतित्थु ।
आगामियाइं जेहा इमाइं बावीसहं तइं तेहाइं ताइं ।
कहियाइं जिणहं जम्मंतराइं संगहियविमुक्ककलेवराइं ।
मुहयंदोहामियससिमरीइ महु णत्तिउ तुह तणुरुहु मरीइ ।

11. १ MBP मोक्ख°. २ MBP दुद्दसणु. ३ MBP कंदुउ. ४ MBP णरणाह. ५ MP गिव्वाण. ६ MBP सिरिमइ विरु. ७ MBP रंगगउ णडु व बहु°. ८ K जिउ जहिं. ९ P पुंछिउ. १० MBPK जेहा.
12. १ P विगयलेव. २ M करहिंति. ३ MBP जेहाइं जाइं. ४ G धम्मनराइं ५ MBP संगहिवि.

11. 2 *a* दुद्दंसण° मिथ्यादर्शनम्, °दुरिय° पापम. 5 *a* हरिसमाणु सामानिकः. 6 *b* अहंवइ अहमिन्द्रः. 11 *b* तम्मइ खिद्यते. 15 पडिसत्तु प्रतिवासुदेवः.
12. 3 *b* तेहाइं तादृशानि. 5 *a* °ससिमरीइ चन्द्रकिरणाः.

होसइ चउवीसमु तिजगणाहु　　सिरि[६]वड्ढमाणु णामेण पहु ।
दिय कविलें[७]सीस गुरुभरहतण[८]उ　　तं णिसुणिवि णच्चिउ मुइ[९]यमणउ ।
जाही मिच्छत्तहु मूढु होवि　　मरिही महु केरउ भउ मुएवि ।
घत्ता—होही सुरु कविलहु गुरु संखसुत्तपवियारउ ॥
णियतणयहु कयविणयहु पुणु पुणु कहइ भडारउ ॥ १२ ॥

13

सिरिबाला कीलाविउलसेल　　बलवंतसधरधरधरणलील ।
पइं जेहा णिव णायाणुवट्टि　　एयारह महियलि चक्कवट्टि ।
णव बल णारायण णव णं[१] भंति　　पडिसत्तु णव जि महिं भुंजिहिंति ।
अवर वि तेवीस जि कों[२]मदेव　　एयारह रुद्द रउद्दभावें[३] ।
मंडलिय मउडबद्ध वि अणेय　　होहिंति बहु[४]त्त वि णामधेय ।
तुह खत्तधम्मु महु परमधम्मु　　अवरु वि जं किं पि विसिट्ठकम्मु ।
सव्वें[५]हिं जुयंति दिणि णासिहिंति　　सिहिमय विसमय घण वरिसिहिंति ।
उम्मूलियतिट्ठाकं[६]यलिकंदु　　ता णरणाहें संथुउ जिणिंदु ।
घत्ता—जिणसंतइ भयवंतइ पइं दिट्ठइ मलु खिज्जइ ॥
सयलामलु तं केवलु णाणु णरहु उप्पज्जइ ॥ १३ ॥

14

णमो वीयराया महादेवदेवा　　कयाणेयगिव्वाणणिव्वा[१]णसेवा ।
सरीरे ण भूसा समीवे ण णारी　　तुमं देव सव्वं अणंगावहारी ।
ण चावं ण चक्कं ण खग्गं ण सूलं　　ण दंडो ण हत्थे किवाणं[२] करालं ।
तुमं देव णूणं ग्गिऊणं णं[३] गम्मो　　अहिंसाणिवासो सहावेण सोम्मो ।
ण डिंभं ण डंभो ण ए वित्तलोहो　　ण मित्तो ण सत्तू ण कामो ण कोहो ।

६ MBP रिसिवड्ढमाणु. ७ P कविलकेर. ८ P तणउ. ९ G मइउ मणुउ but gloss हृष्टचित्तः.

13. १ P भणति. २ MBP कामएव. ३ MBP add after this: होसहिं णारय णव कलहसील, वयबंभचेरदढधरणसील (P धरणलील). ४ MBP पुत्त बहुणाम°. ५ P सव्वइं. ६ P केलिकंदु.

14. १ P °णिव्वाण. २ K करालं कवाल. ३ MB अगम्मो.

---

7 *b* मुइयमणउ प्रहृष्टचित्तः. 9 °पवियारउ प्रवीणः.

13. 7 *b* सिहिमय अग्निवर्षा .

14. 5 *a* णए न ते तव.

ण माया ण चित्ते पँहुत्ताहिमाणं समं पेच्छसे रायरायं पि दीणं ।
णौ छत्तेण णो किं पि सीहासणेणं ण गव्वोमराहीससंपेसणेणं ।
उँयासीणभावं सकम्मक्खएणं तुमं जे ण वंदंति णाहं णिरेणं ।
णरा ते धुवं लोहयारस्स भत्था ससंता वसंती हहा किं णिरत्था ।
जई सो णिरासो तुमं छिण्णपासो तुमं लोयबंधू पहू दिव्वभासो ।
तुमं जम्मकंतारडाहे किसाणुं तुमं भूयभावंधयारम्मि भाणुं ।
जडा किं णिमंजंति मिच्छत्ततोए तुमाहिं परो को गुरो जीवलोए ।
णमंसेवि देवं गओ भूमिणाहो अउज्झाउरिं भूरिसेणासणाहो ।
पइट्ठो णियं मंदिरं बंदिरोलं महातूरघोसं महामंगलालं ।

घत्ता—धरणीसरु भरहेसरु पुरतरुणिहिं विहसंतिहिं ॥
अवलोइउ पोमाइउ पुप्फदंत दरिसंतिहिं ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वज्जणाहितिहुवणसंखोहणं
जिणपुण्णावज्जणं णाम
सत्तावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २७ ॥

॥ संधि ॥ २७ ॥

४ M पहू णाहिमाणं; BP वहू णाहिमाणं. ५ MBP सछत्तेण. ६ M सिंहासणेण. ७ P उदासीण°. ८ MBP किसाणू. ९ MBP भाणू. १० B ण मज्जंति. ११ MBP मिच्छत्तराए. १२ MBP गुरू. १३ MB सूरसेणा°. १४ MBP वज्जणाह°. १५ MPP पुज्जावज्जणं.

6 *a* पहुत्ताहिमाण प्रभुत्वाभिमान॰. 8 *b* णिरेण निष्पापम्. 11 *a* किसाणुं अग्निः; *b* भूयभावंधयारम्मि प्राणिमनोज्ञानातिमिरस्य.

XXVIII

पुरु पइसिवि तेण णराहिवेण बहुदाणेहिं स[1]मिद्धउं ॥
दुस्सिविणयदंसणहलहरणु संतिकम्मु पारद्धउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

जाउडजडिलरसेणायंबइं अहिसित्ताइं जिणेसरबिंबइं ।
[2]हिमकणकणयक[3]णोलिवियारहिं घडपल्हत्थियप[4]यघयधारहिं ।
मुणि अणिट्ठदुट्ठासयहा[5]रिहिं चं[6]दणतोतडिल्लव[7]रवारिहिं ।
पुज्जियाइं छप्पयउलधामहिं कुवलयबउलमहुप्पलदामहिं ।
संथुयाइं बहुथोत्तालाविहिं भावियाइं सुविसुद्धहिं भा[8]वहिं ।
कंचणणिम्मियमु[9]णिपडिमालउ णाणामणिमऊहणिय[10]रालउ ।
दसदिसि गयटंकारविसट्टउ लंबियाउ चउवीस जि घंटउ ।
पहि पहि रइयउ तोरणमालउ पंतजंतणिवणयणसुहालउ ।
दिण्णइं दिण्णसोक्खसंताणइं अभयाहारोसहसुयदाणइं ।
भूमिदोहकयगोदुहसत्थहिं अंचिउ घरि घरि अरुहु घरत्थहिं ।
दिण्णइं कारुण्णेण वि अण्णइं दीणाणाहहं चीरहिरण्णइं ।
पोसहु सीलु दाणु देवच्चणु रा[11]एं संचोइउ पालइ जणु ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

मुखनलिनोदरसद्मनि गुणहृतहृदया सदैव यद्वसति ।
चोज्जमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥ १ ॥

M reads गुणधृत° for गुणहृत°. GK do not give it.

1. १ MBPT सुणिबद्धउं. २ MBP हिमकणु कणय°. ३ BP °कणालि°. ४ P °घयपय°. ५ MB °हारहिं; P °दारहिं. ६ M चंदणतोयतडिल्ल°. ७ MBP °वरधारहिं. ८ MB भाविहिं. ९ M °माणि°. १० MB °णियरालिउ. ११ MB राइं.

---

1. 3 *a* जा उ ड ज डि ल° जाउडदेशोत्पन्नं कुङ्कुमम्. 4 *a* हि मे त्या दि-हिमकणाश्च कनककणाश्च तेषामोलयः व्यूहस्तैस्तुल्यो विकारः परिणामो यासाम्. 5 *a* अ णि ट्ठे त्या दि–न इष्टे विषये दुष्टा आर्तरौद्रोपहता अनिष्टदुष्टाश्च ते आशयाश्च मुनीनामनिष्टाशया निर्मलाभिप्रायास्ताननुहरन्ति अनुकुर्वन्ति तैः; मुन्यनभीष्टदुष्टाभिप्रायनाशकैर्वा; *b* °तोंत-डिल्ल° मिश्रिताः. 9 *a* °वि स इ उ प्रसरः. 12 *a* °गो दु ह° गोदोहकाः.

घत्ता—धम्मट्ठि राए धम्मिट्ठु धुउ दुक्कियरइ दुक्कियरउ ॥
रायाणुवट्टि जगि संचरइ जिह णरवइ तिह जणवउ ॥ १ ॥

2.

सीहु व सावयाहं अग्गेसरु जिं[1]णवरधम्मु करइ भरहेसरु ।
भा[2]वलिंगि होप्पवि णरेसरु चिंतइ चें[3]त्तदेहु लंबियकरु ।
गोसयाहं गोदुद्धु जि पिज्जइ णारीसहसहं एक्क रमिज्जइ ।
खारीसयभत्तहं पसउल्लउ रहलक्खहं महु एक्कु रहुल्लउ ।
ण[4]रु णराहं पँ[5]डिवन्नु महल्लहं हरि हरिवाहहं करि वि करिल्लहं ।
पासायहु वि मज्झि सयणीयलु लइ परिभुंजणिज्जु धरणीयलु ।
जइ वि एम जाणइ संगायउ चिंतिज्जंतउ सयलु परायउ ।
तो वि जीउ खज्जइ रा[6]यत्तें खणविणासि संतावि पहुत्तें ।
चक्कु कालचक्कहु किं रक्खइ छत्तें छण्णउ जीउ ण पेक्खइ ।
दंडु कुगइदंडणु दरिसावइ मणि सोदामणि णहचुउ णावइ ।
असि असिउब्भडलेसहि कारणु चम्मु कयंतपडहरवधारणु ।
कौ[7]गाणि खणि सोहइ दुहलीहहं अम्हारिसहं धरित्तिसमीहहं ।
होउ होउ रा[8]यत्तें हो गंथें हउ मुणिवरु पं[9]रिवेढिउ वत्थें ।
अणुदिणु इय झायंतहु कं[10]यंरु व उड्डिवि जंति[11] रायपरमाणुय ।

घत्ता—सिढिलाइं होंति रा[12]यसरहो णि[13]ग्गयमणमलपूरइं ॥
णिवडंति झत्ति खोणीयलइं करकंकणकेऊरइं ॥ २ ॥

2. १ M जिणवरु धम्मु २ M भाविलिंग होएव. ३ MBP चत्तदेह. ४ MBP णरवराहं. ५ G पडिबद्धगहल्लहं. ६ MBP राइत्तें. ७ MB कागाणि खणेण होइ दुहलीहह, P कागाणि खणि होसइ दुहलीलइ; T खाणि आकरः. ८ MBP रायत्तहु गंथें. ९ MBP वर वेढिउ. १० MB कयरुय and gloss रोग; T कयंरु व धूलिरिव. ११ G जंतु, K जंतु but corrects to जंति and gloss गच्छन्ति. १२ MBP रज्जेसरहो. १३ G णिग्गमण°; K णिग्गमल°, but corrects it to णिग्गयमण°.

2. 1 *a* सावयाहं श्रावकाणां श्वापदानां च. 7 *a* संगायउ संगस्य जातकं संघातम्. 11 *a* असिउब्भड° कृष्णोद्भटः. 14 *a* कयंरु व धूलिरिव. 15 णिग्गयमणमलपूरइं निर्गता मनोमलपूराः येषु.

3

रायणाणु किं तासु कहिज्जइ जासु मंतु अरिणरहिं ण भिज्जइ ।
जासु खग्गु रणि को वि णं कड्ढइ जासु पयावु दिसंति पवड्ढइ ।
जो पहाइ परमप्पउ पुज्जिवि मंगलणेवत्थइं पडिवज्जिवि ।
णयसासणि हियउल्लं घत्तइ सयलउ पयवित्तिउ संचिंतइ ।
अहियारिय णिउएसु णिउंजइ णिव संभासणदाणहिं रंजइ ।
के वि सणेहालोयणहसियहिं संमाणिहिं लोयअहिलसियहिं ।
दविणोवाइ पुरिसें संभावइ चर परमंडलंतु पट्ठावइ ।
सयलकलाकुसल वि संमाणइ पवरपसंडीपिंडहिं पीणइ ।
पुणु अत्थाणविसग्गु समिच्छइ घरि सच्छंदविहारें अच्छइ ।
मज्झण्णइ मज्जणउं पइंस्मित्रि णियसरीरु भूसणहिं विहूसिवि ।
बालाचालियचामरमालइ अच्छइ कोइ वि पत्थिवलीलइ ।
पुणु भुत्तुत्तरि पैंहु णिवगोट्ठिइ गमइ कालु गरुयइ संतुट्ठिइ ।
घत्ता—संपण्णइ खणि तिज्जइ पहरे जाणिय घडियाघाएं ॥
पहु अच्छइ वारविलासिणिहिं सहु कीलाइ विणोएं ॥ ३ ॥

4

महिवइ गयलीलइ पयं ढोयेइ पुणु अंतेउरु भमिवि पलोयेइ ।
खणि ससहावें मंतु पमंतइ वज्झु णत्थि किं छग्गुण चिंतइ ।
जाणइ अप्पउ वण्णपवित्ति वि वत्तायरणु णयाणयजुत्ति वि ।
पुणु अवलोयइ विविहपयारइं पहरणभवणइं भंडागारइं ।
पुणु गुरुयणसहमंडवि पइसइ धम्मसत्थसंदेहु वि णासइ ।
कामसत्थु अवलोयइ जावहिं कामु वि तैंहु आसंकइ तावहिं ।

3. १ M म कढ्इ. २ MBP पयाउ. ३ G पवट्टइ. ४ MBP हियउल्लउं. ५ M पयवित्तउ. ६ P °सहियहिं. ७ MBP पुरिसु. ८ Our mannuscript P ends with चामर°. ९ MB काइं व. १० MB बुहणिवगोट्ठिहि.

4. १ MB पउ. २ B ढोइउ. ३ B पलोइउ. ४ B वत्तारयणु. ५ MB ण याणइ जुत्ति वि. ६ MB °सत्थु संदेहु. ७ MB तहि.

3. 1 *a* रायणाणु राजनीतिशास्त्रम् . 8 *b* °पसंडी° सुवर्णम्.
4. 2 *b* छग्गुण संधिविग्रहयानासनशयनद्वैधीभावाः. 3 *b* वत्तायरणु कृषिपशुपाल्यादि.

हत्थिसत्थि हरिसत्थि ण मुज्झइ   आउवेउ धणुवेउ विउज्झइ।
जोइससउणसमूहणिमित्तइं   णरणारीलक्खणइं विचित्तइं।
तंतु मंतु तेण जि संजोइउ   भरहें सइं जि भरहु उप्पाइउ।

घत्ता—जसु जासु दियंतहिं परिभमइ ससिकरणियरउ पोसइ ॥
तहु भरहहु सरिसु महाणिवइ जगि णउ हुयउ ण होसइ ॥ ४ ॥

5

सो रायाहिराउ सामंतहं   मंडलियहं महिमाइ महंतहं।
एक्कहिं दिणि धीरहं णिरवायहं   अक्खइ खत्तवित्तु बहुरायहं।
कुलमइअप्पयपयपरिपालणु   अवरु समंजसत्तु मलखालणु।
णिसुणह भुयबलतुलियकरिंदहं   पंचभेउ चारित्तु णरिंदहं।
जेण चरिवि तउ गिरिवरकंदरि   अजिउ तित्थयरत्तु भवंतरि।
एहु लोउ जें धम्मि पवत्तिउ   परिताइउ खयाउ सो खत्तिउ।
कुलु णरणाहहं एत्थु विसेसें   कुलु लक्खिज्जइ बुहसहवासें।
दंसणणाणचरित्तब्भासें   कुलु रक्खिज्जइ दुण्णयणासें।
कुलु लक्खिज्जइ सुद्धायारें   दढऊढेण अणुव्वयभारें।
साइ अणाइ वि दीसइ जायउ   बीयंकुरकमेण कुलु आयउ।
भरहेरावएहिं कुलु खिज्जइ   कालि कालि जिणणाहहिं किज्जइ।

घत्ता—पणवियसिरु मउलियकरकमलु जाहं करइ हरि कित्तणु ॥
ते पत्थिव कुलसंताणयर ताहं महादेवत्तणु ॥ ५ ॥

८ B मुज्झइ. ९ M दियन्तहिं. १० MB भरि भमइ.

5. १ B णिवायहं T णिरवायह २ MB खत्तवित्ति. ३ B °तुरिय°. ४ MBK चारित्तु. ५ M परताइउ, T परिताइउ. ६ MB कुल णर°. ७ MB °चरित्ताभासें. ८ M दढउड्ढेण; T दढऊढेण. ९ M बीयंकुर.

9 *b* भरहु संगीतम् .

5, 2 *a* णिरवायहं अपायरहितानाम्. 6 *b* परिताइउ खयाउ परिरक्षितो विनाशात्. ७ *b* दढऊढेण दृढधृतेन. 12 हरि इन्द्रः.

6

अवरु वि मइ राएं रक्खेवी अरहंतहु जि सिक्ख सिक्खेवी ।
णासइ णिवमइ मिच्छारंगें कुगुरुकुदेव[1]कुलिंगिपसंगें ।
णासइ मइ चामीयरलोहें णासइ मइ णिरु कामें कोहें ।
णासइ मइ हरिसें चवेलत्तें[2] णासइ मइ जिणपडिकूलत्तें ।
णासइ मइ मयण माणेण वि णासइ मइ मइरापाणेण वि ।
णासइ मइ वेसायणगमणें णासइ मइ कुरंगवहरमणें ।
णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती[3] णासइ मइ पररमणिहि रत्ती ।
मइ ण जासु कलिकलुसें छित्ती जिणवरचरणंभोरुहघित्ती ।
णिवविज्जारिसिविज्जागामिणि तहु होसइ इहपरभवि गोमिणि ।

घत्ता—मइसुद्धिइ[4] वड्ढइ धम्ममइ धम्मु वि मइं सो[5] घोसिउ[6] ॥
जो खीणकसायहिं केवलिहिं जीवलोइ उवएसिउ ॥ ६ ॥

7

धम्मु खमाइ होइ गरुयारउ[1] धम्महु मद्दवगुणु[2] पहिलारउ ।
अज्जउ धम्मु पावु[3] मायारउ धम्मु सच्चवयणोहु[4] वियारउ ।
धम्मु सउच्चु[5] धम्मु तवतप्पणु धम्मु असेसवत्थुपवियप्पणु ।
धम्मु[6] बंभचेरें परिचाएं जेण ण कियउ वियाणवि राएं ।
पुण्णाउसु सो णिज्झाडेवउ रज्जें पुणु वि णरइ पाडेवउ ।
इय मइसुद्धि कहिय णउ रक्खमि तणुपरिरक्ख णरिंदहु अक्खमि ।
हुयवहपविसणु[7] हुयललियंगउ विसकणकवलणु मरणु ण चंगउ ।
सत्थग्गहणु महाजलबोलणु गिरिणिवडणु अंतावलिघोलणु ।
पयइं कुच्छियमरणइं दुहमि णरु भामेवि घिवंति भवकद्दमि ।

6. १ MB °कुदेउ°. २ M चवलित्तें. ३ MB read this line and the following as: णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती, जिणवरचरणंभोरुहघित्ती; मइ ण जासु कलिकलुसें छित्ती, णासइ मइ पररमणिहि रत्ती. ४ G मइबुद्धिइ. ५ MB धम्मु सइं. ६ MB सो मइं.

7. १ B गुरुआरउ. २ MB मद्दउ गुणु. ३ MB पाउ. ४ MB. °वयणोह. ५ MBK सउच्चु. ६ MB धम्मु जि बंभचेरपरिचाएं. ७ MB हुयवहु पविसणु हुउ ललियंगउ.

---

7. 2 *a* पावु पापम्. 3 *b* °पवियप्पणु त्यागो विचारणं वा. 4 *a* परिचाएं आकिंचन्येन; *b* वियाणवि ज्ञात्वापि. 7 *a* हुयललियंगउ दग्धशरीरम्. 8 *a* सत्थग्गहणु आत्मघातः.

घत्ता—मुणिचरणकमलि उवसमु करिवि जो ण मुयउ संणासें ॥
चउरासीलक्खजोणिमुहहिं सो परिभमइ किलेसें ॥ ७ ॥

8

अवरु वि राणउ करउ णिरिक्खणु पयहि धम्मणायं परिरक्खणु ।
दुम्मइ दुई जाणिवि धाडइ तिव्वें दंडें गाइ ण ताडइ ।
जिह गोवउ पोलइ गोमंडलु तिह पालउ गोवइ गोमंडलु ।
णिक्कारणमारणु जो राणउ सो रक्खसु जमदूयसमाणउ ।
मिसु मंडिवि हलहरसंघायहं णिद्दोसहं दिय वणिहिं वरायहं ।
वुड्डणारिडिंभयसंतावणु जो धणहरणु करइ भीसावणु ।
जणणीसाससिहिहिं सो डज्झइ अण्णु वि दुक्कियकम्में वज्झइ ।
लग्गइ ण जियइ दुक्खहुयासइ ण वसइ देसु विसइ परदेसइ ।
पहु अणुरत्तपयइं जो तासइ कइहिं वि दियहहिं सो सइं णासइ ।
रत्तउ सत्तउ भिच्चु भरिज्जइ तव्विवरीयउ अवहेरिज्जइ ।
बुज्झियकज्जावायउवायं णरणाहेण णिहालियणायं ।
गुरुचरणारविंद सेवेवउ अवरु समंजसत्तु भावेवउ ।
रोसें णउ विसिट्ठु पहरेवउ दुट्ठपक्खु ण कयावि धरेवउ ।

घत्ता—इय पंचपयारपयासियउ णिवचरित्तु जो पालइ ॥
कमलासण कमला कमलमुहि तहु मुहकमलु णिहालइ ॥ ८ ॥

9

तहिं अच्छइ भरहेसरु जइयहं गणि पभणइ सुणि सेणिय तइयहं ।
कुरुजंगलजणवयगयउरवइ जिणकमकमलजुयलसेवारइ ।
सोमप्पहमहिणाहहु णंदणु लच्छीवइमायहि तोसियमणु ।

४ MB °चरणमूलि.

8. १ G पहहिं. २ M पावइ. ३ MB °णीसाससयहं. ४ MB दुक्खु ... ५ M अणुरत्तु पयइं. ६ MB °रविंदु. ७ B भावंतउ. ८ G णियचरित्तु.

9. १ MB °जगलु.

11 °मुहहिं द्वारैः.

8. 3 *a* गोवउ गोपः, गोमंडलु गवां संघातः; *b* गोवइ राजा, गोमंडलु भूवलयम्. 8 *b* विसइ प्रविशति.

सुंदरु चोद्दहभौहहिं जेट्ठउ जउ णामें अत्थाणि पइट्ठउ ।
कुरुवंसाहिवेण पणवेप्पिणु पभणिउं तेण राउ विहसेप्पिणु ।
ताएं रायपट्टि महु बद्धइ रिसिरयणत्तइ सइं उवलद्धइ ।
तम्मि हुयइ णिक्कलि कलुसच्चुइ दाणपवत्तणि सुरवरसंथुइ ।
जाणियपयाणेयवियप्पइ रिसहसामिपयपंकयछप्पइ ।
घोरवीरतवचरणब्भुइ पित्तिइं सेयंसाहिवि णिव्वुइ ।
ससहोयरु दिम्मुहइ णियंतउ हउं णियपुरवरंति विहरंतउ ।
मारुयचालियचलसाहाघणु एक्कहिं वासरि गउ णंदणवणु ।
धम्माणंदें मणु आणंदिउ दिट्ठउ सीलगुत्तु मुणि वंदिउ ।
दिट्ठउ फणिवरु समउ भुयंगिइ धम्मु सुणंतु सरलललियंगिए ।
गयसंवच्छरि पुणरवि आएं सा दिट्ठी मुक्किय णियणाएं ।

घत्ता—दीवंडु काओयरु णाइणि वि विण्णि वि धम्मु सुणंतइं ॥
मइं लीलाकमलें ताडियइं तेहिं वि जाइगइरत्तइं ॥ ९ ॥

10

कसणारुणबिंदुयतणुराइहि कहिं णाइणि कहिं लग्गवि जाइहि ।
इय गरहिवि परिवारेणाहय सहुं जारेण तेण सा णिग्गय ।
कासपुप्फकंतिसंकासउ हउं पडिआगउ णियआवासउ ।
णिसि णियकंतहि मइं आहासिउ सयणालइ तं णाइणिविलसिउ ।
कुमहिलखलचरियाइं पयासमि जाम किं पि किर पिय संभासमि ।
विविहाहरणकिरणरंजियघरु ताव तहिं जि अवयरिउ वरामरु ।
पुच्छिउ सो मइं किं अवलोयहि दिट्ठि वियारभरिय किं ढोयहि ।
तेण पउत्तउं किं ण वियाणहि लोयहं तुहुं वि धम्मु वक्खाणहि ।

२ MB चउदह° ३ M °भावहिं. ४ B वइट्ठउ. ५ MB पित्तइ. ६ MB °चलियचवलसाहा°. ७ MB फणिवइ. ८ M सरलललियंगइ; B सरललियंगिइ. ९ MB मुक्की णियणाएं. १० G °णियणायएं. ११ MB काओयरु विसहरु णाइणि बि. १२ M ताहिं जइपयरइरत्तइं.

10. १ MB °तणुरायहि. २ MBK काससंककंति°.

9. 7 *a* तम्मि ताते; णिक्कलि शरीरनिस्पृहे. 9 *b* णिव्वुइ सुखीभूते. 15 दीवडु सर्पजातिविशेषः; णाइणि नागी.

दोसग्गहणु ण कासु वि किज्जइ पंगुलु पंगुलु केम भणिज्जइ ।
पइं वि जाँइरइ महु कुलउत्ती पाणिपोमेंपोमें जं छित्ती ।

घत्ता—तं पाँडिय सयलें परियणेण उवलहिं दंडसहासें ॥
कंपंतदेह जारेण सहुं सा मुक्की णीसासें ॥ १० ॥

11

पुव्वमेव मुउ फणि वयधारउ हउं हुउ भावणु णायकुमारउ ।
सप्पिणि हूई समपरिणामें सुरसरि देवय काली णामें ।
बिण्णि वि मिलियइं हियवइ धरियउं तं तुह दुव्वंवसिउ संभरियउं ।
आयउ एत्थ जाम किर मारमि आरूसिवि वच्छयलु वियारमि ।
ता मइं जाणिउं तुहुं पुण्णाहिउ चरमेंदेह मीणेण पसाहिउ ।
एम भणेप्पिणु तेण फणीसें समेंजलसिंचियरोसहुयासें ।
दिण्णइं महु दिव्वइं परिहाणइं दिण्णइं भूंसणाइं असमाणइं ।
अवसरि सरसु भणिवि गउ तेत्तहि अहिवइविवरि णिहेलणु जेत्तहि ।
णिसुणि देव सासयसंपयतरु जगि जीवहु धम्मु जि लग्गणतरु ।

घत्ता—विहसिवि कुरुणाहें बोल्लियउ भरहपसाहियमेंहियल ॥
देव वि तहु पायहिं पडहिं फुडु जासु धम्ममइ णिच्चल ॥ ११ ॥

12

इय अंपण कह साहिय जावहिं अवरु वि मंति पराइउ तावहिं ।
गीवांलंबियमोत्तियहारें सो दाँविउ रायहु पडिहारें ।
तेण पउत्तु णिसुणि णिवंवररिसि कासीविसइ णयरि वाणारसि ।

३ MB आइरय. ४ MB °पोमपंकइ. ५ MBK ताडिय.

11. १ M पुव्ववसिउ. २ MB चरमदेहु. ३ MB समजलु सिंचिय°. ४ M भूदाणइं. ५ MB °महियल.

12. १ B जइण. २ K गीवोलंबिय°. ३ MB रायहु दाविउ. ४ MB °वरसासि.

---

10. 10 *a* जाइरइ जन्मनः प्रभृति अनुरक्ता.

11. 7 *b* असमाणइ अद्वितीयानि.

राउ अकंपणु राणी सुप्पह सालंकारी णं वरकइकह ।
फुल्लकुसेसयसंणिहसुमुहहं[५] सहसु सुयहं हेमंगयपमुहहं ।
सत्त मृग[६]लोयण ताहं सुलोयण लहुई लच्छीवइ सुहभायण ।
जेट्ठहि रूउ[७] काइं किर सीसइ उवमाणु जि जहिं किं पि ण दीसइ
पायहुं काइं कमलु समु भणियउं तं खणभंगुरु कइहिं ण मुणियउं ।
रिक्खइं वासरि कहिं मि ण दिट्ठइं कण्णाणहपहाहि णं णट्ठइं ।

घत्ता—कुरुविंदु[८] तणु वि जंघाजुयहो[९] णासवंतु करु दंतिहि ॥
ऊरुजुयलहि जो समु[१०] भणइ सो कइ पडियउ भंतिहि ॥ १२ ॥

13

वण्णमि काइं णियंबगुरुत्तणु जहिं पत्तउ तिहुयणु जि[१] लहुत्तणु ।
भमउ भमउ सो भृंग भुत्तउ णाहिहि सरिसु ण सलिलावत्तउ ।
कहिं थणजुयलु चित्तगइरुंभणु भासइ कणयकलस कहिं कइयणु ।
दड्ढा ताहं दासिसिरमंडणु चंगउ ससहरु समलु सखंडणु ।
किं तरुणीवयणहु उवमिज्जइ तासु सरिच्छउ तं जि भणिज्जइ ।
जेवं[२] कुमरिहियवउं संदाणइ मृगु[३] ण तें अवलोयहु जाणइ ।
किं सारंगणयणि[४] सा उत्ती केत्तिउ किज्जइ उत्तपउत्ती[५] ।
णक्खइं लग्गिवि जा केसग्गइं ताम ताहि णिरुवमइं वरंगइं ।
लीलंदोलणकीला[६]जुत्तइं छुडु जि वसंतमासि संपत्तइं ।

घत्ता—अंकुरियउ कुसुमिउ पल्लविउ महुसमयागमु विलसइ ॥
वियसंति अचेयण तरु वि जहिं तहिं णरु किं णउ वियसइ ॥ १३ ॥

५ B° समुहहं. ६ मिगलोयण. ७ MB तक्खणि भंगरु. ८ B कुरुविंदत्तणु. ९ MB जंघाजुयलहो. १० K सम.

13. १ MB वि. २ जिम कुमरिहि हियवउ. ३ MB मिगु ण तेम. ४ MB °णयण. ५ MB उत्तपउत्ती. ६ MB °कीलणजुत्तइं.

12. 5 *a* °कुसेसय° रक्तोत्पलम्. 10 कुरुविंदु शंखघर्षणम्; तणु काष्ठं लघुश्च.

13. 2 *a* भुत्तउ भुक्तो गृहीतः. 4 *a* दड्ढा अग्निना संतप्ताः.

14

छुडु मायंदरुक्खु कंटइयउ महुलच्छिइ आलिंगिवि लइयउ ।
छुडु चंपयतरु अंकुरंचिउ णं कामुउ हरिसें रोमंचिउ ।
छुडु कंकेल्लि किं पि कोरइयउ णं वम्महचित्तारें रइयउ ।
छुडु मंदारसाहि पल्लवियउ चलदलु णं महुणा णच्चावियउ ।
छुडु जायउ णेमेरु कलियालउ मत्तवओरकीररावालउ ।
छुडु काणणि पप्फुल्लु पलासउ पहियहुं लग्गउ विरहहुयासउ ।
छुडु फुल्लिउ मल्लियफुल्लोहउ रमणीयाणि पसरिउ रइलोहउ ।
छुडु छडयणविडउलि मउ वड्ढिउ वेल्लिकुसुमरसु चुंबिवि कड्ढिउ ।
कुंदु कुसुमदंतहिं णं हसियउ कोइलु कामपडहु णं रसियउ ।
दवणयकयकुडुयलपउत्तइं चंदणकद्दमपिंडविलित्तइं ।

घत्ता—छुडु केलीहरइं विणिम्मियइं पुप्फच्छुरणइं घित्तइं ॥
छुडु लग्गइं मिहुणइं सरहसइं अवरोप्परु रयरत्तइं ॥ १४ ॥

15

थिप्पिरमहुछडयहिं महिघुलियइं सुमणसुरहिरयरंगावलियहिं ।
णवरत्तुप्पलकलियादीवहिं चंदकवयणक्खणभावहिं ।
धवलकुसुममंजरिधयमालहिं गुमुगुमंतमहुलियगेयालहिं ।
रायहंसकामिणिकयरमणहिं थिउ वसंतपहु उववणभवणहिं ।
कुररकीरकारंजणिणायहिं वणिणजंतु व थोत्तणिहाणहिं । 5
सियजलकणतंदुलसोहालहिं भिसिणिपत्तवरमरगयथालहिं ।
अणलससयदलदलसरलच्छिइ घित्त सेस णं तहु वणलच्छिइ ।

14. १ MB मायंदु रुक्खु. २ B राइयउ, K रयउ. ३ M णं मेरु; B णामरु. ४ MBK पप्फुल्ल. ५ B विडयणाविउलि. ६ MB कुंद. ७ MB कोइल. ८ MB °कयकंदुयणपउत्तइं. ९ MBK °पिंगाविलित्तइं. १० MB पुप्फत्थरणइ. ११ MB रइरत्तइ.

15. १ MB °रमणिहिं. २ MB बहुवणभवणिहि. ३ MB °कारंड°. ४ M °णिकायहिं; B °णिणायहिं; K °णिहायहिं,

14. 8 *a* कोरइयउ कोरकितः. 8 *b* °कुसुमरसु मकरन्दः. 12 सरहसइं सरभसानि उत्सुकानि.

15. 1 *b* सुमणसुरहिरय° पुष्पसुगन्धमकरन्दः. 7 *a* अणलस° विकसितम्.

फग्गुणपइसारइ णंदीसरि छुडु सुरणविइ दीवि णंदीसरि ।
पोसहपरिसमखामसरीरइ थणजुयलंतविलंबियहारइ ।
पुत्तिइ पहसंतें मुहकमलें पहु दिट्ठउ जिणसेसाकमलें ।

घत्ता—तेलोक्कपियामहु णंवि जिणु णवमयरंदकरंबिउ ॥
तं णलिणु णरिंदे णिहिउ सिरे महुयरउलमुहचुंबिउ ॥ १५ ॥

16

तेण धूय पियवयणहिं पुज्जिय करि पारणउं भणेवि विसज्जिय ।
गय सुंदरि णियगेहु पराइय तायहु चित्ते चिंत संभूइय ।
भडयणु सव्वु दूरि ओसारिउ रायएं मंतिहि मंतु समीरिउ ।
तणयहि उड्डुदिणि गलियइं रत्तइं महुं डुहंति भो अट्ठ वि गत्तइं ।
णं दुपुत्तरइयइं दुच्चरित्तइं अवलोयहु लहु णववरइत्तइं ।
घरि कुमारि केत्तिउ रक्खिज्जइ कासु वि कुलगुणवंतहु दिज्जइ ।
सायरमंति चवइ सररुहमुहु अक्ककित्ति चक्कवइहि तणुरुहु ।
ढोयहि तासु कण्ण किं अण्णें सामंतेण लोयसामण्णें ।
सिद्धत्थेण भणिउं मणरंजणु अच्छइ राणउ णामु पहंजणु ।
णं पच्चक्खीहूयउ सइं सरु रहवरु बलि वज्जाउहु घणसरु ।
सव्वत्थेण लविउ मुइ महिहर तुह पुत्तिहि वरु जइ विज्जाहर ।
होंति[12] ण अण्णहु तं लायण्णउं सुमइ कहइ मइं पहु पडिवण्णउं ।
अविरोहणउं सयंवरमंडणु होउ ण कासु वि णेहहु खंडणु ।

घत्ता—जं बहुसुएण परिणयमइण सुमइबुहेणब्भत्थिउ ॥
परियाणिवि होंती कज्जगइ तं सयलहिं मि समत्थिउ ॥ १६ ॥

५ MB °जुयलंति विलं°. ६ MBK णविवि.

16. १ MB राएं मंतिहु. २ MB उडुदिण°. ३ MB डहंति. ४ MB अंगइं. ५ M ण दुपुत्तु रइयइं; B णं पुत्तरइयइं. ६ MB किं मंतेण. ७ MB पहंजणु. ८ MB सुरु ९ K वज्जाउह; T घणसरु मेघेश्वरः. १० MB महियरु; T महिहरु राजानः. ११ MB विज्जाहरु. १२ MB होइ ण.

16. 4 *a* उडुदिणि ऋतुदिवसे. 8 *b* °सामण्णें अनुत्कृष्टेन. 10 *a* सरु स्मरः कंदर्पः; *b* घणसरु मेघस्वनः.

17

विमाणगोमिणीधवो कुमारिपुव्वबंधवो ।
सुरो विचित्तअंगओ तओ तहिं समागओ ।
तिणा सुमंडवो कओ[1] विचित्तभित्तिसोहिओ[2] ।
ललंततोरणालओ घुलंतपुप्फमालओ ।
समंतभंतभिंगओ णहग्गलग्गसिंगओ ।
सुणीलबद्धभूयलो तमेण णाइ सामलो ।
कहिं पि हेमपिंजरो सरो व्व कंजकेसरो ।
कहिं पि रुप्पयामलो विलित्तचंदमंडलो ।
कहिं पि वत्थुच्छण्णओ सुएसपिंछवण्णओ ।
णवंतणत्थलीसमो महंतपुण्णसंगमो ।
मणीहि रायराइओ रईइ णाइ छाइओ ।
कहिं पि देसि रत्तओ वहूइ णाइ रत्तओ ।
थिओ णवो व्व मित्तओ सिरीविलासदित्तओ ।
णिहित्तमोत्तियक्खणो ससंखकुंभदप्पणो ।
असेसमंगलासओ पगीयगेयघोसओ ।
विसालमत्तवारणो दिवायरंसुवारणो ।

घत्ता—मंडवु किं वण्णमि देव हउं बहुमाणिक्कहिं जडियउ ।
जहिं दीसइ तहिं जि सुहावणउ सग्गे महिहि णं पडियउ ॥ १७ ॥

17. १ MB add after this: समुब्भमंतसंगओ (B °संचसंगओ). २ MB °सोहिओ. ३ MB add after this: वरंगणाहिरोहिओ. ४ B भमतमत्त°. ५ MB विचित्तवण्णमंडलो, K विजित्तचंद°. ६ MB वत्थछण्णओ and gloss वस्त्रेणाच्छन्नः. ७ GK सुएसुपिंछवण्णओ but gloss शुकेशपिच्छवर्णः; T सुएस शुकप्रधान°. ८ M णवव्वणत्थली°; B णवत्तणत्थली. ९ MB देस°. १० G दिसी° but corrected to सिरी° in the margin. ११ MB °कुंद°. १२ MB °गीय°. १३ MBK सग्गु.

17. 1 *a* विमाणगोमिणीधवो विमानस्य गोमिनी लक्ष्मीस्तस्या धवः स्वामी, वैमानिकदेव इत्यर्थः. 9 *b* सुएसपिंछवण्णओ शुकेशपिच्छवर्णः. 10 *a* णवंतण° नवीनतृणम्. 14 *b* °कुंभ° मङ्गलकलशः. 15 *a* °आसओ आश्रयः.

18

जहिं कुमारि अहिलसइ सइं वरु सो पारद्धउ णाहसयंवरु ।
पइं विणु तेण वि काइं णवल्लें लहु चल्लहि किंकरवच्छल्लें ।
अविणउ एत्थु मं होउ मलासिउ हउं हक्कारउ तुहुं संपेसिउ ।
तं णिसुणिवि हूयउ कोऊहलु दिण्ण भेरि गुरुरव मिलियउ बलु ।
मेरुधीरु जगणलिणदिणेसरु तं णिसुणिवि चल्लिउ भरहेसरु ।
चल्लिउ पडिभडगयघडमद्दणु अक्ककित्ति णामें तहु णंदणु ।
चल्लिउ बलि रहँवरु वज्जाउहु चल्लिउ घणरउ णं कुसुमाउहु ।
भूगोयरविज्जाहरराणा गंपि सयंवरघरि आसीणा ।
पहुहु अकंपणु पणविउ जावहिं संदणि तरुणि चडाविय तावहिं ।
सहुं धाइइ भूसणहिं सहंती भायसहासें रक्खिज्जंती ।
चोइय हय महिंदरहिएं तहिं रायकुमार परिट्ठिय ते जहिं ।
जोयइ सुंदरि कंचुइ दावइ एक्कु वि णरवइ मणहु ण भावइ ।

घत्ता—तहि अक्ककित्ति पलयक्कणिहु बलि भूयबलि वि समाणउ ॥
वज्जाउहु वज्जु व आवडिउ रुच्चइ को वि ण राणउ ॥ १८ ॥

19

जिह जिह सुंदरि अप्पउ दावइ तिह तिह णिवतणयहुं तणु तावइ ।
को णीससइ ससइ दिहि छंडइ अप्पउ पुण वि पुणु वि कु वि मंडइ ।
कंठाहरणु को वि संजोयइ अप्पउ दप्पणि को वि पलोयइ ।
को वि णियइ णियणहइं अभंग्गइं पयइं पयहि थणहि ण लग्गइं ।
चिरभवि मइं ण कियउ मणणिग्गहु किह विरयमि पयहि कंठग्गहु ।
को वि समिच्छइ तहि अहरग्गहु कासु वि लग्गउ काममहग्गहु ।
कासु वि आयउ विरहमहाजरु कासु वि उरि खुत्तउ वम्महसरु ।
मुच्छिउ पडिउ को वि विहलंघलु केण वि णियलज्जहि दिण्णउं जलु ।

18. १ MB सयंवरु. २ M ण होइ. ३ MB तुम्हहं पेसिउ. ४ MB रहवर. ५ MB भाइ°. ६ MB जेत्तहिं.

19. १ MB सुसइ. २ MB छड्डइ. ३ MB अंगउं को वि पुणु वि पुणु मंडइ. ४ MB अहंगइं. ५ MB °महागहु.

18. 3 *a* मलासिउ दोषाश्रितः पापाश्रितो वा. 11 *a* महिंदरहिएं महेन्द्रसारथिना.

19. 8 *a* विहलंघलु विह्वलाङ्गः.

घत्ता—कर मोडइ छोडइ सिरचिहुर उग्गमंतसिंगारहिं ॥
अहिलसइ हसइ भासइ महुरु भज्जइ कामवियारहिं ॥ १९ ॥

20

तरुणिवयणु जोयवि जोत्तारें मणु परियाणिवि सुरगिरिधीरें ।
पुणु रहवरु संचोइउ तेत्तहि आसीणउ जउं णरवइ जेत्तहि ।
पुच्छइ पेच्छंती गयवरगइ पभणइ कंचुइ णिसुणि महासइ ।
एँहु केरलवइ एहु सिंघलवइ एहु मालववइ एहु कोंकणवइ ।
एहु बब्बरवइ एहु गुज्जरवइ एहु जालंधरिसु एहु वज्जरवइ ।
एहु कंभोयकोंगगंगाहुं राउ एहु सव्वहुं मि कलिंगाहुं ।
एहु कस्सीरणाहु टंकेसरु एहु अवरु अवलोयहि तुहुं वरु ।
सोमप्पहसुउ एँहु सेणावइ कुरुकुलणाहि उग्गउ ससि णावइ ।
रुद्धणहंतरधरवित्थारहिं विसहरवरिसमाणजलवारहिं ।
णिव दिव्विजइ अणेयं परज्जिय मेच्छ अतुच्छवंस रणि णिज्जिय ।
गज्जिउ णवघणघोसणिणाएं मेहेसरु जिं हक्कारिउ राएं ।
इय आयण्णिवि पियसहिवयणइं मुद्धइ पेसियाइं णियणयणइं ।

घत्ता—तिह जोइउ ताइ सुलोयणए जउ णियवइ जयगारउ ॥
जिह रोमि रोमि तहि विप्फुरिउ वम्महु वम्मवियारउ ॥ २० ॥

21

जिह जिह कण्णइ पइ आलोइउ तिह तिह रहियं संदणु ढोइउ ।
णरवरविंद णीसेस पमाइवि भवसिणेहसंबंधें जाइवि ।
मज्झसकंपावियगइगत्तइ वीलावसपरिमंडलियणेत्तहि ।

६ B सिरि चिहुर.

20. १ MB सजोइउ. २ B जयणरवइ. ३ GK गइवर° but gloss गजवरगतिः; K corrects गइ° to गय°. ४ MB read lines 4, 5 and 6 as: एहु केरलवइ एहु कोसलवइ, एहु सिंघलवइ एहु मालवपइ; एहु कुंकणबब्बरगुज्जरवइ, एहु जालंधरेसु वज्जरवइ, एहु कभोयकोंगगंगगहं, राउ एहु सव्वहं मि कलिंगहं. ५ MB ढकेसरु. ६ MB पहु. ७ MB °जलधारहिं. ८ MB अणेण. ९ MB जिह कारिउ.

21. १ MB रहियं. २ MB भवसणेह°. ३ MB °मउणिय°.

20. 1 *a* जो त्ता रें सारथिना.

21. 2 *a* प मा इ वि परित्यज्य.

जयहु लच्छिकीलाभूमित्थलि घित्त सयंवरमाल उरत्थलि ।
कुँसुमसरेण णं कुसुमसरावलि गहिय कुमारि तेण कँयपंजलि ।
गउ लहु सरहु भरहु साकेयहु दुम्मइ परिवड्ढिय जुयरायहु ।
ता दुद्दंसणु दुद्धरु दुज्जणु दुट्ठु दुरासउ दूसियसज्जणु ।
रविकित्तिहि सुहिवंदाकरिसणु अत्थि मंति णामें दुम्मरिसणु ।
मच्छरवंतें तेण पउत्तउं जहिं अहिंस तहिं धम्मु णिरुत्तउ ।
जहिं अर्हंतदेउ तहिं सयमहु । जहिं मुणिवरु तहिं इंदियणिग्गहु ।
जहिं महिवइ तहिं रयणहं संगहु ।
ण करहेण खरेण वा णरवंदहु घंटालंबणु सहइ करिंदहु ।
हरिकरिथीआईयइं णियंदहु सयलइं रयणइं होंति णरिंदहु ।

घत्ता—संकेइय पुत्ति अकंपणेण पहु णिहालिउ बालए ॥
अवमाणिवि तुम्हइं पिउतणय घणरवु पुज्जिउ मालए ॥ २१ ॥

22

रोसविमीसहं जयकासीसहं ।
इच्छियवसणहं दोहं मि पिसुणहं ।
समरि भिडेप्पिणु सिरइं खुडेप्पिणु ।
घिप्पइ सुंदरि णं वम्महपुरि ।
विउलदुगुंछिउ पहुणा इच्छिउ ।
कलहुद्देसिउ तं तहु भासिउ
तं णिसुणेप्पिणु णिवहु णवेप्पिणु ।
दराविहसेप्पिणु कज्जु मुएप्पिणु ।
णिहुकियमइ चवइ महामइ ।
भुक्खइ झीणी कोवविलीणी ।

४ MB सकुसुम ण कुसुमसरसरावलि. ५ MB किय°. ६ MB अरहतु देउ. ७ MB add after this: जहिं सुवण्णु तहिं विसयपरिग्गहु. ८ M °थीअइआइं णियंदहु; B °थीआइअइ णिअंदहु. ९ MB पहुतणय.

22. १ MB कलहुद्देसउ. २ MB add after this: कर मउलेप्पिणु. ३ MB add after this. बहु संसोप्पिणु.

6 *a* स र हु सरथः. 8 *a* सु हि वं दा क रि स णु मित्रवृन्दकृशताकारकम्. 13 *a* णि यं द हु नृचन्द्रस्य.

माणुसाणी भयविहाणी ।
आयवंचित्ती तुच्छें तत्ती ।
णिद्दइ भुत्ती गमणासत्ती ।
सइं जि विरत्ती अण्णहि रत्ती ।
पयडीवेस वि जगपंकयरवि ।
सा करिकरभुय भरहेसर सुय ।
णालिंगिज्जइ णेय रमिज्जइ ।
एह पउत्ती पँरकुलउत्ती ।
उद्दालंतहं असु मइलंतहं ।
णाउ मुयंतहं उप्पहि जंतहं ।
भो जुवणिवयइ इहपरभवगइ ।
अवसें णासइ तुह किं दीसइ ।

घत्ता—ससि दिणयरु जलहरु जलणु जलु गयणु महीयलु वाउ वि ॥
अणजीवियकारणु धुवु मुणहि सुंदर तुहुं तुह ताउ वि ॥ २२ ॥

23

धणवंतेण अहव दीणेण वि अकुलीणेण वि सकुलीणेण वि ।
लइय सयंवरि कुवरि ण हिप्पइ हियवउ गरुयं पावें लिप्पइ ।
एहु पियामहेण तुह तायं मग्गु पयासिउ मणुसंघायं ।
इहु लंघिवि जो भूयइं तावइ सो णरु दुज्जसु दुग्गइ पावइ ।
एम कहंतहं णउ पडिबुद्धउ णं घएण सित्तउ धूमद्धउ ।
अक्ककित्ति पडिलवइ विरुद्धउ जइयहुं वीरवट्टु महु बद्धउ ।
जइयहुं फणिवइ भइण चवाकिउ जणणें जलहरसरु जउ कोक्किउ ।
तइयहुं महुं रोसाणलु हुयउ णियमिउ एंतु खलहं जमदूयउ ।

४ MB जा अवचिंती. ५ MB read this line as. गमणासत्ती, णिंदइ (B णंदइ) भुत्ती. ६ MB अण्णहु ७ G omits this line. ८ B अणु. ९ MB कारण धुउ.

23. १ MB सुकुलेणेण वि अकुलीणेण वि. २ MBK नीरपट्टु.

22. 12 *a* जा य व चि त्ती या अपचित्ता उन्मत्ता.

23. 4 *a* भू य इं प्राणिनः. 5 *b* धू म द्ध उ अग्निः. 7 *b* ज उ जयः इति नाम्ना.

वारिउ छण्णपउत्तिहिं बप्पें　　अज्जु सयंवरमालातुप्पें ।
सो कुलइ पज्जलियउ वइहरु　　रिउलोहियसित्तउ ओहट्टइ ।

घत्ता—मो ओसरु कण्णइ काइं महु हउं किं मग्गु ण बुज्झवि ॥
जउ अप्पु वि भडलीहहि गणइ तेण समउ रणि जुज्झवि ॥ २३ ॥

24

ताडिय समरभेरि कउ कलयलु　　झणि उद्धाइउ चउरंगु वि बलु ।
रक्खिय सिक्खिय वइरिवियारण　　सूरारूढ सूर वरवारण ।
मेंढपयंगुट्ठहिं संचोइय　　गज्जमाण मेहा इव धाइय ।
हरिखरखुरखयखोणीमंडल　　वाहिय वरकामिणिमणचंचल ।
रहहंखोलमाणधयडंबर　　दिसविचित्तछत्तछण्णंबर ।
चक्कचारचूरियविसहरसिर　　असिझससमुसललउडहलंगलकर ।
सुणमि सुविणमि महापहु णहयर　　अट्ठ चंद णामें विज्जाहर ।
जुवराएण रणंगणि मुक्का　　गरुडवूहु णहि विरइवि थक्का ।
विजयघोसि करिवरि आरूढउ　　बालु महाहवसयणिग्घुट्ठउ ।
चक्कवूहमज्झत्थु विहावइ　　रवि परिवेसें वेढिउ णावइ ।
एत्तहि कण्ण पइट्ठ जिणालउ　　णिच्चमणोहरु णाम विसालउ ।
रक्खिज्जंती किंकरवग्गें　　थिअ णिच्चलमण काओसग्गें ।
झायइ हो विवाहवित्थारें　　णाणाजीवरासिसंघारें ।
एत्तहि दूएं कज्जु समीरिउ　　तं चक्कवइसुपणवेहेरिउ ।

घत्ता—एत्तहि जामाएं पुलइएण भणिउ अकंपणु धणुहु धरि ॥
रिउ जिणिवि जाम पडिवलमि हउं ता तरुणिहि रक्खणु करि ॥ २४ ॥

३ M वहुइ. ४ MBK बुज्झमि. ५ MBK भडलीलहि. ६ MBK जुज्झमि.

24. १ MB किउ. २ K मेंठ°. ३ MB हयखुरेहिं खय. ४ MB चक्कचार°. ५ MB अट्ठचंद. ६ MB °सयणिव्वूढउ. ७ MB थिय तायाणइ काओसग्गें. ८ MB झाइय.

24. 5 *a* °धयडंबर ध्वजाटोपः. 9 *b* बालु अर्ककीर्तिः.

25

तेण समउ वरवीरु रणुब्भडु चलिउ सुकेउ सूरमित्तु वि भडु ।
खग्गपाणि भीसणु परसिरिहरु देवकित्ति जयवम्मु ससिरिहरु ।
पंच वि ससिरविणायकुलुब्भव पंच वि कयसंगाममहुच्छव ।
पंच वि णं आसीविसविसहर पंच वि मउडबद्ध रणसहयर ।
पंच वि लोयवाल णं दारुण पंच वि पंच णाइं पंचाणण ।
अरितरुमयकंताराविणासण पंच वि णं सइं पंच हुयासण ।
मेहप्पहु खगवइ तहिं छट्ठउ करणहउयरि णाइं मणु दिट्ठउ ।
जउ जि जीउ जहिं ववसिउ जायउ तहिं ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ ।
विरइयमयरवूहअब्भंतरि थिउ वेयड्ढमहाकरिकंधरि ।
दीसइ सोमप्पहसुउ केहउ वणगिरिमत्थइ केसरि जेहउ ।
चोद्दहभायरेहिं परियरियउ रवि व सकिरणकलावहिं फुरियउ ।

घत्ता—उक्खयकरवालभयंकरइं आहवि कोवावण्णइं ॥
आलग्गइं कण्णाकारणिण अक्ककित्तिजयसेण्णइं ॥ २५ ॥

26

परिहियकंचणकंचुइकवयइं सामरिसइं संवरियावयवइं ।
भडमुहमुक्कहक्कलल्लक्कइं भामियचक्कइं भेसियसक्कइं ।
झसकोंतासणिघोरायारइं झणझणंतधणुगुणटंकारइं ।
मुक्कपिसक्कच्छइयगयणयलइं रुहिरवारिरेल्लियधरणियलइं ।
अंकुसवसविसंतमायंगइं संदणसंकडपडियतुरंगइं ।

25. १ MB वरधीरु. २ MB मित्तसूरु. ३ B जयधम्मु. ४ MB रणसयकर, K रणमहयर. ५ M अइतरु° but gloss अरिः. ६ MB णावइ. ७ MB कोवाउण्णइ. ८ MB °सेणइ.

26. १ MB पहरिय°. २ MB °कचुय° ३ MB झसकुंतायणि°. ४ MB रुणुरुणंत°.

---

25. 6 *a* अरितरुमयकंतार° अरयः एव तरवस्तन्मय यत्कान्तारमरण्यम्. 8 *a* ववसिउ शत्रुपराजयकरणे उद्यतः, *b* ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ रिपुरर्ककीर्तिः सुलोचनोद्दालनादिलक्षणं कर्मसंघातं न धरति न स्वीकरोति.

26. 2 *a* °लल्लक्कइं रौद्राः. 4 *a* °पिसक्क° बाणाः.

असिणिहसणसिहिसिहपिंगलियइं   लुयकरसिरउराइं महिघुलियइं ।
मिलियकरालकालवेयालइं   हणेहणरावसमुग्गयरोलइं ।
रुंडखंडभावियभेरुंडइं   खंडियधवलछत्तधयदंडइं ।
घत्ता—जुज्झंतइं दिट्ठइं विसरिसइं पयलियवणरुहिरुल्लइं ॥
वेण्णि वि सेण्णइं णं रणसिरिए[6] बद्धइं केसुअफुल्लइं ॥ २६ ॥

27

रत्तमत्तरयणियरवेंभले[1]   धारणीयलुलियंतचोंभले ।
पहयहत्थिमत्थिक्कपंकए   रसवसाणई[2]जणियसंकए ।
उद्धबद्धचिंधोहलूरणे   तियससुंदरीतोसपूरणे ।
उयरऊरुउरयलवियारणे   वइरिघरिणिमणिहारहारणे ।
भीरुवयणणीसरियहारणे   मरणदारुणे तहिं महारणे ।
ता जएण संपेसिया सरा   पुंखलग्गहुंकारखरसरा ।
आहया हया विद्धया धया   णिग्गया गया णिम्मया मया ।
ते ण किंकरा जे ण मारिया   ते ण राइणो जे ण दारिया ।
तं ण छत्तयं[3] जं ण छिण्णयं   तं ण वाहणं जं ण भिण्णयं ।
सो ण रहवरो जो ण भग्गओ   सो ण खेयरो जो ण खं गओ ।
ताम पक्खिपक्खेहिं विज्जियं[4]   मग्गणेहिं किवेणं[5] व तज्जियं ।
फुट्ट[6]कंचुयं फुट्टमद्दलं   तुट्टपक्खरं मुक्ककुंतलं ।
घायघुम्मिरं चत्त[7]गोंदलं   चक्किसूणुणा णिग्गयं बलं ।
समरकोच्छरो हसिय[8]अच्छरो   बंधुपरिहवे बद्धमच्छरो ।
झत्ति बाहुबलिदेवतणुरुहो   सोमवंसतिलयस्स संमुहो ।
भुयबलीविलग्गो महाभुवो   पहु अणंतसेणो वि साणुओ ।
दिव्वलक्खणंकियसरीरहं   सयइं पंच भिडियइं कुमारहं ।

५ MB हणहणकार°. ६ M वणासिरिए; B णवसिरिए.

27. १ MB °विंभले. २ MB रसवसं णइं. ३ G छित्तयं, K छत्तय, corrects it to छित्तयं but scores out the correction and restores it to छत्तयं. ४ MB विंजिय. ५ MBK किविणं. ६ MB फट्ट°. ७ M चित्तगोंदलं. ८ MBK हरिसियच्छरो.

27. 1 *a* °वेंभले विह्वले; *b* °चोंभले समूहे बीभत्से वा. 2 *b* रसवसाणई° रसस्य वसायाश्च नदी. 7. *b* मया मृताः. 14 *a* °कोच्छरो दक्षः. 16 *b* साणुओ सानुजः लघुभ्रातृभिः पञ्चशतैः सहितः इत्यर्थः.

घत्ता—पुरुदेवतणयतणयहिं मिलिवि जउ आढत्तउ जावहिं ॥
हेमंगउ भायरवइसयहिं सह अंतरि थिउ तावहिं ॥ २७ ॥

28

णउ तासिज्जइ छिज्जइ भिज्जइ एक्कें एक्कु णं तहिं मारिज्जइ ।
लुद्धभवणि णं विहलियसत्थइं सत्थइं आविवि जंति णिरत्थइं ।
चरमदेह ण मरंति महाहवि किरं थाहिंति महामुणि याहवि ।
मेहेसरसरजालु जलंतउ कुमरहु उप्परि सिहि व पडंतउ ।
वसुसमससिविज्जहिं पडिखलियउ सहलु सपुंखउ पिट्ठु व दलियउ ।
एत्थंतरि असहायसहायहु मुहुं अवलोइवि खेयररायहु ।
भणइ कुमारु धवलु तुहुं ण कसरु वट्टइ माम तुहारउ अवसरु ।
सुणमि णिवायहि जउ महु वेरिउ ता तेण वि रिउ रणि पच्चारिउ ।
कंतामोहमहण्णवछूढउ रे जीमूयणाय तुहुं मूढउ ।
किं कड्ढिउ असिवरु पहुतणयहु दोहय णिवडिओ सि गुरुविणयहु ।
संमुहुं थाहि थाहि मा णासहि पेक्खहुं तिक्ख सिलीमुह पेसहि ।
ता सो जयणरणाहें हसियउ इय चवंतु किं णहहु ण ल्हसियउ ।

घत्ता—तुहुं कारउ परयारहु पमुहु अक्ककित्ति सइं कत्तउ ॥
हउं णायणिउंजउ धरणियले णियपहुपायहं भत्तउ ॥ २८ ॥

29

एम चवेवि चाउ अप्फालिउ णं काणणि हरिणा ओरालिउ ।
णाइं कयंतहु पडहें रसियउं जगु गिलेवि णं कालें हसियउं ।
भेसियसुरणरफणिसंघायउ जीयारउ रउद्दु संजायउ ।
णिद्धणविहुरविणाससमत्थें धणु कड्ढियउ तेण सइं हत्थें ।

१ G पुरुदेवतणयहिं.

28. १ MB तहिं ण. २ M चरमदेहे. ३ B थिर. ४ MB कुम्मरहु. ५ M भाइ. ७ MB °महण्णवे छूढउ. ७ M कायउ.

28. 3 *b* पाहवि प्रभुत्वे. 5 *a* वसुसमससिविजहिं अष्टचन्द्रैर्विद्याधरैर्विद्याभिः कृत्वा. 9 *b* जीमूयणाय हे मेघस्वर. 10 *b* दोहय हे द्रोहिन्. 13 तुहुं कारउ त्वं हेतुः कर्ता; परयारहुपमुहु परदारगमनस्य प्रमुखः प्रधानः; सइंकत्तउ स्वतन्त्रः कर्ता. 14 णायणिउंजउ न्यायनियोजकः.

29. 1 *b* हरिणा सिंहेन.

लोहवंत किर के णउ मग्गण धम्मुज्झिय किर के णउ भीसण ।
गुणवज्जिय किर के णउ णिट्ठुर पिच्छंचिय किर के णउ णहयर ।
चित्तविचित्त के ण किर चलयर [1]वम्मण्णेसिय के [2]णेउ ताविर ।
सुद्धिवंत णियदित्तिइ दित्ता उज्जुय के ण मोक्खु संपत्ता ।
वइरिहि देहावयवि पइट्ठा एक्क ण जयसर अण्ण वि दिट्ठा ।
कोडीसरु जि जाहं पवरासणु ताहं ण दुग्गमु लक्खु विणासणु ।

घत्ता—अइदीहहिं विसविसमाणणहिं णिहिलु णहंगणु रुद्धउ ॥
णारायहिं णायहिं णं मिलिवि सुणमिहि बलु खणि खद्धउ ॥ २९ ॥

30

कुंजर [1]जरभावेण व भग्गा तुरय [2]तुरंततयपहि लग्गा ।
संदण संदाणिय वावल्लहिं भणु [3]कहिं किर णिज्जंति रहिल्लहिं ।
तिक्खखुरुप्पहिं छिण्[4]णइं छत्तइं चिंधइं चामराइं वाइत्तइं ।
चउदिसु पच्छाइयसरजालें विज्जाहर हरेवि णियकालें ।
एम दिसावलि संदिज्जंतउ पेच्छिवि णियबलेण्णु भज्जंतउ ।
सुणमिं मुक्कु बाणु [5]संधारउ ढंकिउ तेण वइरिपरिवारउ ।
कोइ ण काइं वि तेत्थु णिहालइ [6]आहणु पहरणु को वि ण चालइ ।
एत्थु तेत्थु भग्गियअवठंभणु सालसणयणु पमेल्लियजिं[7]भणु ।
बलु णीलीरसि बोलिउ णावइ जाम अहइ णिइ सं[8]पावइ ।
दिणयरसरदीवियदहदिप्पहु तावंतरि संठिउ मेहप्पहु ।

घत्ता—तं घंतु महंतु विणासियउ उज्जोइउं णियं[9]सुहिमुहुं ॥
जगि सज्जणसंगें जायएण कासु ण संपण्णउं सुहुं ॥ ३० ॥

29. १ M मर्म्मे णिसिय; B घर्म्मे णिसिय. २ MB ण संताविर.

30. १ MB जरतावेण जि भग्गा. २ MB तुरंत तहे पहि. ३ MB किर कहिं. ४ MB छिण्णहिं. ५ MBK अंधारउ. ६ M परहणु. ७ MB जेंभणु. ८ MB संपावइ. ९ B णियसहिमुहुं.

7 *b* वम्मण्णेसिय मर्मान्वेषिणः. 9 *b* जयसर जयस्य बाणाः जितस्मराश्च.

30. 1 *a* जर° ज्वरः; *b* तुरंततयपहि तुरंत त्वरमाणाः + अंतयपहि अन्तकमार्गे. 2 *a* वावल्लहिं सेल्लैः; *b* रहिल्लहिं सारथिभिः. 9 *b* अहइ अभद्रा. 10. *b* मेहप्पहु मेघेश्वरमित्रः.

31

णं जलहरु जलहरु गइ दूसिवि धाइउ तासु सुणमि आरूसिवि ।
सुणमिं मुक्कु भीमु पंचाणणु मेहप्पहेण सरहु फुरियाणणु ।
सुणमिं मुक्कु जलंतु हुयासणु मेहप्पहेण मेहें जलवरिसणु ।
सुणमिं मुक्कु सकंदरु मंदरु मेहप्पहेण सकुलिसु पुरंदरु ।
सुणमिं मुक्कु विसंकु महाफणि मेहप्पहेण गरुडु खगासिरमणि ।
सुणमिं मुक्कु महंतु महीरुहु मेहप्पहेण तणूणवु दूसहु ।
सुणमिं मुक्कु मत्तसोंडालउ मेहप्पहेण सीहु दाढालउ ।
जं जं सुणमि महाउहु पेसइ तं तं मेहप्पहु विद्धंसइ ।

घत्ता— णउ सक्किउ विसहहुं रिउहि सर कसरु व मुहुं वंकेप्पिणु ॥
ओसरिउ सुणमि खयराहिवइ संगरभारु मुएप्पिणु ॥ ३१ ॥

32

भग्गइ सुणमीसरि सोंडीरहिं अद्धचंदविज्जाहरवीरहिं ।
मेहप्पहु पहरेहिं पराजिउ सो णासंतु णं सुरहं वि लज्जिउ ।
दाणवारिपीणियमहुयरउलु णहयललग्गतुंगकुंभत्थलु ।
कणिरकणयकिंकिणिकोलाहलु करसिक्कारसित्तधरणीयलु ।
आयसवलयबद्धदंतुज्जलु ता जएण संबोहवि मयगलु ।
पभणिउ अक्ककित्ति लहु आवहि अज्ज वि सुंदर काइं चिरावहि ।
चंगउ कियउ रायपुत्तत्तणु णिहियउ तिहुयणि दुज्जसकित्तणु ।
परणरणारिहि भउयणमागिहि रत्तओ सि जं देवकुमारिहि ।
तं पइं णरवइआण णिसुंभिय णिद्दय जारवित्ति पारंभिय ।
तं णिसुणेप्पिणु उत्तरु धुत्तें पडिजंपिउ भरहाहिवपुत्तें ।

31. १ MB जलहर°. २ MB भूसिवि; ३ K मुणमि नासु. ४ MBK मेहु. ५ M सुकंदरु. ६ MB महातरु. ७ M तणूयउ; B तणूणउ. ८ MB महत्थु संपेमइ. ९ MB वंकेविणु.

32. १ MB सुणमि समरि. २ MB अद्धचंद°. ३ M वि. ४ G करि°. ५ MB सित्तु. ६ MB थिरावहि. ७ MB उत्तर.

---

31. 2 *b* सरहु अष्टापदः. 6 *b* तणूणवु तनूनपात् अग्निः.

32. 4 *a* कणिर° शब्दवत्य°.

घत्ता—महु संणिहि आउ सुलोयणए अत्थि भवणि घडदासिउ ॥
हउं लग्गउं तुह भुयबलमयहो पुव्वमेव आसासिउ[7] ॥ ३२ ॥

33

जेण बलेण जित्तु घणमंडलु तोसिउ ससुरु सग्गि आहंडलु ।
तं बलु पेक्खह दावहि अम्हहं अज्जु परिक्ख करेवी तुम्हहं ।
वेहाविउ आवत्तचिलायहिं तुहुं वि बप्प जुज्झहि सहुं रायहिं ।
तहिं अवसरि सेंदूर[1]कणारुण जयवारणहु विलग्गा वारण ।
अट्ठ अट्ठ[2]चंदेहिं आवाहिय कक्खरिक्खगेज्जावालिसोहिय ।
एक्कु दंति जुवराएं ढोइउ णं इंदें अइरावउ[3] चोइउ ।
हयअरिकरिवरेण ते दंतहिं णिवडियणवविललंतहिं अंतहिं ।
सरससमुच्छलंतपलखंडहिं दोखंडीहवंतदढसोंडहिं ।
घत्ता—गय पाडिय सूडिय णं सिहरि धरणिवीढु आकंपिउ ॥
देवा[4]सुरहिं णहि संठियहिं जय जय जयणिव जंपिउ ॥ ३३ ॥

34

एत्तहि रणु कयसूरत्थवणउं एत्तहि जायउं सूरत्थवणउं ।
एत्तहि वीरहं वियलिउ लोहिउ एत्तहि जगु संझारुइ[1]सोहिउ ।
एत्तहि कालउ गयमयविब्भमु एत्तहि पसरइ मंदु तमीतमु ।
एत्तहि करिमोत्तियइं विहत्तइं एत्तहि उग्गमियइं णक्खत्तइं ।
एत्तहि जयणरवइजसु धवलउ एत्तहि धावइ ससियरमेलउ ।
एत्तहि जोहविमुक्कइं चक्कइं एत्तहि विरहें रडियइं चक्कइं ।
कवणु णिसागमु किं किर तहिं रणु पउ ण वुज्झइ जुज्झइ भडयणु ।
ता चप्पिवि मंतिहिं ओसारिउ रयणिहि जुज्झमाणु विणिवारिउ ।
तुमुलरंगें णिरु रोसाउण्णइं[2] तेत्थु जि वसियइं वेण्णि वि सेण्णइं ।

७ MBK आरोसिउ.

33. १ MB सिंदूर°. २ MB अद्धचदेहिं. ३ MB अवराइउ ४ MB देवासुर.

34. १ MB संझारुणु सोहिउ. २ MB रोसाइण्णइ.

---

33. 5 *b* °गेज्जावलि° वरत्राभि.. 7 *b* अंतहिं अन्त्रैः.

34. 3 *b* तमीतमु रात्र्या अन्धकारः.

घत्ता—रत्तिहिं रणरंगि भवंतियए णरवइकज्जि समत्तउ ॥
घरिणिइ पिउ सहियहिं दावियउ सरसयणयलि पसुत्तउ ॥ ३४ ॥

35

का वि भणइ ईसावसरुट्ठी खग्गधार पियहियइ पइट्ठी ।
तक्कयरत्तहु हउं किंह रुच्चमि हयविहि प्राणहिं काइं ण मुच्चमि ।
का वि भणइ जं मइं पडिवण्णउं पिय तं हियउ सिवहि किं दिण्णउं ।
जं मइं चिरु दंतग्गहिं खंडिउं अहरबिंबु तं पक्खिणिखंडिउ ।
का वि भणइ पिय करु मा ढोयहि ओसरु कावालिय किं जोयहि ।
पट्टालंकियसीसहु लक्खणु मं छुडु तुहुं णिग्घिण दुवियक्खणु ।
जो मइं चप्पिउ आसि थणंतहिं सो रुंद्धउ उरु करिवरदंतहिं ।
पणयसणिद्धइं पणइणिठाणइं का वि सणाहहु खंडइ वीणइं ।
का वि भणइ जाणवि तणुथाणुहि आणिय पासि परेहिं णिहाणुहि ।
णाहें अंतणिबंधणु दिण्णउं असिधेणुयइ सासु लइ छिण्णउं ।
को वि दुवासखुत्तरिउचक्कउ उप्परि रहहु महारहु थक्कउ ।
केण वि संचिय णिवरिणहारी रयणकोडि मायंगहु केरी ।
लइय भिंडेप्पिणु दोहिं वि हत्थहिं भणु किं ण कियउ पत्थु समत्थहिं ।

घत्ता—रिउ मारिवि पच्छइ उवसमिवि मेल्लिवि ससरु सरासणु ॥
गयवरसंथारइ को वि मुउ करिवि वीरसंणासणु ॥ ३५ ॥

35. १ MB किं रुच्चमि २ MB पाणहिं. ३ M मुहु. B महु. ४ K चहिउं. ५ MB अहरबिंबु पक्खिणिहिं विहंडिउ. ६ MBK जोयहि. ७ K णिरिघ. ८ MB रुद्धउ अरिवरकरिदंतहिं. ९ MB °समिद्धइं. १० MB °ठाणइं. ११ T णिभाणुहे १२ MB अज णिबधणु. १३ MB मीसु लइ छिण्णउं. १४ MB धीर-संणासणु.

10 समत्तउ समाप्तो मृतः. 11 पिउ प्रियः.

35. 2. *a* तक्कयरत्तहु खड्गधाराकृतरक्तस्य. 9. *a* तणुथाणुहि शरीरस्तम्भस्य; *b* णिहाणुहि पुरुषादित्यस्य. 10 *b* सासु निःश्वासः.

36

पुणु जामिणीगमणि   दिणमणिसमुग्गमणि ।
भेरीणिणद्दाइं   कयजयविमद्दाइं ।
जममुहरउद्दाइं   ह[1]रियंदणद्दाइं ।
गज्जिय[2]मेयंगाइं   हिंसियतुरंगाइं ।
वाहियरहोहाइं   संणद्धजोहाइं ।
चलवलियचिंधाइं   धूलीरयंधाइं ।
कि[3]लिगिलियणिसियरइं   जिगिजिगियअसिवरइं ।
कंपियध[4]यग्गाइं   सेण्णाइं लग्गाइं ।
ता संदणत्थस्स   आहवसमत्थस्स ।
णरसिर लुणंतस्स   करि हरि हणंतस्स ।
विहवियदणुयस्स   लच्छिमइतणुयस्स ।
प[5]रिचत्तसंकेहिं   वसु[6]समससंकेहिं ।
उब्भूयगावेण   विज्जापहावेण ।
परपाणपहरणइं   छिण्णाइं पहरणइं ।
कोंताइं कंप[7]णइं   मुसलाइं घणघणइं ।
चावाइं चक्काइं   दूरेवि मुक्काइं ।
ता गलियसत्थेण   चित्ते[8] महत्थेण ।
जयणामराएण   इच्छियसहाएण ।
जियसरयमेहम्मि   जो आसि गेहम्मि ।
सिद्धो सउण्णेण   ध[9]ण्णेण वीरेण ।
अहिराउ संभरिउ   सो झत्ति अवयरिउ ।
फणिवासु रणि तिव्वु   अद्धेंदुसरु दिव्वु ।
ढोएवि खणि तासु   गउ णाइणीवासु ।

36; १ M हरियब°. २ MB °मइंगाइं. ३ MB किलिकिलिय°. ४ MB °धयग्गाइं. ५ MBK परियत्त°. ६ B omits this foot. ७ MB कप्पणइं. ८ MB चिंतियमहत्थेण. ९ MB धीरेण धण्णेण; G धम्मेण वीरेण.

36 3 *b* हरियदणद्दाइं हरिचन्दनार्द्राणि. 11 *b* लच्छिमइतणुयस्स जयस्यार्थे:. 12 वसुसमससंकेहिं अष्टभिर्विद्याधरैः. 20 *a* सउण्णेण सपुण्येन. 22 फणिवासु नागपाशः.

ता विजयवंतेण ससिभासपुत्तेण ।
जाला मुयंतेण जालियदियंतेण ।
हुयवहसमाणेण [10]अहिदिण्णबाणेण ।
कूबरधुरासहिअ णिद्दहिवि [11]रणि रहिय ।
दरमलिय[12]धयसंडि णच्चवियारिउँ [13]रुंडि ।
परिभमियगिद्धउलि पइसरिवि भडतुमुलि ।
अट्ठ वि विहु तेण बद्धा तुरंतेण ।
कूरारितासेण दढ[14]णायवासेण ।
धरिओ रुसारुणउ चक्कवइपिउ[15] तणउ ।
घत्ता—जिणु तायताउ पिउ [16]रायवइ तो वि णिबंधणु पत्तउ ॥
[17]उइँ माइ कु[18]मारु णराहिवेण दुक्कियफलु किह भुत्तउ ॥ ३६ ॥

37

पव्व चवंतिहिं सुरवरगणियहिं वण्णिउं जयसाहसु घणथणियहिं ।
घल्लिउ कुसुमपयरु सुरणियरें गाइउं णं रुणुरुणियं भमरें ।
जयविलासु जयरायहु केरउ दइवहु तणउं चारु विवरेरउ ।
रहणिहियउ कुमारु विच्छायउ करकलियंकुसचोइयणा[1]यउ ।
जलहरसरु पइट्ठु ससुरयघरि विजयाणंदु प[2]वड्ढिउ पुरवरि ।
तक्खणि सयल वि परमवतत्तिइ गय जिणभवणहु परमइ भत्तिइ ।
जम्मावासपासविवरंमुहु वंदिउ अरुहु तिजगपुज्जारुहु ।
मिलियणरिंदहिं मउलियपाणिहिं मुहकुहरुग्गयसुललियवाणिहिं ।
बहुमिच्छत्तबीयउप्पण्णउ मोहविसालमू[3]लु वित्थिण्णउ ।
चउगइखंधु सुहासासाहउ पुत्तकलत्ततुलियपारोहउ ।

१० B अहदिण्ण°. ११ MB रहराहिय. १२ धरसडि. १३ M रिउखंडि. १४ MB °णायपासेण. १५ MB °पिय. १६ M चक्कवइ. १८ B एवमाइ. १८ K कुमार.

37. १ MB °णाइउ. २ MB पवट्टिउ. ३ K °मूल.

24 *b* ससिभास° सोमप्रभ., 27 *a* कूबर° रथमुखम्, *b* रहिय सारथिम. 30. *a* अट्ठ वि विहु अष्टापि चन्द्रा विद्याधरस्वामिनः. 34 उइ माइ पश्य मातः.

37. 3 *b* चारु चेष्टा. 4 *b* °णायउ गजः.

गहियमुक्कबहुविहतणुपत्तउ पुण्णपावकुसुमेहिं णिउत्तउ ।
सोक्खदुक्खफलसिरिसंपण्णउ इंदियपक्खिउलहिं पडिवण्णउ ।
घत्ता—इय भवतरु झाणहुयासणेण पइं दड्ढउ परमेसर ॥
जिण जम्मि जम्मि महुं तुहुं सरणु जय जय जियवम्मीसर ॥ ३७ ॥

38

अक्ककित्तिदुज्जयजयरायहं महु कारणि उब्भाइयघायहं ।
पयहुं मरइ मज्झि जइ एक्कु वि पच्छइ इच्छइ जइ मइं सक्कु वि ।
तो वि णिवित्ति मज्झु आहारहु लच्छिहि कुच्छियकुणिमसरीरहु ।
इय चिंतंति पुत्ति संभाविय लंबियकर ताएं बोल्लाविय ।
तुह सइ सामत्थें असमंजस रणि उव्वरिय महीस महाजस ।
हुइ संति होउ किं झायहि सुंदरि करपल्लव उब्भायहि ।
जणणवयणु णिसुणेवि कुमारिइ णियमु विसज्जिउ कामकिसोरिइ ।
सिरिणाहहु गिरि व्व आवग्गी जयरायहु करपंकइ लग्गी ।
जाइवि पासि कुमारहु णेहें महिणिहित्तदंडासणदेहें ।
जउ साकं पुणु पायहिं पडियउ भासइ सामिभत्तिभरणमियउ ।
अम्हइं णर तुहुं णरपरमेसरु अम्हइं पक्खि देव तुहुं सुरतरु ।
अम्हइं णलिणायर तुहुं दिणयरु अम्हइं कुवलयसर तुहुं ससहरु ।
अणुपालियहं काइं रूसिज्जइ अभयपदाणु सभिच्चहं दिज्जइ ।
घत्ता—इय वयणहिं सो भरहंगरुहु मच्छरु माणु मुयाविउ ॥
लच्छीमइवहिणिसुलोयणहे पुप्फयंतु परिणाविउ ॥ ३८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सुलोयणासयंवरविवाहो णाम अट्ठावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २८ ॥

॥ संधि ॥ २८ ॥

५ MB जय णिज्जियवम्मेसर.

38. १ MB जइ मइं इच्छइ. २ MB संधि ३ MB साकंपणु, K सांकंपणु? ४ MB भावइ. ५ M भत्तिभरणडियउ; B °तत्तिभरणडियउ. ५ MB वयणें.

12 b पडिवण्णउ आश्रित..

38. 5 a असमंजस कोपाविष्टा.., 8 a सिरिणाहहु विष्णो..

XXIX

जे रुद्धा संगरि बंद्धा ते णिव मेल्लिवि पुज्जिय ॥
पियवयणहिं वत्थाहरणहिं णियणियपुरहं विसज्जिय ॥ ध्रुवकं ॥

1

किह हउं संपत्तउ बंधणारु जा सोयइ अप्पउ णिवकुमारु ।
ता पभणिउं तेणाकंपणेण जिणचरणलीणणिच्चलमणेण ।
तुहुं बद्धउ णं णिववंसि चिंधु तुहुं बद्धउ णं सुयणोहबंधु ।
तुहुं बद्धउ णं मायंगदंतु तुहुं बद्धउ णं सरहलु महंतु ।
तुहुं बद्धउ णं सासेण बीउ तुहुं बद्धउ णं पुण्णेण जीउ ।
तुहुं बद्धउ णं सिरिमणिविलासु तुहुं बद्धउ णं सुकहाविसेसु ।
हेलइ जएण जयराइएण तुहुं बद्धउ णं रसवाइएण ।
इयरह किं अम्हहं सहलु होसि अण्णाएं दूसिउ खयहु जासि ।
इय भणिवि तेण कयदेहदित्ति णियपुरहु विसज्जिउ अक्ककित्ति ।

घत्ता—घरु जाइवि लज्ज पमाइवि सिरु पयजुयलइ ढोइउ ॥
तें भरहहु अरिहरिसरहहु कह व कह व मुहुं जोइउ ॥ १ ॥

B give, at the commencement of this Samdhi, the following stanzas:-

णाइन्दसुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवासिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥
तन्त्रीवाद्यैरनिन्द्यैर्वरकविरचितैर्गद्यपद्यैरनेकै·
कान्तं कुन्दावदातं दिशि दिशी च यशो यस्य गीतं सुरौघैः ।
काले तृष्णाकराले कालिमलमलितेऽप्यस्य त्रियाप्रियो यः
सोऽयं संसारसारः प्रियसखि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥ २ ॥

GK do not give the stanzas here but at the commencement of Samdhi XXX. See note on Samdhi XXX.

1. B बुद्दा. २ MB पुरहु. ३ MB सुहिणेहबंधु. ४ M सरयण्णु, BT सरयलु. ५ MBK रसु वाइएण. ६ MB बद्धउ. ७ M विसज्जिय. ८ MB ढोइयउ. ९ MB जोइयउ.

---

1. 3 *a* बंधणारु बन्धनम्. 5 *b* सुयणोह॰ सुहृदाम्. 6 *b* सरहलु काण्डफलम्. 7 *a* सासेण धान्येन. 9 *b* रसवाइएण धातुवादिना. 10 *a* इयरह अन्यथा.

2

लज्जंतु वि ताएं सो पउत्तु — वरं गलउ गब्भु मा होउ पुत्तु ।
वसणेसु रमइ खलवयणु सुणइ — अविवेयभाउ सयणाइं हणइ ।
जो एहउ सो वरं कहिं वि जाउ — मा करउ पयहिं परियणहु ताउ ।
महु चरपुरिसहिं दुद्दंतदुरिउ — पयहु केरउ वज्जरिउं चरिउं ।
होएण सुदुण्णयगारएण — ता चिंतिउ तेण कुमारएण ।
गुरुकोवें सिसु जाणंति मग्गु — गुरुकोवें जैंगि सिज्झइ तिवग्गु ।
गुरुकोवें को वि ण खयहु जाइ — गुरुकोवें संपय घरहु एइ ।
गुरुवयणइं कडुयइं जाइं जाइं — परिणामि सुपत्थइं ताइं ताइं ।
लग्गाइं ण सुइसुसिरंति जाहं — जिम परिहउ तिम धुउ मरणु ताहं ।
लइ दिज्जमि हउं दिट्ठंतु एत्थु — लंघियउ जेण गुरुसुयपयत्थु ।

घत्ता—जयवंतें सुप्पहकंतें तो पेसिउ गुणवंतउ ॥
आवेप्पिणु पहु पणवेप्पिणु पभणइ सुमइमहंतउ ॥ २ ॥

3

भो देव कसणसियतंबिराइं — लइ रयणइं लइ पवरंबराइं ।
किं तुह णवणिहिवइ पाहुडेण — किं किर जलहिहि पाणियघडेण ।
लइ भत्तितो वि णियकिंकराहं — तुह पायपोमलालियसिराहं ।
जयविजयाकंपणपत्थिवाहं — विण्णविउ णिसुणि णिव अवणिवाहं ।
पहिलउ जि दोसु दीहरभुयासु — जं दिण्णी सुय णउ तुह सुयासु ।
बीयउ जं कोक्किउ वरणिहाउ — दावियउ सयंवरविहिणिओउ ।
तइयउ जं जइ णिक्खित्त माल — रइलालस लग्गी तासु बाल ।
परघरिणि हरंतहु रोसणडिय — चोत्थउ तुह तणयहु समरि भिडिय ।

2. १ MB वरु. २ MB °वयण. ३ M किर. ४ G परिणयहु. ५ B जाएण. ६ K सदुण्णय°. ७ धुवु सिज्झइ.

3. १ MB °णिहाउ.

2. 6 *b* तिवग्गु धर्मार्थकामाः. 8 *b* सुपत्थइं सुपथ्यानि. 9 *a* सुइसुसिरंति श्रोत्रविवरमध्ये.

3. 2 *a* णवणिहिवइ हे नवनिधिपते. 3 *a* भत्तितो वि भक्तितोऽपि. 4 *b* अवणिवाहं अवनिपानां राज्ञाम्. 6 *b* °णिओउ नियोगः.

पंचमउ दोसु बद्धउ कुमारु णिउ णियणयरहु रणरंगवीरु ।
इय दोहा दोसपरंपराइं जं ण वि मुच्चहुं अज्ज वि घराइं ।
तं देव पइट्ठा तुज्झु सरणु किं दंडु एत्थु सव्वस्सहरणु ।
किं मारणु किं भणु किं[3] किलेसु तं णिसुणिवि जंपइ मेइणीसु ।
हा हउं पडिवज्जमि कासिराउ पवसियइ ताइ महु सो जि ताउ ।
जउं पुणु महु दाहिणु बाहुदंडु जं सो तं चक्कु ण वज्जु दंडु ।
उंवयरइ बप्प संगामकालि उल्ललियगिद्धखद्धंतमालि ।

घत्ता—बलगव्वें रोसें तिव्वें जो जणवउ संघट्टइ ॥
सुउ दंडवि सो सइं खंडवि जो अप्पहिण पयट्टइ ॥ ३ ॥

4

इय कहिवि तेण पट्ठविउ मंति गउ सो वोसइ णियपहुहि संति ।
णरवइ भणइ पइं पिउसमाणु जय विजय वे वि रिउतिमिरभाणु ।
महु अवर विण्णि भुयदंड भणइ तुम्हारउ माणुसु सुट्टु गणइ ।
रूसइ सदोसि गुणवंति महइ को भरहहु केरी लील वहइ ।
भंगउ किउ पुत्तहु दप्पसाडु जं कण्ण देवि विरइयउ चाडु ।
तं मज्झु णिरारिउ डहइ अंगु णउ किज्जइ खलि संमाणसंगु ।
ता जयकंपण हरिसियसुधाम कुरुवंसणाह वंसाहिराम ।
धरणिहियमंतिअप्पाहिएण दुज्जयचिलायसप्पाहिएण ।
अणवरयणवियजिणवरपएण अणुहुंजियणरवइसंपएण ।
अण्णहिं दिणि आणंदियजएण आउच्छिउ णियमसुरउ जएण ।

घत्ता— तुह गोट्ठिहि जिणवरदिट्ठिहि माम विरइ किं किज्जइ ॥
अविणम्में तो वि सकम्में जीउ णियड्ढिवि णिज्जइ ॥ ४ ॥

२ K रणरंगधीरु. ३ MB तणुकिलेमु. ४ B जमु. ५ MB महु पुणु. ६ MBK वजदंडु. ७ M उवरइ.
4. १ G माणु सुट्टु. २ MB रमइ. ३ MB गमइ. ४ MB पुत्तहु किउ. ५ M °वरदिट्ठहे.

10 *a* दोहा द्रोहिणः. 15 *b* गिद्धखद्धतमालि गृध्रैर्भक्षिता अन्त्रश्रेणय यस्मिन्. 16 संघट्टइ पीडयति.
4. 5 *a* दप्पसाडु मानभङ्गः; *b* देवि दत्वा. 12 अविणम्में निष्ठुरेण.

5

को विसहइ सुहिविच्छोयताउ परियाणवि कज्जवियप्पभाउ ।
उम्मुकु सुयावरु ससुरएण तें जंतें हरिखुरखयरएण ।
णहु पिहिउ गिल्लु महि करिमएण चलवलिउ खलिउ धयवडु घएण ।
कय जलहिवलय चलवलियणीर थिय विसहर भरभयदलिय धीरें ।
उट्ठिय गहीर भेरीणिणाय आकंपिय ककुहणिवास णाय ।
गच्छंतु संतु सो समियसत्तु दियहहिं गंगाणइतीरें पत्तु ।
णियणियदूसावासहिं सउण्ण हेमंगयाइ सयल वि णिसण्ण ।
पडकुडिहि महामहु सुरसमाणु थिउ राणउ गंग पलोयमाणु ।

घत्ता—सविहंगहि दिट्ठइं गंगहि छणससिरविपडिबिंबइं ॥
णं वेल्लिहि अमरसुहेल्लिहि कुसुमइं पंडुरतंबइं ॥ ५ ॥

6

आमेल्लिवि खंधावारु तेत्थु कइवयभडेहिं सह महिमहत्थु ।
साकेयहु जाइवि भुवणसारि थिउ पंजलियरु णरवइदुवारि ।
पडिहारें पइसारिउ दवट्टि विण्णविउ णवेप्पिणु चक्कवट्टि ।
विसहरणरखेयरविहियसेव जउ पणवइ पत्तहि पेक्खु देव ।
ता दिण्ण दिट्ठि णाहें विसाल ससिवियसिय णं कंदोट्टमाल ।
पसरंतपणयरससायरेण मुहुं जोइवि सइं परमेसरेण ।
णं कलियइ णेहमहीरुहासु अंगुलियइ दाविउ पीढु तासु ।
उवविट्ठु तुट्ठु संमाणु कियउ पोरिसु परमुण्णइं सहहि णियउ ।

5. १ B कज्जु. २ MB add after this: पडिबोहिउ बुहमण्णें वरेण. ३ MB add after this: पडिपेल्लिउ सदणु संदणेण. ४ M भयमर°; B पयमर°. ५ MB धीर. ६ MBK ककुहाणिवासि. ७ MB °तीरु.

6. १ MB सुट्ठु. २ MB सयहि.

5. 3 *b* गिल्ल आर्द्रा. 6 *b* ककुहणिवासणाय दिग्गजाः. 9 *a* महामहु महातेजाः

6. 1 *b* महिमहत्थु मह्यां महार्थो महान् महान्तो वा अर्थधर्मादयो यस्य. 3 *a* दवट्टि शीघ्रम् 5 *b* कंदोट्ट° नीलोत्पलम्. 7 *a* णेहमहीरुहासु स्वहस्तसंवर्धितवृक्षस्य कलिकया इव अङ्गुल्या. 8 *b* सहहि सभायाम्

णउ जलणहु पासिउ अवरु उण्हु परमाणुयाउ णउ अवरु सण्हु ।
गयणंगणाउ णउ अवरु गरुउ कामाउराउ णउ अवरु सरुउ ।
जिणु मेल्लिवि को तेलोक्कसामि पइं मेल्लिवि को सुहडग्गगामि ।

घत्ता—जो दुंक्खिउ सो परिरक्खिउ जं दुल्लहु तं लद्धउं ॥
पइं हांतें रणि पहरंतें जय महुं काइं ण सिद्धउं ॥ ६ ॥

7

इय भणिवि विसज्जिउ जउ महंतु राएं गउ णियसिमिरहु तुरंतु ।
चडियउ वेयड्ढमहाकरिंदि णं दिणयरु उययमहीहरिंदि ।
चमु चालिय पुणु दिण्णउं पयाणु पत्तउ सुरसरिजलमज्झठाणु ।
जोयवि गंगहि सारसहं जुयलु जोयइ कंतहि थणकलसजुयलु ।
जोयवि गंगहि सुललियतरंग जोयइ कंतहि तिवलीतरंग ।
जोइवि गंगहि आवत्तभवणु जोयइ कंतहि वरणाहिरमणु ।
जोयवि गंगहि पप्फुल्लकमलु जोयइ कंतहि पिउ वयणकमलु ।
जोइवि गंगहि वियरंत मच्छ जोयइ कंतहि चलदीहरच्छ ।
जोइवि गंगहि मोत्तियहु पंति जोयइ कंतहि सियदसणपंति ।
जोइवि गंगहि मत्तालिमाल जोयइ कंतहि धम्मेल्लु णील ।

घत्ता—णियगेहिणि वम्महवाहिणि देवि सुलोयण जेही ॥
मंदाइणि जगसुहदाइणि दीसइ राएं तेही ॥ ७ ॥

३ M दुरियउ. ४ MB पाडिरक्खिउ. ५ M दुलहउ; B दुलहु.

7. १ MB °सिविरहु. २ MB चलिय पुणु वि दिण्णउं. ३ MB जोइउ. ४ MB जोइवि. ५ MB आवत्तु भवणु ७ B णं सुहदाइणि.

10 *b* सरुउ सरोगः

7. 11 वम्महवाहिणि कामनदी. 12 मंदाइणि गङ्गा.

8

आहंडलमयगलसरिसलीलु तहि अवसरि मेयहें[1] धरिउ पीलु।
सहुं बहुवरेण पयलंतदाणु[2] बहुजलत्थिलंति बोलिज्जमाणु।
दहि[3] पियदुहकयअवलोयणाइ धप्पाणउं घित्तु सुलोयणाइ।
आलम्गपुच्छकच्छंतरालि हाहारववड्डियगरुयरोलि।
अवलोइवि रुइओहामियक्क हेमंगयपमुह कुमार ढुक्क।
एत्थंतरि थरहरियासणाइ देवंगवत्थसुइणिवसणाइ[5]।
वणदेविइ वारियवइरिणीइ करि कड्डिउ सुरसरितीरिणीइ[6]।
णं धणसंपत्तिइ कामभोउ उद्धरिउ अहिंसइ णं तिलोउ।
णिविसद्धें[7] णिउ सुरसरिहि तूहु हरिसें णच्चिउ किंकरसमूहु।
रणि वणि जलि जलणि समाइएण रक्खिज्जइ पुरिसु पुराइएण।

घत्ता—वेउव्विउ घरु मणिणिम्मिउ चारुतीरि सुयसेविए[8] ॥
हरिऊढइ थविवि सुपीढइ ण्हविय सुलोयण देविए ॥ ८ ॥

9

दिण्णइं सुरजोग्गइं णिवसणाइं दिण्णइं अण्णण्णइं[1] भूसणाइं।
दिण्णी वियसिय मंदारमाल सहुं[2] णरवरेण विंभइय बाल।
पभणइ का तुहुं करि केण धरिउ किं तारियै[3] सरि सो कवणु तरिउ।
भणु भणु सुरसुंदरि सुयणवंदि ता भणइ सा वि हिंडियपुलिंदि।
विंझउरिकडइ[4] विंझइरि अत्थि पइ विंझकेउ बलकलियहत्थि।
महएवि पियंगुसिरी सुरूय हउं विंझसिरी णामेण धूय।
परियाणावि तायं तुह पहाउ सिक्खहुं णीसेसु कलाकलाउ।

8. १ MB हारें. २ M पलयंत°. ३ MB read this line as 5. ४ MB reed this line as 3. ५ MB °णियसणाइ. ६ MB तीरिणीइ. ७ GK णिवसद्धें but gloss निमेषार्धः. ८ MB सुयसेविए.

9. १ B अण्णइं. २ MB सहुं. ३ MB तारिउ. ४ MB विंझइरि°.

8. 3 *a* दहि ह्रदे. 9 *a* तूहु रोधस्तटम्. 10 *b* पुराइएण पूर्वार्जितेन कर्मणा. 11 सुयसेविए श्रीसेविते.

9. 8 *b* तरिउ तारकः.

हउं तुज्झु समप्पिय हे वयंसि संभेरसि ण कीलहुं जं गयासि ।
णंदणवणि विउलि वसंततिलइ हउं दट्ठी सप्पें वेल्लिणिलइ ।
असिआउसाइं वंजणविसिट्ठ पइं परम मंत महु पंच सिट्ठ ।

घत्ता—ते णिसुणिवि दुक्किउ णिहुणिवि पही लद्ध विहूई ॥
सुरणीडइ गंगाकूडइ गंगादेवय हुई ॥ ९ ॥

10

कीलंती कुच्छियविसहरेण सह सरसें णाहें णिब्भरेण ।
जा पहय सरलदलकोमलेण तुइ कंतें कररत्तुप्पलेण ।
जा णासंती अवरहिं णरेहिं मुसुमूरिय दंडहिं पत्थरेहिं ।
सा हुई णिसुणहि हलि पियालि जलदेवय णामें पत्थु कालि ।
ओलक्खिवि जउ वइराणिबंधु पवणंदोलणघोलंतचिंधु ।
मयरीइ हवेप्पिणु कूरिमाइ कुंजरु कड्डिउ कुद्धाइ ताइ ।
मइं जाणिउं आसणकंपणेण जा जणिय मयच्छि अकंपणेण ।
सा किं हम्मइ खलकालियाइ मुणिमइ किं छिप्पइ कालियाइ ।
इय चिंतिवि हउं अवयरिय जाम वइरिणि गय णासिवि कहिं वि ताम ।
मइं उत्तारिउ सिंधुरु बलेण तुह हुयउ सुहु सुकियफलेण ।

घत्ता—मलु तुट्टइ बुद्धि पयट्टइ दिस वसुधारहिं दुब्भइ ॥
रिउ णासइ णिहि घरि पइसइ धम्में काइं ण लब्भइ ॥ १० ॥

11

इय थुणिवि सुलोयण चंदहासु गय गंगादेवय णियणिवासु ।
पुणु चोइवि वारणु णं गिरिंदु गउ गयउरु पत्तउ जयणरिंदु ।

५ MB संभरिसि.

10. १ MB णिसुणहि हुई. २ MB कोवेण.

10 *a* वंजणविसिट्ठ व्यञ्जनानि अक्षराणि विशिष्टानि येषु; *b* परममंत पञ्च परमेष्ठिनः.

10. 3 *b* मुसुमूरिय मारिता. 4 *a* पियालि प्रियसखि. 8 *b* कालियाइ पापेन कालुष्येण.

बहुकालपरिट्ठिउ सुहिण जाव सत्तंगु रज्जु पालंतु ताव।
बहुपेम्मसोक्खसंजोयणाइ एक्कहिं दिणि समउ सुलोयणाइ।
अच्छइ अत्थाणि णिसण्णु जाम णहि खयरमिहुणु तें दिट्ठु ताम।
हा देवि पहावइ कहिं भणंतु मुच्छिउ पहु जम्मंतर[2] सरंतु।
हा णाह णाह विलवंतियाहिं कुलउत्तियपणिया[3]इयतियाहिं।
सिंचिउ चंदणमीसियजलेण आसासिउ चलचमराणिलेण।
पारावयमिहुणालोयणेण मुच्छिय[4] पिय पणयासायणेण।
हा रइवर हा रइवर रसंति उट्ठिय पुणरवि सा णीससंति।
* पारावइ हउं रइ[5]विसेण आसि चिरभवकुलउत्ती तुज्झु दासि।
तुहुं रइवरु पारावउ ण भंति लग्गी पिय[6]गीयहि इय भणंति।

घत्ता—कहिं णिववरु कहिं सो रइवरु कवडें वल्लहु किज्जइ॥
जयपत्तिहि भणिउं सवत्तिहि कइयवेण जणु खज्जइ॥ ११॥

12

सोमप्पहपुत्तें णायरेण[1] जणमणसंसयहरणायरेण।
जाणंतेण वि सुहभायणेण पुच्छिय पिय अवहिविलोयणेण।
पुच्छंतहु कंतहु सुहरु चित्तु वज्जरइ सुलोयण णिययचरित्तु।
इह जंबुदीवि सुरदिसिविदेहि पुक्खलवइविसइ विला[2]सगेहि।
वेयड्ढमहीहरणियडदेसि तहिं धण्णयमालवणंतवासि।
सोहापुरवरि वय[3]पालु राउ देवसिरिदेविसंजणियराउ।
तहु वंदियपयपंकरुहरेणु सामंतु पसिद्धउ सत्तिसेणु।
अ[4]डइसिरिघरिणिआलिंगियंगु रेहइ णं रइभूसिउ अणंगु।
हिंडंतु कहिं मि लक्खणपसत्थु णवरेक्कु बालु संपत्तु तेत्थु।

11. १ MB omit this line. २ MBK जम्मंतरु. ३ MT पणियंगण°, B पणयगण°. ४ B मुच्छाविय पणया°. ५ MB रइसेण. ६ MB पियगीवहि.

12. १ MK °भायरेण. २ MB विसालगेहि. ३ MB णयपालु. ४ MB अडयसिरि.

---

11. 7b पणियाइयतियाहिं अवरुद्धादिपण्यस्त्रीभिः. 9 b पणयासायणेण स्नेहानुभवेन. 12 b पियगीयहि प्रियस्य ग्रीवायाम्. 14 कइयवेण कपटेन वैशिकेन.

12, 1. a णायरेण चतुरेण. 2 b अवहिविलोयणेण जातिस्मरणादुत्पन्नावधिचक्षुषा. 8 a अडइसिरि° अटवीश्रीः.

सामंतें पुच्छिउ भणु कुमार तुहुं कासु पुत्तु सुसरीरमार ।
किं किर वियरहि महि सेसवेण तं वयणु सुणेप्पिणु भणिउं तेण ।

घत्ता—उप्पेक्खिउ भवणु ण रक्खिउ गउ हउं सिसु हक्कारिउ ॥
पर मायए णिट्ठुरवायए मंदिराउ णीसारिउ ॥ १२ ॥

13

महु बप्प सिसुत्तणि मुइय माय विणु मायइ डिंभहु कवण छाय ।
भूयत्थें ताएण वि ण दिट्ठु हउं तुम्हारउ पुरवरु पइट्ठु ।
ता तेण सत्तिसेणें अगाउ पडिवण्णु पुत्तु सो सब्बदेउ ।
पंचहिं वि कहिउ णिद्दलियकम्मु अमियमइअणंतमईहिं धम्मु ।
राएं वज्जिउ महु मज्जु मंसु राणियइ तेम तं किउ ससंसु ।
सामंतें पुणु अणगारवेल पालिय जिणरायहु तणिय वेल ।
वणसिरियइ किउ दुक्कियविरामु तवु अणुपवड्ढकल्लाणणामु ।
ता सिसु मयच्छि गुरुहार जाय संचलिय तेत्थु जहिं वसइ माय ।
परिमुक्क सिविरु सरविउलकूलि सह पइणा वसइ वणंतरालि ।
जा तावेत्तहि सुहिसोक्खसयरि जणणहरि मुणालवइ त्ति णयरि ।
कणयसिरि वणिंदु सुकेउ कंतु भवदेउ पुत्तु णं कलिकयंतु ।
उट्टंटउ दुम्मुहु सो ज्जि भणिउ पुरवरि अण्णेक्कु वि तहिं जि वणिउ ।

घत्ता—सिरियत्तउ पिउपयभत्तउ विमलसिरी तहु गेहिणि ॥
सुहकारिणि सुयमणहारिणि रइवेया रइवाहिणि ॥ १३ ॥

13. १ MB सरविमलकूलि. २ M उड्डंटउ.

11, *a* सेसवेण बाल्ये.

13, 1 *b* छाय शोभा. 6 *a* अणगारवेल अनगारवेलायां भोजनवेलाकरत्वम्. 7 *b* अणुपवड्ढकल्लाण शुक्लपक्षे प्रतिपत्पञ्चम्यष्टमीचतुर्दशीपौर्णमासीषु भृङ्गारपूर्णभाजनानि सम्यग्दृष्टिभ्यो विधिना देयानि; पूर्णेषु पञ्चसु वर्षेषु पञ्चकल्याणीप्रतिमां प्रतिष्ठाप्य संघभोजनं कर्तव्यमिति; *b* वेल आज्ञा 10 *a* °सोक्खसयरि सौख्यशतदायके.

14

विमलसिरिभाउ वणि विहियसोउ अण्णेक्कु वि अत्थि असोयदेउ।
जिणयत्त घरिणि णंदणु सुकंतु सुहउ सं सोमु सोमु व सुकंतु।
ता ससुराणिवासु दुवारु धरिवि बारहवरिसइं मज्जाय करिवि।
जइ हउं ण पावेसमि तावरासु ता तेरी तणुरुह देज्जसु वरासु।
णिट्ठविणु ण गिण्हमि अज्जु माम गउ वाणिज्जहि सो जाम ताम।
चक्कवइसंख वच्छर पउण्ण कण्णहि थणयल समएण पुण्ण।
पच्चारिय सक्खि णिबंधु मुक्कु सुय दिण्ण सुकंतहु वइरि दुक्कु।
णिस्तिंसु तिक्खणिर्स्तिसवंतु मरु दारवि मारवि वरु भणंति।
मंडेवि णिरुद्धु थेरीथडेण बहुवरु वि पणट्ठु परोहडेण।
गलगज्जिवि तज्जिवि कंचुईउ अवलोयवि दंपइ पयपईउ।

घत्ता—कुढि लग्गउ पिसुणु अभग्गउ ईसावसु हेवाइउ॥
सहुं घरिणिइ हरिणु व हरिणिइ वणु वरइत्तु पराइउ॥ १४॥

15

दोहं वि पयरत्तइं पयलियाइं दोहं वि मुहकमलइं मउलियाइं।
ते रिउणा कह व ण मारियाइं अंगइं तरुकंटयसीरियाइं।
चिम्मक्किवि रयणिहि रीणयाइं दुमलग्गफट्टपरिहाणयाइं।
पासेयधोयतणुमंडणाइं अवलोइयमयउलभंडणाइं।
सूरग्गामि पत्तइं बे वि तेत्थु आवासिउ वणसिरिणाहु जेत्थु।
दुज्जणु अणुलग्गु जि दुक्कु केम चलपावइयहं कुसुमसरु जेम।

14. १ MB विहियसेउ. २ MB सुसोम्मु. ३ M सायरासु. ४ M णियतणुरुह. ५ MB परासु. ६ MB वाणिज्जें. ७ B सखिणिब्बंधमुक्कु. ८ MB मारवि दारवि. ९ MB मंडव. १० MB परोवडेण. ११ MBK पयगईउ.

15. १ MB दो वि. २ B omits this line.

14. 4 *a* तावरासु ता + अवरासु अपरस्य. 6 *a* चक्कवइसंख द्वादश; *b* समएण कालेन. 8 *a* णिस्तिंसु निर्दयः; णिस्तिंसवंतु खड्गयुक्तः. 9 *a* थेरीथडेण वृद्धासमूहेन; *b* परोहडेण पश्चाद्द्वारेण, कुड्ये छिद्रं कृत्वा गृहपश्चाद्द्वारेण. 11 कुढि पृष्ठे; हेवाइउ कुपितः.

15. 2 *b* °सीरियाइं विदारितानि. 3 *a* चिम्मक्किवि भ्रान्त्वा.

दिट्ठउ दोहि वि तहिं सत्तिसेणु आसंधिउ कॅलभहिं णं करेणु।
कहिं णासहं आयउ अज्जु मरणु लइ तुज्झु पेइट्ठइं बे वि सरणु।
णिसुणिवि वइयरु करमंडलग्गु दक्खालिउ तेण किराडु भग्गु।
गउ णौसिवि सहसा मलियमाणु किं करइ तिमिरु जहिं फुरइ भाणु। 10

घत्ता—र्णं उवेक्खिउ वहुवरु रक्खिउ किउ पडिवक्खहु दूसणु॥
धणवरिसहुं जगि सप्पुरिसहुं दीणुद्धरणु जि भूसणु॥ १५॥

16

विसकरिखरकरहतुरंगवाहु धंरधीरु धणेसरु सत्थवाहु।
धारिणिकंतामुहरायरत्तु ता तहिं जि समागउ मेरुदत्तु।
संठिउ समीवि विरएवि ठाणु करिहरिरवबहिरियसिहरिसाणु।
कंतारमग्गि चारण पइट्ठ सरणागय पविपंजरेण दिट्ठ।
बेण्णि वि ठाभणिय महाजसेण रिसिगयवर थिय विणयंकुसेण। 5
मुणिवसहहं णवविहु लेवि पुण्णु जोग्गउ भोयणु भावेण दिण्णु।
णहयलि तूरइं तियसहिं हयाइं अच्छरियइं पंच समुण्णयाइं।

घत्ता—मणि ढोयहुं पुण्णु पलोयहुं पँसरियमुहससिरायउ॥
तहु केरउ पणयजणेरउ मेरुदत्तु घरु आयउ॥ १६॥

17

तहिं तेण तासु ओएवि दाणु धारिणियइ सहुं बद्धउ णियाणु।
आंगामि जम्मि महु होउ पुत्तु एहउ दुत्थियकल्लाणमित्तु।
महि रंगमाणु णं णिसि णिरिक्कुं ता तहिं पत्तउ पंगुलउ एक्कु।

३ B omits this foot. ४ MB कलहहिं. ५ MB पइट्ठा बे वि. ६ MB णिसुणेवि वइरु. ७ MB भंजिवि. ८ MB णउ पेक्खिउ.

16. १ MB वरवीरु. २ MB add after this रयणहिं सह फुल्लइ घल्लियाइं, वयणाइं मणोज्जइं बोल्लियाइं. ३ MB पसरियमुहु.

17. १ MB आगम्मि. २ B णिरक्कु.

9 *a* वइयरु व्यतिकरः.

16. 1. *b* धरधीरु पर्वतवद्धीरः.

17. 3 *a* णिरिक्कु चोरः

पुच्छिउ वणिणा णियमंतिवग्गु भणु पयडु किं गइपसरु भग्गु ।
सउणि जंपिउ अवसउण जाय पयडु भवि तेण पणट्ठ पाय ।
भेसइणा भासिउ सुहमहेहिं उद्दिट्ठु एहु कूरग्गहेहिं ।
धण्णंतरि जंपइ पयइदोसु सिंभें जडत्तु पित्तेण सोसु ।
पवणें भज्जइ माणवहु गत्तु भूयत्थें मंतिं पुणु पउत्तु ।
घत्ता—सउणत्तइं गहणक्खत्तइं सद्दं पयइहिं पउत्तइं ॥
चिब्भावहं सयलहं जीवहं होंति सकम्मायत्तइं ॥ १७ ॥

18

इय सणिउं सणिउं पभणेवि तेहिं पुणु पुच्छिउ गुरु मउलियकरेहिं ।
किं सउणु किं व दुग्गहवियारु किं पयइदोसु किं कम्मचारु ।
किं कारणु पंगुत्तहु मुणिंद ता भणइ सूरि सुणि भो वणिंद ।
बहिरंध कुट्ठि वाहिल्ल भिल्ल दालिद्दिय दूहव मूय लल्ल ।
अविसिट्ठ दुट्ठ दुप्पिट्ठ कट्ठ दुट्ठोट्ठ रुट्ठ दुहघट्ट वंठ ।
छिण्णोट्ठ कण्णणासाविहीण दुग्गंधदेह काणीण दीण ।
णिल्लज्ज खुज्ज वामण कुसील पलखंड सोंड चंडाल कील ।
जरचीवरधर फरुसुद्धकेस छोहाणलहय कंकालवेस ।
जूयार णिसेवियणयरटंट पावेण होंति णर कुंट मंट ।
पंगुल परघरपिंडावलुद्ध विवरीय होंति धम्मे विसुद्ध ।
णउ देव देंति णउ ते हरंति देविंद वि पुण्णक्खइ मरंति ।
घत्ता—रिसिपिसुणिउं भवियहिं णिसुणिउं णियमें चित्तु णियत्तिउं ॥
परदविणइ परबहुरमणइ लोयणजुयलु ण घत्तिउं ॥ १८ ॥

३ MB सउणें. ४ M अवसवण. ५ MB सिंभें. ६ MB मंतें.

18. १ M सणउं सणउ. २ MB भो सुणि. ३ M दुप्पिट्ठ. ४ M दुट्ठोट्ठ. ५ B वट्ठ. ६ MB °णयरटेंट. ७ MB परहर°. ८ M घित्तउं; B घित्तिउं.

5. *a* सउणिं शकुनज्ञेन. 6 *a* भेसइणा ज्योतिर्विदा; सुहमहेहिं शुभप्रयोजनविनाशकैः. 7 *a* धण्णंतरि वैद्यः. 10 चिब्भावहं चैतन्यरूपाणाम्.

18. 8 *b* छोहाणल° क्रोधानलः. 12 °पिसुणिउं प्रतिपादितम्.

19

ता तहिं ओलक्खिउ तरणितेउ भूयत्थें कोक्किउ सव्वदेउ ।
ए एहि पुत्त दे देहि खेउं किं वीसरियउं महु तणउ णाउं ।
सुय तुह सुहयंगइं कोमलाइं लग्गंतइं धूलीधूसराइं ।
होंताइं आसि महु सुहयराइं णिल्लोट्टियपियकंताकराइं ।
सुय तुह मुहलालाबिंदुयाइं हउं सुयरवि[1] णियउरयलि चुयाइं ।
सिक्खाविओ सि सिसुगइवयाइं सिद्धंणमाइं[2] अक्खरवयाइं ।
वीसरियउ सुय[3] तुहुं किं सताउ किं बहुएं महु घरु जाहुं आउ ।
इय पत्थिओ वि सो मंदणेहु पडियागउ णउ णियजणणगेहु ।
पिउणा तिमुंडपविराइएण तवचरणु लइउ णिव्वेइएण ।
छिंदेप्पिणु दढयरु मोहवासु तहु गुरुहि पासु णहचारणासु ।
सुरगुरुणा गहिउ[4] रिसित्तु जेम्व सउणी[5] धण्णंतरिणा वि तेम्व ।

घत्ता—तं बहुवरु णयपंकयकरु सेट्ठिहि तेण समप्पिउ ॥
महु सामिहि गयवरगामिहि गेहि थवेज्जसु जंपिउ ॥ १९ ॥

20

गउ वणिवइ[1] सोहाउरु तुरंतु पणवेप्पिणु पहुहि सकंतु कंतु ।
सो तेण णिरोविउ[2] तासु जाम पत्तहि वि सत्तिसेणक्खु ताम ।
माउहरि थवेप्पिणु णिययघरिणि णं विंझलयाहरि पवरकरिणि ।
वंदिवि मुणालवइ जिणहराइं अवलोयवि ससुरय सिरिहराइं ।
गुरुहार णारि पसढल[3]सरीर सासुरयहु णउ सक्कइ सहार ।

19. १ MB सुयरमि. २ MB सिद्धतमाइं. ३ MB किं तुह सुय. ४ MB सहिउ. ५ MB सउणें.

20. १ MB वणिवइ. २ MB णिरूविउ. ३ MB °पसाढिल°.

---

19. 2 *a* खेउ आलिङ्गनम्. 5 *b* सुयरवि स्मरामि. 6 *a* °वयाइं पदानि. 9 *a* तिमुंडेत्यादि—प्रशस्तमनोवाक्कायव्यापारप्राविराजितेन.

20. 5 *a* पसढल° प्रशिथिलम्; *b* सहार भारसहिता.

सासुरयहु णिग्गउ मडवरिट्ठु आवेप्पिणु सोहाँपुरि पइट्ठु ।
घरि दिट्ठु राउ इच्छियसिवेण वहुवरु मग्गिउ पसरियकिवेण ।
णिउ णियणिवासहु दिण्ण धामु गोउलु माहिसु फलछेत्तु गामु ।
आसणु भूसणु णिवसणु समग्गु तवु करिवि मंति गय के पि सग्गु ।
मँउ मेरुक्खु पायडियसिरिहि तहिं देसि पुंडरिकिणिपुरिहि ।
पयपालणरिंदणिहित्तचित्तु वणि हूयउ णाम कुबेरमित्तु ।
घत्ता—तुहु धारिणि मरिवि सुकारिणि जइ वि ण सम्माइट्ठिणि ॥
वउ पालिवि दुक्किउ खालिवि हुइ धणवइसेट्ठिणि ॥ २० ॥

21

पुत्तत्थिणि भवभावियणियाण सा पक्कतीसघरिणिहिं पहाण ।
गब्भेसरि सयलकलापवीण धयरट्ठगमण सद्देण वीण ।
भवदेवें पावें पसुवहेण तं वहुवरु दड्ढउ हुयवहेण ।
घरि अट्टझाणें मरिवि तेत्थु जायउ पुरेसेट्ठिणिवासि एत्थु ।
पारावयजुयलु मणोहिरामु गुंजारुणच्छु वण्णेण सामु ।
तं घेप्पइ खुज्जयवावणेहिं तं संभासिज्जइ परियणेहिं ।
णच्चइ हक्कारिउ सहु देइ पट्ठवियउ पुणु रंगंतु जाइ ।
पुच्छिउ पहुणा कहिं पाव जंति धम्मेण जीव किर कहिं वसंति ।
तं दावइ चंचुइ णरयमग्गु उद्धाइ ताइ सग्गापवग्गु ।
तहिं पक्खिणि हुउं रइसेण णाम तुहुं रइवरु पक्खि सणेहकाम ।
अच्छहुं कीलंतइं बे वि जाम सो सत्तिसेणु तहिं मरिवि ताम ।
घत्ता—तें वणिणा वणिसिरँमणिणा धणवइयहि सुउ जायउ ॥
सोहग्गें जणमणलग्गें रूवें णं सुररायउ ॥ २१ ॥

४ M सोहाउरि; B साहाउरि. ५ MB दिण्णु धाउ. ६ MB गाउ. ७ MB मुउ. ८ MB पयडिय°. ९ MB वउ.

21. १ MB पुत्तत्थि वि. २ MB पुरि सेट्ठि°. ३ MB संभासिज्जइ परियणजणेहिं. ४ MB सिणेह°. ५ MB कीलंत बे वि. ६ M तं. ७ MB °सिरिमणिणा.

21. 2 *b* धयरट्ठगमण हंसगमना.

22

णं णियकुलहरकमलसिरिकंतु णामें सो भणिउ कुबेरकंतु ।
सुमरेप्पिणु धम्माणंदजोउ ते मंतिदेव तहु देंति[1] भोउ ।
वत्थंगु तियसतरु भूसणंगु महरंगु तुरिय उब्भोयणंगु ।
पवहइ पुंडुच्छुरसप्पवाहु मज्जणइं पवरिसइ वारिवाहु ।
णिच्चं चिय पिच्चइ सालिछेत्तु अवरु वि सुइसुसिरु सुहेल्लिमेत्तु ।
सयमेव रणइ वीणा सवेणु घरि चिंतिउ दुब्भइ कामधेणु ।
इय दिव्वभोयभुंजणखणालु णवजोव्वणु पिउणा दिट्ठु बालु ।
पियसेणु तेण सहयरु पउत्तु किं बहुएं किं एक्कु जि कलत्तु ।
इच्छइ भणु तेरउ परममित्तु आहासइ सो णयणलिणणेत्तु ।
एक्कहिं दिणि गय उज्जाणमज्झि दिट्ठउ मुणि[3] दोहिं वि लवलिगुज्झि ।
व्रउ[4] लइयउ णामें एक्कपत्ति को पावइ तुह सुय सीलसत्ति ।

घत्ता—तेत्थु जि पुरि कुहपंकियघरि वणि वइ[5]समणसमाणउ ॥
धणवइयहि बंधवु पयहि सायरदत्तु कुलीणउ ॥ २२ ॥

23

तहु केरी णं अमियएण सित्त गेहिणि णामेण कुबेरमित्त ।
तहि परजम्मंतरि[1] बद्धपणय हुई वणलच्छि मरिवि तणय ।
णं सुरयसोक्खमाणिक्कखाणि कल[2]हंसगमण कलयंठिवाणि ।
णीलालिवलयसंकासकेस णं कामभल्लि पच्छण्णवेस ।
णामें पियदत्त पसण्णदिट्ठि गु[3]णणय णं वम्महचावलट्ठि ।
अण्णहिं दिणि कित्तिमकुसुममाल कय ताइ णाइं मय[4]णसत्थसाल ।

22. १ MB देंतु. २ MB तुरीयउ भोयणंगु. ३ MB दोहिं वि मुणि. ४ MB वउ. ५ MBK वइसवण°.

23. १ MB जम्मंतरबद्ध°. २ MB कलहंसिगमण. ३ MB गुणणयणइ. ४ MB मयणत्थमाल; K मयणयत्थसाल and gloss अस्त्र; G in gloss मदनशस्त्रशाला.

---

22. 3 *b* उब्भोयणंगु उत्कृष्टभोजनाङ्गः 6 *a* सवेणु वंशवाद्येन सहिता. 10 *b* लवलिगुज्झि बन्दनलतागृहमध्ये. 12 वइसमण° कुबेरः.

23. 5 *b* गुणणय गुणनता.

गय लेप्पिणु ससुरयघरु वयंसि पियकारिणि गइजियरायहंसि ।
तं पेच्छिवि विंभिउ इब्भतणेउ एउं[6] विण्णाणु ण मुणइ मणुउ ।
तं वयणु सुणिवि सच्छइ सईइ णियसुण्ह पसंसिय धणवईइ ।

घत्ता—पियँवत्तइ सुइसुहमेत्तइ मयणजलणु संधुक्किउ ॥
मणु लेंतें तेण जलंतें झत्ति कुमारु झुलुक्किउ ॥ २३ ॥

24

जाणिवि तणयहु कण्णाहिलासु वणिणा पारद्धु विवाहु तासु ।
णंदणवणि पट्टण जणमणोज्ज णिव्वत्तिवि णियकुलजक्खपुज्ज ।
भायणइं दुतीस समीरियाइं णिरु चोक्खभक्खपेडिऊरियाइं ।
तहिं एक्कु पंचमाणिक्कवंतु जा गेण्हइ तहि सो होइ कंतु ।
वणिउत्तियाउ संप्राइयाउ वत्तीस जि पियदत्ताइयाउ । 5
सव्वहं वणिणाहें भूसणाइं दिण्णाइं विलेवणणिवसणाइं ।
गेण्हह पभणिवि परिभावियाइं चरुभरियइं थालइं दावियाइं ।
ता कणयवत्त बहुभोज्जु थइउ एक्केक्कइ एक्केक्कउ जि लइउ ।
सरयणु पुयंदत्तहि करि विलग्गु को लंघइ किर भवियव्वमग्गु ।
पयपालसुयाहिं सुहालियाहिं गुणवइजसवइणामालियाहिं । 10
आलद्धउ णंउ णाहिं चरुयवत्तु हियवउ संसारहु खणि विरत्तु ।

घत्ता—मुगंरोलइ गिरिकुहरालइ वरं पइसिवि तवु किज्जइ ॥
णउ दाणहु सुहिसंमाणहु कारणि हलि कलहिज्जइ ॥ २४ ॥

५ MB °तणुउ. ६ MB एयहुं. ७MB पियदत्तइ ८ MB सधुक्कियउ. ९ MB जेण. १०MBT झुलुक्कियउ.

24. १ B समारियाइं. २ MB परिपूरियाइं. ३ MB संपाइयाउ. ४ B गेहं पभणिवि. ५ K पभाबियाइं. ६ MB एक्केकउ एक्केक्कहिं. ७ MB पियदत्तहि. ८ MB भवियव्वु मग्गु. ९ MB णं वि. १० MB मिग°. ११ MB वणि. १२ MB तउ.

10 पियवत्तइ प्रियावार्तया. 11 झलुक्किउ संतापित..

24. 3 *a* समीरियाइं प्रसारितानि. 10 *a* सुहालियाहिं सुखवतीभि.. 11 *a* चरुयवत्तु चरुकपात्रम्.

25

रायहरणियडि[1] जिणवरणिवासि अमियमइअणंतमईहि पासि ।
तवु[2] लइयउ ताहिं सीमंतिणीहिं पत्तहि वि पडहमंगलझुणीहिं ।
वणितणयहु सुयणुच्छाहराहु पियदत्तइ[3] सहुं विरइउ विवाहु ।
वयवालु[4] मरेप्पिणु लोयवालु पयपालहु सुउ[5] हुयउ गुणालु ।
देवसिरिदेवि मल्हणगईहि वसुमइ सुय हुई धणवईहि ।
गयजम्मघरिणि सा दिण्ण तासु पुणु लग्गउ दोहि मि पेम्मपासु ।
संताणि थवेप्पिणु सो जि पुत्तु णरणाहें लइयउ मुणिचरित्तु ।
देवीउ कणयमालाइयाउ पव्वज्ज लएप्पिणु संठियाउ ।
जे परियण ते पव्वइय सव्व कोमलमइ थिय घरि[6] घरि सगव्व ।
एक्कु जि वुड्ढउ स कुवेरमित्तु सो भावइ तरुणहं णाइं सत्तु ।

घत्ता—चवलैंमइं[7] भासिउ कुमइं[8] हसइं ण खेलइं[9] लब्भइ ॥
अपसत्थउ भेलावत्थउ[10] माणुसु पम जि खुब्भइ ॥ २५ ॥

26

जो णिव तुह तायं णिहिउ मंति तहु दंसणेण[1] अम्हहुं ण संति ।
किं विहडियकरण णियंति कज्जु हो थेरहं कम्मु ण किं पि दिज्जु ।
मावउ अम्हहं भिउडंतु[2] दिट्ठि अच्छउ णियमंदिरि ताम सेट्ठि ।
राउ वि कुमारु मंति वि कुमार दीणै[3] वि होंति जोव्वणि वियार ।
सुहिदिट्ठपरंपरु बहु सुयहु वारिउ पहुणा वरु पंतु वुड्ढु ।
अविपिक्कबुद्धि कीलणसहाउ सिसुमंतिहिं सहुं रायाहिराउ ।

25. १ MB रायहरे णियड°. २ MB तउ लइउ तेहिं. ३ MB पियदत्तइ. ४ MB णयवालु. ५ MB सिसु. ६ MB णियघरि. ७ MB चवलमइहिं. ८ MB कुमइहिं. ९ MB खेलहुं. १० MBT हेलावत्थउ.

26. १ MB दंसणि अम्हइ णाहिं संति. २ MB भिउडत्त. ३ MBK दीणहु.

25. 4 *a* वयवालु प्रजापालः. 5 *a* मल्हणगईहि मदगमनायाः. 12 भेलावत्थउ अतिवृद्धावस्थः.
26. 4 *b* वियार सविकाराः. 6 *a* अविपिक्क° अप्रवीणा.

अण्णहिं दिणि णंदणवणि पइट्ठु अरुणच्छवि वाविजलोहु दिट्ठु ।
पुच्छिउ विहसिवि चवलमइ तेण इह लोहिउ जलु किंह कारणेण ।
बुहसिट्ठविसिट्ठगईचुएण पडिजंपिउं विउलमईसुएण ।
वावीयलि अच्छइ मणि णिहित्तु तहु छायइ दीसइ सलिलु रत्तु ।
ता तेहिं मिलेवि असंसएहिं पाणिउं बहि घल्लिउं घडसएहिं ।
चिक्खल्लतल्ललोलणविलोल थिय सयल णाइं कयकील कोल ।
माणिक्कु ण दिट्ठउ तेहिं केम बहुमोहंधहिं जिणवयणु जेम ।
अण्णाणकिलेसें णत्थि सिद्धि गय घरहु परिक्खिय मंतिबुद्धि ।
घत्ता—गरुआवइ सपणयकोवइ पयहिं पडंतु वि कयरइ ॥
वसुमइयइ रयणिहि दइयइ चरणें सिरि हउ णरवइ ॥ २६ ॥

27

मंडलियमउडरुइरइयराइ अत्थाणि णिसण्णें सुप्पहाइ ।
जो मह सिरु पहणइ णियपएण तहु किं किज्जइ णरवइणएण ।
ते तरुणमंति पुच्छिय णिवेण तेहिं वि पउत्तु सफरुसरवेण ।
तुह जेंण दिण्णु सिरि चरणघाउ खंडिज्जइ णिव तहु तणउ पाउ ।
तं वयणु सुणेप्पिणु विमलवंसु संठिउ हेट्ठामुहु रायहंसु ।
महु सिरचूडामणि मयणसरणु खंडिज्जइ किह सुंदरिहि चरणु ।
अविवेउ महंतउ जासु गेहि दुक्करु सिरि णिवसइ तासु देहि ।
संसिद्धसमग्गतिवग्गलिंगु भल्लारउ भुवणि वियड्ढसंगु ।
इय चिंतिवि णियकुलकमलमित्तु कोक्काविउ तेण कुबेरमित्तु ।
आउच्छिउ तं णीरारुणत्तु अवरु वि जं सीसि पयग्गु घित्तु ।
तं णिसुणिवि मामें वुत्तु एम पाणियरत्तत्तणु णिसुणि देव ।

४ MB किं. ५ MB वावीजलि. ७ B असेसएहिं. ७ MB चिक्खिल्ल°. ८ MB कयलील. ९ MB गुरु°.

27. १ MB omits this line. २ MB फरुसें मणेण. ३ MB दिण्णु जेण. ४ B गेहि. ५ MB अवरु वि सीसें पयलग्गु घित्तु.

9 *a* बुहे त्या दि— बुधैर्या शिष्टा उपदिष्टा विशिष्टगतिर्व्युत्पत्तिस्तया च्युतो रहितः. 10 *a* वा वी य लि वापीतले. 11 *a* अ सं स ए हिं संशयरहितैः.

27. 2 *b* ण र व इ ण ए ण नीतिशास्त्रे. 13 व णु जलम्.

घत्ता—रसगिद्धें घंसिउ गिद्धें तीरुक्खित्त मणि अच्छइ ॥
तहु छायइ पसरियरायइ जणु वणु लोहिउ पेच्छइ ॥ २७ ॥

28

गुरुणारीडिंभयचरणु पहुहि सिरिलग्गइ अण्ण ण सउलविहुहि ।
तुह पुणु जाणवि रोसंकियाइ सिरि घल्लिउ होही पउ पियाइ ।
तं पुज्जिज्जइ वरणेउरेण ता संथुउ सेट्ठि महीसरेण ।
धणवइइ पइहि कुरुलोलिणालि दिट्ठउ पलियंकुरु कण्णमूलि ।
साहंतु व जिणधम्मोवएसु उँरदासिइ दूसिउ दइयकेसु ।
तं पेच्छिवि भव्वु कुबेरमित्तु अवरु वि पव्वइउ समुद्ददत्तु ।
सुरमहिहरु गंपि सुधम्मजइहि हुया सुसीसें सुविसुद्धमइहि ।
जाया मरेवि मेहारहासि लोयंतियँ सुर बंभंतवासि ।
विउलमइ णाम चारणमुणिंदु पियदत्तइ भुंजाविउ अणिंदु ।
सिसु चिंतिवि पुच्छिउ तउँ दुगेज्झु कइयहुं होसइ मुणिणाह मज्झु ।
दाहिणपंचंगुलियउ करग्गि वामइ कणिट्ठ दाविवि णहग्गि ।
गउ मुणिवरु कालें पंच पुत्त लहुयं कुबेरदइएण जुत्त ।
जो सव्वदेउ मुउँ सो ज्जि एउ संभूउ पुणु वि पिउ वड्ढणेहु ।

घत्ता—कह णिरहहु तोसियभरहहु जयहु सुलोयण भासइ ॥
सोहंती पहइँ फुरंती कुंदपुप्फदंती सइ ॥ २८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जयमहारायसुलोयणाभव-
संभरणं णाम एकूणतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २९ ॥
॥ संधि ॥ २९ ॥

६ MB घित्तउ.

28. १ B पुजज्जइ. २ MB सुसीसु विसुद्ध°. ३ MB हिमहारहासि. ४ MB लोयंतिय ते. ५ MB विमलमइ. ६ MB तउ. ७ MB सुउ. ८ MB पहय.

28. 1 *b* °विहुहि °चन्द्रस्य. 4 *a* कुरुलोलि° कुन्तलश्रेणी. 8 *a* मेहारहासि मेघया अहस्वे. 15 पहइ प्रभया, सइ सती

XXX

अमियमइअणंतमईसईहिं सीलगुणेहिं पसाहिउ ॥
झिणवइगुणवइवरजसवइहिं बंधुवग्गु संबोहिउ ॥ ध्रुवकं ॥

I

लोयवालु सा वसुमइ राणी पउरंदरियहि तुयहिं[1] समाणी[2] ।
बारहविहदि[3]क्खाइ समग्गइं बिण्णि वि सावयवइ दिढु लग्गइं ।
खंतिहिं कहियउं[4] धम्मु णिरंतरु[5] अरुहमग्गि लग्गउ अंतेउरु ।
णिच्चुच्छवमंगलणिग्घोसहु नाम कुबेरकंतवणिवासहु ।
चरियामग्गे णिग्गयरायउ जंघाचारणजुयलउं आयउं ।
पि[6]यदत्तावरहत्थें णाविउ छुडु जि तेण पंगणि पउ थवियउ ।
ता[7] तहिं पक्खिजुयलु संपत्तउ पक्खहिं पहणइ[8] पयरउ भत्तउ ।
दोहिं वि मुणिहिं गुणिहिं जोयंतहं धम्मबुद्धि होउ त्ति भणंतहं ।
रिसि पेच्छिवि भउ सुमरिवि मुच्छिउ महिहि पडंतु णरेहिं णियच्छिउ ।
सलिलें सिंचिउ थियउ सइत्तउ अवरोप्परहुं जि णवर विरत्तउ ।
भरई पक्खि किं कीरइ पक्खिणि कहिं रइवेय महारी पणइणि ।
सरइ सं[9]कोंति पुण्णससिकंतें किह जीवमि णिम्मुक्क सुकंतें ।

घत्ता—सोहापुरि वहुवरु पउ चिरु पवहिं दंपइ णहयर ॥
लोलंत पलोयवि धरणियले कउ अलाहु गय मुणिवर ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

णाइन्दणरिन्दसुरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवासिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥

GK give this stanza as well as तन्त्रीवाद्यैरनिन्द्यैः etc here for which see note on Samdhi XXIX.

1. १ MB तियहिं. २ M सवाणी. ३ MBT °सिक्खाइ. ४ MB कहिउ. ५ MB णेरंतरु. ६ MB पियदत्ता°. ७ MB ता तं पक्खिमिहुणु. ८ MB भणइ. ९ MB सुकंति; T सकुंति.

---

1. 4 *a* बारहविहदिक्खाइ अणुव्रतगुणव्रतशिक्षाव्रतरूपया दीक्षया. 9 *b* पयरउ पदरजः. 12 *a* सइत्तउ मूर्च्छारहिततया सचेतनम्. 13 *a* भरइ स्मरति. 14 सकोंति पक्षिणी. 16 अलाहु अलाभोऽन्तरायः.

2

वसुमईइ णवपंकयणेत्तइ बिण्णि वि पुच्छियाइं प्रियदत्तइ ।
चंचुइ पट्टियम्मि संणिहियइं दोहिं मि गयभवणामइं लिहियइं ।
णहयरियहि सकंतु जाणाविउ रइवेयागमु खयरहु दाविउ ।
मा विहडेवि चरह म विरप्पह बिण्णि वि सुहुं भुंजह कंदप्पह ।
वयणें तेण ताइं पुणु रत्तइं कणु चुणंति खेलंति पसत्तइं ।
रुप्पयगिरिसमीवि सुरवरगिरि करिदंसणविरुद्धरुंजियहरि ।
ते तहिं जंघाचारण जइवर जायवि थक्क तिणाणदिवायर ।
अमयमईहि अणंतमईहि वि जायवि संजईहिं बिहिं तीहिं वि ।
पुच्छिय ते कुसुमसरणिवारा पारावयसंबंधु भडारा ।

घत्ता—माणवमिहुणुल्लउ तं मरिवि भवसंकडि संदाणिउं ॥
मुणि अक्खइ रक्खइ किं पि ण वि जिह णाणेण वियाणिउं ॥ २ ॥

3

जिह वइसउलि पहूयइं बालइं रइवेयासुकंतणामालइं ।
जिह जायउ विवाहु जिह णट्ठइं जिह सामंतहु सरणु पइट्ठइं ।
जिह खलु मग्गलग्गु णिब्भच्छिउ कण्णकडुयवयणेहिं दुगुंछिउ ।
पालिउ थेउं जिह सज्जणसत्थें जिह भउ लद्धउ सुहसामत्थें ।
जिह घरि रिउणा कयउ पलीवणु जिह वहुवरु पत्तउ पक्खित्तणु ।
इयं जिह जिह साहिउ मुणिणाहें मयणहारिणविद्धंसणवाहें ।
तिह तिह कंतियाहिं आवेप्पिणु लोयवालपुरवरि पइसेप्पिणु ।
सुहसंजोयहु सिढिलियसोयहु साहिउ सयलहु सावयलोयहु ।

घत्ता—इय णिसुणिवि जणवउ धम्मरुइ हुयउ वियसियवत्तइ ॥
गुणवइजसवइपायंतियइ लइयउ वेउ मृगणेत्तइ ॥ ३ ॥

2 १ MB पियदत्तइ. २ MB पट्टम्मि. ३ MB पडिवत्तइं. ४ MB पमत्तइं. ५ MB °विरुद्धे रुंजिय°.
3. १ MB वउ. २ MB इह. ३ MB विहसिय°. ४ MB वउ मिग°.

2. 5 *b* पसत्तइं प्रसक्तौ अन्योन्यरक्तौ.
3. 1 *a* वइसउलि वैश्यकुले. 6 *b* °वाहें व्याघ्रेण, °व्याधेन. 9 वियसियवत्तइ विकसितवदनया.

4

अज्जिय हूई सम्माइट्ठिणि　　घरु मेल्लेपिणु धणवइसेट्ठिणि ।
अवर कुबेरसेण रायाणी　　दिक्ख लेवि थिय सुट्ठु अदीणी ।
किंकरेण केण वि ण पलोइउ　　णं विहिविहियविहाणें चोइउ ।
गयउ कवोयजुयलु सारामहु　　कहिं मि भमंतु पुरंतिमगामहु ।
कणु चंचुइ कड्ढइ णयगीवइ　　जाम चरइ किर वइसामीवइ ।
सरडुंदुरसेढामिसभोयणु　　णवमहुबिंदु व पिंगललोयणु ।
असुहरतिक्खकुडिलणहपंजरु　　उट्टिट्टउ तहिं जायउ मंजरु ।
वइविवराउ झत्ति णीसरियउ　　तेण कंठि पारावउ लइयउ ।
पक्खिणि पासिहिं भमिवि झडप्पइ　　णियपियपरिहवि णारि वि कुप्पइ ।
चिरभववइरें दसणकरालें　　कसमसत्ति खगु खद्धु विरालें ।

घत्ता—मुइ वल्लहि दुहविद्दाणियए विहि बलवंतु पउत्तउ ॥
अप्पउ तणु मण्णिवि रिंछियए विसदेसहु मुहि घित्तउ ॥ ४ ॥

5

पक्खिहिं पसुहुं वि पेम्मु पयट्टइ　　णरहु ण किं विरहें मणु फुट्टइ ।
पुणु तहिं पुक्खलवइदेसंतरि　　जीवदयाहलेण सुहसुंदरि ।
रययसेलि खगदाहिणसेढिहि　　उसिरिहि णयरिहि मोक्खणिसेणिहि ।
दिणयरगइ णिवसइ खयरेसरु　　तेयं णं पच्चक्खु दिणेसरु ।
तहु ससिपहदेविहि हुउ रइवरु　　तणउ हिरण्णवम्मु णं रइवरु ।
तेत्थु जि गिरिवरि उत्तरसेढिहि　　गउरीविसयभोयपुररूढिहि ।
वड्डियउ तहिं राणउ विज्जाहरु　　मरुरहु माहवियहि देविहि वरु ।
सा रइसेण मरिवि तहिं पक्खिणि　　ताहं बिहिं मि हूई णं अक्खिणि ।

4. १ K भवंतु. २ MB परंतिम°. ३ MB णीहरियउ. ४ K धरियउ. ५ K णारी कुप्पइ. ६ M कसमसंतु; B कसमसत्तु. ७ T रिंच्छियए.
5. १ MB उसिरहि. २ MBK सोक्ख°. ३ K चडिउ.

---

4. 5 *a* णयगीवइ नतग्रीवया; *b* वइ° वृतिः. 10 *b* कसमसत्ति भक्षणप्रकारानुकरणे. 12 रिंछियए पक्षिण्या.
5. 5 *a* रइवरु कामः.

धूय पसिद्ध पहावइ णामें रूवें सलहिज्जिइ सा कामें ।
गयउ कहिं वि णंदणवणकीलइ दिट्ठु कवोयमिहुणु तहिं लीलइ ।
तेण हिरण्णवम्मणामालें परभउ सुमरिवि लिहियउ बालें ।
पडि जं चित्तउ जम्मकहाणउं पंक्खिरूपविरइयसंमाणउं ।

घत्ता—कंइ पिउणा पवरसयंवरए ताइ मयच्छिइ लक्खिउ ॥
पारावयजुयलउ णियणियडे संचरंतु सुणिरिक्खिउ ॥ ५ ॥

6

णियभवु बुज्झिवि णिवडिय महियलि सिंचिय पाणिएण सिरि उरयलि ।
रइसेणाचरि मज्झें सामिय सा रइवरविरहें आयामिय ।
कंचुइणा णरवइ विण्णवियउ दुहियहि देहु दुरोएं खवियउ ।
होउ सयंवरेण किं किज्जइ आउ आउ खगवइ जाइज्जइ ।
दइयइ चित्तपट्टु पट्ठाविउ सो वि ताइ णियहियवइ भाविउ ।
मंदरि जायवि गइरणु मंडिउ फुल्लदामु जं सइं तेहि छड्डिउ ।
सुरगिरि परियंचिवि उद्धाइय खयरहुं अग्गइ कुंयरि पराइय ।
लइयउ तं जाव सुह ण पावइ पुत्तिहि केरी गइ को पावइ ।
आम जणणु हरिसें कंटइयउ मंतिवयणु अवलोयवि मुइयउ ।
खेयरणियरु जाव छुडु जित्तउ ताव हिरण्णवम्मु तहिं पत्तउ ।

घत्ता—पुणु माल पघल्लिय मंदरहो बिण्णि वि सह धावंतइं ॥
दिट्ठइं फणिकिंणरस्ससिरविहिं तुरिउं पयाहिण देंतइं ॥ ६ ॥

7

रइवरचरु रइरहसें चोइउ घुलइ माल जहिं तहिं संप्राइउ ।
तेण पडिच्छिय महिहि पडंती णहयलि खगकामिणि व णडंती ।
दिट्ठी कुसुमावलि अलिधारिणि णं कामें संधिय सरधोरणि ।

४ MB णं. ५ MB पक्खिणिभवविरइयसंमाणउ; K पक्खिरूवु विरइय°. ६ MB कय.
6. १ MB मंदरु. २ MB जं तहि सइं छंडिउ. ३ MB कुमरि. ४ MB को गइ.
7. १ MB संपाविउ. २ MB खगकामिणि णिवडंती.

---

6. 3 *b* दुरोएं दुष्टरोगेण.
7. 3 *a* कुसुमावलि पुष्पमाला.

दोहिं वि धरियइं चप्पिवि चिंधइं[3] घोलंतइं विवलंतइं णेत्तइं ।
दोहिं मि दिण्णउं दलियफणिंदहु दढलज्जंकुसु मयणगइंदहु ।
गउ वरु तहिं जोयवि मणहारिणि तावंतरि संठिय पियकारिणि ।
पट्ठउ ताइ तासु दक्खालिउ तेण वि तरलच्छीहिं णिहालिउ ।
जोइवि बुज्झिय पक्खिकहाणी एत्तहि सा जगतरुणि पहाणी ।
ससयण पिउहरु पत्त पहावइ जो णाइंदहु वण्णहुं णावइ ।
कउ विवाहु बहुतूरणिणायहिं रविगइ[6]मारुयरहखगरायहिं ।
दोहिं वि कंताकंतहुं पयहुं पयलियपेवंबंधपासेयहुं ।

घत्ता—परियलइ कालु कुलमंडणहं पसरियदिट्ठिवियारहं ॥
दंसणसंभासणगुणविणयदाणदिण्णसिंगारहं ॥ ७ ॥

8

अण्णहिं वासरि बे वि रमंतइं पत्तइं गयणुच्छंगि चडंतइं ।
हल्लियघंटाटंकारालउ सिद्धसिहरु णामेण जिणालउ ।
मोहजालतरुजालहुयासहं तहिं पुज्जिवि पडिमाउ जिणेसहं ।
मुणि वम्महवम्मोहवियारणु पुणु वंदिवि सव्वोसहिचारणु ।
पुच्छिउ णियय[3] तेहिं अब्भंतरु रिसिणा कहियउ गयउ कहंतरु ।
वणिभवि मायापियरइं तुम्हहं जाइं ताइं पवहं सुहकम्महं ।
पुणु संजायइं केत्तिउ सीसइ भवसंसारहु छेउ ण दीसइ ।
जो भवदेवबप्पु चिरु वणिवरु इह उप्पण्णउ सो हउं णहयरु ।
पुव्वणामु सिरिवम्मु पयासिउ रिसि सव्वोसहिचारणु भासिउ ।
गयणगमणु तवतावें सिद्धउ तइयउ णाणु विसेसें लद्धउ ।
पणविवि पयजुयलउ रइसेणहु मुक्कउ दुक्कियदुक्खविहाणहु ।

३ G चिंधइं. ४ MB गउ वरु जोडवि वहु मणहारिणे. ५ MB दिक्खालिउ. ६ MB रविगय°. ७ MBK °पेम्मबंध°.

8. १ MB चरंतइं. २ MB मोहमहातरुजाल°. ३ MB तेहिं णियय. ४ K सुकम्मह.

---

11 *b* पयलियपेवंबंधपासेयहुं प्रगलितः प्रेमबन्धेन प्रस्वेदः ययोः.

8. 1 *b* गयणुच्छंगि आकाशमध्ये. 10 *b* तइयउ णाणु अवधिज्ञानम्. 11 *a* रइसेणहु रतिषेणस्य भट्टारकस्य.

घत्ता—गुरुवयणकुँठारें तिक्खयण भवतरुवरु मइं छिण्णउ ॥
विंधंतउ पंचहिं मग्गणहिं मयणु दिसाबलि दिण्णउ ॥ ८ ॥

9

सुहमइ वड्डिय रमणिहि रमणहु तं आयण्णिवि गयइं सभवणहु ।
मेहकूडु जोइवि णिव्विण्णउ मारुयरहु पव्वज्ज पवण्णउ ।
पुत्तु मणोरहु रज्जि परिट्ठिउ दिणयरगइ वि जइत्तणि संठिउ ।
थिउ णिब्भउ सत्तंगपयारइ रज्जि हिरण्णवम्मु तहु केरइ ।
णियसुय रइवह तं सुहणिवहहु मणहरसुयहु दिँण्ण चित्तरहहु ।
अण्णहिं दिणि गयणंगणि रमियइं घण्णयमालवणंतरि भमियइं ।
सँप्पसरोवरचिंधु णिएप्पिणु बिण्णि वि पुवज़म्मु जाँणेप्पिणु ।
आयइं णियपुरवरु हक्कारिउ । रज्जि सुवण्णवम्मु वइसारिउ ।
पँइ हूवउ रिसिकुवलयचंदहु चरणमूलि सिरिपालमुणिंदहु ।
सहइ हिरण्णवम्मु चारणमुणि उण्णइ पावइ गुणगरुयउ गुणि ।
गुणवइयाइ पहावइ दिक्खिय करणचरणसत्थत्थइं सिक्खिय ।
सव्वइं भव्वइं कँम्मुव्विण्णइं ताइं पुंडरिकिणि अवइण्णइं ।

घत्ता—रिसि थिउ पुरबाँहिरि पवरवणि अज्जाजुयलविराइउ ॥
जुयमेत्तदिट्ठि वियरंतु तहि पूयँदत्तहि घरु आयउ ॥ ९ ॥

10

वणिणिइ विणयपणामें रुद्धउ तं भुंजाँविउ भोज्जु सुणिद्धउ ।
पुणु आसणु अणुरूवु थवेप्पिणु ताइ पहावइ भाणिय णवेप्पिणु ।
किं ण विमाणिउं पइं पइजोव्वणु किं तारुण्णइ संसेविउ वणु ।
हियपरिमियसुमहुरभासिणियइ तं णिसुणेवि भासिउ तवसिणियइ ।

५ MBK °कुढारें.

9. १ MB दिण्णु. २ MB सच्छु सरो°, T सच्छु and gloss यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्ति पुण्येन रक्षितस्तस्येद नाम. ३ MB सुयरेप्पिगु ४ B गइं. ५ MB कम्मुत्तिण्णइं ६ MB पुरबाहिर. ७ MB पियदत्तहि.

10. १ MB भुजाविवि. २ MB अणुरत्तु.

---

9. 7 K सप्पसरोवरचिंधु यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्तिषेणेन रक्षितो तस्य नामेदम्.

10. 3 K पइजोव्वणु पतियौवनम्.

एत्थु जि सज्जणणयणाणंदिरि अम्हइ माइ तुहारइ मंदिरि।
अण्णहिं भवि होंताइं कवोयइं किं ण वियाणहि विहियविणोयइं।
रइसेणाचररइवरणामइं कंठसद्दउक्कोइयकामइं।
पाणिदयाहलेण मणुयत्तणु पत्तउ दोहिं मि तें णियमिउं मणु।
अक्खु कुबेरकंतु वरु तेरउ कहिं सो अच्छइ सुहइं जणेरउ।
सेट्ठिणि भणइ णिसुणि संजमधरि पियकइ जिणपयपंकयमहुयरि।

घत्ता—एक्कहिं दिणि भवणु पराइयहो जिणवरवइणिहि केरउ ॥
मइं भोयणु देवि णमंसियउ पयजुयलउं सुहगारउं ॥ १० ॥

11

जिह पइं तिह महु ताइ पयासिउ णियतवकारणु णिहिलु समासिउ।
इह रइसेणु णाम आयउ चिरु भूमिविहारत्थिउ सुंदरगिरु।
णंदणवणि चलंतहिंतालइ तालितालताळूरपियारइ।
वेल्लीहरि पसुत्तु विज्जाहरु पायंगुट्ठइ लग्गउ विसहरु।
णाहु वि तहिं जि भमंतु पराइउ धाडिवि फणिवइ वणु अवलोइउ।
कोपं वंक्षं हंसं ईरिउ गरु गरुलेण व तेणुत्तारिउ।
हूयउ गाढु बिहिं वि मित्तत्तणु गउ खगु सणयरु वणिवइ सभवणु।
आयउ खेयरु पुणरवि तं वणु अवलोयंतिइ बहुणायरजणु।
उत्तउं कंतइ एत्थु जि अच्छहुं कोड्डें लोउ रमंतु णियच्छहुं।
ता रइसेणहु तणियइ णारिइ महु पिययमु जोइउ गंधारिइ।

घत्ता—हियउल्लउ कामें णिहयण तहि केरउ णिहलियउं ॥
वरकुंजरचरणें चप्पियउं दिसिहिं जलु वुच्छलियउं ॥ ११ ॥

३ MB पाणि°.

11. १ K भवंतु. २ M चप्पिय. ३ MB जलु व उच्छलियउं.

11 °वइणिहि व्रतिन्याः.

11. 3 *b* °ताळूर° कपित्थम्. 12 जलुवुच्छलियउं जलमिव उच्छलितम्.

12

मणि पवियंभिइ जलयरचिंधइ आउच्छिउ णियवइ पेम्मंधइ ।
कवणु एहु पिययम किं किं णरु अक्खु जक्ख किं किंणरु विसहरु ।
तेण पउत्तउ मित्तु महारउ वणिउ कुबेरकंतु गुणसारउ ।
एण मंतु गरलंतु विहाविउ फणिणा खद्धउ हउं जीवाविउ ।
बे वि समुब्भियचीणवियाणइं कंकेल्लीतरुतलि आसीणइं ।
किं रक्खमि तिक्खाइं णहग्गइं फुल्लइं चीणमि पिय तुह जोग्गइ ।
गय पिययम मिच्छुत्तरु संधिवि कूंटएण करपल्लउ विंधिवि ।
हा हा उरयएण हउं डंकिय णिवडिय मिच्छाविसवेयंकिय ।
कंतें ओसहसयइं णिउत्तइं पियइ चडावियाइं सिरि णेत्तइं ।
महिलहि को ण भुवणि वेहाविउ कंतु विओय सोय संपाविउ ।
गउ तेत्तहि तुरिएं पंजलियरु जहिं अच्छइ उवइट्ठउ महु वरु ।

घत्ता—तेणुत्तउ आवहि मित्त तुहुं विसु सव्वंगइं तावइ ॥
फणिदट्ठी घरिणि महुं तणिय तुह मंतें धुवु जीवइ ॥ १२ ॥

13

मित्तें मित्तहु णियमणु ढोइउ जायवि मुद्धहि वयणु पलोइउ ।
पइणा गरललिंगु णो लक्खिउं खयरें मउलियणयणें अक्खिउं ।
मंदरु जाइवि लहु दिव्वोसहि हउं आणमि तुहुं रक्खइ पियसहि ।
एम कहिवि गउ सुंदरु जावहिं सुंदरि झत्ति वइट्ठी तावहिं ।
भणइ ण खंजमि सविसभुयंगें हउं खद्धी पइं धुत्तभुयंगें ।

12. १ MB पेमंधइ. २ MB किं पियमम. ३ MB अकु सकु किं. ४ MB समुब्भियवीणवियाणइ; G समुब्भियवीणुवियाणइ, but gloss समुद्धृतचीनाम्बरध्वजौ °वितानौ वा. ५ MB संपाविउ. ६ MB धुउ.

13. १ MB देहु. २ MB गरुल°. ३ MB मउलियवयणें. ४ MB सव्वोसहि. ५ MB खजउं.

12. 1 *a* जलयरचिंधइ मकरध्वजे. 2 *b* अक्खु कथय. 5 *a* समुब्भियचीणवियाणइं समुद्धृतचीनाम्बरवितानौ.

जइ मम्मणमंतें तणु अंचहि जइ रइरसजलधारइ सिंचहि।
तो हउं मुच्चमि विरहविसोहें ता पडिजंपिउ पसमियमोहें।
पीयलु हरिवारुणिफलु जेहउ अंगु वियाणहि मेरउं तेहउं।
वम्महसरहं कँयाइ ण भिज्जमि संढु पुरंधिहिं हउं ण रमिज्जमि।
परकुलउत्ती जणणिसमाणी तुहुं पुणु जाय विहिणि मित्ताणी।

घत्ता—रइसेणु वि आयउ मंदरहो वणि पुच्छिवि सकलत्तउ ॥
गंधारणयरु सो अप्पणउं णाहि विहरंतउ पत्तउ ॥ १३ ॥

14

तहु पुणु सहुं महिलइ वियरंतहु उप्पलखेडहु बाहि णाहि जंतहु।
खलिउ विमाणु दिट्ठु मुणि उववणि वंदिउ भावें दोहिं वि तक्खणि।
पुच्छिउ धम्मु रिसिंदें भासिउ सावेयमग्गु विसेसें देसिउ।
गुणवंतेण सुणिम्मलवइणा तहिं परयारु णिवारिउ जइणा।
परयारिउ लोएं णिंदिज्जइ असिधाराकरवत्तहिं छिज्जइ।
तित्ति ण पूरइ जूरइ सज्जणु वड्ढइ कामडाहु पसरइ मणु।
लोयणजुयलु वलइ कयणेहउ परयारियहु सोक्खु कहिं केहउ।
जइ वि लोउ णियकज्जु पँवुक्खइ संकालुहि तं तासु जि दुक्खइ।
मत्थयमुंडणु विल्लणिबंधणु कुखरारोहणु णासाखंडणु।
जारु होइ तिहुयणि अपसंसउ मुउ पुणु दूहउ दुट्ठु णउंसउ।

घत्ता—इय रिसिवयणाइं सुणंतियए गंधारिहि मँणु तप्पइ ॥
हा हा मइं दुट्ठइ दुट्ठु किउ इय णियहियइ वियप्पइ ॥ १४ ॥

६ MB जइ रसजलधारहिं मइ सिंचहि. ७ MB ण काइं वि. ८ MB माय बहिणि

14. १ MB महिलहि सहुं. २ MB सावयधम्मु. ३ MB दंसिउ. ४ MB पवुकइ, T वुक्कइ ब्रवीति. ५ MB तासु खुडुक्कइ. ६ M दूसउ. ७ MB तणु.

13. 8 *a* हरिवारुणि° इन्द्रवारुणीफलम्. 10 *b* मित्ताणी मित्रभार्या.

14. 1 *b* बहि बाह्ये. 8 *a* पवुक्खइ पर्यालोचयति. 10 *b* णउंसउ नपुंसकः.

15

मण्णिवि मुणिवरु बे वि पयट्टइं णहयलणिहियपायकंदोट्टइं ।
कंतइ गुरुवयणइं चिंतंतिइ णरयविवरवडण संकंतिइ ।
कंतहु सइं अहिमाणविणासउ कहिउ कुवेरकंतअहिलासउ ।
हउं पाविट्ठ तुहारी दोही मा होज्जउ तियमइ मइं जेही ।
मुइ मुइ जामि देव पावेज्जहि उत्तरु दइएं दिण्णु सभज्जइ ।
मणु जं पइं पररइमलमइलिउ तं आलोयणजलपक्खालिउ ।
एवहिं तुहुं महुं सुद्ध महासइ आउ जाहुं ता वहु पडिभासइ ।
जीवदयाघयधारासित्तें सुहपरिणामसमीरपलित्तें ।

घत्ता—घरमोहबहलधूमुज्झिएण जइ तवजलणें डज्झमि ॥
तो तत्तसुवण्णसलाय जिह हउं भत्तार विसुज्झमि ॥ १५ ॥

16

केम वि चाडुयसयहिं ण थक्की ता णाहेण णियंबिणि मुक्की ।
बेण्णि वि ताइं तेत्थु पावइयइं एउं णयरु विहरंतइं अइयइं ।
थिउ मुणि बाहिरदेसि रवण्णइ घरु आयइ अज्जाइ पसण्णइ ।
जिह जिह सा महु कहिय कहाणी गुज्झरहच्छें चारु विराणी ।
तिह तिह पिययमेण आयण्णिय णिग्गच्छिवि सा तेण पमण्णिय ।
भत्तिइ तहि पणामु विरयंतें थुय गंधारि धीरधी कंतें ।
सव्वहिं जायवि हयसंसारउ वंदिउ सो रइसेणु भडारउ ।
सकुलक्कमु गुणवालहु दिण्णउ लोयवालु पव्वज्ज पवण्णउ ।

---

15. १ MB णहयालि णिहिय°. २ णरयविवराणिवडण. ३ MB विणासिउ. ४ MB पाविट्ठ धिट्ठ तुह दोही. ५ MB पाविज्जहि. ६ MB सुद्धु. ७ M धारोसित्तें. ८ M तो, B भो.

16. १ MB ताइं तेत्थु वि. २ MB इय जिह जिह महु. ३ M गुज्झहहत्थें, B गुज्झहरत्थें. ४ MBK विराणी. ५ M आयाणिय. ६ M पमाणिय. ७ MB पमाणु.

---

15. 5 *a* मुइ मुइ मुअ मुअ.

16. 4 *b* विराणी विरागिणी.

पुत्तचउक्कें सहुं भत्तारें णिप्पिहेण तोडियमयमारें।
लइय दिक्ख बालियवयभारें मोहिय लहुययरेण कुमारें।
हउं कुबेरदइएं तेणच्छमि पुत्तहि मुह पहपहसिउं पेच्छमि।

घत्ता—गुणवालहु कयमंगलसयहिं घल्लिय कामिणि सेसहो॥
पुणु दिण्णी ताइ कुबेरसिरि णियकुमारि धरणीसहो॥ १६॥

17

सा कुबेरपूय तणुरुहु पुच्छिवि इंदियसुहसंबंधु दुगुंछिवि।
पत्तइं पारावयइं णरत्तणु पेच्छिवि अरुहधम्मचारत्तणु।
कयलीकंदलकोमलगत्तइ किउ णिक्खवणु तुरिउ पूयदत्तइ।
संतहि दंतहि बहुगुणगणिहि चरणमूलि तहि गुणवइगणिहि।
कयजयवयणावंगालोयण पुणु वि कहाणउं कहइ सुलोयण।
तहिं पुरि थहि मसाणि सो जइवरु थक्कु हिरण्णवम्मु लंबियकरु।
णरवइ पुरु परियणु संखोहिउ मुणि पडिमाजोएं संबोहिउ।
सत्तमि दियहि पवणि पहावइ मुणिवरियाणुय गिरिणिच्चलमइ।
थिय णिसिं णयरपओलिसमीवइ जिणु थुवंति णियमणराईवइ।
एंत्तहि जो रिउ वणि पुणु मंजरु सो णरु हूयउ तलवरकिंकरु।
णिसिहि समागय गयवरगामिणि तासु पासि पुरवणिवइकामिणि।
सा कुंदलय तेण परिपुच्छिय अज्जु सुइरु सुंदरि कहिं अच्छिय।

घत्ता—मुणि पडिमाजोएं संठियउ तहु चलणाइं णरिंदें॥
वंदियइं अंसेसें पट्टणेण अम्हारएण वणिंदें॥ १७॥

८ MB वालिय°. ९ MB लहुयरेण इह कुमारें. १० M मुहुं मह पहसिउं; B मुहुं पहपहसिउं.

17. १ MB कुबेरपिउ. २ MB पेच्छिवि. ३ MB मणुयत्तणु. ४ MB °धम्मु चारुत्तणु. ५ MB कयलीकोमलकंदलगत्तइ. ६ MB पियदत्तइ. ७ MB पडिबोहिउ. ८ MB णिसियर°. ९ MB थवंति. १० MB एत्तहि वइरिउ. ११ MB वरगय°. १२ M पासि वणिवर पुरि कामिणि; B पासि पुरवणिवरकामिणि. १३ MB असेसइं.

10 *a* वालिय° पालितः. 11 *b* पहपहसिउं प्रभया प्रहसितम्.

17. 5 *a* °अवंग अपाङ्गः 9 *b* °राईवइ पङ्कजे.

18

सावयवग्गें वज्जियविग्घें गुणवइजसवइगणणीसंघें ।
सव्वहिं संथुय जइवरपायइं तं पिउवणु मेल्लेप्पिणु आयइं ।
चिरु मुणिणाहहु केरी गेहिणि बुद्धिविसुद्धसीलजलवाहिणि ।
वयधारिणि अत्थवियइ सूरइ एंति एंति थिय णयरदुवारइ ।
दुम्महवम्महसरसंघारी तणुविसग्गु विरएवि भडारी ।
ताइं बे वि पारावयजुम्मइं सेट्ठिगेहि जाणियजिणधम्मइं ।
वणि लद्धइं खद्धइं मंजारें जायइं मणुयइं सुहसंचारें ।
बे वि विरत्तइं धरियचरित्तइं तवतत्ताइं एत्थ संपत्तइं ।
ताहं णाहु गउ वंदणहत्तिइ तेण समागय गउयहि रत्तिहि ।
ता णिसुणियविसदंसपवंचें भउ संभरियउ तलवरभिच्चें ।
ताइं बे वि जाणवि महु अहियइं मइं जि पुव्वजम्मंतरि वहियइं ।

घत्ता—मिच्छुत्तरु वेसहि वज्जरिवि गउ कोवग्गिपलित्तउ ॥
जहिं अच्छइ संजमधारिणिय तहिं पुरि बाहिरि पत्तउ ॥ १८ ॥

19

सा जोइवि पुणु मुणि अवलोइउ सिहि मसाणकट्ठहिं संजोइउ ।
पडियाएण तेण पच्चारिय पाविट्ठेण ते वि धिक्कारिय ।
तुहुं महु पुव्वभवम्मि पलाणी जेण समउ अच्छिय सुहलीणी ।
सो वरइत्तु काइं पइं मुक्कउ अच्छइ तुह रइरमणहु ढुक्कउ ।
आउ तुज्झु मेलणउं समारमि एवहिं हउं विवाहु अवयारमि ।
एम भणेविणु खंधि चडाविय विरयहु णियडि विरय संप्राविय ।
आलिंगह भणेवि रइलुद्धइं बिण्णि वि एक्कीकरिवि णिबद्धइं ।
भीमें भीसणेण खययत्तिहि घित्तइं चियहि जलंतजलंतिहि ।

18. १ MB बुद्ध विसुद्ध°. २ MB जम्मइ. ३ MB मंजारें. ४ MB जायइ मणुएं. ५ MB वंदणगउ हत्तिइ. ६ MB भउ. ७ MB पुरबाहिरि.

19. १ MB अवलोयउ २ MB रइमणहो चुक्कउ. ३ MB विरइ संपाइय. ४ B भीसंतेण.

---

19. 3 *a* पलाणी नष्टा. 6 *b* विरय आर्या. 8 *b* चियहि चितायाम्.

दड्ढइं बिण्णि वि सिमिसिमियंगइं णिग्घिणु णिहणेप्पिणु णीसंगइं ।
रसवसवींसढ गंधालित्तउ आवेप्पिणु णियभवणि पसुत्तउ ।
णिद्दंधेंइयउ जंपइ वेरिउ चंगउ सहुं महिलइ मइं मारिउ ।
तं णिसुणिवि वेसइ उवलक्खिउ रविउग्गमि अइजुयलु णिरिक्खिउ ।
पेयालइ कुवहेण पलीविउ राएं पउरयणें सिरु चालिउ ।

घत्ता—मणि चिंतिउ ताइ विलासिणिए दुक्किउ कासु कहिज्जइ ॥
इह जम्मि अहव परजम्मि सइं पावें पाउ गिलिज्जइ ॥ १९ ॥

20

हाहासद्दें रुण्णु णरोहें अप्पाणउ णिंदिउ णरणाहें ।
वहकारिंहि लोर्याहं गंविट्ठउ पायमग्गु पुरि गंपि पइट्ठउ ।
खलु णाउं वि रूउं वि पलट्टिवि णट्ठउ भयभावेण विसट्टिवि ।
एक्कमेक्क खय करणें लइयइं बेण्णि वि मरिवि ताइं पव्वइयइं ।
उप्पण्णाइं सग्गि सोहम्मइ मणिकूडइ विमाणि रइरम्मइ ।
सुरु मणिमालि देवि चूडामणि णं मेहहु सोहइ सोदामिणि ।
आउ ताहं मुणि गणणाँसुद्धइं पल्लइं पंच पमाणणिबद्धइं ।
उसिराणयरिहि कयपयणायहु कहिउ सुवण्णवम्मखयरायहु ।
केण वि पालियसंजमणियरइं मारियाइं बिण्णि वि तुह पियरइं ।

घत्ता—सा देव पुंडरिंकिणि णयरि हुयवहजालहिं डज्झइ ॥
रिसिमारय भंगहयारि खलु गुणवालु वि रणि वज्झइ ॥ २० ॥

५ M जलंतजलंतिहिः B omits जलंतजलंतहि. ६ M वीमरु. ७ M णिद्धउ इय जंपइ ८ MB वइरिउ.
९ MB हुयवाहें पउलिउ.

20. १ B गरिट्ठउ. २ MB पुरु. ३ M णाउं रूउ वि; B णाउं वि रूवें. ४ M कारणें; B करणे.
५ MB पव्वइयइ. ६ MB रइरम्मइ. ७ MB गणिणा. ८ M °णामहु

18 *a* पेयालइ श्मशाने.

20. 3 *b* विसट्टिवि प्रकम्प्य. 7 *a* आउ आयु.; मुणि जानीहि. 8 *a* °पयणायहु प्रजाया न्यायस्य.

21

तं णिसुणिवि सहुं सेण्णहिं णिग्गउ सो गलगज्जिवि णावइ दिग्गउ ।
साहणु सिद्धकूडु संप्रोइउ तं सुरमिहुणु वि तहिं जि पराइउ ।
देवें देविहि कहिउ कहाणउं तुह तणएण विइण्णु पयाणउं ।
अम्हहं मरणु मुद्धि णिसुणेप्पिणु गुणवालहु उप्परि रूसेप्पिणु ।
पुरवरु इहहुं एहु संचलियउ अम्हहुं दइववसेण जिं मिलियउ ।
एम्व भणेप्पिणु बिण्णि वि जायइं संजमधर संजमवरकायइं ।
आसीणइं वसहिहि पलियंकें वंदियाइं कुलकुमुयमियंकें ।
कंचणवम्में बिण्णि वि भावें उत्तउं मायामुणिवरदेवें ।
किं कुइओ सि पुत्त उवसंतइं अम्हइं अच्छहुं बे वि जियंतइं ।
सावउ विरयजुयलु किं मारइ अज्ज वि म्हो एहु हियइ वियारइ ।

घत्ता—जेणम्हइं पावइं मारियइं सो सव्वत्थ गवेसिउ ॥
तणुरुह गुणवालणराहिवेण अप्पउ दुक्खें सोसिउ ॥ २१ ॥

22

जइ वि मुयइं तो वि किर ण मुयइं अम्हइं बेण्णि वि भुंजियअमयइं ।
जायइं देवइं दिव्वसरीरइं अणिमामहिमाईहिं गहीरइं ।
वार वार भवसुकिउ पसंसिउ सुरमिहुणें णियरूउ पदंसिउ ।
कणयवम्मु समभावें लइयउ देवेंदिण्णभूसणवंचइयउ ।
गउ णियवासहु सो खयरेसरु वच्छंदेसि मिवघोसु जिणेसरु ।
तं वंदहुं संपत्तु सुरेसरु अरुहदत्तु णामें चक्केसरु ।
भवरु वि सा अच्छर सो सुरवरु संथुउ संसमेण तित्थंकरु ।
जिणदिव्वज्झुणिरंजियकण्णइं छुडु छुडु सव्वइं जाम णिसण्णइं ।
ता तहिं पच्छइ सयमहरामउ अवइण्णउ सइं मीणइणामउ ।
जिणु चक्केसिं पुच्छिउ पायडु किं घरयम्मविहाणें वावडु ।

21. १ MB णाइं दिसागउ २ MB सपाइउ ३ MB मुद्धि मरणु. ४ M वि. ५ B वसुहहि. ६ MB कंचणवण्णें. ७ M उत्तमु. ८ साविउ.

22 १ MB मुयाइं. २ MB दिव्व°. ३ GKT p संभवेण इति पाठे आदरेण. ४ M दिण्णदिव्व°. ५ MB तो.

21. 9 *a* कुइओ कुपितः. 12 तणुरुह हे पुत्र.

22. 7 *b* संसमेण समीचीनोपशमेन. 10 *b* वावडु व्यापृतत्वम्.

समउ पुरंदरेण किं [६]णायउ देविजुयलु दरिसियमुहरायउ ।
केवलणाणपईवें दिट्ठउ चक्कीसहु जिणणाहें सिट्ठउ ।

घत्ता—बिहिं मालायारिहिं दिट्ठु वणे वंदिउ मुणि हयकम्मउ ॥
कर मउलिकरिवि आयण्णियउ भावें सावयधम्मउ ॥ २२ ॥

23

लइउं घडें घरविहि परिवट्टइ जाँहुं जिणिंदभवणु ण पयट्टइ ।
उत्तमंगु भत्तिइ णावेप्पिणु देव णमोरहंत पभणेप्पिणु ।
बे वि थिवंति चंदरविणयणाइं पढमं चिय कुसुमंजलिगयणाइं ।
एण णिओएं गलियइ कालइ एक्कहिं वासरि लवलिलयालइ ।
एक्कहि पाणिपामि फणि लग्गउ हाहारउ वयणाउ विणिग्गउ ।
सहि णियसहियहि पासु पधाइय सा वि भुयंगमेण आसाइय ।
विसमविसाणलेण जलजलियइं बिहिं वि सरीरइं महियलि घुलियइं ।
दोहिं वि दॅरचेयणइं सॅगंतिहिं दिट्ठउ इंदागमणु मरंतिहिं ।
भोयाँकंखइ करिवि णियाणउं लद्धउं सुरवइदेवीठाणउं ।
धरणिणाह छुडु छुडु उप्पण्णउ तेण समागयाउ सुरकण्णउ ।
पयउ बिण्णि वि णियवइपच्छइ एयहु केरउ अच्छइ कच्छइ ।
अज्ज वि णिवडिउ तणुजुयलुल्लउं लोएं जोइउ गयजीउल्लउं ।

घत्ता—कह कहइ सुलोयण तहु जयहो भरहचरणणावियंगहो ॥
कंतीइ पयावें दुज्जयहो पुप्फयंतगुणतुंगहो ॥ २३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणधित्तपुप्फंजलिफलं णाम
तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३० ॥

॥ संधि ॥ ३० ॥

६ M विण्णायउ. ७ MB णारिजुयलु.

23. १ MB लइयउ. २ B वर घर°. ३ MB जाहं. ४ MB गर° ५ MK सहंतिहिं; T सरंतिहिं.
६ MB भोयाकंख करेवि. ७ M गुणचंगहो.

23. 1 *a* घरविहि पुष्पत्रोटनग्रथनविक्रयादिगृहव्यापारः. 8 *a* सरंतिहिं स्मरन्तीभिः. 11 *a* णियवइपच्छइ निजपतिपश्चात्; *b* कच्छइ अरण्ये. 13 पुप्फयंतगुणतुंगहो पुष्पदन्तौ चन्द्रादित्यौ तयोर्गुणौ कान्तिः प्रतापश्च तौ तुङ्गौ महान्तौ यस्य.

XXXI

जिणवयणइं आयण्णिवि णियहियउल्लइ माण्णिवि ॥
मालइमालामालिउ सद्दुं कंतइ मणिमालिउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

गउ सिरिमाणणु णवंकमलाणणु ।
णहि विहरंतउ काणणु पत्तउ ।
उण्णयतालउ घण्णयमालउ ।
णाउं पसिद्धउ महिरुहरिद्धउ ।
हंसहिं धवलिउ चक्कहिं मुहलिउ ।
चलजलहल्लिउं कमलहिं फुल्लिउं ।
गयमयग्गामलु केसरपिंगलु ।
पत्तहिं णीलिउ भमरहिं कालिउ ।
दिट्ठउ मणहरु सच्छंसरोवरु ।
मणि विप्फुरियउ भवें संभरियउ ।
कयंसिरिसिलेवें भासिउं देवें ।

घत्ता—आसि जम्मि संचियधणु हउं सुकंतु वणिणंदणु ॥
तुहुं रइवेगपियारी होंती घरिणि महारी ॥ १ ॥

2

वीसइ पुरि एह मुणालवइ जहिं हुइं विहिं वि विवाहरइ ।
णं धरियइं कह व चीरंचलइ उट्टेंटउ लग्गउ पच्छलइ ।
इह प्राणंहरणभयविहडियइं धावंतइं विण्णि वि णिवडियइं ।

1. १ B ण कमला°. २ MB काणणि. ३ M केसरि ४ MB सच्छ° ५ MB भउ. ६ B कय-सिरिसेवें. ७ MBK रइवेयपियारी.
2. १ MB णउ धरिय. २ MB पाण°.

1. 3 *a* सिरिमाणणु लक्ष्मीभोक्ता.

इह तुह पयलोहिउं पयलियउं इह महु उप्परियणु वियलियउं ।
इह कंटइ लग्गउ कंचुयउ इह दोहं मि देहकंपु हुयउ ।
एहु सो सरवरु खगभूसियउ जसु जलेण देहु आसासियउ ।
एत्थेत्थु जाम सो घरइ खलु तावेत्थु जि दिट्ठउ पवँलु बलु ।
सो सत्तिंसेणु राणउ सुयणु संभरहि ण किं तुहुं हलि सुयणु ।
पुव्विल्लउ जम्मु णिहालियउ ता देविइ सिरु संचालियउ ।
इय वयँणु वियारिउ जाम जँहिं रिसि एक्कु णिरिक्खिउ ताम तहिं ।
अमरें विहुणेप्पिणु सिरकमँलु पुणु जंपिउ वण्णपंतिसरलु ।

घत्ता—बेण्णि वि रमणरसङ्काइं जेण णिहेलणि दड्ढइं ॥
पारावयभँवु पत्ताइं कड्ढइं णिग्गयरत्ताइं ॥ २ ॥

3

पुणु उप्पण्णाइं विज्जाहरइं हुणियाइं मसाणइ मुणिवरइं ।
भवदेवें विडालउ तलवरउ जो होंतउ चिरु दुक्कियणिरउ ।
सो एवहिं जायउ एहु जइ उज्झहुं संसारु विचित्तगइ ।
परिभावहुं एयहु तणिय मइ किं रूसइ किं अम्हहं खमइ ।
इय जंपिवि हयवम्महसरहु आसण्णु णिसण्णउ जइवरहु ।
कय वंदण पुच्छिय धम्मविहि रिसि भासइ सुय सुयणाणणिहि ।
लत्थें सहुं लेसासंख मुणि ए पंति पपुच्छहि तच्च गुणि ।
हउं किं पि ण याँणउं णवसँवणु किं देवहु करमि धम्मसवणु ।
कयँगाहहु तियसहु णउ रहिउ पुणु तेण तासु तिजगु वि कहिउ ।
जिह जीवाजीवपुण्णगइउ जिह वड्डियाउ पावयमइउ ।
जिह आसवसंवरणिज्जरइं जिह बंधमोक्खभावंतरइं ।

३ MB पवर. ४ वण्णु. ५ M तहिं. ६ M °कवंलु. ७ MB °भउ.

3. १ MB भवदेउ. २ MB मुणि. ३ K याणमि. ४ B समणु. ५ MB किय°.

---

2. 8 *a* सुयणु सुजनः; *b* सुयणु हे सुतनु.

3. 7 *a* लेसासंख षट्.

तिह मुणिणा सयलु पयासियउ तं णिसुणिवि तियसें भासियउ ।
पइं लइउ सिसुत्तणि तवँचरणु भणु वइरायहु कारणु कवणु ।

घत्ता—तं णिसुणिवि हयरायइ मउगंभीरइ वायइ ॥
केवलिकहियउ वइयरु देवहु अक्खइ मुणिवरु ॥ ३ ॥

4

धरसिहरारूढरामियखयरि अत्थीह पुंडरिंकिणि णयरि ।
तहिं कुंभोयरु णिवसइ वणिउ णामेण भीमु णंदणु जणिउ ।
उव्विण्णउ णिलयहु णिद्धणहु हुउं कीलइ गउ णंदणवणहु ।
जइ वंदिवि सावयवँउ गहिउं घरु आयहु बप्पें णउ सहिउं ।
परवहियम्मेणुंण्णिद्दियहो वउ किं सुंदरु दालिद्दियहो ।
जं दिण्णउं अप्पहि तासु सुय आवेहि जाहुं लहु दीहभुय ।
ताएण सहत्थें पेल्लियउ मुणिवासहु हउं पुणु चल्लियउ ।
परँमारउ परथीदव्वहरु परमम्मविहट्टणु अलियसरु ।
लुद्धु वि पहि बद्धु णियच्छियउ जणणें एक्केक्कउ पुच्छियउ ।
तेहिं वि अक्खिउं णियणियचरिउं हिंसालियवयणहिं परियरिउं ।

घत्ता—जेण जीवकुलु हिंसिउ जेण असच्चउ भासिउ ॥
जेण परँव्वसु हित्तउ जसु मणु परवहुरत्तउ ॥ ४ ॥

5

जो लोहकम्माएं भावियउ सो कवणु ण विहुरें तावियउ ।
मंइं भणिउं तायें पयइं व्रयंइं मइं गहियइं वंदिवि रिसिपयइं ।

१ MB तवचरणु.

4. १ MB °वउ लयउ. २ MB °णुण्णिदयहो, G णुण्णादियहो and gloss निद्रारहितस्य, K णुण्णादियहो but corrects to °णुण्णिद्दियहो; T उण्णिद्दियहो. ३ MB वउ. ४ MB पुणु हउं ५ MB read in place af this line. पाणहरु आलियभासिरउ थेणु, परमहिलारउ मणमइलरेणु; T मणमइलरेणु मनसि मलं पापं रेणुश्च ज्ञानदर्शनावरणलक्षणं रजः.. ६ MBK परस्सु विहित्तउ and gloss in MK on विहित्तउ विशेषेण हृतम्; T परस्सु वि परद्रव्यमपि.

5. १ M reads this line as मइं गहियइं वंदिवि रिसिपयइं, मइ भणिउ ताइ एयइं वयइ. २ MK ताइ. ३ MB वयइं.

---

4. 5 *a* परवहियम्मेण भारवाहकर्मणा; उण्णिद्दियहो निद्रारहितस्य.

एएँ वयविवरंमुह बद्ध जिह हउं रोएं बज्झमि जणण तिह ।
तं णिसुणिवि पिउणा इच्छियउ महं देसचरित्तु पडिच्छियउ ।
गय बिण्णि वि णयरुज्जाणवरु पणविउ मुणि भुवणाणंदयरु ।
तहु वयणें वणिवरु उवसमिउ घरधम्मि जिणिंदसेट्ठि रमिउ ।
दोगच्चें किं वर करमि तवु किं णासमि लद्धउ मणुयभवु ।
महं एमं णएण समुल्लविउ पिउहत्थहु अप्पउ मेल्लविउ ।
तसथावरजीवहुं कयदयइं उद्धरियइं पंचमहव्वयइं ।

घत्ता—कयफणिसुरणरसेवहु पायमूलि जिणदेवहु ॥
दूसहदुक्खणिरंतरु णिसुणिउं णियजम्मंतरु ॥ ५ ॥

6

महु तिहुयणणाहें हरियउ पइं वणि मिहुणुल्लउ मारियउ ।
णिसिं चिरु भवदेवें विप्पिएण होंतेण कालकंदलपिएण ।
पुणु तं चि वि जुयलउं लक्खियउं मज्जारें होइवि भक्खियउं ।
जइयहुं ताइं जि तवतत्ताइं पइं धरिवि हुयासणि हित्ताइं ।
तइयहुं होंतो सि तलारु तुहुं ओसहिगुणेण णट्ठो सि लहुं ।
गुणवालें तुहुं अण्णेसियउ कह कह व ण जमउरि पेसियउ ।
जाइवि अण्णेत्थ वासु रइउ सो णरवइ हुंउ जं पावइउ ।
पइं पुणरवि णयरि पवेसु कउ अंजणगुणेण दिसारु हउ ।
लोयहु केरउ धणु चोरियउ पउरें रायहु पुक्कारियउ ।
तें आरक्खियउलु गराहियउ तेण वि पडियंजणु साहियउ ।
तुहुं विज्जुचोरु दिट्ठउ धरिउ पइं वित्तणिवासु वि वज्जरिउ ।

४ MB ए. ५ MB पावें. ६ MB दोगत्तें किंकर. ७ T एण णएण. ८ MB दूसहु.

6. MBKT रिसि and gloss in T रिसि हे भीममुने. २ M °कंदालि°. ३ MBT तं चिय जुवलुल्लउं खियउं. ४ K हुयासें णिहित्ताइं. ५ MB अण्णत्थ. ६ MB हूयउ पव्वइउ. ७ MB कयउ. ८ MB हुउ; T हउ

5. 7 *a* दोगच्चें दरिद्रेण.

6. 2 *b* °कंदल° कलहः. 3 *a* तं चि वि जुयलउ तदेव पक्षियुगलम्. 8 *b* दिसारु हउ दृष्टिचारो हतः, अदृश्यो जातः.

घत्ता—कयरमणीयणकीलणि कंचणयारणिहेलणि ॥
पइं णिहियाइं जियक्कइं हरिवि सत्त माणिक्कइं ॥ ६ ॥

7

तं मंदिरु दाविउ णिवणरहुं करवालकौतकंपणकरहुं ।
सोण्णारु वि मइं हक्कारियउ मग्गिउ ण देइ विहिवारियउ ।
पहुणा सो पुंछिउ भोयणउं तं घरणिहि भासिवि लंछणउं ।
आणाविय मंणि गेहे णिहिय वणिमालइ ओलक्खिवि गहिय ।
जिम्व खाहि छाणु जिम देहु घणु जिम्व विसहहि मंल्ल मुट्ठिहणणु ।
इय चिमइहि दंडु वियारियउ मल्लें घायहिं ओसारियउ ।
गोमउ वि ण भक्खहुं सक्कियउ वसु ढोयइ चित्ति चवक्कियउ ।
पडिवाडिइ सो तिण्णि वि करिवि दुम्मइ दुग्गइ पत्तउ मरिवि ।
तुहुं पुणु चंडालहु ढोइयउ थेउ लइयउ तेण ण घाइयउ ।
कुद्धउ दोहिं मि पहु घणतिमिरि दोण्णि वि बंधिवि[10] घत्तिय विवरि ।
पइं[11] भणिउं पाण प्राणहं हरणु हउं संभाविउ[12] किं णउ मरणु ।

घत्ता—ता चंडालें भासिउं[13] णिसुणहि कम्मु दुविलसिउं ॥
जं संसारइ पत्तउं मइं णियदेहें भुत्तउं ॥ ७ ॥

8

इह होंतउ गुणवालउ णिवइ राणी कुबेरसिरि सच्चवइ ।
पुहई वसु णामें धीरमण सच्चावियहि भायर बिण्णि जण ।
गरुयत्तें सरिस मेरुगिरिहि एक्कु जि बंधउ कुबेरसिरिहि ।
अच्छंतहं ताहं तेत्थु सघरि णिवकरिघरिंदु कीलंतु सरि ।

7. १ M °णराहं; B णरहं. २ M °कराहं; B करहं. ३ M सोणारु; B सुण्णारु. ४ MBK पुच्छिउ. ५ MBK माणि मणिगणि णिहिय. ६ M मक्षि. ७ MB भक्खहिं. ८ MB चवंकियउ. ९ MB वउ; K वउ but वउ in second hand. १० MB घत्तिय बंधिवि. ११ M मइं पभणिउं पाणु पाणहरणु, B मइं पहणिउं पाणु पाणहरणु. १२ MB संपाइउ. १३ MB भासियउं. १४ MB दुविलसियउं.

8. १ MB गुरुयत्तें.

12 *b* कंचणयार° सुवर्णकारः.

7. 3 *b* लंछणउं अभिज्ञानम्. 11 *a* पाण चाण्डालः.

8. 2 *a* पुहई पृथुश्रीः.

वणि समवसरणि जिणदेवझुणि आयण्णवि जायउ झत्ति मुणि।
अवलंबिउ हिंसविरत्तियउ जिउँ जोयवि सणियउं दिण्णु पउ।
अविसुद्धउ गासु ण अहिलसइ गयवालउ महिवालहु दिसइ।
करि कवलु ण गिण्हइ प्राणपिउ ता राएं पहिउ कुबेरपिउ।
तें पलपिंडउ दरिसावियउ तं ण णियइ काँरि वरभावियउ।
पुणु अण्णु वि सुद्धु पयच्छियउ तो हत्थिंदेण पडिच्छियउ।

घत्ता—वारणु दुण्णयवारउ हुयउ अणुव्वयधारउ॥
इय महवंतु वियाणिउ वणि राणहु संमाणिउ॥ ८॥

9

अण्णहिं दिणि णरणाहहु तणउ णहु णट्टमालि णवतोरणउ।
घरु आयउ णच्चाविय दुहिय रसविब्भमहावभावमहिय।
पुच्छिय राएं विरइयतिलय णामेणुप्पलमाला विलय।
मयणाहिविसेणुब्भंतियए वणिवइसरूउ चिंततियए।
मुच्छइ णीराउ पजंपियउ राएं णियहियइ वियप्पियउ।
णियघरु जाएवि वणीसरहु अम्माइ णिउंजिय दूइ तहु।
ता सुहएं पडिवयणेण हय पेणयंगणरयहु णिवित्ति कय।
संबोहिय सहियइ हंसगइ दुलहलंभसु म करहि रइ।
दुम्महवम्महमग्गणवहिय ता जंपइ पवरविलासिणिय।
महि वट्टइ चित्तु दुसंथवउ संभूयउ वल्लहु णवणवउ।
हलि पंचमु सरसु समालवहि जइ सूहउ कह व ण मेलवहि।
तो मरउं णिरुत्तउं कहिउ मइं असमक्खि रुवेवउं माइ पइं।

२ MB हिंसविरत्ति जिउ. ३ MB जोयवि सणियउं पहि दिण्णु पउ. ४ MB पाणपिउ. ५ MB करिवरु भावियउ. ६ MBK सुद्धु. ७ MB अइमइ°.

9. १ MB add before this the following lines: पुणु णिवए तूसिवि दिण्णु वरु, सेट्ठि पउत्तु आणदयरु; अच्छउ (M अचउ) वरु थवणीराय महु, जइया मग्गेसमि देसि पहु. २ MB पणियगण°. ३ MB मग्गणवणिया; K °वणिय°. ४ MB °विलासिणिया. ५ MB सरु मुगमा° ६ MB सूहउ णउ महु मेलवहि. ७ MB मरमि.

8 *b* पहिउ प्रेक्षितः.

9. 4 *a* मयणाहि° कामसर्पः, 5 *b* राएं रागेण, 12 *b* असमक्खि परोक्षे.

घत्ता—सहि पभणइ अट्ठमदिणि थक्कइ जिणभवणंगणि ॥
हियवइ अरुहु धरेप्पिणु कायविसग्गु करेप्पिणु ॥ ९ ॥

10

तइयहुं तुह संचियझाणग्गु उब्भाइवि आणमि सो अवसु ।
इय तेहिं बिहिं वि आलोइयउ तो अट्ठमिणग्गु पराइयउ ।
थिउ ओलंबियकरु धीरु जहिं आलिइ जाएप्पिणु तुरिउ तहिं ।
उब्भाइवि आणिवि बालियहे पिउ अप्पिउ उप्पलमालियहे ।
मुद्धाइ सुरयविहि मयलु कउ वरु थक्कउ णावइ कट्ठमउ ।
हे णीरसत्तु दुव्बोल्लियउ जहिं अच्छिउ तहिं पुणु घल्लियउ ।
तं गयण वि आयाणियउं वाणियरहु थिरत्तणु मण्णियउं ।
उवहसिय वम्म णर परिहरिवि धरि थक्की बंभचेरु धरिवि ।

घत्ता—लुयासुत्तें वज्झइ मत्तउ ण हत्थि णिरुंज्झइ ॥
वसहि जडयणु णिवडइ विउसहु तहिं मणु विहडइ ॥ १० ॥

11

तलवरसुउ अवरु वि मंतिसुउ भोयालउ णिवभोइणिहि सुउ ।
तहिं मत्तमहेभगयगामिणिहे एए घरु आया कामिणिहे ।
एक्कहु जि एक्कु दक्खालियउ भयभावें मणु संचालियउ ।
परिवाडिइ दिण्णवयणणियल मंजूसहि पइसारिय सयल ।
पिहिइं वि तहिं विहिणा आणियउ रुंभगिरु तरुणिइ भाणियउ ।
जा दिण्णउ सुंकियसास्स रसहि महु तणउ हारु पइं णियससहि ।
सो आणेप्पिणु महु देमि जइ तो देमि हउं मि तुह रमणरइ ।
मंजूस सक्खिकय गउ घरहु बीयइ दिणि उग्गमि दिणयरहु ।

८ MB काउविसग्गु.

10. १ MB तहु संचिय. २ MB तावट्ठमि°. ३ MB थिय. ४ MB वीरु. ५ M आवेप्पिणु. ६ MB अप्पउ. ७ MB हो णीरसु त्ति. ८ MB याणियउ. ९ M विरुज्झइ.

11. १ MB णिवभोयणिहे. २ MB °महागय°. ३ MB पिहिविवि. ४ MB रउ मग्गिरु तरुणिय. ५ MB देहि. ६ K देवि.

10. 2 b °णत्तु रात्रिः. 3 b आलिइ सख्या. 9 लुया° कोलिक°.

11. 1 b णिवभोइणिहे सुउ दासीपुत्रः 5 a पिहिइ पृथुधीनाम्ना सत्यवर्ताभ्राता.

जिह हारु णेण उच्छवि गहिउ जिह लोहिट्ठें पुणरवि रहिउ ।
सुग्गाकंखइ पडिवण्णु जिह गयहु विसंतु पउत्तु तिह ।
माणिणिइ मंति ओहामियउ णिज्जीवमक्खि आणावियउ ।

घत्ता—गहियंगारयहत्थहिं दासिहिं भणिउं समत्थहिं ॥
फुडु मंजूसि समासहि मा हुयवहमुहि पइसहि ॥ ११ ॥

12

तामायसवलयविहूसियए सहसा घोसिउ मंजूसियए ।
पडिवण्णु हारु गयदियहि पइं तुहुं कहु कहु किं भणहि मइं ।
दे देहि विहूसणु सुंदरिहे मा पडहि मंति णारयदरिहे ।
उप्पण्णु चोज्जु णियसिरु धुणिउं कहिं तरु चवंति पहुणा भणिउं ।
परधणहरणारउ साडियउ मंजूसहि मुहुं उग्घाडियउ ।
ते तिण्णि वि तहिं णिग्गय कुविड णारिहि के के णउ मलिय जड ।
णरणाहें पुच्छिय सच्चवइ सा भणइ भंडारी सुद्धमइ ।
पिहिविहि अलद्धकंचणधवहु मइं हारु समप्पिउ बंधवहु ।

घत्ता—खलु दुव्वयणिहिं दोच्छिवि ता समंति णिब्भच्छिवि ॥
महिवइणा आणाविउ तहि भूसेण देवाविउ ॥ १२ ॥

13

आणंदु पवड्ढिउ माणिणिहि मणि रोसु रायचूडामणिहि ।
तें दंडणु अणु पवियप्पियउ असहंतें एम पयंपियउ ।
भो भणि तलवर मंतिहि तणय तिण्णि वि धाडह दूसियविणय ।
सिरकमलु लुणह पुहइहि तणउं ता वणिवरु चवइ सुहावणउं ।
जइयहुं परिणामु विहावियउ जइयहुं कुंजरु भुंजावियउ ।
तइयहुं जो पइं सइं दिण्णु तरु सो अज्जु देहि णिव मंतियरु ।

७ MB पडिदिण्णु. ८ M मणि णियए, B माणिणियए; ९ MB मंजूस. १० M पयसहि.

12. १ MB ता आयस°. २ MBK गइ दिवहि. ३ MB महिवइ. ५ MBK भूसणु.

13. १ MB ते दंडणाणु परियप्पियउ; (B पवि°) २ MB पइं जो महु दिण्णु. ३ MBT पट्ठवहि.

ए परदेसहु मा पिंडवहि एहु वि मा खग्गें खंडवहि ।
ता तहिं धरणीसें किउं करुणु वारिउ विदेसवियरणु मरणु ।
वणिवयणु णरिंदें जं कियउ तं पिहिविचित्तु रोसंकियउ ।
उवयारु खलहु दोसें सरिसु फणिदिण्णउं दुद्धु वि होइ विसु ।
संचिंतइ सो मारमि मरमि मेट्ठिहि णिग्गहु अवसें करमि ।

घत्ता—पुणु गएं णइतीरए तेण तुसारसमीरए ॥
विज्जाहरकरचियल्लिय अंगुत्थलिय णिहालिय ॥ १३ ॥

14

अंगुलियइ कय मुहदाइणिय ता खयरु पलोयइ मेइणिय ।
किं जोयहि मंतें पुच्छियउ तेणुत्तउं इह हउं अच्छियउ ।
महु कामरूवधरि मुद्दडिय एत्थेत्थु मित्त कत्थइ पडिय ।
णं पिययम णाहासिक्खविय तें तहु सा चिहम्मिवि दक्खविय ।
पुणु मग्गियं खयरें दिण्ण तहो संतुट्ठउ गउ णियमंदिरहो ।
लहुयउ भायरु वसु सिक्खविउ मुद्दइ कुबेरपिउ सो ज्जि किउ ।
एक्कासणि चडियउ राणियहे सावयइहि धम्मवियाणियहे ।
सो पेक्खइ णिययसहोयरउ जणु पेक्खइ वणि अयज्जणिरउ ।
पिसुणें पुहवीसहु विण्णविउं परमेसर तुह कलत्तु रमिउं ।

घत्ता—णवजोव्वणमयमत्तें धुउ धणवइयहि पुत्तें ॥
मा परं चरु संजोयहि जाइवि अप्पणु जोयहि ॥ १४ ॥

४ MB °विरयणु. ५ MB चिंतइ सो मारमि पुणु मरमि. ६ MB ठाइवि.

14. १ MB कंपिययमडणा हासें खविय. २ B मग्गिवि. ३ M सो ४ MB वणि णिवभजरउ. ५ K भणजोव्वण°. ६ M पियदत्ताहे. ७ M वर णर

13. 7 *a* पिंडवहि प्रेषय. 13 अगुत्थलिय मुद्रिका.

14. 4 *a* णाहासिक्खविय भर्त्रा अशिक्षिता. 8 *b* अयज्जणिरउ अकार्यनिरतः. 11 पइचरु अन्यं भृत्यम्.

15

मायावइसंसत्तविलंबियउ मुद्धइ डिंभउ सिरि चुंबियउ ।
दुप्पिच्छमच्छरुक्कोयणहिं दिट्ठउ राएं सई लोयणहिं ।
ण वियाणिउ कवडरूवरयणु किउ भिउडिभंगभंगुरवयणु ।
घरु जाइवि रायहु पेसणिण जमदूएण व जमसासणिण ।
पिहिं³ वि चारित्तमहिड्डियउ पडिमाइ परिट्ठिउ कड्डियउ ।
वणिवइं मारहुं णवावियउ उप्फालें जणु मेलावियउ ।
जूरइ सच्चवइ कुबेरसिरि हा किं चलु हयउ मेरुगिरि ।
उण्हउ ससहरु रवि सीयलउ हा किं जायउ धम्महु पलउ ।
अहवा लइ एउं होइ जइ वि तहु भव्वहु सीलु सुद्धु तइ वि ।
तहि अवसरि सो चंडालयहु अप्पिउ तालियकरवालयहु ।

घत्ता—पाणें असि विमुक्की वणिगलकंदलि ढुक्की ॥
सग्गलट्ठि जमदूई सियहारावलि हूई ॥ १५ ॥

16

साहु त्ति भणिवि पणवियपयए पउमासणु किउ पुरदेवयए ।
सोवण्णभूमि मणिमंडविय तहु पाडिहेरसिरि णिम्मविय ।
णिक्करुणु साहु जो णिम्महइ भूवहिं णिबद्धउ सो पुहइ ।
अवरेक्कहिं मच्छरणिब्भरहिं णिंदिवि सिरि चूरिउ टक्करहिं ।
अण्णेक्कइं वेउव्वाइयइं जहिं णरवइ तहिं संपाइयइं ।

15. १ MB वइसत्त. २ MB °क्कोयणहि. ३ MB पिहिविवि चरित्त°. K पिहिंवि चारित्त°. ४ MB add after this the following lines:—

पुण हट्टहु मज्झें चालियउ सव्वेहिं जणेहिं णिहालियउ ।
णि ंनिउ पेक्खिवि जणु रुवइ कु वि थामि थामि थाहउ मुयइ ।
कु वि भणइ राउ कु वि पुहइभउ सुदरु सुसीलु दुट्ठु पावियउ ।
जो दुरणहि तुरणहि जत चिरु जाणहिं जपाणहिं गुणपवरु ।
उद्दहणु जेम वड्डिउ जणेण रोवंतें सयलें परियणेण ।
सो णवहि चरणहिं चरइ किह दुक्कम्मइं पावइ पुरिसु जिह ।

16. १ M णिक्करणु. २ MB सिरु. ३ MB अण्णेक्क. ४ MB संपाइयइं.

15. 1 *a* मायावइसत्त मायावणिक्त्वम. 3 *a* °रयणु रचनम्. 4 *b* जमसासणेण यमाज्ञया. 6 *b* उप्फालें पटहध्वानना.

हा दुट्ठु दुट्ठु मइं मंतियउ हा दुट्ठु दुट्ठु मइं चिंतियउ ।
हा दुट्ठु दुट्ठु मइं भासियउ हा दुट्ठु दुट्ठु मइं ववसियउ ।
खंतव्वु करहु णीसल्लु मुहुं एवहिं ण वइरु केणावि सहुं ।
जिह तुम्हहुं तिह तिजगहु जि खमिउं हउं एवहिं भणमि संजमिउ ।
घत्ता—ता दुरुज्झियमच्छरु अमरु सचामरु सच्छरु ॥
गउ गुरु वंदिवि सग्गहु ण ढलिउ जिणवरमग्गहु ॥ १९ ॥

20

सो भीमसाहु विहरेवि महि वसुपालणयरि उज्जाणवहि ।
आवेवि सिवंकरि संठियउ तहु मोहु असेसु वि णिट्ठियउ ।
उप्पण्णउं केवलणाणु खणे कंपावियसुरवरसुरभवणे ।
तहु एक्कु छत्तु दो चामरइं णवियइं चउविहइं वरामरइं ।
पोमासणु मणिमंडवु विउलु हेमुज्जलु छज्जइ धरणियलु ।
पहुवज्जियाउ चउजक्खिणिउ आयउ अण्णाउ वियक्खणिउ ।
तहिं अवसरि पवणुद्धयउ देवीउ अट्ठ समागयउ ।
विणु पइणा ताहिं णियच्छियउ को पइ होही जइ पुच्छियउ ।
जइणा पउत्तु मइमोहणिया इह पुरि सुरदेवहु गेहिणिया ।
वसुसेण वसुंधरि धारिणिय अण्णेक्क पुहइ सुहकारिणिय ।
सिरिमइ असोय संती विमल चोत्थी घरदासि तासु विमल ।
एयहिं अट्ठहिं वि सुणिम्मियइं वणि मुणिहि पासि गहियइं वयइं ।
कण्णउ मरिवि सुहसूइयउ अच्चुयवइ देविउ हूइयउ ।
घत्ता—रइसेणा सुरकामिणि अवर सुसेण सुहाविणि ॥
सुहवइ कोमलहत्थी चित्तसेण सुपसत्थी ॥ २० ॥

३ MB करहि ४ MB तुम्हहु तिजग°. ५ MB चलिउ.

20. १ K पउमासणु. २ MB मणिमंडउ. ३ MB विमलु. ४ MBK omit this line. ५ MB चयारि. ६ MB पवुत्तु. ७ MB सुणिम्मलइ. ८ MB कंताउ.

20. 18 *a* °सूइयउ °सूचिताः.

21

लंजियउ चयारि वि कयवयउ संभूइयाउ वणदेवयउ ।
तहिं चित्तवेय जक्खेसरिय वणवइ वणदेवी धणसिरिय ।
अज्जु जि उप्पण्णउ दिव्वकुले इह एयउ पेच्छहु गयणयले ।
सुरदेवें दाणु ण मण्णियउं रिसिविद्धंतउं अवगण्णियउं ।
मुउ हयउ गद्दहु दुद्दंतु सद्दु पुणु वायसु पुणु उंदुरु सरडु ।
पुणु दाढाभासुर घोणसउ पुणु हुउ चंडालु कुमाणुसउ ।
मइं समउ आसि सो घित्तु विले हउं मरिवि पइयउ णरयबिले ।
जिणधम्मु तिसुद्धिइ भावियउ वउलें चिरु जइवइ सेवियउ ।
तेण वि तहु आउ पयासियउ सत्त जि अहरत्तइं भासियउ ।
ओसारियदुम्महभववरिणइं संणासु करिवि रिसिसमदिणइं ।
उप्पण्णउ एत्थहिं फुडु जि दिवि को पुसइ णं विहिणा विहिय लिवि ।
सो पइ तुम्हारउ णवियसुरु लइ सो जि महारउ धम्मगुरु ।

घत्ता—सुरदेवहु जा मायरि सा मरेवि तुच्छोयरि ॥
एत्थु जि देसि चिरंतणे उप्पलखेडइ पट्टणे ॥ २१ ॥

22

सिरिधम्मपालणिवणंदियहे उप्पण्णी पुत्ति अणिंदियहे ।
मुणिदाणहलेण सुसीलिणिय जगसुंदरि मंदरमालिणिय ।
तहिं तहि विवाहि कयणिग्गहहो अम्हइं मुक्कउ बंदिग्गहहो ।
रइसंभवसोक्खाकंखिणिहिं गुरु पुच्छिउ चउहुं मि जक्खिणिहिं ।
भणु भणु भुवि को अम्हहं रमणु ता कहइ काममयविद्दवणु ।

21. १ MB चक्केसरिय. २ MB धणवइ धणदेवी. ३ MB गद्दहु हुउ ४ M दाढीभीसणु, B दाढा भीसणु. ५ MB वि.

22. १ MB °धम्मवालसिरिणादियहे. २ MB मुक्कइ. ३ MB °विद्दमणु.

---

21. 1 *a* लंजियउ दास्यः. 8 *b* वउले बकुलनाम्ना चाण्डालेन. 10 *b* रिसिसमदिणइ सप्त दिनानि.

22. 2 *b* मंदरमालिणिय मन्दरमालिनीनाम्नी.

जं॰ पाणें कय संणासगइ तहु तणउ पुत्तु अज्जुणु सुमइ ।
दरिसावियसीहवग्घमुहहे अणसणि थिउ सिद्धसेलगुहहे ।
सो होसइ तुम्हहं हिययहरु वरु सुहउ णावइ कुसुमसरु ।

घत्ता—माणवदेहु मुएप्पिणु जक्खु सुरिंदु हवेप्पिणु ॥
गाढालिंगणु देसइ तुम्हहं पुलउ अँसेसइ ॥ २२ ॥

23

अच्चुयपढिंदु सिंगारधरु हूयउ आयउ सो बउलचरु ।
तं वंदिउ णियगुरु गरुयगुणु सहियउ देविहिं गउ सग्गु पुणु ।
जक्खिहिं जाणवि जसँज्जुणहो संणासु करंतहु अज्जुणहो ।
आगामिउं पुण्णु पसंसियउ तहु णियमहिलत्तणु भासियउ ।
तहिं अवसरि वणिवरदत्तु णरु लग्गउ देविहिं पसरंतकरु ।
जायाउ ताउ णिहंसणउ विढि खुत्तउ वम्महमग्गणउ ।
अँसहंतें विरहविरोलियँउ तेणप्पउ कक्करि घल्लियउ ।
मुउ णाँगदत्तवणिवरहु सुउ सहसात्ति पिसल्लदेउ हुउ ।

घत्ता—तेत्थु जि णयणाणंदणु पुरि सुकेउ वणिणंदणु ॥
गेहिणि तासु वसुंधरि वाहइ णाँहु वसुंधरि ॥ २३ ॥

24

अण्णु वि फणिदत्तु णाँमु वसइ तहु कंत सुणेत्त सुदत्तसइ ।
वँणिउत्तें लोयदिट्ठिभवणु काराविउ तेण णायभवणु ।
पुरबाहिरि पइ किसि करइ जहिं अण्णहिं दिणि चल्लिय घरिणि तहिं ।
दहिओल्लिउं अल्लयमीसियउं ओयँणु गेण्हवि सुइवासियउं ।

८ MBK जं.

23. १ B बउलधरु. २ MB जसज्जणहो ३ B अलहंतें. ४ MB °विरोलियउ, T विरोलउ. ५ MB णायदत्त°. ६ MB पिसल्लउ ७ B णाह.

24. १ MB वणिउ २ M फणिदत्तें. ३ MB ओयणु.

23. 1 *b* बउलचरु बकुलनामा चाण्डाल . 3 *a* जसज्जुणहो यशसा श्वेतस्य. 7 *a* °विरोलियउ कदर्थित . *b* कक्करि पर्वतशिखरात. 8 *b* पिसल्लदेउ पिशाच..

24. 2 *a* लोयदिट्ठिभवणु लोकाना दृष्टे सुन्दरतया भवनमाश्रय . 4 *a* अल्लय° करमलम्; *b* सुइवासियउ कर्पूरैलाजीरकादिवासितम

पहे जंतिइ साहु पलोइयउ आहारु तासु तहि ढोइयउ ।
ससिवयणइ पडिवणि णायहरे भुत्तउ मुणिणा मंणिहिउ करे ।
दाणेण तेण जणसंथुयइं जायइं पंच वि अच्छब्भुयइं ।
गिव्वाणहिं रयणइं घित्ताइं कप्पकब्बुरियाइं विचित्ताइं ।

घत्ता—जोइवि मणिगणवुट्ठी पणइणि तासिय पणट्ठी ॥
गय घ[६]णकणिसहु छेत्तहु अक्खइ सा णियकंतहु ॥ ४ ॥

25

तुह कूरकरंबउ आणियउ जो तेण साहु मइं पीणियउ ।
केण वि तहिं फुल्लइं मुक्काइं पिययम महु मत्थइ थक्काइं ।
अण्णेत्तहि रुइरकिरणजडिय गयणंगणाउ पत्थर पडिय ।
अण्णेत्तहि काइं वि गज्जियउ ण[१]उ जाणउं वज्जउं[२] वज्जियउ ।
अण्णेत्तहि साहु साहु भणिउं अण्णेत्तहि वरिसिरघणझुणिउं ।
तं णि[३]सुणिवि हउं णट्ठी सभय ता भणइ णाहु हें[४]लि तुहुं सदय ।
तुहुं महु केरी घरकमलसिरि पइ होंतिइ होसइ मज्झु सिरि ।
तुहुं गुणमाणिक्कहं तणिय खणि पइं कियउ धम्मु भुंजविउ मुणि ।
पत्थर ण होंति ते दिव्वमणि इय भणिवि अहीहरु ढुक्कु वणि ।
धरियउ विवक्खवइसेण धणु उत्तउ सुकेउ मा किं पि भणु ।

घत्ता—हिमगोखीराभासइं महु केरइं फणिवासइं ॥
पडियइं रुइरहियकइं महु जि होंति माणिक्कइं ॥ २५ ॥

26

इयरें पवुत्तु तुहुं खुद्दु खलु महु घरिणिहि केरउ दाणहलु ।
मा हरहि चोर रूसइ णिवइ ता दव्वु लएप्पिणु सो कुमइ ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ धरणिवइ को पावइ धम्महु तणिय गइ ।

४ MB ताइ तहु. ५ B मणगणबुट्ठी. ६ MB घणकसणहु.
25. १ MB ण. २ M वज्जुउ. ३ MB पेच्छिवि ४ MB तुहुं हालि.

25. 5 *b* वरिसिर° गन्धोदकवर्षणशीलः. 9 *b* अहीहरु नागभवनम्. 10 *a* विवक्खवइसेण नागदत्तेन.

सो गणउ अवरु वि सो वणिउ विम्मूढगूढु लोहें वणिउ ।
जिह जिह मणि तं सीकरइ धणु तिह तिह जि होइ इंगालगणु ।
पुरंदेवियमुक्कहिं दीहरहिं भेसाविय किंकर ढंढरहिं ।
णरणाहु वि हियवइ संकियउ संठिउ सुकेउ पुलयंकियउ ।
दिण्णउ रयणाहु दप्पु गलिउ भणु तववंतेण को ण मलिउ ।

घत्ता—अण्णहिं दिणि पण्णयघरि दिट्ठउ मणि तरुकोडरि ॥
आसाइयपरवित्तें पक्कु कहिं वि अहिदत्तें ॥ २६ ॥

27

तं कड्ढिउ कह व कह व धरिवि पुणु रोसहुयासें विप्फुरिवि ।
महु करि ण चडहि किं वज्जरिवि गुरुयं पाहाणें हुंकरिवि ।
पहरंतहु उच्छलिवि खयलि णिट्ठुरु तहु लग्गउ भालयलि ।
उग्गयगंडेण वियारियउ वणिणागदत्तु हकारियउ ।
धणसंखइ ववहारेण जिउ अहरत्तु वसुंधरिवइहि णिउ ।
धणु वड्ढिमु जायउ जेत्तिउं जि हारिउ तहिं पिसुणें तेत्तिउं जि ।
कुपुरिसु वसुगव्वें वग्गियउ तं दव्वु सुकेउं मग्गियउ ।
तेणुत्तउं म धरहि भिउडिमुहुं देवाण पहायइ देमि तुहुं ।
पुणु तेण फणीसरु पुच्छियउ हउं पइं किं देव गलत्थियउ ।
मग्गंतहु किं पि ण दिण्णु वरु ता भणइ सप्पु भणु देवि वरु ।

घत्ता—वाणि पभणइ भुयभूसणु बलु सुकेउविद्धंसणु ॥
भो भो विसहरराय दिज्जउ मज्झु भडाराय ॥ २७ ॥

26. १ MB विम्मूढु मूढु; K विम्मूढु गूढु. २ MB पुरदेविविमुक्कहिं; K पुरदेविइ मुक्कहिं. ३ M किंकिर ४ MB दिण्णउ ५ M अहिदिर्त्ते.

27. १ M गरुयं, B गरुएं. २. MB उग्गयम्डेण. ३ M अहरत्ति. ४ MBK जेत्तउं. ५ MBK तेत्तउ ६ MB गव्वियउ; T वग्गियउ ७ MB पत्थियउ. ८ MB भवभूसणु.

26. 5 *a* सीकरइ स्वीकरोति. 6 *b* ढंढरहिं राक्षसे . 9 पण्णयघरि नागभवने.

27 5 *b* अहरत्तु अधरत्वम् . 7 *a* वग्गियउ उद्भटो भूत . 8 *b* दवाण देवाज्ञया.

28

पडिजंपइ फणि गंभीरसणु दविणेण ण जिप्पइ दिव्वधणु ।
पाणावहारु तहु को करइ जसु पुण्णु सहेज्जउं संचरइ ।
मइं तो वि तासु तुहुं अल्लिवहि मज्जायवयणु एहउं लवहि ।
भणु फणिवइ कम्मभारु वहइ जइ णत्थि कम्मु तो पइं वहइ ।
ता जायवि चिंतियविप्पियउ फणि तेण सुकेउहि अप्पियउ ।
किउ णियमंतु विहावियउ अहि हियइच्छिउ काराविय उ ।
णीसेसइं कम्मइं णिट्ठियइं संसिद्धइं कज्जइं संठियइं ।
मग्गइ पेसणु उरजंगमउ वणि भणइ खंभु पाहाणमउ ।
आणिवि भवणंगणि लहु ठवहि गरुआरउ वाणरु तुहुं हवहि ।
तहिं बंधिवि खंभि सुघणघणाइ गलि संखल लाइवि अप्पणइ ।
तुहुं तेत्थु वप्प सट्ठेण विणु आरुहणुत्तरणहिं खवहि दिणु ।
इय णिम्मइ भणियउ जइयहुं जि तुह अवरु देमि हउं तइयहुं जि ।

घत्ता—ता विसहरु विहसेप्पिणु तुरिउ खंभु आणेप्पिणु ॥
मंकडवेसु धरेप्पिणु थिउ अप्पउ बंधेप्पिणु ॥ २८ ॥

29

खंभग्गसिहरि उड्डिवि चडइ उत्तरइ सरइ धरणिहि पडइ ।
अहि दिट्ठउ अहिदत्तेण किह सज्झायहु लग्गउ साहु जिह ।
णिरंतरु णिसिदियहइं गमइ लइं विहिविहाणु सव्वहु भमइ ।
विसि भणइ मित्त मइं मेल्लवहि पडिवक्खें सहुं णिम्मउ चवहि ।
ना तेण माणु अवहत्थियउ धयणामु णवेप्पिणु पत्थियउ ।

28. १ MB पाणाव°. २ MBT अल्लवहि. ३ MB केउ. ४ B विसहेप्पिणु. ५ MB मक्कड°.
29. १ M अहिदित्तेण. २ MB लग्गइ. ३ MB °दिवसइं

28. 2 *b* सहेज्जउं सहायम्. 3 *a* अल्लिवहि समर्पय. 8 *a* उरजंगमउ भुजगः. 11 *a* सट्ठेण विणु शाठ्येन विना.

29. 4 *a* विसि नाग..

पइं मणुएं णाउं वि बद्धु जहिं वण्णिज्जइ साहसु काइं तहिं ।
बुल्लीइ धणेण वि तुहुं जि गुरु भो वच्चउं मेल्लहि णायसुरु ।
तं णिसुणिवि मेल्लवि घल्लियउ फणिवइ वणिणा मोक्कल्लियउ ।
अवलोयवि दिणयरअत्थवणु णियसुयहु समप्पिवि णियभवणु ।
संसेविउ गुणहरगुरुचरणु विधंक लइयउ तवचरणु ।
णिम्मच्छराहि णिरु णिब्भयहि गणियहि पणवेप्पिणु सुव्वयहि ।
विक्खंकिय घरिणि वसुंधरिय परिपालिवि छावासयकिरिय ।
मुणिवरु सुकेउ मुउ विहुरहरे उप्पण्णउ सग्गि सयारवरे ।
थीलिंगु हणेप्पिणु णिरुवमिय तेत्थु जि सुरु हुइ तासु पिय ।
सम्मत्तालंकिय भव्ववर रामासु विरायपणामयर ।

घत्ता—भरहजणणविण्णायइ अपढमइ णरयणिकेयइ ॥
होंति ण वणभवणंतरि पुप्फदंतवासंतरि ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वणिणागदत्तसुकेउकहासंबंधो णाम एकतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३१ ॥

॥ संधि ॥ ३१ ॥

४ MBK देउ. ५ MB जि. ६ MB मेल्लहि वच्चउ. ७ MB वणिवइ. T वणिणा. ८ M गुणहरु गुरु°. ९ MB गुणणिब्भराहि. १० MB गणणिहि. ११ M सुर हूवउ. १२ B विराम°. १३ M अपढमणरय, K पढमइ णरय°. १४ MB मणि°.

---

5 *b* धयणासु सुकेतुः. 8 *b* वणिणा सुकेतुना. 15 *b* रामासु तिर्यग्मनुष्यदेवस्त्रीषु, विरायपणामयर वीतरागपणामकराः. 16 अपढमइणरयणिकेयइ अध. षण्णरकबिलेषु. 17 पुप्फदंतवासंतरि ज्योतिर्निकाये.

XXXII

णिसुरासुरविज्जाहरसरणे आसीणें आसि समवसरणे ॥
गुणपालजिणिंदें जं भणिउं जं मइं वि पइं वि सुंदरि सुणिउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

देवि सुलोयणि वित्तु कहाणउं तं वज्जरहि मज्झु अहिणाणउं ।
इय अप्पण पुच्छिय भासइ सइ सिरिपालहु केरी गुणसंतइ ।
तेत्थु जि चारु पुंडरिंकिणिपुरि घरसोहाणिज्जियसुरवरघरि ।
ससिरिपालु वसुपालु णरेसरु सहुं णिवसइ णं ससुरु सुरेसरु ।
ता चिंतिउ कुबेरसिरिमायइ जंपिउ मुहकुहरुग्गयवायइ ।
दीसइ सव्वु लोउ सवियारउ एक्कु ण दीसइ णाहु महारउ ।
अण्णु वि सो कुबेरपिउ भायरु तेणं णिज्जिय चंदु दिवायरु ।
गय बेण्णि वि ते पुणरवि णाया किं जाणहुं विहाय सिविजाया ।
एम भणंतिहि वामउ लोयणु फंदइ सुहिदंसणसंपायणु ।
हियवइ परमुच्छाहु ण माइउ ताम समुहं वणवालु पराइउ ।

घत्ता—सो पभणइ मयणवियारहरु सुणि सामिणि केवलणाणधरु ॥
गुणवालु देउ सुरपरियरिउ उज्जाणि महारिसि अवयरिउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

बम्भण्डाहण्डलखोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।
खण्डेण समं समसीसियाइ कइणो ण लज्जन्ति ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MBK आसीणेणासि. २ MB वुत्त. ३ MB सिरिवालहु. ४ M सिरिपालें वसु°; B सो सिरिपालु वसु°. ५ G °कुहरग्गय°, K °कुहरग्गय° but corrects it to °कुहरुग्गय°. ६ K गय ते बिण्णि वि. ७ M समुहुं, B सुमुहुं. ८ M गुणवाल.

---

1. 10 *b* सिविजाया शिवीभूताः मोक्ष गताः.

2

अण्णेक्कु वि तिहिं गुत्तिहिं गुत्तउ झाणवसेण णिमीलियणेत्तउ ।
जो कुबेरपिउ जायउ मुणिवरु सो आयउ तुम्हारउ भायरु ।
तं णिसुणेवि देवि[1] रोमंचिय वेल्लि व अमयरसोहें सिंचिय ।
वंदणहत्तिइ गय परमेसरि हुई हयगयलालामयसरि ।
चल्लिय सुंदर चोइय संदण अण्णें पंथें बिण्णि वि णंदण ।
दिट्ठु तेहिं उववणि विहयायवु[2] सदलु महल्लु कोमलु वडपायवु[3] ।
पत्थरघडिउ जडिउ बहुरयणहिं संथुउ णाणं बुहयणवयणहिं ।
तहु तलि जक्खु णाम जगपालउ[4] अवरु णिहालिउ णरवरमेलउ ।

घत्ता—जगपालणरिंदहु तवचरणें सुरु लोएं[5] तहिं संणिहिउ वणे ॥
तहु अग्गइ णच्चिउ णरमिहुणु वसुपालु भणइ सिरिपाल सुणु ॥२॥

3

बिण्णि वि णारिउ बिण्णि वि णरवर जइ णच्चंति[1] होंति ता मणहर ।
तं णिसुणेवि कुमारें उत्तउं[2] देव देव मइं मुणिउं णिरुत्तउं ।
णरवेसेण सरलसोमाली एह दुइज्जी णडइ महेली ।
तहि अवसरि कामें सरु ढोइउ[3] मायापुरिसें रमणु पलोइउ ।
ढिल्लीहूयउ णीवीबंधणु परिभमंति णयणइं कंपइ मणु[4] ।
फुरइ अहरु पासेउ पवियलइ केसभारु दढबंधु वि वियलइ[5] ।
सुसइ[6] वयणु खलियक्खरु भासइ णा कंचुयइ[7] सुहयहु सीसइ ।
पुक्खलवइविसयम्मि सुहम्मउ[8] रम्मउ देसु धणोहें रम्मउ ।
तहिं सिरिउरि[9] लच्छीहरु णरवइ तहु सुहकारिणि घरिणि जयावइ ।

2. १ B omits from देवि down to चल्लिय in 5 a. २ MB विहियायउ. T विहयायउ. ३ MB °पायउ. ४ B जुगपालउ. ५ MB सुरलोएं.

3. १ MB णच्चंत. २ MB वुत्तउं. ३ MB सरु कामें. ४ MB कंपिय तणु. ५ MB दढबंधु वि विलुलइ. ६ B सुसियवयणु. ७ MB कंचुइयइ. ८ MB सहम्मउ. ९ MB सिरिउलि.

2. 6 a विहयायवु विहततापः.

3. 8 a सुहम्मउ सुहर्म्यः.

असमइ दुहिय महिय णिवचंदें   पुच्छिउ जइवइ णविवि णरिंदें ।
खयकंदप्पदप्पदुमकंदें   अक्खिउ इंदभूइसवणिंदें ।
पुरिसवेस णच्चंती जाणइ   जो सो पुत्तिहि जोव्वणु माणइ ।
तं णिसुणिवि महु गायणवायण   दिण्णा राएं भाउप्पायण ।
दिट्ठउ मंतिहिं जं जिह जेहउ   कज्जु पयासिउ तं तिह तेहउ ।
घत्ता—परियंचिवि पुरइं सधयवडइं   णयराइं सखेडइं कव्वडइं ॥
णच्चावहि दावहि तणय तिह   वरइत्तु णिहालहि तुरिउ जिह ॥ ३ ॥

4

पेक्खु पेक्खु पच्चक्ख णिरावय   ता मइं आणिय णं वणदेवय ।
सुय णयराउ णयरि णच्चंती   जणु णवरससलिलें सिंचंती ।
एवहिं एउ समागय पुरवरु   तुहुं दिट्ठो सि होसि एयहि वरु ।
णच्चइ मुद्धहि सच्छ सहेज्जी   णडपरमेसरपुत्ति दुइज्जी ।
ताहं जुवेसें दिण्णइं वत्थइं   आहरणइं मंदिरइं पसत्थइं ।
एत्थंतरि सुहिसुहइं जणेरउ   अणणियाइ पेसिउ हक्कारउ ।
तहु वयणें चल्लिय बिण्णि वि जण   अग्गइ अणुसरंति जा सज्जण ।
ताम णियच्छिउ तेहिं अरूढउ   णरवरु चंचलतुरयारूढउ ।
आसु पमग्गिउ सो सिरिपालें   दिण्णउं धणु लेप्पिणु हयवालें ।
घत्ता—सो तहि कयपरिणामें णडिउ   सहसा कुमारु हयवरि चडिउ ॥
आलग्गु जि सेण्णमज्झि चलिउ   हरि दूरु गंपि दुल्ललिउ ॥ ४ ॥

5

बाहपवाहजलोल्लियणयणहं   हाहारउ मेल्लंतहं सयणहं ।
तुरिउ तुरंगु अदंसणु जायउ   महिवइ माउसमीउ समायउ ।

१० MB णिववंदें.

4. १ MB णउ परमेसर°. २ B सुहइं जणियारउ. ३ MB अणुसरन. ४ MB धणवालें.

15 परियंचिवि परिभ्रम्य.

4. 1 *a* णिरावय आपद्रहित. 4 *a* सहेज्जी सहाया. 5 *a* जुवेसें युवराजेन श्रीपालेन. 8 *a* अरूढउ अप्रसिद्धः. 10 कयपरिणामें कर्मपरिणत्या.

इट्ठविओयसोयतवियंगउ णं पक्खुज्झिउ पडिउ विहंगउ[1] ।
जणणि वि सोउ करंति णिवारिय मंतिहि कह व कह व सा हारिय ।
गयइं तेत्थु जहिं जियवम्मीसरु केवलणाणधारि जोईसरु ।
वंदिउ वंदारयसयवंदिउ भत्तिइ भव्वलोउ आणंदिउ ।
भणिउं कुबेरसिरीइ दुरासें पुत्तु महारउ णिउ मायासें ।
तहु भयवंत समागमु कइयहुं पभणइ जिणु सत्तमु दिणु जइयहुं ।
तइयहुं आयउ[2] पेक्खहि बालउ ता पणवेप्पिणु मुणि गुणवालउ ।
सुरगिरितलि संठियइं सुरत्तइं सिविरु मुएप्पिणु[3] मायापुत्तइं ।

घत्ता—चेयडुमहामहिहरणियाडि काणणि कुसुमियतरुवरि वियडि ॥
रिउणा तुरयत्तणु परिहरिउ भीयरु रयणीयररूवु[4] धरिउ ॥ ५ ॥

5. १ MB add after this the following lines:—

पेक्खेवि णदणु सोयकंतउ सयलु वि परियणु दिट्ठु भवंतउ ।
अवलोकंतु भमइ महि संतउ (B omits it)
हाहाकारु करंतउ देविए पुच्छिय मंति जगत्तयसेविए ।
कहहु एहु किं मुच्छिउ णदणु जो जगचंदु (B जगवंदु) जेम वरचंदणु ।
केण वि कहिय वत्त परमेसरि हरिवरेण हिउ णरवरकेसरि ।
तं णिसुणेवि वच्छ पभणंती महियले णिवडिय देवि रुअती ।
अंगु समोडइ दुक्खें राणी (B रोणी) सप्पि व दंडाहय विहाणी ।
हा हा पुत्त मज्झु विच्छोइउ केण दुरासें हयवरु ढोइउ ।
किं अवहरियइ रण्णि चरतइ पक्खिणिहरिणिवराहिहि पुत्तइं ।
हा किं पावें हिउ महु णंदणु तिहुअणजणमणणयणाणंदणु ।
हा विहि दइव केण हरि ढोइउ जें महु पुत्तजुयलु विच्छोइउ ।
पुहइणाहु गुणमणिरयणायरु हा कहं मुकु (B कसु मुक्क) रुअंतउ भायरु ।
जेण अणंगहु हय बाणावलि सो पइं पुत्त ण वंदिउ केवलि ।
कसु घाहावमि को आसंघमि हा हा दइव कवण दिसि लंघमि ।

२ MB आवइ. ३ MB मुएविणु. ४ MB रयणियरत्तउ.

5. 1 *a* बाह° अश्रूणि. 4 *b* हारिय आश्वासिता. 7 *b* मायासें मायाश्वेन. 12 रयणीयररूवु राक्षसरूपम्.

6

उरयलविलुलियविसहरहारो कडियलवलइयघोणसघोरो।
पंडुरपविरलदीहरदसणो वग्घचम्मवरविरइयवसणो।
मंदरकंदरसंणिहतोंडो मणुयवसाचच्चिक्कियगंडो।
सिसुससहरसमदाढाभीसो जलियजलणजालाणिहकेसो।
णवघणसामलकुवलयकालो खयरो होऊणं वेयालो।
भासइ हित्ता घरिणि महारी पइं गयजम्मि सुचंपयगोरी।
कुद्धो तुज्झु दुरंतकयंतो जासि इदाणी कहु जीयंतो।
भणइ कुबेरसिरीए पुत्तो अहमिह णियकम्मेण णिहित्तो।
एण्हि भवजलसायरतरणं जिणवरकमकमलं मह सरणं।
मामणिओ तुरएण कुमारो इय जणवत्ताबुज्झियचारो।
ता विहंगजाणियसुहिदुक्खो पत्तो तहिं जयपालो जक्खो।

घत्ता—रणभरधुरधारियकंधरहो चंडासिदंडमंडियकरहो॥
जुवरायहु कारणि दुद्धरहो अब्भिट्टु जक्खु रयणीयरहो॥ ६॥

7

भणइ जक्खु खल रोसपरव्वस जाहि जाहि विज्जाहररक्खस।
मा णिवडहि जलंति कालाणलि वइवसवयणविवरि जमघंघलि।
मा ओहट्टउ आउ तुहारउ मा तासहि कुमारु महु केरउ।
अमरिसरसवसु कहिं मि ण माइउ एम भणंतु महंतु महाइउ।
सो रक्खें खग्गेण तुहाइउ वणसुरवरु बिहिं रूविहिं धाइउ।

6. १ MB °विरइय°. २ MB °संणिहतुंडो. ३ MB गयजम्मे चंपयगोरी. ४ MB तुरंतु कयंतो. ५ MB एवहिं कहिं तुहु जासि जियंतो. ६ MB भणइ. ७ MB जाम णिहिउ, B सामणिओ, K माणिणिओ. ८ MB °सुहदुक्खो. ९ MB जगपालो. १० M रणभरधरधारिय°; G रणभरधारिय°.

---

6. 10 *a* मामणिओ मामकः मदीयः.

7. 2 *b* वइवस° यमः; °घंघलि आपदि. 4 *b* महाइउ महादृतः. 5 *b* वणसुरवरु व्यन्तरदेवो यक्षः.

हय बिण्णि वि चत्तारि समुग्गय गलगज्जंत दिव्वं णं दिग्गय ।
पहय चयारि अट्ठ पडिआया अट्ठ वि हय सोलह संजाया ।
हय सोलह बत्तीस भयंकर बत्तीसहं चउसट्ठि मउड्डुर ।
चउसट्ठिहिं वेउव्विउ रूवउ अट्ठावीसउं सउं संभूयउ ।
तं पि दुवड्ढिउ ववगयसंखहिं जलु थलु णहयलु पिहियउ जक्खहिं ।

घत्ता—रयणियरहु भुयबलु णउ कलिउं देवहु हियउल्लउं संचलिउं ॥
किं होही कम्मु णियंतियउं भवियव्वु कुमारहु चिंतियउं ॥ ७ ॥

8

तें तहु होंतउ सुहुं पडिवण्णउं थिउ विग्पवि रूवु पच्छण्णउं ।
रुप्पयसेलहु उप्परि थाइवि जोयणसउ गयणंगणि जाइवि ।
रिउणा घित्तउ खयलोयरियउ देविंदें लहु विज्जइ धरियउ ।
खणिउं खणिउं सिरिसिहरइ ठवियउ णिवणंदणु तहिं तण्हइ खवियउ ।
फलिहसिलायलु ढंकिउ सरवरु दिट्ठउ जलु मण्णिवि गउ सुंदरु ।
तोयाकंखइ धवलि पवित्थरि पसरियकरयलु लग्गा पत्थरि ।
चिंतइ बालउ विंभिउ णिब्भरु देससहावें सलिलु वि णिट्ठुरु ।
ता तहिं अवसरि कामकिसोरी घडकडियल संप्राइय गोरी ।
जलविवरंतरि सा पइसंती दिट्ठी तरुणें णीरु भरंती ।
तेण वि मग्गे जायवि कोमलु रसिउ तेण सुकुसुमरयपरिमलु ।
घत्ता—धवलेहिं चलंतिहिं लोयणिहिं सो महिवइ मयणुक्कोवणिहिं ॥
कलसंकियकडिइ णियच्छियउ पडिहाहयाइ णाउंछियउ ॥ ८ ॥

7. १ M मत्त. २ MB पडिमाया. ३ M अट्ठावीसा सउ. ४ MB य वड्ढिउ. ५ MB कम्मणियत्तियउ.

8. १ MB सुह°. २ MB रूउ. ३ MB देवें दलु लहु, T दललहु पर्णलघु ४ MB °सिलायलि. ५ MB मण्णेविणु सुदरु. ६ MB सवित्थरि. ७ MB °करयलु. ८ MB विंभय°. ९ MB °संपाइय°. १० MB °रयपरिमलु ११ MB चवलचलतहिं लोयणहिं, K चलंतहिं. १२ MB मयणुक्कोयणहिं. १३ MB पडिहाहय णायाउच्छियउ, T परिहाहय.

४ *b* मउड्डुर मदोत्कटः.

8. 3 *a* खयलोयरियउ आकाशादवतीर्णः. 10*a* कोमलु मनोज्ञम् 12 पडिहाहयाइ प्रतिभाहतया.

9

सरसमणुब्भवपणयसमिद्धइ आइय भवणहु भासिउं मुद्धइ ।
हरि जइ तो तहु चक्कु ण लंछणु वम्महु जइ तो तहु ण कोसुमधणु ।
ससि जइ तो तहु णत्थि कुरंगउ रवि जइ तो सो ण वि अत्थंगउ ।
सुरवइ तो जइ कुलिसु ण तहु करि तोयहु जंतिइ माइ महासरि ।
मइं अवलोइउ एक्कु जुवाणउ किं जाणहु तेल्लोक्कहु राणउ ।
किं जाणहुं जं जणवउ घोसइ सो सिरिवालु णराहिउ होसइ ।
लइ आयउ पिययमु तुम्हारउ घोलउ थणयलि णं मणिहारउ ।
ता संचलियउ पंच कुमारिउ गयहु पासि णावइ गणियारिउ ।
णं कंदप्पें भल्लिउ मुक्कउ ताउ तासु आसण्णउ ढुक्कउ ।
भासिउ भद्दें धवलियगयणहिं किं जोयहु अद्धद्धहिं णयणहिं ।
किं महु आसण्णाउ णिविट्ठउ आसि कालि किं कत्थइ दिट्ठउ ।
तं णिसुणेप्पिणु विहसिवि धिट्ठइ दिण्णु पडुत्तरु जेट्ठकणिट्ठइ ।

घत्ता—पुक्खलवइमहिहि सुणोहणइ पयडम्मि देसि दुज्जोहणइ ॥
सीहउरि सहइ णरवालणिवुं लच्छीकंतइ णं लच्छिधवु ॥ ९ ॥

10

हउं सस रइकंतहि लहुयारी जयदत्ता एयहुं गरुयारी ।
मयणकंत मयणवइ कुमारिहि जयवइ जेट्ठहुं जणमणहारिहि ।
अवर वि विमल वयंसिय छट्टी असणिवेयखयरिंदें दिट्ठी ।
अम्हहिं सहुं उववणि कीलंती कामुयमइ णेहेणुब्भंती ।
मग्गिउ तें तापण ण दिण्णउ पुच्छिउ जइ को परिणइ कण्णउ ।
भणिउ जणणु रिसिणा पिहुबोहें एवहिं णरवइ काइं विवाहें ।

9. १ MB °समिद्धइ. २ MB कुसुमधणु. ३ MB गणियारउ. ४ MB धवलियवयणहिं. ५ MB अद्धद्धहिं. ६ MB पायडवि. ७ MB °णिउ. ८ MB लच्छिधउ.

10. १ MB मयणकंति. २ MB तेण ताउ णउ दिण्णउ. ३ M पहुबोहें.

---

9. 8 *a* गणियारिउ हस्तिन्यः. 14 लच्छिधवु विष्णुः.

10. 4 *a* कामुयेत्यादि---विद्युद्वेगविद्याधरस्य मतिः कामासक्त्या विह्वलीभूता. 6 *b* पिहुबोहें पृथुज्ञानेन.

गेहिणीउ होसंति पिसक्किहु तुह पुत्तिउ सिरिवालहु चक्किहु ।
पुणु अम्हइं मग्गइ तडिवेयउ पिउँवयणेण णिरुत्तरु जायउ ।
चोरिवि आणियाउ णिक्करुणें जलयसिंगसंचोइयचरणें ।
तेण दुरासएण दुद्दंतें णिहियउ णिज्जणि रोसु वहंतें ।
घत्ता—णिवसहुं काणणि णिवच्छवि जणिउ तालूँरजुयलसंणिहथणिउ ॥
अप्पउ हियवइ सायंतियउ सिरिवालपंथु जोयंतियउ ॥ १० ॥

11

तुहुं जि णाहु पइं तवियइं अंगइं अण्णु कि णाहहु मत्थइ सिंगइं ।
लइ लइ घंरिणि कंत रिउचंडहिं अवरुंडहि दीहहिं भुयदंडहिं ।
भासइ सूहँउ जइ वि रवण्णउं कण्णारयणु होइ णादिण्णउं ।
अण्णेक्क वि कुमारि संप्राइय रक्खसिरूवें कहिं वि ण माइय ।
णियडी होंति अणंगें लुद्धी पंचहिं मरहिं उरत्थलि विद्धी ।
सवरें हय सारंगि व लोलइ सुहयहु केरउ वयणु णिहालइ ।
ताहिं अवसरि गइयउ छ वि तरुणिउ वग्घिहि गंधें णावइ हरिणिउ ।
इयरइ पुणु पासाउ विरइयउ सयणमग्गु सोहइ अइसइयउ ।
सरसालाव तासु सुइ पाविय णयणंजुवल मीणा इव भामिय ।
जं वल्लहु मइँइ अवरुंडिउ जं कण्णावउ कण्णइ खंडिउ ।
तं दोसेण विज्ज गय णासिवि थिय संसिमुहि अप्पाणउं दूसिवि ।
हुई कामगहें विवेरी पुच्छइ सूहउ तुहुं कहु केरी ।
घत्ता—अचलत्तें णिज्जियमाहिहरहु मा कहइ सवइयरु णरवरहु ॥
सिरिसिहरहु चउजोयणसयहिं रयणउरु अत्थि मंडिउ धयहिं ॥ ११ ॥

४ B णियवयणेण. ५ M णिरुत्तउ. ६ MB माल्रूर°

11. १ MB घरिणि.. २ MB सूहउ जइ वि सुरवण्णउ. ३ MB संपाइय. ४ MB रक्खसरूविणि कह वि. ५ MB लुद्धी. ६ MB पचसरेहिं. ७ M णयणजुवल मीणा इव. B णयणकूव मीणी इव. ८ MB मइइ. ९ MB ससिविमुह

7 *a* पिसक्किहु बाणयुक्तस्य. 9 *b* जलयसिंग° मेघमस्तकम् 11 तालूर° बिल्वफलम्.

11. 1 *a* कि किम्. 4 *a* सयणमग्गु पर्यङ्कः. 9 *a* तासु श्रीपालस्य; सुइ कर्णौ. 12 *a* विवरेरी विह्वला. 13 सवइयरु स्वव्यतिकरम्.

12

थणियवेउ तहि अत्थि णरेसरु जोईवेयदेविहि वल्लहु वरु ।
असणिवेउ तहु पुत्तु पमत्तउ तेणाणेप्पिणु इह तुहुं घित्तउ ।
हउं तहु तणिय बहिणि पिय तडिरय तें पेसिय पइं णियहुं समागय ।
किं जीवहि किं मुउ सिंचियसिलि णिवडेप्पिणु खयलि गिरिवरयलि ।
दूरहु जोइओ सि मइं रोसें किर पइं हणमि णिसायरिवेसें ।
णवर हउं जि हय वम्महकंडें इंदचंदणाइंदविहंडें ।
देहि सोहग्गभिक्ख मइं मग्गिउ मच्छरु मेल्लिवि तुहुं ओलग्गिउ ।
एक्कवार जइ करि करु ढोयहि एक्कवार जइ मुहुं अवलोयहि ।
तो जीवियफलु मइं जगि लद्धउं तं तहि भासिउ तेण णिसिद्धउ ।
महुं विणएं पारद्ध महुच्छव जइ पइं देंति मिलेविणु बंधव ।
तो गिण्हमि णं तो धुउ वज्जमि कण्णासाहसेण हउं लज्जमि ।
ता सा गय जंपेण रयणउरहु भासइ भाइहि मारियवइरहु ।
मुउ सो णरु मग्गियपलसयलइं मइं दिट्ठइं भमियइं गिद्धउलइं ॥

घत्ता—णीसासजलणजालियदिसइ असहंतिइ असणिवेयससइ ॥
जहिं णिवसइ थिरु वरु जित्तमहि तहिं पेसिय मयणवडाय सहि ॥ १२ ॥

13

णाइ णंपि सुहउ अब्भत्थिउ जो रक्खेसइ जणवउ दुत्थिउ ।
विज्जाहररायहिं रइधुत्तिउ थणियवेयमरुवेयहं पुत्तिउ ।
सो परिणेसइ रुइहयरविरहु चक्कवट्टि सिरिपालु महापहु ।
रूवुं तुहारउ हियवइ भावइ विज्जुवेय पिय दुक्करु जीवइ ।
भणइ कुमारु काइं भासिज्जइ होंतउ केण कम्मु लंघिज्जइ ।

12. १. B जाइवेय°. २ MB तुहुं इह. ३ MB णिसायरवेसें. ४ M दिहि. ५ MB करु करि. ६ MB बहुविणएं. ७ K मिलेप्पिणु. ८ MB मारीय°.

13. १ MB सिरिवालु. २ MB रूउ. ३ MBK विज्जवेय.

12. 3 *a* तडिरय विद्युद्वेगा. 13 *a* पलसयलइं मांसखण्डानि. 11 मयणवडाय मदनपताकानाम्नी.

जाहि दूइ हउं पिययमु होसमि बालहि लीलालिंगणु देसमि ।
तं णिसुणिवि गय गेहहु दूई आलोइय कुमारि किस हूई ।
आइय पुणु विरहाउर तेत्तहि अच्छइ णरमयरद्धउ जेत्तहि ।
कुमरिउ रमणभावरसगिल्लउ संभासंतु ताउ पुव्विल्लउ ।

घत्ता—अवलोइवि सुंदरि सुंदरिउ वणि णट्ठउ खणि छौं वि कुंयरिउ ॥
णं मुणिवरवित्तिहि दुग्गइउ णं सुकइमइहि जडकइमइउ ॥ १३ ॥

14

आय णिसण्णी णियडि खगेसरि णाइं समुद्दासण्ण महासरि ।
चवइ सवयणु पिहेप्पिणु हत्थें एत्थु जि घोरतवह सामत्थें ।
भो मणसियकणोहवित्थारा मरणु ण कासु वि होइ भडारा ।
हउं वि खणेहिं जंपिय पेक्खमि तं पइं पुण्णवंतु किर रक्खमि ।
तो वि देव वीसासु ण किज्जइ वणयरदुग्गउ भवणु रइज्जइ ।
एम थवेप्पिणु मरगयतोरणु खंभहु उप्परि कयउ णिहेलणु ।
तहिं कुवेरसिरितणुरुहु णिहियउ रत्तें कंबलेण संपिहियउ ।
अणुदिणु पंतिहिं रइरसतुरियहिं जिह णउ घिप्पइ भगोयरियहिं ।
तिह तहिं दुद्धरि रमणु थवेप्पिणु गय पणइणि वेसणु भासेप्पिणु ।
अरुणावरणच्छण्णु खरतोंडें मण्णिवि मासपिंडु भेरुंडें ।
णिउ णिवचंदु रुंदगयणयलहु अंगुत्थलिय घुलिय करकमलहु ।

घत्ता—आयसपुरिसणामंकधरि दूसहविओयसिहितावहरि ।
तो रक्खणभिक्खहिं णिम्मलहु येरु आणिवि अप्पिय वप्पिलहु ॥ १४ ॥

४ B सुंदरु. ५ MBT कउओयरिउ and gloss in T क्षामोदराः.

14. १ M अत्थु अ घोर°. २ MB भणेप्पिणु. ३ MB भावेप्पिणु. ४ MB सा. ५ MB थरि.

---

14. 3 *a* °कणोह° बाणौघः. 13 वप्पिलहु कच्छावतीदेशविजयार्धे मेघपुरे कम्पनराजा, राज्ञी विमा-विनी, तयोः वप्पिला, तस्याः दत्ता सा मुद्रिका.

15

णाणारयणफुरंतपईवइ सिद्धकूडजिणणिलयसमीवइ।
जाव पक्खि धरणियलि परिट्ठिउ ता पहु अंगु वलेप्पिणु उट्ठिउ।
तासिउ खयरु उड्डिउ णहि चंचलु तहु पयणहलग्गउ गउ कंबलु।
पडिउ धरहि किंकरहिं णियच्छिउ जाणवि मयणवईहि पयच्छिउ।
एत्तहि एण वि दिट्ठउ जिणहरु दुक्कियदुक्खलक्खणिक्खयकरु।
थुइ विरयंतहु दुण्णयसाडइं विहडियाइं दढकुलिसकवाडइं।
जें दिट्ठें णट्ठइ संचिउ मलु जें दिट्ठें उप्पज्जइ केवलु।
जें दिट्ठें कुदिट्ठि ओहट्टइ जें दिट्ठें सम्मइ परिवट्टइ।
जें दिट्ठें उवसमु संपज्जइ जें दिट्ठें अप्पउ परु णज्जइ।
जें दिट्ठें दुग्गइगइ णासइ जें दिट्ठें जगु सयलु वि दीसइ।
सो दिट्ठउ दुकम्मणिवारउ देवदेउ अरहंतु भडारउ।
थोत्तवित्तु कइमग्गपसिद्धउ गुणवालंगकहिं पारद्धउ।

घत्ता—तुहुं मायबप्पु तुहुं संतियरु तुहुं णिरलंकारु वि हिययहरु॥
जिण णिम्मय तेरी जेहिं तणु इह तिहुयणि तेत्तिय जि अणु॥१५॥

16

इय वंदिवि जिणु गुणहिं विसिट्ठउ मुहमंडवि कुमारु उववेिट्ठउ।
तौं तहिं संपत्तउ खेयरणरु आहासइ सिरसंजोइयकरु।
इह भोगउरि समुण्णयमाणउ अणिलवेउ णामें खगराणउ।
पिय कंतवइ णाम तहु गेहिणि सुय भोयवइ भोयजलवाहिणि।
को होहि त्ति पणयतणयहि वरु पुच्छिउ तेण को वि जोईसरु।

15. १ MB °जिणभवण°. २ M लेविणुउ दिट्ठउ; B वलेविणु तुट्ठिउ, ३ MB एतएण तें दिट्ठउ. ४ MB णिट्ठइ संचिय मलु. ५ M °णिवारिउ. ६ MB तिहुयणि फुडु तेत्तिय.

16. १ MB सुहमंडवि. २ MB उवइट्ठउ. ३ MB तो.

---

15. 10 *a* दुग्गइगइ दुर्गतिगमनम्.

16. 1 *a* मुहमंडवि रङ्गमण्डपे. 5 *a* पणय° प्रणता स्नेहयुक्ता वा.

गाढधरियसंजमसुहलीसें तं जाणिवि जंपियउ जईसें।
जेणाएं विहडंति सुणिविडइं सिद्धकूडजिणभवणकवाडइं।
होसइ सो वम्महसरभत्थहि वरु तुह सुयहि सुरूवपसत्थहि।
हउं जोयहुं राएण णिवेइउ णरवइ तुहुं एवहिं संभाइउ।
णेच्छंतु वि कुमारु उच्चाइउ णहयरु तुरिउ णहेणुद्धाइउ।
चिक्कमंति पासायहु उप्परि पुरु संपत्तें दाविय सुंदरि।
सा भोयवइ तेण सुईलीणें णिंदिय बंधवसोयविलीणें।
एह णारि आसीविस णाइणि एह णारि असुभक्खिणि डाइणि।
विणु आहारें एह विसूई विणु सिहिणा वि चुरुलि संभूई।

घत्ता—खयराहिवपुरिसाणियंविणिइ दुज्जणलीणइ मणेंताविणिइ॥
थणजुयलउ णिव्वाणिरूवियउं णियमणथड्ढत्तणु दावियउं॥ १६॥

17

कंदप्पेण विणु वग्घि महेली गरलसत्ति णं मारणसीली।
रयणि व मित्तहु पुरउ ण थक्कइ समलहु दोसायरहु पढुक्कइ।
मइरा इव णिच्चु जि मयमत्ती साणि व दाणमेत्तकयमेत्ती।
हो हो उक्कंठिउ णिरु अच्छमि मायभाउ जइ बेण्णि वि पेच्छमि।
तो हउं जीवमि दिट्ठें णाहें होउ पहुच्चइ मज्झु विवाहें।
एम भणंतु रइयरिउभेयहु दरिसिउ सुंदरु मारुयवेयहु।
अण्णु वि अक्खिउ जिह णउ इच्छिउ जिह तं णारीरयणु दुगुंछिउ।
णियसुयणिंदावायविरुद्धें तं णिसुणिवि खयरेसें कुद्धें।

४ MB सरूव°. ५ MB संभासिउ. ६ GK record *a p* सइलीणें इति पाठे सर्वेषां कर्णपरिचितेन; शाल्म-लीनेन वा. ७ MB परताविणिइ. ८ MB °थड्डत्तणु.

17. १ MB गयसत्ति व णरमारण°. २ MB मयराइ व. ३ M साणि व दाणमत्तकय°; B साणिवबाण-कयमेत्ती. ४ MB दुगछिउ.

6 *a* सुहलीसें शोभनहलीषेण (हलीशेन), धुरधरेणेत्यर्थः. 7 *a* जेणाएं येन आगतेन. 9 *a* संभाइउ संभावितो दृष्टः. 12 *a* सुइलीणें शाल्मलीनेन. 14 *a* विसूई विषूचिका; *b* चुरुलि ज्वाला.

17. 3 *a* साणिव कुक्कुरीव.

उत्तउं उच्चाएप्पिणु णिज्जाणि पहु गहिल्लउ घल्लउ पिउवाणि।
थेरीरूवु रएवि दइवें घत्तिउ सो तहिं तेण जि भिच्चें।
घत्ता—छुडु छुडु जि णिहित्तउ बालु तेहिं हरिकेउ पवणजवपुत्तु जहिं॥
झायंतु मंतु बलणिज्जियउ सव्वोसहिविज्जइ तज्जियउ ॥१७॥

18

तंबिरणेत्तइ पिंगलकेसइ दाढाभीसणरक्खसवेसइ।
विज्जइ वंतउं जं जं जेहउं उड्डिवि अंजलि तं तं तेहउं।
पिव पिव ताहि भणंतिहि पीयउ सुहडचित्तु ण वि किं पि वि भीयउ।
पुच्छइ पहु तुहुं हिरि सिरि दिहि महि कहइ देवि हउं सा सव्वोसहि।
सिद्धी तुज्झु वीर परमत्थें तो पविलोइय वुड्ढावत्थें। 5
लद्धदिव्वविज्जासामत्थें णियतणु पुसिय तेण णियहत्थें।
सो जायउ पुणरवि णवजोव्वणु ता पत्तउ खयराहिवणंदणु।
पभणइ सीहकेउ तुहुं सामिउ हउं तुह किंकरु पेसणगामिउ।
जो कहिओ सि आसि रिसिवयणहिं सो दिट्ठो सि देव णियणयणहिं।
सुट्ठु दुलज्झइ णिरु णिरवज्जइ जाणिओ सि मइं सिद्धइ विज्जइ। 10
घत्ता—बारह संवच्छर इह वासिउ फलकालि अज्ज विज्जहि तासिउ॥
दइवेण लच्छि तुम्हारिसहं उज्जमु णिरत्थु अम्हारिसहं ॥ १८ ॥

19

एम भणिवि गउ णहयरु जावहिं पहर चयारि वि णिट्ठिय तावहिं।
गलिय रयणि उग्गमिउ दिवायरु संचल्लिउ वसुवालसहोयरु।
रण्णि भवंतें तेण णिविट्ठी जरसीमंतिणि तरुतलि दिट्ठी।
उग्गामिवि करु भिउडिवि णयणइं देइ ताहि जणवउ दुव्वयणइं।
चिंतइ णरवइ वइरु होज्जउ तणु णउ माणुसु विणिबंधु विणिद्धणु। 5

५MB °रूउ धरेवि. ६ MB जहिं. ७ MB ता हरिपवणंजवपुत्तु तहिं.

18. १ MB दाढी°. २ MB °भीसइ. MB वमियउं. ४ MB ताए विलोइय. ५ MB विहिं णयणहिं. ६ MB णिव. ७ M संसिद्धइ.

19. १ MB भवंती. २ B जरु. ३ MB मिउडिवि. ४ MB वरि होजइ. ५ MB णिब्बंधउ णिद्धणु; T विणिबंधउ.

19. 4 *a* भिउडुवि भ्रुकुटीकृत्य. 5 *a* तणु तृणम्; *b* विणिबंधु विनिर्गतबन्धुः; बन्धुरहितः.

हाँ किं णायरेहिं कलहिज्जइ थेरि भणेप्पिणु एह हसिज्जइ।
ता चिरणारिइ णियतणु जेही विहिय कुमारहु तक्खणि तेही।
तें हत्थें णियंगु पैरिमट्ठउ जिह पुव्विल्लउ तिह पुणु दिट्ठउ।
पुरुमहिलइ रायहु विण्णवियउ मइं वरइत्तचरिउ संभावियउ।
जं जिह देहि देव णिव्वसिउ तं तिह जरसरूवु परियसिउ।
तासु गवेसा पेसिय रायं वणि अंतें कुबेरसिरिजायं।
सीहसरहसरपूरियदिप्पहि संठिय चउदिसु मिलिय चउप्पहि।
दिट्ठा सोलह सुहड महाबल सोलह पत्थर वट्टपवट्टुल।

घत्ता—सो तेहिं भणिउ सुमहुरगिरिहिं अग्गइ थाइवि पंजलियरिहिं॥
भो भो कुमार किं चिक्कमहि गोलयहु उवरि गोलउ थवहि॥ १९॥

20

इयरहं पंथिय जाइं ण लब्भइ रायाणइ गोसिंगु णं दुब्भइ।
इय विहसेप्पिणु पंथिउ बुच्चइ वट्टहु उप्परि वट्टु ण थक्कइ।
जामि बप्प किं एण पलावें रायविणोयं मिच्छागावें।
एम्ब भणंतु वि धरिउ णिरुंभिवि हेवाइद्दें सत्तिइ थंभिवि।
वट्टुत्तिविडि वि रइय छइल्लें पुच्छिय किंकर बुद्धिमहिल्लें।
कवणु देसु को णरवइ भुंजइ वट्टहि वट्टठवणु किं जुज्जइ।
भिच्च कहंति महासिहरूढहु उत्तरसेढियाहि वेयड्ढहु।
पवणवेउ णामें खयराहिउ एत्थ महीवइ अक्खयराहिउ।

६ MB हा किह. ७ MB पर मट्ठउ. ८ M जरसरूउ; B जरमत्तउ. ९MB चउदिसि. १० B तेण. ११ Gकं.
20. १ MB वि. २ BK बुक्कइ. ३ MBT वेहाइद्दें; GK record *a p* वेहाइद्दें इति पाठेप्ययमेवार्थः; T हेवाइद्दें इति पाठेप्ययमेवार्थः. ४ MBK °महल्लें. ५ MB महासिहरूढहु, G महासिररूढहु.

7 *a* चिरणारिइ वृद्धास्त्रिया. 9 *a* पुरुमहिलइ अतिवृद्धया. 13 *b* वट्टपवट्टुल अतिशयेन वृत्ताः.
20. 5 *a* वट्टुत्तिविडि उतरंडी (?); छइल्लें धूर्तेन. 8 *b* अक्खयराहिउ अक्षरद्रव्यस्याधिपः.

जो आवइ णरु वट्टपरिक्खहि सोलहखयरणरेसरसिक्खहि ।
उज्जलवण्णउ णवलायण्णउ सो परिणेसइ सोलह कण्णउ ।
गय अणुयर णियणियरायंतिउ कुवरें अण्णइ गमणु जि चिंतिउ ।
मेहविमाणसिहरि जोएप्पिणु भूयरमणु काणणु मेल्लेप्पिणु ।
थक्कु महाणयरहु बहि जाम्वहिं अवर वि वुड्ढ पराइय ताम्वहिं ।

घत्ता—उरकसरसिरइ लंबियथणिइ आवेप्पिणु थेरणियंबिणिइ ॥
हउं रीणी माइ किं पि चविउ कुवलीहलपिंडउल्लउ थविउ ॥ २० ॥

21

पसिढिलचम्मछिरोलविवण्णी तरुतलि तासु जि णियडि णिसण्णी ।
णिववालहु केरउ सिरिमाणणु दिट्ठउ ओहल्लिउं कमलाणणु ।
छुहतण्हापहखेयं खीणउं अंगु णिहालवि णिरु विहाणउं ।
तिण्णि तिसाछुहपहसमणासइं दिण्णइं बोरइं अमयाभासइं ।
प्रासियाइं सुहयं रसणिद्धइं बीयइं चीरंचलइं णिबद्धइं ।
वसुवालहु जाइवि दरिसेसमि णियपुरणंदणवाणि पइरेसमि ।
इय चिंतंतु जाम सो अच्छइ णियबंधवसंजोउ णियच्छइ ।
ता वुड्ढइ कुंदुज्जलदंतिइ देहि मोल्लु भासिउ पहसंतिइ ।
महु फलाइं किं मुहियइ भक्खहि वयणु केम णिल्लज्ज णिरिक्खहि ।
चवइ णरिंदु असच्चु ण जंपमि जं मग्गहि तं सयलु समप्पमि ।
जइ आवहि तुहुं णयरु महारउ तो णिहणमि दालिद्दु तुहारउ ।
कवणु णयरु को तुहुं कें जायउ भणइ थेरि भो इहं किं आयउ ।

घत्ता—तं णिसुणिवि भासइ चक्कवइ पुरि पुंडरिंकिणि दिण्णरइ ॥
गुणपालु राउ तहु तणउ सुउ वसुपालहु भायरु हउं लहुउ ॥ २१ ॥

६ MB परिणइ सोलह णिवकण्णउ. ७ MB गय णर णियणियरायहं मंतिउ; T अणुयर. ८ MB °सिहरु. ९ MB तेण चविउ.

21. १ MB पसढिल°. २ MB °विराल°. ३ MB ओहल्लउं; K ओहुल्लिउं. ४ MB पासियाइं. ५ MB रसानिद्धइं. ६ MB दंसेसमि. ७ MB किं इह. ८ MB सक्कवइ. ९ MB दिण्णरुइ. १० MB गुणवालु. ११ MB वसुवालहु.

11 *a* °रायतिउ राजसमीपे. 14 °कसर° पाण्डुराः.

21. 1 *a* °विवण्णी विरूपा. 6 *b* पइरेसमि वप्स्यामि.

22

जगि सिरिपालु णामु जाणिज्जमि सुरवीणातंतिहिं गाइज्जमि ।
मायाहरिवेरेण पत्थाणिउ जोइसिएहिं असेसेहिं जाणिउ ।
गुरुविओयसंतावें णिट्ठिउ अच्छमि सुट्ठु इट्ठउक्कंठिउ ।
जइ भायरहु मिलमि तो जीवमि णं तो णिच्छउ जमउरि पावमि ।
भणइ वुड्ढ भो तुहुं णर दीणउ पण सहावें होसि ण राणउ ।
बोरट्ठिलियउ बंधिवि लइयउ कवणें दइवें तुहुं नृवु रइयउ ।
परदोगेच्चु तुहुं वि किं णासहि अप्पाणउं णरणाहु पयासहि ।
तेरउ पुरु महियरहं अगोयरु कहिं तुहुं कहिं सो तुज्झु सहोयरु ।
णत्थि दविणु अलियउं जि म भासहि महु वाहिल्लहि वाहि विणासहि ।
आरा सरु सा भणिय महीसें णासिउं रोउ पाणिसंफासें ।
घत्ता—णवरुल्लिलिवि पयणियपुलइ आलग्गी तहु गलकंदलइ ॥
जाणिय तेण वि मायाविणिय लइ एह खयरि मयणें वणिय ॥ २२ ॥

23

कहइ कुमारु म भउंहउ चालहि हो हो केत्तिउ मइं खरियालहि ।
कइयवेण किं पुउं आढप्पइ सब्भावेण मुद्धि ध्रुवु घिप्पइ ।
ता जररूउ विमुक्कउ कण्णइ उत्तउं कोमलसामलवण्णइ ।
भो भो णिसुणि णरेसर णिक्कल पुव्वविदेहइ वसुमइ पुक्खल ।
तेत्थु धोयकलहोयमहीहरु तहिं रायउरि वसइ करिकरकरु ।
राउ अकंपणु विज्जाहरवइ सप्पिपह गेहिणि धूव सुहावइ ।
णामें हउं भुयणयलि पसिद्धी सा ण विज्ज जा महु णउ सिद्धी ।
णहयरणाहहिं मिलिंवि सणिद्धउ महु विज्जाजयपट्टु णिबद्धउ ।

22. १ MB सिरिवालु. २ MB अणेयहिं. ३ MB वुड्ढ तुहु णरवर दीणउ. ४ MB णिउ. ५ MB °दोगत्तु. ६ B णासमि. ७ MB °संपरिसें.

23. १ MB खलियारहि; T खरियालहि. २ MB कइवएण. ३ MB पिउ. ४ MB धुउ. ५ MB गयउरि णिवसइ. ६ K मिलवि.

22. 10 *a* आरा सरु समीपमागच्छ. 12 वणिय वर्णिता.

23. 1 *b* खरियालहि कदर्थयसि. 2 *a* कइयवेण कैतवेन कपटेन.

को वरु ताए पुच्छिउ जइवरु तेण वि कहिउं तासु चक्केसरु ।
अवरु वि णिसुणि देव तुहुं सुहहलु कच्छावइवसुहहि रयणायलु ।
तहि मेहउरइ मयगलगामिणि कंपणु खगवइ घरिणि विमाणिणि ।
ताहं पुत्ति वप्पिल महु पियसहि णं गोमिणिरमणिहि वल्लह महि ।

घत्ता—अवलोयवि तुज्झंगुत्थलिय सा तोएं तिम्मइ कंचुलिय ॥
डज्झइ विरहें वेल्लहल किह दवदहणें अहिणववेल्लि जिह ॥ २३ ॥

24

घरु गइयहि मुहणिग्गयवायइ महु अक्खिउ तहि तणियइ मायइ ।
को वि आएसपुरिसु तहु मुद्धिय पेच्छिवि सुय मयणेण विमद्दिय ।
बालवयंसियाइ ण विकंपिउ मज्झु वि ताइ सहियउं समप्पिउ ।
मइं धीरिय सा ससिरयराहिं मेलावक्कु करमि सहु णाहिं ।
चामीयरपुरवरि हरिदमणहु मयणवेयसीमंतिणिरमणहु ।
तहिं जि देसि अण्णेक्क वि सुंदरि मयणवइ त्ति दुहिय विज्जाहरि ।
जणणहु पुच्छंतहु रयणुज्जलु जो जोइहिं भासिउ हयहिमदलु ।
आणिउं पेच्छवि तेरउ कंबलु वियलिउ तहि तरुणिहि माणि विहिबलु ।
सुहव तुज्झु विओएं पीडिय चिंताचक्कें सा वि भमाडिय ।
कंदइ कणइ विमुक्कुत्तंसी दुक्करु जीवइ मज्झु वयंसी ।

घत्ता—तं तेरउ पेम्मपरव्वसइ उद्दामकामकीलणरसइ ॥
सहिहत्थहु दीणइ मग्गियउ पंगुरणु मइं वि आलिंगियउ ॥ २४ ॥

७ MB तुहुं जि. ८ MB रयणायलु. ९ B गोमिणिहि णवलवल्लह महि.

24. १ MB घर. २ MB अमु. ३ MB वियप्पिउ. ४ MB सहिउ. ५ MB सिसिरयराहें. ६ M तेरउ पेच्छिवि; B तेरउ पुच्छिवि. ७ MB मण°. ८ MBT विमुक्कवयंसी; G*p* विमुक्का तेसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; K*p* विमुक्कतसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; T विमुक्कत्तंसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः.

12 *b* गोमिणिरमणिहि लक्ष्मीस्त्रियः. 13 तोएं प्रस्वेदेन.

24. 3 *b* सहियउं स्वहृदयम्. 4 *a* ससिरयराहिं चन्द्रसदृशेन, *b* मेलावक्कु मेलापकः. 10 *a* विमुक्कुत्तंसी विमुक्तावतंसा.

25

तुहुं पत्थाणिउ तडिजवखयरें एव पजंपिउ णरवैहणियरें ।
हउं णउ पत्तियंति गय तेत्तहि तेरी णयरि णराहिव जेत्तहि ।
पयेकुवलयसंबोहणचंदहु पयहिं पडिय गुणपौलजिणिंदहु ।
सज्जणणयणाणंदजणेरउ पुच्छिउ सो आगमणु तुहारउ ।
तेण पउत्तउ सिसुभूमीसरु सत्तमि दिणि आवइ भाभासुरु ।
विज्जालाहें लहुं घरि पइसइ पुरयणु सयलु जिँ एउ जि भासइ ।
दिट्ठउ तुहुँ भायरु अलिकुंतल दिट्ठी मायरि सोयविंसंठुल ।
सुरमहिहरसमीवि णिवसंतइं हा सिरिपाँल देव भणंतइं ।
कंदंतइं विमुक्कसिरकेसइं दिट्ठइं परियणसयणसहासइं ।
पव्वइं पइसिहिंति पुरि तइयहुं तुहुं मिलिहीसि णराहिव जइयहुं ।

घत्ता—णरतरु गयँ गय जि गयागयउ गणियाउ णाइं वणदेवयउ ॥
भो वल्लह पइं एक्केण विणु जणसंकुलु पट्टणु णाइं वणु ॥ २५ ॥

26

गिरिसरिदैरिवणसयइं णियंतिइ खयरावासहिं पइं जोयंतिइ ।
दिट्ठी मउलियच्छि लोलंती पंडुगंडघुलियालयवंती ।
विज्जुवेय तुह विरहें सोसिय मरणमणोरह मइं मर्भीसिय ।
जइ तुह पियसंजोउ ण संधमि तो विज्जाहरपट्टु ण बंधमि ।
णियभालयालि किसोयरि जाणहि अप्पउ मा ललियंगि विमाणहि ।
भोयवइहि केरी वियलियमय रइयारिणि सहि तहिं जि समागय ।
उच्चउं ताइ वयंसिइ दिट्ठउ अज्जु चंदु णिसि भवणि पइट्ठउ ।
णिग्गउ पुणु जाणिउं दुस्सिविणउं जिणपुज्जुच्छउ परइ समहवणउं ।
संतिअत्थु सयलहिं सुअरेव्वउ सिद्धकूडजिणणिलइ करेव्वउ ।

25. १ BK णरवर°. २ MB पिय°. ३ MB गुणषाल°. ४ MB वि. ५ MB भायरु तुह. ६ MB °विसंथुल. ७ MB सिरिवाल देव पभणंतइं. ८ MB सिरि. ९ MBK सव्वइं. १० M गयगजिगयागउ; B गय गय जि गयागयहो.

26. १ MB °दरिपइणइं भमंतिइ. २ MB मंभीसिय.

---

25. 3 *a* पयकुवलय° प्रजाः एव कुवलयानि.

26. 3 *b* मब्भीसिय आश्वासिता. 5 *b* विमाणहि क्लेशय. 8 *b* परइ प्रभाते.

घत्ता—अवरहुं कण्णहु अवरउ सहिउ अवरहुं वि लेहु मुद्दइ सहिउ ॥
भोयवइहि तुहुं सहि गउरविय हक्कारी [1]तुह हउं पट्ठविय ॥ १६ ॥

27

एम कहेप्पिणु गय सा सुंदरि हउं आरूढी सिरिसिहरुप्परि ।
मणिमयकुंडलमंडियकण्णउ दिट्ठउ तहिं काणणि छक्कण्णउ ।
सत्तावीसं जोयणवत्तउ भूगोयरियउ पिय तुह रत्तउ ।
असणिवेयखयरें वणि घित्तउ मइं कारुण्णएण मृ[1]गणेत्तउ ।
उच्चाइवि णियपुरवरु णीयउ अप्पियाउ णरवालहु धीयउ ।
हउं पइं दोदियहइं जोयंती अच्छमि खगणयरेसु चरंती ।
जाम ताम तेरी वित्थारें कहिय वत्त हरिकेउकुमारें ।
पत्थावइ तुहुं मइं अवलोइउ मयणें पंचमु[2] सरु मणि ढोइउ ।
कंचुइरूउ देव मइं धरियउ पिंडउल्लउ कुवलीहलभरियउ ।
जाणिओ सि [3]णेमित्तिकिबंधें कहिय पुंडरिंकिणि[4]पुरचिंधें ।

घत्ता—इय भरहणरेसरकिंकरहो जयरायहु तिजगभयंकरहो ॥
कह कहइ पुरंधि सुलोयणिय वरकुंदपुप्फदंताणणिय ॥ २७ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे विज्जाहरकुमारीविर[5]हवण्णणं
णाम बत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३२ ॥
॥ संधि ॥ ३२ ॥

१ MB हउं तुह.

27. १ MB मिगणेत्तउ. २ MB पंचमसरु. ३ MBT णेमित्तिणिबंधें. ४ MB °पुरि°. ५ MB °विरहवण्णणं.

27. 10 *a* णेमित्तिकिबंधें नैमित्तिकानामादेशेन.

XXXIII

सव्वोसहिसामत्थु तरुणें तेण पयासिउं ॥
कयउं सुहावइयाइ णियवुड्ढत्तु विणासिउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

संसाहियविज्जासासणेण कोमलकरयलसंफासणेण ।
उद्दामकामकामणमईहि विट्ठुणियउं जरत्तु सुहावईइ ।
बेण्णि वि तारुण्णालंकियाइं खगकण्णइ वयणइं जंपियाइं ।
तुह देउ महारउ प्राणइट्ठु तुहुं चक्कपाणि सयमेव विट्ठु ।
विज्जाहर पिसुण हणंति जेम ण करेव्वउ पइं वि ण मइं वि तेम ।
महु कंचुइवेसुद्धारिणीहि चडु खंधइ से सुंहकारिणीहि ।
धरि थेररूउ सुविचित्तकुडु आवेहि जाहुं तं सिद्धकूडु ।
तहि वोद्दहीउ पीवरथणीउ मिलिहिंति अज्जु तुह पणइणीउ ।
कंकेल्लिबालपल्लवभुयाउ अवलोयहि खेयरवइसुयाउ ।
ता खंधारोहणु कियउ तेण सा विज्जुचवल चल्लिय णहेण ।
उल्लंघिवि तुरिउ णहंगणंतु संपत्तइं जिणहरपंगणंतु ।

घत्ता—वंदिउ तिहुयणणाहु थोत्तमयइं उग्घुट्ठइं ॥
विण्णि वि वुड्ढइं ताइं मुहसालहि उवविट्ठइं ॥ १ ॥

MB give. at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

विनयाङ्कुरशातवाहनादौ नृपचक्रे दिवमीयुषि क्रमेण ।
भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रशक्त (प्रसक्त ?) एव ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MB °साहणेण. २ MB पाणइट्ठु. ३ MB सुहयारिणीहि. ४ MBT वोद्दहीउ. ५ MB संपत्तउ.

1. 4 *a* उद्दामेत्यादि—उद्दामकामः श्रीपालः तस्य कामने सेवने मतिर्यस्याः सा तस्याः. 6 *b* विट्ठु विष्णुः. 8 *b* चडु आरोपय. 10 *a* वोद्दहीउ तरुण्यः .

2

भोयवइ भडारी विज्जुवेय तहिं दुक्की वप्पिल णिरुवमेय।
मयणवइ समागय मयणलील रइरमणिहि केरी णाइं कील।
अण्णाउ मणोहर[1]वण्णियाउ कण्णाउ अट्ठ अवइण्णियाउ।
जरसरिधुयसिरकेसासियाइं कुं[2]यरिहिं थेरइं संभासियाइं।
अवलोयवि तरुणिहिं तणिय रिद्धि पुणु कंचुइ थिउ विब्भंतबु[3]द्धि।
छंडिवि[4] जरत्तु जाणियमईइ णियसिरि दक्खाविय सुहवईइ।
थिय पुणु पच्छण्णी सा कुमारि दुल्लक्खचारु होएवि थेरि।
वरइत्तु ताइ दंसणरयाहि भूभंगें दरिसिउ तडिरयाहि।
ताइ वि बोल्ला[5]विउ पिउ अणंगु मायाजराइ पच्छाइयंगु।
भोयवइइ तहिं पारद्धु हासु वुड्ढहु उप्परि पेम्माहिलासु।
हलि असणिवेय [6]ससि काइं कराहि लहु णवजुवाणु वरु को वि वराहि।

घत्ता—ता खयँ[7]रायसुया[8]हिं बंभु महेसरु अच्चुउ ॥
णिरलंकारु जिणिंदु सालंकारहिं संथुउ ॥ २ ॥

3

रत्ताहराहिं भवसयविरत्तु चंचलचित्तहिं गिरि[1]थिरचित्तु।
विरहें तत्तहिं तवचरणतत्तु मृ[2]गणेत्तहिं झाणणिलीणणेत्तु।
मज्झें खीणहिं संखीणपाउ थड्ड[3]त्थणीहिं णि[4]त्थड्डभाउ।
कुडिलालयाहिं अकुडिलमइल्लु जणमणसल्लिहिं णिम्मु[5]क्कसल्लु।
णहचारकमियमंदरदरीहिं वंदिवि परमेसरु सुंदरीहिं।
अहिसेउ कयउ पुज्जापयारु ता वंक[6]गीउ णामें कुमारु।

2. १ MB मणोरम°. २ MB कुअरिहिं. ३ MB विसमंतबुद्धि. ४ MB छड्डिवि. ५ MB सो जोइउ. ६ B सस; K ससे. ७ K खगराय°. ८ B °सुयहिं.

3. १ B omits from गिरि° down to मृगणेत्तहिं inclusive. २ M मिग°. ३ MB थड्ड°. ४ MB णित्थड्ड°. ५ MBK णिम्मुक्कु. ६ MB वंकगीउ.

---

2. 11 *a* ससि हे भगिनि.

3. 1 *b* गिरिथिर° अतिशयेन स्थिरम्.

संपत्तउ सहुं णियपरियणेण थेरेण थेरि पुच्छिय अणेण ।
आहरणविसेसहिं विप्फुरंतु किं धावइ णरमेलउ तुरंतु ।
ता हसिवि पउत्तउ कंचुईइ के के ण वि हय विज्जाराईइ ।
इय भोयवंति पुरि तिसिरराउ णिवसइ रइपहकंतासहाउ ।
सुय तासु पहावइ जेट्ठ पुत्तु सिंहु णामें गुणमंडणें णिउत्तु ।
एयहि रयणिहिं रुंजंतसाणि बहुरूविणि साहंतहु मसाणि ।
विरइउ विज्जइ कोड्डग्गभंगु जरवेयं कंपावियउं अंगु ।

घत्ता—आवेप्पिणु पणएण भिसएं भेसहु दिण्णउं ॥
वड्ढंतउ जरलिंगु रायकुमारहु छिण्णउं ॥ ३ ॥

4

णउ फिट्टइ कंठहु वंकभाउ आउच्छिउ जणणें वीयराउ ।
किह होसइ सिसुगलउज्जुयत्तु तं णिसुणवि अइवइणा पउत्तु ।
सव्वोसहि सिज्झइ भुवणि जासु तुह पुत्ति पहावइ पिययमासु ।
करफंसें तहु वक्केसरासु होसइ सुयगीयाभंगणासु ।
आवेसइ सो जिणणाहणीडु णामेण पसिद्धउ सिद्धकूडु ।
तहु दिवसहु लग्गिवि भडसमेउ अवयरइ एहु सररिउणिकेउ ।
जो णासइ कंधरभंगुरत्तु सो सुंवइ कण्णहि तणउं वत्तु ।
अण्णेक्कु लहइ मंडलु हयारि ता पभणइ धीरु परोवयारि ।
किं कण्णइ किं देसेण मज्झ धम्मेण करमि सामत्थ सज्झ ।
ता वेज्जें वेज्ज घोसिउ णिवेणं आरा सरु हो भासिउ णिवेण ।
णलिणीहकरग्गें छित्तु जाम गलेंमोडि पणट्ठी तासु ताम ।

७ M घावउ. ८ MBK तिमिर राउ. ९ MB रविप्पह°. १० MB सिउ. ११ MB °मंडणु.

4. १ M सिसुगलु उज्जुयत्तु २ MBK °गीवा°. ३ MB सहसकूडु. ४ MB वीरु. ५ MB सामत्थु सज्झु. ६ M विज्जु विज्जु; G वेज्झु वेज्झु but gloss वैद्य वैद्य. ७ MB सिवेण. ८ MB णरणाह. ९ MB गलमोडिय फिट्टिय.

9 *b* ° रुईइ आमिलापेण. 14 भिसएं वैद्येन. 15 वड्ढंतउ जरलिंगु प्रवर्धमानं ज्वरस्य लिङ्गम्.

4. 6 *b* सररिउणिकेउ स्मररिपुर्जिनस्तस्य गृहम्. 9 *b* सज्झ साध्यम्. 10 *b* आरा सरु समीपमागच्छ. 11 *a* णलिणाह° कमलसदृशेन.

गउ मंदिरु तणुरुहु सरलगीउ अवलोयवि सुट्ठु पहिट्ठु ताउ ।
परमेट्ठिघरंगणसंठिएण परकज्जारंभुक्कंठिएण ।
केण वि कंचुइणा वाहि महिय इय मंतिहिं वत्त पवित्त कहिय ।

घत्ता—विरइयकवडजराए ढंकियणववयकायहो ॥
वलिउ तुरिउ णरिंदु पासु तासु जांवायहो ॥ ४ ॥

5

छुडु छुडु करि वोइउ दाणवासु जिणहरु छज्जीवदयाणिवासु ।
अवइण्णउ जाम खगिंदु तिसिरु सुहिसुहदंसणु पाणीयतिसिरु ।
ता मायाविइ वंचणमईइ णिउ सुंदरु णावइ मउ मईइ ।
पियजीवधण्णरक्खणमईइ मणिवाविहि णिहिउ सुहावईइ ।
पलट्टउ तिसिरु अपेच्छमाणु जलहरवहजववाहियविमाणु ।
एत्तहि मुद्धइ अहिणववरासु तडिवेयायारु णरेसरासु ।
करसाहाणिहियइ मुद्दियाइ कउ माणवणयणविमोहियाइ ।
गय पत्त सुहावइ अवर का वि णामेण सुहोदय जेत्थु वावि ।

घत्ता—णवइंदीवरणेत्त रायहंसलहवासिणि ॥
पाणियवत्थअियत्थ सोहइ वाविविलासिणि ॥ ५ ॥

6

कण्णउ हक्कारइ जाम तेत्थु जलकीलहि देंतिउ कमलहत्थु ।
तामेक्क वि तरुणि ण दिट्ठ ताइ गइयउ सरु परियाणिउं इमाइ ।
एत्तहि रायं उद्दामतेय अप्पाणउं दिट्ठउ विज्जुवेय ।

१० MB मदिर तणुरुह ११ MB पहिट्ठु. १२ MB जामायहो.

5. १ MB °दयावचासु; T ° दयाणुवासु. २ B अइवण्णउ. ३ M सुहमुहदंसणपाणीय°; B सुहिमुह· पाणीय°. ४ MB °धम्म°. ५ MB° विमुद्दियाइ.

---

16 जांवायहो जामातुः.

1 *a* दाणवासु मदवर्षः; *b* छजीवदयाणिवासु षड्जीवनिकायेषु दयायाः निवासः. 2 *b* °तिसिरु सतृष्णः. 3 *b* मउ मृगः; मईइ मृग्या. 5 *b* जलहरवह° आकाशम्. 6 *b* तडिवेयायारु विद्युद्वेगरूपम्. 7 *a* करसाहा° अङ्गुली.

अवणियउ समाहप्पंगुलीउ णियरूवधारि थिउ मंतु गीउ ।
तो तहि अवसरि तहि चेडियाइ किं मुद्दइ हत्थहु फेडियाइ ।
धयरट्ठसिलिंधयगामिणीइ सुसुहावइइ मह सामिणीइ ।
जलरमणकज्जसंकेइयाउ इह खगवइधीयउ णाइयाउ ।
अलिचुंबियगयलंबियधयाउ अण्णेत्तहिं कत्थइ जहिं गयाउ ।
तहिं गय हउं णिहिय समीवि तुज्झु अवरु वि णरिंद वज्जरमि गुज्झु ।
कण्णाकाराणि मच्छरु वहंति असमंजसु धुवुं पइं ते वहंति ।
पहउ जाणिवि महु राणियाइ उव्वासिआहल्लसमाणियाइ ।

घत्ता—अत्थि वइरि खयरिंद ताहं णाणु दलवट्टिउ ॥
अंगुत्थलियइ णाह तुह सरूवु पलट्टिउ ॥ ६ ॥

7

जो जो आवइ तहु तहु ससाहि णियतणुसरिच्छससिसियजसाहि ।
चिंतेज्जसु अज्जु महाणुभाव वंचेज्जसु पिसुण समुद्दराव ।
सविमाणविलंबियविविहकेउ एत्थंतरि पत्तउ असणिवेउ ।
ससहोयरिरूउ णिहालमाणु गउ सो णहेण खरभाणुभाणु ।
खेयर तहिं पउर वि णउ मुणंति महु महु जि वाहिणि सयल वि भणंति ।
अण्णेक्कें मुणियपवंचएण तावक्खिउ तहिं कुसुमंचएण ।
सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण गय णयरें रुक्खारूढएण ।
दट्ठव्वसोक्खउप्पायणेहिं मइं दिट्ठउ अप्पणु लोयणेहिं ।
विणु मुद्दइ कण्ण जि पुरिसरयणु सच्चउ णउ भासमि अलियवयणु ।
जं वज्जरंति गुणवंत साहु गंभीरु धीरु रिउ सोमराहु ।

6. १ MB तो. २ MB °सिलिंबय°. ३ M सुसहावईइ. ४ MB °गयलुंबिय°. ५ MB धुउ. ६ MB माणु. ७ M सुरूउ; B सरूउ.

7. १ M समुद्दभाव, B सुद्दभाव; T समुद्दराव. २ MB मुद्दिइ.

---

6. 4 *a* अवणियउ अपनीता स्फेटिता; समाहप्पंगुलीउ माहात्म्यसहिता मुद्रिका 6 *a* °सिलिंधय° बालः.

7; 2 *b* समुद्दराव हे समुद्रध्वने. 4 *b* खरभाणुभाणु तीव्रादित्यकिरणः. 6 *b* कुसुमचएण मालिकेन. 7 *a* सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण शोभनेन निजरूपेण परिस्थिते श्रीपाले यादृशं दर्शनं तत्रामूढेन अभ्रान्तेन.

जो अग्गइ होसइ चक्कणाहु जिच्छउ सो पहु सिरिपालु एहु।
घत्ता—धम्मारूढगुणग्गि जो आरूढउ भावइ॥
इहु सो वम्महबाणु णारिसरीरइं तावइ॥ ७॥

8

ता धाइय भड आहवसमत्थ हणु हणु भणंत हलमुसलहत्थ।
लद्धउ वइरिउ कहिं जाइ अज्जु कहिं होइ राउ कहिं करइ रज्जु।
इय भणिवि पवेढिउ खेयरेहिं णं पिउ पुण्णालिहि उत्तरेहिं।
णं सिहरि पलंबिरजलहरेहिं णं दिवसु दिवसणाहाकरेहिं।
णं चंदणतरुवरु विसहरेहिं हम्मइ ण जाम फुरियाहरेहिं।
जोपप्पिणु सरवरु सारणालु हंसीमुहचुंबिय सिसु मरालु।
कण्णउ गयाउ कीलवि समत्त सा पियवयंसि मणिवावि पत्त।
अवलोयवि रिउसेणावियारु वालइ अहंसणु किउ कुमारु।
णउ दिट्ठु तेहि सो तेत्थु केम अण्णाणिएहिं सव्वण्हु जेम।

घत्ता—उच्चाइवि परिहत्थु अहिणवकंचणवण्णइ॥
पुव्वुत्तइ जिणगेहि वरु संणिहियउ कण्णइ॥ ८॥

9

करिणि व्व कहिं वि कीलीवणासु। गय सुंदरि णियमणिहेलणासु।
णियमुहसोहामियचंदकंति पेच्छंतउ फलिहसिलायलंति।
धरणीसु ताइ मुद्दाइ रहिउ णं कामु कामकामिणिहि महिउ।

---

३ MB होहइ. ४ MB सिरिवालु. ५ M धम्मारूढु गुणग्गे;

8. १ MB आहवि समत्थ. २ MB पलंबिय°. ३ MBK दिवसणाहहं. ४ B अण्णाणिइ हिंस व एहु जाम. ५ B पुव्वत्तइ.

9. १ MB णियसुणिहेलणासु, २ MB णियमुहुं सोहा°.

---

12 धम्मारूढगुणग्गि धनुष्यारूढस्य चडितस्य गुणस्य दोरस्य अग्रेतनभागे.

8. 10 परिहत्थु शीघ्रम्.

अवलोयाव वप्पिल सालएण परियाणिउं उण्णयभालएण ।
इहु सा णरिंदु गुणंपालतणउ[3] जो पणइणीहिं संजणियपणउ ।
जो गिज्जइ देवेहिं घरिवि वेणु जो दुत्थियसज्जणकामधेणु ।
णं पलइ समुग्गउ धूमकेउ इय चिंतिवि धाइउ धूमकेउ ।
जिणपंगणाउ रायाहिराउ उक्खित्तउ गरुडें णाइं णाउ ।
णिउ रिउणा उसिरावइसमीवि कालइरिहि णच्चियणीलगीवि ।
कालक्खगुहहि कालाहिवासि घित्तउ हरिवाहिणिसेज्जदेसि ।

घत्ता—दाहिणंदइवारंभे खयकालेण विवज्जिउ ॥
सेज्जहि णाहु णिसण्णु कालभुयंगें पुज्जिउ ॥ ९ ॥

10

उसिरावइपुरवरि हेमवम्मु तहु भिच्चहिं भासिउ तासु कम्मु ।
जिह चडिउ सेज्जि जिह णविउ णाउ जिह णिग्गउ पत्तउ धूमकेउ ।
जिह णिउ णरवइ अण्णत्थ झ त्ति जिह केण वि ण मुणिय पुण वि थत्ति ।
तिह णिसुणिवि उसिरावइपुरेसु किंकरहं कुइउ किं कियउ दोसु ।
णउ रक्खिउ किं आपसपुरिसु किं आउंचिउ मइं होंतु हरिसु ।
तावेत्तहि रइसुहलुद्धएण वप्पिलमेहुणएं कुद्धएण ।
चंदउरि णिसिहि तमजालणीलि पेयालइ पहु णिक्खित्तु सूलि ।
ताडिउ खग्गें पुणु मोग्गरेण पुण्णाहिउ णउ घिप्पइ णरेण ।
णउ भिज्जइ सूलें सव्वलेण णउ खज्जइ णरु रक्खसकुलेण ।

घत्ता—घित्तउ जलणि जलंति तहि वि परिट्ठिउ अवियलु ॥
जिणपयपोमरयासु अग्गि वि जायउ सीयलु ॥ १० ॥

३ MB गुणवाल°. ४ B °सज्जस°. ५ B पंगणाहि ६ B उक्खिण्णउ. ७ MB दाहिणि. ८MB विसज्जिउ.

10. १ B किं रक्खिउ. २ MB °लद्धएण.

9. 4 *a* सालएण श्यालेन. 9 *b* °णीलगीवि° मयूरे. 11 दाहिण° अनुकूलम्.

10. 10 जलणि ज्वलने अग्नौ.

11

जिणु सुमरंतहं सीहु वि ण खाइ विसदुम्महु फणि संमुहु ण थाइ।
असिघडणहुयवहुग्गमियजालि ओवडियसुहडसंगामकालि।
जिणु सुमरंतहं रिउ थरहरंति धीरें वि पच्छाउहुं ओसरंति।
करडयलगलियमयजलपवाहु गुमुगुमुगुमंतचलमहुयरोहु।
धावंतु एंतु गिरिवरसमाणु उरि देंतु वहुं बज्झयविसाणु।
रयपिंजरु कुंजरवरु वि खलइ जिणसुमरणंकुसंकुसिउ वलइ।
वणगलियरुहिरें करसडियणास अविणट्ठकट्ठकुट्ठाविसेस।
खैयखासजलोयरजणियसोय जिणु सुमरंतहु णासंति रोय।
णित्थाहसलिलि सरहयदियंति करिमयरमच्छपुच्छुच्छलंति।
माणिक्ककिरणमालाविचित्ति कल्लोलंदोलियजाणवत्ति।
जिणु सुमरंतहं जलयररउद्दि बुड्डिज्जइ ण कयाइ वि समुद्दि।
जिणु सुमरंतहं मंगलइं होंति पयसंखलवलयइं परियलंति।

घत्ता--सत्तु वि मित्त हवंति विट्ठि वि भल्लउ वासरु॥
जिणु सुमरंतहं होइ खग्गु वि कमलु सकेसरु॥ ११॥

12

णीसरिउ हुयासहु अहयपिंडु सोहइ णिउ णं सोवण्णपिंडु।
आसीणु सिलायलि रायहंसु णं भिसिणीदलयलि रायहंसु।
अइबलु णामें पुरि वसइ तेत्थु विज्जाहरु विज्जाबलसमत्थु।
णं वम्महरायहु तणिय सेण तहु घरिणि कुसीलिणि चित्तसेण।
मुहकुहरुग्गयफरुसक्खरेण सा सइरिणि णिसि गरहिय वरेण।
आगय पिउवणहु णहि णिभाणु दिट्ठउ सिहि मुहणिग्गच्छमाणु।
चिंतिउ अणाइ जयलच्छिगेहु ण पलित्तउ एयहु तणउ देहु।

11. १ M सुमरंतहु; B सुमिरतहु. २ MB वीर. ३ MB पच्छामुहुं. ४ MB °वरमहु°. ५ MB लोहबद्धउ. ६ MB रुहिरु. ७ MB खरखास°; G खरखाय°. ८ MB °सलिलसरसय°. ९ MB परिसंखल°. १० MB परिगलंति.

11. 2 *a* असीति—असीनां खड्गानां घटनात्परस्परसंघटनात् उद्गमिता निर्गता ज्वाला यत्र. 8 *a* खय° क्षयरोगः. 9 *a* °सरहय° जलेन हताः. 12 *b* पयसंखल° पदे शृंखलाः.

जं तं होएवउं कारणेण काइं वे संबंधवियारणेण ।
इय भणिवि महिल कोऊहलेण तहिं सा पविट्ठ णवराणलेण ।
णउ दड्ढी जालाचारिएण सव्वोसहिरसहयवीरिएण ।
णीसरिवि णिसण्णी णिवहु पासि अवइण्णउ ता पिउवणणिवासि ।
अइचलु गेहिणिचरणयलवडिउ हउं मंदबुद्धि पिसुणेहिं णडिउ ।
आवेहि कंति वच्चहुं णिकेउ ता चवइ धुत्ति संभरिवि हेउ ।

घत्ता—हक्कारहि णियबंधु दीवु धरेप्पिणु गच्छमि ॥
असइत्तणमलेणेण मइलिय केत्तिउ अच्छमि ॥ १२ ॥

13

ता महिलारइरसविब्भलेण मेलाविय बंधव अइबलेण ।
उवविट्ठी सइरिणि धगधगंति हुयवहि दूसहि विद्धत्थधंति ।
सा तेण ण दड्ढी कह वि केम मायाविणि वेस जडेण जेम ।
वंदिय लोएण महासईहि हुयउ सिहि सीयलु सुहमईहि ।
दुच्चारिणिचरिउ णियच्छमाणु पवियप्पइ रिउमहिरुहकिसाणु ।
णिग्गव्वसीलु को संपयाइ पारद्धिउ को सेविउ दयाइ ।
भणु सासिउ रायपसाउ कासु सघरत्थु वि कं ण डहइ हुयासु ।
वसणेण ण किउ को जगि णिरत्थु असईयणे वंचिउ को ण एत्थु ।

घत्ता—अविवंचिउ णारीहिं माहियलि को वि ण वच्चइ ॥
भरहपुप्फदंतेहिं पेच्छउ जणु जिह रुच्चइ ॥ १३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे विज्जाहरीमायापवंचणो
णाम तेत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३३ ॥
॥ संधि ॥ ३३ ॥

---

12. १ MB वि. २ T भेउ. ३ MB दीउ. ४ MB असइत्तणयकलंकु.

13. १ MB °रसविंभलेण. २ MB हुयवहदूसहि विद्धत्थवंति. ३ MB कहि. ४ MB विडेण. ५ MB णिग्गंथसीलु. ६ MB सासउ. ७ M पसाय. ८ MB किं. ९ MB जगि को. १० MB अविअंचिउ. ११ MB पेच्छिउ.

---

12. 1 *a* अहयपिंडु अनुपहतशरीरः. 7 *a* अणाइ अनया. 10 *a* जालाचारिएण ज्वलतः.

13. 2 *b* विद्धत्थधंति विध्वस्तध्वान्ते. 3 *b* वेस वेश्या. 7 *a* सासिउ शाश्वतः. 10 भरह° नक्षत्रप्रच्छादको.

XXXIV

सा कवडपईव्वइय आलुंचियवय णियपियभवणि पइट्ठी ॥
कामिणिमणहारें तहिं जि कुमारें कण्णपिसल्लिय दिट्ठी ॥ ध्रुवकं ॥

1

ाजयसत्तु विमलमइ देविसुय कमलवइ णाम सोहग्गजुय ।
विज्जासंसाहणि गहगहिय आणिय पिउवणु ससयणि महिय ।
जियरिउणा सुंदरु पत्थियउ इह तिहुयणि जो जो दुत्थियउ ।
तहु तहु तुहुं बंधवु देहि सूयँ महु तणयहि करहि सणाहकियँ ।
ता तरुणें मंतवसिल्लियहि पिसउल्लउ पुसिउ पिसल्लियहि ।
अवरोप्परु हियवउं ढोइयउं दोहिं वि अहिलासें जोइयउं ।
ईसावसेण रूसिवि वरहो गय झ त्ति सुहावइ णियघरहो ।
बुज्झिउ णरणाहें चक्कवइ आणिउ णियभँवणहु भुवणवइ ।

घत्ता—पुज्जिवि मणिहारहिं जणियवियारहिं कण्णंतउरि णिहियउ ॥
तेहिं वि पूयँ मुद्धहिं रूँवालुद्धहिं णियणियमणि संणिहियउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

तीव्रापद्दिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

GK do not give it.

1\. १ MB °पइव्वय. २ MB बंधउ. ३ MB सिय. ४ MB किय. ५ MB °भुवणहु. ६ MB पिय. ७ MB सुद्धु विसुद्धहिं; B सुद्धुविसुद्धहिं.

1\. 1 °पइव्वइय पतिव्रता; आलुंचियवय त्यक्तव्रता. 6 a सूय श्रीः. 7 b पिसल्लियहि पिशाचगृहीतायाः.

2

सखुरेण भणिउं भो चंदमुह कीरइ विवाहकल्लाणु तुह ।
तेण वि तहु वयणु पलोइयउ हियउल्लउं बंधुविओइयउं ।
हे माम ताम मइं णेहि तहिं वसुपालु[1] सहोयरु वसइ जहिं ।
तहु मिलिवि धरमि करु सुंदरिहि सुरणरणयणंतरंगहरिहि ।
तं णिसुणिवि सज्जणमणु मुणिउं जियसत्तुं[2] सलिलसेणु[3] भणिउ ।
सुंदरु लएवि बहुसोक्खयरि लहु[4] जाहि पुंडरिंकिणिणयरि ।
ता सुहउ लएप्पिणु भमियगेहे[5] गउ वारिसेणु वारिहरवहे ।
णिसि णिवइ तिसइ सोसियवयणु पत्तउ विमलउरुत्तुंगतणु ।
जल्तु जोयहुं चलिउ खगाहिवइ जा दिट्ठि कमलवाविहि घिवइ ।
ता सुक्क णिरिक्खिय तेण किह णिण्णेह विलासिणिकील जिह ।

घत्ता—दूसिय[6]देहुण्हइ लइयउ तण्हइ धायझलक्कइ रीणउ ॥
णवसत्तच्छयतलि खगकोलाहलि जहिं अच्छइ आसीणउ ॥ २ ॥

3

विज्जाहरेण आसासियउ नहिं जायवि पहु संभासियउ ।
आहिंडिवि देव असेसु वणु मा बीहहि आणवि[1] सिसिरु वणु ।
इय भणिवि वेयवाहिणि सरिया[2] गउ दिट्ठ तेण पाणियभरिया[3] ।
अइअविहयहरिणु[4]त्तण्हियहि अणुहरिय सा वि मायण्हियहि ।
रायाहिराय दलियावईइ सोम्मिय कण्णाइ सुहावईइ ।
पिउ जाइवि मालइ ताडियउ तण्हाकिलेसु णिद्धाडियउ ।
अलहंतु सलिलु विडवुब्भडहु[5] आयउ सरसेणु सरीयडहु ।

2. १ B वसुवालु. २ MB जियसत्तु ३ M सलिलासणु ४ MB तुहु. ५ MB भणिय गेहे. ६ M दूणिय°.

3. १ MB आणउं. २ MB सरिय. ३ भरिय . ४ MB हरिणु व तण्हियहि ५ MB वियडुब्भडहु; T विडउब्भडहु.

---

2. 11 धायझलक्कइ शीघ्रगमनोद्भूतौष्ण्येन; रीणउ श्रान्तः.

3. 4 *a* अई त्यादि—अतिशयेन विहता हरिणानां उत्तृष्णा यया; *b* मायण्हियइ मृगतृष्णिकया. 7 *a* विडवुब्भडहु विटपाः वृक्षाः उद्भटा उल्बणा यत्र; *b* सरसेणु वारिषेण.

छण्णइ कण्णइ बोल्लावियउ तुहुं केण बप्प वेहावियउं ।
किं पाविज्जइ वरु रमणुं परं अज्जाहि तुरिउ भणिओ सि मइं ।
पयहु रिउ दुज्जय अत्थि जइ मा करहि चित्तु अहिमाणमइ ।
तं णिसुणिवि सो पल्लट्टु णरु णिविसेसें पराइउ णिययघरु ।
सयणहं संबंधु समासियउ णेइवाविजलोहउ सोसियउ ।
सइं पुहइणरिंदु परिग्गहिउ हउं पत्थु कुमारिइ संपहिउं ।

घत्ता—तहि तणियइ मौलिइ[12] चलभसलोलिइ[13] पहु छुह तण्ह ण पावइ ॥
जसु घरिणि सुहावइ हियवउ रावइ तासु दुक्खु कहिं[14] आवइ ॥ ३ ॥

4

तं णिसुणिवि सयणहिं बोल्लियउ कण्णइ तिजगु वि उच्छल्लियउ ।
सिरिपाल[1] कप्पतरुवरवइहि सामत्थु पघुट्ठु सुहावइहि ।
पत्तहि णंदणवणि संठियउ णरणाहु णरहु उक्कंठियउ ।
सुमरंतु सहायहु दुज्जियइ हउ कुसुमहिं मायाखुज्जियइ ।
चिंतइ कुमारु मुणिमणमहहु मग्गण पडंति किं वम्महहु ।
पेइरत्तइ[2] पुव्वबहुल्लियइ णिहंसणरूवु समुल्लियइ ।
लक्खणपमाणमाणें मविउ कण्णासरूउ तहु णिम्मविउ ।

६ MB add after this the घत्ता couplet:—

घत्ता—खरतावविमीसें गिंभाविसेसें कच्छवमच्छवहूइ ॥
आसिलट्ठि व दीसइ किं किर सीसइ णिण्णाणिय णइ हूई ॥ ३ ॥

and number the कडवक as 3 and subsequent कडवकs as 4 etc, upto 13. ७ MB रमण. ८ M णिवसेण, B णिमिमेण. ९ MB णयवावि°. १० MB संपिहिउ. ११ MB add after this the following three lines: हरिणुल्लउ वहइ ससंकु जलु, संजणइ सविंबु तेण मलु; मुहससहरु मिगणयणइं वहइ, अच्चंत जाहि पोढिम वहइ; कय उत्तिम जासु वियक्खणिय, जहिं दीसइ तहिं जि सलक्खणिय. १२ MB मालइ; K मालिइ but corrects it to मालइ. १३ MBK °भसलालइ. १४ M किं.

4. १ MB सिरिवाल. २ MB पइरत्तइ कामगहिल्लियइ, ता पहसिवि पुव्वबहुल्लियइ.

---

4. 3 *b* णरहु वारिषेणस्य. 4 *a* दुज्जियइ केनाप्यपराजितः. 6 *a* पुव्वबहुल्लियइ सुखावत्या; *b* णिहंसणरूवु निदर्शनरूपम्; समुल्लियइ समायुक्तया.

चिंतइ चिंताउलु भुवणवइ संचिय[३]संसयसंमूढमइ ।
महु केण कुमारिरूवु[४] ठविउ विणु मुद्दइ पुणु किह संभविउ ।

घत्ता—तं रूवुं णिएप्पिणु महिल भणेप्पिणु दूसहमयणें भग्गा ॥
णियगोत्तदिवायर बिण्णि वि भायर विज्जाहर[५] तहु लग्गा ॥ ४ ॥

5

एक्कहि भिसिणिहि दो हंसवर एक्कहि किसलकलियहि दो भमर ।
जइ होंति होंतु ण घडइ अवरु सरु संधउ विंधउ कुसुमसरु ।
एक्कहि तरुणिहि किं बिण्णि जण मउकरयलेहिं माणंति थण ।
इय चिंतिवि रणु पारंभियउ सुयणत्तणु बिहिं वि णिसुंभियउ ।
सिरिधूमवेयहरिवाहणहं [१]अंवरोप्परु कड्ढियपहरणहं ।
अंतरि गरुयारउ भाइ थिउ बिहि पेम्मणिबंधु रउद्दु किउ ।
मित्तत्तणु विहडइ बंधवहं किं पुण इह अवरहं अहिणवहं ।
इय भणिवि णिवारिय बे वि वर उक्खय[२]करवालकरालकर ।
रुप्पयरहरायहु तणउं घरु णियमायाकुयरिउ[३]त्तुंगसिरु ।
रायं[४] तहिं चारु वियप्पियउ तणयाहरि सिविरु[५] समप्पियउ ।

घत्ता—जुवयणमणचोरिहि भणिउं कुमारिहि एह कासु किं आइय ॥
ता पीवरथणियइ खगवामणियइ[६] विहसिवि वत्त णिवेइय ॥ ५ ॥

6

एह माइ सामिणी महंगुणेहि जुत्तिया पुंडरिंगिणी[१]पुरीणराहिवस्स पुत्तिया ।
एत्थ कामलंपडेण खेयरेण आणिया भूपसिद्ध मुद्ध भूमिगोयरी वियाणिया ।
हारदोरभूसियंगि[२] तारतंबणेत्तिया जंपए ण भाउमाउआविओयतत्तिया ।

३ M सिंचियसंपय°; B सचियसंपय°; T संचिय°. ४ MB °रूउ. ५ B विज्जाहरहो.

5. १ MB रहसेण पवाहियवाहणहं. २ MB उक्खयसुकरालकिवाणकर ३ M °कुयरिउ तुंगसिरु. B °कुवरिउत्तुंगसिरु. ४ B रायहु तहु चारु समप्पियउ. ५ B सवरु ६ MB खगकामिणियइ.

6. १ MB पुंडरिंकिणी°. २ MP, °भूसियंग.

5. 6 *b* रउद्दु अतिशयवान्. 10 *b* सिविरु आवासः. 12 खगवामणियइ वामनीरूपया विद्याधराख्यिया.

ताम जक्खदेवएण वड्डिमा वियारिया　　लच्छिवाल चक्कवट्टि एस णो कुमारिया ।
खुज्जिया वि खेयरी सुहावई सुहंकरी　　ता रइप्पहाइ भासिया इणं मणोहरी ।
दक्खवेहि वल्लहं विलासभासियाण संगहं　सूहवं समाणिणी अदीणमाणणिग्गहं ।
तं मुणेवि सुंदरीइ एणलंछणाणणो　　रूवि वम्महो गहीररायरिद्धिमाणणो ।
मंतिऊण चिंतिऊण दिव्वमंतसंगमं　　दूसिऊण णासिऊण णारिरूवविब्भमं ।
* दंसिओ वहुल्लियाण पुंडरीकिणीवई　　तं पलोइऊण ताण वट्टिया मणे रई ।
का वि कामसल्लिया महीयले णिवाइया　का वि णीससंतिया वयंसियाहिं जोइया ।
पंज्झरंतसोणिया सहीयणस्स लज्जिया　का वि मुच्छिया चलंतचामरेहिं विज्जिया ।

घत्ता—इय कण्णंतेउरु पेच्छंतउ वरु मयणें उप्पाहि थवियउ ॥
भिच्चहि जाएप्पिणु पणउ करेप्पिणु पुररायहु विण्णवियउ ॥ ६ ॥

7

जा तरुणी बाला लइ थविय　　सा अम्हहं खुज्जइ दक्खविय ।
सा कण्ण ण होइ मरालगइ　　सिरिवालु णाम रायाहिवइ ।
ता खयरकुमार वीरपवर　　धाइय अणंत इच्छियसवर ।
असिकणयकोंतविप्फुरियदिस　　वग्गिय भग्गियसंगाममिस ।
सुंदरु पेक्खिवि उवसंत किह　　जिणणाहु णिहालवि भव्व जिह ।
तहिं समइ खगिंदु पराइयउ　　जामाउ सिणेहें जोइयउ ।
जाणिउ परमेसरु चक्कवइ　　संतोसिउ विज्जाहरणिवइ ।
संमाणिउ कंकणकुंडलेहिं　　वरहारदोरमणिउज्जलेहिं ।
तियसाहवजयसिरिलंपडेहिं　　हरिवाहणधूमवेयभडेहिं ।
चिंतिउ दोहिं पि समेहलहिं　　अम्हहिं किं कियउ समेहलहिं ।

३ MB विलासहाससंगहं. ४ M समाणमाणिणीए माणणिग्गहं; T अदीण. ५ MBK मुणेवि. ६ MB रूव°.
७ MBK add का वि before this.

7　१ MB जक्खइ. २ MB इच्छियसमर. ३ MB समाइयउ. ४ M सणेहें जोइयउ; B सणेहें पुज्जियउ. ५ MB तियसाहिव°.

6. 6 *b* अदीण° प्रचुरः. 7 *a* एणलंछणाणणो चन्द्रमुखः.

7. 9 *a* तियसाहव° त्रिदशसंग्रामः. 10 *a* समेहलहिं उपशमवाञ्छास्वीकारेण मुखाभ्याम्; *b* समेहलहिं मेखलासहिताभ्याम्.

घत्ता—थिउ कण्णारूवें मायाभावें रिउ रणि णउ संघारिउ ॥
गयं विज्ज पणासिवि गुणगणु दूसिवि अप्पउ पर वेयारिउ ॥ ७ ॥

8

गयणि ि जं अम्हहिं कलहियउ तं केण वि कहिं मि ण संलहियउ ।
खगणाहें णंवरु पुच्छियउ तुहुं महिलायारु णियच्छियउ ।
पुणरवि संजायउ पुरिसु जिह विरंतु असेसु वि कहहि तिह ।
तं णिसुणिवि तेण समासियउ बालासामत्थइ विलसियउ ।
गउ विज्जावइ णियमंदिरहु णिद्दंगि रमिय तहु सुंदरहु ।
सुहसुत्तु जि खयरिहिं हरवि णिउ भणु कासु ण रुच्चइ प्राणप्रिउ ।
गुलखंडु रसायणु जेरिसउं सुहयहु सुहवत्तणु तेरिसउं ।
किं वण्णमि तिहुयणमुद्दियउ णिज्जंतहु तासुण्णिद्दियउ ।
मुहुं तामरसु व आयासरि दीसइ वियसिउ चवलंबुहरि ।
जगगरुयउ गयणु विराइयउ अरहंतु व तेण पलोइयउ ।

घत्ता—पुणु णियसीमंतिणि तंतिणि मंतिणि चिंतिय तेण सुहावइ ॥
पइं विणु मणहारिए देवि भडारिए को रक्खइ महु आवइ ॥ ८ ॥

9

हउं णिज्जम्वि लग्गउ केण कहिं किं जीवमि किं भुवु मरमि जहिं ।
रवियरपज्जालियमउडमणि तो पयड परिट्ठिय णहरमणि ।
पभणइ किं जूरहि पुरिसहरि ओहच्छमि हउं तुह विहुरहरि ।
जं भणसि तं जि हेलइ करमि पलयक्कु वि गयणि जंतु धरमि ।

६ MB गय वज्जेवि णासिवि.

8. १ M सालहियउ; B मलहियउ. २ MB णरवरु ३ B पुरिस. ४ MB कहिउ. ५ MB °सामत्थु पविलसियउ. ६ B सुहसुत्तु जि. ७ MB पाणपिउ; K प्राणिप्रिउ. ८ B °खंड. ९ MBT तासु विणिद्दियउ. १० B मुहु तामरसु. ११ MB णिराइयउ १२ MB मित्तिणि, T मंतिणि.

9. १ MB णिज्जमि; २ MB धुउ. ३ MB तो.

8. 8 *b* उण्णिद्दियउ निद्रारहितम्. 9 *a* तामरसं पद्मम्. 11 तंतिणि अशेषौषधपरिज्ञानयुक्ता; मंतिणि अशेषमन्त्रपरिज्ञानयुक्ता च.

9. 2 *b* णहरमणी विद्याधरी. 3 *b* ओहच्छमि एषा तिष्ठामि.

कमलवइहि दिण्णी दिट्ठि जहिं हंसाइ हंस मुक्को सि तहिं।
कण्णाकारुण्णें पुण वि मइं विरहें जलियउ जोयंतु पइं।
उव्वाइयि पेंतु णिहेलणउं हरिसेण करंतु व मेलणउं।
हउं णिविसु वि पिययम जइ मुयमि तो किं णिसि णिद्दए सुहुं सुअमि।

घत्ता—इह जणवइ खलसंकुलि कयरणकलयलि अण्णु ण णयणहिं पेक्खमि ॥
दिट्ठादिट्ठसरीरी होइवि धीरी पइं वि भडारा रक्खमि ॥ ९ ॥

10

वल्लहंतरंगंगकंपणं पम जाम जायं पयंपणं।
माणिमाणवित्थारमंथणं सित्थपंथसंणिहियमग्गणं।
जाणिऊण मयणं खलं घणं सुंदरीहिं विहियं खलंघणं।
णहघरित्तिदिब्भित्तिलग्गओ ताम भीमसद्दो समुग्गओ।
सिहरिकुहरहरिणा वि णिग्गया भयवसेण दूरं गया गया।
झाणमेव महमुणिहिं झुंजियं सकलुसं मइंदेहिं हंजियं।
पडिय विडवि फुडियं रसायलं घुलिय महियलं भीरुभेभलं।
कवरिद्धिणिज्जियसईरई संकिया मणे सा सुहावई।
तुट्ठिपुट्ठिकल्लाणदाइणा गयणपंगणत्थेण राइणा।
सइं णिरिक्खिओ सुरहिपरिमलो करडगलियओहलियमयजलो।
लुलियवेलियपडिवलियअलिउलो चरणखप्पणो णवियमहियलो।
णिययधवलिमाधोयणहयलो बलविरुद्धजंभारिमयगलो।
सीयरंभसिंचियदिसाणणो चउविसाणणिद्दलियकाणणो।
पंचदंडउच्छेहदेहओ ताण दूण परिहाणसोहओ।

द्धादिट्ठसरीरी. ५ MB पइं जि.

10. १ MBT सियपंथ°; K सिछपंथ. २ MB महिउलं. ३ MB भीरु वेंभले. ४ MB °अविहलिय°. ५ MB वलिमपयपडिय°. ६ MBKT परिणाह°.

10. 2 *b* सित्थ° प्रत्यग्रामभागः. 3 *b* खलंघणं आकाशोल्लंघनम्. 7 *b* भीरुभेंभलं कातराणां भयानकम्. 8 *a* सईरई शचीपतिरिन्द्रः.

लंबमाणचलकण्णपल्लवो दीहतालवट्टो महारवो।
तंबु तालु आयंबमुहणहो चिक्कवंतकेलाससच्छहो।
लच्छिरमणु सिरिपालु धाइओ भद्दहत्थि गंहणे पलोइओ।

घत्ता—पडिवक्खवियारणु पेक्खिवि वारणु रायहु हरिसु ण माइउ ॥
णं विउलसिलालहु हरिवरु सेलहु गलगज्जंतु पधाइउ ॥ १० ॥

11

धावंतु दंत करु करि घिवइ आलिंगइ सव्वंगइं छिवइ।
मणु रक्खइ मेल्लेप्पिणु दमइ पुणु ढुक्कइ चउपासहिं भमइ।
सरयणु बहुरयणविहूसणहु अणुहरइ हत्थि कामिणिजणहु।
चलु चउचरणंतरि पइसरइ हक्कइ हुंकारइ णीसरइ।
लंघइ आसंघइ कुंभयलु पावइ पुच्छुप्पलु वच्छयलु।
दसदिसिहिं वि हिंडइ कुंजरहु पहु विज्जुपुंजु णं जलहरहु।
णिम्महइ गहीरसरेण सरु रंगंतु घरेइ करेण करु।
आकुंचियतणु वंचणकुसलु अक्कमिवि कमेण दसणमुसलु।
बलिणा बलेण णिव्वूढबलु जुज्झेप्पिणु सुइरु महंतबलु।

घत्ता—सो करिमयणिब्भरु लीलामंथरु णरणाहें संभाइउ ॥
णं पविउलकंदरु मंदरमाहिहरु भुयदंडहिं उच्चाइउ ॥ ११ ॥

12

मयरेहासोहापरियरिउ जं जुज्झिवि दंति तेण धरिउ।
तं गयणहु कुसुमणियरु घुलिउ रुणुरुणुरुणंतमहुलिहबलिउ।
जाणेप्पिणु पुण्णपुरिसु पवरु परिहरिवि भुवणभीयरु समरु।

७ MB तंबतालु पायंब°. ८ MB चिक्कवतु. ९ MB लच्छिरमणे सिहरि व्व धाइओ. १० MB गयणे.

11. १ MB तणु. २ MB चुक्कइ. ३ B चउदिसिहिं. ४ MB बहु°. ५ M °तणु धारणकुसलु; B तणुधरधरणकुसलु. ६ M मंदरु.

15 *b* तालवट्ट° पुच्छम्. 17 *b* गहणे वने. 19 हरिवरु इन्द्रः.

11. 3 *a* सरयणु सरत्नः सरदनश्च. 5 *b* °उप्पलु पुष्करम्.

करिणा सुंदरु कंधरि थविउ विज्जाहरकिंकरेहिं णविउ।
णिउ तहिं जहिं अच्छइ खयरवइ सो पभणइ पुलयपसण्णमइ।
कंतावइप्रिय[1] सुकंतरमणा रइकंता सिरिकंता मयणा।
घणवाला बालहुं तुहुं जि वरु जामाइउ महु जियकुसुमसरु[2]।

घत्ता--करि खंभि णिबद्धउ कंति[3]सणिद्धउ भरहसयणसुविणीयउ॥
सिंदूरें पिंजरु आसाकुंजरु पुप्फयंतु[4] णं बीयउ॥ १२॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महाकरिरयणे[5]लंभं णाम
चउत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो॥ ३४॥
॥ संधि॥ ३४॥

12. १ MB पिय. २ MB add after this: इय पमणिवि घरि पइसारियउ, पुरणरणारिहिं जय-कारियउ. ३ K °सिणिद्धउ. ४ MB पुप्फदंतु. ५ MB रयणालंभं.

12. 8 भरहसयण° भरतस्य स्वजना सुत्वाः 9 पुप्फयंतु पुष्पदन्तनामा दिग्गजः.

XXXV

ता चक्खु णिबंधिवि खेयरहं तिजगुत्तिमलायण्णइं ॥
राणउ तहिं होंतउ अवहरिवि णियउ सुहावइकण्णइं ॥ ध्रुवकं ॥

1

चंडकिरणकरदिण्णालिंगणि पुच्छइ पुउं गच्छंतु णहंगणि ।
कहसु सुहावइ किं सरयब्भइं णं णं घरइं णहग्गणिसुंभइं ।
किं दीसंति बलायउ पंतिउ णं णं धयमालउ घोलंतिउ ।
किं सुरचावइं भहि विचित्तइं णं णं पिय तोरणइं पवित्तइं ।
किं णक्खत्तइं णं णं रयणइं मंदिरलग्गइं णं पुरणयणइं ।
किं णहु एहु धरग्गि णिसण्णउं णं णं णागणयरु वित्थिण्णउं ।
देव णायवलु णामें राणउ एत्थु वसइ बलवंतु अदीणउ ।
एम चवंतइं बिण्णि वि तुरियइं जहिं जणु मिलियउ तहिं अवयरियइं ।
पभणइ पिययमु हलि किं जणवउ कहइ कुमारि एत्थु णिवसइ हउ ।
महियदुसहससिलेहाविरहहं गंधवाहरुप्पयचित्तरहहं ।
सो हरि धरहुं ण जाइ णरिंदहु चंचलु मणु णावइ कुमुणिंदहु ।

घत्ता—णिट्ठुरियणयणु णिम्मंसमुहु लक्खणलक्खविसिट्ठउ ॥
सुणिउब्भक्खुब्भक्खुरु वियडउरु राएं हयवरु दिट्ठउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

इति भरतस्य जिनेश्वरसामायिकशिरोमणेर्गुणान् वक्तुम् ।
मातुं च वार्धितोयं चुलुकैः कस्यास्ति सामर्थ्यम् ॥

GK do not give it.

1\. १ MBK तिजगुत्तम°. २ MB पिउ. ३ MB बलायापंतिउ. ४ MB धयमालाउ घुलंतिउ. ५ MB पुररयणइं. ६ B णिरियणयणु.

1\. 4 *b* णहग्गणिसुंभइं आकाशस्पर्शीनि. 9 *b* अदीणउ लक्ष्मीपरिपूर्णः. 15 सुणिउब्भक्खुब्भक्खुरु सुष्ठु नियमेन ऊर्ध्वाः अक्षोभ्याश्च लोहटंकणघटितत्वात् खुरा यस्य; वियड° विस्तीर्णम्.

2

धाइउ दुद्धरु खरखुर[1]खयधरु ।
मरगयणिहतणु कंपावियजेणु[2] ।
तंबिरणयणउ भंगुरवयणउ ।
दसणैं[3]भयंकरु अरिअमरिसहरु ।
भुवणविमद्दैं लिहिलिहिसँद्दैं[4] ।
बहिरियदसदिसु मग्गियरणमिसु ।
णवर णरिंदें चवलु मइंदें ।
णं सारंगउ धरिउ तुरंगउ ।
कुंकुमपिंजरु चलु पंसरवि[5] करु ।
भुयबलपोढें पुणु आरूढें ।
गायहं पीलिउ वग्गइ चालिउ ।
अवलोइवि कंसु[6] हरि हूयउ वसु ।
पुलइयकाएं खगसंघाएं ।
पयडियमंगलु घुट्ठउ कलयलु ।

घत्ता—तों[7] बुज्झिवि महिवइ अतुलबलु अहिवलेण सुरवण्णी ॥
वरचंदणपरिमलचंदमुहि चंदलेह तहु दिण्णी ॥ २ ॥

3

चंदलेह आउच्छिवि णिग्गउ णियउ सुहावहइ णिविसें[1] गउ ।
तेत्तहि जेत्तहि सीमामहिहरु विउलणियंबुग्गय[2]णवसुरतरु ।
वे वि चारुचामीयरवण्णइं तेत्थु लयाहरि जाम णिसण्णइं ।
ता मत्तग्ग खग वेण्णि समागय णं णहि णिसियर णिसिहर उग्गय ।
महुरगिराइ पउंजियविणएं पुच्छिय ते[3] वणितणयातणएं ।

2. १ MB °खुरखयधरु. २ M कंपावियतणु. ३ MB दंसणभयकरु. ४ MBK हिलिहिलिसद्दें. ५ MB पसरियकरु; K पसरेवि करु. ६ B किसु. ७ MB तो.

3. १ MB णिवसें. २ MB °ग्गयसुरतरुवरु. ३ B नेण तेणयातणएं.

2. 2 *a* °णिह° सदृशी.

3. 4 *b* णिसियर णिसिहर चन्द्रादित्यौ. 5 *b* वणितणयातणएं कुबेरश्रीपुत्रेण श्रीपालेन.

दीसह बे वि सुट्ठु सुच्छाया कहह कासु किं कारणु आया।
तेहिं पउत्तउ णियपुरु छंडिवि गयणु पायपुंडरियहिं मंडिवि।
अम्हइं आया पइं जि गवेसहुं दइउ बुद्धि पोरिसु विण्णासहुं।
लइ लइ लहु णिसिसु पवंदहि एहु पहीणखंभु जइ छिंदहि।
तो तुहुं होसि बप्प चक्केसरु विज्जाहरभूगोयरईसरु।

घत्ता—तं णिसुणिवि असिवरु करि करिवि खंभु कुमारें घाइउ ॥
असिजलधारइ सो णिट्ठुरु वि पत्थरु तह वि दुहाँविउ ॥ ३ ॥

4

तुहुं सो चक्कवट्टि जयसिरिहर इय अहिणंदिवि गय ते णहयर।
सुहवईइ मंतें आराहिवि तं करवालु करालु पसाहिवि।
तरुणतरणिणिहु तरुणहुं ढोइउ पीडिवि मुट्ठिइ तेण पलोइउ।
बहुविज्जासामत्थसमग्गइ मुद्धइ मुद्धयंदसोहग्गइ।
पुणु पहु णहयलेण णिउ महियल्लु दिट्ठउ मणुयजुयल्लु अमलियबल्लु।
चरणरहिउ णं तवसि कुसीलउ रयणरहिउ णावइ रयणालउ।
दूरु मुक्ककंचुउ णं कयरणु दूसहविसु णं पलयमहाघणु।
दुरसणु छिद्दण्णेसिउ णं खलु पुहइपालु णं विरइयमंडलु।
परतीरु व आयंबिरणेत्तउ कालें कालवासु णं घित्तउ।
अण्णु वि णं जउँ जगसंपासणु दिट्ठु महोरउ दाढाभीसणु।

घत्ता—दिट्ठु पुंछि धरिवि पुहईसरिण प्राण हरंतु पमत्तउ ॥
सो विसहरु भामिवि गयणयलि महियालि झत्ति णिहित्तउ ॥ ४ ॥

४ MB read for this line· लइ णिसिसु देव भुयदंडें, परबलबलदलणेण पयंडें: and add the following: एहु पाहाणखभु जइ छिंदहि, अम्हह हियवउ लहु साणंदहि (B आणंदहि). ५ MB बप्प होसि. ६ K दोहाविउ.

4. १ K णरवर. २ MB मंतेणाराहिवि. ३ MB करालु करवालु. ४ MB °समत्थसामग्गइ. ५ MB मयरालउ. ६ MB कालपासु. ७ M जमु ८ MB °संपासणु. ९ M दिट्ठु पुच्छे; B दिट्ठु पुच्छि. १० MB पाण.

8 *b* विण्णासहुं परीक्षितुम्.

4. 2 *b* करालु भयानकः. 4 *b* मुद्धयंद° द्वितीयाचन्द्रः. 6 *a* चरण° चारित्र्यं पादाश्च. 7 *b* °विसु गरलं पानीयं वा. 8 *a* दुरसणु द्विजिह्वः, छिद्द° रन्ध्रं दोषश्च. 9 *b* कालवासु कालपाशः. 10 *a* जउँ यमः.

5

जायउ रयण[1] सो जि हयगयघड जं[2] जिप्पंति समरि पहुपडिभड ।
अंगुलीउ अंगुलियहि दिण्णउ अण्णेक्कु वि अरिणरु अवइण्णउ ।
तेण भणिउ कवडें पणवेप्पिणु एह डांचि[3] कुलिसमय लएप्पिणु ।
जइ तुहुं पयइं रयणइं घट्टहि । तो जाणमि तिहुयणु वि पलोट्टहि ।
तो तें ताइं[4] णिहिट्ठइं रयणइं मउलावियइं दुसीलहं णयणइं ।
सिद्धइं भणिवि[5] णमंसिउ लोएं[6] मण्णिउं वण्णिउं दिण्णविहोएं[7] ।
अच्छिहिं अंधसहासें[8] दिट्ठउ बहिरहं[9] बहिरत्तणु णट्ठउ ।
जंपिउ मूयहिं महुरालावें मुउ जीवइ सिरिवालपहावें ।

घत्ता—परियाणिवि गुणगणु हरिसिएण कुवलयच्छि[10] कुवलयभुय ॥
सिरिसेणें तहु सिरिउरवइणा वीयसोय दिण्णी सुय ॥ ५ ॥

6

विजयणयरि जसकिसलयकंदें कित्तिमइं वरकित्तिणरिंदें ।
पुणु धण्णउरि धणाहिवराएं विमलसेण ढोइय अणुराएं ।
उप्पण्णा सेणावइ घरवइ सपुरोहिय णिवणयपरिणयमइ ।
पुणु वि सुहावहेइ पहु[1] चालिउ धूमवेउ गयणाउ णिहालिउ ।
दससिरु मच्छरजलणुप्पायणु[2] वीस पाणि परें[3] वीस वि लोयणु ।
हरगलगरलतमालु व कालउ भिउडिभंगभंगुरभालालउ ।
कण्णकडुयवयणाइं भणंतें णारिवराइं[4] तणु व गणंतें ।
पच्चारिय रणि तेण सुहावइ मेल्लि मेल्लि सिरिवालु रसावइ ।
मा महु अग्गइ धरहि सरासणु मा वच्चहि हयासि जमसासणु ।

घत्ता—जसु हियवइ मडहंकारु णवि हालि महुं हासउ दिज्जइ ॥
रक्खिज्जइ पइं वि महेलियइ सो किह संढु रमिज्जइ ॥ ६ ॥

5. १ MB सो ज्जि रयणु. २ MBK जे. ३ MB दावि. ४ MB ताम्व णिहट्टइ. ५ MB मुणिवि. ६ MB लोयइं. ७ MB दिण्णविहोयइं. ८ MB °सहासहिं. ९ बहिरंतहिं. १० MB कामलच्छि कोमलभुय.

6. १ B णिउ. २ MB मच्छरु; T मच्छरजलण°. ३ MBK वर. ४ MB °वराइय तणुअ गणंतें.

---

5. 3 *a* डावि मुद्रा.
6. 5 *a* मच्छरजलण° कोपाग्निः.

7

चवइ किसोयरि एउं णं जुत्तउं रे रे धूमवेय पइं वुत्तउं ।
सप्पमग्गु जइ सप्पु जि बुज्झइ खयरें सहुं जइ खयरु जि जुज्झइ ।
एहु धरायरु तुहुं गयणायरु वज्जिवि विज्जउ पसरहि णियंयरु ।
जइ तुह एहु किं पि आसंकइ विवरीयाणणु पाउ वि कंपेइ ।
जइ तुहुं ण मरहि एयहु भुयबलि तो हउं पईसउं जलियमहाणलि ।
खल दलैवट्टिवि हरिसें णच्चमि वइरिमारि हउं णारि ण वुच्चमि ।
आउ आउ णियणाहु ण मेल्लमि तिक्खतिसूलें पइं उरि सल्लमि ।
एम चवंति तेण सा घाइय करवालेण दुलंघ दुहाइय ।

घत्ता—ता जायउ बिण्णि सुहावइउ उक्खयखग्गविहत्थउ ॥
हणु हणु पभणंतिउ हुंकरिवि थक्कउ जुज्झसमत्थउ ॥ ७ ॥

8

अक्कु वि सक्कु वि चित्ति चवंकइ सुहडु हणंतु ण णिविसु वि थक्कइ ।
दूण दूण वड्डिय संजायउ कण्णउ कण्णावेसें जायउ ।
वेढिउ धूमवेउ चउपासहिं आहउ जिगिजिगंत णिसिंसहिं ।
विप्फुरंतु जयसिरिउक्कंठिउ सो वि जाम बिहिं रूवहिं संठिउ ।
ता वुत्तउ णिवेण मा घायहि बहुय होंति रिउ कज्जु विवेयहि ।
अण्णु वि मुइ मइं कहिं मि वणंतरि आवेज्जसु पुणु जिंतइ संगरि ।
एक्कहियय होएप्पिणु भंडहि अरिसिरकमलइं खग्गें खंडहि ।
ता मुक्कइ पिउ वल्लिउ महिहरि थिउ लंबियतणु कक्करतरुवरि ।
दूरु णिरुद्धचंडकिरणायवि बाहहिं लंबमाणु तहिं पायवि ।
दिट्ठउ विज्जाहरिइ णरेसरु णं गुणि संधिउ मयरद्धयसरु ।

7. १ MB अजुत्तउं. २ MB गयणेसरु. ३ MB णियकरु. ४ MB विवरीयायणु. ५ MBK कंकइ. ६ MB पइसमि. ७ MB दलवट्टमि. ८ MB पेल्लमि. ९ MB लवंति. १० MB संघाइय. ११ MB दुहाविय. १२ MB उग्गय°.

8. १ MB चमक्कइ. २ MBT विहुअंसहिं. ३ MBK कज्ज. ४ MB वित्तइ. ५ MB संठिउ.

8. 9 *a* °चंडकिरणायवि आदित्यातपे.

घत्ता—तं पेक्खिवि वम्महबाणहय सीमंतिणि तहिं ढुकी ॥
जंपइ पयडइं विडचाडुयइं कुलमज्जायइ मुक्की ॥ ८ ॥

9

भो भो पुरिससीह दुहसलिलउ एत्थु केण तुहुं आणिवि घल्लिउ ।
सुहय कहइ व जइ मुयहि महीरुहु तो णिवडहि णिरुत्तु हेट्ठामुहु ।
हड्डइं कसमसंति भज्जंतइं अट्ठ वि अंगइं पलयहु जंतइं ।
मा उप्पेक्खहि छणचंदाणण भो पत्थिवपउमाणण माणण ।
इच्छ इच्छ मइं पइं ण पयारमि घोरहु कंतारहु उत्तारमि ।
भणइ कुमारवीरु किं खिज्जहि परपुरिसहु मणु देंति ण लज्जहि ।
वरं एत्थु जि तरुसाहहि सुक्खमि णउ परघरिणिहि वयणु णिरिक्खमि ।
वर णक्खाइं सिलायलि भग्गइं णउ परणारीउरयलि लग्गइं ।
दंतपंति वर जाउ दिसंतरि मा खुप्पउ परवहुबिंबाहरि ।
केसभारु वर वाएं णिज्जउ मा परपणयणीहिं कड्ढिज्जउ ।
वच्छत्थलु वर पक्खिहि खज्जउ मा परतुंथणोंहिं पेल्लिज्जउ ।

घत्ता—णयणइं घोलंति णिवारियाइं हियवउ जाइ वियारहु ॥
संताउ पवड्ढइ रयणिदिणु तित्ति ण पूरइ जारहु ॥ ९ ॥

10

गेहदुवारि णिरोहु करेसइ पिसुणु को वि संगहणु धरेसइ ।
लइ आलिंगिवि मुक्कणिबंधणु लहु उट्ठइ संवरइ पइंधणु ।
आसंकियमणु किं किर कीलइ दुज्जसु धूमें अप्पउ णीलइ ।
अण्णु अण्णु जइ काइ वि मंतइ तो परयारिउ णियमणि चिंतइ ।

१ MB °मज्जायपमुक्की.

9. १ M कसमसंत्ति. २ B omits this line. ३ B omits this foot. ४ M अक्खमि. ५ MB वायइ. ६ MB परतिय. ७ MB घोलत, T घोलंति.

10. १ MB गेहि दुवारि. २ MB लइ. ३ MB मुक्क. ४ M सवरियउ; B सवरिउ. ५ MB दुजस.

9. 4 पत्थिवपउमाणण राजलक्ष्म्या आणण उपार्जक, माणण उपभोजक. 5 *a* पयारमि प्रतारयामि.

10. 1 *b* संगहणु पुश्चलयुगलम्. 2 *a* मुक्कणिबंधणु मुक्तकण्ठाश्लेषः; *b* पइंधणु परिधानम्.

पयहिं सविवेयहिं हउं जाणिउ पयहिं कहिं वच्चमि संदाणिउ ।
इहभवपरभवदुण्णयगारउ परतियरमणु सुट्ठु विरुयारउ ।
जाँहि ण इच्छमि परघरसामिणि उव्वसि जइ वि रंभ सुरकामिणि ।
रमणीयइ पररमणालुद्धइ तं णिसुणिवि णहणारिइ कुद्धइ ।
णरणाहें पियसहि वणि मेल्लिय साहिसाइ सा छिंदिवि घल्लिय ।

घत्ता--थरहरियपाणिपयसिरकमलु विहुरयालि सुहजणणियइ ॥
णिवडंतउ धरिउ सइं भुयहिं जक्खिइ विरभवजणणिइ ॥ १० ॥

11

वइसारिउ सोवण्णसिलायलि भणिउं णिसुणि हुई जक्खहुं कुलि ।
हउं तुह मायं पुत्त पोमावइ पुव्वजम्मि होंती पाडलगइ ।
एम्व चवेप्पिणु णेहपयासें बालु पसाहिउ करसंफासें ।
भुक्खतण्हणिद्दालसु णट्ठउ तणउ पवुत्तु ताइ संतुट्ठउ ।
फुरियविविहमणिकिरणणिरंतरि पइसहि गिरिगुहविवरब्भंतरि ।
तं णिसुणिवि सो तेत्थु पइट्ठउ तावेत्तहि संगामि पणट्ठउ ।
धूमवेउ मज्जियसरजालहि विज्जाछेउ करंतिहि बालहि ।
पुणु उप्पण्णु वियप्पु विहीसरु जिह देविइ उद्धरिउ णिहीसरु ।
गय णियवासहु वीणालाविणि एत्तहि राउ रायचूडामणि ।

घत्ता--पइसंतु विसंठुलि विवरवहि सलिलमहाद्दहि पडियउ ॥
तहिं जंतु तरंतु सिलामयहु खंभहु उप्परि चडियउ ॥ ११ ॥

६ MB परतिय°. ७ MB जहिं. ८ MB रभ जइ वि. ९ M सयभुयहिं, B सयंभुवहिं.

11. १ MB पुत्त माय २ B °णिद्द°. ३ B पइट्ठउ. ४ B धूमकेउ. ५ MB °महद्दहि. ६ MB तुरंतु. ७ T विसंकलि.

---

6 *a* °दुण्णय° दोषः अपकारो वा.

11. 2 *a* पोमावइ पद्मावती नाम यक्षिणीजातिः; *b* पुव्वजम्मि सत्यवतीजन्मनि. 8 *a* विहीसरु दैवी वाणी. 10 विसठुलि निम्नोन्नते.

12

तावत्थइरि सूरु संपत्तउ णं दिणराएं झेंदुउ घित्तउ ।
सहइ जंतु वरुणासालाणिहि मणि व पडंतु महण्णवखाणिहि ।
कुंकुमकुसुमामेलु व रत्तउ णं चउपहर रुहिररसलित्तउ ।
णं णवदलु णहरुक्खहु लहसियउ रत्तहलु व [1]दिसंतरुणिइ डसियउ ।
भाणुबिंबु किरणावलिजडियउ उग्गत्तेण अहो[2]गइवडियउ ।
मंदतमालणीलि पसरियतमि तहिं विवरंतरि रयणिसमागमि ।
णक्कचक्कभयपसरविसण्णउं णीलसि[3]लोयलखंभि णिसण्णउं ।
सिरिअरहंतसिद्धआयरियहुं उज्झायहुं साहुहुं कयकिरियहुं ।
पंचहुं संचियसम्मयदिट्ठिहिं सुयरइ पहुचरणइं परमेट्ठिहिं ।
घत्ता—असियाउसाइं पंचक्खरइं झायंतहु साणंदइं ॥
चोरारिमारिमिहिपाणियइं उवसमंति [4]मृगवंदइं ॥ १२ ॥

13

ताम [1]पहाइ कालि रवि उग्गउ णं महिउयरहु वियारिवि णिग्गउ ।
णीरु तरेप्पिणु तेण तुरंतें तीरि परिट्ठिय तहिं जि भमंतें ।
राएं णयणाणंदजणेरी दिट्ठी पडिम जिणिंदहु केरी ।
णिव्वियार णिग्गंथ मणोहर पहरणवज्जिय ओलंबियकर ।
लक्खणलक्खुवलक्खियदेही हउं सा भणमि अहिंसा जेही ।
हउं सा भणमि कुहिणि अ[2]पवग्गहु कढिणभुयग्गल णारयमग्गहु ।
सा णाहिं सरसलिलहिं सिंचियँ[3] वियसियधवलहिं कमलहिं अंचिय ।
पुणु[4] जिणतणुसिरि संथुय भत्तिइ सव्वभूयगणविरइयमेत्तिइ ।
[5]मइपसत्थहत्थगुणराइय ताम तहिं जि जक्खिणि [6]संपाइय ।
घत्ता—संभासिवि णिहिलणिहीसरिइ हरिसुप्फुल्लियणेत्तउ ॥
[7]वइसारिवि पट्टि पयाहिवइ मंगलकलसहिं सित्तउ ॥ १३ ॥

12. १ MB दिसतरुणिइ. २ MB °गइपडियउ. ३ MB °सिलायलि. ४ MB मिग°,
13. १ MBK पहायकालि २ MB अववग्गहु. ३ MB संचिय. ४ B omits this line. ५ B omits this foot. ६ MB सपाइय. ७ T आहिसारिवि.

12. 3 *a* कुंकुमकुसुमामेलु व कुङ्कुमकेसरसंघात इव. 7 *a* णक्कचक्क° जलचरसंघातः.
13. 11 वइसारिवि प्रतिष्ठाप्य.

14

भूसणपरिहाणाइं रवण्णइं छत्तदंडरयणइं तहु दिण्णइं ।
गयणगमण पाउयजुयलुल्लउ दिण्णउ अण्णु वि जं जं भल्लउ ।
ताम तहिं जि परिभमिवि समायइ रयकारणसंभूयकसायइ ।
खेंयरिइ सहरिणीइ पहु जोइउ पाहाणोहु णहाउ णिवाइउ ।
सो पडंतु सयलु वि णिद्दलियउ दिव्वछत्तरयणें पडिखलियउ ।
पुप्फयंतफणिफुक्कारियसरि मइं ण रमंतु मरउ विवरंतरि ।
एम भणिवि ताए वित्थिण्णी सेलगुहादुवारि सिल दिण्णी ।
णवर चंडदंडें सा खंडिय कुवलयवइणा कणु कणु खंडिय ।

घत्ता--उग्घाडिवि दारु णराहिवइ पाउयजुयलें गच्छइ ॥
णाहि अंतु पुंडरिंकिणिणियडि सुरमहिहरवणु पेक्खइ ॥ १४ ॥

15

पेच्छइ खंधावारु विमुक्कउ सत्तमु दिवसु अज्जु सो ढुक्कउ ।
माइ तुहारउ लहुउ थणद्धउ मणुयवेसु णावइ मयरद्धउ ।
तिजगबंधु महु बंधउ णाइउ एम भणिवि जलहरवहु जोइउ ।
वसुवालेण भणिउं किं ससहरु णं णं छत्तु एउ णं णिसिहरु ।
किं दीसइ णवसंझाजलहरु पक्खि को वि णं णं णिच्छउ णरु ।
सोदामिणि णं णं दंडासणि तारावलि णं णं भूसणमणि ।
एम वियप्पिवि रायं वुत्तउ एइ सहोयरु एहु णिरुत्तउ ।
इय पलवंतहु तहिं जि पराइउ विहिणा सोक्खपुंजु णं ढोइउ ।
सुहिपरियणु हरिसें रोमंचिउ तं णउ माणसु जं णउ णच्चिउ ।

14. १ M °परिहाणइं बहुवण्णइं, B °परिहाणइं वरवण्णइ २ MB अवरु. ३ MB रइकारण° ४ MB खयरिइ सइरिणियइ. ५ MB णिवायउ.

15. १ MB मयणवेसु. २ MB णावइ. ३ MB जोयइ. ४ MBK णउ ससिहरु. ५ MBK सीसइ. ६ MB ढोइयउ.

---

14. 3. *a* समायइ समागतया; *b* रइकारण° रतिसुखकार्ये. 6 *a* °सरि शब्दे.

15. 2 *a* थणद्धउ पुत्रः.

पणविउ पहु णिलयणु णिव तायहु जगतायहु पच्चक्खविहायहु ।
तेहिं बिहिं वि तेण जिणु पेच्छिवि भवसंसरणावत्थ दुगुंछिवि ।

घत्ता—सिरिवालें गुरुगुणवालु तहिं मउडचडावियहत्थें ॥
वंदिउ परमेसरु परममुणि परमप्पउ परमत्थें ॥ १५ ॥

16

जेण विणासिवि घल्लिउ ईसरु पुच्छिउ देविइ सो जोईसरु ।
पुत्तु महारउ केण विहसिउ चंदु व पवरपहाइ पयासिउ ।
पभणइ जिणु गयजम्मि किसोयरि पयहु हुयमेत्तहु मुय मायरि ।
हुई काणणि जक्खसुरेसरि बहुविब्भमविलास णं सुरसरि ।
जाणवि णंदणु अप्पणु देहें ताइ एहु पुज्जिउ बहुणेहें ।
आय मुहावइ कहिउ कुमारें एयइ रक्खिउ हउं बलसारें ।
विज्जाहरहं पयासियवसणहं मायावियहं अणेयहं पिसुणहं ।
एह मज्झु हुई विहडंतहु लग्गणवल्लरि अवडि पडंतहु ।
एह मज्झु हुई चिंतामणि कामधेणु कप्पदुमगोमिणि ।
एह मज्झु संजीवणि ओसहि विहुरसमुद्दणाव णिरु पियसहि ।

घत्ता—हउं एयइ रक्खिउ सुंदरिइ एयहि जीउ वि दिज्जइ ॥
जसु पुत्तु कलत्तु ण मित्तु सुहि सो दुहसलिले मज्जइ ॥ १६ ॥

17

पइं लद्धु महु उग्गयमुहरायउ माइ माइ मेलावउ जायउ ।
जं तं एयहि तणउं विजंभिउ एयहि परबलु बालिण णिसुंभिउ ।
तं णिसुणिवि विणएं पणयंगिय भासुयाइ कुलवहु आलिंगिय ।

७ MB णिउ णिलयणु. ८ MB तेण वि. ९ MB °संसारावत्थ.

16. १ MB चिरु णेहें. २ MB दुहसलिलि णिमज्जइ.

17. १ G सुहु. २ MB वियभिउ. ३ B पवलबलेण.

10 *a* णिलयणु समवसरणम्, *b* °विहायहु विधातुः. प्राणिनां वाञ्छितफलप्रदस्य. 11 *a* बिहिं वि कुबेरश्री-वसुपालाभ्याम्; तेण श्रीपालेन.

16. 1 *a* ईसरु अस्य विष्णोरपत्य ई कामस्तस्य सरु बाण. 3 *b* हुयमेत्तहु जातमात्रस्य. 8 *b* अवडि कूपे.

17. 2 *a* विजंभउ विजृम्भितं चेष्टितम्.

पुत्ति पुत्ति पइं काइं पसंसमि सिहिसिह किं रविपडिमहि दंसमि।
चक्कवट्टिलक्खणसंपुण्णउ पुत्तु महारउ पइं महु दिण्णउ।
तुहुं जि एक्क महु आसाऊरी तुहुं संगरि सुरहं वि सूरी।
जुवईमहउ हलि कहिं तेरउ कहिं पोरिसु परवीरवियारउ।
तुह केरउ जियकरिकुंभत्थलु घणुगुणछणियउं जयउ थणत्थलु।
महु तणयहु वम्महपासा इव तुह भुय रिउहुं कालपासा इव।
पभणइ कण्ण पुण्णसामत्थें गिरि चुउ धरिउ घणेसरिहत्थें।
सूलें भिण्णु ण भिज्जइ अंगउ जहिं तुह सुउ तहिं सयलु वि चंगउ।
पुणु कुबेरलच्छिइ परिपुच्छिउ कहउं भवि सुय तहिं कम्में णियच्छिउ।
घत्ता—ता कहइ महामुणि राणियहे घोरवीरु तवु तत्तउ॥
चिरभवि दोहिं वि तुह तणुरुहहिं अणसणु किउ जिणवुत्तउ॥ १७॥

18

सग्गम्मिहरि सुरवरसिरि भुंजिवि जिणपडिबिंबहु पुज्ज पउंजिवि।
दिव्वु देहु मेल्लेप्पिणु आया ए बिण्णि वि तुह सुय संजाया।
वसुवालहु सिरिवालहि केरी पुण्णपवित्ति गरुयसुहगारी।
मुणि वंदिवि सयलइं संतुट्ठइं उच्छवेण णियणयरु पइट्ठइं।
पुज्जिवि पत्तावलिविण्णासहिं चेलियरयणाहरणविसेसहिं।
मुक्क सुहावइ पियथम मायइ धणुधारिणि सम पाउसछायइ।
गय सुंदरि णियमंदिरु जामहिं वसुवालहु विवाहु कउ तामहिं।
करपल्लवि लग्गउ रइजुत्तिहिं अट्ठोत्तरु सउ णरवइपुत्तिहिं।
घत्ता—पुणु कहइ सुलोयण णियचरिउ लइ परिपुरिसपरंमुह॥
भरहाहिवभिच्चहु घणरवहु पुप्फयंतमोहियमुह॥ १८॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे पहुसिरिपालसंगमो णाम
पंचतीसमो परिच्छेओ समत्तो॥ ३५॥
॥ संधि॥ ३५॥

४ MB देसमि. ५ M °सपण्णउ. ६ MB महु पइ. ७ B सूरह. ८ MB घणेसर°. ९ B सूलिण. १० MB कम्मु. ११ M घोरु वीर तव; B घोरवीर तव.

18. १ MB दिव्वदेहु. २ M परंमुहं; B परंमुहहो. ३ M °मुहं; B °मुहहो. ४ MB °सिरिवाल°.

18. 5 *b* चेलिय फाली (?).

XXXVI

छ वि लेप्पिणु कण्णउ वरतणुवण्णउ खगहु अकंपहु सा सुय ॥
सत्तमदिणि सुहमइ पत्त सुहोवइ णविय ताइ सइं सासुय ॥ ध्रुवकं ॥

1

भासिउं भद्दइ गुणजुत्तियउ पयँउ तुह सुय कुलउत्तियउ ।
होहिंति भणिवि मृगणेत्तियउ तडिवेएं गहणि णिहित्तियउ ।
संमाणहि मइं संमाणियउ एवहि तुह मंदिरु आणियउ ।
ता लच्छिइ ताउ पसाहियउ णवमालइमालावाहियउ ।
पुव्वं चिय तत्थु पैरिट्ठियहिं भूगोयरेहिं उँक्कंठियहिं ।
हयदइवें कहिं वि विओइयउ मायापियँरेहिं वि जोइयउ ।
पहिलारउ परिणिय सेट्ठिसुय जसवइ णामें जसकंतिजुय ।
अण्णु अवरउ थोरथंद्धथणिउ रइकंताइयउ सुहासिणिउ ।
विरहग्गितावणीवावणउं अट्ठहिं तरुणिहिं सहुं मेलणउं ।
दिट्ठउ करंतु सो पूंउ ललिउ गुँत्तिहिं समिइहिं णं जिणु मिलिउ ।

घत्ता—जोएवि सवत्तिहि मुँहु वणिउत्तिहि णीसँसेवि दुहहणणहु ॥
ईसावसकुद्धइ तक्खणि मुद्धइ आसंधिउ घरु जणणहु ॥ १ ॥

M has, at the commencement of this Samdhi, the following couplet in the margin:—

पुप्फयंतदिण्णउं धणुहुं सरु दिण्णउ सरु सत्ति ।
मारिउ मिच्छमयाहिवइ गुणु पुणु तिहुयणाकित्ति ॥ १ ॥

BGK do not give it.

1. १ K सत्तमे दिणे. २ B सुहामइ. ३ M एयहि. ४ MB मिग°. ५ MB परिट्ठियउ. ६ MB उक्कठियउ. ७ MB पियरहिं विच्छोइयउ. ८ MBK पुणु. ९ MB °थद्धु°. १० MB पिउ. ११ MB गुत्ती-समिइहिं. १२ B महु. १३ M णीसेसवि.

1. 1 छ षट्कन्याः; सा सुय सा प्रसिद्धा पुत्री. 6 *a* लच्छिइ कुबेरश्रिया. 8 *a* विओइयउ वियोगं प्रापिताः. 10 *b* सुहासिणिउ शोभनवचनाः. 11 *a* °णीवावणउं विध्यापनम्.

2

सुहवइयहि तायहु वज्जरिउ भूगोयरभूगोयरचरिउ।
मण्णंति ण अम्हइं खेयरइं अणुरत्तइं गुणविहियायरइं।
मेरउ मेल्लिवि रिउ जीवहरु पहिलउ जि किराडिहि धरिउ करु।
अविसेसविवाहें किं करमि वर णिच्चलु कण्णावउ धरमि।
णउ अण्णणारिरयरंजियहु आलिंगणु देवि[5] तासु प्रियहु।
पडिलवइ जणणु मुइ कलमलउ विडु होइ सहावें चंचलउ।
अण्णण्णहिं कुसुमहिं दिणु गमइ किं एक्कहि वेल्लिहि अलि रमइ।
एत्थंतरि सिरिवालें णयरि मग्गिय मृगलोयण घरि जि घरि।
णालोयंतें पुणु जाणियउं हा पूयमाणुसु अवमाणियउं।
अंइ लज्जिवि णियभवणहु गयउ किं जंतु जंतु वि विरहें मयउ।
इय चिंतिवि णहयरु एक्कु णरु पेसिउ लहु लेलिएं लेहधरु।
संपत्तउ गेहु[13] अकंपणहु जिणचरणभत्तिभावियमणहु।

घत्ता—लेहें सहुं पाहुडु ढोइवि खगभडु पडिउ खगिंदहु पायहिं॥
तुहुं मण्णिउ सज्जणु विणिहयदुज्जणु वसुसिरिवालहिं रायहिं॥ २॥

3

तेण वि णियहत्थि णिवेइयउ आलिहियउ पत्तु पलोइयउ।
तं सोहइ वण्णहं पंतियहिं अलवंतीहिं वि पलवंतियहिं।
कंचुइवइणाइ सुणेवि सइ जं परिणिय वणिवरतणय मइ।
तं[3] पालिय कुलपरिहा सकुलि मणु पुणु तुह पुत्तिहि मुहकमलि।

2. १ K °वइयइ. २ MB °भूगोयरि°; GK add second °भूगोयर° in the margin; T भूगोयरचरिउ. ३ M वरु. ४ G करउ. ५ MB देमि ण तासु. ६ MB पियहु, K पूयहु. ७ M विड ८ MB मिगलोयणि, ९ MB पिय°. १० MBK लइ. ११ जणु जंतु वि. १२ M ललियं. १३ MB लेहु. १४ B °भावियरणहु.

3. १ MB साहइ. २ MB वयणाइ. ३ MB ता. ४ MB हासमले.

---

2. 1 *b* भूगोयर° वसुपालादयः; भूगोयरचरिउ भूगोचरेषु यशस्वत्यादिषु विषयेषु चेष्टितं आचारं मन्यन्ते. 6 *a* मुइ मुञ्च; कलमलउ ईर्ष्याजनितखेदम्. 11 *b* ललिएं श्रीपालेन.

3. 2 *b* अलवंतीहि वि पलवंतियहिं स्वयमब्रुवाणाभिरपि अर्थप्रतिपादनद्वारेण ब्रुवाणाभिः. 4 *a* कुलपरिहा कुलपरिखा कुलमर्यादा, सकुलि स्वकुले.

चंपयकुसुमावलिगोरियहि संभरेमि सुयाहि तुहारियहि ।
जिह कढिणँ थणत्थलु तिह पहरुँ जिह रत्त रत्तरणु तिह अहरु ।
कण्णंतु समागय णयण जिह परमारणसीला बाण तिह ।
जिह मज्झु खीणु तिह विरहियणु जिह घणु गुणमंडिउ तिह जि तणु ।
अणणंकासणइ णिसण्णियइ कण्णियइ कुसुमसंरछण्णियइ ।
तं णिसुणिवि णिब्भरु चिंतियउ महु णाहें माणु णियत्तियउ ।
तहिं पिउणा तं जि पबोल्लियउँ हयगमणभेरिबलु चल्लियउँ ।
ताएण समउ गय कुमरि तहिं णिवसइ सूहउ वरइत्तु जहिं ।

घत्ता—संपत्तु अकंपणु सकरि ससंदणु पेच्छिवि छण्णु णहंगणु ॥
गय बिण्णि वि सायर संमुह भायर मग्गमाण आलिंगणु ॥ ३ ॥

4

घरि आसीणाइं सणेहदय लहु अब्भागयपडिवत्ति कय ।
हेट्ठामुह वहु वरेण भणिय किं हुई तुहुं मलिणाणणिय ।
घणु सोहइ एक्कइ विज्जुलइ वणु सोहइ एक्कइ कोइलइ ।
इह सोहमि हउं एक्काइ पइं गुरुवयणु करेवउ ता वि मइं ।
मा रूसहि सज्जणवच्छलिइ अलिणीलकुडिलमउकोंतलिइ ।
तं वयणें रोसणियत्तणउं जायउं तहि रम्मु पेम्मु घणउं ।
वप्पिल संप्राइय रमणवसा तडिरयतडिवेयहु तणिय ससा ।
चलणयणजुयलणिज्जियहरिणि रइकंता मयणवई तरुणि ।
पंचट्ठसहासइं राणियहं परिणियइं तेण खयराणियहं ।
पुणु पच्छइ णिरुवमभोयवइ खगवइसुय णामें भोयवइ ।

५ MB read for this foot: लडहंगहि मुणिमणचोरियहि. ६ M कढिणु. ७ B adds after this: महु आवइसयइं णिवारियइं, सभरमि सुयाहि तुहारियाइ. ८ B रत्तु रत्तरणु. ९ M °सीहा. १० M °सरसं-णियइ; B °सरकण्णियइ; T °कण्णियइ. ११ B adds after this: णियपुत्तिहि मणु णीसल्लियउ. १२ MB add after this: तहु सद्दें तिहुयणु हल्लियउ. १३ MK आलिंगिणु.

4. १ G रोसु. २ MB संपाइउ. ३ MB °वस. ४ MB सस. ५ MB चउवट्ठ°. ६ MB राणियाहं. ७ MB °राणियाहं. ८ B पुच्छइ.

9 *b* कण्णियइ कन्यकया; °छण्णियइ भक्तिविशेषेण.

घत्ता—सेणावइगहवइहयगयतियमइथवइपुरोहियजुत्तइं ॥
सज्जीवइं रयणइं रंजियणयणइं सत्त तासु संपण्णइं ॥ ४ ॥

5

रोसेण सुहावइ हुंकरइ ईसाइ ण पियपुरि पइसरइ।
सुरमणिणयवणियवणसिरिहि थिय भवणु रएप्पिणु सुरगिरिहि।
घरदासिहिं जसवइरूवु किउ अण्णेक्कइ रायहु विण्णविउ।
परमेसर वणिसुय परिहविय घरलंजियवेसें घरि थविय।
तं णिसुणिवि णरवइ संचलिउ हरिखुरधूलीरउ णहि मिलिउ।
पइभत्तिहि झत्ति महासइहि संपत्तु णिवासु सुहावइहि।
प्रियवयणहिं तिह तिह जंपियउ जिह जिह मणु मुद्धहि कंपियउ।
ईसालुय पइणा उवसमिय जाइवि वणिनणय ताइ णविय।
विज्जाहरि विक्कमहरिहरिहि थिय सा वि पुंडरिकिणिपुरिहि।
पहरणसालहि सुहलियतवहु उप्पण्णउं चक्कु णराहिवहु।
णवणिहिवइ जायउ चक्कवइ किं वण्णइ अम्हारिसु कुकइ।

घत्ता—तलिमयलि रवण्णइ ससहरवण्णइ पडियज्जिवि पक्कासणु ॥
जसवइयइ राएं सहुं सपमाएं किउ सुहदुहसंभासणु ॥ ५ ॥

6

अरि असणिवेउ चिरु मच्छरिउ मायाहएण हउं अवहरिउ।
घल्लिउ तहि रययायलि विउलि हिंडिउ तहिं काणणि गिरिगुहिलि।
गइलंघियणहयलजलहरहं दिट्ठइं कवडइं विज्जाहरहं।

९ MB गिह°. १० MB संपत्तइं.

5. १ MB °रूउ. २ MB पइभत्तिहि. ३ MB पिय°. ४ B ईसालुद्ध. ५ MB जसवइ महिराएं. ६ MB सुहडइ संभासणु.

6. १ MB रययालिइ तहि. २ MB °थलयरह.

---

8. 11 °तियमइ° स्त्रीरत्नम्.

5. 9 *a* विक्कमहरिहरिहि इन्द्रस्य सामर्थ्यस्फेटिका 10 *a* सुहलियतवहु पूर्वभवोपार्जितं शोभनफलितं तपो यस्य.

6. 2 *b* गिरिगुहिलि गिरिभिर्लघुपर्वतैः निबिडे.

मइं रइयइं पसरियअमरिसइं   अवलोइवि णाणासाहसइं ।
चलकरयलल्लुलिय[3]सूलमुसल   आरुट्ठ दुट्ठ दप्पिट्ठ खल ।
उद्दहणपयंडपलय[4]पिहिर   रिउ विज्जुमालि हरिवर खयर ।
दूसासण[5] दुम्मुह कालमुह   हरिवाहणधूमवेयपमुह ।
ए पिसुणियपिसुण मयच्छि महुं   ता चवइ कंत कंतेण सहुं ।
कीरइ रिउबलमयणिम्म[6]हणु   तुप्पेण समइ किं दवदहणु ।
उवसमइ खमाइ ण खलहियउं   असिधावहिं आम ण कलहियउं ।

घत्ता—पुरिसेण महंतें एत्थु जियंतें जेण दीणु ण भरिज्जइ ॥
णंदंति ण सज्जण जंति ण दुज्जण खयहु तेण किं किज्जइ ॥ ६ ॥

7

महएविइ कज्जु णियच्छियउं   इय एहउ राएं इंछियउं[1] ।
भोयवइहि बंधवुं[2] कुलधवलु   णामें हरिकेउ विसालबलु ।
अहिसिंचिवि पट्टणिबंधु कउ   सेणावइ खगवइ होवि[3] गउ ।
रणि जिणिवि णिबंधिवि सत्तु तिणा   आणिय णं विसहर पवरविणा ।
सो तुरयारूढउ दंडकरु   पणवंतु पलोइउ णिवेण णरु ।
बहलंसुजलोल्लियणेत्तियहिं   विलवंतिहिं खेयरपुत्तियहिं ।
णियणाहहु दीणवयणु लविउ   बहिणिहिं बंधवउलु मेल्लविउ[4] ।
सयल वि ते परिवड्डियकिवहु   चरणारविंद[5] णिवडिय णिवहु ।
राएं कारुण्णु ताहं करिवि   पेसिय देसहु अब्भुद्धरिवि ।

घत्ता—महियलु पालिज्जइ[6] मग्गिउ दिज्जइ पणविज्जइ जिणयंदहु[7] ॥
पयवडिउ ण हम्मइ मग्गें गम्मइ एउ चरित्तु णरिंदहु ॥ ७ ॥

३ MBK °तुलिय°. ४ MK पलयमिहिर; B मलयमिहर, G पलयपिहिर but originally पलयमिहिर which is corrected to पिहिर by yellow pigment. ५ MB दूसह. ६ MB निम्महणु.

7. १ B पुच्छियउ. २ MB बंधउ. ३ MB होइ. ४ MB मेलाविउ ५ MB चरणारविंदु. ६ B पाविज्जइ. ७ MB जिणइंदहु.

---

7. 4. *b* पवरविणा प्रवरथासौ विश्व गरुडस्तेन.

8

चउरासीलक्खइं कुंजराहं तेत्तिय[1] सहसइं रहवराहं[2] ।
छण्णवइ सहासइं[3] राणियाहं बत्तीस णिवइं[4] संताणियहं ।
सोलहसहसइं[5] सिद्धहं सुरहं[6] आणायराहं पंजलियराहं ।
घरि चोद्दह रयणइं णव वि णिहि महि पयछत्त अणुकूलवहि[7] ।
सिरिवालहु पुण्णु[8] पवित्थरिउं जणु वण्णइ पुव्वभवायरिउं ।
जं णयरायरउप्पण्णु धणु तं जसवइ पइसारइ भवणु ।
ता सकलुसु चविउ सुहावइए लुद्धइ संचियउ जसोवइए ।
वसु पउ वि ण बज्झइ मरणविहे एक्केण जि भीसणि पेयवणे ।
डज्झेवउं सहुं बिहिं कप्पडेहिं[9] किं पुत्तकलत्तहिं लंपडेहिं[10] ।

घत्ता—ता मंतिं[11] भासिउं गुज्झु पयासिउं एवमाइ मा भासहि ॥
जसवइयहि केरी तिहुयणसारी सीलवित्ति मा दूसहि ॥ ८ ॥

9

जसवइ[1]कुच्छिहि जिणु संभविही जसवइयहि होही परमविही ।
जसवइयहि जसु महियलि भमिही जसवइयहि पेय[2] इंदु वि णविही ।
परियाणिवि दिव्वमुणिंदु[3] मुणि छम्मासहिं होही एत्थु गुणि ।
देविउ पेसणसंभाइयउ सिरिहिरिदिहिकित्तिउ आइयउ ।
वसुहार पडिय घरंगणइ[4] सुर मिलिय अणेय णहंगणइ ।
हरि करि रवि जलणरासि अलिय दिट्ठी सोलह सिविणावलिय ।
थिउ वंद[5]पुरंदरथुयचलणु जिणु देविहि देहइ कयकलुणु ।
सा सुंदरि णविय सुरासुरहिं[6] भावणवेंतरहिं सविसहरहिं[7] ।

8. १ M तेत्तियइं जि लक्खइ संदणाह; B omits this foot; K तेत्तियइं सहासइं रहवराहं. २ MB add after this: तहु अत्थि सुट्ठु संदणवराहं. ३ B सहस. ४ MB सहस सताणियाहं. ५ B °सहासइं. ६ MB सुराहं. ७ MB अणुकूलविहि; K °वहि but corrects it to विहि. ८ MB पुण्ण. ९ MBK कप्पडहिं. १० MBK लंपडहिं ११ MB मंतिहिं.

9. १MB जसवइहि कुच्छि. २ MB पयइं वि इदु णविही. ३ MBT °मुणिंद°. ४ MB घरपंगणइ. ५ MBK चंद°. ६ MB सुरासुरेहिं. ७ MB सविसहरेहिं.

---

8. 4 *b* अणुकूलवहि अनुकूलपथे, अनुकूलेत्यर्थः.

9. 4 *a* पेसणसंभाइयउ प्रेषणेन आज्ञादानेन संमानिताः.

तहिं अवसरि माणमरट्टु चुउ मणि धम्माणंदु अणंतु हुउ ।
आवेप्पिणु णिम्मच्छरमइइ जसवइ सइं णविय सुहावहइ ।
दिसि कवण सुरासहि अणुहरइ किं अवरहि रवि उग्गउं करइ ।
का पुज्ज णारि पइं माइ विणु अण्णाइ उयरि किं धरिउ जिणु ।

घत्ता—अमुणियसंबंधइ चिरु रोसंधइ फरुसक्खरु जं जंपियउं ॥
तं अमरपियारिइ खमहि भडारिइ मइं बालइ दुक्किउ कियउ ॥ ९ ॥

10

णामेण विलासिणि रंगसिरि अकमलकरि णं सयमेव सिरि ।
गच्छंति पलोइय वणियइणा पहि जंति भणिय वड्डियरइणा ।
मुहयंदुज्जोइयसयलदिस किं णच्चहि वच्चहि पुलयवस ।
ता कहिउ ताइ वणिणाह लहु देवीपयफासें णट्ठु महु ।
बारहवारिसियउ खासु किह जिणदंसणेण जणदुरिउ जिह ।
पुट्ठउ णं अमिएं सिंचियउ तेणंगु मज्झु रोमंचियउ ।
जसवइपयगलियजलेण जरु णासइ गहभूयपिसायडरु ।
सा धूमवेय वइरिणि खगइ अवर वि गुरुहार जाय जुवइ ।
जुवराय हवेसइ पोट्टि तहि जुयरायपट्टु बद्धउ अणहि ।
तो जणणिइ जणियउ तित्थयरु भइयइ थरहरियउ पंचसरु ।
उत्तारिउ धणु लिहक्कविय सर जिणजम्माणि कम्महु णत्थि धर ।
णिउ मेरुहि नियसहिं जिणधवलु जाणमि सिवसिरिकण्णहि धवलु ।

घत्ता—सइं ण्हवइ पुरंदरु आसणु मंदरु कायकोडु रयणायरु ॥
जहिं ण्हाइ जिणेसरु तं ण्हवणउं णरु कहइ को वि जइणायरु ॥ १० ॥

८ MB दिसि कम्वण. ९ MB मुएवि अण्णु. १० MB जंपिउ. ११ MB अरुह°. १२ MR किउ.

10. १ M महि इदुज्जोइय°; BK मुहइंदुज्जोइय°. २ MB वच्चहि णच्चहि. ३ MB पयफंसें ४ MB बारहवरिसियउ वि. ५ MBK जुवराउ ६ MB °पट्टु. ७ K ता. ८ M सिर. ९ MBK कामहु. १० MB कायकुंडु.

10. 11 *b* धर रक्षा. 12 *b* सिवसिरि° मोक्षश्रीः; धवलु भर्ता. 14 जइणायरु गणधरदेवः, अथवा बृहस्पत्यादिकश्चतुरः.

11

भावणवेंतरकप्पाहिवहिं देवहिं इच्छियसासयसुहहिं ।
गुणवालु णाउं किउ जिणवइहि आणिवि अप्पियउ जसोवइहि ।
णवमासहिं अवरु महासइहि संभूयउ पुत्तु सुहावइहि ।
ससहोयरु भोयवईइ सहुं खयरहुं णियकेर समुद्दिसहुं ।
गउ णरवइ सणरु सकरि सरहु अरिवरहरिजूहहु णं सरहु ।
वेयड्ढमहीहरि संचरइ विज्जाहररायहं महि हरइ ।
साहिय फणि जक्ख वि किंणर वि तहु भइयइ कंपइ किं ण रवि ।
परमप्पउ हूयउ जासु घरि णिवसइ सिरि अवसें तासु करि ।
भुंजंतहु कामभोयसयइं लक्खाइं तीस पुव्वहुं गयइं ।
एक्कहिं दिणि जिणु णिव्वेइयउ लोयंतियएहिं संबोहियउ ।

घत्ता—तें ढोइवि णीसहं धणु णीसेसहं दुक्खायामियकायहं ॥
पच्छइ पडिवण्णउं गुणसंपुण्णउं सुचरिउं खीणकसायहं ॥ ११ ॥

12

चउतीसातिसयविसेसधरु संजायउ केवलि तित्थयरु ।
गुणवालु भडारउ गुणमहिउ विहरइ महियलि देवहिं सहिउ ।
संबोहियबहुभवियंबुरुहु जिणसूरु देउ महु मोक्खु लहु ।
दुयसीलक्खइं पुव्वहं सधर सिरिवालु वि भुंजिवि सयल धर ।
पप्फुल्लियबालकमलमुहहु सिरि पट्टु णिबंधिवि तणुरुहहु ।
परिचिंतिवि जम्मजरामरणु णियतणयजिणिंदहु गउ सरणु ।
सोलहसहासधरणीसरहं तें सहुं पव्वइय महासरहं ।
संसारघोरभारें लइउ वसुवालु णरिंदु वि पावइउ ।

11. १ MB °विंनर°. २ MB सासयसिवहि ३ MB णरवइ मकरि सहरि सरहु. ४ B भइएं. ५ M °सुहइं; B सहइ.

12; १ M गुणवाल. २ GK °यबुरहु but gloss कमलम्. ३ MB सोक्खु. ४ M सकेर. ५MBK पट्टु. ६ B पर चिंतिवि. ७ MB महीसरहं. ८ MB पव्वइउ.

---

11. 4 *b* णियकेर समुद्दिसहुं निजाज्ञां समुद्देष्टुम्. 11 णीसहं नि:स्वानाम्

12. 4 *a* सधर सपर्वता. 7 *b* महासरहं गम्भीरध्वनीनाम्.

सहुं पुत्तसहासें सो सहइ तं संजमु तं व्रउे को वहइ ।
देविहिं पंरमत्थवियाणियहं पण्णाससहासइं राणियहं ।
बुज्झियधम्मइं उज्झियरइए तवि संठिउं समउं सुहावइए ।

घत्ता—सा चरिउ चरेप्पिणु तेत्थु मरेप्पिणु सइं अमराहिवु हूई ॥
णासियदुक्कम्में जिणवरधम्में धावइ पुरउ विहूई ॥ १२ ॥

13

जहिं भुक्ख ण तण्ह ण णिद्दडिय णउ देह सत्तधाउहुं घडिय ।
जहिं मच्चु ण मिच्चु ण घरिणि घरु जहिं लोहु ण कोउ ण कामजरु ।
णउ माणु ण माय ण मोहु मउ जहिं केवलु जीउ जि णाणमउ ।
मणु इंदिय पंच वि णत्थि जहिं सिरिपालु वि गउ कालेण तहिं ।
वसुवालु वि गुणवालु वि परमु अरहंतु करउ महु रइविरमु ।
इय सुणिवि कहंतरु अप्पणउं घणरवेण दिण्णु आलिंगणउं ।
तूसेप्पिणु ताहि सुलोयणहि रायवलविरोल्लियलोयणहि ।
पुणु भणिउं देवि हियवइ धरंवि हउं खगजम्मंतरु संभरमि ।
तहिं अवसरि हरिसुद्धाइयउ जम्मंतरविज्जउ आइयउ ।
गंधारिगोरिपण्णत्तियउ गयणयलविहारपवित्तियउ ।
णियसोहाणिज्जियकमलसिरि तं पेक्खिवि भणइ पियंगुसिरि ।

घत्ता—हउं जाणउं भाविणि अइमायाविणि कैतहु चाडुयकारिणि ॥
अलियउ जि कहंतरु भवणेरंतरु कहइ दुट्ठ दुच्चारिणि ॥ १३ ॥

९ MB वउ. १० MB देवहिं परमत्थु वियाणियहं. ११ MB °सहस रायाणियहं. १२ MB संठिय. १३ MB अमराहिउ.

13; १ MB सिरिवालु गयउ. २ MB °विरोलिय°. ३ MB धरमि. ४ B वज्जिउ. ५ MB जाणमि. ६ MB भवणे णिरंतरु.

---

13 विहूई विभूतिः.

13. 13 °णेरंतरु अविच्छिन्नम्.

14

तुहुं देवि सुलोयणि अवयरिय हउं पोंवसवत्ति खारहं भरिय ।
पइं कहिउ कहंगु ण सहंहंवि लइ दिट्ठउ एवहिं किं रहंवि ।
रमणीयणसिरचूडामणिहिं णीसल्लु कयउ दोहिं वि जणिहिं ।
लहुभाइहि रज्जु समप्पियउं घणघोसें सहरिसु जंपियउं ।
हउं गच्छमि गयणे अज्जु तहिं जिणु बंभु सयंभु सइं वसइ जहिं ।
रयणालंकारहिं विच्छुरिउ विज्जाहरवेसु तेण धरिउ ।
जं होंतउ आसि पहावइहि तं रूवु धरेप्पिणु णियवइहि ।
थिय पासि सुलोयण जलयकहि बिण्णि वि उल्ललियइं झत्ति णहि ।
जणु जोयइ उद्धदिट्ठि मुयइ असहंतु विओउ कलुणु रुयइ ।
अंतेउरु परियणु णीससइ बंधवयणु संभरंतु ससइ ।

घत्ता—उल्लंघियजलहरि सुरवरमहिहरि भद्दसालवणंतरि ॥
तं पइसइ वहुवरु चलकिसलयकरु जिणवरभवणब्भंतरि ॥ १४ ॥

15

बिण्णि वि वंदेप्पिणु जिणधवलु तं भद्दसालु सालसरलु ।
परिहरिवि ताइं उप्परि गयइं तेत्थाउ पंचजोयणसयइं ।
तहिं णंदणि पुज्जिवि चेइयउं वणि चउदिसु अकयणिकेइयउं ।
पुणरवि तिसट्ठिसहसइं उवरि जोयणहं चडेप्पिणु सुरसिहरि ।
वणु दिट्ठउ णामें सउमणसु करिदसणाहयतरुगलियरसु ।
पणवेवि तहिं मि जयतिजगुत्तमउ जिणवरपडिमाउ अकित्तिमउ ।
पुणु पंचतीससहसइं घणहं पंचसयालंकियजोयणहं ।

14. १ MB पावसत्ति. २ T कहग्गु. ३ MB सहहमि. ४ MB कहमि. ५ MB °सिरि. ६ MB संभु. ७ MB रूउ णिएप्पिणु.

15. १ B सालहिं सरलु. २ MB णंदणवणि पुज्जिवि. ३ MB चेइयइं. ४ MB °णिकेइयइं. ५ M पणवि तहिं मि जयजगुत्तमउ; B पणवेवि तेहिं वि तिजगुत्तमउ. ६ B वणहं.

14. 2 *a* कहंगु कथास्वरूपम्; *b* रहंवि गोपयामि. 9 *b* विओउ वियोगः.
15. 3 *b* अकयणिकेइयउ अकृत्रिमचैत्यालयाः. 7 *a* घणहं महाप्रमाणयोजनानाम्.

लंघिवि पंडुयवणि पइसरिवि अहिसेउ अरुहबिंबहं करिवि ।
जोइवि चूलिय मेरुहि तणिय चालीस जि जोयण परिगणिय ।
जोइय उत्तरकुरु देवकुरु अवलोइय दहविह कप्पतरु ।
छ वि कुलपव्वय चोद्दह णइउ दिट्ठउ बहुभूमिभेयगइउ ।

घत्ता—जहिं वसइ सगुणगणु णिरु णिरुवमतणु जंबुदेउ रंजियजणु ॥
जंबूतरु जोइउ रयणुज्जोइउ जंबूदीवहु लंछणु ॥ १५ ॥

16

तं जोयवि आयइं तुहिणइरि जहिं हूई सहि सिरिविब्भसिरि ।
तणुवलइय मणिमयभूसणिय सोहम्मसुरिंदविलासिणिय ।
जहिं जोयणमेत्तु अत्थि कमलु जंबूणयणिम्मियविमलदलु ।
जहिं सुरहं वि चोज्जुप्पायणइं णालु वि हवेइ दहजोयणइं ।
तवणीयविणिम्मिय णं णविय कण्णिय गव्वूइपरिट्ठविय ।
जहिं कोसपमाणु विमाणु तहे लच्छीदेविहि अरविंददहे ।
तं पेच्छिवि णहयलि चल्लियइं बिण्णि वि णियमणि गंजोल्लियइं ।
गंगासिंधूसिहरइं णिइवि तहिं तणउ सलिलु परिमलु पिइवि ।
सवरउलणिसेवियमेहलहो पुणु आयइं वेयड्ढायलहो ।
जयरूवणलिणलंपडि भमरि थिय पंथु णिरोहिवि तहिं खयरि ।
सा भणइ वसइ इह तुलियजगु गंधारिपिंगु णामेण खगु ।

घत्ता—हउं तहु केरी सुय णवकुवलयभुय पइं णियंति जणरामें ॥
गुणि मग्गणु संधिवि ठाणु णिबंधिवि विद्धी हियवइ कामें ॥ १६ ॥

७ MBK परिगणिय. ८ MB °भूमिभोय°. ९ MB जहि णिवसइ गुणगणु.

16. १ MB जबूणय°. २ MB वि पविमउ. ३ M तहि तणउ सुपविमलु जलु पिइवि, B नइ तणउ जि पविमलु जलु पिइवि. ४ M सुरवरउलसेविय°; B सुरणरउलसेविय°. ५ MB °लंपड. ६ B पियपथु. ७ MB गंधारपिंगु. ८ MB गुणमग्गणु.

---

16. 8 *b* जंबुण्णय° सुवर्णम्. 5 *b* गव्वूइ° कोशद्वयम्. 12 °रामें रमणीयेन.

17

णमिणहयरणाहहु गेहिणिय हउं जगि पसिद्ध तडिमालिणिय ।
विज्जासहाससंपयधरहं रणि दुज्जय हउं विज्जाहरहं ।
मइं इच्छहि सूहव अज्जु जइ तुह दुल्लहु काइं वि णत्थि तइ ।
तं णिसुणिवि भरहसेणाहिवइ भासइ तुहुं सुंदरि मूढमइ ।
ओसरु सरु पंथहु सइरिणिए किं जंपहि वोमविहारिणिए ।
महु जणणिसमाणी परघरिणि जो पइसिवि सक्कइ वइतरिणि ।
सो पइं सेवउ णिरु णिग्घिणउ हउं पुणु तुह होमि माइ तणउ ।
ता रूसिवि पिंगलकेसियउ अंसइइ रयणियरिउ पेसियउ ।
सिसुससिसंणिहदाढालियउ णवघणणीलंजणकालियउ ।
चलजीहापल्लवचयणियउ गुंजापुंजारुणणयणियउ ।
लंबियघोणसफणिमेहलउ किलिकिलिसद्दें कयकलयलउ ।

घत्ता—सुरधणुविण्णासहिं विज्जुविलासहिं थिरसरधारामेहहिं ॥
आढत्तु अणेयहिं पहरणभेयहिं भिण्णमहाभडदेहहिं ॥ १७ ॥

18

जयसीलविसुद्धि ण तेहिं हया हियएं जएण गुरुसंति कया ।
थिय णियमियचित्त सुलोयण वि जाणंति तो वि खललोय ण वि ।
तो तं झेंदुलियइ बुज्झियउ हा किं मइं णिप्फलु जुज्झियउ ।
जइ मंदरु णियठाणहु चलइ तो तुज्झु वि चित्तविचित्ति खलइ ।
मं रूसेज्जसु जं मइं दूमियउ विज्जउ पेसिवि आयामियउ ।
गय एम भणेप्पिणु गयणयरि अमरहिं पुज्जिउ अरिहरिणहरि ।

17. १ M दुज्जिय. २ MB पइसहुं ३ MB गेण्हउ. ४ M असइयइ रयणिइ रिउ पेसिउ; B असईए रयणियरउ पेसियउ. ५ K विज्जुसहासहिं.

18. १ MB हय. २ MB हियवइ. ३ MB कय.

17. 5 *a* ओसरु सरु पंथहु उत्सृज व्रज मार्गात्. 6 *b* पइसिवि प्रवेष्टुम्. 12 °सरधारा° बकधारा.

दुंदुहिसरु महुरु समुच्छलिउ रइपहु णामें सुरवरु मिलिउ ।
तेणुत्तउ इंदें पेसियउ मइं तुह सुंइभाउ गवेसियउ ।
आ पइं रोहिवि[5] थिय वणथणिय सा ण हवइ खेयरि सुरगणिय ।
तुह सीलु णिहालहुं पट्ठविय पइं णियजणणी विव चिंतविय ।

घत्ता—कुरुकुलणहयलससि णाणुब्भववसि कंपावियदसदिव्वइ ॥
चारित्तु तुहारउ भवभयहारउ भणु किर केण ण थुव्वइ ॥ १८ ॥

19

जो रुच्चइ सो तुहुं मग्गि वरु तं णिसुणिवि पभणइ णरु पवरु ।
वरु मग्गमि णाणपवित्तियरु वरु मग्गमि हउं संसारहरु ।
अवरें वरेण महुं कज्जु ण वि पुणु णिवडइ सुरवइ चंदु रवि ।
जहिं सोक्खु कयाइ[3] ण संचलइ जहिं कामहुयासु ण पज्जलइ ।
सो मोक्खु णिहेलणु जिणवरहो हउं तत्ति करेमि सुर तहु वरहो ।
ता वंदिवि जयरायहु चरिउ गउ अमरु अमरलोयहु तुरिउ ।
तं देवपसंसइ गइयउ वहुवरु केलासु पराइयउ ।
रीणउ गइ विरहवि णहयलइ आसीणउ रयणसिलायलइ ।
कणयमयकोणताडणखमहं ता णिसुंउ सद्दु सुरडिंडिमहं ।
सद्देण तेण आयड्ढियइं बिण्णि वि गयाइं महियड्ढियइं ।
सुरसरितरंगससियरसियइं जहिं भरहणराहिवणिम्मियइं ।

घत्ता—चामीयरघडियइं मणिगणजडियइं दिट्ठइं घरइं जिणेसरहं ॥
पयपणवियसीसहं तहिं चउवीसहं दिक्खादमियदुरासहं ॥ १९ ॥

४ MB जयभाउ. ५ B रोहिय. ६ MB चिंतविय. ७ MB दह°.

19. १ MB पवरणरु. २ M सहुं. ३ MB ण काइ वि. ४ MB हुयासणु पज्जलइ. ५ B करउं. ६ MB सुणिउ. ७ MB बिण्णि वि विगयाइं महड्ढियइं. ८ M जिणेसहं. ९ MB °पणमिय°.

18. 11 णाणुब्भववसि ज्ञानोद्भवानि इन्द्रियाणि तेषां वशी; °दिव्वइ दिक्पतीन्.

19. 9 *b* णिसुउ निःसृतः. 13 °सीसहं श्रीशानामिन्द्रादीनाम्; दिक्खादमियदुरासहं दीक्षया दमिता उपशमिता दुराशा भोगाद्याकांक्षा येस्तेषाम्.

20

रिसहं रिसिमग्गपयासयरं अजियं जियवम्महमुक्कसरं ।
संभवदेव संभवमहणं अहिणंदणमहिणंदियभुवणं ।
अदुगुंछियइच्छियमोक्खगइं[1] सुमइं[2] सुमइं वज्जियकुमइं[3] ।
पोमप्पहमवि[4] पोमाहरणं गयपासं णमह सुपासजिणं ।
चंदप्पहमहिहयचंदविहं सुविहिं सुविहिं[5] जसपुंजणिहं ।
सीयलवयणंभहयंगरुहं सीयलणाहं वंदे अरुहं ।
सेयंसं सेयपवित्तियरं[6] वासवपुज्जं तिहुयणपियरं ।
सिरिवासुपुज्जणामं णिरहं विमलं विमलं तवतावसहं ।
वंदे भयवंतमणंतमहं मणभमिरभूरिभीसणतमहं ।
धम्मं दहधम्मुवदेसयरं[7] पणमामि जिणं जाणियसवरं[8] ।
संतं[9] संतिं जगसंतियरं सोलहमं परमं तित्थयरं ।
कुंथुं कुंथुसुं[10] वि दयाविरयं[11] बहुगंथियगंथपंथविरयं[12] ।
पणमामि अरं संणिहियसमं अरमयलं[13] मूलियमोहदुमं ।
मल्लिं मल्लियदामंचियं मुणिसुव्वयमुणिरायं सुवयं ।
णिणमिय णमिणाहं जगसामिं गुणरहणेमिं वंदे णेमिं ।

20. १ MB मोक्खरयं. २ M सुमयं. ३ M कुमयं. ४ MB पोमप्पहं पवि. ५ K सुविहं. ६ MB °पवित्तयरं. ७ MB °धम्मपयासयरं. ८ MB कम्मट्ठगंठिणिण्णासयरं; T °मयरं °स्वपरम्. ९ M संतं. १० MB कुंथेसु दया°. ११ MB दयावहरं; K दयावरय. १२ MB °विहरं; T °विरयं. १३ MB अरमयलुम्मूलिय°; T °उम्मूलिय°.

---

20. 2 *a* संभवमहणं संसारविध्वंसकम्. 4 *a* पोमाहरणं पद्मायाः केवलज्ञानादिलक्ष्म्याः धारकम्; *b* गयपासं नष्टकर्मबन्धनम्. 5 *a* अहिहयचंदविहं आभिहता तिरस्कृता चन्द्रस्य विशिष्टा भा दीप्तिर्येन. 6 *a* सीयलेत्यादि—शीतलवचनाम्भसा हतः प्रक्षालितोऽङ्गरुहः शरीरजो रोगः कामो वा येन. 7 *a* सेयपवित्तियरं श्रेयो निर्वाणं पुण्यं वा तस्य प्रवृत्तिकरम्; *b* वासवपुज्जं इन्द्रपूज्यम्. 8 *b* विमलं विगतो द्रव्यभावस्वरूपः कर्ममलो यस्य. 9 *b* °तमहं ज्ञानदृगावरणघातकम्. 10 *b* जाणियसवर ज्ञातस्वपरम्. 12 *a* कुंथुसु अतिसूक्ष्मजीवेष्वपि. 12 *b* बहुगंथियगंथपंथविरयं ग्रन्थो बाह्याभ्यन्तरो मिथ्यात्वसुवर्णादिलक्षणो विद्यते येषां मिथ्यादृष्टीनां तेषां ग्रन्थाः शास्त्राणि तैरुपदिष्टाः पन्थानः स्वर्गापवर्गाद्युपायास्ते विरता विनष्टा यस्मात्, तेभ्यो वा विरतः उपरतः. 13 *a* संणिहियसमं सम्यग् निहितः स्थापितः स्वात्मनि भव्येषु च शमो रागाद्युपशमो येन; 14 *b* अरमित्यादि—अरमत्यर्थं अचलः केनचिदपि न चालयितुं शक्यः; मूलियमोहदुमं मूलितः उन्मूलितः मोहद्रुमो येन. 15 *a* णिणमिय नृभिश्चक्रवर्त्यादिभिर्नमितो नतः.

पासं पासासिक[14]राण हियं सत्तूण वि दरिसि[15]यधम्मसूयं ।
वंदे वयवड्डमाणणियमं सिरिवड्डमाणवीरं [16]चरमं ।

घत्ता—जिह भरहणरिंदें कुवलयचंदें वंदिय सयल जिणेसर ॥
तिह तें जयराएं समियकसाएं पुप्फयंत जोईसर ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जयसुलोयणातित्थवंदणं
णाम छत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३६ ॥
॥ संधि ॥ ३६ ॥

१४ B °करण°. १५ MB दरसियधम्मासिय. १६ MB चरिम.

16 *b* सत्तूणेत्यादि -शत्रूणामपि दर्शिता धर्माधर्मप्रतिपादनात् श्री विभूतिविशेषो येन. 17 *a* वयवड्डमाणणियमं व्रतैरुपलक्षिता वर्धमाना उत्तरोत्तरा नियमा नियतकालव्रतानि यस्य यस्माद्वा भव्यानां स तथोक्तः. 19 पुप्फयंतजोईसर पुष्पदन्ताश्च योगीश्वराश्च.

XXXVII

जयराएं रयणविणिम्मियइं पसरियकरणि[1]उरुंबइं ॥
ते[2]वीसहं जिणहं अ[3]णागयहं वंदियाइं पडिबिंबइं ॥ ध्रुवकं ॥

I

वंदइ सुं[4]दरि चेइयइं जाम तहिं अच्छिय मुणिवर बिण्णि ताम ।
ते तियसहिं गय सहुं समवसरणु जहिं णिसवइ रिसहु तिलोयसरणु ।
वहुवरइं णवेप्पिणु गुरुपयाइं मग्गेण तेण ताइं वि गयाइं ।
पत्तेहिं तेहिं दोहिं वि जणेहिं जिणदंसणवंदणकयमणेहिं ।
वरविजयवइजयंताइयाइं दारइं चत्तारि पलोइयाइं ।
तोरणइं माणमंदरणिसुंभ माणिक्ककरु[6]ज्जलमाणखं[7]भ ।
सरवरपविमलजलखाइयाउ पप्फुल्लियवेल्लिउ वेइयाउ ।
पायारु णडिंदणिहेलणाइं मुणिणाहघरइं सुरतरुवणाइं ।
जोयंतहिं जोयणमेत्तु दिट्ठु मणिमंडउ जहिं जगजणु णिविट्ठु ।
बत्तीस सुरिंद णरिं[8]दु एक्कु भरहेसरु बीयउ णाइ सक्कु ।
जोइसवइ आणिय चंदसूर सप्पुरिसमहापुरिसारिजूर ।
किंणरवइ दोण्णि महोरईस ते कायमहाकायंकभीस ।

घत्ता—किंपुरिसहं राणा बिण्णि जण कहिय पुरिस किंपुरि[9]से वि ॥
घरिणिहि सोमप्पहतणुरुहेण अवलोयवि ण[10]वंरविछवि ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णमर्जुनोपेतम् ।
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MB °णिउरुंबइं. २ MB तेत्रीसहं. ३ M अणागयहं. ४ B सुंदरु. ५ B omits this foot ६ G करुज्जलु. ७ MB °थंभ ८ MB णरिंद. ९ MB किंपुरिसा. १० M णवरच्छवि; B अवरविछवि.

1. 12 *a* बत्तीस सुरिंद तथाहि कल्पवासिनां द्वादश इन्द्राः, भवनवासिनां दश, व्यन्तराणामष्टौ, चन्द्रादित्यौ चेति.

2

गंधव्वहं पहु समविसमणाम रक्खसहं भीम अवंतभीम ।
जक्खिंद पुण्ण मणिभद्द भणिय भूयाहिव रूव विरूव भणिय ।
तहिं काल महाकाल वि पिसाय दाविय गेहिणिहि पिसायराय ।
बल वइरोयण दणुइंद कहिय णाइंद धरण फणिवइ ण रहिय ।
पइ वेणुणालि पुणु वेणुदेउ सोवण्णकुमारहं सोक्खहेउ ।
दीवहिं दीवंगउ दीवचक्खु उयहिहिं जलकंतु जलप्पहक्खु ।
अमियगइ अमियवाहण दिसेस हरि हरिकंत वि सोदामणीस ।
गज्जंत पंतिं अलिणीलदेह थणियाहिव मेह महंतमेह ।
अग्गिंव अग्गि हुयवहसिहाहं वेलंब पहंजण पवणणाहं ।
इय पेक्खिवि वीस वि भावणिंद धम्माहिणंद वंदिय मुणिंद ।

घत्ता—विंभयपूरियहियउल्लएण हरिसुप्फुल्लियवयणें ॥
जय जय पभणंतें जयणिवेण चउदिसु पेसियणयणें ॥ २ ॥

3

णाहेयपायणियडइ बइट्ठु पुणु वसहसेणु गणणाहु दिट्ठु ।
पुणु बीयउ गणहरु जइवरिंदु अवलोयउ कुंभु महारिसिंदु ।
दढरहु दिहिपरियरु सत्तुदमणु गणि देवसम्मु धणदेउ समणु ।
धम्माणंदणु हरिसणंदणक्खु जइ सोमयत्तु सुरदत्तु भिक्खु ।
गुणि वाउसम्मु झाणोवविट्ठु देवग्गि अग्गिदेउ वि वरिट्ठु ।
रिसि अग्गिगुत्तु अण्णेक्कु गोत्तु तेयंसिउ सत्तुंदुयासगुत्तु ।
हलहरु महिहरु माहिंदु धीरु वसुपउ वसुंधरु अचलु मेरु ।
विण्णाणवंतु विण्णायणेउ मुणि मयरकेउ हयमयरकेउ ।

2. १ MB मुणिय. २ MB णागिंद. ६ B हुलपहक्खु ४ MB एंत. ५ MB आग्गिवइ.

3. १ MB णिविट्ठु. २ MB जसयरिंदु. ३ MB सोमयत्त. ४ M मुणि वाउसम्मु; B मुणि वाउ समुज्झाणो°. ५ MB सिरि अग्गिगोत्तु ६ MB सत्त°. ७ MB अचल. ८ M मय°; B सय°.

---

2. 7 *a* दिसेस दिक्कुमाराः; *b* सोदामणीस विद्युत्कुमाराः.

थिरचित्तु पवित्तु धरित्तिगुत्तु सयलोसहिगुत्तु वि विजयगुत्तु ।
पुणु जण्णगुत्तु[9] पुणु सव्वगुत्तु पुणु सव्वत्थि[10] आयमि पउत्तु ।
पुणु विजयभडारउ विजयमित्तु विजइल सिरिअवराइउ णिरुत्तु ।
अवर वि परमेसर परमजोइ चउरासी गणहर एवमाइ ।

घत्ता—विहिणा लिहियाँ[11] इव भित्तियले झाणलीण मणधीरा ॥
जोइय जणें[12] जियजमकरणें[13] सव्व वि साहु भडारा ॥ ३ ॥

4

उग्गतवमहातवतत्ततवहं दित्ततव तवंतहं घोरतवहं ।
तवसिद्धपुज्जविज्जाहराहं अणिमाइगुणड्ढहं गुणहराहं ।
आहारयतणुलयधारयाहं भयरहियहं मोक्खवासारयाहं ।
अंवियल[1]सुयसायरपारयाहं णग्गहं णीसंगहं णीरयाहं ।
पयवीयकोट्ठबुद्धीसराहं तेजाइ[2]यरिद्धिसिद्धिभासुराहं ।
पंचविहणाणउप्पाययाहं[3] बुज्झियपयत्थपज्जाययाहं ।
छम्मासवरिसउववासयाहं तरुकोडर[4]कंदरवासियाहं ।
कंदप्पदप्पविणिवारणाहं जलसेढितंतु[5]णहचारणाहं ।
समसत्तुमित्तकंचणतणाहं पासायदीवणिच्चलमणाहं ।
दुज्जयपरवाइगिराहराहं[6] पलियंकत्थहं लंबियकराहं[7] ।
खवियक्खपक्खभिक्खारयाहं चउरासीसहसहं जईवराहं[8] ।

घत्ता—इहु सो सोमप्पहु दिव्वु मुणि इहु सेयंसु[9] वि समियमणु ॥
इहु पेक्खु[10] सुलोयणि तुज्झु पिउ णायरिंमिंदु अकंपणु ॥ ४ ॥

९ MB जणयगुत्तु. १० MB सव्वउत्तु आयम°. ११ MB लिहियाइ वि. १२ MB जण्ण. १३ B °करणा.

4 १ MB अविलय°. २ MB ते जाय°. ३ MB °उप्पायणाहं. ४ M तवकोडर°. ५ M °सेढिय-तंतु°. ६ M reads this foot as 11 *a*. ७ M reads this foot as 10 *b*. ८ B जईसराहं. ९ M सयंसु. १० MB पेक्खि.

---

4. 9 *b* पासायेत्यादि—प्रासादस्थदीपवन्निश्चलं मनो येषाम्. 10 *a* परवाइगिराहराहं परवादि-वचननिरासकानाम् 11 *a* खवियक्खपक्ख°. निर्जितेन्द्रियाः.

5

इहु जोयहि भायसहासु वुज्झु थिउ जाणिवि धम्मह तणउं गुज्झु ।
जेणासि सयंवरि सूरदित्ति रूसाविउ महरणि अक्ककित्ति ।
इहु सो दुम्मरिसणु णरवरिंदु समभावि परिट्ठिउ हुउ मुणिंदु ।
सम्मत्तसुद्धिसोहियमईहिं णाणुग्गमणिल्लूरियरईहिं ।
पेक्कंबरछड्डयथणत्थलीहिं दलवट्टियकलिमलकंदलीहिं ।
जल्लमलविचित्तंगोयरीहिं विज्जाहरीहिं भूगोयरीहिं ।
सुहसीलसलिलसंगहसरीहिं सेवियकाणणमहिहरदरीहिं ।
आसंघियबंभीसुंदरीहिं लक्खाइं तिण्णि संजमधरीहिं ।
अज्जियसंखहि कहियाइं जाइं पण्णाससहसअहियाइं ताइं ।
तेत्तियइं जि लक्खइं सावयाहं परिपालियबारहविहवयाहं ।
जीवहं अदिण्णहिंसावईहिं तहिं पंचेय य लक्खइं सावईहिं ।

घत्ता--कागणिकेरु सुरगुरु फणिवइ वि परिगणन्तु मणि मुज्झइ ॥
पणवंतहं देवहं दाणवहं मृगहं संख को बुज्झइ ॥ ५ ॥

6

अच्चंततत्ततवणीयवण्णु कंकेल्लिकुरुहछाहीणिसण्णु ।
पेच्छिवि सहमंडवि जगजणेरु णं जंबूदीवहु मज्झि मेरु ।
इच्छियभवंभमणविणिग्गमेण सकलत्तें विलसियउवसमेण ।
इह चक्कवट्टिसेणाहिवेण पारद्धु थुणहुं जयपत्थिवेण ।
जय देव दिण्णपविमलमणीस जय जिण तिहुयणचूडामणीस ।
जय जीवलोयबंधव दयाल जय पुरुतित्थंकर सामिसाल ।

5. १ MB भाइसहासु; K भायसहासु but corrects it to भायरसहासु. २ MB एकंबर°. ३ MB °विलित्तं.°. ४ MB पंच जि लक्खइं; K चउपण्ण जि लक्खइं. ५ MB °कर. ६ MB मिगहं.

6. १ MB मवभवण°. २ T तिहुवण°.

---

5. 11 *a* °हिं सा व ई हिं हिंसा आपदश्च यामिः.

6. 1 *b* °कुरुह° वृक्षः. 2 *a* जगजणेरु ऋषभनाथः. 5 *b* तिहुयणचूडामणीस त्रिभुवनचूडामणिर्मोक्षस्तस्य ईश स्वामिन्. 6 *b* पुरु° प्रथमः.7 *b* मयतरुकरेणु मृत्युतरुभजहस्तिन् (?)

जय कप्परुक्ख जय कामधेणु जय चिंतामणि मयतरुकरेणु।
जय सयरायरलोयावलोय संसारमहण्णवतरणपोय।

घत्ता—पइं एयाणेयवियप्पणयणाएं वारियँ परमपय॥
पइं जीवहं थावरजंगमहं खयभीयहं भासिय जीवदय॥ ६॥

7

वड्डावियमिच्छामोहरयइं समयहं तेसट्ठइं तिण्णि सयइं।
पइं जिणिवि णाह जं तच्चु सिट्ठु तं मुणइ ण बंभु ण रुद्दु विट्ठु।
सयलहं मणि णिवसइ सामलंगि विउ संभरंति किं सत्तभंगि।
तुहुं जाणहि तिजगु वि वीयराउ तुहुं इंदमउडमणिघट्टियपाउ।
तुहुं परमप्पउ देवाहिदेव हउं करेवी तुहारी चरणसेव।
इय वंदिवि जिणु जियतरुणिविरहु पणविवि संभासिउ तेण भरहु।
पहु मेल्लहि गच्छमि करि पसाउ तवचरणु लेमि भंजमि विसाउ।
तं सुणिवि चवइ रायाहिराउ लइ रज्जु तुहुं जि जय होहि राउ।
ण पहुच्चइ जइ तुह गयउरेण तो पूरइ किं ण धरायलेण।
एयं सयलेण वि सरयणेण आयड्डियणवणिहिहडधणेण।
हउं अच्छमि अंतेउरि पइट्ठु तुहुं भुंजहि महि आसणि णिविट्ठु।

घत्ता—मा जाहि तवोवणु चमुपमुह वेहाविउ रिउ रायहिं॥
पइं जहउ धीर महाभडु वि जिप्पइ विसयकसायहिं॥ ७॥

---

२ MB धारिय; T निवारिता निराकृता.

7. १ K वड्डारिय°. २ MB मणिघिट्ठय° (घिट्ट ?). ३ MB करामि. ४ B भणइ. ५ MB बइट्ठु. ६ MB वीर.

---

9 एयाणेयवियप्पणयणाएं वारिय एकानेकविकल्पौ अद्वैतक्षणिकत्वभेदौ तयोर्नयास्तत्प्रसाधकप्रमाणानि ते न्यायेन प्रमाणोपपत्त्या निवारिता निराकृता येन.

7 1 b समयहं मतानाम्; तेसट्ठइं तिण्णि सयइं त्रिषष्ट्यधिकानि त्रीणि शतानि. 6 a जियतरुणिविरहु धर्मानुरागपरतया निर्जितः हृदयेऽसंप्रधारितस्तरुणीविरहो येन. 12 वेहाविउ विजयगृद्धिं नीतः.

8

जिणण्हवणवारिधुयमंदरेण[1]　　ता विहसिवि चविउ पुरंदरेण ।
मेल्लिहि[2] भरहाहिव जाउ एहु　　होसइ गणहरु तवलच्छिगेहु ।
तियसिंदहु तं पडिवण्णु तेण　　णियपणइणि आउच्छिय जएण ।
जं चिरु पिउ[3]णिलयहु णिग्गयाइं　　जं णासिवि सरवासहु[4] गयाइं ।
जं ससिसेणपरिपालियाइं　　अरिणा घरि सिहिणा जालियाइं ।
जं भंगुरणहरहिं दारियाइं　　तिण्णि वि मज्जारें मारियाइं ।
मुणिवरइं खलेण णिहालियाइं　　जं पिउवणजलणें पउलियाइं ।
वेउव्वियतणुसोहाहराइं　　जायाइं सग्गि जं वहुवराइं ।
जं वणि पच्चारिउ भीमसाहु　　जं हूयउ सो तेलोक्कणाहु ।
तं सुयरमि सुंदरि जामि अज्ज　　साहेवउं मइं परलोयकज्ज ।

घत्ता –आयण्णिवि चल संसारगइ विहुणियसव्वसरीरए ॥
आमेल्लिउ पिययमु पणइणिए रुयन्तु वि गिरिधीरए ॥ ८ ॥

9

लहुयहिं विजयाइहिं भायरेहिं　　दिज्जंतु वि धम्मकयायरेहिं ।
अवगण्णिउं तेणु[1] जिह पुहइरज्जु　　मयभावजणणु णं पीयमज्जु ।
हंकारिउ[2] पुत्तु अणंतवीरु　　गुरुविणयवंतु परलोयभीरु ।
तहु पट्टु णिबंधिवि जैयरवेण[3]　　जिणवरु जयकारिवि[4] घणरवेण ।
आउच्छिवि जीवाजीवभेय　　परियाणिवि णाणाणाणणेय ।
अरिमित्ति पउंजिवि सरिस दिट्ठि　　सिरि लोउ विइण्णउ पंचमुट्ठि ।
दव्वें[5] भावेण वि मुक्कगंथु　　णिग्गंथु णियच्छियमोक्खपंथु ।
जउ दिक्खंकिउ पणविउ जईहिं　　अट्ठहिं सएहिं सह णरवईहिं ।

8. १ G मंदिरेण. २ MB मेल्लहि. ३ MB पिय°. ४ MK सरवाहहु.

9. MB तिणु. २ MB हक्कारिवि पुणु. ३ MB जयवरेण. ४ MB जयकारेण. ५ M दिव्वें.

9. 5 *b* णाणाणाणणेय चेतनरूपं ज्ञेयं परिच्छेद्य, अथवा, नाना अनेकप्रकारा गुणपर्यायापेक्षया, अनाना एकप्रकारं द्रव्यापेक्षया, तच्च तद् ज्ञेयं च.

तेणंगाइं बारह सिक्खियाइं चोद्दह पुव्वइं उवलक्खियाइं ।
सो मुणिवरु मेल्लिवि मोहवासु जायउ गणहरु रिसहेसरासु ।

घत्ता—संभरमि पुव्वभवसंचरिउ वम्महपसरणिवारा ॥
अणुगामिणि तुम्हहु होमि हउं संजमु धरमि भडारा ॥ ९ ॥

10

जइयहुं वणिवरकुलि वणिवराइं रिउमइयइं छड्डियमंदिराइं ।
कयकम्मपहावें विणडियाइं णासंतइं काणणि णिवडियाइं ।
णियकंतइ सहुं सुहिहियययेणु जइयहुं सरि मिलियउ सत्तिसेणु ।
जइयहुं मुणिवेज्जावच्चु कियउ हियउल्लउं काइं वि धम्मि थियउ ।
जइयहुं जायइं पारावयाइं लइयइं दोहिं वि सावयवयाइं ।
जइयहुं उप्पण्णइं खेयराइं लीलालंघियविउलंबराइं ।
रिसिदंसणेण विंभियमणाइं जइयहुं सुराइं बिण्णि वि जणाइं ।
तइयहुं लग्गिवि वहुपइ णिरुत्तु भो तुज्झु चरित्तु जि मज्झु चरित्तु ।
णीसेसजीवसंतीयरेण तं वयणु समिच्छिउ मुणिवरेण ।
सज्जणगुणगहणाणंदियाइ अप्पिय सुंदरिइ सुहद्दियाइ ।
घल्लिउ सकेसु लुंचिवि सणेहु वयसीलगुणहिं भूसियउ देहु ।
उम्मुक्कवियारपलोयणाइ लइयउ तवचरणु सुलोयणाइ ।

घत्ता—घुसिणारुण जे थणहारमणि मंडिय ते मलमइलिय ॥
णं वम्महपहुअहिसेयघड रयपंगुत्त णिहालिय ॥१० ॥

१ M तुम्हहं होमि; K तुम्हहुं होमि.

10. १ MB णिवडियाइं. २ MB वहुं पइं. ३ M मज्झु. ४ MB °गहणें णंदियाइ. ५ MB सकेस ६ MB वय°. ७ MB उम्मुक्कपियारयलोयणाइ.

---

9 *b* लोउ लोचः.

10. 8 *a* वहुपइ वधूपती. 10 *b* सुहद्दियाइ भरताग्रमहादेव्या सुभद्रया.

11

गंधारिगोरिपण्णत्तियाउ चिरभवविज्जउ पेरिचत्तियाउ ।
विच्छड्डियघरवावारतत्ति अपरिग्गह थिय जयरायपत्ति ।
ता पियविओयसिहितवियकाय जूरइ अणंतवरवीरमाय ।
हा पुत्त पडिच्छिउ काइं पट्टु विणु पिउणा रज्जें को मरट्टु ।
इंदियइं पंच णेउ पीलियाइं झाणेण ण णयणइं मीलियाइं ।
मइं पावइ काइं जियंतियाइ पइविच्छोएं तप्पंतियाइ ।
इय सा जंपंति मुयंति रिद्धि णियसुयहु देंति परलोयबुद्धि ।
मंतिहिं विणिवारिय दिण्णकामि थिय रायसासणाणंदधामि ।
घणरवघरिणिउ वयपयणईउ अवरेउ संजायउ संजईउ ।
पयारसंगसुयधारिणीइ णाणापुरगामविहारिणीइ ।
देवीइ अकंपणु तणुरुहाइ रैयणहि सकइंतरु कहिउ ताइ ।

घत्ता—गुरु पुच्छिउ बंभीसुंदरिहिं देव तिलोयालोयण ॥
अग्गइ कहिं संभउ जयरिसिहि होसइ केत्थु सुलोयण ॥ ११ ॥

12

भुवणत्तयलोयसुहंकरेण ता भणिउं पढमतित्थंकरेण ।
उप्पाइवि केवलु विमलु णाणु जाएसइ जउ णिव्वाणठाणु ।
होइवि अहमिंदु सुलोयणा वि सुहभावें भावाभावभावि ।
माणियगिव्वाणरईरमाइ सुहुं भुंजिवि बहुसायरसमाइ ।
होही कणयद्धउ णाम राउ तउ चरिवि पणासिवि रोसु राउ ।
लहिही सुहुं अमरणु अकरणालु जेवहु सलिलु तेवहु णालु ।

11. १ MB पत्तियाउ; २ MB ण णिवीलियाइं. ३ MB अवर वि. ४ MB रयणिहि.
12. १ B कणयद्धउ. २ MB सो सुराउ. ३ MB सुहुं अमणु अकरणालु.

11. 8 *b* आणंदधामि हस्तिनागपुरे. 9 *a* वयपयणईउ व्रतजलनद्यः. 11 *b* रयणहि रत्नाश्राविकायाः.

12. 3 *a* अहमिंदु अच्युतेन्द्रः.

णिप्पज्जइ णलिणहु णत्थि भंति जिणधम्मि पसु वि सुरिंद होंति ।
जिणधम्मि छिज्जइ मोहमूलु जिणधम्मु सव्वकल्लाणमूलु ।

घत्ता—जिणधम्मु पमाइवि मूढमइ जो परधम्महु लग्गइ ॥
चउरासीजोणिलक्खविहुरि णिवडिउ सो कहिं णिग्गइ ॥ १२ ॥

13

मागहमंडलपरमेसरासु चेलिणिकमलिणिणवणेसरासु ।
खाइयसम्मत्तणिहीसरासु आगामितइयभवजिणवरासु ।
सेणियहु कहइ रिसि पुंसियसंकु गोत्तमु दियगोत्तंबरमियंकु ।
गणहरु रिसिसंघहु निलयभूउ जयराउ एक्कहत्तरिमु हूउ ।
सहंसिम्बु भडारउ दुहविणासु संपत्तउ सो तिजगग्गवासु ।
गेहिणि हूई अच्चुइ सुरिंदु कालें महि विहरइ जिणवरिंदु ।
णिरसणभूसणभूसिउ अणंतु दीसइ सुरयणु तें सहुं चलंतु ।
आयासहु णिवडइ पुप्फविट्ठि चउअहियइं चमरइं चारु सट्ठि ।
जहिं पाउ देइ तहिं तहिं जि कमलु सुरवइ जुंजइ गुरुभत्तिविमलु ।
जहिं वच्चइ तहिं कासु वि ण दुक्खु जहिं वसइ तहिं जि कंकेल्लिरुक्खु ।
सीहासणु छत्तइं तिण्णि थंति तिहुयणपहुत्तु णाहहु कहंति ।

घत्ता—जाणिज्जइ सूयरसंवरहिं मृगमायंगतुरंगहिं ॥
जिणणाहहु भासिउ परिणवइ सयलजीवभासंगहिं ॥ १३ ॥

४ MB पुण वि. ५ MB मोहजालु. ६ B मुएवि.

13. MB आगम्मि. २ MB आसियसंकु. ३ MB दियगोत्तें वर°. ४ MB णिवसण°; K णिवसण but corrects it to णिरसण°. ५ MB सीहासण. ६ MB मिग°.

---

4 *b* बहु° द्वाविंशतिः. 6 *a* अकरणालु अतीन्द्रियम्.

13. 13 °भासंगहिं °भाषास्वरूपैः.

14

सुव्वइ[1] दुंदुहि णहि वज्जमाणु। पणवइ जणवउ पुलइज्जमाणु।
देसोहिव उच्चायंति चरुउ[3] बहुकुसुमगंधपरिमलिउ मरुउ।
भामंडलु णवरविमंडलाहु गच्छंति समउं बहुभेय साहु।
पुव्वंगधारि तवतणुसरीरें मणपज्जवणाणि सहावधीरें।
देसावहिपरमावहिसमेयें केवलिकेवलणाणेक्कतेयें।
णवदिक्खिय सिक्खुये[12] संत दंत[13] वेउव्वियाइं बहुरिद्धिवंत।
णिहिय[14]क्खयअक्खयपयसमीह कइगमयवाइ वाइहं सीह।
जहिं गच्छइ तहिं गच्छंति भव्व[15] जहिं अच्छइ तहिं अच्छंति सव्व।
माणव तिरिक्ख सुरवर असंख हु हु हुयंति चउदिसिहिं संख।
झं झं करंति झुणि झल्लरीउ णच्चंति णरामरसुंदरीउ।
तुंबुरु णारय गायंति मिट्ठु भरहें दिट्ठउ पिंडें सुहुं णिविट्ठु।

घत्ता—आउच्छिउ धम्मु महीसरेण जं जिह जेहउ पेक्खइ ॥
केवलि परमप्पउ णिक्कलुसु तं तिह तेहउ अक्खइ ॥ १४ ॥

15

गुणु मोक्खु तउ वि पोग्गलु वि दुविहु णिज्जरु वि दुविह वज्जरइ अरुहु।
भुवणाइं तिण्णि रयणाइं तिण्णि सल्लाइं तिण्णि गुत्तीउ तिण्णि।

---

14. १ M सुम्मइ; B सव्वइ. २ B दोसाहिव. ३ B चारु. ४ M °मलियगरुउ; B °मलिउ गारु. M adds after this in second hand and in the margin : चउसहसदलभयसयाविहीर. ६ B °णाण. ७ M दुद्दहसहास. ८ M adds after this in second hand and in the margin : रिसि सयपण्णास विमुक्कु वास. ९ M adds after this in second hand and in the margin : तेरंच-गहस पयाडियविवेय; B adds : मुणिरंधसहस पयाडियविवेय. १० M °केवलणाणक°; B °केवलिणाणक°. ११ M adds after this in second hand and in the margin : णयणग्गई चउसुण्णहिं समेय; B adds : णयणग्गई चउसुण्णसमेय. १२ MB °सिक्खिय°. १३ M adds after this in second hand and in the margin : दहविउणसहसरिउसयमहंत; B adds : दहविउणसहस रिउसयसहंत, ण हु वयभयदोएक्कु वि णिरीह. १४ B णिहिअक्खयसुअक्खय°. १५ MB सव्व. १६ MB जिणु. १७ B सुहणिविट्ठु.

15. १ MB पोग्गलु दुविहु. २ MB णिज्जर.

---

14. 2 *a* चरुउ अर्घपात्रम् 4 *a* °तणुसरीर °कृशशरीरः.

15. 9*b* °जलजायकेउ मकरध्वजः कामः.

जीवहं गईउ कहियौउ तिण्णि जगवेढणमरु गारव वि तिण्णि ।
गुणवयइं तिण्णि जगि जोय तिण्णि हयकालें भासिय काल तिण्णि ।
चउविहु चउगइ संसारसँरणु बालाइउ चउविहु भणिउं मरणु ।
चउविहु पमाणु चउविहु जि दाणु चउविहु दव्वाइउ दीसमाणु ।
चउ झाणइं चउ देवहं णिकाय चैउभिण्णा उचविह चउकसाय ।
चउविहु जि बंधु चउविहु जि णासु विणउ वि चउविहु गुणगणणिवासु ।
चत्तारि वि बंधविणासहेउ भासइ णिज्जियजलजायकेउ ।

घत्ता—सज्झाय पंच आयारविहि णाणइं पंच वैरिट्ठइं ॥
णिग्गंथ पंच ओईसकुलइं पंचेंदियइं वि सिट्ठइं ॥ १५ ॥

16

अणगारागौरिवयाइं पंच पंचत्थिकाय समिदीउ पंच ।
आसवणिबंधहेऊउ पंच लद्धीउ महाणरया वि पंच ।
संसारसरीरइं होंति पंच गुरु पंच मेरु गिरिवर वि पंच ।
छज्जीवकाय छकाल समय छलेसाभाव वि समय वि मय ।
छद्दव्वइं छावासयविहीउ सत्त वि भय सत्ताहोमहीउ ।
पयईउ अट्ठ पुहईउ अट्ठ वणदेव जीवगुण ते वि अट्ठ ।
णव णारायण णव सीरधारि पडिसत्तु वि णव णिहि दुक्खहारि ।
णवविह पयत्थ दहँभेउ धम्मु वेज्जावच्चु वि दहविहु सुकम्मु ।
दह भावणसुर भवणंतवासि फणिससिसह दह दिसिगय सुहासि ।
एयारह रुद्द रउद्दभाव एयारहविह सावय विगाव ।
पच्छिमइं अणुवेँक्खावयाइं बारह जिणवयणाविणिग्गयाइं ।
बारह णरिंद पालियरहंग बाँरह तव बारहविह सुयंग ।

घत्ता—तेरह चरियंगइं औक्खियइं तेरह किरियाठाणइं ॥
चउदह गुणठाणारोहणइं चउदह मग्गणठाणइं ॥ १६ ॥

३ MB कहियाइं. ४ MB संसारगमणु. ५ MB चउचउभिण्णा चउविह कसाय. ६ MB विसिट्ठइं. ७ MB जोयस°.

16. १ MB °गारवयाइं. २ MB दहभेय. ३ B अणुवेहावयाइं. ४ MB बारह तव बारहविह सुयंग. ५ MB रक्खियइं.

16. 6 *b* वणदेव व्यन्तरदेवाः. 9 *b* फणिससिसह धरणेन्द्रचन्द्रसहिताः

17

अरहंतें सिद्धंतासियाइं चउदह पुव्वाइं पयासियाइं ।
चउदह मल चउदह चित्तगंथ चउदह कुलयर कयमणुयसंथ ।
चउदह रयणाइं गुणिगेहियणाम चउदह दक्खालिय भूयगाम ।
पण्णारह कम्मधराविहाय पण्णारह उवएसिय पमाय ।
सोलह वयणाइं दुहदारणाइं सोलह जिणजम्महु कारणाइं ।
संजम दहसत्त दहट्ठ दोस णाहज्झाणइं एकूणवीस ।
असमाहिणिलय वज्जरिय वीस कयमणमल सयल वि एकवीस ।
बावीस परीसह कुमुणिभीस सुद्दयडज्झयणाइं वि तिवीस ।
तित्थयर भणिय चउवीस ईस मुणिवयमायउ पुणु पंचवीस ।
छव्वीस समासिय वसुहभेय गुण सत्तवीस जइवरविहेय ।
आयारकप्प पवरट्ठवीसँ अघसुत्ताइं वि एऊणतीस ।
भणियाइं मोहमंदिरइं तीस ।

घत्ता—पयाहिय तीस विवायरस कम्महं कहिय जिणेसें ॥
बत्तीसुवएस मुणीसरहं कुडिलाउंचियकेसें ॥ १७ ॥

18

जं जलि थलि णहि पायालमूलि जं थूलु सुहुमु तिजगंतरालि ।
तं पुच्छंतहु पणवियसिरासु भासिउं जिणेण भरहेसरासु ।
गुरु वंदिवि णिंदिवि दुरिउ दुट्ठु गउ णिउ णियपुरु णिलयणि पइट्ठु ।
णरणाहें रयणिहि सुत्तएण सिविणंतरि गुरुपयभत्तएण ।
सूयरदाढाखंडियकसेरु हलल्लुलिउ णिहालिउ तेण मेरु ।
अक्खिउ पहाइ सुयणहु हिएण सिविणयविवरणउं पुरोहिएण ।
किउ णयणगलियजलबिंदुएहिं वच्छत्थलेहारोवरि चुएहिं ।

17. १ MB सिद्धंताइयाइं. २ MB मुणिगणियणाम. ३ MB णाहाझाणइं. ४ MBK सवल. ५ MB सुद्दयज्झडयणाइं. ६ B तिण्णि वीस. ७ M adds after this: वयसमिदिपमुह जंपइ जईस. ८ MB एयाहितीस.

18. १ MB सुविणय°. २ MB वच्छत्थलु.

---

17. 1 *a* सिद्धंतासियाइं सिद्धान्ताश्रितानि. 2 *b* °संथ संस्था मर्यादा.

तिट्ठारयणियरिविलुक्कमाणु कालाहिमहामुहि णिवडमाणु ।
उद्धरिवि लोउ अण्णाणु दीणु चउदह दिणं वरिससहासहीणु ।
महि विहरिवि पुव्वहं एकु लक्खु कैलासु पराइउ णाणचक्खु ।
पावणवणकुसुमामोयमहुरु आरुहिवि पसिद्धउ सिद्धसिहरु ।

घत्ता—दससहसहिं समउ महारिसिहिं कामकोहणिण्णासणु ॥
थिउ पुण्णिमदियहि जिणाहिवइ बंधिवि पलियंकासणु ॥ १८ ॥

19

जाणिवि जणणहु जणणचयणु लहुयउ ओहुल्लिउ करिवि वयणु ।
सुविसुद्धबुद्धिसीलावयासु आयउ भरहु वि अट्ठावयासु ।
गिरि सोहइ चुयमहुआसवेहिं जिणु सोहइ रुद्धहिं आसवेहिं ।
गिरि सोहइ वियलियणिज्झरेहिं जिणु सोहइ कम्महुं णिज्जरेहिं ।
गिरि सोहइ णाणाविहमएहिं जिणु सोहइ रिसिहिं सुणिम्मएहिं ।
गिरि सोहइ णच्चियमोरएहिं जिणु सोहइ सुरसरमोरएहिं ।
गिरि सोहइ धम्मणएण जेम जिणु सोहइ धम्मणएण तेम ।
गिरि परियंचिउ सवराहिवेण जिणु पणवंतें भरहाहिवेण ।

घत्ता—ता णाहु समुग्घायंतरहिं दीहसमयसंताणइं ॥
वेयणियणामगोत्तइं करइ तिण्णि वि आउपमाणइं ॥ १९ ॥

20

मुणिपवरें किउ किरियाविहाणु रुंदत्तणेण ससरीरमाणु ।
णीसारिउ दंडायारु जीउ तिजगग्गचरमणरयंतु णीउ ।

३ MB °पाणु. ४ MB णिविडमाणु. ५ MB अण्णाण. ६ MB °दिणु. ७ G विवरिवि. ८ MB सिद्धिसिहरु.
९ K दह°.

19. १ MB जाणिवि जणजणणहु २ M लहयउ. ३ MB ओहल्लिउं. ४ Tp ससमोरएहिं इति पाठे उपशमयुक्ताश्च ते उरगाश्च. ५ B गोत्तहु.

19. 1 *a* जणणहु ऋषभनाथस्य; जणण चयणु संसारत्यजनम्. 3 *a* चुयमहुआसवेहिं प्रवृत्तमधुप्रवाहैः. 6 *b* °सरमोरएहिं सरमाः सलक्ष्मीकाः उरगाः तैः. 7 *a* धम्मणएण धर्मनाम्ना वृक्षविशेषेण; *b* धम्मणएण धर्मन्यायेन. 9 समुग्घायंतरहिं समुद्घातविशेषैः दण्डकपाटप्रतरलोकपूरणरूपैः.

20. 1 *a* किरियाविहाणु शरीरादात्मप्रदेशानां बहिर्निःसारणम्. 2 °चरमणरयंतु सप्तनरकाणां मध्ये नित्यनिगोदनरकं एकेन्द्रियाणां भेदस्तस्य पर्यन्तम्.

अड्डइपसारिउ पुणु सुरीहु णं तिहुयणघरि दिण्णउं कवाडु।
अप्पाणउ देवें देवणाविउ रूआयारें सहस त्ति थविउ।
णीसेसलोयपूरणु करेवि विवरीएं चारें संवरेवि।
तेजइयकम्मओरालियाइं तिण्णि वि अंगइं णिच्चालियाइं।
मुणि मेल्लिवि तिज्जउ सुहुमकिरिउ संपत्तु चउत्थु छिण्णकिरिउ।
तहिं सुक्कझाणि आयउ अजोइ मणवयणकायमुक्कउ विहाइ।
थिउ देहब्भंतरि सामिसालु क ख ग घ ङ समक्खरभणणकालु।
अच्छंतु वि अंगु ण छिवइ देउ फलछल्लि व जरदेरंडबीउ।

घत्ता—दंसणणाणाइहिं वसुसमहिं सिद्धगुणहिं संपण्णउ॥
ससहावें जोइवि परमपए परमेसरु संपण्णउ॥ २०॥

21

ता सक्के कय माणवमणोज्ज अरुहहु पंचमकल्लाणपुज्ज।
सियसिवियहि णिहियउ णाहदेहु कइलाससिहरि णं अरुणमेहु।
भंभाभेरीझल्लरिसयाइं सुरतूरियहिं तूरइं हयाइं।
गायंतिहिं किंणरकामिणीहिं णच्चंतिहिं फणिसीमंतिणीहिं।
घिप्पंतिहिं णवकुसुमंजलीहिं उब्भियउल्लोवधयावलीहिं।
सहलक्खयधूवविलेवणेहिं भिंगारहिं कलसहिं दप्पणेहिं।
आढत्तचित्तथुइकलयलेहिं अवरेहिं वि णाणामंगलेहिं।
कप्पूरचंदणागुरुतुरुक्ख सलं विरइय खंडिवि विविह रुक्ख।
अंचेप्पिणु रिसिपरमेसरासु तहिं णिहियउ अंगु अणंगणासु।
पय पणवंतहिं तंबिरतिडिक्कु अग्गिंदहिं मउडाणलु विमुक्कु।

20. १ G सरीहु. २ M फयरायारें, B कयआयारें, T पयरायारें. ३ MB विवरीरें; T विवरीएं. ४ MBT णिव्वालियाइं, ५ B छण्ण°. ६ MB भरण°. ७ MB जरढेरंड°. ८ MB वसुसमिहिं. ९ MB जाइवि उड्ढगइ तिहुयणसिहरि णिसण्णउ.

21. १ MB सुरतूरएहिं. २ MB धूम°. ३ B पुरुक्ख. ४ M सयल विइय खंडिवि; B सलु वियरयवि खंडिवि.

3 *a* सुरीहु देवस्तवंतु देवसुत वा. 4 *b* रूआयारें प्रतराकारेण. 5 *b* विवरीएं चारें संवरेवि प्रथमं लोकपूरणसंवरणं कृत्वा ततो रुजकारसंवरणं ततो दण्डाकारसंवरणमिति. 6 *b* णिच्चालियाइं निःपरिस्पन्दीकृतानि.

21. 10 *a* °तिडिक्कु स्फुलिङ्गः.

घत्ता—अलहंतु णरत्तणु थरहरिउ भवपरिभवणहु भग्गउ ॥
सिहि णं संसारें तासियउ जिणकमकमलहुं लग्गउ ॥ २१ ॥

22

उल्ललिउ धूमु घणजणियसंकु णं सिहिणा मुक्कउ मलकलंकु ।
पुणु मिलिउ गयणि जालाकलाउ तणु पत्तु खणद्धें भप्फभाउं ।
तहु कुंडहु गणहरजमदिसाइ मुणिवर सक्कारिय पच्छिमाइ ।
तिण्णि वि सिहि पुज्जिय सोत्तिएहिं घय जव तिल घल्लिवि खत्तिएहिं ।
तं भणिवि पुण्णज्जणु पवित्तु अण्णेक्कहिं लइयउ अग्गिहोत्तु ।
भालयलि कंठि भुअजुयलसिहरि हिप्पंकइ णिहियउ णाहिविवरि ।
अणु मुद्धएसि मउडग्गभाइ जसमंडणु जिह तं सहइ काइ ।

घत्ता—जं तुम्हहं आयउ मोक्खु सुहुं तं महु होउ पियारउ ॥
इय भणिवि तियाउसु वंदियउ इंदें रिसहहु केरउ ॥ २२ ॥

23

जेही तुह तेही होउ बोहि अम्हहं वि भडारा मणि समाहि ।
इय घोसंतहिं कप्पामरेहिं वंदियउ तियाउसु खेयरेहिं ।
विंतरदेवहिं जोइसगणेहिं वंदियउ तियाउसु भावणेहिं ।
णंदादेवीइ महासईइ वंदियउ तियाउसु जसवईइ ।
भरहेण दुक्खदुमियमणेण वंदियउ तियाउसु परियणेण ।
केसरिकिसोरसरि सिहरिवासि घणतुहिणकणाउलि माहमासि ।

५ MB तावियउ.

22. १ B जलिय°. २ K भप्प°. ३ MB घय तिल जव. ४ G भायलि ५ MBK भुयजुयल°. ६ MB मुद्दएस. ७ MB मोक्खसुहं.

23. १ MB मणसमाहि.

22. 6 b हिप्पंकइ हृत्पङ्कजे हृदयकमले. 7 a मुद्धएसि मस्तकप्रदेशे 9 तियाउसु भस्म.

23. 6 a °सरि °शब्दे

सुरंगमि कैसणचउद्दसीहि   णिव्वुइ तित्थंकरि पुरिससीहि ।
रोवइ सोयाउरु सयणविंदु   सइं सोयइ भरहु महाणरिंदु ।
तेलोक्कमंदिराधारखंभु   कहिं पेच्छमि देउ जुगाइबंभु ।

घत्ता—पइं विणु जिण अंधइं लोयणइं दिसउ असेसउ सुण्णियउ ॥
उब्भिवि हत्थ ओम्माहियउ पयउ वरायउ रुण्णियउ ॥ २३ ॥

24

तुहुं मज्झ बप्पु जगडिंभबप्पु   पइं विणु को कहइ कलावियप्पु ।
पइं विणु को पालइ इट्ठ सिट्ठ   को विसहइ गुरुतवचरणणिट्ठ ।
पइं विणु को जाणइ तच्चभेउ   को होइ देव देवहं वि देउ ।
पइं विणु अणाहु सामिय तिलोउ   ता गणहरु भणइ म करहि सोउ ।
इह सो मुउ जो मुउ गब्भि वसइ   छिज्जइ भिज्जइ दुहदलिउ रसइ ।
तुह ताउ देउ तित्थयरु पवरु   परमप्पउ हूयउ अजरु अमरु ।
सक्केण जि तं जि पउत्तु तासु   जो सुयरंतहं णासइ किलेसु ।
सो तुहुं किं सोयहि जणणु भणिवि   जो जायउ सिद्धु तमोहु धुणिवि ।
अरहंतु सरंतहं होइ धम्मु   मा मोहें तुहुं संचहि दुकम्मु ।
तं णिसुणिवि रायं दुण्णिरिक्खु   मड्डइं साहारिउ तायदुक्खु ।

घत्ता—गउ सुरवइ सग्गहु ससुरयणु वंदिवि परमजिणेसरु ॥
मंडलियमहामंडलियवइ साकेयहु भरहेसरु ॥ २४ ॥

25

सोमप्पहु हयसुहदुक्खहेउ   सेयंसराउ बाहुबलि देउ ।
गय णिव्वाणहु तिजगुत्तिमंगि   थिय तिण्णि वि अट्ठमधरणिरंगि ।

२ MB सुहंगमि. ३ B किसण°. ४ B सुण्णउ. ५ MB ओमाहियउ. ६ MB रुल्लियउ.

24. १ M दुहमलिउ. २ MB मंडइ. ३ MB हिययदुक्खु.

25. १ MB तिजगुत्तमंगि.

11 ओम्माहियउ उत्कण्ठितः.

24. 2 a इट्ठ सिट्ठ इष्टा मोक्षयोग्यतया ये शिष्टा भव्याः.

25. 1a हयसुहदुक्खहेउ त्यक्तेष्टानिष्टविषयः.

सहुं गणणाहहिं उव्वारुएहिं णासियमयमोहमहारुएहिं ।
णिद्धाडियसाडियकम्मरेणु कालेण गलंतें वसहसेणु ।
गउ मोक्खहु उव्वणरमियखयरि एत्तहि वि तेत्थु साकेयणयरि ।
कुंकुमविलेउ ढोयंतएण दप्पणयलि मुहुं जोयंतएण ।
अवलोइवि पंडुरु एक्कु केसु णिंदिवि णरजम्मु सुणिव्विसेसु ।
णयरायरपुरवरपउरदेस णियसुयहु समप्पिवि महि असेस ।
भूएसु भूरिपसरियकिवेण तवचरणु लइउ भरहाहिवेण ।
परिवडइ ण विहुरुप्पाड जाम उप्पण्णउं केवलु तासु ताम ।
हूयउ परमेट्ठि परमप्पताणु चउदेवणिकायहिं थुव्वमाणु ।
फेडिवि भव्वहं मणमोहयालु महिमंडलि विहरिवि दीहकालु ।

घत्ता—गउ भरहु वि मोक्खु विसुद्धमइ विविहकम्मबंधणचुउ ॥
फणिविसहरकिंणरपवरणरपुप्फयंतगणसंथुउ ॥ २५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहररिसहणहभरह-
णिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥
॥ संधि ॥ ३७ ॥

॥ समाप्तमादिपुराणम् ॥

२ MB उव्वारुएहिं. ३ MB °महाभएहिं. ४ MB °सारिय°; T साडिय. ५ MB गलंतें. ६ MB उववणि. ७ B एत्तहिं तेत्थु. ८ M परस्स ताणु; B परप्पताणु. ९ M °कम्मबंधेहिं चुउ; B कम्मबंधेहिं चुउ. १० MB फणिखेयर°.

3 *a* उव्वारुएहिं उद्धरितैः सह. 4 *a* णिद्धाडियसाडियकम्मरेणु निर्घाटिताः पूर्वोपार्जिता निर्जीर्णाः शातिताः अपूर्वा आगच्छन्तो निवारिताः कर्मरेणवो येन. 10 *a* परिवडइ निष्पद्यते. 11 *a* परमप्पताणु परात्मरक्षकः. 14 °विसहर° वृषवरा महामुनयः.

NOTES

NOTES

[*The references in these Notes are to Saṃdhis in Roman figures and Kaḍavakas and lines in Arabic figures. A brief summary of the contents of a saṃdhi is given at the beginning to enable the reader to follow the Text. The Notes that follow supplement those given at the foot of the page. T. Stands for Ṭippaṇa of Prabhācandra.*]

I

[The Poet offers homage to Ṛṣabhanātha, the first of the Tīrthaṃkaras, and to the goddess of learning, and declares his intention to compose a Mahāpurāṇa. By way of introduction the poet says that once in the Siddhārtha year (881 of the Śaka era, i. e , 959 A. D.) he arrived at the outskirts of the town of Mepādi (Mānyakheṭa, modern Malkhed) and being fatigued with a long journey rested there in the grove. Two men of the town, Annaiya and Indarāya, approached him and requested him to visit the minister Bharata who would give him a good reception. The poet was at first unwilling to do so because of his bitter experiences at the court of king Bhairava *alias* Viraraja, but these men assured him that Bharata was quite a different person and would receive him well. Accordingly the poet saw Bharata, was well-received, and rested there for a few days. Bharata then requested the poet to compose a Mahāpurāṇa so that he would make the right use of his poetic gifts, and offered him all help. The poet was at first unwilling, because he was afraid of the wicked who criticised even good works. Bharata asked him not to mind them. The poet then modestly said that he was not competent to undertake the task as he was ignorant of the great philosophical systems, works of the poets of the past, works on grammar, rhetoric and metrics, still he would undertake the task out of devotion to the personages figuring in the Mahāpurāṇa. The poet thereupon invoked the aid of Gomukha Yakṣa of Ṛṣabhadeva and of Padmāvatī Yakṣiṇī, the goddess of learning.

The poet proceeds : There is in the Jambūdvīpa a country called Magadha with its capital Rājagṛha. King Śreṇika was one day seated

in his court with Cellaṇādevī, when a messenger brought to him the report that Mahāvīra had arrived at the garden outside the city. The king immediately rose from his seat to pay homage to him and recited a prayer glorifying him.]

1. The poet pays homage to Risaha, the first Tīrthaṃkara.

1. 3*a* सुपरिक्खिय, सम्यग् ज्ञात्वा, T., having understood well the animate and inanimate divisions of the world. 3*b* दिव्वतणुं, निःस्वेदत्वादिदशातिशयोपेतशरीरम्, T., the Jina possesses a body which is divine, i. e., it possesses ten excellences such as absence of perspiration. The number of atiśayas which a Jina possesses is 34. See Abhidhāna Cintāmaṇi I. 57-64. Of these ten are peculiar to the body of the Jina. See IV. 2. 4*a* पयडियसासयपयणयरवहं, प्रकटितः शाश्वतपदनगरस्य मोक्षस्य पन्था मार्गो रत्नत्रयरूपो येन तम्, T., one who preached the path leading to the city of eternal abode, i. e. emancipation or Siddhi. 5*a* सुहसीलगुणोहणिवासहरं, शुभाः प्रशस्ताश्च ते शीलगुणाश्च तेषामोघः समूहस्तस्य निवासगृहम्, T., the home of a large number of auspicious qualities. 10*a* चित्तलियणहं कर्बुरिताकाशम्, T. The sky was rendered variegated by flowers which Indra dropped down from heaven. 15*b* मत्तासमयं, the poet wants to suggest incidently the name of the metre which is मात्रासमक. 17 जासु तित्थि, यस्य तीर्थे, in whose preachings.

2. The poet pays homage to the five dignitories of the Faith, usually called पञ्चपरमेष्ठिन्, viz., तीर्थंकर, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय and साधु and also invokes the aid of the goddess of learning.

2. 3*b* कोमलपयाइं, कोमलानि चक्षुःप्रीतिजनकानि श्रोत्रमनःसुखदानि च, पयाइं पदन्यासाः पदरचनाश्च, T. The poet describes the goddess of learning under the image of a fair woman ; all the epithets used are therefore applicable to सरस्वती as well as स्त्री. 5*a* छंदेण जंति, going at will (applicable to a lady); moving in a metrical form (applicable to poetry). 6*a* चोद्दसपुव्विल्ल, चतुर्दशपूर्वैः युक्ता सरस्वती, स्त्री तु चतुर्दशैः (?) पूर्वैः पूर्वपुरुषैर्युक्ता मात्रन्वये हि सप्त पुरुषास्तत्पते: (?) पित्रन्वये च सप्तेति, T. The goddess possesses fourteen Pūrva books, ancient texts of the Jainas, now lost ; the woman possesses purity of seven ancestors on the mother's side and seven on the father's side. दुवालसंगि, सरस्वती द्वादशाङ्गैर्युक्ता, स्त्री तु—

नलया बाहू य तहा नियं च (णियंब ?) पुट्ठी उरो य सीसं च ।
अट्ठेव दु अङ्गाइं सेस उवङ्गा दु देहस्स ॥

इत्यष्टौ, कर्णनासिकानयनोष्ठाश्चत्वार इति द्वादशाङ्गैर्युक्ता, T. The twelve aṅgas are the

famous books of the Jain Canon such as आचाराङ्ग etc. The woman's body also is fancifully divided into twelve parts, two legs, two arms, the hips, back, chest, head, ears, nose, eyes and lips. 6*b* सत्तभंगि, सरस्वती सप्तभङ्गोपेता स्त्री तु सत्तभंगि धैर्यरहिता प्राणिषु कौटिल्ययुक्ता च, T. It would be better to interpret सत्तभंगि applicable to a woman as सत्त्वभाङ्गिनी पुरुषाणां धैर्यनाशिका.

3. 3*a-b* भुवणक्केरामु तुडिगु, कृष्णराजः तस्येदं बिरुदम् T. We know that the Rāṣṭrakūṭa kings had a number of *Birulas*; we have in Puṣpadanta's works a few others such as Śubhatuṅga (see I. 5. 2a and note thereon) and Vallabhadeva. तुडिगु seems to be of Kannaḍa origin. 7*b* मायंद-गोंछगोंदलियकीरि, आम्रलुम्बिसंमीलितशुके, (garden) where parrots have gathered on the blossom of mango trees. गोंदलिय comes from गोंदल, a Deśī word, which means a gathering. Compare गोंधळ, गोंधळी in Marathi. 9*b* मंड means पुष्पदन्त; so also अहिमाणमेरु in 12*a* below. 14 वर or वरि, an explative of frequent occurrence, means 'it is better,' 'I would rather prefer.' 15 म णिहालउ सुप्पहे, let him not see in the morning the face of a king who is under the influence of the wicked.

4. Drawbacks of royalty condemned.

4. 3*a* सत्तंगरज्ज, kingdom with its seven constituents, viz., स्वामी, अमात्य, सुहृत, कोश, राष्ट्र, दुर्ग and बल. 4*a* विसमसहजम्मइ, fortune born along with हालाहल poison at the time of the churning of the ocean.

5. Bharata glorified.

5. 3*a* पाययकइकव्वरसावउद्ध, connoisseur of the flavour of the poems of Prakrit poets. This epithet has a special significance, probably because Prakrit poetry was not much admired or understood and even ignored altogether at this time.

6. The poet's reception at the house of Bharata, and his proposal to him to compose a Mahāpurāṇa.

6. 9*a* देवीसुएण, by the son of Devi, i. e., by Bharata.

7. The poet shows his timidity to undertake the task because of the wicked who censure even good works like the Setubandha of Pravarasena.

7. 3*a* गोवज्जिएहिं etc. This series of epithets have double meaning: one applicable to घगदिण etc. and the other applicable to the wicked.

8. Bharata assures Puṣpadanta that wicked people are always like that and that the wise should pay no heed to them.

8. 7*b* भुक्कउ छणयंदहु सारमेउ, let the dog bark at the full moon. 9*b* कव्वपिसल्लएण, another epithet of Puṣpadanta; compare कव्यपिसाय, कव्वरक्खस.

9. The poet, by way of modesty, shows that he is not qualified to undertake the Mahāpurāṇa, and yet he does so out of devotion to the adorable persons.

9. 1*a* अकलंक etc. For these writers see notes at the bottom of the page, and also Introduction to Ṇāyakumāracariu, page XXIII. 13*b* कुडवेण मवइ को जलणिहाणु, who can measure the waters of the ocean by means of a Kuḍava, a small measure? 17 विवरोक्खए किं अक्खइ, why should I say at the back? i. e., I say it openly, I challenge the people to point out drawbacks in my work if they notice any.

10. The poet invokes the aid of Gomuha Yakṣa and Cakkesarī Yakṣiṇī who are the guardian deities of ऋषभ, and of the goddess of learning.

10. 14 जो मरु भसइ णिबंधहो, he who barks at my work.

11. The location of the Magadha country.

12. Description of Rājagṛha, its capital.

12. 9*b* मंथामंथियमंथणिरवाइं, मन्थेन रविकूया मथिताद्विलोडितान्मन्थनीरवाः शब्दा यत्र, T., where there are sweet songs of churning women when they are engaged in the act of churning. It is the practice of cowherd women to sing sweet songs at the time of churning.

13. Description of the outskirts of Rājagṛha.

13. 11*b* संगहु सिरिणयणंजणहु णाइं, it was, as it were, a storehouse, संगह, of collyrium of श्री. The lotus flower, with a black bee sitting in it, appeared to be a collyrium box of the goddess of beauty.

14. Description of the town of Rājagṛha.

14. 9*b* अण्णाणिय णाइं कुसासणेहिं, like ignorant people who are misled by false doctrines (कु+शासन).

15. Description of Rājagṛha continued.

16. King Śreṇika described.

18. King Śreṇika receives the report of the arrival of Mahāvira

18. 6*b* चउद्देवणिकाय, the four classes of gods are : भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क and वैमानिक. 7*a* चउतीसातिसय, the Arhats possess thirtyfour atiśayas or excellences which are enumerated in Hemacandra's Abhidhāna Cintāmaṇi and several other works. See page 5, notes of Miss Johnson's Translation of Trisaṣṭi. 9*b* अट्ठविहपाडिहेर, these Prātihāryas, miraculous possessions of Arhats, are eight viz., अशोक, सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामण्डल, दुन्दुभि and त्रिछत्र. 10*b* विउलइरि, is a small hill in the neighbourhood of Rājagṛha. 15 पुप्फयंततेयाहिय, the poet puts his name in the last line of a Saṃdhi of each of his three known works. It is thus his अङ्क, or mark, and is interpreted in several ways, but more frequently as चन्द्र and सूर्य, and the Tīrthaṃkara of that name. The term पुप्फयंत is at times paraphrased by पुष्पदसण, कुसुमदसण etc. भरत, the poet's patron, is also mentioned in the Ghattā lines. The term भरत also may be regarded as another अङ्क of the poet and is interpreted as भारतवर्ष or भरत, the first Cakravartin.

II.

[King Seniya, on hearing the news of the arrival of Mahāvira, proceeds along with his retinue to see him. After paying his respects to the Jina, the king asked his disciple Goyama to recite to him the Mahāpurāṇa which he does.

Goyama then begins his narration by first mentioning the divisions of time, the Kulakaras and their contribution to the civilization of the Universe. The last of these Kulakaras was Nāhi (Sk. Nābhi), and his queen was Marudevī. Now Indra remembered that a Jina was to be born in their house and therefore ordered Dhaṇaya, i e., Kubera, to make the town of Ujjhā (Ayodhyā) gay and pleasant so that it should be a fit place for the birth of the Jina.]

1. 6*b* णं वररायवित्ति रिउदारिणि, a lady who took in her hand a कुवलय, i. e. a lotus flower, is compared to royalty (वररायवित्ति) which also holds कुवलय, i. e., the globe of the earth, and chastises the enemies (रिउदारिणि).

2. 13 जणजणणत्तिहर, (Jina) who removes the misery (अत्ति-आर्ति) of birth (जणण) of the people. 14 सुरवंसोल्हइदिवसयर, the sun to the

lotus, viz., the universe; the Jina gladdens the universe as the sun blooms the lotus.

3. 5–11. These lines contain a long epithet of Jina वरुण...सिरणमणमउडयलमणिसलिलधुयविमलकमकमल, (Jina) whose lotus-like feet are washed by waters flowing from the gems in the coronets of वरुण and other gods when they bend their heads (सिरणमण) before him. 35 मइं णेज्जसु पंचमगइहे, you will please lead me to the fifth गति, i. e., सिद्धावस्था, emancipation from संसार, the first four गतिs being देव, नारक, तिर्यक् and मनुष्य.

4. 7*a* णाइ णंतु भाविजिणहिं णिरुत्तउ, there is no beginning (न + आदि) and no end (न + अन्त) to the list of the coming Jinas, i e., the number of the future Jinas is infinite. 8–9 कालु अणाइउ etc. Time has no beginning and no end; i. e., it is infinite. Time is an associating cause of change in the Universe. It has no flavour, no odour, no colour and no weight. Time in abstract (निश्चयकाल) is marked by its fleeting i. e., constantly passing (प्रवर्तन). 12 ववहारकालु, Time as understood in our daily practice.

5. 3*b* पियकारिणितणएं, by महावीर who is the son of प्रियकारिणी, popularly known as त्रिशला. Compare कल्पसूत्र, 109, where the name given is पीइकारिणी. 10*a* ताडिज्जइ, गुण्यते, T., is multiplied.

6. 10*a* भेज्जउ, भेद्यः, divisible, to be divided.

8. 4–5 उच्छप्पिणि, i. e, उत्सर्पिणीकाल is defined as one in which strength, prosperity, height of the body, piety, knowledge, gravity and courage are on the increase; ओसप्पिणि, i. e., अवसर्पिणीकाल is one in which these qualities are on the decrease. 7*b* दहविहविडवि, the ten कल्पवृक्षs, enumerated in the foot-notes.

9. 3*a* पडिसुइ, the first कुलकर of the Jain mythology. 4*a* अममभियाउ, having life of the length of an अमम, a large number. The other कुलकरs or मनुs mentioned in 9 and 10 are: सम्मइ, खेमंकर, खेमंधर, सीमंकर, सीमंधर, विमलवाहु, चक्खुब्मउ (चक्षुष्मान्), जसस्सि, अहिचंद, चंदाह, मरुदेव, पसेणइ and णाहि (नाभि).

11. 1 The first कुलकर explained to the world, i. e., discovered for the first time, the functions of the sun and the moon who were not noticed by the people upto this time because the world was full of

the light supplied by the कल्पवृक्षs. The second discovered the stars and planets. Similarly each कुलकर contributed something towards the human civilization. The last कुलकर i. e. नाभि, discovered the method of cutting the नाल of children, and also discovered clouds which, by rain, rendered the earth full of various crops so that nobody felt the absence of the कल्पवृक्षs. He also discovered fire, the art of cooking and weaving for the benefit of humanity.

17. *5b* सुयरइ सुरवइ णियमणि तइयहं, Indra, on learning that a तीर्थंकर is to be born at a particular place, orders Dhaṇaya, i. e. Kubera, to make the city beautiful and rich, so that it becomes fit for the birth of a Jina.

19. *1a* छुडु छुडु—Hemacandra in his grammar under IV. 422 gives छुडु as a substitute for यदि. I do not think that छुडु always means यदि ; in fact the usual sense of छुडु seems to be क्षिप्रम् which sense suits the context here as well as elsewhere. The marginal notes in Mss. here render it as यद्दा but I do not think it to be correct.

III

[The birth of a Jina in Jain works is described in such a monotonous way that we are often tempted to think that we are in the field of mythology rather than that of history. When the parents of a Jina are determined, Indra orders Kubera to make the town of his parents beautiful and fit to be worthy of such event. The Jina in the immediately preceding birth is born in heaven. Six months before his period of life in heaven is to end, Indra sends six goddesses, सिरि, हिरि, दिहि, कंति, कित्ती, and लच्छी to the earth to purify the womb of the lady where the Jina is to be born. They then come to the mother of the Jina and wait upon her as her maids. The mother then sees sixteen objects (according to the Śvetāmbara tradition, fourteen) in a dream towards the end of the night. She sees her husband the next morning and tells him that she saw, the previous night, sixteen dreams. The husband then explains to her the fruit of her dreams which in substance is that she would be the mother of a Jina. The Jina then descends into the womb in the form of some object (in the case of Ṛṣabha, the first Tīrthaṃkara, a white bull). Gods attend this event. There is shower of gems sent by Kubera. Jina is then born in due course. Gods headed by Indra arrive at the birth-place of the Jina, see the

Jina born, go round him three times, offer him prayers. Indra then hands over to the mother a babe produced by his magic, takes away the Jina to the mountain Meru, puts him on a jewelled seat and gives him a ceremonious bath, the waters of which, flowing over the mountain Meru, are subsequently saluted by all gods. Indra then recites some hymns in praise of the Jina, and then brings him back to his parents. This event is usually called a कल्लाण (Sk. कल्याणक) or more particularly जिनजन्माभिषेककल्याण. These events are almost monotonously described in the life of a Jina, but Puṣpadanta has on every occasion, enlivened the details with his poetic skill. The particulars about Risaha, the first Tīrthaṃkara are:—

(1) Town of birth—Ayodhyā

(2) Parents—Nābhi and Marudevī.

(3) Descent in the womb—as a white bull.

(4) Date of Descent—month Āṣāḍha, dark half, second day, Uttarāṣāḍhā Nakṣatra.

(5) Date of birth—month Caitra, dark half, ninth day, Sunday, Uttarāṣāḍhā Nakṣatra, Brahma yoga.

(6) Name—Risaha, Ṛṣabha or Vṛṣabha.]

4. 9*a* णिवप्रंगणंति, in the courtyard of the king. Although Prakrits in general do not allow conjunct consonants with र्, we get such conjuncts in Apabhraṃśa. See Hemacandra IV. 398 and 399. Of our Mss. G and K only give conjuncts with र् while MBP do not. I have therefore considered G and K to preserve older recension of our text on this account as also on account of their retaining forms with ऋ such as मृग, सृय etc. 11 सइ, i. e., मरुदेवी.

5. This Kaḍavaka gives the list of sixteen objects which Marudevī sees in a dream, and which foreshadows the birth of a Jina. The Śvetāmbara tradition differs from the Digambara one in that they mention only fourteen objects of the dream (चोद्दस महासुमिण). Compare कल्पसूत्र 4, and 32-47.

गय वसह सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुम्भं ।
पउमसर सागर विमाणभवण रयणुच्चय सिहिं च ॥
एए चउद्दस सुमिणे सव्वा पासेइ तित्थयरमाया ।
जं रयणिं वक्कमई कुच्छिंसि महायसो अरिहा ॥

These objects, according to the Digambara tradition, are :—

(1) An Elephant breaking open the mountain slopes.
(2) A Bull loudly roaring.
(3) A roaring Lion.
(4) Goddess Lakṣmī being bathed in waters from the trunks of the elephants of the quarters (दिसागअ). The Śvetāmbaras designate this under अभिसेय.
(5) Wreaths, two in number, of fresh flowers.
(6) The rising moon.
(7) The rising sun.
(8) A pair of Fish.
(9) A pair of Jars filled with water.
(10) A fine lotus-pond.
(11) A surging sea.
(12) A royal seat marked with lion's head (सिंहासन). The Śvetāmbaras omit this object from their list.
(13) A heavenly palace or mansion-house.
(14) A palace of snakes or of the king of snakes (नागभवन); this object is omitted in the list of the Śvetāmbaras.
(15) A heap of Gems.
(16) Burning Fire.

It will be seen from above that the Śvetāmbaras omit 12 and 14 from the above list and thus reduce the number of objects to fourteen.

7. 5*a* सोलह वि तवभावणाओ पहावेवि, having meditated upon the sixteen forms (भावना) of penance such as दर्शनविशुद्धि etc. These भावनाs are :—दर्शनविशुद्धिः, विनयसंपन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचारः, अभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगः, अभीक्ष्णं संवेगः, शक्तितस्त्यागः, शक्तितस्तपः, साधुसमाधिः, वैयावृत्यकरणम्, अर्हद्भक्तिः, आचार्यभक्तिः, बहुश्रुतभक्तिः, प्रवचनभक्तिः, आवश्यकापरिहाणिः, मार्गप्रभावना and प्रवचनवत्सलत्वम्. Compare also नायाधम्मकहाओ, VIII. 64 ; तत्त्वार्थाधिगमसूत्र VI. 24.

19. 14 नहु दूसहु मइं णेहि, take me to that region where there is no birth etc., i. e., to the region of the Siddhas.

21. 11*a* विसु धम्मु तेण भाइ त्ति, the Jina is called वृषभ because he shines forth (भाइ, भाति) by विस (वृष), i. e., धर्म or piety.

IV

[Prince Risaha grew in the royal house in ideal surroundings. He possessed ten bodily atiśayas or excellences such as bodily purity, want of perspiration etc. He grew strong and powerful and young. His father then thought of getting him married. The prince was at first unwilling, but being pressed by the king, agreed to be married to जसवई and सुणंदा, daughters of the kings of Kaccha and Mahākaccha. The marriage was celebrated with great pomp. On the evening of the celebration, under the moon-lit sky, a concert was arranged by celestial nymphs with dance, music and singing. The ceremony was rounded off by gifts which the king made to everybody so as to satisfy all his desires.]

1. 10*a* उत्ताणसेज्ज, lying on his back the young boy was looking up, but the poet fancies that he is watching the path to emancipation which, as it were, goes in the upward direction. 15*a* दर ढेंतें पयाइं, while walking slowly in the childhood. 16*b* चउसट्ठि वि कलाउ, sixty-four arts, and not seventytwo as with the Svetāmbaras. For that list see Rāyapaseṇiyasutta or Paesikahāṇayaṃ, para 39 and my note thereon.

2. This Kaḍavaka mentions some of the atisayas which a Jina possesses.

3. 10*a* जो कप्परुक्खु सो कट्ठु कट्ठु, the so-called wish-tree is, alas! a mere log of wood.

4. 14*b* अम्माहीरएण, स्वदेशस्त्रीबालप्रसिद्धगानध्वनिना, T., i. e., lullaby or song to make the baby sleep. 15 होल्लरु जो जो, these are the expressions which the mother uses to make the baby sleep.

9. 10*a* चंदोवचीणपट्टेहिं छइउ, covered with fine canopy (चंदोव) of China cloth.

10. 3*a* सुहाइ, सु+भाति shines forth.

17. 2*b* दुद्धुं व धोयउ, दुग्धेनेव धौतः, as if washed or bathed in milk. Note that दुद्धुं is the Inst. sing. form which is obtainable by a confusion of अनुस्वार of the Instr. (Cf. Hemacandra IV. 342) and उ of the Nom. and Acc. 4*a* आउज्जहं जेण मुहण्ण वासु, the arrangement of the musical instruments for a concert is described here, which arrangement is

called पच्चाहार or प्रत्याहार. 9*b* कम्मारवी is an act of cleaning the musical instruments. 10*b* उद्विक्खणु किउ हिंदोलएण, the introductory notes of the हिंदोलराग were sung first. 11*b* कउ णच्चणीहिँ पुणु तहिँ पवेसु, the dancing girls then entered presenting the three methods of keeping time (ताल), viz. वण्ण, छडय and धारा. T adds:—समस्तनाटकार्थवर्णनाद्वर्णतालः, शृङ्गाररसाभिनयश्छटकातालः, वीररसाभिनयो धारातालः.

18. The various technical terms of the art of dancing have been explained and their subdivisions enumerated in T. which I quote fully here :—चारी पदप्रचारः, सा द्वात्रिंशत्प्रकारा, तत्र समपादा स्थितावर्ता सकटास्या अध्यर्द्धिका चापगतिः विच्यवा एलका क्रीडिता बद्धा उरूद्वृत्ता आदिता उच्छन्दिता वा जनिता स्पंदितजिनिता अपस्पंदिता मतुली मत्तली चेति षोडश भौम्याश्चार्यः, अतिक्रांता अपक्रांता पार्श्वक्रांता अर्द्धजानुः सूची नूपुरपादिका दोलापाला पादा आक्षिप्ता आविद्धा उध्दृता विद्युद्भ्रान्ता आलता भुजंगत्रासिता हरिणप्लुता भ्रमरी चेत्येताः षोडश आकाशोद्भवाश्चार्यः. 3*b* अंगवहन अंगहारः, स च स्थिरहस्तकः सूचीविद्धः आक्षिकः करच्छेदः विष्कंभः अपगतः आक्रीडः भृश्चिकः भ्रमणमदाद्विविलसित इत्यादिविकल्पात् द्वात्रिंशत्प्रकारः. 4*b* शरीरमनेकधा प्रतिप्राप्य क्रियंते इति क र णा नि. तलपुष्पपुट वर्तितं अपविद्धं लीन स्वस्तिक अर्धस्वस्तिकं अर्धस्वस्तिकरेचित निकूटकं अलातं उन्मत्तं ललाटं तिलमित्याद्यष्टोत्तरशतसंख्यानि. दि ण्णु दत्तानि 5*a* च उ द ह वि सी स. उक्तं च—

अकंपितं कंपितं च धुतं विधुतमेव च ।
परिवाहितमाधूतमथाचितनिकुंचितं ॥
× × × परावृत्तमर्कुतं चाप्यधोगतं ।
लोलितं मरुतं चेति चतुर्दशविधं शिरः ॥

5*b* भू तं ड व इं नृत्यानि सप्त—

आक्षेपः पातनं चेव भृकुटिश्चतुरं भ्रुवोः ।
कुंचितं रेचितं कर्म सहजं चेति सप्तधा ॥ इत्यभिधानात्

6*a* ण व गी व उ । तदुक्तं—समानता आनता अस्ता रचिता कुंचिता कंचिता चिता ललिता च निवृत्ता च ग्रीवा नवविधा स्मृता. 6*b* छ त्तीस वि दि ट्ठी उ—तथाहि कान्ता भयानका हास्या करुणा अद्भुता रौद्रा वीरा बीभत्सा चेत्यष्टौ रसदृष्टयः; स्निग्धा हृष्टा दीना क्रुद्धा तृप्ता भयान्विता जुगुप्सिता चेत्यष्टौ स्थायिभावदृष्टयः; स्तान्यांमलिना (?) श्रांता सलज्जा ग्लाना शंकिता विषण्णा मुकुला अभितप्ता जिह्मललिता वितर्किता कुंचिता विभ्रान्ता विप्लुता काकिकरा (?) विकोसा त्रस्ता मेदिरा चेति षट्त्रिंशद् दृष्टयः. 7*a* अं ति मे त्था दि

श्रृंगार (?) बीभत्सा हास्यरौद्रभयानकाः ।
करुणाद्भुतशांताश्च........रसा स्मृताः ॥

तत्राष्टौ रसा अंतिमरसवर्जिताः.

ज णि य भा व

रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा ।
जुगुप्सा विस्मयश्चाष्टौ स्थायिभावाः प्रकीर्तिताः ॥
स्तंभस्तनूरुहोद्रेदा(?)द्गद्‌ः स्वेदवेपथू ।
वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्त्विकाः स्मृताः ॥

तनूरुहोद्रेदो रोमांचः । वेपथुः कंप·, वैवर्ण्यं म्लानता निर्वेदः, म्लानता निर्वेद्ग्लानिः, शंकाश्रमधृतिजडता-हर्षदैन्योग्राचिंतात्रासेर्ष्यामर्षगर्वाः स्मृतिमरणमदाः सप्त निद्राविबोधा व्रीडाऽपस्मारमोह शर्मानिरलसता ऽवेग-तर्काविहठव्याध्युन्मानादौ विषादोत्सुक्यचपलयुताश्त्रिशादनेत्रयश्च (?) । अपस्मारः उंमार्ग (?) । तर्कः विमर्शः । उवहित्थ आकारगोपनं युक्तः संपद्गा इति । 8*a* भ वे त्या दि अपराध्यपूर्वभावेभ्यो विलक्षणाः. भा वा णु भा व भावानुभावेभ्योऽनु पश्चाद्भवतीत्यनुभावाः तच्चनुर्विधा (?) मानो (?) वाग्बुद्धिशरीराश्च य दर्शिताः. 9*a* फु र ण इं स्फुरणानि शरीरगतानि. 10*b* छ ड्डु ण य प ओ एं नृत्योपमहारंतुस्ताल-विशेषश्छड्डुणकप्रयोगस्तेन The Ms. of T. is illegible at numerous places, but as the contents seemed to me to be important I have reproduced them.

V

[One day Jasavaī, the wife of Risaha, saw in a dream the mount Meru, the sun, the ocean and the entry of the globe into her mouth. She told this dream to Risaha who told her that she would get a son who would be a sovereign ruler. In course of time, Jasavaı bore a son who was named Bharaha (Sk. Bharata). As the boy grew the father himself taught him various arts as also the science of government, duties of different castes and classes, and the principles of inter-state relations. Jasavaı bore ninty-nine more sons, Vasahasena etc., and one daughter named Bambhī. Sunandā also bore one son named Bāhubali and one daughter named Sundarī. Bharaha himself taught both the daughters the various literary and fine arts. Now once it so happened that there occurred a severe famine which worked a havoc on the people. They came to Risaha and asked for relief. He then taught the people various arts and professions. When he attained the age of twenty lacs of pūrva years, he was put on the throne by king Nābhi.]

2. 8*b* छक्खंड वि मेइणि, the six continents of the भारतवर्ष. The भारतवर्ष, according to Jain cosmology is bounded on the North by Himavanta Mountain; right through its centre passes the Veyaḍḍha (Sk. Vaitāḍhya) mountain from east to west; the rivers Gaṅgā and Sindhu

pass through it form North to South; it is in this way that it is divided into six Khandas or continents. A Cakravartin rules over all these six continents of the भारतवर्ष. 10*b* अहमिन्दु or अहमिन्द्र is a god of a very high class residing in the ग्रैवेयक or अनुत्तरविमान heaven.

3. 2 तिहुयणवइजयंकरेहागहियं, The loss of folds on the belly of Jasavai, as a result of her pregnancy, is here considered by the poet as the wiping off of the marks of victory over the lords of three worlds. It means that the son that is to be born to Jasavai will wipe off all marks of supremacy so far held by kings whom he will subdue.

5. 7*a* खुल्लउ कीडुल्लउ, a small insect (क्षुद्रः कीटकः).

6. 13*a* चित्तलेप्पसिलवरतरुकम्मइ, painting, plaster-work (लेप्य), sculpture, and wood-work.

7. 2 गिरिथणि...विसयं पयासए, explains (to Bharaha) the subject of governance of his consort, viz, the earth (गिरिथणिधरणि) with mountains standing for her breasts.

8. 12 पढमुवाउ, प्रथमः उपायः, i. e., resolution, resolve.

9. 7*a* करेवा, See for the formation of Potential participles Hemacandra IV. 438. 9*a* अय तिवरिस जव, the goats to be offered in sacrifices are and should be यव corn three years' old. 13*a* जिणपडिमापूयण, worship of the images of the Jinas. This is clearly an anachronism unless we accept that Risaha means by it not himself but the Jinas of the past. To a Jain his religion has no beginning and there were Jinas in the past.

11. 8*b* कामुण्णु चउविहु दारुणु, the four व्यसनs or addictions, viz., woman, gambling, wine and hunting.

12. 1 एक्कंतरिउ मित्तु णिरंतरु सत्तु. In the मण्डल or द्वादशराजचक्र, the immediate neighbour is an enemy while the next one is a friend (एकान्तरित मित्रम्, निरन्तरः शत्रुः). The immediate neighbour is often in conflict with him because of the common boundary, while the next one is to be on good terms with him in order that both of them have the middle one as their common enemy. 8*b* अट्ठारहतित्थइं, the eighteen तीर्थs are:—

सेनापतिर्गणकमन्त्रिपुरोहिताश्च वर्णा बलौघबलवत्तरदण्डनाथाः ।
श्रेष्ठी महत्तर इतश्च महामात्योऽमात्यो वदन्ति दश चाष्ट च तीर्थमार्याः ॥

—Marginal gloss in K.

The वर्णs in the above list are ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य and शूद्र; the बलौघ is the fourfold division of the army, viz., हस्ती, अश्व, रथ and पाइक.

18. 6*a* अवहंसउ i. e., अपभ्रंश which is counted as a distinct language. Note the items which were taught to ladies in those days, or even in the days of the poet.

19. 1–2 सयमह...वारिणा धुयकमकमलजुयल परमेसर, O Lord, pair of whose lotus-like feet is washed by water dropped down from the gems in the coronet of Indra. 6*a* लग्गणखंभु अण्णु को अम्हहं, who, other than yourself, will be our supporting pillar ?

20. 5–11 पल्लव etc.—This passage gives a long list of the names of the countries or different parts of the भारतवर्ष.

21. 3–5 खेडइं etc.—This passage gives the list of several types of towns, villages, cities etc., such as खेड, कव्वड, मडंब, पट्टण, दोणामुह and संवाहण.

22. 4 घरि उच्छुरसु,—the race was named इक्ष्वाकु because its founder brought to his house the juice of suger-cane for drinking.

VI

[One day, while prince Risaha was enjoying his royal fortune and was engrossed in it, Indra thought of reminding him of the mission that he was expected to fulfil on the earth, viz., the propagation of the Jain faith, and sent a celestial nymph named Nilaṃjasā to perform a dance before him. She arrived, performed the dance and at the end of it fell down dead. Risaha, on seeing her dead, was filled with horror at the momentariness of the worldly life.]

2. 3 णियमंति जणं, the porters and peons were regulating the conduct of the people in the court-room. The Kadavaka mentions a large number of things which should not be done in the king's presence.

3. 5*a* भुंजंतहु महि तेसहि गय, King Risaha enjoyed his kingship for sixty three lacs of the pūrva years, and still likes these worldly pleasures and is not disgusted with them.

4. 11–12 पुण्णाउस णीलंजस—If नीलंजसा who completed her period of life, dances before him and after that falls dead, the event will cause disgust for wordly life in his mind.

5. 4*b* णाहेयणिहेलणि, to the house of Nābheya, i. e., Risaha, the son of Nābhi. 6*b* वसिंगु वि पुव्वरंगु—The technical terms of dancing and music used in this Kaḍavaka and the two following are explained in T. as follows :—वी स मि त्या दि—नाटकस्येह प्रथमप्रस्तावनावतारः पूर्वरंगस्तस्य च प्रत्याहारोऽवतरणा आरंभ आश्रवणा गीतविधिरुपस्थापना परिवर्तनं रंगद्वारं चारी महाचारी इत्यादीनि विंशतिरंगानि. 7*a* ति पु क्ख रु चर्मावनद्धं वाद्यं पुष्करं तत्त्रिविधं उत्तममध्यमजघन्यभेदेन. 7*b* सो ल ह अ क्ख र उ क ख ग घ ट ठ ड ढ त थ द ध स र ल ह इति षोडशाक्षरं. 8*a* च उ म ग्गु आलिप्त-अर्दित-गोमुख-वितस्ति-भेदात् चतुर्मार्गं; दु ले व णु वामलेपनं ऊर्ध्वलेपनं; छ क्क र णु रूपं कृतं परिति भेदो रूपशेषो उद्यश्चेति षट् वाद्यकरणानि; 8*b* ति य नि ह्व उ समो श्रोतांगतिः गोपुच्छः चेति त्रियतियुक्तं, ति ल य उ द्रुतमध्यविलंबितास्त्रयो लयाः. 9*a* ति ग य उ तद्गाम नुतं उघ(?)श्चेति त्रीणि गतानि; ति य चा रु समप्रचारं विषमप्रचारश्चेति; ति जो य य रु गुरुसंयोगो लघुसंयोगो गुरुलघुसंयोगश्चेति त्रिसंयोगकं. 9*b* ति क रि ह्व उ गृहीतोऽर्धगृहीतो गृहीतमुक्तश्चेति त्रयः. 10*a* ति म ज्ज ण उ मायूरी अर्द्धमायूरी कर्मारवी चेति मार्जनकम्; 10*b* वी सा लं का र स ल क्ख ण उं अलंक्रियते वाद्यं यैस्तेऽलंकाराः प्रहारास्तैः सलक्षणं मनोज्ञं चेति विंशत्यलंकाराः—चित्रः समः विभक्तः छिन्नः छिन्नविद्धः अनुविद्धः विद्धः वाद्यसंश्रयः अनमृतः प्रतिच्युतः दुर्गः अवकीर्णः बद्धावकीर्णः परिक्षिप्तः एकरूपः नियमान्वितः सार्चाकृतः समेखलः सामवायिकः दृढ. चेति. 11*a* अ ट्ठा र ह जा इ हि तथाहि—शुद्धा दुष्करणा विषमनिष्कंभितैकरूपा च पार्श्वसमापर्यस्ता समविषमकृता विकीर्णा च पर्यवसाने चितिकिसंयुक्ता संपूता तथारंभा विगतक्रम चललिगा वंचितिका चैकवाद्या चेत्यष्टादशजातिभिर्मंडितम्; 12*a* च च्च उ डु चाचपुटस्त्र्यस्त्रस्त्रिकलतालप्रवृत्तिहेतुः; चा च उ डु चचपुटश्चतुरस्त्रश्चतुःकलतालप्रवृत्तहेतुः. 12*b* छ प्पि य पु त्ते वि षे(?) धिजापुत्रः(?)कोपि मिश्र उभयतालप्रवृत्तिहेतुः, म ण हा रि चचपुटादिस्त्रिप्रकारापि(?)मनोहरः; 13*a* इ य इत्यादि एतैश्चचपुटादिभिर्वाद्यतालविशेषैस्त्रिभिरलंकृता. 14*a* ओ ण द्ध उ व ज्ज उ व ण्णि य उ इत्थंभूतं यदवनद्धं वाद्यं तत्त्रिप्रकारं वर्णितं वामं ऊर्ध्वं आलिंगकसंज्ञितं चेति. द्विश्रुतिकाः स्वरे जातो निषादो गंधारश्च त्रिभुवसमश्रुतिसंख्यया त्रिश्रुतिकऋषभो धैवतश्च जलि(?)षिमसममंख्यया चतुःश्रुतिकाः षड्जपंचममध्यमाः. 16 च व ल हिं स्थितमुक्ताभिः, अ द्ध हिं अर्धमुक्ताभिः कंपमानस्वरूपाभिः, मु क्कि य हिं वंशसुषिरसंधन्वगहिताभिः(?), व त्ता व त्तं गु लि य हिं उक्तविशेषणविशिष्टाभिर्व्यक्तव्यक्तांगुलिभिः व्यक्तांगुलि स्थितास्थितांगुलि अव्यक्तांगुलि.

6. 1*a* प वि र इ हं इत्यादि—वांशस्वरो जातः; कथंभूते 1*b* व ज्जि य सु सि रे वादित. सुषिरे, सु अ त्थ सु इ शाश्वताः श्रुतयश्च, 3*a* थि ये त्यादिना चतुःश्रुतिकादिस्वराणामुत्पत्तिप्रक्रियां प्रदर्शयति, स्थितमुक्तांगुलिः स्वरे इव, सु अ ह सु इ चतुःश्रुतिकः. 4*a* कंपमानयांगुल्या उद्गतस्त्रिश्रुतिकः; 4*b* मुक्तांगुल्या जातो द्विश्रुतिकः, 5*a* व त्तं गु ली त्यादिनोत्पत्तिक्रमेण प्रत्येकं चतुःश्रुतिकादीनां नामानि कथयति, व्यक्तांगुलः सुषिरोपरिस्थितांगुलः; 6*b* सा म ण्ण स रं त र स ण्णि य ए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्तः. 7*b* अ द्ध ए मु क्क ए अं गु लि य ए अर्द्धया मुक्तया अंगुल्या; सामान्यसंज्ञितः स्वरो निषादः अंतरसंज्ञितो गांधारः 9*a* तं ती र णि उ वीणावाद्यं तच्च द्विविधं. 9*b* णि क्क लु ते प्प वि निष्कलं त्रिपंच. 10*a* घ णु इत्यादि—घनं वाद्यं कांस्यतालयुगलादिकं. 10*b* स मे त्था दि—समं यौगपद्येन हस्तं दत्त्वा यत्र रंगे वादितं. 12*a* उ प्प ण्ण इत्यादि—उत्पद्यमानो हि नादः प्रथमतः उ र ठा णं त र ए उरोलक्षणस्थानविशेषे उत्पद्यते ततः कंठे ततः शिरसि. 12*b* बा वी स वि

सु इ उ द्विश्रुतिकयोः द्वयोः चतस्रः श्रुतयः त्रिश्रुतिकयोः षट् चतुःश्रुतिकानां त्रयाणां द्वाविंशतिश्रुतयः; 13*a* क म र इ य प मा ण हिं क्रमोच्चरितसप्तेश्वरा(?)प्रमाणेनेदं(?); 13*b* व ड्डं तु मंद्रमध्यमतारभेदेन यथाक्रमं उरसि कंठे शिरसि च वर्तमानो नादः स्वरः श्रुतिर्मंद्रादिरूपतया; 14*b* स र स त्त सारिगमादिनामानः सप्ततः स्वराः सप्त ते सु तेषु सप्तस्वरेषु; दो ण्णि जि गा म द्वावेव च ग्रामौ, षड्जग्रामो मध्यमग्रामश्च; ग्रामः समुदायः. कस्मिन्ग्रामे कियत्यो जातयः संभवंतीत्याह 15 सु रे त्यादि सुरैः पूज्यः स ज्ज ए षड्जग्रामे; जा इ उ जातयः स त्त प उ त्त उ सप्त प्रयुक्ताः शुद्धाश्चतस्रः, जायंते पुष्टिं लभंते स्वरा आभ्य इति जातयः. 16 म ज्झि म ए मध्यमे ग्रामे, तिस्रः शुद्धा अष्टौ संकीर्णाः.

7. 2*a* जा इ णि ब द्ध हं तासु जातिषु निबद्धानां. 2*b* ल क्ख वि सु द्ध हं गीतप्रयोगविशुद्धानां. 3*a* अं स हं अंसानां; स उ चा ली सा हि य उ शतं चत्वारिंशदधिकं. 3*b* ए कु त्त र तं पि चत्वारिंशदधिकशतं एकोत्तरं; प सा हि य उ प्रसाधिताः. तथा हि अष्टादशजातिषु यथाक्रमसंभवमेको द्वौ त्रयश्चत्वारि पंच षट् सप्त चासंमतो(?)मिलिता एकोत्तरचत्वारिंशदधिकशतसंख्या भवंति. 4*b* गी य उ गीतयः शुद्धेत्यादिनामानः; पं च उ उ प्प ण्णि य उ पंचोत्पन्नाः, किंस्वरूपास्ता इत्याह 5*a b* ऋजु(?)भिर्ललितैः शुद्धाः सूक्ष्मैर्व्यक्तैश्च भिन्नकाः। स्वरैर्दृढतरैर्गौडी द्रुतैर्वेगैरिति वेसराः। सर्वासां उक्तियोगात् गीतिः साधारणा स्मृता. 6*a* त हिं इत्यादि तासु शुद्धादिगीतिषु तत्संबंधत्वेनापरे परिग्रामरागाः त्रिंशद्गणिताः, तत्र शुद्धगीतिसंबंधत्वे सप्त(?)गणनया सप्तग्रामरागाः भणिताः, भिन्नगीतिसंबंधत्वेन त्रिगणनया पंच वेसररागाः समेवमेते. 7*a* क मे ण जि कथितशुद्धादिगीतिसंबंधक्रमेणैव संगृहीताः समाहिताः त्रिंशत्. 7*b* उ डु मा ण ऋतुप्रमाणाः षडेव. 8*a* प हि ला र उ तेषु मध्ये प्रथमः टक्करागः. 8*b* अ णु वे क्खा स म मा स हिं सा हि उ द्वादशभाषासमन्वितः; उक्तं च-कोलाहला मालववेसरा च सौराष्ट्रिका च त्रवणोद्भवा च । स्यान्मालवा सैधविका च ताना ततः परं पंचमलक्षिता च । भाषा मध्यमंद्रा च ललिता वेगरंजिका। त्रवणा टक्करागस्य द्वादशैताः. 9*a* अ ट्ठे त्या दि—आभीरी मागधी सैंधवी कौशिकी सौराष्ट्री गौर्जरी दाक्षिणात्या त्रवणा चेत्यादि अष्टभिर्भाषाभिस्सहितः; 9*b* बि हि मित्यादि द्वाभ्यामेव विभाषाभ्यां अंधालीभावनिकाभ्यां सविभूषितः. 10*a* आ वा हि ये त्या दि—आवाहिता आकारिता, मोहिता विह्वलीकृता जगत्त्रिलयाश्रियः. 10*b* हिंदोलकश्चतसृणां मालववेसरिका गौडी छेवट्टिका कंबोजी चेत्यर्भाषा निलयः स्थानं. 11*a* मा ल वे त्यादि मालवाभ्यां विभाषाभ्याम्. 12*a* भि ण्णे त्यादि—भिन्नषड्जेऽपि शुद्धा त्रवण(?)मालली सैंधवी ललिता श्रीकंठी दाक्षिणात्येति सप्तभिः भाषाभिः कलितः युक्तः. 12*b* क क ह इत्यादि ककुभोऽपि, आभीरी रगती भिन्नपंचमी चेति त्रिभिर्भाषाभिः; सं च लि उ संचलितो युक्तः. 13 सु इ ली ण उं श्रुत्यनुप्रविष्टः. 14 म णे त्या दि मनोहरारामकृति मल्लकृतिः डोंबकृतिः गौडकृतिरित्येवमादयः; दा वि य उ दर्शिताः.

8. 1–2 द हे त्यादि—दश चतुर्भिर्गुणिताश्चत्वारिंशत्संख्या समुदितानां भाषाणां भणिता तथा षडपि विभाषाः; 3*b* ए या र हे त्यादि—एकादशा एकविंशति षड्जादिग्रामत्रये प्रत्येकं, सप्त सप्त मूर्च्छना इत्येकविंशति; मूर्च्छंति उच्छ्रयमुन्नतिं लभन्तेश्वरा(?) आभ्य इति मूर्च्छना, उत्तरमंद्रा उत्तरायता रजनी अश्वक्रांता सौवीरी कालोपनता सुमध्यताः पौरवीत्यादयः. 4*a* ए कु णे त्या दि—स्वरस्य तननात्प्रयोगविस्तारात्तानाः अग्निष्टोम-राजसूय-अश्वमेध-वाजपेयादियज्ञनामानस्त्वहा(?)नेयपुण्योत्पन्ने, ते च प्रतिग्रामं मेकोनपंचाशद्भेदाः प्रतिपत्तव्याः, तथा हि सप्ततंत्रीवीणायां प्रत्येकमेकैकतंत्र्या सप्त सप्त स्वराणां तननात्सप्तसप्तगुणिता एकोनपंचाशद्ग्रामे तथा मध्यमग्रामादावपि. उक्तं च-साम(?)श्वयं च सप्त नामैकैका भजते यतः। अत एकोनपंचाशत्क(?)स्तौ सहोदिताः ॥ 5*a* सं जो य ता णु तथा हि षड्जग्रामे

सप्तसई(?)नानां षाडवोडंबिना, काकलि अंतरं काकल्यंतरं; स्वरसंयोगे सति पंचत्रिसप्त योगताना भवंति, एवं मध्यमग्रामेऽपि; 7a ते र हे त्या दि त्रयोदशविधं शीर्षं प्रनर्तितं प्राकृतशीर्षं च(?)ज्यते. 7b तथा षट्त्रिंशद्दृष्टिभिर्युक्तमेतच्च प्रागेव व्याख्यातं. 8a ण व ता र उ नव ताराकर्माणि। तदुक्तं—भ्रमणं चलनं पातो चलनं संप्रवेशनं। विवर्तनं समुद्वृत्त निष्काम: प्राकृतं तथा,॥ 8b अ ट्ठ वीत्यादि अष्टौ परिचिता दर्शनगतय:, उक्तं च-सम्मसप्पनुवृत्तं च आलोकित प्रलोकितोल्लोकितैरवलोकित(?) सा तिर्यक्. (?) 9b णं दे त्यादि—नवनंदास्तत्प्रकारं पुट(?)पक्ष्मपटकर्म दर्शितं उन्मेषश्च निमेषश्च प्रसृतं कुंचितं सर्वर्तितं सस्फुरित पिहितं सविताडितं. 10a भु म स मे य भ्रू समभेदा; 10b छव्विहेत्यादि—तत्र नासा षड्विधा, उक्तं च-नता मंदा विकृष्टा च सोच्छ्वासा सविकूणिता। स्वाभाविकी चेति बुधै: षड्विधा नासिका: स्मृता:॥ तथा कपोलं षड्विध-क्षामं फुल्लं च पूर्णं च कंपितं कुंचितं सममित्यभिधानात्, तथा अधर: षड्विध:; तदुक्तं-विवर्तनं कंपनं च विसर्गो विनिगूहनं। संदष्टकं समुद्गश्च षट्कर्माण्यधरस्य च ॥ 11a म स वि हु चि बु उ समचिबुकं, च उ मु ह हु रा य कुट्टन ख(?)रागा: स्वाभाविकप्रसन्नश्च रक्त: समर्थानुरोधत: प्रयोजनवशात्. 11b नव गला नव ग्रीवानृत्यानि उक्तलक्षणानि; च उ स ट्ठि वि क र ण भा व चतु:षष्टिरपि हस्तभेदा: पताक: कर्तरीमुख: अर्द्धचंद्र: आराल: शुकतुंड: खटकामुख: पद्मकोश: चतु(?)रश्च भ्रमर इत्यादय:. 12a सो ल ह वि हु सर्वहस्तानां षोडशविधं कर्म। तथाहि आकंपनं कर्षणं च उत्कर्षणमथापि च। परिग्रहो निग्रहश्च आह्वानं नोदनं तथा॥ सश्लेषश्च वि(?)योगश्च रक्षणं मोक्षणं तथा। छेदनं भेदनं चैव स्फोटनं मोटनं तथा। ताडनं चेति विज्ञेयं ना(?)ज्ञै: कर्मकराश्रित; तथाहि सर्वोऽपि हस्तप्रचारस्त्रिप्रकारो भवति, तदुक्तं-उत्तान: पार्श्वगश्चैव तथाधोमुख एव च। हस्तप्रचारस्त्रिविधो नाट्यवृत्तसमाश्रय:॥ च उ वि ह वि सर्वमपि हस्तकर्म चतुर्विधं भवति, उक्तं च-अपवेष्टितमेकं स्यात् उद्वेष्टितमथापरम्। व्यावर्तितं तृतीयं च चतुर्थं परिवर्तितम्॥ 12b भु उ द ह वि हु वि भुजवृत्तमार्गो दशविधोऽपि कृत:, उक्तं च-तिर्यग् ऊर्ध्वगतिश्चैव तथाधोमुख एव च। आविद्धश्च प्रविद्धश्च मंडल: स्वस्तिकं तथा॥ अंचित: क्षुंधनश्चैव पृष्ठतश्चेति ते दश. 13a ऊ रु स र वि हु उरोनृत्यं शरविधं पंचप्रकारं, उक्तं च- नतं समुन्नतं चैव प्रसारितविवर्तिते। तथापसृतमेवं तु पार्श्वकर्मापि पचधा॥ 13b पो ट्ट वि पा य ड्डि य उ तं ति वि हु—क्षाम खलं च पूर्णं च संप्रोक्तमुदरं त्रिधा। इत्यभिधानात्. 14a क डि य लेत्यादि कटीतलजंघाक्रमकमलानि त्रीण्यपि। तत्र कटी तावत्पंचप्रकारा, तथा हि-छिन्नावनिवृत्ता च रेचिता कंपिता तथा। उद्वाहिता चेति कटी नाट्ये वृत्त्येव पंचधा॥ तथा जंघा पंचधा। उक्तं च-आवर्तिता अंत:क्षिप्तमुद्वाहितमथापि च। परिवृत्तिस्तथा चैव जंघाकर्मापि पंचधा॥ तथा क म क म ला इं पंचधा। उक्तं च-उद्वाहित: समश्चैव तथाग्रतलसंचर:। अंचित: कुंचितश्चैव पाद: पंचविध: स्मृत:॥ 15b च ले त्यादि—चला द्वात्रिंशदंगहारा मिता परिच्छिन्ना यत्र करणान्यंगहाराश्च प्रागेव कथितानि. 16a च उ रे य य चत्वारो रेचका:, तदुक्तं-पादरेचक एक: स्याद्द्वितीय: कटिरेचक:। तृतीय: कर(?)स्वस्थस्य ग्रीवायां च चतुर्थक:॥ 16b स त्ता र ह पिंडी बं ध कय–ऐश्वरी वा(?)ज्जं भोगिनी सिंहवाहिनी ऐरावती मान्मथी पद्मा पिंडीत्यादि सप्तदश पिंडीनां बंधा: कृता:. 17a चा रि उ सो ल ह दु य सं ज्ञि य उ चार्य: षोडश द्विकसंख्या द्वात्रिंशत्संख्या:. 18a वी स वि मं ड ल इं प या सि य इं अतिक्रांतं विचित्रं ललितं संचरं अलातकं आक्रांतं आकाशगामि इत्यादि संचारिभिर्भावै: स्थायिभिश्च प्रागुक्तलक्षणैरुद्धृतैरनेकैर्नृत्यति.

VII.

[The death of Nīlamjasā brought about a change in Risaha's outlook of the world. He thought that everything in the universe was impermanent, momentary, helpless, solitary ; the soul has to pass through a series of births and deaths, and experience sufferings, commits sins and thus prolongs his wanderings in saṃsāra. If the soul therefore wants to secure his good, he should first stop doing sinful activities so that his stock of already acquired acts does not increase, and he should practise penance in order to exhaust the stock of old acts. Thus thinking, Risaha decided to renounce the worldly life. Gods at this juncture arrived there to encourage him in his resolve and requested him to propagate the Jain doctrine. Risaha then put his son Bharata on the throne of Ayodhya, gave Poyanapura to Bāhubali, and sat in a palanquin to leave the worldly life. This event was celebrated by gods with their presence on the earth. Risaha was followed by his aged parents and by his wives and his ninety-nine sons. He then went to the forest, sat on a slab of stone, and pulled out five handfuls of hair. The hair was received by Indra in a jewelled plate and were disbursed in the milk-ocean. He then took the five great vows and became a naked monk.]

1. 11 तृणहि लवणु जसु उत्तारिज्जइ, a person over whom salt is passed by women, i. e., one who is so much loved by women, is taken down on a grass-bed on his death. It refers to the practice of passing salt over the body of a person that is dear to them by women in the house. It also refers to the practice of taking down the dead body from its usual bed and of placing it on straw.

2. 6a पण्णारहखेत्तुब्भव, born in fifteen कर्मभूमिs, i. e., five in भारतवर्ष, five in ऐरावतवर्ष, and five in विदेह. It is in one of the कर्मभूमिs that a man is able to attain any state after death as a result of his acts. 12 तियरणु चरित्तु, activities of mind, body and speech (त्रिकरणं चारित्र).

7. 11-12 पसु फाडिवि etc.—If a person, i. e., a Brahmin, can obtain emancipation by eating the flesh of animals and by drinking wine, what is the use of Dharma ? Wait upon a hunter (who does exactly the same things.)

10. 8*a* जाउ मसाणहु तं मणुयत्तणु—Let this human life go to the burial place, as we say in Marathi मसणात जावो, i. e., I care a straw for the human life.

11. 1*a* तिण्णयारसंठाणय, the world is divided into three sections each having a different shape ; the region of demons and creatures in hell has the shape of an earthen plate (शराव) turned downwards : the region of human beings and lower animals has the shape of a वज्रमणि ; the region of gods has the shape of a मृदङ्ग. 9*a* मोक्खु वि आयवत्तसंठिहयरु, the place or region for emancipated souls has the shape of an umbrella.

12. 4*a* पासुलियातुलाहिं, by beams made of ribs.

13. 1*a* णाणावरणिउ पंचपयारउ—Acts which obscure knowledge are of five types, viz., मतिज्ञानावरणीय, श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्यायज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय. See उत्तराध्ययनसूत्र xxxiii. 4. 5*a* णवविहदंसण, acts which obscure दर्शन fall under nine heads:—निद्रा, निद्रानिद्रा (deep sleep), प्रचला (drowsiness), प्रचलाप्रचला (heavy drowsiness), स्त्यानर्धि (somnambulism), चक्षुर्दर्शनावरणीय, अचक्षुर्दर्शनावरणीय, अवधिदर्शनावरणीय and केवलदर्शनावरणीय. See उत्तराध्ययन, xxxiii. 5–6. For other divisions of कर्म see the same text and Appendix II in Miss Helen Johnson's translation of Triṣasti. 13 तिगइ i. e., पाणियुक्ता, लाङ्गली and गोमूत्रिका, straight, curved and zigzag movements.

14. 12–13 पिहियासवदारहु etc.—If a person stops all sources of sin and conducts himself properly, new acts do not enter the soul, and those acts which long remained with it are destroyed by bodily sufferings as they do not get any nourishment.

15. 2*b* होमि दियंबरु, I shall be a naked monk. The emphatic and express mention of this term here and also in 26. 15*b* below and at several other places shows that the work is written from the point of view of the Digambara Jains. 10*b* दव्वाइवित्तिसंखाविण्णासहिं by particular permutations and combinations of morsels of food obtained by begging. It refers to the various भिक्षुप्रतिमाs in which food is regulated on the basis of counting the दत्ति or dole obtained or the morsels to be eaten. See below 16. 3*a*.

16. 12–13 जिह दयणिज्झरणें etc.—Just as a pond is dried up by the rays of the sun, and also when water already therein is drained and the influx of it is stopped by building dams (बद्धे वरणें), in the same way acts

done in various births are exhausted by the control of senses (which prevents the influx of sinful acts) and by the practice of penance (prescribed for a monk).

19. 1*b* अणुवेक्खाओ, reflections of twelve types on the momentoriness, impurity etc. see तत्त्वार्थाधिगम, IX. 7.

21. 4*a* सोणंदियहु, to the son of सुणन्दा, i e. बाहुबलि. सुणन्दा is the second wife of रिसह.

24. 7*b* जसवइणदउ, i. e., जसवई and सुणन्दा, the two wives of रिसह.

26. 16 The passage gives the date of the निष्क्रमण which is the ninth day of the dark half of Caitra with उत्तराषाढा नक्षत्र.

VIII.

[Risaha thereafter began to practise the life of a Jain monk and observe the rules of conduct prescribed for him. Nami and Vinami, sons of the kings of Kaccha and Mahakaccha and his brothers-in-law, came to him in the forest, and after having greeted him, said that Risaha did not assign to them even a small portion of the earth when he divided it among his sons. Risaha, of course, as a monk, could not make any reply as he had completely dissociated himself from the affairs of the world. The king of snakes at this juncture felt a tremor and learnt by his अवधिज्ञान how Risaha was placed in a difficult situation. He therefore came to him, saw Nami and Vinami standing before him and said to them that Risaha had told him (the king of snakes) before he (Risaha) renounced the worldly life, that when they would come to him and ask for a portion of earth, the king of snakes should assign to them the southern and northern slopes, belonging to Vidyādharas, of the Vaitadhya mountain. The king of snakes then showed to them the various cities situated on the slopes, saved Risaha from the awkward situation and went home.]

1. 9*b* मयसिंमिरइं, मदस्य सैन्यानि, T. I think that सिमिर comes from शिबिर, camp of the army, but is loosely used to designate army. 12*b* सुइवइण्णी, consisting of pure vows (शुचिव्रतयुक्ता). 19 थिउ सग्गहु etc.—He stood, standing as if he was the path leading to heaven as also to emancipation (य + अपवग्गहु).

2. 1–4 विसयवमा etc.—Those great warriors who took vows of asceticism simultaneously with Rishaha, were sinking (भग्गा) in a few days' time as they were unable to bear unpleasant contacts, were frightened by terrific tigers, lions, and Sarabhas, and were overcome by tortures of thirst and hunger.

6. 7*b* सालएहिं, by his brothers-in-law. 9*a* पर नेण विमुक्क घरत्थकम्मु, but he has left all activities of a householder. 12*a* कूरमुट्ठि, a handful of cooked rice.

7. From line 6 to 20 note the दामयमक or शृंखलायमक. The sets of a large number of दुवईs, constituting a kadavaka, is not rare in this work, although normally दुवई forms only its opening couplet. The passage describes the commotion caused by the coming out from the nether world of the king of snakes. 26 जीहहिं दहसयसंखहिं, with his thousand (tentimes hundred) tongues. P reads दुसहससंखहिं which means two thousand tongues as the tongues of snakes are cut into two when they licked nectar lying on the darbha grass on the occasion of its distribution.

11. 8*b* रसवाइ व मइं णिवड्डियसुवण्णु, like the alchemist who always attempts to prepare gold out of baser metals, the mount वेयड्ढ always showed gold.

12. 15*b* सुय दूयत्तणु हलिणिहि करंति, parrots act as messengers of ploughing women to carry their love-messsages to their lovers.

13. 9*b* The passage gives the list of fifty cities situated on the right side of वेयड्ढ which are assigned to नमि.

14. 5*a* The passage gives the list of cities situated on the left hand side of वेयड्ढ which were assigned to विनमि. The cities are enumerated from west to east (वारुणामासुहाओ).

IX.

[Risaha then spent six months in meditation, and controlled the activities of his mind completely. He considered that reduction of food was one of the best means of attaining purity. He therefore decided to accept food which would be free from forty-six flaws, and pure from nine points of view. The principle of his life was that food exhausts

the body, this reduction of food constitutes penance, this penance controls senses, the control of senses exhausts all acts which event leads to emancipation. He therefore practised these rules of life, and while wandering on the earth came to Gayapura where king Somaprabha, the son of Bāhubali, was ruling. His younger brother, Seyaṃsa, saw in a dream the previous night objects like sun, moon etc. and told this dream to his brother. The fruit of this dream was that some great person was to visit his house. In fact Risaha did arrive the next day to his house to break his fast. Prince Seyaṃsa thereupon offered him reception and a jar of sugar-cane juice, which Risaha accepted. There was a divine voice to proclaim "what a noble gift!". Risaha thereafter proceeded with his wanderings and in due course obtained the fourth knowledge called Manapajjavanāṇa, knowledge by which minds of others are known. He then proceeded to Nandanavana, and under a banyan tree acquired the Guṇasthānas, and in due course attained kevalajñāna by which he was able to see the entire universe. Gods arrived at this juncture to celebrate the event, and built up a samavasaraṇa on the occasion. All the thirty-two Indras graced it with their presence. They then offered prayers to Risaha.]

1. 7 उज्झिउ आहाकम्मुद्देसर्हि, food which is to be offered to Jain monks should be free from flaws such as आधाकर्म, which the marginal note explains as नीचं कर्म स्वयंपाकादिकम, but elsewhere it is explained as आधानं आधा साधुनिमित्तं चेतसः प्रणिधानं तस्याः कर्म पाकादिक्रिया, तद्योगाद् भक्ताद्यपि आधाकर्म. 15*a* पाणिपत्ति, in the plate, viz., the palm. 17 ए णर, these men, i. e., his followers who became monks along with him.

3. 3*a* ससिप्पहाणुजम्मिणा, by the younger brother of ससिप्पह, i. e., सोमप्रभ, the son of बाहुबलि. 3*b* भवाणुबद्धधम्मिणा, by one who stored meritorious deeds in the previous births.

4. 15*b* भुवणिबंधु, भुजानिबन्धः, arms.

5. 5*a* भाहहु तुम्हहं महणि दिण्णी, by whom the earth was given to Bharata and to you, i. e., to Somaprabha and Sreyāmsa, of course through their father Bahubali.

6. 2 सिरिमइवज्जजंघजम्मंतरावयारो, the incidents in the sixth previous birth of Risaha when he was born as वज्जजंघ and his consort was सिरिमई. At that time सेयंस was the charioteer and knew that वज्जजंघ (or वज्रनाभ)

was destined to be the first तीर्थंकर. For details see Hemacandra, Trisasti, III. 284–287 and also this work XXIV.

7. 16*a* सद्दहाणु णव पंचहं सत्तहं, i. e. faith in nine पदार्थs, five अस्तिकायs and seven तत्त्वs. 18*a* देसचरित्तालंकिउ, marked by a partial observance of the vows, as in the case of a householder who takes the अणुव्रतs and not the महाव्रतs.

9. 2 दाययदेज्जपत्तववहारसारमग्ग, principles in essence of the classification of the donor (दायय, दायक), the gift (देज्ज, देय) and the receiver (पत्त, पात्र). 11–12असणेण तणु etc.—food helps the body to practise penance, penance produces forbearance, forbearance results in the removal of impurities, the removal brings about kevalajñana, which in its turn secures bliss. Compare for the objects of begging alms :—

वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥

—पिण्डनिर्युक्ति, 662

11. 8–9 तहु दिवसहु etc , the day on which Seyamsa served alms to Rsaha was the third day of the bright half of वैशाख, which day, even now, is called अक्षय्यतृतीया. The passage explains the Jain view why the day is so called.

12. 7*a* पंचवीसवयमायउ, the mothers of the vows which are the twenty-five भावनाs. Compare तत्त्वार्थाधिगमसूत्र, VII. 4–8.

15. 10*b* अप्पमत्ति गुणठाणि व लग्गउ, he stuck to अप्रमत्तगुणस्थान which is the seventh गुणस्थान. This गुणस्थान enables the monk to possess 18000 शीलाङ्गs. The monk is engaged in धर्मध्यान and there is a beginning of शुक्लध्यान. 11*b* खणि अउव्वु आरूढउ तावहिं, he then rose to अपूर्वकरणगुणस्थान which is the eighth. शुक्लध्यान is now fully developed here. 13*b* अणियट्टिहि छत्तीस जि जित्तउ, in the अनिवृत्तिबादरगुणस्थान, which is the ninth, he conquered the thirty-six kinds of कर्म. 14*a* सुहुमसंपरायउ पावेप्पिणु, having acquired the सूक्ष्मसंपरायगुणस्थान which is the tenth, he destroyed the संज्वलनलोभ. 15*a* पुणु जायउ उवसंतकसायउ, he then pacified his passions. उपशान्तमोह is the eleventh गुणस्थान. 16 खीणकसायचरिउ पडिवण्णउ, he reached the क्षीणकषाय or क्षीणमोह गुणस्थान which is the twelfth where the second शुक्लध्यान begins. In this गुणस्थान the monk destroys sixteen कर्मप्रकृतिs, viz., five ज्ञानावरणीय, six out of nine दर्शनावरणीय and five अन्तराय. At this stage he attains केवलज्ञान, and becomes a सयोगिकेवली which is the thirteenth गुणस्थान.

20. 7*a* अक्खयधारिणि, अक्षयानां सिद्धानां धारिका सिद्धिवधूः, T. 14*b* धणए समवसरणु किउ तावहिं, at that time Kubera built a meeting place for gods etc. who arrived there to celebrate the attainment of Kevalajñāna by Risaha.

X.

[Indra and other gods glorified Jina on his attaining the Kevalajñāna. Jina also possessed twenty-four more atiśayas or excellences as a result of this knowledge. At this juncture a report was brought to Bharata that his father obtained the kevala, that the cakraratna has made its appearance in his armoury and that his queen got a son.—King Bharata was hesitating for a moment whether he should first see his son, or cakra or father, but ultimately decided to see his father, went to him and praised him and thereafter returned home.

On seeing that the Jina has obtained the kevala, pious persons, desirous of attaining emancipation from samsara went to him. To them the Jina began to describe categories of Jiva and Ajīva. He first explained the six pajjattis, i. e., faculties to develop, then the lower species of animals, then the lower animals with five senses, then the number of dvīpas and samudras and finally the dimensions of their bodies.]

2. 3 अइसय दह etc. The Jina had already ten atiśayas from his birth such as निःस्वेदत्व etc., but when he attained केवल, he got twenty-four more as a result of his knowledge. They are described here and in the following kaḍavaka.

4. 3*a* दहकुमार i. e., ten gods belonging to the class of भवनपति.

5. 1–8 The Jina is here described in terms of the epithets of god Siva but is shown superior to him, e. g. वामाविमुक्क, god Śiva is always associated with his consort, but the Jina is devoid of her. 9–13. Similarly the Jina is shown superior to Brahmā, and in 14–17 to Viṣṇu.

9. 4*a* चउरासिलक्खजोणिहिं परिभमन्ति, तथा नित्येतरनिगोदयोः पृथिव्यप्तेजोवायुकायानां च प्रत्येकं सप्त योनिलक्षाणि, वनस्पतिकायिकाना दश, द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणां प्रत्येकं द्वे द्वे, सुरनारकतिरश्चां चत्वारि, मनुष्याणां चतुर्दशेति, तदुक्तम्—

णिच्चिदरधादु सत्त य तरु दस वियलिंदिएसु छच्चेव ।
सुरणरयतिरिय चदुरो चोद्दस मणुए सदसहस्सा ॥ T.

6-7 आहार...पज्जत्ति त्ति भणंति एत्थु. The passage defines पर्याप्ति as a faculty which helps the development. These पर्याप्तिs are six, viz. आहार, eating food and digesting it; सरीर, body, इंदिय, sense-organs; आणापाण, breathing; भासा, speech, and मण, mind.

19. 11 सुहुमणिगोयसमुब्भवहं, of those that spring from the subtle णिगोय or निगोद; this निगोद is a physical body with infinite lives or souls.

XI

[The Jina proceeds further to define the functions of different sense-organs and creatures that possess them. He then mentions the duration of their life. After a general description of the Geography of the Jambūdvīpa and other dvīpas with their rivers and mountains and antaradvīpas, the Jina proceeds to describe the human species with their characteristics and capacities. He then goes on to detail the heavenly regions and gods. He explains the fourteen Guṇasthānas, the various prakṛtis of karman, the characteristics of the Siddhas and their happiness. On hearing the discourse the eighty-four lacs of princes renounced the worldly life and became monks who were then called his Gaṇadharas. Similarly Bambhī and Sundarī became the first nuns of the Order. Only Marīci remained unenlightened. The first lay disciple was Suyakitti and the lady disciple was Piyaṃvayā or Priyaṃvadā. The first disciple to obtain emancipation was Aṇantavīra.]

6. 6*b* वयगुणियउ, multiplied by वय i. e. five, because there are five vows.

8. 9-10 मइरंगहिं etc. The passage gives the names of the ten कल्पवृक्षs.

9. 2*b* णिरूह, परामर्शशून्याः, T., incapable of guessing or imagination.

10. 4 सावयवयहलेण सोलहमउ सग्गु लहइ माणुसु, a human being obtains the sixteenth heaven as a result of his vows of a Śrāvaka. The sixteen heavens are: सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण and अच्युत. According to the Śvetāmbaras the number of heavens is twelve, which number they obtain by dropping from the above list ब्रह्मोत्तर, कापिष्ठ, शुक्र and शतार.

11. 10 राम उड्डगइ etc. The passage says that the nine बलदेवs or रामs are destined to obtain heavens while the nine वासुदेवs are destined to go to hells.

17. 8*b* चंगउ कउलु तुज्झु वक्खाणइ, the creatures in hell are made to drink as wine hot liquid juice of metals like copper. When they are so made to drink it, the keepers of hell say to them ironically that they were well taught by the Kāpālikas not to observe the vows and as they followed their advice they suffer the miseries in hell.

22. 1*a* अद्धकविट्ठसरिसंसंठाणइं, the shape of the heavenly abodes resembles the कपित्थ fruit cut into two.

25. 12 पडिचारु, attendance, service, or cure.

26. 3*b* अतुलसोक्खु णिहिल्लहु अहमिंदहु, all अहमिन्द्रs enjoy happiness for which there is no parallel.

29. 8-15 मग्गणठाणइं चोद्दसभेयइं etc. The passage gives the list of fourteen Guṇasthānas. They are :—मिथ्यात्व, सास्वादनसम्यग्दृष्टि, (सासण of our text) सम्यङ्मिथ्यादृष्टि (मीसु of our text), अविरतिसम्यग्दृष्टि, देशविरति (विरयाविरउ of our text), प्रमत्त, अप्रमत्त, अपूर्वकरण (अउव्वउ of our text) अनिवृत्तिबादर (अणियट्टि of our text), सूक्ष्मसंपराय (सुहुमराउ of our text), उपशान्तमोह (उवसंतु of our text), क्षीणमोह (परिक्खीणकसाय of our text), सयोगिकेवलि (सजोइजिण of our text), and अयोगिकेवलि (अजोइ of our text). For details see Miss Johnson's Triṣaṣṭi Appendix III. Pages 429–436.

32. 5*b* अडयालीसउं सउ, i e. one hundred and thirty-eight प्रकृतिs of कर्म. In the Guṇasthānas from number four to seven, one hundred and thirty-eight कर्मप्रकृतिs are destroyed. They are : ज्ञानावरणीय 5, दर्शनावरणीय 9, वेदनीय 2, मोहनीय 21, आयुः 3 (i. e. नारक, तिर्यक् and देव), नाम 93, गोत्र 2, and अन्तराय 5. The total of these comes to 138 as stated above. 11*a* अट्ठमपुहईवहि, i. e., on the सिद्धभूमि or सिद्धशिला.

35. 12*b* एक्कु मरीइ णेय पडिबुद्धउ, only मरीचि who is the son of भरत and grandson of ऋषभ, was not enlightened as he was overcome by दर्शनावरणीयकर्म and मोहनीयकर्म. The Śvetāmbara version says that he, by his boasting and pride, was not fit to obtain सम्यक्त्व. See Hemacandra, Triṣaṣṭi, VI. 385–390.

XII.

[Now Bharata started on a campaign for the conquest of the six continents of the earth or Bhāratavarṣa. In the season of autumn, when the sky was clear and the roads dry, he saluted the holy beings and after going round the cakra, made some gifts to the needy and the poor. He consulted his ministers, took a huge army and, led by the cakra, proceeded to the eastern direction. After crossing the Ganges he went to the shore of the eastern ocean and wanted to conquer the Māgadha Tirtha. He first observed a fast and then took his bow and discharged the arrow in the direction of that region. The arrow was dropped down in the house of the king who was very much enraged at its sight. He was however pacified by his minister by saying that it was no use thinking of waging war against a Cakravartin, that Bharata was the Cakravartin of the Bhāratavarṣa and that it would be well for all to pay tribute to him and to accept his sovereignty. The king of Magadha Tirtha did accordingly.]

1. *3a* छुडु छुडु, immediately, quickly. 15–16 सारयमयलंछणु etc. If the autumnal moon that pleases the heart of men by its lustre, had not been spotted or spoiled by the deer-mark, I would have given it (this very moon) as the simile, i. e, I would have compared, the fame of the Jina to it (the moon)

5. 30 साडी णं हिमवंतहो, the river Ganges looked like the upper garment of the mount Himavat. The next three Kaḍavakas contain a fine description of the river.

12. 12 खंधुद्धरियडिंभया, the Kirāta chiefs carried their children on their shoulders as is the custom with them.

14. 12 णत्थि सहवाहु ओसहु, there is no cure for nature. Compare proverbs like स्वभावास औषध नाहीं in Marathi.

19. *2a* विविहणिहिसरासु, to the master of various Nidhis or treasures. The Nidhis are nine in number and their names are:—नैसर्प, पाण्डुक, पिङ्गल, सर्वरत्नक, महापद्म, काल, महाकाल, माणव and शंखक. For the functions of these Nidhis see Hemacandra, Triṣaṣṭi, IV. 574–782 and also below XVIII. 15. 6–10. *2b* णियकालवट्टसंधियसरासु, to one who has fixed an arrow

to his bow named कालवट्ट or कालपृष्ठ. Miss Johnson's note (see page 223 of her Tran. of Trisasti) on this word is not justified in view of this evidence which is quite independent of Hemacandra. 7b तो तुम्हइं णउ अम्हइं मि देव, my lord, in that case there will remain neither we nor you. Compare तुम्हीही नाहीं आणि आम्हीही नाहीं in Marathi.

XIII.

[King Bharata then proceeded to the South and arrived at the entrance to the region belonging to Varatanu (of Varadāma Tīrtha). He again performed a fast, and after it discharged an arrow which fell in the house of Varatanu. King Varatanu immediately came to Bharata with a tribute and accepted him as his sovereign. Thereupon Bharata proceeded towards the west, came to the entrance of the river Sindhu. There too he practised a fast, and having penetrated the Lavaṇasamudra, discharged an arrow at the king of Prabhāsa Tīrtha. The king arrived and accepted Bharata as his sovereign. Bharata thereafter conquered different countries such as Mālava etc., and thus established his rule over the entire Aryan region. Thereafter Bharata proceeded to Vijayārdha or Vaitādhya mountain to complete his conquest of the remaining three continents or Khaṇḍas.]

1. 4a सिमिरं समुच्छलइ, the camp of the army is making rapid movements. 23 वइजयंतिणियडे, in the neighbourhood of वैजयन्ती, i. e., a narrow strip of water or channel of the sea through which access to the sea is possible.

2. 13 दीवकवाडइं विहडिवि थक्कइं, the gates of different dvīpas or islands in the लवणसमुद्र stood opened before him, i. e., as soon as Bharata recollected the holy chant, it was certain that his enemies would be defeated and the dvīpas conquered.

4. 3a सहमंडवि वरतणुहि, in the court-room of वरतणु, the king of वरदामतित्थं. Hemacandra does not mention the name of the king in his Trisasti.

9. 20 पहासें, by the king of the Prabhāsa Tirtha, situated at the confluence of the river Sindhu and the sea.

10. 1*a* सुरसिंधुसरिहि देहलिय धरिवि, i. e., regions standing between the Ganges (सुरसरि) on the east and the Sindhu on the west. 5*a* अज्जखंडु, the continents where the Aryans live. 14*a* विजयद्धहु संमुहु, towards the विजयार्ध mountain. This is another name of mountain Vaitāḍhya as can be seen from lines 24–25 below where it is said that the mountain विजय divides the earth into three Khaṇḍas on either side and crosses the continent from east to west.

XIV.

[After having conquered the three southern continents King Bharata came to Vaitāḍhya and encamped there. A god arrived there and requested him to strike the opening of a cave in the mountain so that he would obtain passage through it to the other side. Bharata then ordered his general to do accordingly. When he struck it the cave burst open causing great excitement among its residents. The guardian deity of the mountain came out with presents to Bharata who stayed there for six months. He then directed his disc to proceed through the cave and the army to follow it, but it was very difficult to pass through it because of darkness The general of the army then took the Kāgani gem and wrote out on the walls of the cave the sun and the moon. With their light the army proceeded further and came to the region of snakes or Nāgas. Two rivers stood on the way of the army but the Sthapati or the engineer prepared a bridge or dam and the army went further. Āvarta and Kirāta, two Mleccha kings, finding that their region was invaded, invoked the aid of the king of the Nāgas called Meghamukha (Clouds in the Mouth), who began to pour down rain over the army continuously for day and night. The priest of Bharata brought to the notice of the king how the army was troubled by heavy rain, when he asked his general to use the Carma gem to act as an umbrella for the whole army. The army then attacked Āvarta and Kirāta who then offered tribute to Bharata. Bharata then proceeded towards Himavanta mountain along the course of the river Sindhu, the guardian deity of which offered him a wreath of flowers.]

1. 12*b* जसवइपुत्तें पेसणु आक्खिउ, the son of Jasavai, i. e. king Bharata, then gave orders to his general who is one of the fourteen gems of a Cakravartin.

2. Note that the four lines of the Daṇḍaka have a दामयमक.

3. 5b तग्गिरिंदणामो, bearing the name of that mountain, viz. विजयार्ध. 26 आरासयफुरियउ, sparkling with a hundred spokes.

5. 3 इय चिंतिवि etc. The general then took up the कागणि gem, and with it wrote out the moon and the sun.

6. 8b सविण्णाणिणा संकमेणं कएणं, with the help of a dam (संकम, संक्रम) or bridge built by the clever engineer, i. e., स्थपतिरत्न.

XV.

[Thereafter Bharata proceeded along the Himavanta mountain. Sitting on a seat of darbha grass he observed a fast and at the end discharged his arrow at the guardian deity of that mountain. The deity at first was inclined to wage war with the warrior who discharged the arrow, but on reading the name of Bharata decided to pay tribute to him. He came to Bharata and offered him presents. Bharata also, in return, made some presents to him and sent him away. Proceeding further Bharata came to Vṛṣabha Mountain He found that all the four sides of the mountain were filled with names of the kings of the past and there was hardly any space there for Bharata to write out his name. He however wrote his name there and thus completed his conquest of the six continents of the Bhāratavarṣa. Gods praised him on the occasion. He proceeded further along the foot of the mountain Himavanta and in due course arrived on the banks of the Ganges. The deity of the Ganges then appeared before Bharata, bathed him with her waters, offered him presents by way of tribute and was then sent away duly honoured by him in return. He then came to the cave Timisā of the Vaitāḍhya mountain and asked his general to strike open its gates as before and halted there for six months. God Nattamāli who used to stay there, came and paid tributes to Bharata. The cave however did not become passable to Bharata, when his ministers told him that his maternal uncles, Nami and Vinami, lived on the slopes of the mountain as lords of the Vidyādharas, and it was on their account that Bharata could not proceed further till they allowed him passage Bharata then sent messengers to them who told them to pay tribute to Bharata, if not as kings, at least as his relatives. Both of them

agreed to do this and paid homage to Bharata. The Kāgaṇi gem then produced light with the help of which the army was able to proceed. Then Bharata came to the mountain Kailāsa where the Jina, his father, was practising penance. On seeing him he offered him prayers.]

2. 11*b* वइसाहट्ठाणु, a posture in which left knee is placed on the ground and the right knee is half bent with its top up. This posture enables the archer to discharge the bow with the greatest possible force.

4. 9*b* परिच्छेयवंताइं, well-defined, clearly written, readable. 16*a* जो जियइ सो जियइ etc. he who lives under or abides by the command (of Bharata) (alone) can live, the other will surely die.

6. 15 वसमइ संदुलिय, the earth is like a wanton lady who would not mind going with the father and after him with the son.

7. 12*b* को एम ससंकि णाउं थवइ, who will, like you, put his name, i. e., write his name, on the moon? It was considered to be the highest glory to write one's name on the moon. 18 तुज्झु समाणु तुहुं, you are like yourself, i. e., there is nobody who is like yourself.

12. 5–14 The passage compares the river, सरि, and the बल or army, both called by a common name वाहिणी, by a series of expressions bringing out their common characteristics

13. 2*b* तिमीसहि दुग्गमहे, तिमिसा or तामिस्रा is a dark cave through which Bharata had to pass along with his army.

15. 6*b* धरणेण, by धरण, the king of snakes who gave on behalf of ऋषभ, the towns to नमि and विनमि.

17. 7*b* अम्हहं पुणु दइयंबरिय गइ, to us there will be the mode of life peculiar to sky-clad monks. The expression दइयंबरिय indicates the sectarian attitude of the present work along with several other similar expressions like sixteen heavens.

22. 10 महिहरु महिहरहु etc. the mountain (महिहर, महीधर) certainly observes all formalities towards a king (महिहरहु).

XVI.

[Having saluted the Jina, Bharata got down from the Kailāsa mountain and then proceeded in the direction of Ayodhyā, and having crossed various countries he came to gates of the city. The disc or Cakra however did not enter the city but stood outside it. His priest then told him that it did not enter the town because Bāhubali, his younger brother, was not yet conquered and thus his conquest of the world remained still incomplete. Bāhubali was very strong and might even defeat Bharata, but he kept quiet so long. Similarly his other brothers also did not pay tribute to him. On hearing this Bharata got angry and sent messengers to his brothers to accept his sovereignty. They declined to do that but went to Kailāsa mountain and become monks. Bāhubali on the other hand would not accept the sovereignty of his brother and challenged Bharata to fight with him].

1. 2 साकेयहु संमुहु, towards Sāketa, i. e. Ayodhyā, of which it is another name. See Geographical Dictionary of Nundo Lal Dey. 12*a* कुंकुमेण छडउछड, sprinking with water mixed with saffron. छडउछड is a Deśi word. Compare सडा in Marathi. 19 सट्ठिहिं वरिससहासहिं, after sixty thousand years which was the period taken by Bharata for his conquest of the world.

4. 10 अज्ज वि ते etc., in as much as they are not yet won, the cakra does not enter the town. The idea is that the disc cannot enter the town unless the conquest is complete.

6. 12*a* किं किर वण्णिएण कंदप्पें, how can one describe (fully) god of love or Cupid? Bāhubali, the son of Risaha, looked like god of love and the poet says it is not possible to do justice to his beauty by a description.

7. 11–11 जइ जम्मजरामरणाइं हरइ etc.—we shall pay homage to King Bharata if he can ward off birth, oldage and death from us, if he can save us from birth in fourfold species or from saṃsāra.

11. 7*b* ब्रुहसंगमु, i. e., बुधसंगमः, company of the wise. Note the appearance of रेफ in the word as sanctioned by Hemacandra, IV. 399.

18. 12*a* काउ कंदलावलिहि म विरसउ, let not the crow cry on the skulls of your head. The crying of a crow over the head is considered as a sign of approaching death. 13*a* देहि कप्पु, pay tribute or homage to Bharata.

21. 4*a* जो बलवंतु चोरु सो राणउ, he becomes a king who is the strongest or most powerful thief. A successful thief becomes a king while an unsuccessful one is called a robber or traitor.

24. 14 धवलाइं जि णिरु धवलइं, on the sandy banks of the Ganges the wings of swans and cheek of ladies away from their lovers, which are already white, became whiter when bathed in the rays of the moon.

XVII.

[Bharata then declared that if he does not kill Bāhubali because it would be an offence to his father, he would hold him firm as an elephant is held in chains. The armies of both Bharata and Bāhubali met and trumpets blown and drums beaten, when Bāhubali said to his ministers that he would not move a step from his place but would stop the progress of Bharata's army. When their armies were about to strike, the ministers stood between them and adjured them not to discharge an arrow, and then requested both Bharata and Bāhubali not to engage themselves into a war which would lead to the destruction of poor soldiers, but that they should fight with each other in three ways, viz., they should fix their gaze on each other so that none would move his eye-lashes, that they should strike each other with water, and that they should go in for a wrestling match till one holds or weighs the other on his arms. Both of them agreed to fight accordingly. But in all the three forms of fight Bāhubali came out victorious. When Bharata was lifted up by Bāhubali, he thought of his cakra which immediately went round Bāhubali and stood by the right hand side of Bharata. Bāhubali thereupon dropped his brother Bharata on the ground.]

1. 2 णंदाणंदणहो, of the son of णंदा, i. e., सुणंदा, i. e., बाहुबलि.

2. 9*b* पडिवक्खणाहि, with the lord or prominent member of your enemy. 10 ऊणेण हएण etc. There is no gain by killing a low man,

and therefore Rāhu, the eclipsing planet does not get angry with stars.

4. 14 सरवरपंतिहि वरणु णिबंधमि, I shall build a dam (to stop the progress of the army) by a series of arrows, having the shape of snakes (णायायारहिं).

5. 13 ण एवहिं मज्झमि, I do not behave well when I am with you, i. e., it is not right for me to indulge in pleasures when my king is marching against his enemy णिमुज्झमि, shall pay off, shall redeem, shall clear off.

8. 10 कुड्डि णाइं आलिहियइं, as if drawn in picture on a wall.

9. 3*a* बिण्णि वि जण, both of you. Compare दोन्ही जण in Marathi. 13 रणु तिविहु, threefold fight, viz., gazing at each other without winking; splashing water against each other so as to overpower one; and a wrestling match in which one would weigh the other on his arms.

11. 5 हेट्ठिल्ल दिट्ठि etc., The lower eye, i. e the eye of Bharata, was conquered by the upper eye, i. e. the eye of Bahubali, whose glance was steady, fixed and unwinking.

12. 6*b* भिसाहारपूरंतचंचूचओ, in which the beaks of cakora birds were being filled with eatable stalks of lotus 12 वियलइ उप्परि मेहलहे, would just fall (slightly) above the waist but would not cover his face.

14. 5 पीलिज्जउ तेरउ उच्छुचाउ etc. Let your bow of sugar-cane be crushed, let (people) drink its juice, or let (them) eat the sweet raw sugar (गुल्, गुळ). Bāhubali had his bow made of sugar-cane and hence the reference. 10 ता भणइ जइणि etc., Then the son of Jina i. e. Bāhubali said: why do you talk in vain? why do you ridicule my bow and arrow?

15. 10*a* अलंभुयजुज्झविण्णाणमग्गाइं, hundred ways of wrestling.

16. 8*b* ता चिंतिउ चक्कु सुकंधरेण, then the fine-necked (Bharata) thought of his cakra or disc, saying to himself that he could not in reality be a cakravartin if he was to be so overcome by his younger brother.

XVIII

[Having lifted Bharata on his arms and thus defeated him for the third time, Bāhubali felt that he insulted his elder brother and cakravartin. He therefore asked Bharata to forgive him for the offence and desired to be a monk. Bharata however did not like to have the kingdom when he remembered that he had been defeated by his younger brother in the presence of the army, relatives and women. He therefore offered his kingdom to Bāhubali and desired to renounce the worldly life. Bāhubali could not agree. The ministers also intervened and Bāhubali placed his son on the throne, and went to Kailāsa mount to practise penance. He practised penance there for one year when Bharata himself came to see him and praised him. Bāhubali however, remained indifferent to the praise and was engrossed in acquiring the qualities which a Jain monk should acquire. In course of time he attained Kevalajñāna. Gods headed by Indra came to him and praised him. Bharata also was glad to hear the news that his brother had become a Kevalin. Thereafter he enjoyed perfect sovereignty over the six continents of the earth.]

2. 11 हउं जित्तउ पइं तुहुं मइ खमिउ, I was defeated by you, and you have *once* (सइ, सकृत्) forgiven me.

3. 1–3 जइ पइं etc. If you, after having lifted me by your arms, had thrown me on the ground with a crash, if it had not been possible for my disc to save me, would any body have seen me alive ? You have thus won or conquered even earth in forgiveness; you have frightened Indra (कसिउ, कौशिकः, i. e., इन्द्र) by your valour. 10–11 ससि सूरहो, etc, To the sun there is a counterpart in the moon; to the Mandara mountain there is (small) Mandara ; to Indra there is Pratīndra, but O son of queen Nandā (i. e., सुनन्दा), to you alone I do not see any second or counterpart.

5. 6 जइ एवहिं etc. If even after this (talk) you do not desire to have the earth, i. e., do not desire to rule over the earth, then return it to him who gave it to you, i. e. to Risaha, our father. It means Bāhubali is quite unwilling to rule and asks Bharata to rule as before.

6. 7 पइं मेल्लिवि etc. Hatred (दोसु, द्वेषः), having left you, now stands in the form of a dark spot on the moon who is called दोसायर, दोषाकर (दोस + आयर, आकर).

7. 9*a* वयसमिदि, i. e. five समितिs viz., इरिया, भासा, एसणा, आदाण and उच्चार. Note that the word समिदि often retains द in this book as also ठिदि in the next line. 9*b* आवासयजोउ, practice or observance of the six आवश्यकs, viz, सामाइय, चउवीसइत्थव, वन्दण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग and पच्चक्खाण.

10. This kadavaka and the next record that Bāhubali, as monk, acquired the knowledge of certain tenets of Jainism and practised them. These tenets are arranged in numbers from one to thirty-two. A similar mention of these tenets occurs in the Uttarādhyayana Sūtra, XXXI, and also in this book in XXXVII 15–17. I think it is a good occasion for me to treat them here fully.

(1) एक्कहु जीवहु गुण मणि भाविय, he cultivated in his mind the quality of Jīva which is one, i. e., solitariness, as nobody can share the effects of acts done by him. This गुण may be उपयोग as defined in तत्त्वार्थसूत्र II. 8 (उपयोगो लक्षणम्), or better still, the एकत्वभावना. In the Uttarādhyayana Sūtra however we find:

एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च संजमे य पवत्तणं ॥ XXXI. 2

i. e., one should practise abstinence in one respect, and advancement in the other; i e., Jīva should abstain for असंजम, indisciplined life, and advance with self-discipline.

(2) राय रोस दोण्णि वि उड्डाविय, he sent away, (lit: made to fly) both राग and रोष. The Uttarā. however mentions राग and द्वेष which is more in keeping with the usual list. Our text certainly reads रोस in all Mss.

(3) (a) तिण्णि वि सल्लइं हियउद्धरियइं, he removed from his heart the three शल्यs, viz., मायाशल्य, निदानशल्य and मिथ्यादर्शनशल्य.

(b) तिण्णि वि रयणइं लहु संभवियइं, he soon acquired the three jewels, viz , सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन and सम्यक्चारित्र.

(c) तिण्णि वि डंभ मुक्क संखेवें, he left quickly (संखेवें, सङ्क्षेपेण, शीघ्रम्) the three types of crookedness, viz, bodily, verbal and mental. The Uttarā. has मनोदण्ड, वाग्दण्ड and कायदण्ड in place of डंभ of our Text.

(d) गारव तिण्णि विवज्जिय देवें, the divine one, i. e. Bāhubali, avoided three गारवs (गौरव), viz., गिद्धिगारव, रसगारव and सायागारव. The Uttarā. adds three उपसर्गs here:

दिव्वे य जे उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई जयई न से अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥

(4) चउगइकम्मणिबंधणरमियउ सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ, he suppressed or pacified the four appetites or emotions, viz., आहार, भय परिग्रह and मैथुन, which take delight as it were in forming कर्म which puts the Jīva in the fourfold संसार, viz., देव, नारक, तिर्यक् and मनुष्य. The Uttarā. has:

विगहाकसायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं न से अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥

There are four विकथाs, viz. राज्य, देश, भोजन and स्त्री. there are four कषायs, viz., क्रोध, मान, माया and लोभ; the four संज्ञाs are mentioned above; the four ध्यानs are आर्त, रौद्र, शुक्ल and धर्म out of which first two types are bad.

(5) (a) पंच महव्वयाइं, the five great vows of the monk, viz., अहिंसा, अदत्तादानवर्जन, असत्यवर्जन, परिग्रहत्याग, and ब्रह्मचर्य.

(b) पंचासवदारइं, the five sources of sin, viz., हिंसा, अदत्तादान, असत्य, परिग्रह and मैथुन.

(c) पंचिंदियइं कयाइं णिरत्थइं, he avoided the (enjoyment of) objects of five senses, viz., शब्द, स्पर्श, रूप, रस and गन्ध.

(d) पंच वि णाणावरणाइं गंथइं, he (cut off) the knots of five types of ज्ञानावरणीयकर्म viz., श्रुतज्ञानावरणीय, आभिनिबोधिकज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्यायज्ञानावरणिय and केवलज्ञानावरणिय.

(6) (a) छावासयउज्जमु सविसेसिउ, he made a special effort to observe the six आवश्यकs, viz., सामाइय, चउवीसइत्थव, वन्दण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग and पच्चक्खाण.

(b) छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ, he manifested kindness or compassion towards six classes of living beings, viz., पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु, वनस्पति and त्रस.

(c) छह लेसहं परिणामु वइट्ठइं, he got stopped the effect of the six लेश्याs, viz., कृष्ण, नील, कपोत, तेजस्, पद्म and शुक्ल.

(d) छ वि दव्वइं पच्चक्खइं दिट्ठइं, he saw or realised all the six entities, viz., धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल, जीव and काल.

(7) (a) सत्त भयाइं हयाइं गहीरें, the serene one (i. e. Bāhubali) destroyed the seven fears or risks, viz., इहलोकभय, परलोकभय, आदानभय, अकस्माद्भय, आजीवभय, मरणभय, and अश्लोकभय.

(b) सत्त वि तच्चइं णायइं धीरें, the wise one knew all the seven truths, viz., जीव, अजीव, आस्रव, संवर, निर्जर, बन्ध and मोक्ष.

(8) (a) अट्ठ वि मय णिट्ठविय अदुट्ठे, the unsoiled one exhausted or destroyed all the eight prides, viz., जातिमद, कुलमद, बलमद, रूपमद, तपोमद, ऐश्वर्यमद, श्रुतमद, and लाभमद.

(b) अट्ठ सिद्धगुण सरिय वरिट्ठें, the excellent one remembered the eight qualities of the सिद्ध्स, viz.,

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुहुमं तहेव अवगहणं ।
अगुरुलहुमव्वाबाहं अट्ठ गुणा होन्ति सिद्धाणं ॥

—सिद्धभक्ति, २०

शुद्धात्मादिपदार्थविषये विपरीताभिनिवेशरहितः परिणामः क्षायिकसम्यक्त्वमिति भण्यते । जगत्त्रयकालत्रयवर्तिपदार्थयुगपद्विशेषपरिच्छित्तिरूपं केवलज्ञानं भण्यते । तत्रैव सामान्यपरिच्छित्तिरूपं केवलदर्शनं भण्यते । केवलज्ञानविषये अनन्तपरिच्छित्तिशक्तिरूप अनन्तवीर्यं भण्यते । अतीन्द्रियज्ञानविषयत्वं सूक्ष्मत्वं भण्यते । एकजीवावगाहप्रदेशे अनन्तजीवावगाहदानसामर्थ्यमवगाहनत्वं भण्यते । एकान्तेन गुरुलघुत्वस्याभावरूपेण अगुरुलघुत्वं भण्यते । वेदनीयकर्मोदयजनितसमस्तबाधारहितत्वादव्याबाधगुणश्चेति ॥

—परमात्मप्रकाशटीका

(9) (a) णवविहु बंभचेरु परिपालिउ, he observed the ninefold celibacy, viz.,

इत्थिविसयाहिलासो अङ्गविमोक्खो य पणिदरससेवा ।
संसत्तदव्वसेवा तहिन्दियालोयणं चेव ॥ १ ॥
सक्कारपुरक्कारो अदीदसुमरणमणागदहिलासो ।
इट्ठविसयसेवा वि य णवभेदमिदं अबम्भत्तं ॥ २ ॥

—T. in Ms. K.

Devendra's Com. on Uttarā. XXXI. 10 however gives the nine rules of celibacy as follows:

वसहि कह निसिज्जिन्दिय कुड्डिन्तरपुव्वकीलिय पणीए ।
अइमायाहार विभूसणा य नव बम्भगुत्तीओ ॥ १ ॥

(b) णवपयत्थपरिमाणु णिहालिउ, he realised the extent of nine entities, viz., जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, and मोक्ष.

(10) दसविहु जिणधम्मु वियाणियउ, he knew the tenfold qualities of the Jina, viz.,

खन्ती य मज्जवज्जव मुत्ती तव संजमे य बोद्धव्वो ।
सच्चं सोयं आकिंचणं च बम्भं च जइधम्मो ॥ १ ॥

(11) एयारह इयजडिमउ अवियारहं धीरहं सावयहं...पडिमउ, he also understood the eleven प्रतिमाs which lay disciples practise. These eleven प्रतिमाs are :—

दंसण वय सामाइय पोसह पडिमा अबम्भ सचित्ते ।
आरम्भ पेस उद्दिट्ठवज्जए समणभूए य ॥

For details see my notes on Uvāsagadasāo, pages 224–229.

(12) बारह भिक्खुहे पडिमउ, he also knew the twelve प्रतिमाs of the monks. These are described in Devendra's Com. on Uttarā. XXXI 11, as follows :—

मासाई सत्तन्ता पढमा बिइ तइय सत्तराइदिणा ।
अहराइ एगराई भिक्खुपडिमाण बारसगं ॥ १ ॥

The duration of the first भिक्षुप्रतिमा is one month, of the second two months and so of the seventh seven months; of the eighth one week, of the ninth two weeks, of the tenth three weeks, of the eleventh one day and night, and of the twelfth one night. There are several things which the monk practising these प्रतिमाs is called upon to observe. Devendra describes them as follows :—

पडिवज्जइ एयाओ संघयणधिईजुओ महासत्तो ।
पडिमाउ भावियप्पा सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ ॥ १ ॥

गच्छे च्चिय निम्माओ जा पुव्वा दस भवे असंपुण्णा ।
नवमस्स तइयवत्थु होइ जहन्नो सुयाभिगमो ॥ २ ॥

वोसट्ठचत्तदेहो उवसग्गसहो जहेव जिणकप्पी ।
एसण अभिग्गहीया भत्तं च अलेवडं तस्स ॥ ३ ॥

गच्छा विणिक्खमित्ता पडिवज्जइ मासियं महापडिमं ।
दत्तेग भोयणस्सा पाणस्स वि तत्थ एग भवे ॥ ४ ॥

जत्थत्थमेइ सूरो न तओ ठाणा पयं पि संचलइ ।
नाएगराइवासी एगं व दुगं व अन्नाए ॥ ५ ॥

दुट्ठस्सहत्थिमाईण नो भएणं पयं पि ओसरइ ।
एमाइनियमसेवी विहरइ जावण्णिओ मासो ॥ ६ ॥

पच्छा गच्छमईई एव दुमासी तिमासि जा सत्त ।
नवरं दत्तीवुड्ढी जा सत्त उ सत्तमासीए ॥ ७ ॥

नत्तो य अट्ठमीया भवई हु पढम सत्तराइंदी ।
तीइ चउत्थचउत्थेणऽपाणएणं अह विसेसो ॥ ८ ॥

दोच्चा वि एरिस च्चिय बहिया गामाइयाण नवरं तु ।
उक्कुड लेगंडसाई दण्डायय उड्ढ ठाइत्ता ॥ ९ ॥

तच्चाए वी एवं नवरं ठाणं तु तस्स गोदोही ।
वीरासणमहवा वी ठाएज्जा अंबखुज्जो हु ॥ १० ॥

एमेव अहोराई छट्ठं भत्तं अपाणयं नवरं ।
गामनगराण बहिया वग्घारियपाणिए ठाणं ॥ ११ ॥

एमेव एगराई अट्ठमभत्तेण ठाण बाहिरओ ।
ईसीपब्भारगए अणिमिसनयणेगदिट्ठा य ॥ १२ ॥

(13) (a) तेरह किरियाठाणइं मुणियइं, he understood the thirteen क्रियास्थानs, which are enumerated below:

अट्ठाणट्ठा हिंसाऽकम्हा दिट्ठी य मोसऽदिन्ने या ।
अज्झत्थ माण मेत्ती माया लोभेरियावहिया ॥ १ ॥

For details of these see सूयगड II. 2.

(b) तेरहमेय चरित्तइं गणियइं, he also conuted upon the thirteen types of good conduct, viz, पञ्चास्रवसंवर, पञ्चसमिति and गुप्तित्रय

(14) (a) चोद्दह गंथ, he avoided the fourteen knots which are enumerated in T. as follows :—

मिच्छत्तवेदरागा तहासादिया (?) य छद्दोसा ।
चत्तारि तह कसाया चोद्दह अब्भन्तरा गन्था ॥ १ ॥

(b) (चोद्दह) मला वि समुज्झिय, he avoided the fourteen impurities enumerated in T. as follows :—

नहरोमजन्तुअट्ठी कणकोंडयपूयचम्ममंसरुहिराणि ।
बीय फलकन्दमूलानि मला चोद्दसा होन्ति ॥ १ ॥

(c) चोद्दह भूयगाम सहं बुज्झिय, he understood fourteen groups of creatures. These fourteen groups are enumerated in T. as follows :— एकेन्द्रियाः सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदाच्चत्वारः, द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः पर्याप्तापर्याप्तभेदात् षट्, पञ्चेन्द्रियाः संज्ञ्यसंज्ञिपर्याप्तापर्याप्तभेदाच्चत्वारः इति चतुर्दशविधो भूतग्रामः ।

बादरसुहुमे इन्दियदुतिचतुरिन्दियसन्नीया ।
पज्जत्तापज्जत्ता...चतुदस भूदसंगामा ॥ १ ॥

(15) (a) पण्णारह पमाय मेहेंवें, abandoning the fifteen प्रमाद्s or flaws, enumerated in T. as follows :—

विकहा तह य कसाया इन्दिय निद्दा य पणगो य ।
चउ चउ पण एगेगं होन्ति पमाया हु पण्णरसा ॥ १ ॥

i. e., four types bad talk, viz. राज्यकथा, देशकथा, भोजनकथा and स्त्रीकथा, four कषाय्s, viz., क्रोध, मान, माया and लोभ, faults of five senses, sleep and drink (पणग, पानक ?).

(b) पण्णपावभूमिउ जाणेंवें, knowing the (fifteen kind of) regions where men act (to acquire merit and demerit), viz., five in each of भारत, इरावत and विदेह.

(16) (a) सोलहविह कसाय पसमेंवें, pacifying the sixteen forms of passions. T. notes these as : कषायाः क्रोधमानमायालोभाः प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाः सन्तः षोडशविधा भवन्ति.

(b) सोलहविहवयणेम रमेंवें taking delight in sixteen types of expressions. T. records them as follows :—काललिङ्गवचनानि प्रत्येकं त्रीणि नव, तथा वि (?) कोनमिश्रवचनानि त्रीणि समयलोकदृष्टपरोक्षवचनानि चत्वारीति षोडश. The Uttarā. has गाहासोलसएहि which refers to the sixteen lessons of the first volume of सूयगडं of which the sixteenth is called गाहज्झयणं.

(17) असंजमोह सत्तारह, seventeen types of असंयम, indiscipline ; Devendra has enumerated these as follows :—असंयमे सप्तदशभेदे पृथिव्यादिविषये, तत्संख्यात्वं चास्य तत्प्रतिपक्षस्य संयमस्य सप्तदशभेदत्वात् । यत उक्तम्—

पुढवि-दग-अगणि-मारुय-वणप्फई-बि-ति-चउ-पणिन्दिअज्जीवे ।
पेहोपेहपमज्जण-परिठवण-मणो-वई-काए ॥

T. has the following explanation : पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियाणामनिलेखन (?) दुष्प्रतिलेखनापहृत्योपेक्षानि (?) जीवमनोवाक्कायाः अपहृत्य (?) गृहीताण्डादिजन्तून् प्रतिलेख्ये (?) उपेक्षा (?)... । अथवा—

पञ्चासवेहि विरमणं पञ्चिन्दियनिग्गहो कसायजओ ।
तिहि दण्डेहि य विरई संजमो सत्तरसभेओ ॥

तत्प्रतिषेधाद्संयमः सप्तदशविधः.

(18) जाणिवि संपराय अट्ठारह, having known eighteen types of संपराय viz., ten यतिधर्मs such as क्षान्ति etc., five समितिs and three गुप्तिs.

(19) एउणवीस वि णाहज्झयणइं, having known nineteen lessons or chapters of the book on Illustrations (नाय-ज्ञात or न्याय ?). This is clear-

ly a reference to the sixth Aṅga of the Jain Canon which in the Śvetāmbara tradition forms the first part of the नायाधम्मकहाओ. This book consists of two parts Nāyas, Jñātas or illustrations and धम्मकहा or sacred narratives. Our Mss. invariably read इ so that our reading is नाहज्झयणाई. This reading is supported by T. also. Uttarā. reads नायज्झयणेसु. The change of Sk. त to इ is not unusual, compare भरह for भरत. It also appears that ज्ञात or न्याय constituted at one time an independent work of the Canon to which a small section of धम्मकहा might have been added later. The present text of the नायाधम्मकहाओ in the Śvetāmbara Canon contains nineteen sections called नायs and are named as :

उक्खित्तनाए संघाडे अण्डे कुम्मे य सेलए ।
तुम्बे य रोहिणी मल्ली मायंदी चन्दिमा इय ॥ १ ॥
दावद्दवे उदगनाए मण्डुक्के तेयली इय ।
नन्दिफले अवरकङ्का आइन्ने सुंसु पुण्डरिए ॥ २ ॥

—Devendra on Uttarā XXXI. 14.

It appears that in the Digambara tradition there was also a book of the sacred canon called नाह or णाह ; it contained nineteen lessons as in the Śvetāmbara tradition, but the names of the Nāhas with the Digambaras had a different order as can be seen from the list given below :—

1. उक्कोडणाग constituted the first अज्झयण. The story as given in T. is as follows:—उक्कोडणाग श्वेतहस्ती । अस्य कथा । उत्तरापथे कनकपुरे राजा कनको, महाराज्ञी कनका । पुत्रो नागकुमारः तपो गृहीत्वा विहरमाणः अटव्यां दावानलेन दह्यमानः समाधिना मृत्वा अच्युतेन्द्रो जातः । तदर्धदग्धकलेवरं दृष्ट्वा तुङ्गभद्रो नाम तत्रत्यो भिल्लो जातपश्चात्तापो मृत्वा तत्रैव श्वेतगजो जातः । सोऽच्युतेन्द्रेण जिनधर्मं ग्राहितः पुनर्दावानलेन दह्यमानं शशकं स्वपादतले स्थितं रक्षित्वा (दह्य) मानोऽपि दह्यतो भूत्वा मृत्वा देवो जातः. If we compare this narrative with the one in the first ज्ञात called उत्क्षिप्तज्ञात of the Śvetāmbara version, we shall see that there is no reference there to a Bhilla being taught by अच्युतेन्द्र, although there is agreement in that the elephant saved the life of a rabbit that crept under his foot. It thus appears that the Digambara version of the narrative may have been different from the Śvetāmbara one.

2. कुम्म—This is second in the Digambara tradition, but fourth in the Śvetāmbara one. T. gives the narrative as follows:—कुम्म कूर्माख्यानम् । यथा कूर्मेण मुखचरणसंकोचं कृत्वात्मनो श्रागालान्मरणं निवारितं तथा मुनिभिरपि पञ्चेन्द्रियसंकुचितैर्मरणपरंपरा निवारयितव्या.

3. अंडय—This is the third ज्ञात in both the versions. T. says:—अण्डजकथा पञ्चप्रकारा। तद्यथा कुक्कुटकथा मातापेयेका पिताप्येकः इति। तापसपल्लिकास्थितशुककथा। चारणाख्यव्याकरणवेदकशुककथा। अगन्धनसर्पकथा। हंसयूथबन्धनमोचक कथा. In the Śvetāmbara version we get only one story of the eggs of a peahen and not five as T. seems to indicate.

4. रोहिणी—This is the seventh story in the Śvetāmbara version while it is fourth in the Digambara one. T. reads: सुपुत्रबलदेवेन सह रोहिणी तिष्ठतीति लोकप्रवादं श्रुत्वा रोहिण्या भणितं यद्यसौ शुद्धा तदा यमुनानदी शौरिपुरं वेष्टित्वा पूर्वाभिमुखं वहत्विति। तन्माहात्म्यात्तथैव जातम्। The story in the ज्ञाताधर्मकथा is altogether different.

5. सेल—This seems to correspond to सेलए which is the fifth narrative in the Śvetāmbara version. T. reads: शेषे शिष्यकथा यथा चेलिणीपुत्रवारिषेणप्रतिबोधितः पुष्पडालः. The story in the ज्ञाताधर्मकथा is altogether different.

6. तुंब (and not रुय as read in foot-notes)—This is the sixth story in both the versions. T. reads: तुम्बकथा रोषेण दत्तकटुककुभोजनमुनिकथा. The story in the ज्ञाताधर्मकथा is different as can be seen from its summary in the com. which runs as follows:—

जह मिउलेवालित्तं गरुयं तुम्बं अहो वयइ एवं।
आसवकयकम्मगुरू जीवा वच्चन्ति अहरगयं॥ १॥
तं चेव तव्विमुक्कं जलोवरिं ठाइ जायलहुभावं।
जह तह कम्मविमुक्का लोयग्गपइट्ठिया होन्ति॥ २॥

7. संघाद—This is called संघाड and is the second in the Śvetāmbara version. T. reads:—संघादे। अस्य कथा। कौशाम्ब्या नगर्यामिन्द्रदत्तादयो द्वात्रिंशदिभ्याः, तेषां समुद्रदत्तादयो द्वात्रिंशत्पुत्राः परस्परमित्रत्वमुपागताः। सम्यग्दृष्टयस्ते केवलिसमीपे स्वल्पं निजजीवितं ज्ञात्वा तपो गृहीत्वा यमुनातीरे पादोपयान (पादपोपगमन ?) मरणेन स्थिताः। अतिवृष्टौ जातायां जलप्रवाहेण यमुनामध्ये सर्वेऽपि ते पातिताः। परमसमाधिना कालं कृत्वा स्वर्गं गताः. The narrative in ज्ञाताधर्मकथा is altogether different from the above.

8. मादंगि—It appears that मायन्दी which is the ninth story in the Svetāmbara version should be the counterpart of मादंगि of the Digambara version. T. seems to make मादंगिमल्लि as one narrative which would however reduce the number of narratives to eighteen. T. reads: मादंगिमल्लिकथा यथा वज्रमुष्टिमहाभटभार्याया मंगि (मादंगि ?) नामायाः मल्लिपुष्पमालाभ्यन्तरस्थितसर्पदष्टायाः कथा. The narratives of the Śvetāmbaras and the Digambaras do not at all agree.

9. मल्लि—This is the eighth narrative in the ज्ञानाधर्मकथा. For remarks see above.

10. चंदिमा—This is the tenth narrative in both the versions. T. says: चंदिमा चन्द्रावधकथा (चन्द्रवृद्धिकथा). Perhaps both the versions give the same narrative.

11. तावद्दुव—The eleventh narrative in the Svetāmbara version is called दावद्दव which is the name of a tree in that version. T. however seems to mean a different story. T. reads: तावद्दुव–तापद्रवदेशोत्पन्न-घोटकहरणसगरचक्रवर्तिकथा.

12. तिका—It appears that this तिका should correspond with तेयली which is the fourteenth story is the ज्ञानाधर्मकथा. T. reads: तिका मनुष्यकरोटि-समुत्थितवंशाग्निकस्य कर्कण्डमहाराजस्तच्छत्रे ध्वजाङ्कुशदण्डकथा. The Śvetāmbara version of तेयली does not seem to agree with the above.

13. तडाया—This seems to correspond to दद्दुर which is the thirteenth story is the Svetāmbara version. T. reads: तडाया तडागपान्यामेकवृक्ष-कोटरस्थिततपस्विनो गन्धर्वारघनकथितकथा. This has no correspondence with दद्दुर of the Svetāmbara version.

14. किन्न (आकीर्ण ?) —This seems to be आइण्ण of the Svetāmbara version which is the seventeenth story there. T. reads: वाह्निमर्दनस्थितकर्षक-पुरुषसत्यकथा. This story also does not seem to have any correspondence with the Śvetāmbara version.

15. सुसुकेय—This should correspond with सुंसुमा of the Svetāmbara version which is the eighteenth story there. T. reads: आराधनाकथितसुंसु-मारद्रहनिक्षिप्तपाणकथा. There seems to be no agreement between the two versions.

16. अवरकंके—This is called अवरकंका in the Svetambara version where also it is the sixteenth narrative T. reads: अवरकंकनामपत्तनोत्पन्न-जनचोरकथा. There is mention of the town of अवरकंका in the Śvetāmbara veraion, but beyond this there seems to be nothing common between the stories in the two versions.

17. नंदिफले—This is called the same in the Svetāmbara version but there it is the fifteenth story. T. reads: अटव्यां स्थितनुपुष्पाणीक्षितधन्वन्तरि-

विश्वानुलोमभृत्यानां किंपाककलकथा. The narrative seems to be similar in both the versions.

18. उदगनाह—This seems to correspond to उदगनाअ of the Svetāmbara version which is the twelfth story there. T. reads: उदगनाह उद्कुनाथ (?) कथा यथा राजामात्यसमक्षगडुककथा. The story seems to be similar in both the versions.

19. पुंडरिगो य—This is the last story in both the versions. T. reads: पुंडरिगो य पुण्डरीकराजपुत्र्याः कथा. The Svetāmbara version seems to be different from the above as will be seen from the extract from the com.

वाससहस्सं पि जई काऊणं संजमं सुविउलं पि।
अन्ते किलिट्ठभावो न विसुज्झइ कण्डरीउ व्व ॥
अप्पेण वि कालेणं के वि जहागहियसीलसामण्णा।
साहिन्ति निययकज्जं पुण्डरीयमहारिसि व्व ॥

T. adds: "अथवा—गुण जीवा प(?)जत्तीपाणासायामग्गणा उ य।
एउणवीसा एदे णाहज्झयणा मुणेयव्वा ॥

अथवा—नव केवललद्धीओ कम्मक्खययं जं हवन्ति दस चेव।
णाहज्झयणा एए एउणवीसा वियाणेहि ॥

कर्मक्षयजाः घातिकर्मक्षयजाः दशातिशयाः. It is clear that the names of the अज्झयणs agree in the two versions largely, but their contents seem to differ widely. Of course this is a mere hypothesis based upon somewhat imperfect evidence of T.

(20). वीसविहइं असमाहीठाणइं–Twenty types or causes of असमाधि, absence of tranquility of mind. These twenty causes are given in Devendra's com. as follows:—

1. दवदवचारी–दुयं दुयं वच्चन्तो इहेव अप्पाणं पवडणाइणा अन्ने य सत्ते वावायणाइणा असमाहीए जोयइ, परलोगे य अप्पयं सत्तवहजणियकम्मुणा असमाहीए जोयइ.

2. अपमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ.

3. दुप्पमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ.

4. अइरित्ताए सेज्जाए आसणे वा निवसइ.

5. राइणिए परिभवइ.

6. थेरोवघाई–सीलाइदोसेहिं थेरे उवहणइ त्ति वुत्तं भवइ.

7. भूओवघाई–अणट्ठाए एगिन्दियाइए उवहणइ त्ति वुत्तं भवइ.

8. मुहुत्ते मुहुत्ते संजलइ.

9. सइं कुद्धो य अच्चन्तकुद्धो हवइ.

10. पिट्ठिमंसिए हवइ.

11. अभिक्खणमोहारिणिं भासइ जहा दासो तुमं चोरो व त्ति.

12. नवाइं अहिगरणाइं करेइ.

13. उवसन्ताणि य उईरेइ.

14. ससरक्खपाए अथंडिलाओ थण्डिलं संकमइ, ससरक्खेहि वा हत्थेहिं भिक्खं गेण्हइ.

15. अकाले सज्झायं करेइ.

16. असंखडसद्दं करेइ राईए वा महया सद्देण उल्लवइ.

17. कलहं करेइ, तं वा करइ जेण कलहो हवइ.

18. तारिसं करेइ भासइ वा जेण सव्वो गणो झञ्झाविओ अच्छइ.

19. सूरोदयाओ अत्थमणं जाव भुञ्जइ.

20. एसणासमिइं न पालेइ.

T. also gives a similar list of twenty causes, but the text is very corrupt.

(21) एक्कवीस सवल वि, i. e. twentyone impurities or impure and sinful acts (शबल). They are given by Devendra as :—

तं जह उ (१) हत्थकम्मं कुव्वन्ते (२) मेहुणं तु सेवन्ते ।
(३) राइं च भुञ्जमाणे (४) आहाकम्मं च भुञ्जन्ते ॥ १ ॥

(५) तत्तो य रायपिण्डं (६) कीयं (७) पामिच्च (८) अभिहड (९) अच्छज्जं ।
(१०) भुञ्जन्ते सबले ऊ पच्चक्खियअभिक्ख भुञ्जन्ते ॥ २ ॥

(११) छम्मासब्भन्तरओ गणा गण संकमं करिन्ते य ।
(१२) मासब्भन्तर तिण्णि य दगलेवा ऊ करेमाणे ॥ ३ ॥

मासब्भन्तरओ विय माइट्ठाणाइं तिण्णि कुणमाणे ।
(१३) पाणाइवायाउट्टिं कुव्वन्ते (१४) मुसं वयन्ते य ॥ ४ ॥

(१५) गिण्हन्ते य अदिन्नं (१६) आउट्टिं तह अणन्तरहियाए ।
पुढवीए ठाण सेज्जा निसीहियं वा वि चेएइ ॥ ५ ॥

(१७) एवं ससिणिद्धाए ससरक्खाए चित्तमन्तसिललेलू ।
कोलावासपइट्ठा कोलघुणा तेसि आवासो ॥ ६ ॥

(१८) सण्डसपाणसबीए जाव उ संताणए भवे तहियं ।
ठाणाइ चेयमाणे सबले आउट्टियाए उ ॥ ७ ॥

(१९) आउट्टि मूलकन्दे पुप्फे य फले य बीयहरिए य ।
भुञ्जन्ते सबले ऊ (२०) तहेव संवच्छरस्सन्तो ॥ ८ ॥
दस दगलेवे कुव्वं तह माइट्ठाण दस य वरिसन्तो ।
(२१) आउट्टिय सीओदगवग्घारियहत्थमत्ते य ॥ ९ ॥
दव्वीइ भायणेण य दिज्जन्तं भत्तपाण घेत्तूण ।
भुञ्जइ सबलो एसो इगवीसो होइ नायव्वो ॥ १० ॥

(22) सहिवि दुवीस दुसज्झ परीसह, having borne twenty-two unpleasant contacts, viz., क्षुत्, पिपासा etc. For details see तत्त्वार्थाधिगमसूत्र IX. 9.

(23) तेवीस वि सुत्तयडइं, i. e. twenty-three chapters of the सूत्रकृताङ्ग, the second Aṅga of the Canon of the Jains, beginning with समयाध्ययन and so forth. T. reads: समए वेदालिजोए उवसग्गं इत्थिपरिणामे निरयन्तर वीरथुदी कुसीलपरिभासिए धम्मो य अग्गमग्गे समसरणं तिकालगन्थसाहयए (?) आदा तदित्था (?) पुंडरीको कीरियट्ठाणे पयआराहेयपरिणामे पच्चक्खाण अणगारगुणकित्ती सुद अत्थ णालन्दे सुदयडज्झयणाणि तेवीसं द्वितीयाङ्गश्रुतवर्णनाधिकाराश्च. It we are to trust the text of T. which is admittedly corrupt, the order of adhyayanas in the Digambara version would be different from the Svetāmbara one.

(24) चउवीस वि जिणतित्थइं—the twentyfour तीर्थs of the twentyfour Jinas.

(25) पञ्चवीस भावणउ—For details see तत्त्वार्थाधिगम, VII 3-8. T. reads: एकैकस्य परिपालनार्थं वाङ्मनोगुप्तीर्वां (?) दानसमित्यादयः पञ्च भावनाः; अथवा, त्रयोदश क्रियाः द्वादश तपांसि च पञ्चविंशतिर्भावनाः.

(26) छव्वीस वि पुहवीउ, the twentysix regions, T. reads: सौधर्मादि-मोक्षपर्यन्ता एका (?) पृथ्वी उत्सर्पिण्योर्भरतैरावतयोरवसर्पिण्यां शुद्धा नाम पृथ्वी भवति । उत्सर्पिण्यां च सैव तारा इत्युच्यते इत्येका पृथ्वी । रत्नप्रभो (?) मौखरभागचित्रादयः (?) पङ्कभागादयः सप्त नरकभूमयः इति षड्विंशतिः पृथिव्यः.

(27) सत्तवीस जइगुण, twentyseven vows of a monk, viz., द्वादश भिक्षु-प्रतिमाः, अष्टौ प्रवचनमातरः, क्रोधमानमायालोभमोहरागद्वेषाणामभावश्च सप्त, T. Devendra however gives a different list :—

वयछक्कमिन्दियाणं च निग्गहो भावकरणसच्चं च ।
खमया विरागया वि य मणमाईणं निरोहो य ॥ १ ॥
कायाण छक्क जोगम्मि जुत्तया वेयणाहियासणया ।
तह मारणन्तियहियासणा य एएऽणगारगुणा ॥ २ ॥

(28) अट्ठवीस पवगयारकप्प—There are twentyeight (?) मूलगुणs as T. says; but Devendra gives them as : प्रकृष्टः कल्पः यतिव्यवहारो यस्मिन्निति प्रकल्पः, स चेहाचाराङ्गमेव शस्त्रपरिज्ञाद्यष्टाविंशत्यध्ययनात्मकम्.

(29) एउणतीस वि दुक्कियसुत्तइं, twenty-nine books of heretics which they believe to be sacred. T. reads : चित्रकर्मादिसूत्रं गणितसूत्रं वैद्यसूत्रं नृत्यसूत्रं गान्धर्वसूत्रं पटहसूत्रं अगदसूत्रं मयसूत्रं द्यूतसूत्रं राजनीतिसूत्रं मजुरंगसूत्रं (?) चतुरंगसूत्रं गजतुरंगसूत्रं पुरुषस्त्रीगोवृषभहृदंगंजनानां (?) लक्ष (लक्षण ?) सूत्राणि अंगं सरं वंजनलक्खणं च छिण्णं वींभोमंसमिणंतरक्खं (?) इत्यष्टाङ्गनिमित्तसूत्राणीति एकोनविंशत्यपसूत्राणि । अथवा

अट्ठारह य पुराणा सडंगविण्णा (विज्जा ?) य लोइयाणं तु ।
बुद्धाइ पंच समया परूवणा जा सुदी लोए ॥ १ ॥

Devendra gives a different list :

अट्ठ निमित्तंगाइं दिव्वुप्पायन्तलिक्खभौमं च ।
अंगं सरं लक्खण वंजणं च तिविहं पुणेक्केक्कं ॥ १ ॥
सुत्तं वित्ती तह वत्तियं च पावसुयमउणतीसविहं ।
गन्धव्वं नट्टं वत्थं आउं धणुवेयसंजुत्तं ॥ २ ॥

For still another list see नन्दीसूत्र under मिच्छासुयं.

(30) तीसविहइं मोहट्ठाणइं, thirty causes or types of infatuation. T. reads : तथा हि–व्रतविषये पञ्चप्रकारो मोहः । पञ्चप्रकारमनुष्यविषये पञ्चप्रकारमोहः । पञ्चप्रकारमनुष्याः भोगभूमिजमनुष्याः विद्याधरत्रिषष्टिशलाकापुरुषमनुष्याः पञ्चदशकर्मभूमिजचतुर्थकालोत्पन्नमनुष्याः भरतैरावतेषु दुःकर्मातिदुःषमकालोत्पन्नमनुष्याः समुद्रमध्यद्वीपोत्पन्नकर्णप्रोचरणादि (कर्णप्रावरण ?) मनुष्याश्च । जीवाजीवास्रवसंवरनिर्जराबन्धमोक्षपुण्यपापानां स्वरूपे नवप्रकारो मोहः । कर्मबन्धनस्वरूपे एको मोहः । द्वादशविधतपःस्वरूपे एको मोहः । दर्शनस्वरूपे एको मोहः । नैगमसंग्रहव्यवहारऋजुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूतानां सप्तनयानां स्वरूपे सप्त मोहाः । व्रतविनाशविषये एको मोहः ॥ अथवा–क्षेत्रात्नस्वरूपा (?) सुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यदण्डलक्षणबाह्यग्रन्थविषयो दशप्रकारो मोहः । मिथ्यात्ववेदरागादिलक्षणाभ्यन्तरग्रन्थविषयश्चतुर्दशप्रकारः । पञ्चेन्द्रियदुष्टमनोविषयः षट्प्रकारो मोहः. Devendra's list is altogether different from this for which see his com.

(31) एक्कतीस मलवाय धुणंतें, shaking off the thirty-one types of impure acts. They are given in T. as follows :—तथाहि ज्ञानावरणीयं पञ्चप्रकारं दर्शनावरणीयं नवविधं वेदनीय सातासातरूपतया द्विभेदं मोहनीयं दर्शनमोहनीयचारित्रमोहनीयभेदाद् द्विप्रकारं आयुश्चतुर्भेदं नाम शुभमशुभं च गोत्रमुच्चैः (?) अन्तरायाः पञ्चप्रकाराः.

(32) जिणुवएस बत्तीस मुणन्तें, meditating upon thirty-two preachings of the Jinas. They are given in T. as follows :—

आवीसयंङ्गपुव्वा छव्वारसचोद्दमा य ते कमसो ।
बत्तीसमिमे नियमा जिणोवएसा मुणेयव्वा ॥१॥

The Uttarā. XXXI. 20 mentions one more series of thirty-three terms as तेत्तीसासायणासु, but we do not find any mention of it in our work either here or in XXXVII. 15–17 below.

14. 9b छप्पण्णन्तरदीवइं—These fifty-six अन्तरद्वीपs are located in the लवणसमुद्र outside जम्बुद्वीप, seven in each of the eight quarters. For details see नन्दिसूत्रटीका of मलयगिरि, pp. 102–103.

15. 6–10. These lines describe the different functions of the nine निधिs or treasures.

XIX.

[Bharata then thought that the wealth he acquired would be of no use if it was not given to worthy persons, popularly known as Brahmins. These Brahmins, according to him, were persons who observed the vows laid down by the Jinas. He gave largely and liberally to such persons presents such as clothes etc.

One day Bharata saw a bad dream towards the end of the night. He was very much disturbed by the dream and hence went to see Risaha the next morning. After offering prayers to him Bharata asked him to tell him how and by what meritorious act Risaha became a Jina and Bharata as cakravartin, Bāhubali a strong man, Śreyāṃsa a liberal donor, and Somaprabha a meritoriors ruler. Risaha then narrated to him how there would come hard times of Duḥṣamā when all notions of morality would be completely changed.]

8. 13 अवसवणउं, अपस्वप्नः, a bad dream.

10. 12–13 धीवरिखरिपुत्तहं देहिंति पहुत्तणु, they will give full powers to persons like व्यास who is the son of a fisherwoman and दुर्वासस् who is the son of a female ass. व्यास is known to be the son of सत्यवती by पराशर, but the origin of दुर्वासस् as the son of a female ass I am not able to trace.

12. 2a पंचमजुगि, i.e., in दुष्षमा.

XX.

[Risaha first refutes various theories of creation and states that the elements that constitute the universe are earth, air, fire and water, and that these are beginningless and endless. The universe is not created by either Brahmā, Viṣṇu or Siva. In the midst of this universe is situated the human world called Tiriyaloya with many islands and oceans. There on the western side of the mountain Meru there is a region named Gandhela with its capital Alayā (Alakā). There ruled a king named Aibala (Atibala) with his queen Maṇoharā. A son named Mahābala was born to them and as soon as he attained youth king Atibala decided to place him on the throne and renounced the worldly life. King Mahābala thereafter began to rule the earth. He had four ministers named Mahāmai (Mahāmati), Saṃbhinnamati, Satamati and Saṃbuddha (Svayaṃbuddha). Now one day this Svayaṃbuddha told the king the futility of pleasures of the world, and advised him to practise the pious life as recommended in Jainism. Then Mahāmati, championing the cause of the Cārvāka school, advocated the doctrine of the identity of the body and the soul. The minister Svayaṃbuddha refuted the doctrine of Mahāmati, when Saṃbhinnamati advocated the doctrine of momentariness advanced by the Buddhists. This doctrine of momentariness was also refuted by Svayaṃbuddha when Satamati came forward with his doctrine of illusion. Svayaṃbuddha refuted this doctrine also.

Svayaṃbuddha then narrated to king Mahābala a story of one of his ancestors, viz. Aravinda. This Aravinda had two sons named Haricandra and Kuruvinda. One day Aravinda suffered from a terrible burning sensation in his body, and, when he found that it did not alleviate by any remedy, asked his son Kuruvinda to prepare a pool of blood of animals, bathing in which, he said, would stop his sufferings. Kuruvinda obeyed his father's command, but prepared a pool of artifical blood (liquid lac). When Aravinda entered it he tasted the liquid and found that his son had deceived him. He then ran after his son to kill him, but stumbled on the way and was killed by his own sword.

There was another ancestor of Mahābala named Daṇḍaka. His son was named Maṇimāli. He amassed a large fortune and having died became an ajagara (a kind of non-poisonous snake) and kept a watch over his wealth. One day Maṇimāli came to the house and saw the snake. The snake recollected his former birth and recognising his son did him no harm. Maṇimāli was surprised to see this, went to the sage and asked him who the snake was. On learning that he was his father, Maṇimāli came home and instructed him in the Jain doctrine. The snake practised it and was born as a god in the next birth. The god came to his son Maṇimāli and offered him a present of a necklace which Mahābala had been wearing.]

17. 2–5 अणिहणाइं etc. The four elements, viz., the earth, the air, the fire and the water have no beginning, no end and are not caused by any. Whenever these four elements combine, marks of cetanā become visible. Life comes into existence in the elements as intoxicating element does by the combination of raw sugar, water and flour. There is thus no difference between the body and the soul. This is the doctrine of the Cārvāka school.

18. 9*b* पउरंदरिय विति, the doctrine of Puraṃdara, i.e., Indra, who along with Bṛhaspati is mentioned as founder of the Cārvāka school. 10–11. विणु जीवें etc. If elements combine without jīva or soul and form themselves into a body, then let there be a body in a jar where a concoction of herbs is kept; in other words living bodies may come into being even in test-tubes.

19. 11 रिसिसमयहु भत्तएण, by one who was the devotee of the doctrine of the sage i.e. Jina. 12. णिरण्णउ, निरन्वयम्, without continuity.

21. 3. आयासु etc. A Ṭiṭṭibha bird, saying that the sky will fall, is frightened, and rests raising up its legs (to support the falling sky).

XXI.

[Svayambuddha further told Mahābala that his father, grandfather and great-grandfather had all attained auspicious places as a result of their pious life. On hearing this he also went to the

Mandara mountain to pay homage to the Jina. Just at this juncture there arrived a pair of Cāranamunis. Svayaṃbuddha saluated them and asked them about the future of his master Mahābala. They thereupon told him that he was destined in the tenth birth to be a Tīrthaṃkara; but in his past life he was the son, named Jayavarman, of king Śrīṣeṇa and queen Sundarī. As the king gave his throne to his younger son Śrīvarman, Jayavarman felt that he should turn out to be a monk. He therefore went to Tīrthaṃkara Svayaṃprabha of the past age and became a monk. Now at this juncture there arrived a Vidyādhara king with a huge paraphernalia. The young monk Jayavarman was so much impressed by the king's fortune that he formed a hankering to have, as a result of his penance, royal fortune similar to that of the king in his next life. It was on this account that in the subsequent birth he was born as Mahābala. Svayambuddha then went to Mahābala, saved him from his other ministers who were misleading him. As Mahābala had only one more mouth of life left to him, he decided to die a saṃnyāsa maraṇa. He was born in the Iśāna heaven after death, as a god named Lalitāṅga and had as his consorts Svayaṃprabhā and Kanakaprabhā.

2. 12 करु णिउ सेसासयदूलहो, he stretched his hand (to pick up) a lotus flower from among those that were offered to the images of the Jinas.

4. 4*b* किं भव्वु अभव्वु व वज्जरहि, tell me whether Mahābala is bhavya, i. e., capable of attaining emancipation or no.

8. 1*a* बद्धउ णियाणु, he formed a haukering or cherished a desire that his ascetic life should bring him some reward in the following birth. 9 मणकुडिलत्तें, i. e., on account of मायाशल्य.

XXII.

[One day Lalitāṅga saw some signs such as the withering of flowers on his body which indicated that his period of life as a god was to come to an end soon. He was very much frightened but was advised that he should better spend the rest of his life in doing some pious acts. He thereupon went to worship the Jinas. In course of

time he died and was born as son named Vajrajaṃgha to king Vajrabāhu. Now while Vajrajaṃgha had been growing on the earth, his consort Svyaṃprabhā wept bitterly for the loss of her husband, and after her death, was born as daughter named Śrīmatī to king Vajradanta and queen Lakṣmīmatī of Puṇḍarīkiṇī. One day when this Śrīmatī was half asleep, she saw a dream of a visit of a Jina with a large number of gods attending on him. She was immediately reminded of her former brith and former husband and fell on the ground in a swoon. She was soon brought round and her parents were called in. The king soon discovered that his daughter was love-sick. He therefore put her under the care of a wise nurse and asked her to ascertain the person loved by her.

At this juncture a report was brought to him that Jasahara attained Kevalajñāna and Cakra made its appearance in his armoury. The king immediately went to pay homage to the Jina, and as a result of this act he obtained Avadhijñāna. He came home and told his daughter the story of her former life in heaven and assured her by saying that she would soon meet her former lover, and then went away on his conquest of the world.

One day the nurse attending on her asked her to speak out her mind. Thereupon Śrimatı told her that she was in the third previous birth the youngest daughter named Nirnāmikā of a poor merchant named Nāgadatta who had a large family of ten. One day while this Nirṇāmikā was returning from the forest where she had picked some fruit, she saw a large crowd of people going to meet the Jina. She also went there, paid homage to the Jina and asked him why she was born poor. Thereupon the Jina told her that in her previous birth she put the dead body of a dog on a monk, but as the monk was unaffected by it, she removed it on the third day out of compassion. As a result of this act she was born poor. The Jina thereafter explained to her the true nature of Dharma and asked her to observe one hundred and fifty-eight fasts so that she would get rid of her inauspicious acts. She did accordingly and after death was born in Īśāna heaven as wife of Lalitāṅga. Six months after his death, she also came to the earth and was born as Śrīmatī. On recollecting her

love to Lalitāṅga she fainted. Having narrated the story of her past lives, Śrīmatī drew on canvas the portrait of Lalitāṅga and asked her nurse to find him out.]

9. 11*b* सवलहणउं सवलहणु व दिहिहरु, the scented paste (सवलहणउं, समालम्भनम्) takes away my courage as it destroys force (स्वबलहन्) or as if it is like a bath to the dead (शव + लम्भन).

11. 8*b* अतियालउ संबुद्धतियालउ, although he (i. e. Jina) is destitute of wife or consort (तियाल-स्त्रीरहित, अतियाल-स्त्रीरहित) he knows the three times, viz., past, present and future (तियाल, त्रिकाल).

15. 6*a* अम्हइं दहजणाइं, we ten people, i. e., father, mother, five sons, viz., नंद, नंदिमित्त, नंदिसेण, धरसेण and विजयसेण, and three daughters, viz., सिरिवहा, सिरिहरा and णिण्णामिया. Note the use of जण with numerals which is preserved in Marathi. Compare: आम्ही दहा जण, दहा जणी, दोघे जण, पांच जण etc. 10*b* मइं उच्चोलि भरिय माहुरयहु, I filled the cavity of my clothes (particularly of the कटीवस्त्र) with a vegetable called माहुरय which is similar to spinach (माठ or पोकळा). This माहुरय seems to be a common article of food as vegetable available to poor people.

18. 9*a* धम्मु होइ घइ णियमुहदंसणि, there is merit, i. e., one acquires merit by looking his face into ghee. This line and several others in this kaḍavaka mention some of the beliefs or superstitions of Brahmanic religion.

19. 11 पण्णासट्ठुत्तरु, etc. If, O young girl (बालि), you observe one hundred and fifty-eight fasts on the fifth day of the bright half (सियपंचमि, शुक्लपंचमी) of the month, you shall get rid of your past sins. शुक्लपञ्चमीनामपञ्चाशदधिकशतपरिणामोपवासैः (परिमाणोपवासैः ?) श्रुतसागरविधिर्भवति तासामेव सप्तषष्टिभिरुपवासैः जिनगुणसंपत्तिविधिरिति, T.

XXIII.

[The nurse of Śrīmatī then took the portrait painted on canvas and went to the temple of the Jinas, and announced to the people that the person who would read correctly the events painted on the canvas, would marry the princess Śrīmatī. A crowd of princes from

different countries arrived there to try their luck, but to no purpose. Now her father returned from his conquest of the world and narrated to her the story of his former lives.

Vajradanta said: In my fifth previous birth I was born as son named Candrakīrti of an Ardhacakravartin. I had a friend named Jayakīrti. We both of us enjoyed the kingdom for a long time, and having practised penance, were born next in the Māhendra heaven. After that we were both born as Baladeva and Vāsudeva named Śrīvarman and Vibhīṣaṇa to king Śrīdhara and queen Manoharā of the town of Ratnasaṃca. When we attained youth, our father handed over the kingdom to us, practised penance and obtained kevalajñāna. Our mother remained at home, but spent her time in doing pious acts. She was born next as god Lalitāṅga. In course of time my brother Vibhīṣaṇa died, but not knowing that he was dead I carried on my shoulder his body and wandered from place to place. God Lalitāṅga, i. e., my mother in the previous birth, saw this, and in order to bring me round, stood on the way crushing sand to extract oil from it. I asked him what he was doing, and on hearing from him his objective, told him that he would not get oil from sand. The god then asked me why I had been carrying the dead body of my brother as it would not regain life. Then I realised that my brother was dead. I did the funeral rites for my brother, gave my kingdom to my son, practised penance, and after death was born as Indra in the Acyuta heaven.

Vajradanta narrates further the various births of Lalitāṅga till he is born in Utpalakheḍa as Vajrajaṃgha.]

3. 2 सो सरसरविहिण्णु सा ण लहइ, he, being hit (विहिण्णु, विभिन्नः) by the arrows (सर, शर) of the god of love (सर, स्मर), does not secure her (सा). Note that सा is used here as Acc. sing. feminine, which is very rare in Apabhraṃśa.

5. Note the शृंखलायमक or दामयमक here. Note particularly 7*a* which line looks apparently incomplete as there is no 7*b* in any of the *Mss. The occurrence of such half lines* seems to be justified and correct, and we need not suppose that *b* is lost, for the यमक here °गिहे—गिह°—णियरे—णियराय° in 6*b*, 7*a* and 8*a* remains in tact.

8. 9*b* सीहणिक्कीडियउ—This is a kind of penance or a series of fasts which Jains observe. Similarly सव्वभद्दु in **10***a* ; मुत्तावलि in **9.** 9*a* and रयणावलि in **9.** 14*a*, कणयावलि in **11.** 9*a* are fasts the details of which can be seen in any dictionary.

21. 2 इंदवयाउ, इन्द्रपदात्, from the place of इन्द्र. 13*a* अणामिया i. e., णिण्णामिया.

XXIV.

[In the meanwhile the wise nurse of Srīmatī went out with the picture and while wandering over different countries came to Utpalakheḍa. There she kept the picture in the temple. Vajrajaṃgha came to that place, saw the picture and fell into a swoon. When he recovered he was asked what the matter was and told his friends that he saw in the picture the events of his past life including his love to Svayaṃprabhā. He was unable to stand the pangs of separation from her and asked the nurse where his former beloved was born. Vajrabāhu, the father of Vajrajaṃgha was informed of the happenings, and having assured his son that he would secure Śrīmatī for him, started for Puṇḍarīkiṇī. He was received well by Vajradanta, and was asked why he came to his house. After having heard of the picture incident, Vajradanta offered his daughter Śrīmatī to Vajrajaṃgha, and thus brought about the union of lovers].

4. & 5. Note the events drawn in a picture as also those that could not be and had not been drawn in the picture.

8. 8*b* को नं पुसइ णिडालइ लिहियउ, who can wipe off what is written on the forehead ? This has became a proverb in M.

XXV.

[After marriage Vajrajaṃgha and Srīmatī returned to Utpalakheḍa. Fifty-one twin sons were born to them. One day Vajrabāhu saw in the sky a cloud in the autumn which disappeared in a moment. He then thought that everything in the universe was momentary and hence decided to renounce the worldly life. Vajradanta also saw in a lotus a dead bee as it was fond of lotus-odour and did not

leave the lotus even though it was closing in the evening. On seeing this he also was disgusted with pleasures which brought death to creatures and renounced the worldly life. His son Amitatejas then did not like to rule over the earth and followed his father. Thus Puṇḍarīka, the grand-son of Vajradanta came to the throne. As he was young, his mother thought that he should be helped by friends like Vajrajaṃgha, and therefore sent a letter to him. He proceeded to her place, and while camping in a forest, met a pair of young monks who were no other than his own youngest sons, and asked them to narrate to him the story of his previous births, viz. those as Jayavarman, Mahābala, Lalitāṅga and Vajrajaṃgha. They then narrated the four previous births of Śrīmatī, viz, those as Dhanaśri, Nirnāmika, Svayamprabhā and Śrīmatī. They also narrated the previous births of his priest, minister, friends and servants. He was also told that in his eighth birth he would become a Tīrthaṃkara, and Śrīmatī would become prince Śreyāṃsa. After listening to this he proceeded to Puṇḍarinkiṇī, saw there his sister Anumdharī and the young prince Puṇḍarīka, and after having arranged for the proper government of his kingdom, returned home.

12. 6*b* दूसावासु, a camp in tents (दूस, दूष्य, पटगृह).

19. 11*a* कंदुवि, a sweet-meat seller, a baker.

XXVI.

[Vajrajaṃgha and Śrīmatī were then born in the Uttarakurus as twins to Aṇinda and Ajjavā. There they recollected their previous birth when a pair of Cāraṇamunis arrived there. One of them was no other than Svayaṃbuddha, the minister of king Mahābala. This Cāraṇamuni then explained to him the subsequent births of Mahābala as also his own, and advised him to follow the Jain doctrine. Vajrajaṃgha was then born as Śrīdhara in the Īśāna heaven, and Śrīmatī, changing her sex, was born as god Svayaṃprabha in the same heaven. The Cāraṇamuni also narrated the subsequent lives of the three other ministers of Mahābala. Now god Śrīdhara was next born as prince Suvidhi of king Subhadṛṣṭi and queen Nandā. Suvidhi married Manoramā, the daughter of king Abhayaghoṣa. God Svayaṃprabha

was now born as son to Suvidhi and was named Keśava. Suvidhi was next born in Acyuta heaven as Indra, and Keśava was born as Pratīndra in the same heaven.]

1. 14*b* कव्वय पायर्य—It appears that the study of Prakrit poems was considered to be a fashion of the day.

7. 10*b* विउ णाणम्मि धाउ सुपसिद्धउ—The root विद् (विउ in Prakrit) is widely known to mean "to know", so the term Veda means knowledge. Now, as our text says, the Veda should preach kindness to creatures, and therefore those books which preach the doctrine of हिंसा cannot be called वेद but a करवाल, i. e., sword.

XXVII.

[Acyutendra and Pratīndra were next born as prince Vajranābhi and merchant Dhanadeva. Vajranābhi became a monk after having handed over his kingdom to his son Pavidanta or Vajradanta Dhanadeva also became a follower of Vajranābhi. Now Vajranabhi, by his hard penance, acquired the acts which secured for him the Tīrthaṃkara nāma and gotra, and in due course was born in the Sarvārthasiddha heaven as Ahamindra. Dhanadeva also was born as Ahamindra in the same heaven In the following birth Vajranābhi was born as Risaha and became the first Tīrthaṃkara and Dhanadeva was born prince Seyamsa Similarly Risaha narrated the births of several others of his followers including his sons. Bharata then asked the Tīrthaṃkara as to how many Tīrthaṃkaras, Vāsudevas, Baladevas, Prativāsudevas and Cakravartins would there be in future. Risaha mentioned their number. Bharata then offered a prayer to Risaha.]

8. Note that this kaḍavaka summarises the ten previous births of Risaha. They are :—जयवर्मन, विद्याधरेन्द्र, महाबल, ललिताङ्ग, वज्रजंघ, श्रीधर, सुविधि, अच्युतेन्द्र, वज्रनाभि and सर्वार्थसिद्धाहमिन्द्र. Similarly the previous births of Seyaṃsa are summarised here.

12. 5-8 मइ णत्तिउ तुह तणुरुहु मरिइ—The passage says that मरीचि, the son of भरत, will be the twentyfourth Tīrthaṃkara named वर्धमान.

On hearing this prophecy मरीचि was delighted and danced out of joy. This exhibition of pride and joy on his part was responsible for his long wanderings in Saṃsāra. He was destined to be the teacher of Kapila, the author of Sāṃkhyasūtras. Compare Hemacandra, Triṣaṣṭi. VI. 373-390.

XXVIII.

[Bharata then returned to Ayodhyā and performed some propitiatory rites for his dreams. He made gifts to the needy and the poor and led a pious life. He ruled as a good and noble king, explained to his feudatories how they should behave as kings.

Gautama, the pupil of Mahāvīra, continued the narration further and said to Śreṇika as follows:—King Somaprabha had fourteen sons. The eldest of them was called Jaya. He was crowned and placed on the throne. His father and his uncle Seyaṃsa became monks. When one day King Jaya went to the pleasure-garden he saw a monk preaching and a snake and its mate listening to it. King Jaya came to that very place next year when he found that the snake had left the female snake which then formed friendship with a low class snake called Dīvaḍa. The king touched them with the lotus-flower in his hand. The king narrated the event to his wife at night, when there arrived a god and told the king that he was the snake and that his wife, the female snake, after being touched by the king, was killed by his attendants and became a goddess. The god thereafter gave to king Jaya heavenly garments and went away.

Now a minister of Jaya came and told him that there was a beautiful princess named Sulocanā, daughter of king Akampana and queen Suprabhā. Her father saw her in youth and thought he should find out a suitable husband for her. He accordingly arranged to hold a Svayaṃvara. King Jaya attended this and was chosen by Sulocanā there. Arkakīrti got angry because he was rejected and wanted to fight with Jaya. At this juncture Sulocanā went to the Jina and took a vow that if any of the two, viz., Arkakīrti or Jaya dies on her account in the fight she would die by renouncing food. In the fight however king Jaya defeated Arkakīrti and arrested

him. Sulocanā therefore returned home. In the meanwhile Jaya also approached Arkakīrti and coaxed him to give up his anger towards him.]

20. 11*b* मेहेसरु जि इक्कागिउ राएं, king Jaya was called मेहेसर or मेघस्वर because his voice resembled that of a cloud. Our text gives मेहेसर here and also in **28.** 4*a*, but elsewhere we find the name as घणरव in **21.** 15 ; जलहरसर in **23.** 7*b* ; जीमूयणाय in **28.** 9*b*. Metrically मेहसरु here is not good, but in **28.** 4*b* it is quite right. In T. also under **30.** 10*b* we get मेघेश्वरमित्रः.

XXIX.

[King Jaya returned home and paid homage to his father. While returning home he stopped on the bank of the Ganges, when an elephant attacked Sulocanā, but her life was saved by the guardian deity of the forest who gave her presents. Sulocanā then asked her who she was. She then told her that she was called Vindhyaśrī, the daughter of Vindhyaketu and Priyaṅguśrī, and obtained her present position because of the fact that Sulocanā taught her the mantra of five Parameṣṭhis. Now the female snake touched by king Jaya and killed by his servants became a crocodile in the Ganges and sent out of enmity the elephant to attack Sulocanā.

One day when king Jaya was seated in the court, he saw a couple of divine beings. He recollected his previous birth, and fell into a swoon saying "O, where is Prabhāvatī ?" Sulocanā also fainted saying "Rativara, where are you ?" On recovering from the faint, she said that she was a female pigeon and Jaya was her lord then. When king Jaya asked her to narrate their former life, Sulocanā said :

In the town of Śobhāpura there was a king named Vratapāla and queen Devaśrī. There lived the minister Śaktiṣeṇa and his wife Atavīśrī. One day a beautiful orphan came to him. The minister asked him why he had been wandering in the childhood. The boy then told the minister that he was driven out by his step-mother from the house as he did not keep watch well on the house. The minister

Saktiṣeṇa therefore adopted him as his son and named him Satyadeva. Sulocanā continues the narrative of her past lives and also of the boy, Satyadeva].

5. *2a* सुयावरु, daughter Sulocanā and her husband Jaya. *8a* पडकुडिहि, in the tent.

9. *10a* असिआउसाई i. e. five letters अ, सि, आ, उ and सा, standing for the initial letters of the five परमेट्ठिs, viz. अरहन्त, सिद्ध, आयरिय, उवज्झाय and साहु. Thus असिआउसा becomes a sort of मन्त्र which the Jains put on par with ओंकार and such other mystic syllables. Compare XXXV. 12. 10 where also the same mantra occurs.

11. 11–12 पारावइ हउं etc. Sulocanā says that she was a female pigeon named Ravṣieṇā, while king Jaya was a male pigeon called Rativara. 14 कइयवेण जणु सज्जइ, people are overcome (सज्जइ, lit. swallowed) by tricks. The co-wives of Sulocanā did not believe the story as narrated by her and therefore said that it was a trick by her to win the love of king Jaya.

12. 4 The story of the former lives of Jaya and Sulocanā begins here. *8a* अडइसिरि is mentioned in the sequel as वणसिरि (See **13.** *7a*). 13 परमायए, by my step-mother.

16. *4a* चारण is a class of ascetics. This class has two types, viz., Jamghācārana and Vidyācāraṇa. Both the classes are capable of flying through the sky. Jamghacāraṇa acquires the art of flying as a result of his fast of four days and the Vidyācāraṇa does it as a result of his learning and fast of three days.

21. 8–9 The pair of pigeons was asked by their master as to where the sinners go and the pair would show by their beaks the region underground, viz., the hell; and as to where the meritorious go, the region above, viz., the heaven.

24. 4 तहिं एक्कु etc. There is one plate containing five jewels. He who discovers it will marry Priyadattā.

XXX.

[Sulocanā continues the narrative of her previous births, particularly of her birth as Prabhāvatī and of Jaya as Hiraṇyavarman. There they practised penance as ascetics and passed through several births on the earth as well as in heaven. In one such births they were born as gardener and his wife when they used to offer flowers to the Jinas. One day they were both bitten by a snake and died but cherished a hankering for the enjoyment of pleasures. They were born next as Sukānta and Rativegā.]

6. 10*b* हिरण्णवम्मु—This name occurs elsewhere, e. g., **20.** 8*b*, **20.** 8*a* and **22.** 4*a* as सुवण्णवम्म, कंचणवम्म and कणयवम्म.

12. 9*b* पियइ चडावियाइं सिरि णेत्तइं, the lady raised her eyes or pupils of her eyes, towards her head. This is considered to be a sign of approaching death. Compare डोळे वर चढविणें or फिरविणें in Marathi.

15. 4*b* तियमइ, i. e., स्त्रीमति, i. e., wicked mind of a woman or a woman.

XXXI.

[Sukānta and Rativegā recollected then their former life. They met in that birth a monk, who had but recently renounced the worldly life and said he did not know much of the sacred Law, but he told them the salient features of the Jain faith. Sukanta then asked the monk the reason why in youth he became an ascetic. Thereupon the monk gave him the story of his life.

Incidentally there is a mention of a story of a merchant named Suketu and his rival Nāgadatta. Nāgadatta had a wife named Sudattā. One day, while Suketu's wife was carrying food for her husband, she met a monk to whom she served it at the nāgagṛha of her husband's rival. There appeared, as a result of this gift five wonders, particularly a shower of gold and gems. Nāgadatta then said that the wealth belonged to him as it fell in the nāgagṛha belonging to him. Thereupon Suketu said to Nagadatta that the wealth really belonged to his wife as it was due to gift made by her. Nāgadatta thereupon took all the

wealth and went to the king, but the wealth handled by Nāgadatta immediately turned into charcoal, and his servants were frightened by goblins. Nāgadatta then handed over the wealth to Suketu. The next day Nāgadatta discovered one more gem in the temple and in anger tried to crush it with a big piece of stone, but the stone hit him instead. Nāgadatta propitiated the Snake in the temple and asked a boon to have an army that would defeat Suketu. The snake however said that it was not possible to kill Suketu. Suketu subsequently renounced the worldly life, and after death was born as a god. His wife, Vasuṃdharā became a nun, and was born as a god in heaven changing her sex.]

3. 8*a* णवपव्वइउ, a monk who has been but recently admitted to the Order.

10. 9 लूयासुत्तें etc. A fly is caught up in the web of a spider and not an elephant. A fool falls a victim to a courtesan, but a wise man becomes disgusted with her.

24. 1*a* फणिदत्तु, i. e.. merchant Nāgadatta.

25. 10*a* विवक्खवइसेण, i. e , by Nāgadatta. 12 रइ'हियकइं, gems that put into background the lustre of the sun.

27. 5*a* धणसंखइ etc. Nāgadatta thus become inferior to Suketu, the husband of Vasuṃdharā, in point of wealth.

XXXII

[Jaya asked Sulocanā again to narrate to him the happenings of their previous life, particularly those which were told by the Jina Guṇapāla. Thereupon she gave the narrative of Śrīpāla and his adventures. Śrīpāla and Vasupāla were the sons of king Guṇapāla and queen Kuberaśrī. Guṇapāla renounced the worldly life and became a monk. One day a report was brought to her that a sage named Guṇapāla had arrived in the grove and the queen went to see him. Under a bunyan tree in the grove there was a temple of a yakṣa, and people were engrossed in festivities. A pair of ladies, of whom one was dressed as male, were dancing there. King Vasupāla

did not like the dance of a man and woman when his brother Śrīpāla said that they were not man and woman but both women. It was prophecied that the person who would recognise the lady in man's dress was destined to be her husband. This was the starting point of numerous adventures of Śrīpāla who took a horse that disappeared in the sky. It was prophecied that Śrīpāla would return safe on the seventh day. Now Śrīpāla was really removed by a demon in the form of a horse. When the demon began to fight with Śrīpāla there arrived a yakṣa named Jayapāla to help him. After escaping from the demon, Śrīpāla met six Vidyādhara girls whom he ultimately married as also Vidyudvegā, a Vidyādhara girl, Sukhāvatī, and Vappilā.]

11. 1*a-b* तुहुं जि णाहु etc.—You yourself are my lover; for you have caused the pangs in my body. Are there other signs of a lover such as a horn on the head? To have a horn on the head was considered to be an extraordinary sight and hence proverbs in the vernaculars डोक्यावर शिंगें असणें etc.

XXXIII.

[Sukhāvatī, mentioned in the previous Saṃdhi, was a Vidyādhara girl, and possessed miraculous powers. She first showed herself to be an old lady and as soon as Śrīpāla showed to her that he possessed powers to cure any ailment, she gave up the form of an old lady. Both of them then went to Siddhakūṭā and offered prayers to the Jina. All the young girls who loved Śrīpāla arrived there. In their presence Sukhāvatī showed her powers once more, made Śrīpāla an old man and still loved him, thus causing her friends to laugh at her. There he cured the bend in the neck of a prince and married his sister Prabhāvatī. In the meanwhile Aśanivega, the brother of Vidyudvegā, arrived there, recognised Śrīpāla, attacked him, but he disappeared from there with the help of Vidyudvegā.]

11. Note effects of devotion to the Jina mentioned in the Kaḍavaka. 13 दिट्ठि वि भद्दउ वासरु, even a rainy day becomes a fair day on account of the devotion to the Jina 14 खग्गु वि कमलु सकेसरु, a sword becomes like a lotus full of filaments.

XXXIV.

[Sukhāvatī came back home and her father thought of arranging her marriage with Śrīpāla, but he desired to see his elder brother before that event. He was accordingly being taken to Puṇḍariṁkiṇī. He met a number of adventures on the way, and got an excellent elephant in the forest. The elephant had first a mind to attack him, but it was ultimately overcome by Śripāla.]

2. 5*b* जियसत्तुं सलिलसेणु भणिउ, Jitaśatru, the father of Sukhāvatī said to his son Salilaseṇa, i. e., Vāriṣeṇa, to escort Śrīpāla to his town. सलिलसेण and सरसेण in **3.** 7*b* are only synonyms of वारिषेण.

9. 15 दिट्ठादिट्ठसरीरि, one, i. e. Sukhāvatī, who makes her person appear and disappear as the occasion demands.

XXXV.

[Sukhāvatī now took Śrīpāla, in the presence of the crowd, towards Puṇḍariṁkiṇī through the sky, and brought him to the region where the wicked horse left him. Nāgabala then offered the hand of his daughter Śaśilekhā to him. After marrying her, Śrīpāla was led further by Sukhāvatī. In the meanwhile two Vidyādharas met him and asked him to strike a stone pillar, saying that if he could cut the pillar into two with his sword, he would become a Cakravartin. Śrīpāla did cut it into two. On his way many kings offered him their daughters and in course of time he secured all the gems that a Cakravartin should possess. On the way he fought with Dhūmavega, a wicked Vidyādhara, met his mother in one of his previous births, viz., Satyavatī, who had now become a yakṣiṇī. After having gone through many adventures he arrived on the seventh day at his capital, met his mother Kuberaśrī, and brother Vasupāla. Śrīpāla told them that the powers that he attained had been entirely due to the good offices of Sukhāvatī, who was his wife.]

16. 11 एयहि जीव वि दिज्जइ—Note the corresponding saying in Marathi : ह्च्यासाठीं जीव सुद्धां द्यावा, I shall even sacrifice my life for her.

XXXVI.

[Śrīpāla was thereupon married to all the girls ; but Vappilā did not like that her husband should marry so many ; hence she returned to her father's house. Śrīpāla however went there and persuaded her to return home. Similarly he caused Sukhāvati also to return to him. Thereafter he got the seven living gems of the Cakravartin such as senāpati etc., and in due course the cakra also made its appearance in his armoury. All the wealth that came to the king was in the charge of Jasavaī, but Sukhāvati thought her to be a miser. The minister however told her that Jasavaī was destined to be the mother of a Jina. In course of time Jasavaī gave birth to the Jina who was named Gunapāla. Śrīpāla, in course of time, placed the son of Sukhāvati on the throne and went to practise penance under Gunapala, his son.

Sulocanā narrated the above story to King Jaya. He then remembered fully his previous lives and obtained all the vidyās that he then possessed. Priyaṅguśrī however thought that Sulocanā had been giving a story which was not true. In order to convince her king Jaya and Sulocana went up into the sky to offer worship to Risaha. On their way Indra put a temptation to trap king Jaya, but he stood the test well. Indra was pleased with him and offered him a boon. King Jaya thereupon arrived at Kailāsa, and offered a hymn to all the twenty-four Jinas whose temples were built by King Bharata.]

4\. 21 सज्जिवइं रयणइं, the seven living gems of a cakravartin, viz., सेनापति, गृहपति, अश्व, गज, स्त्री, स्थपति and पुरोहित as opposed to lifeless gems such as चक्र etc.

8\. 9*a* डज्झेवउं सहुं चिहिं कप्पडेहिं, the dead body is burnt along with two pieces of cloth, which is the only property that the dead take with them.

XXXVII.

[King Jaya with his queen saluted the images of the coming Jinas and then went to Samavasaraṇa where Risaha was seated in the midst of gods, men, women, monks and nuns. He saw there his

father and uncle who had also become monks and came to stay there. Sulocanā saw her father Akampana who also had become a monk and her several other relatives. Jaya then recited a hymn to praise Risaha, at the end of which he requested Bharata to allow him to be a monk. Bharata at first did not like it, but at the intervention of Indra allowed him to do so. Sulocanā also allowed him to be a monk. He was then admitted to the Order of monks and studied the sacred books. Sulocanā became a nun after him.

Now Risaha explained to Bharata all the principles of the Jain faith. Bharata then returned home and saw the same night a dream in which Meru was shaken. Next morning he asked his priest what the dream signified. The priest said that Risaha was about to attain emancipation. Bharata then immediately went to Kailāsa. Indra also came there to arrange for the celebration of the nirvāṇakalyāṇa of the Jina. Indra and other gods made a funeral pile of several fragrant trees, Agni-kumāras produced fire to light the pile, and his body was burnt to ashes which were saluted by all gods. Risaha attained emancipation on the fourteenth day of the dark half of the month of Māgha.

Bharata returned to Ayodhyā. One day he found a gray hair on his head. At this indication he handed over his kingdom to his son, renounced the world, soon attained kevalajñāna and obtained emancipation from samsāra].

6. 9 एयाणेयवियप्पणणाए, by the law which has modes of expression such as एकत्व and अनेकत्व. I take this to refer to the famous सप्तभङ्गीनय in the form स्यादस्ति एकम् etc. See **7.** 3*b* below where we get express mention of सप्तभङ्गी.

7. 1*b* समयइं तेसट्ठइं तिण्णि सयइं, i. e., three hundred and sixty-three systems of heretics. There are frequent references to this number of the systems of heretics in Jain literature. This number is made up as is mentioned in the famous stanza :—

असिदिसदं[१८०] किरियाणं अक्किरियाणं च आहु चुलसीदी[८४] ।
सत्तट्ठी[६७] अण्णाणी वेणइयाणं च होदि बत्तीसं[३२] ॥१॥

12. 6*b* जेवड्डु सलिलु तेवड्डु णालु णिप्पज्जइ णलिणहु, the lotus plant has as much (length of its) stalk as (the depth of) water in which it grows, neither more nor less. Similarly Jīva has the same period or extent of saṃsāra as its acts have made it to be.

15–17. These three kaḍavakas mention some of the tenets of Jainism arranged in consecutive and increasing numbers as in XVIII. 10–11. The terms or items are not entirely identical, but a number of them are repeated. I therefore do not give exhaustive treatment of these terms as I did there, but I think some of them require explanation which I quote chiefly from T.

15. 1 गुणु मोक्खु तउ वि पोग्गलु वि दुविहु, णिज्जरु वि दुविह वज्जरइ अरुहु—गुणु जीवगुणः पुद्गलगुणश्च, मूलोत्तरगुणा वा; मोक्खु अर्हदवस्था सिद्धावस्था च, तउ बाह्यमाभ्यन्तरं च; पोग्गलु अणु स्कन्धं च; णिज्जर विपाकजा इतरा च. 3*a* जीवहं गईउ कहियाउ तिण्णि पाणिमुक्ता लाङ्गली गोमूत्रिका च. 3*b* जगवेढणमरु घनोदधि-घननिलय-तनुवाताः. 4*a* जगि जोय तिण्णि कायवाङ्मनोयोगाः. 5*b* बालाइउ चउविहु भणिउं मरणु बालमरणं बालपण्डितमरणं पण्डितमरणं पण्डितपण्डितमरणं च, बालबालमरणस्य बालमरणान्तर्भावात्. 6*a* चउविहु पमाणु प्रत्यक्षानुमानागमोपमानानि. It is rather strange that a Jain writer should mention these four प्रमाणs as against प्रत्यक्ष and परोक्ष. चउविहु जि दाणु अभयाहारौषधशास्त्रदानानि. 6*b* चउविहु दव्वाइउ द्रव्यक्षेत्रकालभावाः. 7*a* चउभिण्णा मन्दमन्दतरतीव्रतीव्रतरस्वभावैश्चतुर्धा भिन्नाः, चउविह कसाय अनन्तानुबंधिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनानि एकैकस्य भेदाः. 8*a* चउविहु जि बन्धु प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशाः. चउविहु जि णासु नामस्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो न्यासः निक्षेपः. 8*b* विणउ वि चउविहु ज्ञानदर्शनचारित्रोपचारिका विनयाः. 9*a* चत्तारि वि बंधविणासहेउ ज्ञानदर्शनचारित्रतपांसि 10 सज्झाय पंच वाचनाप्रच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः. (पंच) आयार विहि ज्ञानदर्शनचारित्रतपोवीर्याणि. 11 णिग्गंथ पंच पुलाकबकुसकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातकाः. जोइसकुलइं पंच सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च.

16. 2*a* आसवणिबन्धहेऊ उ पंच मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगाः. 2*b* लद्धीउ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणि. महाणरया वि पंच गेरवासिपत्रकूल्मलिकुम्भीयाः (?). 3*a* संसार द्रव्यक्षेत्रकालभवभावाः; सरीरइं होंति पंच औदारिकवैक्रियकाहारकतैजसकार्मणानि. 4*b* समय षड् दर्शनानि. 5*b* सत्त होमहीउ सप्तनरकभूमयः. 6*a* पयईउ अट्ठ अष्ट कर्मप्रकृतयः. 6*b* वणदेव व्यन्तरदेवाः अष्ट किंनरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः. जीवगुण ते वि अट्ठ सम्यग्दर्शनादयः; अथवा, अणिमामहिमालघिमाप्राप्तिप्राकाम्येशित्ववशित्वकामरूपित्वामिति. 8*b* वेज्जावच्च वि दहविहु आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानाम्. 9*a* दह भावणसुर असुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपादिक्कुमाराः. 9*b* फणिससिमह दह दिसिगय सुहासि धरणेन्द्रचन्द्रसहिताः अष्ट लोकपालाः.

17 1*a* सिद्धंतासियाइं 2*a* चउद्दह मल चतुर्दश मलादयः द्वात्रिंशज्जिनोपदेशपर्यन्ता बाहुबलिकेवलज्ञानोत्पत्तिसमये व्याख्याताः.

20 6*b* णिच्चालियाइं निष्परिस्पन्दानि कृतानि, were rendered inactive. 10*a* अच्छंतु वि अंगु ण छिवइ देउ, Risaha, although he still existed as a soul, had given up all contact with body. At the time of मोक्ष the soul exists, but it is not in any way connected with physical body. 11 वसुसमहिं सिद्ध-गुणहि—for the eight qualities of a सिद्ध, see page 630, (8) (b).

GLOSSARY OF IMPORTANT PRAKRIT WORDS

[*In this Glossary only some rare and important Prakrit words are indexed and their convenient equivalents in Sanskrit are supplied. Only one occurrence of the word, usually the first, is noted. A complete glossarial index of Prakrit words is no longer a necessity as dictionaries like Pāiyasaddamahaṇṇavo are now available. M stands for Marathi.*]

अइमल्हइ–मन्दगमनं करोति xv. 18. 7
अइंवत्त–अतिमुक्तक xi. 1. 8
अक्का–माता xvi. 25. 12
अट्ठिलिय–अस्थिका (cf आठळी M) xxxii. 22. 6
अब्भिट्ट–अभिगत xxxii. 6 13
अम्मणु–कियन्मात्रम् (cf अंमळ M) xxv. 2. 5
अम्माहीरअ–रागध्वनिविशेष iv. 4. 13
अलियल्लि–व्याघ्र xiii 18. 9
अल्लय–कमल, आर्द्रक xxxi. 24. 4
अल्लवइ–समर्पयति, xxxi. 8. 3
अल्लिवइ–समर्पयति xxxi. 28. 3
अवरुंडइ–आलिङ्गति i. 17. 13
अवरुंडिय–आलिङ्गित vi. 5. 11
अवसें–अवश्यम्, xv. 22. 10
अविहंडिय–परिपूर्ण x. 3. 13
असराल–बहुल xix. 2. 4
आलुंखिय–आस्वादित xiii. 11. 4
आहुट्ठ–अर्धचतुर्थ xi. 25. 2
उच्चोलि–कटीवस्त्र, नीवी (cf ओटी M) (H gives उच्चोल i. 131) xxii. 15. 10
उट्टेट–उन्मत्त xxx. 4. 7
उप्फाल–पटहध्वनि xxxi. 15. 6.
उब्भिय–ऊर्ध्वीकृत vii. 21. 18
उल्लूरिअ–कान्दविक (A baker) xxv. 21. 1
उल्हाइ–अङ्गारावस्थो भवति v. 5. 4
उव्वार–उद्धरण, रक्षण, xvi. 21. 11
उव्वारुअ–अवशिष्ट (cf. उर्वरित M) xxxvii 25. 3
ओइल्ल–उपरितन xi. 5. 4
ओम्माहिय–उन्माथित, उत्कण्ठित xxxvii. 23. 11
ओरालि–शब्द (cf. ओरड M) v. 1. 7
ओरालिअ–आक्रन्दन xxviii. 29. 1
ओलग्गिय–सेवित vi. 5. 5
ओहट्टइ–हीनं भवति vii. 18. 7
ओहामिय–तिरस्कृत iv. 4. 4; अभिभूत xviii 1. 5
ओहुल्लिय–म्लान vii. 10. 1
कउल–चार्वाक, कापालिक xi. 17. 8
कक्कर–पर्वतशिखर xxxi. 23. 7
कक्खड–कर्कश, निष्ठुर xi. 13. 10
कडप्प–संघात, समूह viii. 7. 6
कडिल्ल–कटिसूत्र iv. 4. 5
कड्डुअ–चुम्बकपाषाण xx. 19. 2
कणइल्ल–शुक xiii. 7. 7
कप्पड–कर्पट, वस्त्र (cf. कापड M) xxxvi. 8. 9
कब्बड–वसतिविशेष v. 21. 3
कयर–धूलि (cf. कचरा M) xxviii. 2. 14
करंड–स्थगिका iv. 19. 9
करोडि–शिरोस्थि (cf. करोटी M) xii. 17. 8
कलमलअ–कालुष्य, ईर्ष्याजनित खेद (cf. कळमळ, तळमळ M.) xxxvi. 2. 6
कसर–बलीवर्द, vii. 20. 4; वत्सतर viii. 2. 18; गोयुवा xxviii. 28. 7.

कसर–पाण्डुर XXXII. 20. 14
कसेरु–तृण I. 3. 12
कंकेल्लि–अशोकवृक्ष IV. 1. 5
कंदोट्ट–नीलोत्पल XXIX, 6 5
किम्मीर–विचित्र VII. 19. 3
किलिगिलिय–शब्दानुकार XV. 1. 6
कुडुच– वादनकाष्ठ IV. 10. 10
कुढ–पृष्ठ XXIX. 14. 11
कुद्दहीर–चन्द्र XVII. 4. 5
कुवलीहल–बदर XXXII. 20. 15
कुसुमाल–चोर XXXI. 18. 4
कुहिणि–मार्ग XXXV. 13. 6
कुंड–जलद्रोणी IV. 3. 7
कुंयरि–कुमारी XXXIII. 2. 4
केया–वरत्रा, रज्जु XII. 11. 5
केर–आज्ञा XVI. 6. 9
कोक्काविअ–आहूत, आकारित XXIX. 27. 9
कोक्किय–आहूत V. 17. 15
कोच्छर–दक्ष IV. 18. 1
कोट्ट–प्राकारभित्ति (cf कोट M) XXIV. 9. 11
कोड्ड–कौतुक XIII. 6. 1
कोंड–जलद्रोणी IV. 3. 7
खरियालइ–कदर्थयति XXXII. 23. 1
खुत्त–क्षिप्त, प्रहृत XXXI. 23. 6
खुप्पइ–क्षिप्यते XXXV. 9. 9
खुप्पंत–निक्षिपन् XIV. 7. 10
खुरप्प–क्षुरप्र (cf. खुरपें M) XI. 1. 9
खेउं–आलिङ्गन XXIX. 19. 2
खेव–आलिङ्गन XIII. 8. 7
खेड–वसतिविशेष V. 21. 3
खेरि–वैर VIII. 1. 11
खोल्ल–गम्भीर (cf. खोल M) II. 13. 9
गणियारी–हस्तिनी XVI. 23. 5
गलत्थिय–कदर्थित XXXI. 27. 9
गलमोडी–गलवक्रत्व XXXIII. 4. 11
गलहत्थण–ग्रसन VIII. 5. 7
गंजोल्लिय–रोमाञ्चित XIV. 12. 12
गाउय–गव्यूति X. 14. 10
गिल्ल–आर्द्र XXIX. 5. 3; ग्रस्त XXXII 13. 9
गीढ–युक्त IV. 16. 3
गोस–प्रभात I 16. 10
गोंछ–गुच्छ (cf. घोंस M) I 3. 7
गोंदल–संग्राम (cf. गोंधळ M) XI. 16 9
गोंदलिय–मिलित I. 3. 7
घणघण–सातिशय III. 1. 6
घत्थ–ग्रस्त IX. 7. 3
घल्लइ–क्षिपति (cf. घालणें M) III. 16. 10
घल्लिय–क्षिप्त VII. 5. 12
घंघल–आपद् XXXII 7. 2
चक्खइ–स्वादति, आस्वादयति (cf. चाखणें M) II. 19. 4
चट्ट–शिष्य I. 16. 1
चडइ–आरोहति (cf. चढणें M) II 16. 1
चडाविय–आरोपित XXX. 12. 9
चप्पिवि–हठात्, दृढम् VII. 13. 12
चप्फल–बहुप्रलापिन्, निष्फल III. 14. 24
चवइ–जल्पति VIII. 7. 3
चंग–उत्तम (cf. चांग, चांगलें M) IX. 4. 14
चंगअ–उत्तम VI. 2. 12
चंचेल–वक्र XXIII 4. 13
चंदकव–मयूर XIII. 7. 10
चाउरि–शय्या (गादीति देशी T.) VI. 1. 6.
चिक्खल्ल, चिक्खिल्ल–कर्दम II. 13. 9
चिच्चि–अग्नि X. 11, 11
चिडउल्ल–चटक IX. 8. 14
चिड्डइ–आर्द्रीभवति (cf चिडणें M) II. 20. 11
चिम्मकइ–चमत्कृतिं करोति XVI. 2. 3
चिम्मकइ–भ्रमति XXIX. 15. 3
चिलिच्चिल–बीभत्स (cf चिडचीड M) XX. 10. 11

चुक्कइ–भ्रश्यति IV. 8. 5
चुणइ–भक्षयति XVI. 13. 2
चुणय–अरोचकव्याधि XVI. 3. 7
चुरुलि–ज्वाला XXXII. 16. 14
चुहुट्टइ–लगति XVI. 7. 10
चेंचइय–अलंकृत III. 2. 4
चोज्ज–कौतुक, आश्चर्य (cf चोज M) VIII. 7. 23
चोवाण–यष्टि I. 16. 10
चोंभल–बीभत्स, समूह (cf चुंबळ, चुंभळ M) XXVII. 27. 1.
छज्जइ–राजते, शोभते (cf सजणें M) I. 14. 3
छडउल्लुअ–संमार्जन, जलादिनिक्षेप (cf सडा M) XVI. 1. 12
छडयण–भ्रमर IX. 18. 4
छल्लि–त्वक् (cf साल M) XXXVII. 20. 10
छंडइ–परित्यजति (cf सांडणें M) VII 19. 15
छाहि–छाया (cf साहुली M) XVII. 3. 12
छिवइ स्पृशति (cf सिवणें, शिवणें M) IV. 5. 13
छिप्पइ–स्पृशति (cf शिवणें M) VI. 2. 13
छिंक–छिक्का (cf शिंक M) XXVI. 4. 2
छुड्डु–क्षिप्रम् II. 19. 1
छोडअ–छुटिका, त्रुटिका XXIV. 8. 1
छोह–क्षोभ, विक्षेप XVII. 1. 6; क्रोध XXIX. 18. 8
जडिल–कुङ्कुम XXVIII. 1. 3
जंपाण–शिबिका (पालखीति देशी,T.) VII. 1. 7
जांवाय–जामाता XXXIII. 4. 16
जूरण–खेदन VII. 6. 12
जूरिय–निर्भर्त्सित VII. 5. 5
जेंवइ–भुंक्ते XVIII. 7. 11
जोइय–दृष्ट XVIII. 9. 4
जोक्खइ–तोलयति (cf जोखणें M) IV. 5. 5
जोक्खिअ–तोलित XVIII. 9. 5
झडप्पइ–आक्रमति (cf झडप M) XXX. 4. 9
झडप्पण–ताडन (cf झडप M) XXV. 4. 8
झडप्पिय–पतन VIII. 3. 9
झलक्क–पूर्णाञ्जलि (cf चुळुक M) XVII. 13. 6; औष्ण्य XXXIV. 2. 11
झलझलिय–ध्वन्यनुकरणे शब्द (cf झुळझुळ वाहणें M) XII. 2. 13
झलुक्किअ–संतापित (cf झळ M) XXIX. 23. 11
झंपइ–आच्छादयति (cf झांपणें, झांकणें M) I. 11. 4
झंपड–नेत्रयोरर्धोन्मीलन (cf झांपड M) XII. 12. 5
झंपिअ–आच्छादित XXVI. 14. 9
झुलइ–कम्पते (cf झुलणें M) XIV. 5. 12
झुंबुक्क–स्तबक (cf झुबका M) IV. 9. 9
झेंडुअ–कन्दुक (cf चेंडू M) I. 16. 10
झेंदुलिया–पुंश्चली (cf शिनळ M) XV. 6. 15
टक्कर–शिलाशकल (cf ठोकर M) XXXI. 16. 4
टिंट–पुंश्चली XXIX 18. 9.
टेंट–वृन्त (cf देंठ M) XII. 9. 18
डर–भय (cf डर M) XXV. 8. 9
डंकिय–दष्ट XXX. 12. 8
डाल–शाखा (cf डाहाळी, डाळी M) I. 18. 2
डावि–मुद्रा, मुद्रिका XXXV. 5. 3
डुंग–समूह IX. 2. 27
डेयंत–धावन् XVII. 2. 8
डेंडुह–कुण्डुभ XVI. 20. 9
डोलइ–आन्दोलनं करोति (cf डोलणें M) IV. 18. 2; कम्पते XV. 18. 3
ढलइ–च्यवति (cf ढळणें M) XXXI. 19. 12
ढलहलिय–चालित XVII. 7. 5
ढलिय–स्रस्त VIII 9. 12

ढंकइ–आच्छादयति (cf झाकणें M) I. 13. 10
ढंकिय–आच्छादित XIII. 11. 1
ढंख–पुष्पपत्रफलरहित वृक्ष XIX. 13. 5
ढंढर–राक्षस XXXI. 26. 6
ढालइ–चालयति (cf ढाळणें M) XIV. 10.7
ढिल्लीहूय–शिथिलीभूत (cf ढिलें M) XXXII. 3. 5
णक्क–नक्र, जलचर XXXV. 12. 7
णग्गोर–कर्पूर XII. 10. 7
णाहल–शबर XV. 1. 9
णिक्खुत्तउं–निश्चितम् XI. 9 7
णिक्खुब्भु–निरन्तरम् XX. 1 7
णिच्छट्टइ–स्खलति IV. 15 11
णिड्डरिय–निष्कासित XXXV. 1. 14
णियइ–अवलोकयति V. 15. 9
णियवणी–वरत्रा, रज्जु XXV. 18. 12
णिरारिउ–अतिशयेन XIII 7. 13
णिरिक्क–चोर XXIX 17. 3
णिरु–अतिशयेन XIII. 11. 11
णिरोविय–अर्पित XXIX 20. 2
णिहेलण–गृह III. 1. 10
णिसाड–निशाचर, राक्षस XVI. 26. 8
णीवइ–विध्यापयति (cf. निवणें M) II. 19. 10
णेसर–सूर्य I. 1. 1
णेहीर–कुङ्कुम XXV. 9. 12
तक्कारि–सारथि XII. 13. 9
तरु–शीघ्रम् XXV. 19. 13
तलप्प–करप्रहार IV. 11. 7
तल्ल–शुद्रसरस् (cf तळें M) XXV. 2. 8
तंडअ–समूह (cf तांडा M) XVI. 22. 8
तारुअ–कर्णधार XXV. 9. 3
तिगिंछि–मकरन्द, पराग IX. 21. 14
तिडिक्क–स्फुलिङ्ग XXXVII. 21. 10
तिया–स्त्री I. 15. 4
तियाउस–भस्म XXXVII. 22. 9
तिंगिच्छ–मकरन्द, पराग V. 1. 10
तिंगिछ–मकरन्द, पराग XI. 5. 6
तूय–स्त्री IX. 22. 9
तुप्प–घृत (cf. तूप M) XXVI 1. 5
तुंदाहि–गण्डूपद् VII. 12. 7
तूह–तट XXIX. 8. 9
तोंड–मुख (cf. तोंड M) V. 3. 3
तोंतडिल्ल–मिश्र XXVIII. 1. 5
तोंद–उदर XX. 23. 3
थड–समूह XII. 3 19 ; स्तबक XIII 6 5
थत्ति–स्थान II. 15 12
थद्ध–घन XII. 11 1
थट्ट–धन XII 11. 1
थरहरण–कम्पन VII. 9. 12
थव–स्तवक (cf थवा M) XII 9 19
थिप्पिर–गलनशील (cf थिबकणें, ठिबकणें M) VII. 12. 10
थेंभ–बिन्दु (cf थेंब M) III. 14. 20
दडत्ति–ध्वन्यनुकरणे शब्द (cf धाडकन् M) IX 13. 2
दलवट्टइ–छिनत्ति, नश्यति XVI. 23. 6
दलवट्टिअ–खण्डित, नष्ट XV. 3. 5
दवक्कडी–अशनिपात VII. 14. 2
दवत्ति–शीघ्रम् XXIX. 6. 3
दह–ह्रद XXIX. 8. 3
दंडिखंड–शतजर्जरं जीर्णं सिवितं वस्त्रम् XXII. 16. 22
दाढा–दंष्ट्रा XVIII 1. 15
दविड–सर्पजातिविशेष (cf दिवड M) XXVIII. 9. 15
दुव्वोल्लिय–दुरुक्त VII. 5. 11
देहलिय–मर्यादा XIII. 10. 1
वेंट–वृन्त (cf देंठ M) IV. 11. 11
दोर–सूत्र, रज्जु (cf दोर M) II. 16. 2
धण–धन्या (स्त्री) XX. 7. 3

धाह- आक्रोश, क्रन्दन (cf धाय) XIV. 8. 5
पइरिक्क-प्रचुर IX. 24. 12
पउलण-प्रज्वलन, पाक VII. 6. 12
पक्कल-समर्थ XIV. 7. 5
पुच्छाउडुं-प्रश्नोन्मुखम् XXXIII. 11. 3
पहुक्कइ-प्रसरति XXXII. 17. 2
पत्तल-सूक्ष्म, सुन्दर (cf पातळ M) XVII. 10. 1
परअ-प्रभात, परेद्युः (cf परवां M) XXXII. 26. 8
परइ-प्रभाते XVI. 20. 12
परवाली-पर+बाला (परक्की) XI. 18 3
परियंदइ-आन्दोलयति IV. 4. 13
परिहत्थें, परिहच्छें-वेगेन XIV. 1. 20
परोहड-पश्चाद्द्वार (cf परडा, परडूं M) XXIX. 14. 9
पल्लट्टिअ-परिवर्तित XXXIII. 6. 13
पसंडि-सुवर्ण IX. 7.1
पहुल्ल-पुष्प (?), प्रभूत XXV. 8. 5
पंगुत्त-प्रावरण (cf पांघरूण M) I. 14. 4
पंगुरइ-पटेन आच्छादयति (cf पांघुरणें M) IV. 15. 14
पंगुरण-प्रावरण VII. 23. 9
पाडिहेर-प्रातिहार्य I 18. 9
पाण-चाण्डाल XXXI. 17. 5
पालिद्धय-वंशवेष्टितपताका XII. 9. 4
पासुय-शुद्ध, प्रासुक IX. 7. 4
पासुलिया-पार्श्वास्थिसंघात VII. 12. 4
पासेय-प्रस्वेद VII. 24. 10
पाहुण-अतिथि (cf पाहुणा M) XXIV. 10. 7
पिक्कइ-पक्कं भवति VII. 14. 2
पीलु-हस्तिशावक XXIX. 8. 1
पुण्णालि-पुंश्चली XVIII. 1. 7
पुलि-व्याघ्र XXV. 16. 4
पेल्लावेल्लि-संभ्रम IX. 18. 16
पोल्लिय-प्रेरित I. 12. 5
पोट्ट-उदर (cf पोट M) IX. 8. 15
पोट्टल-ग्रन्थि (cf पोटळी M) XX. 10. 12
पोत्ति-स्नानशाटी IX. 4. 13
पोप्फली-पूगीफलवृक्ष (cf पोफळी) XXII. 7. 13
फिट्टइ-नश्यति (cf फिटणें M) VIII. 4. 36
फुल्लंधुय-भ्रमर IX. 11. 9
फुलुंधुय-भ्रमर IX. 11. 9
बइसइ-उपविशति IV. 1. 11
बप्प-पुत्र इति संबोधने IV. 8. 7
बप्पीह-चातक XII. 7. 2
बप्पीहय-चातक II. 13. 13
बाहिरि-बहिस् XVI. 3. 3
बुक्करइ-शब्दं करोति (cf भुंकरणें M) VII. 25. 5
बुक्कार-फूत्कार XV. 19. 8
बुड्डइ-मज्जति XXXIII. 11. 11
बुंध-मूल VIII. 7. 10
बोल-ध्वनिविशेष XVII. 3. 4
बोल्लइ-जल्पति VIII. 5. 17
बोल्लाविअ-भाषित IV. 4. 9
बोहित्थ-नौः XVII. 4. 4
भउंहा-भ्रुकुटि XXII. 8. 2.
भम्म-सुवर्ण IV. 10. 1
भल्ल-भद्र (cf. भला M) IV. 5. 7.
भल्लारअ-शुभ, उत्तम VII. 17. 11
भसल-भ्रमर IX. 28. 2
भंडइ-कलहं करोति XXXV. 8. 7
भिडिअ-संमुखं गत (cf. भिडणें M) XVII. 1. 1
भुक्कइ-भषति (cf. भुंकणें M) I. 8. 7.
भेल-अतिवृद्ध XXIX. 25. 12
भोल-मूढ (cf. भोळा M) II. 20. 7
मडप्फर-गर्व XV. 15. 11
मडह-सुन्दर XII. 12. 3

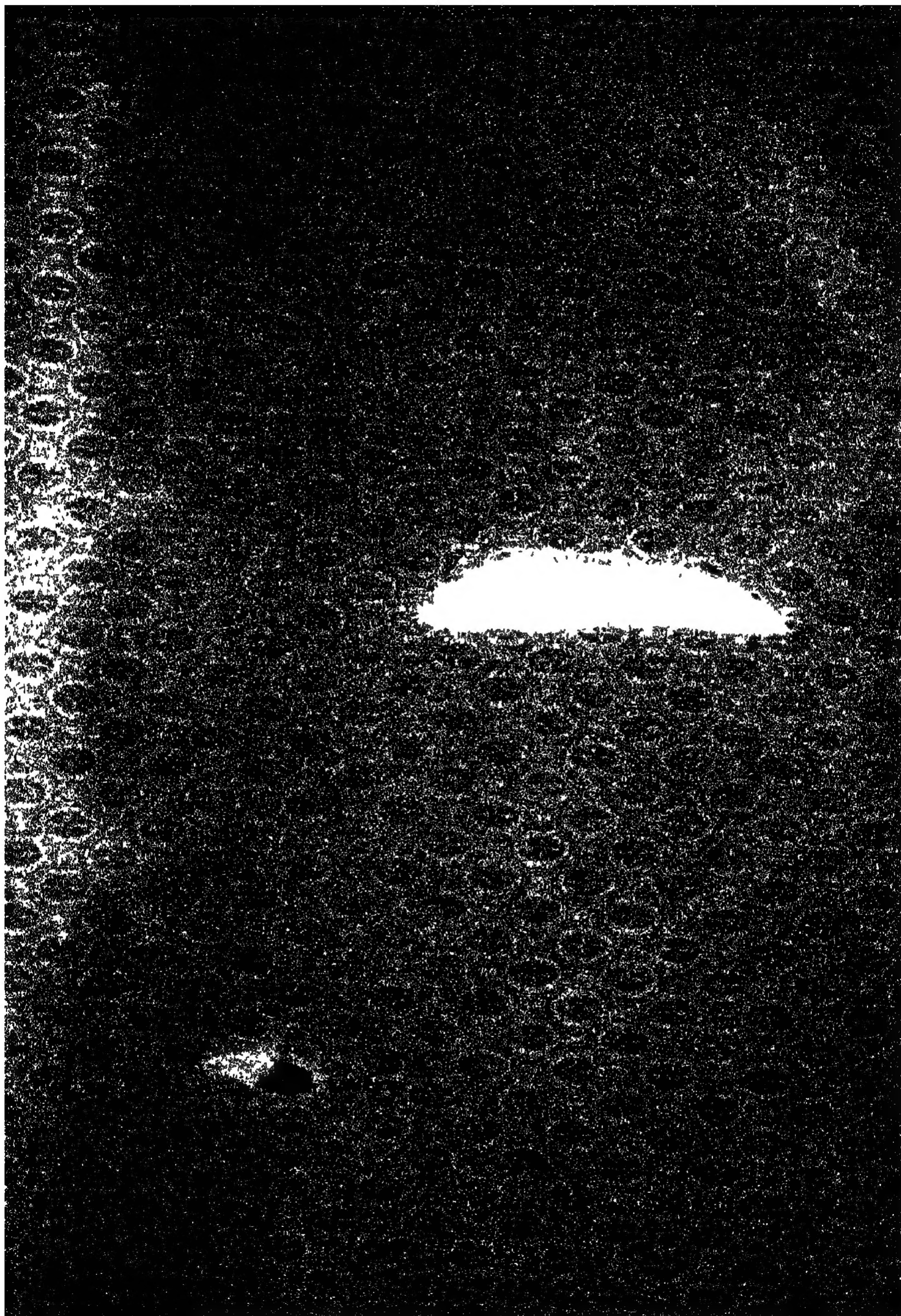
मडहा–तन्वी, लघ्वी XVI. 26. 2
मडंब–वसतिविशेष V. 21. 4
मड्ड–नालिकेरवन (cf. माड M) XIII. 2. 3; बलात्कार XIII. 2. 3
मड्ड–बलात्कारेण IX. 14. 10
मब्भीसिया–मा भैषीः इति उक्ता, आश्वासिता, XXXII. 26. 3
मयासि–(अमृताशी) देव XIV. 1. 4
मरट्ट–दर्प, गर्व, XVI. 16. 8
मल्हण–मद्‌युक्त XXIX. 25. 5
मंट–निरुद्यम (cf. मट्ठ M) IX. 8. 11
मंठ–निम्नोन्नत XII. 5. 25.
मंडल–श्वा V. 15. 12
मंदीरय–रविकानिरोधकलोहवलय XII. 11. 3
मायण्हिय–मृगतृष्णिका XX. 20. 7
माहुंडल–सर्पविशेष XVI. 9. 12
मुसुमूरइ–द्रवति III. 3. 3
मुसुमूरण–पिण्डीकरण VII. 6. 12
मुंडिय–मन्दुरोभयपार्श्वनिखातकाष्ठद्वय XV. 2. 5
मूरविअ–तापित, क्वथित XII. 11. 10
मेरा–मर्यादा VIII. 1. 13
मेलअ–समूह (cf मेळा M) XXVIII. 3. 8
मेलावक्क–संगम XXXII. 24. 4
मेंढअ–मेष (cf मेंढा M) XVI. 9. 10
मोक्कल्लिय–मुक्त XIII. 5. 10; मोचित XXXI. 29. 8
मोड्डिय–भग्न VIII. 12. 5
रडि–आक्रन्दन XV. 20. 4
रवण्ण–रम्य II. 2. 3
रहट्ट–अरघट्ट (cf रहाट M) XXVII. 1. 4
रहल्लि–तरङ्ग, वीची (cf लहर M) IV. 15. 12
रहिअ–आच्छादित XV. 12. 4
रंखोलिर–विलसनशील III. 2. 1
रंगइ–जानुभ्यां चलति (cf रांगणें M) IV. 1. 11
रंजण–मृद्भाजनविशेष (cf रांजण M) V. 19. 11
रंडिय–विधवीकृत XVII. 9. 10
रिंछ–शुक I. 14. 4
रुंटइ–शब्दं करोति V. 1. 10
रुणुरुंटइ–गुञ्जति VI. 1. 14
रुंद–विस्तीर्ण (cf रुंद M) III. 7. 10
रुंदिम–विस्तार XI. 4. 5
रेल्ल–चालन (cf रेलणें M) XIV. 10. 1
रेह–शोभा XI. 23. 4
रेहइ–राजते, शोभते II. 2. 12
रोयर–रुचिकर XVII. 12 7
रोल–कोलाहल XIV. 5 9
लइ–अतीव (वाक्यालंकारे) (cf लइ M) V 16. 14
ललाविय–प्रसारित XVII. 1. 1
लल्ल–अस्फुटवाक् IX. 8. 11
लल्लक्क–रौद्र (cf. लल्लकार M) XIV. 7. 5
लंजिया–गृहदासी XXXI 21. 1
लाणि– मर्यादा, अन्त IV. 5. 14
लीह–रेखा XII. 6. 7
लुक्क–निलीन IX. 14. 12
ल्हसइ–पतति, भ्रंसते II. 8. 13
वट्टुत्तिविडि–वट्ट+उत्तिविडी (cf उतरंड M) XXXII. 20. 5
वड्ड–महत् I. 12. 6
वद्दल–झञ्झावात (cf वादळ M) VII. 16. 8
वमाल–कोलाहलशब्द I. 11. 7
वव्वीह–चातक II. 13. 13
वावल्ल–सेल, कुन्त, सर्वलोहमयायुधविशेष VII. 5. 11
वाहियालि–अश्ववाहनमार्ग I. 14. 8
विट्टल–अपवित्र, अस्पृश्यसंसृष्ट (cf विटाळ M) VII. 12. 8
विडप्प–राहु (विदर्प ?) XII. 6. 3
विड्डुम–भय XVIII. 13. 1

विढत्त–अर्जित xvi. 3. 4
विराल–बिडाल, मार्जार xxx. 4. 10
विरिक्क–विभक्त viii. 13. 23
विरोल्लिय–कदर्थित xxxi. 23. 7
विलया–वनिता v. 4. 13
विसंभर–तन्तुवाय, कोलिक xxxi. 17. 12
विसूरइ–खिद्यते xiv. 5. 10
विहलंघल–विह्वलाङ्ग xxviii. 19. 8
वुण्ण–संकुचित xvii. 15. 12
वेच्छिल्ल–कोरण्टवृक्ष xxv. 5. 9
वेल्लहल–कोमल iii. 1. 11
वेहाविय–वञ्चित (द्वैधीकृत ?) xviii. 2. 2
वेंभल–विह्वल xxviii. 27. 1
वोद्रही–तरुणी xxxiii. 1. 10
वोलइ–अतिक्रामति ix. 19. 14
वोलाविय–त्यक्त xv. 6. 4; अतिक्रामित, निष्कासित, xviii. 2. 2.
वोलीण–अतिक्रान्त ii. 9. 1
वोक्क–यकृत् (कलिजा T.) xi. 24. 12
सइत्त–सचेतन xxx. 1. 12
समलहिय–अभिलिप्त vi. 1. 9
सल–शवशयन, चिता, xxiii. 8. 6
सलसलइ–सलसलध्वनिं करोति (cf. सळसळणें M.) iv. 11. 10
सवडंमुह–संमुख ii. 2. 12
*सवलहण–समालम्भन (विलेपन) iii. 4. 7
सव्वल–सर्वलोहमयी घाणी, तिलपीडनायुध xi. 16. 9
सहइ–शोभते iii. 12. 16.
संगहण–पुंश्चलयुगल, जारजारिणीयुगल xxxv. 10. 1
संच–शरीरबन्ध viii. 9. 12; समूह xvii. 5. 2
साइउं–आलिङ्गन v. 15. 9
साड–विध्वंसक xiv. 5. 14
साडी–शाटी, वस्त्र xii. 5. 3.
सारी–उत्तमा iii. 6. 1
सिणिसिव–तन्तुवाय, कोलिक xxxi 17. 13
सिप्पि–शुक्ति (cf. शिंप M) iv. 6. 11
सिप्पीर–पलाल vii. 19. 4
सिलिंधय–बाल xxxiii. 6. 6
सिलिंब–शिशु ii. 13. 9
सिहिण–स्तन ii. 16. 2
सीसक्क–तुष xix. 2. 2
सुढिअ–दुःखित iii. 17. 2
सेल्ल–प्रास vii. 5. 11
सेहीर–सिंह xxv. 3. 5
सेंभ–श्लेष्मा xx. 14. 10
सोण्णार–स्वर्णकार (cf सोनार M) xxxi. 7. 2
हट्ट–पण्यवीथिका (cf हाट M) i. 16. 1
होड्डि–शृङ्खला vii. 13. 8
हल्लइ–कम्पते (cf हलणें M) xiv. 5. 12
हल्लिय–कम्पित i. 12. 5; वलित xv. 15. 5
हुर–दुःख xi. 11. 4
हुंड–विकलेन्द्रिय xi. 1. 11
हुलिय–प्रोत vii. 5. 10.
हवाइल्ल–कुपित xxxii. 20. 4
होहल्लर–जो जो शब्द iv. 4. 14

ADDENDA ET CORRIGENDA

Page	Kaḍavaka	Line	For	Read
४	१(n)	१४(n)	उद्धय° उद्धत°	उद्धूय° उद्धृत
१५	१६	८	णं	ण
२४	७	६	भ वहि	भावहि
२४	७(n)	३(n)	जिनाग	जिनागमे
२७	११	१	जंतजणेण	जत जणेण
३९	४	११	सई	सइ
४६	१२	५	जोणयहं	जोयणहं
५२	१९	१	णंव	णवं
७७	७	१०	बुाद्धदारेण	बुद्धिदारेण
८३	१४	९	फलिह	फलिह
८९	२२	६	पुारसु सपससहु	पुरिसु सपसंसहु
१०६	१०	१०	मरतं	मरंत
१२४	३	७	एत्यु	एत्थु
१४८	१०	८	झंकाराह	झंकारहिं
१६५	१	५	तुहं	तुहुं
१६८	४	६	रूढएहिं	रूढएहिं
१८४	७	९	एक्को रुय	एक्कोरुय
१८५	८	१५	अद्धुव	अद्धुव
१८९	१५	१	वइसह	वइसइ
२०५	३५	११	अज्जिय संघहु	अज्जियसंघहु
२३२	११	७	सडणय	सडयण
२३३	१	१५	स पहु	सपहु
३००	८(n)	९(n)	कंदासिहि	कंदासिहु
३०२	११(n)	६(n)	तुंब	तुंब
३०९	६(n)	९(n)	आहं	बाहं
३२१	८(v.l.)	१०(v.l.)	MP	M*p*
३३९	७	६	ि वाउ	पणिवाउ
३४७	३	१४	वावहि	वाविहि
३७९	१	७	पंडियभवणहु	पंडिय भवणहु
३८०	३	१	वादिय	पंदिय
३९८	१२	८	मुणिविणयं°	मुणि विणयं°

Page	Kaḍavaka	Line	For	Read
४००	१५	४	सिरिसुय	सिरि सुय
४००	१५	१०	वइदेसि	वइदोसि
४१७	१४	५	उवलोहुवि	उवलोहु वि
४२९	१२	७	दिय कविल	दियकविल
४६३	८	३	धप्पाणउं	अप्पाणउं
४६६	१३	१४	सुयमण	सुय मण
४६७	१४	७	सक्खि	सक्खि
४७१	२१	४	अट्टहासें	अट्टहासें
४७३	२४	४ *	जा	जो
५०२	१७	१३	कणाणिय	केणाणिय
५०६	२२	१०	जेसणइ	जणेसइ
५०७	२४	६	पडिवाणि णाय	पडिवणिणाय
५३३	५	१०	वत्थअियत्थ	वत्थणियत्थ
५३६	९	५	सा	सो
५५२	८	५	होंति	होंति
५५७	१६	३	जिणुगय	जिणु गय
५७४	१	४	णिसवइ	णिवसइ
५८४	१५	७	उचविह	चउविह
५८४	१६	२	हेऊउ	हेऊ उ
५८४	१६	३	संसारसरीरइं	संसार सरीरइं



१० वत्था
५ सा